अस्क़द मुख़्तार
चिंगारी

Асқад Мухтор
Опа-сингиллар

अस्क़द मुख़्तार

चिंगारी

उपन्यास

Асқад Мухтор

Опа-сингиллар

प्रगति प्रकाशन ताशक़न्द १९७९

अनुवादक : राय गणेश चंद्र

कलाकार : व. कोज़्लोव

АСКАД МУХТАР

СЕСТРЫ

(роман)

на языке хинди

सोवियत यूनियन में प्रकाशित

$M\frac{70303—963}{014(01)—79}$ 719—79—4702570200

पहला भाग

न जाने कब से पुराने शहर के बाहर नैमन्चा मुहल्ले में बुनकरों की आबादी रहती आयी है।

बुनाई का हुनर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को, बाप से बेटे को सौंपा जाता। औरतें सूत काततीं और मर्द बोज़* बुनते। यह घोर दुख की बात होती अगर बाप बेटे के लिए कोई करघा छोड़े बिना मर जाता। बच्चे पहले-पहल चर्ख़ी और फिरकी शब्द बोलना सीखते। वह बचपन से ही यह सचाई जान जाते कि हुनर ही ज़िन्दगी है।

नैमन्चा में ऐसे भी पुश्तैनी बुनकर थे जो अपनी सात पीढ़ी पहले का इतिहास बता सकते थे लेकिन अब भी किसी ऐसे बुनकर का जन्म होना बाक़ी था जो कमरबन्द तक के लिए भी कपड़ा जुटा सके। बुनकरी किसी को भूखों नहीं मरने देती थी लेकिन यह उसे ग़रीबी पर पार भी नहीं पाने देती थी। बचपन से ही लोग काम में लायी जा चुकी गन्दी रूई की छड़ों से धुनाई करते और चालीस तक पहुँचने से पहले फेफड़ों के ख़राब हो जाने से मर जाते। वे अच्छी तरह जानते थे कि किसी बुनकर की क़िस्मत में क्या बदा है लेकिन इसके बावजूद वे अपने बच्चों को अपना कटु धन्धा सिखाते जाते।

गर्मियों में नैमन्चा की गलियाँ धूल से भर जातीं। भूरी बेजान गर्द की तह छतों, मिट्टी की दीवारों और इक्के-दुक्के, सूखे पेड़ों को लपेट

---

* बोज़ – एक क़िस्म का मोटा कपड़ा।

[illegible]। छड़ों की धुनाई से फिर से ताज़ा और साफ़ की गयी रूई से निकलनेवाली धूल के बादल कुहासे की तरह हवा में गतिहीन लटकते रहते। यह लोगों के हाथों व चेहरों पर जम जाती, उनके कपड़ों में चिमट जाती और आँगनों में भर जाती जिन्हें उनकी पूरी नग्नता में टूटी-फूटी दीवारों के छेदों से देखा जा सकता था।

यह एक उदास, बेरंग और फटेहाल मुहल्ला था। सिर्फ़ एक जगह, नीली मस्जिद के परे, जलहीन स्तेपी के बीच सरकण्डों की फैली लताओं की भाँति हरे-हरे दिखने वाले बग़ीचों से युक्त एक महलनुमा मकान था। यह बुनकरों के मुहल्ले के पुराने मालिकों में से आख़िरी क़ुद्रतुल्लाह ख़्वाजा का मकान था। उनमें से बहुत से नैमन्चा के जीवित शरीर से जोंक की तरह चिपके हुए थे।

आज भी पुराने ज़माने के लोग आपको जाने-माने सर्राफ़ों, साहूकारों और दुकानदारों के नाम बता सकते हैं जिन्होंने बुनकरों को रुपये उधार दिये और एवज़ में उनके माल प्राप्त किये।

सात साल हुए जब नैमन्चा में जीवन देनेवाली नमी आनी शुरू हुई और मेहनतकशों के इस मुहल्ले को नया जीवन मिला। लोगों के दिल में दिल आया। पहली बार नयी सत्ता ने उन्हें बताया कि उनका धन्धा श्रद्धायोग्य है और साहूकारों का धन्धा नीच और खोटा है।

पुरुष बुनकर एक सहकारिता में एकजुट हुए जिसका नाम उन्होंने लाल सूती वस्त्र मज़दूर सहकारिता रखा।

लेकिन क़ुद्रतुल्लाह इस पहले आघात से ढेर नहीं हुआ। वह एक साहूकार था और नयी आर्थिक नीति के अन्तर्गत निजी रोज़गार देने वाला, नयी आर्थिक नीति का पालनकर्त्ता बन गया। उसने ताशक़न्द के शैख़ान्ताहूर हिस्से में रहनेवाले सईद्वक़्क़ास नाम के एक पोशाक बेचनेवाले को भाड़े पर रख लिया और मशीनों को नैमन्चा की अपनी कारवाँसराय में भेज दिया जहाँ उसने एक काफ़ी बड़ा-सा वर्कशॉप लगा लिया। पुरुष सहकारिता में काम करने जाते लेकिन औरतें घर पर ही रहतीं। महिला जुलाहिनों, ख़ास कर कारीगरों की विधवाओं को क़ुद्रतुल्लाह के यहाँ काम मिल गया।

कारवाँसराय किसी समय सड़क पर भीड़-भाड़ से भरी रहनेवाली लेकिन अब बेकार पड़ी दो पनचक्कियों के क़रीब थी। जब पनचक्कियाँ चालू

थीं, बुरी तरह लदी हुई गाड़ियाँ ज़ोरों से चर्र-चूं करती हुई, धूल के बड़े-बड़े बादल उड़ाती गुज़रा करती थीं। गाड़ियों को चलानेवाले अपने घोड़ों पर टांगें फैलाये, बैठे-बैठे ही दीवारों के ज़रिये नैमन्चा में ज़िन्दगी के दारुण पहलू को देख सकते थे, जब-तब कोई युवक आंगनों में करघों पर काम कर रही या रूई चुनती लड़कियों का ध्यान खींचने की मंशा से अपनी तेज़ आवाज़ में गाना गा उठता। लेकिन अरीक़ * सूख गये, पनचक्कियाँ बेकार समझकर छोड़ दी गयीं, यहाँ तक कि उनके नाम भी लोग भूल गये और इस जगह का नाम क़ुद्रतुल्लाह के नाम पर नयी आर्थिक नीतिवाले आदमी का वर्कशॉप पड़ गया।

गली के साथ-साथ लगी एक लम्बी नीची इमारत की दीवार थी। सरकण्डों की बनी छत आँगन की ओर झुकी थी और उस पर सामान का पलस्तर** चढ़ा था। गली के सामनेवाली सादी और खिड़की-रहित दीवार की सफ़ेदी की गयी थी। इसने और इमारत की लम्बाई ने मुहल्ले में वर्कशॉप को ध्यानाकर्षक बना दिया।

फाटक हमेशा पूरी तरह खुले रहते। उनके पास ही बंधे पानी का एक बड़ा-सा डबरा था जिस पर हरी-हरी काई फैली रहती। यह डबरा कभी नहीं सूखता, यहाँ तक कि जून के गर्म महीने में भी। कीचड़ से लथपथ लकड़ी के एक टुकड़े का किनारा जो क़ोक़न्द गाड़ी के भारी पहियों के दबाव से बाहर उभर आया था, पानी के बाहर निकला रहता। वहाँ कभी एक पुल था। एक पुराना शहतूत का पेड़, जिसका तना उस ओर से छिल गया था जिधर से गाड़ियाँ गुज़रा करती थीं, डबरे के ऊपर छाया फैलाता और इसकी कटी हुई लकड़ी की तरह सूखी मज़बूत शाखाओं से रूई के टुकड़े लटकते रहते।

आँगन में लम्बे शामियाने के नीचे एक गाड़ी थी जिस पर खपचों की टोकरियों में रूई भरी रहती, पास में ही रस्से से बंधा एक क़ुम्मैत घोड़ा, घोड़े की लीद में मिले मुट्ठी भर हरे तिपतिया चारे को नथुने फुला कर सूंघ रहा था।

वर्कशॉप के अन्दर आते समय आँगन में एक रस्से पर लटकते बहुरंगे

---

* अरीक़ – पानी निकासी के लिए छोटी नाली।

** सामान का पलस्तर – भूस मिली मिट्टी।

धागों के लच्छों से बचने के लिए अपना सिर झुकाना पड़ता। अन्धेरे हॉल से एक दरवाज़ा दायीं ओर और दूसरा बायीं ओर जाता। बायीं ओर हवा लगातार आटे जैसी सफ़ेद धूल से भरी रहती जबकि दायीं ओर से कभी न ख़त्म होने वाली खड़खड़ाहट की आवाज़ आती रहती।

जब कभी दायीं ओर का दरवाज़ा खुलता खड़खड़ाहट की आवाज़ कानों को बहरा कर देती। यह बुनकरों का खाता, दुकानख़ाना था।

फ़र्श गन्दी भूरी ईंटों का बना था। छत में छोटे-छोटे छेदवाली एक मात्र खिड़किया थी जिस पर तेलही काग़ज़ चिपकाये हुए थे। नौ करघों में से हरेक के ऊपर एक छेद था लेकिन पीले तेलही काग़ज़ के पार रोशनी बड़ी मुश्किल से और सिर्फ़ तानों के आर-पार तेज़ी से आगे-पीछे चलते हुए बुनकरों के हाथों पर पड़ती।

खाते में केवल एक आदमी करघों के बीच ख़ाली संकरी जगह से, आराम के साथ टूटी हुई चर्ख़ियों और पुरानी, सरकण्डे की बनीं फिरकियों को ठोकरें मारता, इधर-उधर घूमता-फिरता। जब-तब वह किसी करघे के पीछे रुक जाता और सख़्त अंगुलियों से ताने के आर-पार कसकर फैलायी गयी भरनी के हल्के-हल्के चमक रहे धागों को छू लेता। कभी-कभी वह किसी जुलाहिन की किसी ताँत से बाहर निकल आये धाड़े को उठाने में मदद करता।

इस दाढ़ी-रहित आदमी की मौजूदगी में जुलाहिनें बिना अपने परंजों के, नंगे चेहरे काम करतीं। वे उस पर कोई ध्यान नहीं देतीं। वह उस्ताद था लेकिन उसके पीठ-पीछे उसे सुखट्टा मख़सूम कहा जाता। उसके मुर्दों जैसे सफ़ेद चेहरे पर जो थोड़ी-सी भी ठंड से नीला पड़ जाता, चुहिया-जैसी लाल-लाल आँखें थीं। जहाँ भौंहें होनी चाहिए थीं, वहाँ थोड़े से लाल रंग के बाल बच रहे थे।

कहते हैं, वह मुर्दे धोया करता था और बड़े आत्मसम्मान के साथ। वह अपने धन्धे का उज़बेकी नाम युगूची पसन्द नहीं करता और न ही ताजिक नाम मुर्दाशू उसे ख़ुश कर पाता। वह चाहता, लोग उसके लिए अरबी शब्द ग़स्साल का इस्तेमाल करें। उसका ख़्याल था कि इसमें एक सम्मानजनक ध्वनि है। जब कसाई के नाम से पुकारा जानेवाला निर्दय बूढ़ा अब्दुरजब मर गया, मख़सूम ने एक पूज्य इशान के सामने उसके गुनाह क़बूल किये और इसकी बदौलत प्रभावशाली बायों के समाज में

उसकी पहुँच हो गयी। कसाई (मख़सूम ने मृत व्यक्ति के गुनाहों के साथ-साथ इसे भी अपना लिया था) से जो जायदाद उसे विरासत में मिली, उसने उसे ख़ुद क़ुद्रतुल्लाह के नज़दीक आने का और बाद में उसका विश्वासी सेवक बनने का मौक़ा दिया।

मख़सूम ने सोत्साह अपने नये कर्त्तव्यों का पालन किया। वह अपने मालिक के हितों की सावधानी से रखवाली करता और उसके साथ बातचीत में सम्मानपूर्वक अपनी आवाज़ नीची कर लेता:

"क्या हुक्म है, मालिक?" वह कहता।

इधर कुछ दिनों से सुखट्टा मख़सूम ख़ामोश-सा हो गया था। वह जुलाहिनों को डाँटना-फटकारना, अपने पाँव पटकना चाहता। वह औरतों की आँखों में, चाहे क्षण भर के लिए ही सही, भय की रेखा देखना चाहता था। उनके थके, शान्त चेहरे उसे झुंझला देते। लेकिन उसे अपनी मरज़ी चला पाने की हिम्मत नहीं होती। सोवियत क़ानून के अन्तर्गत जुलाहिनें आठ घण्टे काम करतीं और नियमित रूप से अपनी मज़दूरी पातीं। फिर वर्कशॉप में अब किसी उस्ताद की क्या ज़रूरत।

मख़सूम के अधिकार और कर्त्तव्य बदल गये। मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ में जुलाहिनें उसे खाते के बारे में मुंह चबा-चबा कर बातें करते, अनाख़ाँ के करघे के पास बार-बार रुक कर खड़ा होते और औरतों की आपस की बातें चुपके से सुनने की कोशिश करते देखतीं।

आज वह दो बार अनाख़ाँ के करघे के पास रुक चुका है, तानों की बल्ली को अपनी जगह बनाये रखने वाली कील पर अंगुली फेरते हुए, बाने को छूते हुए... लेकिन जैसे ही अनाख़ाँ ने उसकी ओर देखा, उसने दो अंगुलियों में अपनी नाक पकड़ ली, उसे सिड़ोका और चलता बना। क्या उसने ऐसा यह दिखाने के लिए किया था कि वह मज़दूरों से ऊपर का आदमी है? कुछ नहीं कहा जा सकता क्योंकि उसकी नाक हमेशा बहती रहती।

दोपहर में सुखट्टा मख़सूम तेज़ी से उस जगह से चला गया जहाँ चर्ख़ाँ कातनेवाली औरतें काम करती थीं और चर्ख़ियों से निकलता शोर थमना शुरू हो गया। जुलाहिनों में सबसे छोटी और सबसे हँसमुख हाजिया अपनी बेंच से उठ खड़ी हुई।

"आओ लड़कियो, थोड़ा दिल बहला लें।" वर्कशॉप में जवान और

वूढ़ी सब को लड़कियाँ ही कहा जाता। "सुखट्टा इतनी तेज़ी से क्यों भागता है?"

"उसे क्यों नहीं भागना चाहिए?" एक अधेड़ औरत क़ुम्रि, जिसके गाल की हड्डियाँ उभरी हुई थीं, बड़े-बड़े दाँत थे और ज़बान भी तेज़ थी, बोल उठी। वह हाजिया की बग़लवाले करघे पर काम करती थी। "वह आसानी से दौड़ता है, लड़कियो, यह सच है। लोग कहते हैं, क़ुद्रतुल्लाह ने उसे बहुत पहले बधिया बना दिया है।"

औरतें हँस पड़ीं और यहाँ तक कि बहुत कम बोलनेवाली रिज़वान भी मुस्करा पड़ी।

"अरे, शरीर कहीं की, काश, तुम्हारी उम्र दराज़ रहे! तुम लोगों ने उसे कितना शर्मिन्दा किया है। क्या पता, कब बेचारा मर जाये!"

यह बिरला दिन था जब रिज़वान मुस्कुरायी थी। वह सुखट्टे और उसके मालिक से नफ़रत करती थी जिसके साथ उसके जीवन के बेहद कड़वे और दुखपूर्ण वर्ष जुड़े थे। उस समय को वह कभी नहीं भूल पाती जब क़ुद्रतुल्लाह एक साहूकार था। सुखट्टा मख़सूम पेशगी लाया करता। कितनी दोस्ती जगाया करता था वह। उसकी ज़बान से ऐसे मीठे शब्द निकला करते कि साँप भी लुभा कर अपनी बाँबी से निकल आये, लेकिन हर जुमे को वह तैयार बोज़ लेने आता, तब उसे इसकी कोई फ़िक्र न होती कि उसने बोज़ ज़िन्दा से या मुर्दे से लिया।

चाची रिज़वान के मरहूम पति सुलतान को अस्सी का होने के बावजूद काम करना पड़ता था और वे असाधारण कारीगर माने जाते थे। उनका बनाया चोग़ों का धारीदार कपड़ा, अलाचा नैमन्चा में मशहूर था। हमेशा हुनरमंद कारीगरों के फ़िराक़ में रहनेवाले क़ुद्रतुल्लाह ने सुलतान के पास अपना सेवक भेजा। सुखट्टा मख़सूम कारीगर के घर पर हाज़िर हुआ और ऐसे दरवाज़ा खटखटाया जैसे किसी बाय का घर हो। मुस्कराते हुए बढ़ा-चढ़ा कर उसने हुनरमंद कारीगरों के प्रति अपने मालिक के प्रेम और अत्यन्त श्रद्धा के बारे में बताया। सुखट्टा बातचीत में माहिर और आग्रहपूर्ण था। बातचीत में उसने संकेत दिया कि कहाँ उम्दा धागा सस्ते में पाया जा सकता है और हाँ, उसने बूढ़े उस्ताद को तो मना ही लिया।

और थोड़े ही दिनों में नैमन्चा के बहुत से दूसरे लोगों की तरह सुलतान ने ख़ुद को साहूकार के क़र्ज़ में डूबा पाया।

सुखट्टा हर जुमे को आ कर बोज़ की एक गठरी ले जाता, जबकि बूढ़े का क़र्ज़ हफ़्तावार बढ़ता ही जाता। उसकी ताक़त कमती गयी। वह करघे पर थककर चूर हो जाता। लेकिन सुखट्टा मख़्सूम का व्यवहार कठोर से कठोर होता गया और आख़िरकार एक समय ऐसा आया जब उसमें और पत्थर में कोई फ़र्क़ नहीं रह गया। वह घर में जा घुसता और चीखता:

"मैं तुम्हारा करघा ले जाऊँगा! मैं तुम्हारा घर बेच दूंगा!"

सुलतान उन जुमों से ख़ौफ़ खाने लगा।

उसके सीने में दर्द था। उसे दमघोंट खाँसी आती और उसकी निगाहें उसे धोखा देने लगी थीं। बूढ़ा कारीगर मोमबत्ती की धुंधली रोशनी में अपने सीलन भरे कमरे में रातों को बैठा बोज़ बुनता रहता। उसमें तानों को कसने, संतुलन का काम करनेवाले पत्थर को उठा सकने की भी ताक़त न रह जाती। बुरी तरह थक कर वह करघे पर गिर पड़ता और बहुत देर तक सफ़ेद बालोंवाले अपने लटकते सिर को ऊपर नहीं उठा पाता।

एक शाम रिज़वान अपने पति के लिए टोकरी भर सरकण्डों के परेते ले आयी। वह बेंच पर अपना चेहरा बाने में छुपाये बैठा था। रिज़वान ने उसे उठने में मदद दी। वह किसी बहुत चले घोड़े की तरह ज़ोर-ज़ोर से और रुक-रुक कर साँस ले रहा था।

"एर्गश के बापू, चलो तुम्हें लेट जाना चाहिए। तुम बुरी तरह थक गये हो।"

"नहीं। कल जुमा है," बेंट के लिए अपनी अंगुलियाँ फैलाते हुए बूढ़े ने जवाब दिया।

"काश, उन्हें मौत आ जाये! हमारे पास है क्या जो ले जायेंगे।"

"करघा, री बुढ़िया! उन्होंने करघा ले जाने की धमकी दी है।"

करघे से वंचित होने का मतलब था, गले से भिखारी का झोला लटका लेना। सच तो यह था कि करघा और मकान, दोनों मिला कर भी साहूकार का बड़ा क़र्ज़ अब वे पूरा नहीं कर पाते। बूढ़ा-बूढ़ी ख़ौफ़ के साथ सोच रहे थे कि वे अपना क़र्ज़ उतारे बिना मर जायेंगे और उनके इकलौते बेटे एर्गश को ज़िन्दगी भर बाय की गुलामी करनी होगी। बूढ़े को काम करते ही रहना होगा—कोई चारा न था। रिज़वान ने मोमबत्ती ऊँची जगह पर लगा, चुपचाप बाहर निकल गयी।

रिज़वान को नीन्द नहीं आयी और उसने रात ख़ुद को भला-बुरा कहते काटी। लेकिन वह अपने ग़रीब, नेक पति को मदद दे भी क्या सकती है? क्या सवेरे स्नेह से उसे तसल्ली दे? होशियारी से उसके चोग़े पर पैवन्द लगा दे?

एर्गश किसी गाँव में राजमिस्तरी के अधीन सिखुआ बन गया था और मिट्टी की दीवारें बनाया करता था। वह हफ़्ते में एक बार आता और कमरबन्द की तहों में चार चाँदी के सिक्के लाकर अपने माँ-बाप के दिल ख़ुश कर देता। लेकिन न जाने अब वह कहाँ है? वह घर क्यों नहीं आया था?

ताने के आर-पार दौड़ती फिरकी की हल्की आवाज़ आँगन से आ रही थी। बेचारा बूढ़ा काम कर रहा था, रात भर। यही उनकी क़िस्मत थी। शायद, एर्गश भी काम कर रहा हो... रिज़वान आँसुओं के इसी ताने-बाने में क्षण भर को खो-सी गयीं।

सवेरे उसकी नीन्द एक जानी-पहचानी द्वेषपूर्ण आवाज़ से खुली:

"मैं तुम्हारा घर बेच दूंगा, करघा ले जाऊँगा। मैं क़ुद्रतुल्लाह ख़्वाजा बाय की उदारता को पाँवों तले कुचला नहीं जाने दूंगा। वह तुम्हें बन्दर की तरह नचा देंगे। वह तुम्हारी जान निकाल लेंगे।"

रिज़वान भागी-भागी आँगन में आयी।

चीखता और अपने हाथ हिलाता सुखट्टा मख़सूम उनके छोटे-से वर्कशॉप की दहलीज़ पर खड़ा था। जबकि बूढ़ा कारीगर सुलतान पहले वाले दिन की तरह ही ताने पर अपना सिर टिकाये बैठा था। छत के छेद से रोशनी आ रही थी लेकिन करघे के पास की मोमबत्ती अब तक जल रही थी।

रिज़वान अपने पति के पास तेज़ी से आयी। मोमबत्ती गुल हो गयी। बूढ़े का सफ़ेद चेहरा शान्त था। उसकी खुली आँखें तैयार बोज़ की ओर बेलाग टिकी थीं। बूढ़े बुनकर ने बूते भर अपने बेटे के लिए कर दिया था।

चाची रिज़वान के पैरों तले ज़मीन खिसक गयी और वह "या अल्लाह" कहते हुए घुटनों के बल भहरा पड़ी।

और तब सुखट्टा मख़सूम चुप पड़ गया। वह आँगन से निकल भागा। उसके पीछे करुण, असान्त्वनीय क्रन्दन की आवाज़ आ रही थी:

"मेरे नामुराद! मुझ बेसहारा के अकेले सहारा।" लम्बा, बलवान और धूप से साँवला एर्गश दोपहर में घर आया। वह अजीब ढंग से ख़ामोश था। टूटे दिल से रिज़वान अपने रोटी-दाता पति के लिए विलाप करती रही लेकिन उसका लड़का मानो बुत बन गया था। जनाज़ा उठने तक न तो वह कुछ बोला और न ही आँसू का एक क़तरा गिराया।

अपने बाप की ताज़ा क़ब्र के पास एर्गश ने अपना मौन तोड़ा।

"मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकता, माँ," उसने रिज़वान से कहा। उसके होंठ बच्चों की तरह काँप रहे थे। "मैं इन ख़ून चूसनेवालों से लड़ूंगा। मैं क़सम खाता हूँ, उन्हें हमारे दुख की क़ीमत चुकानी होगी। मैं अपने बाप के ख़ून-पसीने की क़सम खाता हूँ।"

रिज़वान बेबस उसके सीने से चिपक गयी।

उस समय वह नहीं समझ पायी थी कि उसका बेटा कहाँ जाना चाहता था लेकिन अपने दिल में उसने अनुभव किया, जुदाई लम्बी होगी और वह बिना पति के, बिना बेटे के अकेली रह जायेगी।

* *
*

जवान और ख़ूबसूरत नज़ाकत दुकानख़ाना के ठीक दरवाज़े के पास साटन के तानेवाले एकमात्र करघे पर काम करती थी। जब वह चलती, उसकी चोटी में लगे चाँदी के गहने बज उठते। वह भौंहों को एक गहरे हरे ऊस्मा से रंगा करती। यह जड़ी-बूटियों से बना होता। वह उससे अपनी नाक के ऊपर एक चाप-सा खींच देती। अपनी बेंच के नीचे छोटे-से टूटे प्याले में वह हमेशा तैयार ऊस्मा रखे रहती।

छैला कहे जानेवाले खाते-पीते कारीगर नारमत की वह बीवी थी। वह अपनी बीवी को नमनगान से ब्याहकर नैमन्चा लाया था। हालाँकि छैला नारमत के अपने घर में ही एक करघा था, वह अपनी बीवी को क़ुद्रतुल्लाह के यहाँ काम करने भेजता। उस ने ख़ुद मालिक के अनुरोध पर, उन्हें ख़ुश करने के लिए और वर्षों से चले आ रहे अपने बीच के अच्छे संबंधों को मज़बूत बनाने के लिए, ऐसा किया था। नज़ाकत नैमन्चा में अकेली औरत थी जो साटन बुन सकती थी।

हँसमुख और खुशमिज़ाज वह हमेशा अपनी सहेलियों से मज़ाक़ करने को तैयार रहती लेकिन उसके मज़ाक़ आम तौर से बेवक़्त हुआ करते। वह दूसरी औरतों को नहीं समझ पाती। जिन बातों को वह महज़ चुहल समझती, उनके पीछे कौन-सा दर्द, कौन-सी तल्ख़ी है, वह नहीं समझ पाती।

"चर्ख़ी, एकदम चर्ख़ी," नज़ाकत ने कहा। "करता-धरता तो कुछ नहीं, बस दिन भर अनाख़ाँ के पास चक्कर लगाता है। मेरा ख़्याल है, सुखट्टे को ठीक दिल में चोट लगी है।"

हँसी थम गयी। औरतों के चेहरों पर नाराज़गी के भाव आ गये।

"काश, उसके कोई दिल होता, बेटी नज़ाकत," चर्ख़ी में फँस गये धागे को काटते हुए और अनाख़ाँ की ओर देखते हुए रिज़वान ने धीरे से कहा। उसे डर था, कहीं उसकी भावनाओं को ठेस न पहुँची हो?

लेकिन अनाख़ाँ अपने ख़्यालों में डूबी, काम में मशग़ूल थी।

पास के कोने में एक बड़े से करघे पर वह क़मीज़ों के लिए सर्पिंका* बुन रही थी। उन दिनों सर्पिंका की बड़ी क़ीमत थी। इस चौड़ाई का कपड़ा मिस्री रूई से काते धागों से सिर्फ़ बड़े करघों पर ही बुना जा सकता था। नैमन्चा में सिर्फ़ अनाख़ाँ ही ऐसे करघा चलाना जानती थी। नयी आर्थिक नीति वाले क़ुद्रतुल्लाह ने दूसरों को छोड़ कर अनाख़ाँ को बुनने के लिए क्यों रखा, इस के पीछे भी एक कारण था। वह इधर कुछ दिनों से उससे थोड़ा-बहुत भय खाने लगा था। उसने देखा कि जुलाहिनों के बीच उसकी बड़ी क़द्र है और बाय के पास वापस आने के बाद सुखट्टा मख़्सूम अपने मालिक को जो पहली बात बताता, वह अनाख़ाँ के बारे में ही होती: उसके मिज़ाज और महिलाओं से उसने क्या कहा।

क़ुद्रतुल्लाह यह जानकर भयभीत हो उठा कि अनाख़ाँ बिला नागा पुराने शहर में खुले महिलाओं के क्लब में जाती है। अगर वह आज क्लब जाती है तो कल सहकारिता में भी शरीक हो सकती है। हो सकता है, औरतें भी पुरुषों द्वारा क़ायम मिसाल का अनुसरण करें। अगर वह उसे वर्कशॉप से निकाल बाहर करे तो अनाख़ाँ जुलाहिनों को भड़काकर

---

* सर्पिंका – धारीदार या चारख़ानेवाला सूती कपड़ा।

ले जाने से बाज़ नहीं आयेगा। उसे निकाल बाहर करने से कोई फ़ायदा नहीं, और आजकल के क़ानूनों के अनुसार निकाल बाहर भी तो नहीं किया जा सकता –ये अनाख़ाँ और उस जैसे लोगों के क़ानून हैं।

अत: नफ़रत और गुस्से से वह अपने सेवक को बार-बार जताता:

"अपनी आँखें खुली रखो, उसे अपनी नज़र से दूर न होने दो।"

सींग की बनी फिरकी को झुलाते हुए अनाख़ाँ ने इसे सात फ़ुट चौड़े तानों के बीच से गुज़ारना जारी रखा। उसका अचूक निशाना हमेशा अचरज पैदा करता और महिलाएँ प्राय: उसका काम देखने, उसके करघे के पास चली जाया करतीं।

"किसी औरत से इतने सही निशाने की उम्मीद नहीं की जा सकती," क़ुम्रि ने अपना सिर हिलाते हुए कहा।

जब कभी अनाख़ाँ थोड़ी देर के लिए अपना काम बन्द करती, उसके पास आ जुटने की औरतों की आदत-सी बन गयी थी।

यह ज़ाहिर था कि सुखट्टा जल्दी नहीं लौटेगा। फिर अनाख़ाँ को जुलाहिनों के साथ बातचीत करने की जल्दी क्यों न थी?

क़ुम्रि और हाजिया ने कानाफूसी शुरू की। किसी बात पर ज़ोर देते हुए क़ुम्रि ने अपने पास खड़ी लड़की को अपनी कुहनी से टहोका लेकिन वह असमंजस में पड़ी–उसकी बात मानने को तैयार नहीं लग रही थी। आख़िरकार हाजिया राज़ी हो गयी, अपने नीमचा* की जेब में से सफ़ेद काग़ज़ का एक ताव और पेंसिल निकाल धीरे-धीरे अनाख़ाँ के करघे के पास जा पहुँची।

चाची रिज़वान ने हमदर्दी भरी आँखों से हँसमुख लड़की की ओर देखा। लड़कियों के राज़... उन्हें समझना मुश्किल न था। हाजिया चार साल पहले घर से गये रिज़वान के बेटे एर्गश को ख़त लिखना चाहती थी।

माताएँ बूढ़ी हो गयीं और उनके बच्चे जवान। नंगे पाँव दौड़नेवाली नन्हीं हाजिया अब शादी के लायक़ हो चुकी थी जबकि एर्गश एक बहादुर लाल सिपाही था। वह एक बड़ी फ़ौज में काम कर रहा था जिसके नेता, लोग कहते हैं, मिख़ाइल फ़्रुंज़े थे।

---

* नीमचा – बिना आस्तीनोंवाली जैकिट।

वर्कशॉप में अनाख़ाँ के अलावा कोई भी पढ़ा-लिखा न था। उसने महिलाओं के क्लब में पढ़ना-लिखना सीखा था। हाजिया अनाख़ाँ के सामने आ खड़ी हुई, उसका चेहरा पके सेब की तरह लाल हो रहा था, आँखें उठाने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

"जैसा किताबों में होता है, वैसा ही एक ख़ूबसूरत ख़त उसे लिख दो। क्या, तुम्हें ख़ुद मालूम है।"

काग़ज़ और पेंसिल अनाख़ाँ के हाथों में थमा कर लड़की अपने करघे पर भाग आयी।

ख़ुद को रोक पाने में लाचार, चाची रिज़वान ने हाजिया के पास आ कर उसे गले लगा लिया।

"मेरी प्यारी, नन्ही बच्ची... काश, तुम्हारी ज़िन्दगी हमसे ज्यादा ख़ुशहाल हो।"

इतनी ख़ामोशी छा गयी थी कि वे आँगन में सूत चिकना कर रही औरतों का बुदबुदाना, तकुओं की भनभनाहट और छड़ों के पीटने की आवाज़ सुन सकती थीं। धूप छत के ऊपर तैर रही थी और खाते में अंधेरा उतर आया था जैसे सूरज डूब गया हो।

"मुझे ऐसा लगता है अनाख़ाँ, आज तुम अपनी जान बख़्शे बिना काम करती ही जाओगी" रिज़वान ने कहा। "क्या तुम क़ुद्रतुल्लाह को और धनी बना देना नहीं चाहती?"

"चाची रिज़वान तुम्हें मालूम है, मैं अपने काम से प्यार करती हूँ," अनाख़ाँ ने दुख भरे लहजे में कहा। "लेकिन मेरे दिल में इस दुकानखाने जितना ही अंधेरा है।"

"मेरी बच्ची, अनाख़ाँ, सच कहूँ तो मेरे दिल में भी अन्धेरा है। मैं बूढ़ी हूँ फिर भी काम करना चाहती हूँ लेकिन इस तरह नहीं।"

"लेकिन कैसे?" नज़ाकत ने आश्चर्य से पूछा और अतलस का एक टुकड़ा दिखाया जिसे उसने ख़ुद बुना था। "क्या यह काम नहीं? इस में ख़राबी क्या है?"

किसी ने उसके अतलस की ओर नहीं देखा। औरतों ने अनाख़ाँ को चारों ओर से घेर लिया। उसने उनके चेहरों की ओर खोजपूर्ण निगाहों से देखा।

"मैंने महिलाओं के क्लब में समझदार लोगों को कहते सुना है कि

हमारी मेहनत-मजदूरी अब पहले से कहीं भिन्न है। पुराने जमाने में यह सितम थी लेकिन अब आनन्ददायी होनी चाहिए।"

अपने हाथ में चाँदी के रूबल खनखनाते नज़ाकत भी औरतों के बीच आ खड़ी हुई।

"वाह, क्या आनन्ददायी है! यह तो हमें क़ब्रों में भेज देगी।"

"मुझे बताओ, नज़ाकत, तुम काम क्यों करती हो?" अनाख़ाँ ने पूछा।

"क्या तुम्हें नहीं मालूम? मेरा पति चाहता है, मैं काम करूँ। मालिक इसके लिए पैसे दे रहा है।"

"मालिक तुम्हें कौड़ियाँ दे कर, अपनी तिजोरी में रूबलों का ढेर लगाता है। तुम क्या समझती हो, तुम्हारा ख़ान-अतलस*, मेरा सर्पिका और हमारा बोझ कहाँ जाता है? नयी आर्थिक नीतिवाले क़ुद्रतुल्लाह की खटालों और दुकानों में। मुनाफ़ा किसे मिलता है? हम चाहते हैं वह मुनाफ़ा हमारे काम आये, हमारी ख़ुशहाली लाये। हम ख़ुशी से काम करना चाहते हैं, बिना दिल दुखाये।"

बूढ़ी अंज़िरत ने एक दुखभरी, लम्बी उसाँस ली। वह शायद ही औरतों की बातचीत में शरीक होती। दूसरों से थोड़ा परे उकड़ूं बैठी, वह अपनी फिरकी खोले, अपने-आप बुदबुदा रही थी:

"जवानी में पत्थर भी फूलों की सेज लगते हैं लेकिन बूढ़ी औरत के लिए फूलों की सेज क़ब्र की तरह है। यह तुम्हारे लिए है, जवानो। मुश्किल से ज़मीन पर क़दम रखते हैं कि आसमान में उड़ जाना चाहते हैं।"

हाजिया की काली आँखें शरारत से चमक उठीं।

"क्यों अंज़िरत दादी, तुम्हें कुछ नहीं चाहिए?"

"हम सूखे झाड़ू जैसे हो गये हैं और फटे-पुराने महसी** की तरह घिस गये हैं। हमारे लिए और क्या चाहिए, बच्चो? जो कुछ हमारे पास है, बस अलहमदुलिल्लाह ***।"

"अलहमदुलिल्लाह" अंज़िरत का तकिया कलाम था और उसे दादी अलहमदुलिल्लाह के नाम से पुकारा जाता।

---

* ख़ान-अतलस — फूलदार अतलस।

** महसी — घुटने तक का मुलायम चमड़े का बूट।

*** अलहमदुलिल्लाह — ख़ुदा का शुक्र।

"ओह ,दादी अलहमदुलिल्लाह," हाजिया ने कहा, "तुम ज़रूर सफ़र माह के ग्यारहवें दिन, सूअर के साल में पैदा हुई होगी। इस दिन पैदा हुए लोग दुनिया से ग़ाफ़िल होते हैं। वे न तो अपने लिए कुछ चाहते हैं और न दूसरों के लिए।"

"मेरा एक पाँव क़ब्र में है और तुम मुझे एक दिन वहाँ ले ही जाओ-गी। अलहमदुलिल्लाह, लेकिन न मैं कभी लालची बनी, न डाह किया।"

"उसे छोड़ो लड़कियो," बूढ़ी रिज़वान ने ग़ुस्से से कहा। "उसकी बातें मत सुनो! जब ज़िन्दगी है, हम उसे जीने के बारे में सोचते हैं।"

क़ुम्रि मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ में मुस्कुरायी और थोड़ा नसवार अपने मुंह में डाल लिया।

"हम औरतें कर ही क्या सकती हैं? एक ग़रीब विधवा क्या कर सकती है?"

अनाख़ाँ अपनी बेंच से उठ खड़ी हुई। लम्बी और मज़बूत अनाख़ाँ ने स्नेह से हाजिया की ओर मुस्करा कर देखा जो उस की ओर एतबार भरी निगाहों से देख रही थी।

"बहनो, हम सहकारिता चलेंगे!"

"या ख़ुदा!" अपनी बाँह में अनचाहे अपना चेहरा छुपाते हुए नज़ाकत चीख़ पड़ी। "क्या तुम चाहती हो कि हम मर्दों के साथ काम करें?"

"इस सुखट्टे का पाजी चेहरा न दिखाई पड़े, इसके लिए मैं कहीं भी जाऊँगी। काश उसे मौत आये!" रिज़वान ने कहा।

लेकिन दूसरी औरतें अनाख़ाँ को शंका व हैरानी से देखती चुप थीं।

अनाख़ाँ ज़ोर से हँस पड़ी।

"सखियो, हैरान न हो। हमारी महिलाओं की एक अपनी ही सहकारिता होगी।"

तुरंत सभी औरतों ने बातें शुरू कर दीं। हाजिया भाग कर अनाख़ाँ के पास आयी और उसका कंधा चूम लिया। क़ुम्रि ने अपना नसवार नज़ाकत के पैरों के पास थूक दिया।

"तम्हारा छैला नारमत तुम्हें कभी शामिल होने की इजाज़त नहीं देगा, भले ही तुम रोते-रोते मर जाओ। वह तुम्हें किसी वेश्या की तरह शर्मिन्दा करेगा। तुम्हारे बड़े क़िस्से होंगे, मैं तो कहूँगी।"

"हम देखेंगे कहीं तुम्हारे क़िस्से न बन जायें," नज़ाकत ने दाँत पर दाँत जमाते हुए जवाब दिया।

"क्या तुम यह कहना चाहती हो कि हम विधवाओं की ज़िन्दगी भी बेहतर हो सकती है?" रिज़वान ने अनाख़ाँ की कुहनी छूते हुए पूछा।

"एक बड़ी सहकारिता की ज़रूरत है," अनाख़ाँ ने विचारों में डूबी हुई आवाज़ में कहा। "यहाँ हम में से सिर्फ़ कुछ ही हैं। यह बड़ी शर्म की बात होगी, अगर हम नैमन्चा की दूसरी औरतों से इसमें शामिल होने के लिए न पूछें।"

"बेटी, किसने कहा था कि यहाँ सहकारिता होगी? सरकार ने? अगर यही बात है तो क्या तुम समझती हो कि कोई इतनी बेवक़ूफ़ औरत होगी जो शामिल न होगी?"

"बहन ज़ुराख़ाँ ने यह कहा था।"

"ख़ुद ज़ुराख़ाँ ने? औरत जज?"

अनाख़ाँ जो कहना चाहती थी, पूरा करने का मौक़ा ही नहीं मिल रहा था। एकाएक महिलाएँ अपने करघों पर किसी आदेश से बंधी-सी वापस चली गयीं: हाजिया ने दरवाज़े के पीछे सुखट्टे मख़सूम को देख लिया था।

अपनी छोटी, लाल, बदमाशी भरी आँखों को छुपाता, अपने सिर से ऊपर उठाये लकड़ी के एक झुनझुने को हिलाता, वह जल्दी ही अन्दर आया। यह काम बन्द करने का संकेत था।

जुलाहिनें और सूत कातनेवाली औरतें अपने-अपने खातों से निकल आयीं और जल्दी-जल्दी हॉल के एक अन्धेरे कोने में पड़ी परंजी छाँटने लगीं।

"अंज़िरत, क्या यह तुम्हारा है?"

"यह मेरा ही होगा, अगर कॉलर पर पैवन्द लगा है।"

"भाभी आयनिसा, मेरा चचवान * पकड़ा दे।"

"देख, किधर पाँव बढ़ा रही है तू। जवानी में मौत आये," क़ुम्रि ने भारी आवाज़ में कहा। "मैं तुम्हारी कमरबन्द से वे सारे रूबल निकलवा लूंगी।"

---

* चचवान – घोड़े के बाल से बना बुर्क़ा जो परंजी के आगे लगाया जाता है।

"अरी [illegible] की उथली, क्या तेरी गूदड़ का रंग-रोग़न उतर गया या क्या हो गया?" नज़ाकत ने तीखी आवाज़ में जवाब दिया।

औरतें बेतहाशा एक-दूसरे को पिसे डाल रही थीं। आख़िरकार हाजिया ने अनाख़ाँ और चाची रिज़वान की परंजी ढूंढ़ निकाली और भीड़ से बाहर निकल आयी।
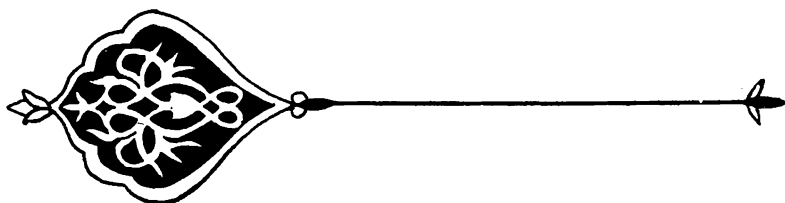
दूसरा भाग

उन दिनों जब किसी औरत को उसके नाम से पुकारना उसे ज़रूरत से ज़्यादा सम्मान देना माना जाता था, कारीगर साबिर की बेवा, इस तरह अनाख़ाँ को पुकारा जाता था। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में नैमन्चा में यह एक बहुत ही सम्मानजनक नाम हो गया था।

सादा, मिट्टी की छतवाला, दो गलियों के नुक्कड़ पर अनाख़ाँ का मकान मुहल्ले की सभी औरतों का ध्यान खींचता। कुछ इसे गर्व और आशा से देखते, दूसरे सावधानी से। जो औरतें इस घर में गयीं, उन्होंने परंजियों के बिना जाना-आना शुरू कर दिया, जब कि कुछ ने अपने बालों को बॉब करा लिया और अपने माथे पर लाल रूमाल लगाने लगीं। औरत जज ज़ुराख़ाँ भी जिसे शहर भर के लोग जानते थे, यहाँ देखी जाती।

अनाख़ाँ अपनी दो बेटियों के साथ यहाँ रहती थी। जीवन उसके लिए एक कठिन संघर्ष था और वह मुश्किल से दो जून की रोटी जुटा पाती थी लेकिन उसके घर की व्यवस्था और स्वच्छता हमेशा सराहने के लायक़ होती।

वह काम से थकी और चिन्तामग्न लौटती लेकिन इसके बावजूद जैसे ही अपनी लड़कियों को देखती और उनसे रोज़ की तरह, "प्यारी मम्मी, क्या हम मेज़ लगा दें?" सुनती, उसका दिल एक उमंग से भर उठता। अनाख़ाँ एक जग से बहुत ही ठंडे पानी से अपना हाथ-मुंह धोती जबकि हवा सब्ज़ियों और मट्ठेवाले चावल के शोरबे की भूख जगानेवाली

ख़ुशबू आँगन में चारों ओर फैला देती। माँ अपने-अपने काम के बारे में लड़कियों की जल्दी-जल्दी बतायी जा रही बातों को सुनती और सोचती: "मेरी नन्ही गृहणियाँ, वे अपनेतया काफ़ी अच्छा कर रही हैं..."

वह घर के काम-काज में शायद ही हाथ बटाती। उसकी लड़कियाँ, ख़ास कर बड़ीवाली, बशारत, उसे घर के काम-काज की परेशानियों से बचा देती। रोज़ की तरह आज भी माँ एक नीची मेज़ के पास जिस पर सफ़ेद बोज़ का एक मेज़पोश बिछा था, खाने के लिए टाँगें समेट कर बैठ गयी। मिट्टी के फ़र्श में खोदे गये एक गड्ढे के ऊपर मेज़ लगी थी, जिसके गिर्द लोग बैठते थे। यह अंगीठी थी और जाड़े में इसमें कोयले दहकते रहते। उस ज़माने में, इस तरह की "अंगीठियाँ" बहुत-से घरों में देखी जा सकती थीं।

इस साल बहार में, जब ख़ूबानी में फूल लगे, बशारत पन्द्रह की हो गयी। वह एकदम अपने बाप पर गयी थी: उभरी-चपटी नाक, गोल, गुलाबी गाल और ख़ूब घनी भौंहें। उसके बाल भी घने थे, जो गहरे काले थे, लेकिन उसने इसे छोटा बना रखा था और उसके सिर के पीछे किसी पूंछ की तरह एक छोटी-सी चुटिया लटकती रहती थी। क़द-काठी से बशारत सुडौल और मज़बूत थी। मोटी होने की वजह से बशारत को अपनी माँ का नीमचा तंग आता और पहनते समय उसके सींवन उघर से जाते।

तुर्सुनाय अपनी बहन से ढाई साल छोटी थी। मख़मल की पुरानी जैकिट की शोभा बढ़ाती उसकी चोटियाँ उसकी कमर तक पहुँच जातीं। पीले लम्बूतरे चेहरे और छोटी नुकीली ठुड्डीवाली तुर्सुनाय अपनी माँ पर गयी थी। लड़की किसी को कड़े या झुमके लगाये देखती तो हसद करती लेकिन उसकी पतली गर्दन और पतले-पतले हाथों में जिनमें नीली नीली नसें दिखाई पड़तीं, गहने नहीं जँचते।

बड़ी बहन शोर करनेवाली, मज़ाक़-पसन्द और सब कुछ जल्दबाज़ी व लापरवाही से करती। अगर घर में कोई भी क्रॉकरी टूटती तो यह निश्चित था कि यह बशारत का काम होता। इसके विपरीत, तुर्सुनाय कम बोलनेवाली, अपनी उम्र से अधिक सोच-विचार करनेवाली और बहुत भावुक थी। कभी-कभी बशारत जब ग़ूज़ापाया * या लकड़ी ले आने

---

* ग़ूज़ापाया — जलावन के काम में आनेवाले कपास के सूखे पौधे।

के लिए छत पर चढ़ जाती तो चीख-पुकार करती ज़मीन पर कूद आती। उसका मक़सद अपनी बहन को डराना होता और यह पूरा हो जाता, तुर्सुनाय पास ही अपनी आँखें बंद किये, कई लमहों तक अपने भय पर क़ाबू पाने में असमर्थ खड़ी रह जाती।

बशारत किसी लड़के की तरह जल्दी-जल्दी और जी भर कर खाती। दूसरों के पहले अपना खाना ख़त्म करके नमदे के नीचे से एक पुराना अख़बार उठा लेती और खोल कर छोटी-सी मेज़ पर रख लेती। चाचा यफ़ीम भी यही करते थे: खाने के बाद वह हमेशा अख़बार पढ़ते। एक लेख पूरे पृष्ठ पर था जबकि अन्तिम पृष्ठ पूरी तरह सिर्फ़ इश्तहारों से भरा था। अख़बार पिछले हफ़्ते माँ महिलाओं के क्लब से लायी थी। बशारत इसे लगन के साथ पढ़ती—एक-एक अक्षर, सुर्ख़ियों से लेकर छापख़ाने के पते तक।

"का-र-ख़ा-नों—कारख़ानों का ना-म..." लड़की बुदबुदा कर पढ़ती, फिर एकाएक तेज़ी से पढ़ती, "लेनिन के नाम पर रखा गया!"

अपनी छोटी-छोटी काली आँखों में चमक भर कर वह अपनी माँ और बहन की ओर मुड़ती। बशारत यह नाम जानती थी। उसने जिस पंक्ति में यह नाम आया था, उसे याद कर लिया था और हर बार जब भी वह उस पंक्ति को शुरू करती, पहले से ही उसके पढ़ने के आनन्द का अंदाज़ लगा लेती थी।

तुर्सुनाय पढ़ने को एक अद्भुत बात मानती थी। लेकिन जब बशारत इश्तहारों वाले पृष्ठ पर पहुँची, तुर्सुनाय बहुत जल्दी ही ऊब उठी।

"बहन, क्या उसमें कोई नज़्म नहीं?" छोटी हथेली पर अपनी ठुड्डी रखते हुए उसने पूछा।

"नज़्म? यह एक अख़बार है। बस तुम्हें सिर्फ़ नज़्मों की फ़िक्र है!"

"अगर नज़्म होती तो मैं एक गाना गाती।"

तुर्सुनाय गाना पसन्द करती थी। कोई भी गीत उसे सुनते ही याद हो जाता। जब वह अँगीठी के पास काम करती होती या आँगन बुहारती होती, गीत गाते जाती। पड़ोसी उसका गाना सुनना पसंद करते। जब नैमन्चा में कोई शादी होती और शादी के गीत चल रहे हों तो वहाँ से तुर्सुनाय को हटाना असंभव था। वह "नन्हा अनार" और "लाले-बद-

ख़शान" पसंद करती। यहाँ तक कि उसने गली में वर्कशॉप के लिए कपास ले जानेवाले गाड़ीवानों के गीत भी सीख लिये थे। लेकिन जब वह अकेली होती, आम तौर से एक उदास गीत गाती, जिसकी शुरू की पंक्तियाँ थीं:

लम्बी-लम्बी रस्सियाँ,
ज़मीन पर पड़ी हैं क्यों?
मेरे प्यारे अब्बा,
पड़े हैं क़ब्र में क्यों?

एक दिन अनाख़ाँ ने अनजाने यह गीत सुन लिया और उसकी आँखें भर आयीं।

"तुम्हारी आवाज़ कितनी दिलकश है, मेरी जान।"

तुर्सुनाय ने खोयी-खोयी आवाज़ में जवाब दिया:

"मुझे अजीब-सा लगता है कि नज़्म लिखनेवाला कैसा आदमी होता है?"

"जब लोग नज़्म लिखते हैं, वे आकाश को ताका करते हैं," बशारत ने विश्वास के साथ कहा, "और वे सोचते जाते हैं फिर एक नज़्म बना डालते हैं। लेकिन किताबें इस तरह लिखी जाती हैं जैसे लेखक ने ख़ुद सब कुछ देखा-परखा हो। तुम जानती हो, माँ, एक किताब है, साफ़िया चाची ने मुझे इसके बारे में बताया था, जिसमें सब कुछ ठीक वैसा ही है जैसा कि हमारे पापा के साथ हुआ था!"

अनाख़ाँ एक चुस्त * टोपी पर किनारी लगा रही थी। उसके थके चेहरे से हँसी उड़ गयी। पापा... इस लफ़्ज़ में कितना दर्द था।

क्या इसी वजह से अनाख़ाँ की आँखों में कोई ख़ुशी नहीं रहती? वह जब हँसती तब भी उनमें दुख के आँसू झलकते होते। बेफ़िक्र बशारत की नज़र इस ओर कभी नहीं गयी लेकिन जज़बाती तुर्सुनाय अपनी माँ

---

* चुस्त – फ़रग़ाना का एक शहर।

की आँखों में यह देख कर अनजाने परेशान हो उठती। "क्या तुम रो रही हो?" कभी-कभी वह धीमे से पूछ बैठती।

"यह सच है!" बशारत ने एलान किया। "मैं कल यफ़ीम चाचा के पास जा कर किताब ले आऊँगी। बिना किसी की मदद के मैं इसे पढ़ूंगी। सच, मम्मी जान?"

"हाँ, मेरी नन्ही बिटिया, हाँ।"

अनाख़ाँ यफ़ीम चाचा का नाम आने पर ख़ुश हो उठी। जब तक यफ़ीम चाचा व साफ़िया चाची हैं, वह और उसकी बच्चियाँ दुनिया में अकेली नहीं।

हँसते, हुल्लड़ मचाते बशारत ने बिस्तर लगाना शुरू किया। तुर्सुनाय को भी वह साथ ले गयी। उन्होंने शोर मचाते हुए दीवार में बने आले से कम्बल और तकिये निकाले, गद्दों के ढेर पर लुढ़कते हुए कलाबाज़ियाँ खायीं और एक-दूसरे की चोटियाँ पकड़ कर खींचीं। फिर लेट गयीं और धीरे-धीरे सो गयीं।

पैराफ़िन लेम्प के शीशे के ऊपर हथेली रख, फूंक मार कर अनाख़ाँ ने उसे बुझा दिया। तभी उसकी निगाहें चाँदनी में नहायी दीवार पर टिक गयीं जिसपर नरम जीन पहने जवान साबिर की एक छोटी-सी तस्वीर टँगी थी।

बुनकर का बेटा और ख़ुद बुनकर साबिर जीवनभर अभावग्रस्त रहा। अपने बाप की तरह ही वह अपने परिवार के लिए भर पेट भोजन नहीं जुटा पाता। जिस दिन पुलिसवाले से उसका सामना होता और वह "चूल्हा कर" की अदायगी की माँग करता और ख़ास कर जब सुबह-सुबह सुखट्टा मख़सूम आ धमकता, उसका दिल ही बैठ जाता और यही चीज़ थी जिसने उसे करघे की ओर देखने से भी बेज़ार बना दिया था।

परिवार अभावग्रस्त रहता। घर में कुछ भी न था और प्राय: परिवार को भोजन के बिना रहना पड़ता। काम की खोज में अनाख़ाँ पड़ोसियों के घर जाती, दिन भर सूत कातती। तुर्रा यह कि साबिर कभी-कभी अपनी बीवी पर झल्ला पड़ता, खाना तैयार नहीं करने के लिए झिड़कता और उसे रोने पर मजबूर कर देता।

वह बेबस ग़ुस्से से उबलता जिसे अपनी बीवी और बच्चों पर उतारता।

एक दिन वह बूज़ा* पीकर नशे में धुत्त घर आया। भड़ाक से दरवाज़ा खोला, ज़ोरदार लात मार कर परेतों की टोकरी उलट दी, और गालियाँ बकता हुआ अनाख़ाँ की ओर बढ़ा। लेकिन उसे मारने के लिए वह ख़ुद को क़ाबू में नहीं ला सका। बच्चे एक कोने में, अपनी माँ के पीछे दुबक गये। अपना सीना पीटता साबिर लौट पड़ा और अपने बाप की विरासत अपने करघे पर लड़खड़ा कर गिर पड़ा। टूटा-फूटा, कमज़ोर, पुराना करघा चरमरा कर टूट गया। नफ़रत में भर कर साबिर ने उस पर थूक दिया। लात मार कर उसने धुरी-कील को अलग कर दिया, करघा दूसरी ओर जा रहा।

लज्जा और निराशा से ऊब-डूब, दूसरे दिन कम्बल से सिर ढाँपे, वह देर तक बिस्तर में ही पड़ा रहा।

उसने अपनी छोटी-छोटी लड़कियों की आँखों में भय और मूक प्रार्थना के भाव पढ़े। उसकी बीवी ने उसे न तो भला कहा न बुरा। "यह सब इसलिए है क्योंकि हम ग़रीब हैं," उसने कहा। लेकिन उसके सब्र से कुछ और नहीं, पीड़ा ही होती। डूबते साबिर को तिनके का भी सहारा नहीं दिखता।

उसने काम करना बिलकुल छोड़ दिया था। टूटा करघा कमरे के बीच में पड़ा रहता। लगातार कुछ दिनों से साबिर एकदम भिनसरे घर से चला जाता और किसी को मालूम न हो पाता कि वह जाता कहाँ है। वह रात में घर लौटता, बिना कुछ बोले सिर तक कम्बल तान कर सो जाता। अनाख़ाँ रात भर धुआँती मिट्टी तेल की ढिबरी की रोशनी में टोपियों पर कशीदे काढ़ती और छह साल की अपनी बेटी बशारत को टोपी पर कशीदे काढ़ना सिखाती।

चूल्हा-चौका बन्द हो गया था। सिर्फ़ एक दिन अनाख़ाँ ने अपने शौहर से बोलने की कोशिश की जब वह घर से कहीं जा रहा था।

"बच्चों के बापू..."

साबिर ने कोई जवाब नहीं दिया। बस दरवाज़े के पास खड़ी दुबली-पतली, दीन-सी तुर्सुनाय के सिर पर हाथ फेरकर वह चला गया।

---

* बूज़ा – जुआर आदि से बननेवाली कच्ची शराब।

शाम को वह बीस-बीस कोपेक के छह सिक्के लेकर आया और उन्हें आले पर रख दिया। उसने अपने घरवालों को नहीं बताया कि यह पैसे उसने कुली का घटिया काम करके कमाया है क्योंकि एक बुनकर के लिए ऐसा काम करना शर्म की बात थी।

"रेलवे वर्कशॉप में मुझे काम मिल जाता है," एक दिन शाम को उसने कहा।

अनाख़ां ने राहत की साँस ली: आख़िर उसके शौहर ने उससे बोलना तो शुरू कर दिया था और वह भी इस तरह जैसे सलाह माँग रहा हो। भला इस से बढ़ कर क्या हो सकता है।

साबिर को रेलवे वर्कशॉपों में काम मिल गया। महीना बीता, फिर साल। साबिर काम कर रहा था! पुश्तैनी बुनकर संतुष्ट था। यह उसकी ख़ुशक़िस्मती थी, वह साहूकारों के जाल से बच निकला था।

ज़िन्दगी पहले की तरह ही मुश्किल रही, लेकिन अनाख़ां ने अपने शौहर में तब्दीलियाँ महसूस कीं। वह अपनी बेटियों से ज़्यादा नरमी से पेश आता। काम से घर आने पर उन्हें रेलवे या इंजन के बारे में सीटी की नक़ल करते हुए बताता। ऐसे मौक़ों पर जब अनाख़ां काम में लगी होने के कारण खाना नहीं बना पाती, वह चूल्हा-चौका में उसकी मदद करता। शाम को जब वह टोपियों पर कशीदा करने के लिए बैठती, उसके हाथ अपने हाथों में ले कर कहता:

"आज के लिए इतना काफ़ी है। अपनी आँखों का तो ख़्याल रखा करो।"

साबिर पहले से ज़्यादा तो नहीं कमा पाता लेकिन अनाख़ां को परेशान नहीं करता। वह सावधानी से काले तेल से चिकटी उसकी पतलूनें और दस्ताने धो देती। तुर्सुनाय और बशारत अपने पिता के काम से घर वापस आने का इन्तज़ार करती रहतीं। इसी कारण जब पिता ने अनियमित समय पर आना शुरू किया तो माँ और बेटियों के मन में खटका हुआ।

कभी-कभी वह आधी रात तक बाहर रहता और छुट्टियों के दिनों में भी घर पर कम ही दिखाई देता। अनाख़ां को विश्वास नहीं होता कि साबिर अपना समय एक शराबख़ाने में बिताता है। असंभव! शौहर से पूछकर वह उसका तौहीन नहीं करना चाहती थी। उसे चिन्तित देख कर उसने ख़ुद बताया:

"मैं अपने कॉमरेडों से मिलने जाता हूँ। वे भले लोग हैं।"

अनाख़ाँ परेशान हो उठी। उसके कान खड़े हो गये। वक़्त ख़राब था। अफ़वाह थी, नये शहर में कोई सौ-एक लोगों ने कुछ बड़े दफ़्तरों पर हमला किया और दरवाज़े व खिड़कियाँ तोड़ दीं और यह भी कि बहुत से हमलावरों को गिरफ़्तार कर लिया गया। लोगों का कहना था कि दो मज़दूरों ने एक पुलिसवाले को गवर्नर जनरल के बग़ीचे में मार डाला। अनाख़ाँ चिन्तित हो उठी। कहीं साबिर ऐसे कामों में न फँस जाये।

"तुम्हारे वे कॉमरेड कौन लोग हैं?" उसने सावधानी से पूछा।

"मेरे जैसे वे भी मज़दूर ही हैं।"

"बच्चों के बापू", अनाख़ाँ ने मिन्नत भरी आवाज़ में कहा, "बस उनसे दोस्ती करने की न सोचना जो पुलिसवालों का ख़ून करते हैं।"

इस बात का साबिर ने न तो बुरा ही माना और न गुस्सा ही किया। बीवी के हाथ अपने तेल की बू भरे रुखड़े हाथों में लेकर उसने नरमी और संजीदगी से जवाब दिया। अनाख़ाँ ने ऐसे शब्द पहले कभी नहीं सुने थे:

"मेरे कॉमरेड पुलिसवालों को नहीं मारते। वे वैसे काम नहीं करते। लेकिन उन्हें ख़ून का डर नहीं। बात जब हमारी क़िस्मत के वारे-न्यारे की होगी वे हिचकिचायेंगे नहीं। वे जानते हैं कैसे जीया जाये। ख़ुद को देखो। तुमने ज़िन्दगी में देखा ही क्या है? पहले तुम्हारे मरहूम अब्बा ने तुम्हें बोझ माना और जल्दी से जल्दी बेच डालना चाहा। निस्सन्देह इसलिए कि वे ग़रीब और नादान थे। फिर मैं जो तुम्हें प्यार करता हूँ, तुम्हें ठीक से खिला भी नहीं सका और अभी भी ऐसा नहीं कर सकता। और तुम, एक नौजवान औरत, टोपियों पर, जिन्हें पहनने की तुम्हारी औक़ात नहीं, कशीदे काढ़ती आँखों की रोशनी गँवा रही हो।"

ख़ुशी और भय से अनाख़ाँ का दिल भर आया। पहली बार उसने अपने शौहर को इतना आत्मविश्वासी, दृढ़ और ख़ूबसूरत पाया था। लेकिन क्या एक मर्द के लिए, किसी औरत के प्रति हमदर्दी दिखाना ठीक था? अनाख़ाँ ने तो ख़ुद के बारे में, अपने सुख के बारे में कभी सोचा ही न था। दुख झेलना तो उसकी क़िस्मत था। ज़माने से औरतें इसी तरह रहती आयी थीं—उसकी माँ, उसकी माँ की माँ...

"ऐसे लोग हैं जो तुम्हारे बारे में, हम ग़रीबों के बारे में सोचते हैं," साबिर ने जैसे उसके विचार भाँपते हुए कहा। "मैं उनसे मिला हूँ और जानता हूँ, वे पुलिसवालों का ख़ून नहीं करते। पुलिसवाला है क्या? एक नादान ग़ुलाम। यह तो वह हाथ है जिसने उसे हमारे ऊपर किसी डण्डे की तरह पकड़ रखा है, उसे काट डालना चाहिए। जब मामला वहाँ तक पहुँचेगा, मेरे कॉमरेड बेधड़क हो जायेंगे! और वह हाथ ज़ार का है।"

अनाख़ाँ भय से सर्द पड़ गयी।

"क्या तुम ज़ार के ख़िलाफ़ हो? बच्चों के बापू, हम बाल-बच्चेदार हैं!"

अपने रुखड़े हाथ से उसके गाल पर ढुलक आये आँसुओं को पोंछते हुए निःशब्द प्यार के साथ उसके शौहर ने उसे अपनी ओर खींच लिया। उनकी बेटियाँ दुनिया से बेख़बर सो रही थीं, गहरी नीन्द में।

"यह सब उन्हीं के लिए है, अनाख़ाँ! भय खाना शर्म की बात है। हम अकेले नहीं। मेरा एक चतुर और विश्वासी दोस्त है। उसे क़ैद या देश-निकाले का कोई डर नहीं। वह साइबेरिया के पालों को भुगत चुका है लेकिन इससे उसका दिल मज़बूत ही हुआ है।"

साइबेरिया के पाले! क़ैद! देश-निकाला! अनाख़ाँ काँप उठी। अपने शौहर को ख़ुश करने के लिए वह जबरन मुस्कराने की नाकाम कोशिश कर रही थी। वह उसके रोम-रोम से प्यार करती थी। भला वह भय पर क़ाबू कैसे पाती?

"मैं यह सब ठीक-ठीक नहीं समझा सकता," साबिर ने कहा। "मेरा दोस्त समझायेगा। वह हमारे यहाँ आयेगा तब उसे देखना। उसका नाम यफ़ीम दनील है।"

"ख़ुदा बचाये! रूसी है?"

साबिर मुस्करा उठा।

"और एक भला आदमी भी है। सेंट-पीतर्सबुर्ग का मज़दूर।"

अनाख़ाँ ने मन में नैमन्चा की सभी औरतों को यह कहते हुए तस्वीर खींची: "अनाख़ाँ ने रूसियों से मिलना शुरू कर दिया है। उसका शौहर शराबख़ाने के अपने यारों को घर लाता है।" लोग साबिर और अनाख़ाँ से कतराने लगेंगे। वे उसे काम देना बन्द कर देंगे। इसके बावजूद

अनाख़ाँ उस आदमी को देखना चाहती थी जिसे उसके शौहर ने अपना उस्ताद बताया था।

यफ़ीम दनीलोविच रात में आये जब नैमन्चा गहरी नीन्द में डूबा था।

दहलीज़ पार करके उन्होंने छोटे से चमकते चूड़ेवाली अपनी टोपी उतारी और उनके मुलायम, हल्के भूरे बाल उनके चौड़े ललाट पर बिखर गये। उनकी लाल-सी मूंछ उनके चेहरे को एक मामूली और ज़ाहिरी तौर पर पुरानी जानी-पहचानी सूरत बना देती। वह साबिर से ज़्यादा उम्र के थे लेकिन जवान दिखाई देते।

अनाख़ाँ चकित थी। उसे किसी भयावने, साइबेरिया के पालों की तरह निष्ठुर, जेलख़ाने की तरह मनहूस और उदास, घनी भौहों और बदले व नफ़रत की आग से जलती रहस्यमय निगाहोंवाले व्यक्ति की उम्मीद थी।

इसके विपरीत आगन्तुक ने भलेमानस की तरह मुस्कराकर सहजता से उसे नमस्कार किया और सब से ज़्यादा अचरज की बात थी, वह उज़्बेक भाषा में बोला था। दहलीज़ के पास उसने सावधानी से अपने भारी बूटों से कीचड़ उतारा। अनाख़ाँ ने बशारत की जैकिट अपने सिर पर डाल ली और उसकी किनारी से अपना चेहरा छुपा लिया। अविश्वास-पूर्वक आगन्तुक की एक-एक हरकत यह अन्दाज़ लगाने की कोशिश करते हुए कि वह अपना रिवाल्वर या चाक़ू कहाँ छुपाता है, देखे जा रही थी।

"आइये यफ़ीम दनील, हम एक-दूसरे से परिचित हो लें। यह मेरी बीवी अनाख़ाँ है," साबिर ने कहा।

अनाख़ाँ ने मुंह छुपाते हुए, अपनी आँखें ज़मीन की ओर टिका लीं।

"बहुत ख़ूब" आगन्तुक ने स्पष्ट पता लग जानेवाले रूसी लहजे में कहा। "अनाख़ाँ। बहुत ख़ूब। रूसी में वह अन्ना हो जायेगा। मेरी बीवी का नाम साफ़िया है या साफ़िया-ख़ाँ जैसा कि आप उसे पुकारेंगे, क्यों? लेकिन वह इवानोवो-वज़्नेसेंस्क में है। उसी नाम का एक शहर है, बुनकरों का शहर – यहाँ से बहुत दूर।"

साबिर ने बड़े संदूक़ के पास सोयी बशारत और तुर्सुनाय की ओर इशारा किया।

"हमारी बेटियाँ।"

"बेटियाँ... बहुत ख़ूब," यफ़ीम दनीलोविच ने हार्दिकता से कहा।

ज़ाहिर था वह उज़बेक भाषा में कुछ और कहना चाहते थे लेकिन कोई बेहतर शब्द नहीं ढूंढ़ सके थे।

"साफ़िया और मुझे कोई बच्चा नहीं। हम अलग-अलग रहते हैं। यह मुश्किल है। लेकिन बहुत कुछ करना है। हम चाहेंगे, बच्चे भी हों।"

अनाख़ाँ पहले से भी कहीं अधिक आश्चर्यचकित थी: इस आदमी में इच्छाएँ थीं, वह समझ सकती थी। क्या ज़ार की ज़िन्दगी और सत्ता पर हमला करने का इरादा रखनेवाले लोग ख़ुद इतने मामूली हो सकते हैं? यह आदमी सच्चा और दयालू मालूम पड़ता है। ऐसे आदमी का भरोसा किया जा सकता है। वह जानता था, ग़रीब क्या चाहते हैं। इसलिए साबिर ने जो कहा था, सच ही था।

अनाख़ाँ जैसी कमज़ोर, बेसहारा औरतों की ख़ुशहाली के बारे में सोचनेवाले लोग भी हैं।

साबिर ने आगन्तुक से बैठने का अनुरोध दिया और वह टाँगें समेट कर बैठ गया।

अधखुले दरवाज़े से उनके लिए प्लैट केक और फल देते समय अनाख़ाँ उनकी बातें ध्यान से सुनती। लेकिन, वे लोग एकदम साधारण रोज़मर्रे की चीज़ों के बारे में बात करते होते। रहस्यपूर्ण बातों की झलक तक न होती।

उसने आगन्तुक को ज़ुराख़ाँ का नाम लेते सुना। उसने यह नाम आदर से लिया था, जैसे किसी ईशान का हो, "वह कौन है? किसकी बीवी है?" अनाख़ाँ ख़ुद सोचती रही, फिर एकाएक उसने महसूस किया कि यह औरत भी उनके कॉमरेडों में से एक थी।

अपनी-अपनी चाय पीकर उसके शौहर और आगन्तुक एक बिना जिल्दवाली किताब पर झुक गये और धीमे-धीमे बातें करने लगे। आगन्तुक ने साबिर को बताया कि मज़दूरों को किसानों का दोस्त होना चाहिए, क्यों, अनाख़ाँ नहीं समझ सकी। फिर उन्होंने गोरे ज़ार और उसी जैसे धूर्त्त राजा विलहम के बीच लड़ाई की बातें कीं, लेकिन रूसी ज़ार को मिटा देने के बारे में कहीं एक भी बात अनाख़ाँ नहीं सुन पायी।

वह कुछ शान्तचित्त हुई। साबिर अपने साथी की बातें खुले दिल से सुन रहा था और पहले से कहीं ज़्यादा सहृदय, बुद्धिमान और सुन्दर लग रहा था।

एकाएक यफ़ीम दनीलोविच ने कहा कि अब उन्हें जाना चाहिए। उन्होंने चाय के लिए अनाख़ाँ का शुक्रिया अदा किया और साबिर को यह कहते हुए रोका, "मुझे छोड़ने जाने की ज़रूरत नहीं, शुक्रिया।" साबिर ने कोई ध्यान नहीं दिया और चोगा पहनने लगा।

"इसका सवाल ही नहीं उठता," यफ़ीम दनीलोविच ने मुस्कराते हुए कहा।

शब्द एक आदेश की तरह प्रतीत हुए और तब कहीं जा कर अनाख़ाँ को अहसास हुआ कि कितने ख़तरे में यह मामूली और दयालु आदमी रह रहा था।

आधी रात कब की बीत चुकी थी। यफ़ीम दनीलोविच जिस तरह आये थे वैसे ही चुपचाप और एकाएक चले गये।

"उस जैसे आदमी को तो छतरी लगी बग्घी पर विदा करना चाहिए, बेचारे को सिर्फ़ रात में बाहर निकलना पड़ता है, चोरों की तरह छिप-कर," अनाख़ाँ ने तीखे स्वर में कहा। "क्या वह फिर आयेगा?"

साबिर उठ खड़ा हुआ। उसकी आँखें चमक रही थीं।

"जब इसकी ज़रूरत होती है वह हिचकिचाता नहीं, वह किसी भी जगह, नज़दीक या दूर, दिन हो या रात, जाता है—चाहे यह कितना भी मुश्किल और ख़तरनाक हो।"

दूसरी बार अनाख़ाँ ने यफ़ीम दनीलोविच को छह महीने बाद देखा। तब वह उनके घर दो दिन और दो रात रुके। अनाख़ाँ को मालूम हुआ कि गोरा ज़ार अब ज़ार नहीं रह गया था और बुरे लोगों ने दूसरे ज़ार को गद्दी पर बैठाने की कोशिश की थी। लेकिन लोगों ने बिना किसी ज़ार के रहने का फ़ैसला किया था।

उस बार साबिर और यफ़ीम दनीलोविच दोनों ने क़समें खायीं। हर चीज़ में, जिसके बारे में उन्होंने बातें कीं—रेलवे, वर्कशॉपों, बाज़ार, शराबख़ाने, पुलिसवालों—उन्होंने कुछ बेहूदगी, बेवक़ूफ़ी, बेइंसाफ़ी और ओछापन पाया जो लोगों के लिए अपमानजनक था। ऐसा लगता मानों वे ख़ुद आनन्द भरे, परीकथा के देश सुसम्बिल से आये हों और आस-पास की कोई भी चीज़ उन्हें ख़ुश न करती हो, सब कुछ बदल डालना हो।

यफ़ीम दनीलोविच ने बन्दूकों और मशीनगनों के बारे में कहा। उनकी

ग्रावाज़ में ग़ुस्सा था। साबिर की ग्राँखों में भी ग़ुस्सा था। इस बार ग्रनाख़ाँ यह मान कर शर्मिन्दा थी कि उसे भय सता रहा था।

यह पता चला कि मदरसे में पढ़ानेवाला ईशान का बेटा महमूद नईमी शहर की म्युनिसपल कौंसिल का सदर बन गया।

"ठीक है, वे ज़्यादा दिन हुकूमत नहीं कर पायेंगे," यफ़ीम दनीलो-विच ने कहा ग्रौर ग्रपने सीने पर ग्रपना हाथ रखा। "हमारी हुकूमत यहाँ है।"

उसने सावधानी से ग्रपनी ग्रन्दरूनी जेब से एक काला, चमकता हुग्रा मॉसेर निकाला। ग्रनाख़ाँ खिसक ग्रायी। पहली बार उसने एक इतना ख़ौफ़नाक हथियार देखा था ग्रौर वह उससे भयभीत थी।

यफ़ीम दनीलोविच ने ग्रपनी बीवी का भेजा एक ख़त पढ़ा। साफ़िया ने इवानोवो-वज़्नेसेंस्क में बुनकरों की स्थिति के बारे में लिखा था। यफ़ीम दनीलोविच ने ख़त के बारे में ग्रपने ढंग से बताया ग्रौर जो कुछ पढ़ा, उसका ग्रानन्द लिया। बात-बात में उनकी बीवी ने उन्हें सूचित किया था कि रूस में, बड़े-बड़े नगरों में ग्रौर कारख़ानों व मिलों में मज़दूर छिपे तौर पर हथियारबन्द हो रहे थे।

ग्रनाख़ाँ साफ़िया के बारे में सोचने लगी। कितनी चतुरता से वह ख़त लिख सकती है... लेकिन शौहर से दूर रह कर वह कैसे गुज़ारा करती थी? शायद वह उनकी कमी महसूस कर रही थी ग्रौर चिन्तित थी। ग्रनाख़ाँ इस ग्रौरत की साफ़-साफ़ तस्वीर तो नहीं खींच सकी लेकिन उसके प्रति उसे ग्रपनी बहन जैसी हमदर्दी हो रही थी।

तीसरे दिन सवेरे-सवेरे यफ़ीम दनीलोविच सो रही तुर्सुनाय को चूम कर चले गये।

साबिर उनके साथ गया।

उसके बाद के दिन ख़त्म होते ही नहीं जान पड़ते ग्रौर ग्रनाख़ाँ के लिए वे ग्रातंकपूर्ण थे। शाम को बेटियों को सुलाकर ग्रनाख़ाँ दिल में कसक लिए ग्रपने शौहर का या उसके बारे में किसी बुरी ख़बर का इन्तज़ार करती बैठी रहती। साबिर कभी-कभार रोटी ले कर ग्राता ग्रौर फिर जल्दी ही चला जाता। वह कठोर दिखाई देता ग्रौर ग्रनाख़ाँ उससे कहते झिझकती: "मेरे प्यारे, बच्चों के साथ खेलो। इससे तुम्हारे लिए वहाँ, ख़तरे में ग्रासानी रहेगी।"

उसे दरवाज़े पर विदा करते समय वह ख़ुश दिखाई देने की कोशिश करती।

"अगली बार अब्बा अपनी लड़कियों के लिए क्या लायेंगे?"

"मैं एक नन्हा सितारा, नन्हा लाल सितारा लाऊँगा!" साबिर ने जवाब दिया।

वह अपनी बेटियों और बीवी को गले लगाना चाहता। वह जानता था कि हो सकता है फिर न लौट पाये। लेकिन वह उनके दिमाग़ में डर नहीं पैदा करना चाहता था। इसलिए अलविदा कहे बिना, ख़ुशी-ख़ुशी हाथ हिलाता चला जाता।

वह कभी नहीं लौटा। वह काम करने रेलवे वर्कशॉप गया। लेकिन यह वह काम नहीं था जो वह शाम को बशारत और तुर्सुनाय को बताया करता था। यह वह काम था जो इतिहास बना रहा था और जिसे उन दिनों लाखों लोग कर रहे थे।

समय अधिक से अधिक खलबली भरा और ख़तरनाक होता जा रहा था। लोग कहते, नये शहर में घुड़सवार सैनिक सड़कों पर घूम रहे हैं और लोगों को अपने-अपने घरों में घुसे रहने को मजबूर कर रहे हैं। यह भी अफ़वाह थी कि नैमन्चा का पुलिसवाला जीन का चोग़ा पहन अपना वेष बदल कर रिश्तेदारों के यहाँ छुप गया है और ख़ून से सनी तलवारें लेकर जनरल ताशक़न्द में आ पहुँचे हैं।

रात में अनाख़ाँ पल भर के लिए भी नहीं सो पाती। ऐसी ही एक रात एकाएक गोली चलने की कभी पास आती, कभी दूर जाती आवाज़ से हवा भर उठी। भयभीत बच्चों को अपने सीने से चिपकाये अनाख़ाँ सुबह तक बैठी रही।

सुबह में वह तुर्सुनाय को अपने पड़ोसी के यहाँ छोड़कर बशारत को अपने साथ ले घर से निकल पड़ी।

नैमन्चा की गलियाँ निष्प्राण थीं। बाज़ार से आगे जाकर अनाख़ाँ रुक गयी। आख़िर जाये कहाँ? नये शहर? वर्कशॉप? या घर लौट जाये और धैर्यपूर्वक इन्तज़ार करें? नहीं, वह वापस नहीं लौट सकती। आज ग्यारहवाँ दिन था जब उसने अपने शौहर को नहीं देखा था। उसका दिल आशंकाओं के चंगुल में था।

उसके क़दम ख़ुद-ब-ख़ुद जबरन उसे बढ़ाये ले जा रहे थे। वह आपे

में न थी और यह नहीं देख पायी कि छोटी-सी लड़की, जिसे वह हाथ से घसीटे लिए जा रही थी, उसके साथ मुश्किल से चल पा रही थी, डगमगाती। बशारत जितना तेज़ दौड़ सकती थी, दौड़ रही थी। उसने अपने नंगे पाँवों में चुभते काँटों की भी शिकायत नहीं की। अपनी माँ की न समझ पाती चुप्पी और भटकती निगाह ने नन्हीं-सी लड़की को आतंक से भर दिया था।

वर्कशॉप के फाटक पर हाथ पर एक लाल पट्टी बाँधे, अपनी बेल्ट में हथगोले लगाये, चेचक के दाग़ोंवाले एक नौजवान ने अनाख़ाँ को रोक दिया। उसके साथ उसी तरह की पट्टी लगाये एक और प्रौढ़ रूसी मज़दूर था जिसने कंधे से एक बन्दूक लटका रखी थी।

"यह मज़दूर साबिर की बीवी है," नौजवान ने कहा।

"वह यहाँ नहीं," प्रौढ़ व्यक्ति ने उज़बेक भाषा में कहा। "तुरंत घर लौट जाओ। कहाँ जाने की सोच रही हो? वह फ़ौजी क़िले में है और वहाँ जाने की इजाज़त किसी को नहीं।"

कुछ और सुनने का इंतज़ार किये बिना अनाख़ाँ व बशारत नये शहर की ओर दौड़ पड़ीं।

नैमन्चा की तरह वहाँ की सड़कें भी सुनसान पड़ी थीं। लेकिन जैसे-जैसे अनाख़ाँ और बशारत फ़ौजी क़िले के क़रीब पहुँचती गयीं, उन्हें चेचक के दाग़ोंवाले जवान और बन्दूक़ लिये प्रौढ़ उम्र के मज़दूर जैसे अधिकाधिक लोग मिलते गये। एक सड़क की लट्ठों, गाड़ियों के पहियों, छोटे-बड़े पीपों, बालू और रोड़ी भरे बोरों से नाकेबन्दी की गयी थी जैसे मूसलाधार बारिश के कारण अपने किनारों को तोड़ कर बह आये किसी पहाड़ी सोते को बाँधने का इरादा हो। माँ और बेटी ने नाके का एक चक्कर लगाया। सहसा उनके पीछे घोड़ों की टाप गूंज उठी और शिकार के पीछे सरपट भागते शिकारियों की तरह घुड़सवार तेज़ी से उनके आगे निकल गये। बड़े मकानों की खिड़कियाँ चूर-चूर हो गयीं, फाटकों को तोड़-तोड़कर धज्जियाँ उड़ा दी गयीं और सड़क के बीच में एक मरा घोड़ा पड़ा था जिसपर अभी भी ज़ीन कसी हुई थी।

अनाख़ाँ कभी-कभार ही नये शहर जाती लेकिन उसने पहली नज़र में ही डाकख़ाने को पहचान लिया हालाँकि ऊपर से नीचे तक—उसकी दीवारों में छोटे-छोटे गड्ढे हो गये थे और वे धुएँ से काली पड़ गयी

थीं जैसे आग लगी हो। इसके सामने के तार पोस्ट अगल-बगल अध-गिरे पड़े थे और टूटे-फूटे व उलझे तार ज़मीन पर लहरा रहे थे। पूरी इमारत की एक भी खिड़की साबूत न थी और सड़क की पटरी पर टूटे शीशे के चमकते टुकड़े, ईंटें, लकड़ी के टुकड़े, लोहे की मुड़ी-तुड़ी चादरें और दरवाज़े जिन्हें क़ब्ज़ों सहित खींच निकाला गया था, कूड़े-करकट की तरह पड़े थे।

डाकख़ाने के फाटकों और दरवाज़ों पर हथियारबन्द लोग खड़े थे। उनके कपड़ों से अनाख़ाँ ने जान लिया कि वे मज़दूर लोग हैं। एक बच्चे के साथ एक बुरक़ा ओढ़े औरत को देख कर बड़ी काली मूंछ और अपनी कमर में फटी-पुरानी कारतूस की पेटी बाँधे उनमें से एक ने उन्हें अंगुली से इशारा किया और डाकख़ाने से लगे मकान में ले गया। अनाख़ाँ ने अपनी परंजी के अन्दर से उम्मीद के साथ देखा। लेकिन वह मूंछवाला बस उन्हें सड़क पर बाहर न निकलने के लिए कड़ाई से आगाह करके लम्बे-लम्बे डग भरता चलता बना।

बिना सलाखों की लम्बी-चौड़ी खिड़कियोंवाला यह मकान साफ़ तौर पर एक दुकान था। अब खिड़कियों को काठ की पटरियों से ढँक दिया गया था और विक्रय-खिड़की के साथ पड़ी खरोंच लगी इक्की-दुक्की कुर्सियों के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता था।

शंकित दृष्टि से चारों ओर देखते हुए अनाख़ाँ ने यफ़ीम दनीलोविच को उस कमरे से निकलते हुए देखा जिससे उत्तेजनापूर्ण बहस की आवाज़ आ रही थी। वह नंगे सिर थे और उनके भूरे बाल बिखरे-बिखरे थे। उनकी छोटी चमड़े की जैकिट के बटन खुले थे और उनकी पेटी में मॉसेर लगा था।

माँ और बेटी चुपचाप उनकी ओर दौड़ पड़ीं।

"यहाँ। वह यहाँ है," अप्रत्यक्ष रूप से ज़र्द पड़ते हुए यफ़ीम दनीलोविच ने कहा। "जब यहाँ आ ही गयी हो, अंदर आ जाओ।"

वह उन्हें लोगों से भरे एक छोटे-से कमरे में ले गये। उनमें से ज़्यादातर लोग एक गोल मेज़ के पास जमा थे जिस पर एक बड़ा-सा नक्शा पड़ा था (अनाख़ाँ ने उसे कोई क़ालीन समझा)। कमरे में यफ़ीम दनीलोविच की तरह चमड़े की जैकिट पहने एक दुबली-पतली लड़की कोने में तार भेजनेवाले यंत्र के पास बैठी थी।

"जब यहाँ आ ही गयी हो तो बैठो और कुछ देर के लिए आराम करो," यफ़ीम दनीलोविच ने अपने चारों ओर चिंता भरी नज़रों से देखते हुए धीमे से कहा।

लेकिन तभी टेलीफ़ोन की घंटी बज उठी। यफ़ीम दनीलोविच ने चोगा उठाया। उनके चेहरे के भाव और उनके छोटे-छोटे ख़ुशनुमा हैरत भरे लफ़्ज़ों से अनाख़ाँ ने महसूस किया कि यह कोई ऐसी चीज़ थी जिसका इन्तज़ार वह लम्बे समय से कर रहे थे। कमरे में शान्ति छा गयी। यंत्र के पासवाली लड़की उछल कर पैरों पर खड़ी हो गयी। उसकी आँखें भी ख़ुशी से नाच उठीं। मूंछवाला मज़दूर जो अनाख़ाँ को मकान के अन्दर लाया था, सैनिक अन्दाज़ में रुकता हुआ दरवाज़े पर दिखाई पड़ा। लेकिन वह अपनी ख़ुशी रोक नहीं पा रहा था। उसने अपनी टोपी उछालने के अन्दाज़ में उतारी और दौड़ पड़ा। क्षण भर बाद आँगन से ज़ोरदार "हुर्रा!" की आवाज़ गूंज उठी।

यफ़ीम दनीलोविच ने लड़की को इशारा किया और वह तुरंत ही अपनी कोनेवाली मेज़ पर लौट आयी। कमरे में चहलक़दमी करते हुए उन्होंने रूसी भाषा में कुछ कहना शुरू किया और लड़की सन्देश भेजने लगी। कमरे में हर कोई यफ़ीम दनीलोविच की बात ध्यान से सुन रहा था और लड़की अपनी अंगुलियाँ ऐसे खटखटाये जा रही थी जैसे ड्रम बजा रही हो। अनाख़ाँ ने महसूस किया कि उस अच्छी ख़बर को देश के कोने-कोने में भेजा जा रहा था।

अनाख़ाँ यफ़ीम दनीलोविच की बातों में सिर्फ़ दो शब्द समझ सकी "ताशक़न्द" और "क़िले की रखवाली फ़ौज।" उसका मतलब था: वह फ़ौजी क़िले के बारे में कह रहे थे—उस नफ़रत भरी जगह के बारे में जिससे शहर आनेवाले अनाख़ाँ जैसे लोग कतराया करते। इसके चारों ओर कुछ फ़ुट ऊँचा मिट्टी का धुस्स था जो कँटीले तारों से घिरा रहता। अपने कंधों पर चमकती हुई संगीनोंवाली बन्दूकें लिये सैनिक आम तौर से दीवारों पर दिखाई देते।

परंजी के अन्दर दिल की धड़कनों पर क़ाबू पाने की कोशिश करती अनाख़ाँ ने अपने हाथों से सीने को जकड़ लिया। उसका साबिर वहीं फ़ौजी क़िले में था। यही तो वर्कशॉप के फाटक पर प्रौढ़ मज़दूर ने

बताया था। उसने ऐसा क्या किया था कि उसके कॉमरेड इतने ख़ुश थे?

लाल क्रॉस बना सफ़ेद रूमाल लगाये एक लड़की तेज़ी से कमरे में आयी और यफ़ीम दनीलोविच से कुछ फुसफुसा कर कहा। अपने-आप से कुछ सवाल-जवाब करते उन्होंने आँखें सिकोड़ीं और इस प्रकार उठ खड़े हुए जैसे लड़की के पीछे-पीछे कमरे के बाहर जा रहे हों। लेकिन अनाख़ाँ और बशारत उनकी ओर दौड़ पड़ीं। उन्हें डर था, कहीं साबिर को जाननेवाला यह अकेला आदमी आँखों सें ओझल न हो जाये। उन्होंने बशारत को अपने हाथ से पकड़ लिया और सिर से अनाख़ाँ को अपने पीछे आने का इशारा किया।

दरवाज़े पर वह एकाएक लड़खड़ा गये, बशारत का हाथ छूट गया। लोगों ने उन्हें थाम लिया और क़रीब की कुर्सी पर बैठा दिया। सफ़ेद रूमालवाली लड़की ने यफ़ीम दनीलोविच की जैकिट के अंदर अपना हाथ डाला और उनके बायें कन्धे को टटोला। जब उसने हाथ निकाला, उसकी अंगुलियाँ ख़ून से तर थीं।

"यफ़ीम दनील..."

"यफ़ीम चाचा!" अनाख़ाँ और बशारत चीख़ पड़ीं।

वह सिर्फ़ कमज़ोरी से मुस्कुराये।

लड़की ने अपने थैले से एक पट्टी निकाल कर उनके कन्धे पर लगा दी।

"जल्दी आओ," खड़ा होकर फिर बशारत का हाथ पकड़ते हुए उन्होंने कहा।

वह उन्हें सड़क पर ले आये फिर एक टूटी-फूटी चारदीवारी से होकर ख़ूबानी के पेड़ों के एक झुरमुट में। व्हाँ वे एक छोटी-सी झोंपड़ी में जा पहुँचे।

वहाँ उन्हें एक खुली खिड़की के पास लकड़ी की खाट पर लेटा साबिर दिखाई दिया।

"अब्बा, अब्बा!" बशारत चीख़ पड़ी जिसने औरों से पहले ही उसे देख लिया था।

अनाख़ाँ खाट की ओर दौड़ी और मूक-सी उसके पास घुटनों के बल गिर पड़ी। चचवान जिसे उसने अपने सिर के पीछे हटा लिया था, फ़र्श पर गिर पड़ा।

उसने एकबारगी ही देख लिया कि उसका शौहर और बशारत व तुर्सुनाय का बापू मौत की घड़ियाँ गिन रहा है।

पीले चेहरे पर दाढ़ी बढ़ आयी थी, उसकी आँखें खोयी-खोयी थीं और होंठ सूखे। उसकी आँखें एकटक थीं।

क्या वह देख सकता है? उन्हें पहचान सकता है?

"अनाख़ाँ... बशारत..." साबिर ने लगभग बेआवाज़ कहा।

"अब्बा," बशारत ने कहा। उसकी आवाज़ एक गूंज की तरह थी।

"यफ़ीम दनीलोविच," साबिर बुदबुदाया।

"मैं यहाँ हूँ, साबिर, मैं यहाँ हूँ।"

"क़िला..."

"वह फ़तह हो गया है साबिर, शहर हमारे क़ब्ज़े में है।"

अपनी क्षीण पड़ती ताक़त को बटोरते हुए साबिर ने सिर ऊपर की ओर उठाया। यफ़ीम दनीलोविच और अनाख़ाँ ने कन्धों के सहारे उठने में उसकी मदद की। डाकख़ाने की छत पर फहराता एक लाल झंडा खिड़की से दिखाई दे रहा था।

"अब्बा, वहाँ एक लाल झंडा है। क्या आप उसे देख सकते हैं?"

"मेरी आँखें ख़राब हैं, मेरी लाड़ली। तुम्हारा अब्बा थक गया है।"

यफ़ीम दनीलोविच और अनाख़ाँ की मदद से वह फिर तकिये पर लेट गया। अपनी आँखें बन्द कर उसने अनाख़ाँ का हाथ टटोला।

"साबिर-जाँ!" अनाख़ाँ चीख़ पड़ी, वह अपनी आवाज़ मुश्किल से ही पहचान पा रही थी।

उसे याद नहीं, उसके बाद क्या हुआ।

दूसरे दिन जब उसे होश आया, साबिर अब ज़िन्दा न था। उसके पास ही अपने कन्धे पर सफ़ेद पट्टी बाँधे यफ़ीम दनीलोविच बैठे थे। बशारत जिसकी आँखें रोते-रोते लाल पड़ गयी थीं, उनसे चिपकी हुई थी। पास ही फ़र्श पर अपनी छोटी-छोटी अंगुलियों से अपने बापू की पुरानी टोपी से नन्हा लाल सितारा निकालने की कोशिश करती तुर्सुनाय बैठी थी।

"मम्मी, लाल सितारा, नन्हा लाल सितारा!"
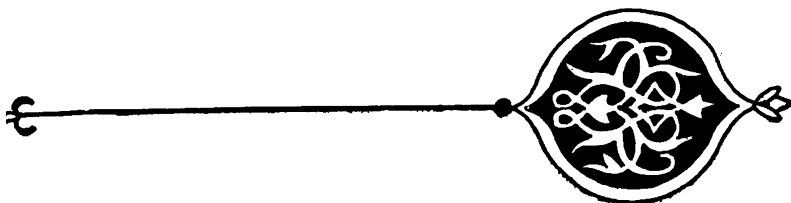
तीसरा भाग

नयी ग्रार्थिक नीति वाले क़ुद्रतुल्लाह् के वर्कशॉप से सटा एक पुराना क़ब्रिस्तान था।

छोटी-छोटी क़ब्रों के ढूह् रात बिताने के लिए ठहर गये ऊँटों की कूब की तरह् लगते। उन में सब से ऊँचा ह्ज़ारशैख़ का मक़बरा था। इसकी जर्जर दीवारों से लेकर गुम्बज़नुमा छत तक को ढँक़ते हुए चारों ग्रोर कंटीली ह्री जंगली झाड़ियाँ उग ग्रायी थीं।

बशारत ग्रौर तुर्सुनाय क़ब्रिस्तान के बीचोंबीच जा सकती थीं लेकिन उन्होंने इसका एक चक्कर लगाया। धूप भरे वसंत के दिन ने लड़कियों को ख़ुश मिज़ाज बना दिया था—वे चलते ही रहना चाह्ती थीं, घास से भरी नालियों के ग्रार-पार छलाँगें भरना, फूल लग ग्राये सेब के दरख़्तों की शाख़ाग्रों तक ग्रपने हाथ बढ़ाना चाह्ती थीं।

जिस शकट-मार्ग पर लड़कियाँ चल रही थीं, उसके दोनों ग्रोर घनी-घनी नागदौना, बथुग्रा, जंगली पुदीना, भटकटैया तथा दूसरी जंगली घासें उगी थीं। धूप तेज़ से तेज़ होती जा रही थी ग्रौर घासों से एक भीनी-भीनी ख़ुशबू ग्रा रही थी। मधुमक्खियाँ ग्रौर सुनह्ले गुबरैले हवा में एक मधुर भनभनाह्ट भर रहे थे।

बशारत ने ग्रपना चेहरा छुपाने के लिए सिर पर पड़ा नीमचा हाथ में ले लिया। उसके गोलाकार चेह्रे का रंग गह्रा हो गया था। यहाँ तक कि नीले कोक्कोज़* ग्रौर पुदीना की माला भी उसे भारी लगने लगी जिसे उसने एक तलैये में फेंक दिया, वह इधर-उधर छितरायी फिर धीरे-धीरे बह्ती हुई दूर चली गयी।

तुर्सुनाय के लम्बे बालों में गुंथी माला बशारत की माला से एकदम

---

* कोक्कोज़—एक किस्म का फूल।

भिन्न थी। तुर्सुनाय ने इसे आक़गुल* की बहुत थोड़ी-सी चाँदी के सिक्कों जैसी पँखुड़ियों और पतली-लम्बी डण्ठलों से बनाया था। बशारत की नज़र इन फूलों पर नहीं पड़ी थी।

"तुम्हारी चमड़ी उधड़-सी रही है। माला फेंक कर सिर ढँक लो," बशारत ने कहा। लेकिन तुर्सुनाय अपनी ख़ूबसूरत माला से जुदा नहीं होना चाहती थी। वह जानती थी, माला उसकी ख़ूबसूरती में चार चाँद लगा रही है। "मैं माला पहने साफ़िया चाची के यहाँ जाऊँगी," उसने कहा, "वह मुझे नहीं पहचान पायेंगी।"

तुर्सुनाय सावधानी से घनी छायादार सड़क पर चल रही थी ताकि उसके शलवार पर धूल न जम जाए। जबकि बशारत किसी छोकरे की तरह चल रही थी—अपने जूतों से गर्म धूल के बादल उड़ाती, दलदल पर क़दम रखती और गड़हियों में छप-छप करती।

ख़ूबानी के पुराने पेड़ों की डालें मिट्टी की दीवारों की छतों पर फैली थीं। ख़ूबानी के फूल झड़ने लगे थे और उन में अँखुवे फूट आये थे। पूरी गली, ख़ासकर दीवारों के साथ लगा रास्ता, सफ़ेद और गुलाबी पँखुड़ियों से भरा पड़ा था। लड़कियों ने पँखुड़ियों से भरी धूल पर अपने पैरों की गहरी छापें छोड़ दीं।

जल्दी ही वे सड़क पर पहुँच गयीं। यहाँ मधुमक्खियों और गुबरैलों की भनभनाहट एकाएक थम गयी। पीपों से लदी गाड़ियाँ पन-पत्थरों पर गड़गड़ाती चली जा रही थीं। जब-तक अपने-आप में खोये लोग सामने से गुज़र जाते। किसी रेल इंजन की तेज़ सीटी की आवाज़ सुनाई पड़ी और धुएँ की गंध फैल गयी। गाड़ियों के टक्कर-रोधी झनझना उठे और कहीं पास से ही प्वाइंट्समेन के भोंपुओं की नकियाती-सी आवाज़ गूंज उठी। हालाँकि यह पहला मौक़ा नहीं था जब वह इन सब चीज़ों को देख रही थी, तुर्सुनाय धुप में चमकती हुई लाल और हरी छतों को अचरज भरी निगाह से देख रही थी।

बशारत ने चमड़े के बालाई जूते डाल लिये और नीमचा से सिर ढँक लिया। तुर्सुनाय ने अफ़सोस के साथ अपनी मुरझा गयी माला को सड़क के किनारे डाल दिया।

---

* आक़गुल—एक क़िस्म का फूल।

रेलवे मज़दूरों के लम्बे, भूरे बैरकों को उन्होंने पार किया। बिना चारदीवारी के आँगनों में नाख़ुशगवार लकड़ी के शेडों और रद्दी पीपों के सिवा कुछ न दिखाई देता। यहाँ-वहाँ पेड़ लगाये गये थे लेकिन उन्होंने जड़ें नहीं पकड़ी थीं। सूखे, काले पड़ गये तनों के बीच डोरियाँ फैलायी हुई थीं जिन पर सूखने के लिए कपड़े टँगे थे।

वे वर्कशॉप के अन्दर गयीं। वे ख़ुद को दिखाना चाहती थीं, जैसे कहना चाहती हों, "देखो हम कितनी बड़ी हो गयी हैं, हमें किसी चीज़ का डर नहीं।" वे जानती थीं, यफ़ीम चाचा इस बात से ख़ुश हो उठेंगे।

पुराने रेल-इंजन वर्कशॉप की ईंट की इमारत में पटरियों पर आड़े-तिरछे खड़े थे। वहाँ चारों तरफ़ गाड़ियों के ज़ंग लगे पहिये और लोहे की कतरनों के ढेर पड़े थे। हाथ में हाथ डाले लड़कियाँ खुले फाटकों से अन्दर गयीं।

उसी समय उन्हें भट्ठियों की सूखी, गर्म हवा का झोंका महसूस हुआ और भारी हथौड़ों के ठन-ठन से उनके कान बहरे हो गये। धुएँ से काला पड़ गये शीशे की असामान्य चौकोनिये छतवाली इस विशाल इमारत की हर चीज़–भट्ठियाँ, हथौड़े, लोग–ज़बर्दस्त ताक़त का प्रभाव डाल रही थी। ऊपर से कमर तक नंगे दो मज़दूर, जिनकी साँवली पड़ गयी पीठें पसीने से झलमला रही थीं, बड़ी-बड़ी संदंशिकाओं में निष्पीड़ित सफ़ेद, गर्म, चमकता हुआ कच्चा लोहा ले जा रहे थे। तुर्सुनाय डर गयी और अपनी आँखें मलते हुए पीछे सिमट गयी जब कि इसके विपरीत बशारत की जिज्ञासा से दमकती आँखें और भी फैल गयीं।

भट्ठी के लाल उदर से आग की एक लम्बी जीभ लपलपा उठी मानो अपने हथियार का वार करना चाहती हो। भट्ठी के पास खड़ा मज़दूर नीचे झुका, फिर निर्भीक रूप से इसके थूपने में एक लम्बा-सा, काला गदाला धकिया दिया जैसे भट्ठी पर ज़बर्दस्त प्रहार कर रहा हो। भट्ठी ने आग की चिनगारियाँ बरसा कर जवाब दिया जिससे बशारत ख़ुशी से झूम उठी।

लड़कियों पर जिसकी पहले-पहल नज़र पड़ी, वह एक लम्बा, दुबला, बिना चूड़े की टोपीवाला आदमी था। वह सिर से पैर तक काले तेल से सना हुआ था।

"अहा, यफ़ीम दनीलोविच के दोस्त," मुस्कान में उसने अपने सफ़ेद दाँत चमकाते हुए कहा। "एक मुसीबत!" मुड़ते हुए, वह चीखा: "फोरमैन! कॉमरेड नदेझ्दिन !"

बशारत की धड़कनें तेज़ हो गयीं। यहाँ हर कोई कॉमरेड है और वे एक-दूसरे की मदद करते हैं। "अगर मैं एक लड़का होती, मैं भी यहाँ काम करने आती," उसने सोचा।

लुढ़कती चाल से, उनकी ओर अपने हाथ फैलाये यफ़ीम दनीलोविच लड़कियों के पास पहुँचे।

साबिर की मौत के बाद बीते वर्षों में उनमें स्पष्ट रूप से अन्तर आ गया था। वह मोटे हो गये थे, ज्यादा बुज़ुर्ग दिखाई देते, उनके सिर के ऊपर हल्के भूरे बाल पहले से कम घने हो गये थे, सफ़ेद उनकी कनपटियों पर चमक रहे थे। हाँ, मूंछों ने अपना पीताभ रंग बरक़रार रखा था।

"तो तुम आ गयीं? मेरी अच्छी लड़किया! अरे, तुम तो बड़ी सयानी हो गयी हो।" तुर्सुनाय को लजाते देख उन्होंने उसे प्यार से गले लगा लिया और बाँहों में लेकर सिर से ऊपर उठा लिया। बशारत की छोटी चुटिया से पुदीने का एक पत्ता निकालकर उसे सूंघा फिर ऐसा दिखाया जैसे ख़ुशबू से उन्हे घुमरी आ गयी हो। लड़कियाँ हँसी से फूट पड़ीं।

"तुम्हारी माँ ठीक-ठाक हैं?"

"जी हाँ, और हम किताब के लिए आये हैं," तुर्सुनाय ने जवाब दिया। "बशारत ख़ुद पढ़ेगी कि यह हमारे पापा के बारे में क्या बताती है।"

"क्या तुम भी इसे पढ़ोगी?"

"मैं इसकी जगह एक गाना गाऊँगी—अपने पापा के बारे में।"

यफ़ीम दनीलोविच ने अपनी मूंछें सहलाते हुए, भौंहें चढ़ायीं।

"तो फिर सीधे मेरे घर जाओ। एक पैर यहाँ है, दूसरा वहाँ! साफ़िया चाची घर पर ही हैं। मैं थोड़ी देर में ही तुम्हारे पीछे आऊँगा।"

कारख़ाने की सीटी बज उठी।

वर्कशॉप के फाटक पर ब्रीफ़केस लिये एक आदमी दिखाई दिया। यफ़ीम दनीलोविच तेज़ी से उसकी ओर बढ़े। बशारत ने तुर्सुनाय को एक ओर कर लिया।

ब्रीफ़केसवाला आदमी नाटे क़द का, बहुत ही झुके कन्धोंवाला था और उसकी बाँहें लम्बी थीं। कैनवस का ब्रीफ़केस जो बड़ा और

किसी तकिये की तरह फूला हुआ था, अपने वज़न से उसे नीचे दबाता प्रतीत हो रहा था। यफ़ीम दनीलोविच के बोलते समय ज़मीन पर अपनी आँखें टिकाये, जब-तब उन पर तिरछी नज़र डाल लेता और जब-जब वह ऐसा करता, छोटी-छोटी झुर्रियाँ उसके चेहरे को ढँक लेतीं।

"वह एक अच्छा मज़दूर है," यफ़ीम दनीलोविच ग़ुस्से से कह रहे थे, "लेकिन उसकी सेहत ख़राब है। वह मुसीबतज़दा है।"

"अगर कोई आदमी बीमार है तो उसकी देखभाल के लिए डॉक्टर हैं। जहाँ तक उसकी अभावग्रस्तता का सवाल है... हम सब मज़दूर हैं, बुर्जुआ नहीं।"

"लेकिन अपनी सेहत उसने मोर्चे पर गंवायी है और उसके बच्चे भी तो हैं!"

कैनवस के ब्रीफ़केसवाले आदमी ने अपने लम्बे हाथों में से एक को ऐसे उठाया जैसे किसी आघात से बचना चाहता हो।

"ठीक है, हम आपकी दरख़्वास्त की जाँच करेंगे।"

पास ही बातें सुनते मज़दूर बोल पड़े:

"यह आप कितनी बार कह चुके हैं! आप कारख़ाना समिति के कैसे अध्यक्ष हैं?"

"मदद की ज़रूरत है! फ़ोरमैन ठीक कहते हैं।"

बशारत ने मन में सोचा कि यह झुके कन्धोंवाला आदमी यहाँ मौजूद लोगों में से न तो किसी को पसन्द करता है और न ही कोई उसे।

यफ़ीम दनीलोविच के पैरों की ओर ताकते हुए हठपूर्वक उसने पूछा:

"मुझे किस लिए बुलाया था? आप क्या चाहते हैं?"

"वर्कशॉप का विस्तार करने और नये साज़-सामान पाने के बारे में हम एक छोटी-सी बैठक करने जा रहे हैं! हम चाहते हैं, आप उसमें मौजूद रहें।"

सन से अपने हाथों के काले तेल को पोंछते हुए, लम्बे, पतले आदमी ने मज़ाक़ उड़ानेवाले अन्दाज़ में कहा:

"उस सवाल की जाँच ज़रूर ही होनी चाहिए। जब हम इसकी जाँच कर लेंगे, हमें फिर इसकी जाँच करनी होगी।"

अध्यक्ष ने चिढ़ के साथ दाँत निपोड़ दिये।

"उस तरह की किसी योजना के लिए आपको पैसों की ज़रूरत है। आप पैसे कहाँ से प्राप्त करेंगे? आप कहेंगे, सरकार से। क्या आप समझते हैं हमारी सरकार के क़ब्ज़े में उपनिवेश हैं जहाँ से उसे सोना प्राप्त हो रहा है? हमारी सरकार मेरे और आपके जैसे ग़रीबों की है। इसे हम जो कुछ दे सकते हैं, हमें देना है। इससे कुछ माँग कर हमें ख़ुद को शर्मिन्दा नहीं करना चाहिए!"

इस बात ने मज़दूरों में खलबली मचा दी। एक बूढ़ा आदमी जिसकी दाढ़ी तम्बाकू के इस्तेमाल के कारण पीली पड़ गयी थी, एक क़दम आगे बढ़ आया।

"अध्यक्ष, मेरी बात सुनिये। आप बार-बार इस बात की रट लगाये जा रहे हैं कि हम मज़दूर हैं, जिसमें आप भी शामिल हैं लेकिन इसके बावजूद आपने मज़दूर को समझना बन्द कर दिया है। यह एक बात हुई। दूसरी बात यह कि हमारी सरकार कोई ग़रीब सरकार नहीं जैसाकि आपने हमें बताने का कष्ट किया। यह मज़दूरों और किसानों की सरकार है! और हमें इस बात से शर्मिन्दा होने का कोई कारण नहीं। अगर हम सरकार से कुछ लेते हैं तो यह ख़ुद से कुछ लेने की तरह है। और अगर हम इन वर्कशॉपों से कोई कारख़ाना बनाते हैं–किसे लाभ होगा? सरकार को! समझे?"

"कारख़ाने के लिए पैसा कौन देने जा रहा है, पख़ोमिच?" अध्यक्ष ने जवाब दिया। "शायद, आप?"

उसका ख़्याल था ठहाके लगेंगे लेकिन यह उसकी ग़लती थी। उसके चेहरे की झुर्रियाँ गहरा गयीं और वह रोने-रोने को हो गया।

"सुनो, साथियो," उस ने गहरी साँस भरते हुए कहा। "इस तरह का कारोबार एक मिनट में नहीं निबटाया जा सकता! हमें सही स्तर पर सवाल उठाना चाहिए, इसे ठीक से तैयार करना चाहिए, जाँच करनी चाहिए..."

"फिर वही राग?"

"आप इसकी जाँच कीजिये और फ़ैसला लेने का काम हम करेंगे।"

"यफ़ीम दनीलोविच, बैठक शुरू कीजिये!"

आश्चर्य से आँखें फैलाये ब्रीफ़केसवाले आदमी ने यफ़ीम दनीलो-

विच को पास के मंच पर किसी जवान की तरह छलाँग लगाते और हाथ उठाते देखा।

"कॉमरेड, आइये, हम लेनिनग्राद के मज़दूरों की मिसाल का अनुसरण करें।"

"वे कभी न ख़त्म होनेवाली बैठकें!" ग़ुस्से से ब्रीफ़केसवाला आदमी चीख़ा। "कोई संगठन नहीं! पुरातन! कोई अनुशासन नहीं!"

"वाह बच्चे," पख़ोमिच ने शान्ति से कहा, "हमने क्रान्ति भी की है। ख़ुद और ख़ुद के लिए।"

उसके बाद से किसी ने भी उस झुके हुए कन्धोंवाले आदमी पर कोई ध्यान नहीं दिया।

यह सब देख कर भयभीत तुर्सुनाय अपनी बहन को उसकी बाँहों से खींचती रही और याद दिलाती रही कि यफ़ीम चाचा ने उन्हें अपने घर जाने के लिए कहा था। बशारत मंत्र-मुग्ध थी। जो कुछ हो रहा था वह उसे समझने की कोशिश कर रही थी। उसे ऐसा लगा जैसे बैठक में मज़दूर भी वही चाहते थे जिसे यफ़ीम चाचा एकदम शुरू से कह रहे थे। वे एक बीमार कॉमरेड की मदद करना चाहते थे जिसने अपनी सेहत मोर्चे पर गँवा दी थी और जिसके बच्चे भी थे। एक-दूसरे की मदद करना, यह मज़दूरों का नियम था। यफ़ीम चाचा ने हमेशा माँ की, तुर्सुनाय की और उसकी, बशारत की मदद की थी। इस के लिए सब जगह उनकी इज़्ज़त थी।

तो बैठक ऐसी होती है, बशारत ने मन में सोचा।

माँ के वर्कशॉप में तस्वीर ही दूसरी होती। ज़्यादातर बुनकर अपने बारे में बातें करते। एक कहती, उसने कम्बल कैसे बनाया, दूसरी कहती, वह जनाज़े के भोज में कैसे गयी, तीसरी कहती, तम्बाकू बेचने वाला कितना लोभी है।

बशारत ने सिर्फ़ एक औरत को यफ़ीम चाचा की तरह बोलते सुना था। वह जुराख़ाँ थी, ऐसी औरत जो परंजी नहीं पहनती। वह एक बार उनके घर आयी थी और बशारत की तारीफ़ उसके पढ़ सकने के कारण की थी और अपने लिए एक गाना गाने के लिए तुर्सुनाय का सिर थपथपाया था। फिर उसने माँ से क्लब के बारे में, ऐसी जगह

जहाँ औरतें बैठकों के लिए आया करतीं और स्थायी दोस्ती क़ायम कर लेतीं, बातें की थीं।

"बशार, चल न, मैं साफ़िया चाची के यहाँ जाना चाहती हूँ," तुर्सुनाय ने लगभग रोते हुए बार-बार कहा।

आख़िरकार बशारत ने बात मान ली। लड़कियाँ वर्कशॉप से बाहर निकल आयीं। फाटक पर बशारत ने चारों ओर देखा। मज़दूर तालियाँ बजा रहे थे और ख़ुश हो रहे थे।

वर्कशॉप में बशारत ने जो कुछ देखा, उसने उसे इस बस्ती की ओर एक अलग नज़र से देखने के लिए मजबूर कर दिया था। इन भद्दे बैरकों में मज़बूत, दयालु और दोस्ती से भरे लोग रहते थे। बशारत ने हर खिड़की को जिज्ञासा से देखा। वहाँ रहनेवाले लोग, सब कॉमरेड थे। इसी कारण वे इतने उल्लासमय थे। लेकिन माँ के साथ काम करनेवाली औरतें हमेशा-हमेशा से रें-रें करनेवाली, क़िस्मत को कोसनेवाली और अपने विलगाव और बेसहारेपन पर गर्व करती प्रतीत होतीं।

अपने दिमाग़ पर छाये इन विचारों में बशारत ने तुर्सुनाय के पीछे छूट जाने का ख़्याल ही नहीं किया। इधर-उधर नज़र दौड़ाते हुए उसने अपनी बहन को बैरकों में से एक की खिड़की से अपना चेहरा सटाये देखा। यह देख वह चकित हो गयी और कुछ क़दम वापस लौट आयी।

खुली खिड़की से गाने की आवाज़ आ रही थी। कल्पना लोक में खोयी, तुर्सुनाय गाने को छोड़ कर हर चीज़ के प्रति अचेत रहती। एक सुन्दर मुस्कान उसके सुकुमार चेहरे पर खेल रही थी।

गीत थम चुका था लेकिन तुर्सुनाय खिड़की के पास ही खड़ी रहना चाहती थी। इस बार जल्दी मचाने की बारी बशारत की थी लेकिन तुर्सुनाय ने उससे इन्तज़ार करने की मिन्नत की – इस उम्मीद में कि गाना फिर शुरू होगा। उसका सारा लजीलापन ग़ायब हो गया लगता।

बैरकों के पास यफ़ीम दनीलोविच लड़कियों से आ मिले।

"यफ़ीम चाचा, इस घर में कौन रहता है?" तुर्सुनाय ने उनसे पूछा।

"इसने तुम्हे जिज्ञासु बना दिया है? यह तो अच्छी बात है।

यह क्लब है और यहाँ के लोग एक संगीत-सभा की तैयारी कर रहे हैं।"

"अदाकार? सच के अदाकार?"

"नहीं। मंडली के सदस्य।"

"कैसी मंडली? क्या मैं पल भर के लिए दरवाज़ा खोल कर देख सकती हूँ? वे ग़ुस्सा तो नहीं होंगे?"

"नहीं," यफ़ीम दनीलोविच ने गम्भीरता से कहा, "लेकिन वे तुम्हें शामिल कर लेंगे और घर नहीं जाने देंगे!"

तुर्सुनाय ने मज़ाक़ को संजीदगी से लिया लेकिन डरी दिखायी नहीं दी।

हँसते हुए, यफ़ीम दनीलोविच लड़कियों को बैरक के अन्दर ले गये।

"तुम ने तो कहा था वे हमें घुसने नहीं देंगे," नृत्य की मुद्रा में अपना सिर हिलाते हुए तुर्सुनाय ने अपनी बहन से बुदबुदा कर कहा। "कहिये, सर्वज्ञा जी!"

उन्होंने अपने को एक कुशादा हॉल में पाया। दूसरे छोर पर एक मंच था जिस पर लाल कपड़े से ढँकी एक मेज़ थी। एक कोने में दो लाल पताकाएँ टँगी थी। एक लाल कपड़ा जिस पर कोई नारा लिखा था, दीवार पर फैलाया हुआ था। लम्बी-लम्बी बेंचों को दीवार से लगा दिया गया था और वहाँ बहुत से नौजवान पुरुष और लड़कियाँ थीं।

तुर्सुनाय और बशारत की मुलाक़ात उसी लम्बे आदमी से हुई जिसे उन्होंने वर्कशॉप में देखा था। उसने अपने कपड़े बदल लिये थे, चेहरे और हाथों से काला तेल धो डाला था और बहुत नौजवान, ज़्यादा से ज़्यादा बशारत की उम्र का दिखाई दे रहा था।

"आइये, आइये," उसने शालीनता से कहा। "आइये, हम एक-दूसरे को जान लें। मेरा नाम अब्दुसमत है। मैं आप लोगों को यहाँ देखकर बहुत ख़ुश हूँ।"

उसने एक बेंच खिसका दी।

"आप एकदम ठीक मौक़े पर आये हैं, यफ़ीम दनीलोविच। यह हमारा पूर्वाभ्यास है लेकिन मुझे नहीं मालूम, इसका क्या नतीजा निकलेगा। अच्छा, तो हर कोई अपनी-अपनी जगह बैठ जायें!"

असल में, अब्दुसमत यहाँ का कर्त्ता-धर्त्ता था। नौजवान पीछे क़तार में खड़े हो गये और लड़कियाँ सामने आ गयीं। किसी फ़िल्मी अन्दाज़ में उन्होंने एक अर्द्धवृत्त बना दिया। जलतरंग बजानेवाले ने अपनी बेंत की छड़ी ऊपर उठा ली। बाँसुरी वादक और खँजरी बजानेवाली लड़की ने अपना-अपना साज़ मिलाया।

अब्दुसमत ने अपना हाथ हिलाया, नाल लगे जूते के नोक से फ़र्श पर ताल दी और गायक-दल ने गाना शुरू कर दिया।

गाने की ज़बर्दस्त लहर से खिंची तुर्सुनाय अपनी जगह से धीरे-धीरे उठ खड़ी हुई। उसने खिड़की से यह गाना सुना था और मुखड़े याद कर लिये थे। फिर अपनी ही बेख़्याली में, बेआवाज़ उसने उज़्बेक जनता के पहले सोवियत कवि – हम्ज़ा के जोश भरे इन शब्दों को दुहरा दिया।

जागो, जागो, शोषकों के शिकार,
वक़्त आ गया है तुम्हारा, प्यारे मज़दूर, ज़िन्दाबाद!
अपनी पकड़ ढीली न करो नयी पायी आज़ादी पर,
करो शाहों और बायों का मुर्दाबाद!

यफ़ीम दनीलोविच ने लड़की को खोज भरी नज़र से देखा। गायकों ने भी उसकी व्याकुलता भाँप ली। जब गाना ख़त्म हुआ गायकदल की लड़कियों ने तुर्सुनाय को घेर लिया।

"क्या तुम्हें गाना पसन्द आया? क्लब में क्या तुम पहली बार आयी हो? तुम्हारा नाम क्या है?"

तुर्सुनाय को लोगों के इस तरह आकृष्ट हो जाने की उम्मीद न थी और वह झेंपकर अपनी बहन के पीछे छुप गयी।

"कितनी बेवक़ूफ़ हो। उन्हें अपना नाम बताओ," बशारत ने उसे झिड़का। "उन्हें बताओ कि तुम्हारा नाम तुर्सुनाय है और तुम ख़ुद बहुत से गाने जानती हो।"

तुर्सुनाय ने पूरी तरह उससे चिपकते हुए अपना चेहरा बहन के नीमचे में छुपा लिया। उसे शान्त करने के लिए, एक लड़की उसके बालों की चोटी बनाने लगी, तुर्सुनाय ने उसे कृतज्ञता भरी आँखों से देखा।

"लजाओ मत। वे सब तुम्हारी बहनें हैं," यफ़ीम दनीलोविच ने लड़की का हाथ थामते हुए कहा, "हम लोगों को एक गाना सुनाओ।"

"मुझे कोई भी नहीं आता," तुर्सुनाय ने धीरे से कहा।

यफ़ीम दनीलोविच ने अब्दुसमत को इशारा किया।

"तो फिर हम सब मिल कर गायेंगे।"

नौजवान लोग यफ़ीम दनीलोविच के चारों ओर जमा हो गये। उन्होंने अपने कन्धे दुरुस्त किये, गहरी साँस ली और एक साइबेरियाई गाना शुरू किया। उनका स्वर कोमल था, जैसे वह ध्यानावस्थित हों।

एक उदार बूढ़ा सागर है अपार बैकाल,
एक उदार बूढ़ा सागर-यान, मेरा पीपा सामन मछली का विशाल!

नौजवान आवाज़ों के समवेत ने सुर पकड़ा:

तेज़ करो लहरों को, उत्तर ओ पूरब की झँझा कराल,
नहीं करना है पार हमें रास्ता इतना विकराल...

गीत ने अतीत के दिनों की यादें जगा दीं। यफ़ीम दनीलोविच की आँखों में एक बार फिर उस सुदूर धरती की, जिससे उन्हें प्यार था, उसके हरे-भरे खेतों और कुहासा भरी सुबहों की तस्वीर घूम गयी और ऐसा लगा जैसे मुश्किलों से भरे उन गौरवशाली दिनों की जब आदमी की हिम्मत की परीक्षा हो रही थी, याद ताज़ा हो गयी हो।

अब्दुसमत और दूसरे नौजवानों ने पूरी तरह निष्ठापूर्वक गाने में साथ दिया। पौरुष से भरा यह गीत बहुत कुछ गायक जैसा ही था।

तुर्सुनाय विश्वासपूर्वक अपनी आँखें चौड़ी किये, साँस रोके फिर निश्चल खड़ी रही। विह्वल यफ़ीम दनीलोविच ने उसे अपनी ओर खींच लिया और ऐसा करते ही उन्हें अपने बायें कन्धे में दर्द महसूस हुआ। लेकिन यह सिर्फ़ एक ख़याल था क्योंकि वहाँ कोई दर्द न था। घाव कब का भर चुका था। बस, एक याद भर था।

"तो हम घर चलें, लड़कियो?" यफ़ीम दनीलोविच ने लम्बी साँस भरते हुए कहा।

"नहीं, नहीं!" तुर्सुनाय ने एकाएक कहा जैसे इस सवाल ने उसे चौंका दिया हो। "मैं भी एक गाना गाऊँगी।" उसने यफ़ीम चाचा के गले में अपनी बाँहें डाल दीं और उनके चेहरे से कसकर अपना ललाट लगा दिया जिससे अभी भी पिघलायी गयी धातु की बू आ रही थी।

बड़े हॉल में शान्ति छा गयी। यफ़ीम दनीलोविच ने तुर्सुनाय को एक कुर्सी पर खड़ा कर दिया।

यह उसकी ज़िन्दगी में सब से बड़ा मजमा था। लेकिन लड़की भयभीत न थी। वह गाना चाहती थी। उसे तो बस यही लग रहा था कि गाना है। अगर लोगों ने उसे इजाज़त नहीं दी होती तो वह रो पड़ती।

उसका कोमल, सिक्त स्वर हॉल में किसी छोटी, चाँदी की घंटी के बजने के समान भर उठा। उसने मुक्तरूप से, सीधे-सादे ढंग से और उल्लासपूर्वक गाया। ऐसा सिर्फ़ कोई निर्दोष शिशु ही कर सकता है। हर शब्द इतने मार्मिक ढँग से व्यक्त किया गया था कि विचलित न होना असंभव था।

फूल सुन्दर खिल रहे हैं
खुशबू उनकी है हवा में।
खिल उठें नौजवां सीने बहार से!
छा जाये बहार सारे जहाँ में!

हाँ, कुछ श्रोताओं को थोड़ा मज़ाक़ जरूर सूझ रहा था। वास्तव में उन्होंने समझा कि किसी तेरह साल की लड़की से "मेरे दिल में बहार खिल रहा है" गीत सुनना कितना मनोरंजक होगा। लेकिन अब श्रोताओं की निगाहों में परिहास का कोई चिह्न तक न था।

और तब काफ़ी देर तक तुर्सुनाय ख़ुद को आलिंगनों और चुम्बनों से अलग नहीं कर पायी जब उसने मानो ख़ुद-ब-ख़ुद सफ़ाई देते हुए कहा :

"यह एक सुन्दर गीत है।"

अब्दुसमत ने बड़ी मुश्किल से फिर शान्ति क़ायम की।

"मैं समझता हूँ, हमें तुर्सुनाय को अपनी मंडली में शामिल कर लेना चाहिए और वह हमारी संगीत-सभा में गायेगी," उस ने कहा। "आप ने उसका उपनाम क्या बताया था?"

"साबीरोवा," यफ़ीम दनीलोविच ने लड़की के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

अपनी पेंसिल की नोक जीभ से गीली करके अब्दुसमत ने लिखा: कॉमरेड तुर्सुनाय साबीरोवा। एकल। "तुम अपना गीत मंच पर गाओगी," उसने कहा।

"सुन लिया?" बशारत ने कुहनी से अपनी बहन को टहोका लगाते हुए कहा। "कुछ बोलो भी।"

"शुक्रिया," तुर्सुनाय ने दबी हुई ज़बान में साफ़ अविश्वास भरी आँखों से अब्दुसमत की ओर देखते हुए कहा।

बाहर, सड़क पर बशारत ने गर्व के साथ अपनी बहन का हाथ अपने हाथ में थाम लिया लेकिन इस गर्व में ईर्ष्या की छुपी हुई भावना भी थी। वे लोग तुर्सुनाय से कितना प्यार करने लगे थे! "कॉमरेड साबीरोवा..." किस बात के लिए उन्होंने उसे ऐसा कहा? गाने के लिए?

"यफ़ीम चाचा, क्या हमें कॉमरेड कहा जा सकता है?" बशारत ने सावधानी से पूछा।

"क्या मतलब है तुम्हारा?"

"तुर्सुनाय या ख़ुद मुझे।"

यफ़ीम दनीलोविच ने स्नेह से उसका गाल थपथपाया।

"क्यों नहीं? कोई भी जो समाज के लिए लाभदायक है और जो अपनी शक्ति भर इसकी सेवा करने को तत्पर है, वह सभी लोगों का कॉमरेड है। तुम्हारे पिता एक मज़दूर थे और उन्हों ने मज़दूरों के लिए अपनी जान दी। तुम्हें उन पर अभिमान करना चाहिए और उन्हीं जैसा बनना चाहिए। तो बात इस तरह है, समझीं, कॉमरेड साबीरोवाएँ!"

कॉमरेड साबीरोवा बहनों ने एक-दूसरे की ओर उत्साह से देखा।

वे उन बैरकों के पास पहुँच गये जहाँ यफ़ीम चाचा रहते थे। बशारत और तुर्सुनाय उनके फ़्लैट पर, जिस में एक कमरा, एक

रसोई, और एक छोटा-सा बरामदा था, प्रायः आती रहती थीं। सच तो यह है कि जब वे बिलकुल छोटी थीं और उनके पिता की मृत्यु हो गयी थी, पूरे साल भर तक यहीं रही थीं।

तभी उनकी मुलाक़ात दयालु साफ़िया चाची से हुई थी। वह तब सुदूर इवानोवो-वोज़नेसेंस्क से आयी ही थीं और अनाखाँ की बेटियों को अपनी ही बेटियों की तरह अपना लिया था। उन्होंने इनका रूसी नाम दिया था वेरा व तान्या और उन्हें साबुन लगाना और काँटे से खाना सिखाया था। जब दुभाषिये का काम करने के लिए उनके पतिदेव पास नहीं होते, साफ़िया चाची शायद ही समझ पातीं कि लड़कियाँ क्या कह रही हैं। तब बशारत ने उनकी सहायता की। वह साफ़िया चाची से कहीं ज़्यादा क़ाबिल साबित हुई। जब तक साफ़िया चाची उज़्बेकी बोलना सीखें, उसने कहीं अधिक तेज़ी से रूसी बोलना सीख लिया। यफ़ीम चाचा के घर पर दोनों भाषाएँ बोली जातीं। जब अनाखाँ अपनी बेटियों को घर ले आयी, लड़कियों को लम्बे अर्से तक साफ़िया चाची की कमी खलती रही।

यहाँ वही छोटा-सा बरामदा था और वही लाल मिट्टी के गमलों में लगे फूल थे। साफ़िया चाची ने अपने पति के पास यहाँ आने के तुरंत बाद ही यह फूल ख़रीदे थे—बस्ती के छोटे-से बाज़ार में वे फूल उनकी पहली ख़रीदारी थे। बरामदा जल्दी ही परिवार के लिए मिल बैठने की मनपसन्द जगह हो गया। वहाँ बशारत साफ़िया चाची की सनसनीखेज कहानियाँ सुना करती जबकि तुर्सुनाय यफ़ीम चाचा के सब से बड़े बालाई जूतों में से एक में कोई गुड़िया रख देती और फ़र्श पर हर किसी से उस के लिए रास्ता छोड़ देने के लिए चीख़ते हुए, घसीटती। बशारत को उससे न जाने कितनी चिढ़ होती! तुर्सुनाय उसे साफ़िया चाची की बातें सुनने में बाधा जो डाल देती।

साफ़िया चाची की अधिकतर कहानियाँ "माँ" नाम की पुस्तक से और मज़दूरों के बारे में होतीं। बशारत को उस पुस्तक से और उन निर्भीक लोगों से जिनका उस में ज़िक्र था, प्यार हो गया था। फिर साफ़िया चाची ने उसके अलग-अलग पृष्ठों व खण्डों को ज़ोर-ज़ोर से पढ़ना शुरू किया। वह इतनी तेज़ी से पढ़तीं मानो पुस्तक उन्हें कंठस्थ हो: बस वह इतना ही करतीं कि अपनी आँख के कोने से

पृष्ठ को देख लेतीं। दिल ही दिल में बशारत को विश्वास हो गया था कि साफ़िया चाची पढ़ती नहीं बल्कि कहानियाँ गढ़ लेती हैं।

जब साफ़यिा चाची घर पर नहीं होतीं लड़की पुस्तक खोल कर अक्षरों को निहारा करती लेकिन वे उसके लिए कोई मायने नहीं रखते थे। साफ़िया चाची को उसे अक्षर सिखाने में अधिक समय नहीं लगाना पड़ा और इस बात के किसी के ध्यान में आये बिना ही लड़की ने पढ़ना सीख लिया।

इस तरह बशारत को अपने बचपन में यफ़ीम चाचा और साफ़िया चाची के अलावा एक और बड़ा और विश्वासी साथी मिला था—पुस्तक "माँ"।

"क्या तुम्हें मालूम है, यह यहाँ क्यों आयी हैं?" यफ़ीम दनीलोविच ने लड़कियों को बरामदे के अन्दर ले जाते हुए पूछा।

"हाँ, एक बात मुझे सूझ तो रही है," साफ़िया चाची ने प्रशंसा भरी नज़र बशारत पर डालते हुए जवाब दिया।

साफ़िया चाची के बच्चा होनेवाला था। वह मोटी हो गयी थीं और उनका चमकीले मोटिये का ड्रेसिंग-गाउन उनके लिए तंग हो गया था। लेकिन बशारत का ख़्याल था कि उनका चेहरा और मातृत्व की कोमल कान्ति से चमकती उनकी नीली आँखें अब से पहले कभी इतनी ख़ूबसूरत न थीं। साफ़िया चाची ने एक बार बशारत से कहा था: "अगर कभी मुझे कोई लड़की हुई, मैं उसका नाम वेरा रखूंगी।" बशारत ने साफ़िया चाची की कमर में पूरी तरह अपनी बाँहें डाल दी थी और उन्हें कस कर चिपका लिया था।

"क्यों वेरा लाडो, तुम्हारी माँ तो ठीक है? उसने आने का वायदा किया था। उसे देखे काफ़ी समय हो गया।"

"माँ ठीक है," तुर्सुनाय अपनी बहन के कुछ बोलने से पहले ही बोल पड़ी। "हमारा शहतूत जल्दी ही पकने लगेगा!"

"तुम्हारी साफ़िया चाची अब शहतूत नहीं खातीं," यफ़ीम दनीलोविच हँस पड़े। "अब वह... क्या कहते हैं उसे... खट्टे हरे ख़ूबानी खाना पसन्द करेंगी।"

तुर्सुनाय उलझन से मुस्कुरायी लेकिन बशारत ने कान खड़े कर लिये।

"तुर्सुनाय आपके लिए क्लब जाते समय टोपी भर के ले आयेगी।"

"क्लब जाते समय?"

"जी। वह मंच पर गायेगी," बशारत ने गर्व से कहा।

"यफ़ीम चाचा भी एक प्यारा-सा गीत गायेंगे," तुर्सुनाय ने जोड़ा।

"मुझे कोई आश्चर्य नहीं होगा! बेशक, हम सब जानते हैं वह बहुत बड़े गायक हैं..."

उन्होंने अपने हाथ धोये और खाना खाने के लिए बैठ गये। अपनी मेज़ पर कई लोगों का होना साफ़िया चाची को पसन्द था और उन्हें खिलाने में आनन्द मिलता था। उन्होंने लड़कियों को उनकी पुरानी जगहों पर बैठाया और पूरी तरह से इस बात का ख़्याल किया कि उन्होंने पेट भर खाया या नहीं।

खाना खाते-खाते ही यफ़ीम दनीलोविच ने अपनी बीवी को बैठक में मज़दूरों ने क्या फ़ैसला किया था, इसके बारे में बताया। बशारत ने अचानक ही यह कहते हुए उन्हें टोका:

"वे अपने फ़ैसले पर टिके रहेंगे, क्यों, नहीं, यफ़ीम चाचा?"

"हाँ, मेरी लाड़ली।"

"यफ़ीम चाचा, मेहनतकश वर्ग किसे कहते हैं?"

यफ़ीम दनीलोविच ने अपना चम्मच रख दिया, मूंछें साफ़ कीं और अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए।

"हाँ ठीक है, तो गायक महोदय, इसका जवाब दीजिये!" उनकी पत्नी मुस्कुरा उठीं।

यफ़ीम चाचा ने भी उनकी ओर मुस्कुरा कर देखा।

"यह एक संजीदा सवाल है, कॉमरेड साबीरोवा।"

बशारत के और नज़दीक अपनी कुर्सी खिसकाते हुए बैठ गये और अपनी चौड़ी हथेली फैला दी।

"इधर देखो," उन्होंने कहा और एक-एक करके अपनी अंगुली छूनी शुरू की। "अब गिनो। यह एक मज़दूर है, यह भी, यह भी, और यह भी..." फिर उन्होंने अपनी अंगुलियाँ बन्द करके एक बड़ी मुट्ठी बना ली। "और यह मेहनतकश वर्ग है। समझी?"

यफ़ीम दनीलोविच विचारमग्न हो उठे और कमरे में चहलक़दमी करने लगे।

"कभी अपनी साफ़िया चाची से उनके पिता के बारे में पूछना। उन्होंने लेनिन से बातें की थीं।"

"लेनिन से?" बशारत ने कहा। उसने साफ़िया चाची की ओर इस तरह देखा जैसे पहली बार देख रही हो।

"कोई बीस साल पहले साफ़िया चाची के पिता किसी मोरोज़ोव नाम के अमीर आदमी के कारख़ाने में काम करते थे। जब मज़दूरों ने हथियार उठाये, वह उनके आगे पताका उठाये जा रहे थे। ज़ारशाही सैनिकों ने मज़दूरों पर गोली चला दी..."

अपनी पत्नी पर नज़र पड़ते ही यफ़ीम दनीलोविच एकाएक चुप हो गये।

"यह सब ठीक है," बशारत के पास पहुँच कर साफ़िया चाची ने शान्तिपूर्वक कहा। "मैं रोती नहीं। मैं कभी नहीं रोयी, मेरा लाड़ली। मेरे पिता ने मुझे यही सिखाया था। देश-निकाले के लिए जाते समय अपराधियों की गाड़ी की सलाखों से अपने हथकड़ी लगे हाथों को निकालते हुए अलविदा के उनके शब्द थे: "कभी मत रोना। हमेशा दृढ़ बनो।" जब तक मैं ज़िन्दा हूँ, वे शब्द मुझे याद रहेंगे। मेरे पिता फिर कभी वापस नहीं आये। मैंने वही किया जो वह मुझसे चाहते थे। अब मैं बड़ी हो चुकी हूँ लेकिन तुम छोटी हो और तुम्हें दृढ़ व होशियार बनना चाहिए और तुम्हें कभी नहीं रोना चाहिए।"

"बस इतना ही करो," साफ़िया चाची के हाथों से हाथ हटाते हुए यफ़ीम दनीलोविच ने कहा। "क्या कहा, मेज़ साफ़ करना चाहती हो?"

बशारत अपनी कुर्सी से उछल कर खड़ी हो गयी। भला वह साफ़िया चाची जैसे किसी ग़ैरमामूली आदमी को मेज़ साफ़ करने देगी!

अपनी बाँहें मोड़ कर वह काम करने बैठ गयी: समोवार से गर्म पानी लेकर उसने प्लेटें, चम्मच और काँटे धोये। यफ़ीम चाचा उसे देख रहे थे। वह बहुत ख़ुश नज़र आ रहे थे। बशारत ने इसे देखा।

जब लड़कियाँ घर जाने को हुईं, यफ़ीम दनीलोविच ने वह पुस्तक ढूंढ़ निकाली जिसके लिए वे आयी थीं। इस पर गत्ते की जिल्द चढ़ी थी।

अपने सीने से पुस्तक को कस कर लगाये हुए, बशारत ने पूछा:

"क्या हमारे पिता भी मेहनतकश वर्ग के थे?"

"तुम कितनी सयानी हो गयी हो, मेरी लाड़ली," यफ़ीम दनीलोविच ने जवाब दिया। उनकी आवाज़ काँप रही थी।

हाथ पकड़े, लड़कियाँ सड़क पर बाहर आ गयीं। यफ़ीम चाचा और साफ़िया विचारपूर्ण मुद्रा में लड़कियों को तब तक देखते रहे जब तक वे नज़रों से ओझल नहीं हो गयीं।
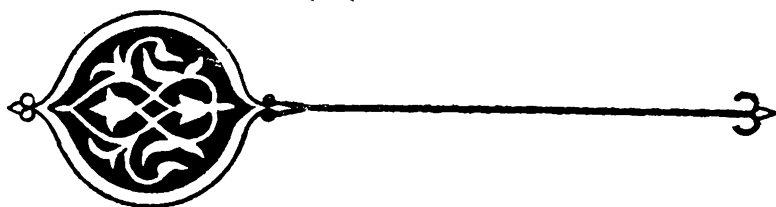
चौथा भाग

दोपहर के बाद नैमन्चा में दमघोंट गर्मी हो जाती। धूप से झुलसी मिट्टी की दीवारें भट्ठियों की तरह तपतीं। हवा में साँस लेना दूभर हो जाता।

धूल में खेल रहे तीन-चार बच्चों के सिवा गली एकदम सुनसान पड़ी थी। बच्चों ने कमर तक ऊँची धूल इकट्ठी की, कीचड़ से उसे लीपा और आटे से भरी एक दुकान तैयार की। किसी नीग्रो की तरह काला, एक दुबला लड़का दुकानदार बना था। कारोबारी ढंग से वह गली की धूल तौल और बेच रहा था। दूसरे रुपयों की तरह टॉफ़ियों के काग़ज़ लिए क्यू में खड़े थे। अपनी अंगुलियों में थूक लगा-लगा कर उन्होंने "रुपये" गिने, अपनी पतलूनों के कमरबन्द में पैसे रखे और अपनी क़मीज़ों की किनारियों में भर-भर कर अपनी खरीदारी ले गये।

ख़रीदारों में सबसे छोटा, कोई पाँच साल का घुंघराले बालोंवाला लड़का सबके पीछे डगमगाता, हाँफता, सूँ-सूँ करता चला आ रहा था। वह सिर से पैर तक धूल से लिपटा था। उसके पास न तो पैसे ही थे, न इसे रखने के लिए कोई कमरबन्द। जब वह अपनी छोटी-सी गन्दी क़मीज़ की किनारी ऊपर किये तराज़ू के पास पहुँचा, दुकानदार ने उसकी क़मीज़ के अन्दर नूनी पर थोड़ी धूल डाल दी। नीचे से निपट नंगे उस ख़रीदार के लिए यह बात इतनी अपमानजनक थी कि वह ज़ोरों से फूट-फूट कर रोने लगा।

गली के दूसरे छोर पर एक औरत दिखाई दी और छोटे-छोटे लड़के इधर-उधर भाग खड़े हुए। उनके नंगे पाँवों से उड़े धूल के घने बादल देर तक हवा में तैरते रहे।

औरत मिट्टी की दीवार के साथ-साथ छाया में रहते हुए चल रही थी। उसने परंजी नहीं डाल रखी थी। वह मीनार की लम्बी छाया से जिसके ऊपर एक आधा चाँद बना था, उभर कर सामने आयी, गली पार किया और रूमाल से ललाट पोंछा।

छोटे-से बाज़ार के पास एक घर के क़रीब गप करती तीन औरतों ने उसे पहचान लिया। उनमें से एक, बूढ़ी, दुबली-पतली और किसी बच्चे की तरह छोटी क़दवाली औरत ने जिस की रोहे से पीड़ित आँखों से पानी बह रहा था, उसे देख कर अनदेखा कर दिया। दूसरी दो जो ज़्यादा जवान थी, बिना ढँके चेहरेवाली औरत की ओर देखा।

"यह जुराख़ाँ है," उनमें से एक धीरे से बोली।

"औरत जज," दूसरे ने गूंजती आवाज़ में जवाब दिया।

उन्हें पता ही नहीं चल रहा था कि क्या करें: भाग जायें या आगे बढ़ कर जुराख़ाँ से मिलें। जबकि बूढ़ी औरत इस तरह बुदबुदायी जैसे कुछ हुआ ही न हो:

"मेरी प्यारी बहू, यहाँ मैं तुमसे गप लड़ा रही हूँ। मैं तुम से क़स्क़ान* माँगने पल भर को आयी थी। ज़रा दिखा तो तू उसे कहाँ रखती है।"

बूढ़ी औरत अपनी बहू को आँगन में ले गयी और ज़ोर से दरवाज़े को बन्द कर दिया। दूसरी जवान औरत एक बार फिर जिज्ञासा व उलझन भरी नज़र जुराख़ाँ पर डाल आँगन में अपनी दूसरी सहेलियों के पास चली गयी। दो छोटी लड़कियाँ फाटक पर रह गयीं।

जुराख़ाँ ने सब कुछ देखा और समझा। उसे याद था, जब वह पहली बार नैमन्चा आयी थी तो औरतें किस तरह डर गयी थीं। लेकिन अब तक दोनों लड़कियाँ नहीं भागी थीं। उसे लगभग पूरा विश्वास था कि उन्हें जानबूझ कर गली में छोड़ दिया गया था: औरतें शायद कान लगाये दीवार की दूसरी तरफ़ थीं।

वे उससे उसी तरह छुप गयी थीं जिस तरह पुरुषों से छुपती थीं। वे किसी ऐसी औरत का सामना करने की हिम्मत नहीं कर पाती थीं

---

* क़स्क़ान – भाप से समोसा तैयार करने का एक क़िस्म का ख़ास बर्तन।

जो काले चचवान से नहीं बल्कि खुली आँखों से सूरज को देखती हो। वे अब भी औरतों के लिए अलग से बनायी गयीं मड़ैयों – इच्करि में रहने को मजबूर थीं। लेकिन जुराख़ाँ को दूसरों की अपेक्षा कहीं अधिक इन औरतों में छुपी बेचैनी और इनके दिलों में उठती आँधी के बारे में मालूम था। कुछ डर से मजबूर थीं, दूसरी सिर्फ़ आदत से और बाक़ी दूसरी कौतूहल और ज़बर्दस्त ईर्ष्या से जिसके बाद ही संकल्पशक्ति पैदा होती है।

"सलाम, जज चाची," जुराख़ाँ जब उनके पास पहुँची तो लड़कियों में से बड़ी ने कहा।

"सलाम," छोटीवाली लड़की ने अपनी उधड़ी हुई नाक को जो नये आलू की तरह लग रही थी, पोंछते हुए लगभग बेआवाज़ दुहरा दिया।

जुराख़ाँ रुक गयी। उसके थैले में बशारत और तुर्सुनाय के लिए मिठाइयाँ थीं। उसने लड़कियों को एक-एक मिठाई दी। छोटी लड़की जैसे-तैसे ठीक-ठाक की गयी अपने से कई गुना बड़ी और साफ़ तौर पर किसी दूसरे की बोज़ की पोशाक पहने थी। लड़की की आँखों पर से घुंघराले बालों को पीछे करते हुए जुराख़ाँ ने उसकी भौंहों पर चुम्बन लिया जो पसीने से नमकीन थीं।

मिठाइयों को अपने हाथों में मज़बूती से पकड़े और अपनी गर्दन पीछे की ओर झुकाये लड़कियाँ उस बिना परंजीवाली लम्बी औरत को इस तरह निहार रही थीं जैसे वह कोई अजूबा हो।

जुराख़ाँ की नीली, गर्दन से नीची सूती पोशाक उसके बदन से पूरी तरह चिपकी थी। अपने सिर पर उसने एक फूलदार रेशमी रूमाल लगा रखा था जिसने उसके सिर के पीछे चोटियों को ढंक रखा था और ललाट पर एक गिरह डाल कर बाँधा हुआ था। चेहरा, जो अब जवान न था, कुछ-कुछ सपाट-सा था, गालों पर हल्की लाल-लाल नसें थीं और आँखों के नीचे हल्की झुर्रियाँ पड़ रही थीं।

"तुम्हारे माँ-बाप कौन हैं?"

"मेरे पिता बुनकर सलीम हैं और वह छैला नारमत की गोद ली बेटी है। वह हम लोगों के साथ रहती है," बड़ी लड़की ने तेज़ी से जवाब दिया।

"अच्छा," जुराख़ाँ मुस्कुरायी जैसे इन लोगों को वह वर्षों से जानती हो। "सचमुच तुम सब अच्छी लड़कियाँ हो।"

अगले मकान के पास पहुँच कर उसने पीछे देखा और पाया कि लड़कियाँ दरवाज़े के पीछे किसी को मिठाइयाँ दिखा रही हैं।

चायख़ाना के पास से होकर जाने से बचने के लिए धूल से तर-बतर होने का ख़तरा उठाते हुए जुराख़ाँ गली के पार आ गयी।

लेकिन वहाँ चायख़ाना में कोई भी न था। दुबला-पतला चायख़ाना-वाला, जिसने क़मीज़ को बाँहों से अपनी कमर के ऊपर बाँध रखा था, अपने हाथ से एक बाल्टी से पानी उलीच-उलीचकर फटे-पुराने क़ालीन बिछा एक नीची, चौड़ी सीट—सोरि के इर्द-गिर्द ज़मीन पर छिड़क रहा था।

गधे पर सवार एक आदमी गली में दिखाई पड़ा। चायख़ाना देखकर गधे ने जो साफ़ तौर पर थकान भरा सफ़र तय कर चुका था, उसने कान खड़े कर लिये और इस उम्मीद में कि आख़िरकार भारी बोझ ढोने से उसे छुटकारा मिलेगा और वह अपनी साँस पर क़ाबू पा सकेगा, लम्बे-लम्बे डग भरने शुरू किये। दूर से गधे पर सवार आदमी को आसानी से बोझ से लदी कोई गाड़ी समझा जा सकता था। वह अपनी सवारी से कहीं बहुत बड़ा था। निर्विकार और अपनी ही गरिमा से फूला न समाता, वह अजीब हास्यास्पद लग रहा था—गधे पर किसी तराशी गयी मूर्त्ति की तरह वह बैठा था। उसका सिर पीछे लटका था और लम्बे-लम्बे कान इस तरह बाहर की ओर निकले हुए थे मानो रूई के बड़े गट्ठर के अन्दर से निकल आये हों।

सवार ने सोने का काम किया हुआ किमख़ाब का चोग़ा और पेटेंट चमड़े की महसी पहन रखी थी। उसके बायें हाथ में बालाई जूते थे और दायें में एक बड़ा-सा पीला रूमाल जिससे वह काले, थुलथुले चेहरे और मोटी गर्दन को पोंछे जा रहा था। उसका बालों भरा सीना खुला था। उसका एक ओर को छितराया पेट ताज़ा गुंधे आटे की तरह फैलने फैलने को लग रहा था।

उससे कोई तीस क़दम पीछे परंजी लगाये एक औरत चली आ रही थी। जुराख़ाँ सोच भी नहीं पायी थी कि इस औरत में और किमख़ाब के चोग़ेवाले आदमी में कोई सम्बन्ध हो सकता है।

सवार ने स्पष्ट रूप में अपने गधे की बग़ल में एक अच्छा-ख़ासा भंडार-सा बना रखा था। जब उसका बड़ा, छोटे-छोटे पैरोंवाला शरीर

चायख़ाना के पास ज़मीन से टिका तो गधा अपने पूरे ठाट में दिखाई पड़ा। उस पर ज़ीन के नीचे लगाये जानेवाले रंगीन किनारियों का नया कपड़ा था जिस पर मुलायम चमड़े की गोट-पट्टी लगा एक अन्य ज़ीन का कपड़ा भी रखा था। गधे का पुट्ठा एक झालरदार, काम किये हुए घोड़े के ज़ीन के कपड़े से सुशोभित था जबकि चमकती हुई पट्टियों और लाल-लाल झब्बोंवाला पूंछ का कपड़ा ज़ीन से नीचे तक फैला हुआ था। सफ़ेद अयाल के बीच बड़े-बड़े काले गुटके गुंथे हुए थे और सिर के बालों के बीच दो सफ़ेद घोंघे दमक रहे थे।

जुराख़ाँ अभी सजे-सँवरे सफ़ेद गधे को निहार ही रही थी कि उसका ध्यान पुराने, पैवन्द लगे, धूप से बेरंग, धूल-धूसरित परंजीवाली औरत की ओर दुबारा खिंच गया। वह हाथों में एक बच्चा और सिर पर एक भारी बंडल उठाये थी। पुरुषों के टूटे-फूटे चमड़े के बालाई जूते उसकी नंगी, बिवाई फटी एड़ियों में चट-चट कर रहे थे।

वह चायख़ाने से थोड़ी ही दूर पर, मिट्टी की दीवार के पास एक अधसूखे शहतूत के पेड़ की छाया में रुक गयी। बच्चे को ज़मीन पर डाल वह घुटनों के बल भहरा पड़ी और सिर से बंडल को उतार रखा।

किसी ने भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया – न तो मोटे आदमी ने और न ही चायख़ानावाले ने। अकेले जुराख़ाँ उस पर से अपनी आँखें नहीं हटा पा रही थी। वह कौन थी? काश, वह उसका चेहरा देख सकती। वह जवान थी या बूढ़ी? वह शायद इस गर्मी में उस भारी, पसीने से तरबतर परंजी से कष्ट झेल रही थी। उसके होंठ झुलस गये थे, गला ख़ुश्क...

मोटा आदमी आराम से चौड़े सोरि पर टाँगें समेट कर बैठा शीतलता का आनन्द ले रहा था। चायख़ानावाला उसके सामने हड़बड़ा उठा था, दौड़कर वह अहाते में गया और भागता हुआ, हाथ भरकर हरी घास ले आया। गधे को हरी घास देते हुए, उसने उसके पुट्ठे उसी चापलूसी भरी मुस्कान के साथ थपथपाये, जिससे उसके मालिक का स्वागत किया था।

बच्चा जिसे शायद चींटियों के झुंड पर डाल दिया गया था, एकाएक रिरिया उठा, अपने हाथ हिलाये और ज़ोरों से रोने लगा। मोटा आदमी अलस भाव से मुड़ा और खा जानेवाली नज़र से उसने औरत को घूरकर

देखा। उसने जल्दी से बच्चे को उठा लिया, अपने लम्बे चचवान से ढँक लिया और दूध पिलाने लगी।

"क्यों, वह माँ है!" जुराख़ाँ ने दुख और ग़ुस्से से सोचा।

ज़मीन पर, धूल में, फटी-पुरानी, गन्दी परंजी में औरत बेजान-सी शान्त पड़ गयी।

पेट भर जाने पर बच्चा चचवान के अन्दर से बाहर निकल आया। अपने काले सिर पर इसने एक लाल मख़मली टोपी पहन रखी थी जिसमें नज़र लगने से बचने के लिए तावीज़ और गुटके लगे थे जबकि सिर के पीछे एक चोटी गुंथी हुई थी। औरत ने बच्चे का चोग़ा ठीक किया, कमरबन्द उसके सीने तक चढ़ाकर कसा और चायख़ाने की ओर अपना हाथ हिलाया।

"जा," उसने कहा, "अपने बाप के पास दौड़ जा।"

जुराख़ाँ ने चायख़ाने की ओर अपनी आँखें घुमायीं। बाप सफ़ेद क़मीज़ के किनारे से अपने बालों भरे सीने पर हवा करता बैठा, चटखारे ले-ले कर निशाल्दा* में तन्दूरी डुबो-डुबो कर खा रहा था। चायख़ाना-वाला उसके सामने झुक-झुककर छोटी-सी फूलदार प्याली में ख़ुशबूदार चाय देता जाता।

ग़ुस्से से अन्धी जुराख़ाँ जल्दी-जल्दी चल पड़ी।

शायद कुछ साल पहले वह इस तरह के दृश्य को कहीं अधिक शान्ति से नज़र-अन्दाज़ कर जाती। लेकिन अब उसे प्रतीत हो रहा था कि व्यक्तिगत रूप से उसने जितने भी दुख, जुल्म और ख़तरे झेले थे, उनसे उसे इतना दुख नहीं हुआ था जितना कि उसने अभी-अभी जो कुछ देखा था, उससे हुआ था।

शायद उसे लौट कर जाना चाहिए? औरत को सहारा देना चाहिए, काला चचवान उठाना चाहिए और उसकी आँखों में झाँकना चाहिए, जिन्हों ने दिन की रोशनी कभी नहीं देखी थी? नहीं, इससे औरत सिर्फ़ भयभीत ही होगी।

एकाएक दीवार की दूसरी ओर से चीखने की आवाज़ उस तक पहुँची। जुराख़ाँ ने फिर अपने क़दम धीमे कर दिये। कोई औरत किसी

---

* निशाल्दा — लपसी जैसी मिठाई।

पर चिल्ला रही थी। किसी पुरुष स्वर ने अनुनयपूर्वक जवाब दिया लेकिन ज़ाहिर था कि उसने जो कुछ कहा, उसने आग में घी का काम ही किया। कुछ देर बाद झगड़े में एक करुण, मिन्नत करती हुई किसी बूढ़े की और बच्चे के डर कर रोने की आवाज़ शामिल हो गयी।

ज़ुराख़ाँ सुनने लगी।

"तो तुम सोवियत हुकूमत के ख़िलाफ़ हो?" पुरुष स्वर ने कोमलता से पूछा। "अगर ऐसी बात है तो जाओ और उन्हें बता दो कि तुम उनके ख़िलाफ़ हो।"

औरत चुप हो गयी और तुरंत ही बच्चे ने रोना बन्द कर दिया। ज़ुराख़ाँ ने बूढ़े आदमी को कमज़ोर आवाज़ में कहते सुना:

"बहरहाल यह मर्ज़ी की बात है। हर कोई जो कुछ दे सकता है, देता है। और इसमें हुकूमत की बात बीच में न लाओ।"

"मैंने जो कुछ कहा है, वह सरकारी आदेश है, मैं इसे नज़र-अन्दाज़ नहीं कर सकता। रुपयों की ज़रूरत है, दलीलों की नहीं। अगर तुम्हें एतराज़ है, जाओ और ऐसा कह दो। मैं ने अपना फ़र्ज़ पूरा कर दिया है!"

दरवाज़ा खुला और एक छोटे कन्धों और लम्बे पैरोंवाला आदमी गली में दिखाई पड़ा। उसने नीले रंग के मोटे कपड़ेवाली घुड़सवारी की पतलून और घुटने तक के पीले बूट डाल रखे थे। उसकी सफ़ाचट खोपड़ी बिना छिलकेवाले अण्डे की तरह लग रही थी। छोटी-सी लाल मख़मली टोपी उसके सिर के पीछे टिकी थी।

ज़ुराख़ाँ को देखकर वह अपने हाथ फैलाये तेज़ी से उसकी ओर बढ़ा।

"अहा, शुभ दिन! मैं आपको देखकर बहुत ख़ुश हूँ, ख़ानुम!" उसने विनीत स्वर में सोने के दाँत चमकाते हुए कहा।

"तो यह आप थे?" ज़ुराख़ाँ ने दीवार की छत पर एक नज़र डालते हुए कहा।

"जी हाँ, ख़ानुम, यह मैं ही था—विज्ञान और ज्ञान-प्रसार के मैदान में। आप ख़ुद पर कोई रिआयत किये बिना काम करती हैं और अपने काम में अपना दिल लगा देती हैं। यह बहुत कठिन, असहनीय रूप से कठिन है ख़ानुम, क्योंकि आपका यह अदना सेवक यहाँ अकेला

है। यहाँ मेरी मदद करनेवाला कोई नहीं। और इसलिए मैं यहाँ मुसीबतों का मारा हूँ, ख़ानुम, जी हाँ, मुसीबतों का मारा।"

उसका चेहरा दुख से सिकुड़ गया और आँखों से आँसू निकलने को हो गये। ऐसा लगा जैसे वह आदमी लोगों की कृतघ्नता और न समझने की नादानी से अपमानित और दुखी था।

सलीमख़्वाजा नईमी लड़कियों के स्कूल में शिक्षक था। जुराख़ाँ से उसका परिचय अभी हाल में ही हुआ था जब वह नगर पार्टी समिति के महिलाओं के विभाग में नियुक्त की गयी थी। महिलाओं के क्लब में निरक्षरता-उन्मूलन के लिए एक कक्षा शुरू की गयी थी और जुराख़ाँ ने इसके लिए शिक्षकों की तलाश शुरू की। तभी उसकी मुलाक़ात इस "जागरण का दम भरनेवाले" से हुई। पढ़े-लिखे लोग कम और दूर-दूर थे। इसके अलावा कोई चारा न था कि पाठ्यक्रमों की देख-रेख का काम नईमी को सौंपा जाये।

"बात क्या है? उस घर में हुआ क्या?"

"एक गंभीर ज़िम्मेदारी, ख़ानुम। एक सच्ची क्रांतिकारी ज़िम्मेदारी! नगर विभाग के आदेश पर हम एक जागरण-माह मना रहे हैं। अपनी ही पहल पर लोग नैमन्चा में एक प्राथमिक स्कूल के लिए धन इकट्ठा कर रहे हैं। आप ख़ुद फ़ैसला कीजिए: मैं ने ख़ुद पर काफ़ी बोझ डाल रखा है, ख़ानुम। जो पाठ्यक्रम आपने आयोजित किया है, उसी में अपने पाठों में मुझे आधा दिन लग जाता है। लड़कियों के स्कूल में भी मैं अकेला हूँ और फिर यह सारी परेशानियाँ... लेकिन इसके लिए कोई मदद नहीं। हम एक सांस्कृतिक क्रान्ति के मध्य में हैं। यह कोई मज़ाक़ की बात नहीं। हम उम्मीद करते हैं, इतिहास हमें याद करेगा, ख़ानुम।"

"तो यह बात है, मेरे प्यारे कॉमरेड," जुराख़ाँ ने अपनी घनी भौंहों को सिकोड़ते हुए कहा, "कल सवेरे थोड़ी देर के लिए नगर समिति में आइये। हम सार्वजनिक शिक्षा के नगर विभाग के 'क्रान्तिकारियों' को बुलायेंगे और सोवियत सत्ता जनता की पहल को किस तरह समझती है, इस बारे में बातें करेंगे। क्या समझ गये?"

स्तब्ध नईमी ने अपनी आँखें मिचमिचायीं।

"मैं सुन रहा हूँ और आदेश का पालन करूँगा, ख़ानुम – मेरा

मतलब है कामरेड जुराख़ाँ। हमें बुरी तरह आपकी सहायता और नेतृत्व की ज़रूरत है।"

जुराख़ाँ मुड़ी और लम्बे डग भरती चली गयी। अपने हाथ सीने पर लगाये नईमी उसे तब तक देखता रहा जब तक वह मोड़ पर ओझल नहीं हो गयी: उसके चेहरे की नम्र मुस्कान लुप्त हो गयी।

अनाख़ाँ के घर में घुसते ही जुराख़ाँ का क्रोध तुरंत ग़ायब हो गया। अनाख़ाँ उसे देख कर इतना ख़ुश हुई कि ज़्यादा जवान और ख़ूबसूरत लगने लगी।

"बहन जुराख़ाँ, आज तुम मेरी दूसरी मेहमान हो। यदि तुम मुझे सुयूंची* दो तो मैं तुम्हें दिखाऊँ कि मेरा पहला मेहमान कौन है।"

जुराख़ाँ ने अपने थैले से एक मिठाई निकाली।

"यह रही तुम्हारी सुयूंची!"

वे लड़कियों की तरह हँस पड़ीं।

साफ़िया अपनी बाँहें फैलाये बरामदे में निकल आयी।

उन्होंने उज़बेक भाषा में एक-दूसरे का अभिवादन किया:

"एसानमिसिज़, आमानमिसिज़?" **

"मुबारक हो, मेरी जाँ, तुम बड़ी प्यारी लग रही हो।" जुराख़ाँ ने एक क़दम पीछे हट कर साफ़िया को सिर से पैर तक निहारते हुए कहा। "अरे तुम माँ बनने जा रही हो!" उसने अपनी मेज़बान को सख़्ती से देखा। "ओह, अनाख़ाँ, तुम्हारी उम्र दराज़ हो लेकिन ऐसे समय में तुम ख़ुद अपनी सहेली से मिलने के लिए जा सकती थी। भला ऐसी हालत में कोई कहीं जाता है!"

"यह अनाख़ाँ की ग़लती नहीं," साफ़िया हँस पड़ी। "बशारत ने हरी ख़ूबानी के बारे में बता कर मुझे ललचा दिया था।"

औरतों ने एक-दूसरे को उल्लास से देखा। अनाख़ाँ ने आले से एक सादा छोटा-सा कम्बल उठाया और छोटी-सी मेज़ के पास बिछा दिया। मेज़ पर एक कपड़ा डाल दिया।

"मुझे तुम्हारी पोशाक पसन्द है, जुराख़ाँ," साफ़िया ने मेज़ के

---

* सुयूंची – अच्छी ख़बर देनेवाले को दिया जानेवाला उपहार।
** एसानमिसिज़, आमानमिसिज़ – "सब कुशल से हैं?"

पास बैठते हुए कहा। "मैं ठीक इसी तरह के कपड़े बुना करती थी। मैंने इसे फ़ौरन पहचान लिया।"

"तुम इवानोवो-वज़्नेसेंस्क को नहीं भूल सकी?"

"मुझे मिल की याद आती है," साफ़िया ने जवाब दिया।

"मैंने दुकानदार से यह सूती कपड़ा ख़रीदा," जुराख़ाँ ने कहा।

"यहाँ सूती कपड़ा महँगा है।"

"बहुत। बोज़ किस तरह बुना जाय, यह हम सब जानते हैं। बुनकरों को यह सिखाना चाहिए और मैं समझती हूँ, प्यारी बहन हालाँकि तुम्हें मिल की याद आती है..."

"मैं समझती हूँ। यफ़ीम और मैंने तय किया है, हम यहीं रहेंगे।"

"शुक्रिया, शुक्रिया, मेरी प्यारी," जुराख़ाँ ने उसका हाथ दबाया। "तुम वहाँ एक मामूली जुलाहिन थी लेकिन यहाँ..."

"और यहाँ साफ़ कहूँ तो मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं। अब मैं जवान भी नहीं रही और पहला बच्चा भी होनेवाला है।"

"हम हर चीज़ में पहली हैं," अनाख़ाँ ने आगे कहा। "पहली ख़ुशी – चेहरा न ढँकनेवाली पहली औरत, पहली सहकारिता..."

उसने साफ़िया के सामने सूप की प्लेट रख दी।

"इसे खाओ। यह ख़ूबानी से बेहतर है।"

साफ़िया चुपचाप सूप पर झुक गयी।

"हमारी जुलाहिनें," अनाख़ाँ ने आगे कहा, "न सोना जानती हैं न आराम। तबदीली की आस लगाये वे चिन्ताओं के बोझ से दबी हैं। वे जिस तरह की बातें अब करती हैं, पहले कभी नहीं करती थीं। वे इकट्ठा होने का कोई भी मौक़ा नहीं चूकतीं और कानाफूसी करती हैं। वे सुखट्टा मख़सूम से सावधान तो हैं लेकिन उससे भय नहीं खातीं। क्या तुम रिज़वान चाची को जानती हो? वह सुखट्टे के आगे झोली फैलाने की जगह पुरुषों की सहकारिता में काम करने तक को तैयार हैं। फिर अंज़िरत है जो एक सहृदय बूढ़ी औरत है... दादी अंज़िरत वह एक अलग ही राग अलापती हैं: "अरे मेरे प्यारो, इस शोर-शराबे से कुछ नहीं होने-जाने को। यह तुम ने एक बुरी चीज़ शुरू की है, तुम्हें पाप लगेगा।" रिज़वान ने उन्हें चेतावनी दी कि अगर तुम्हें पाप का डर है तो हमारे साथ मत आओ क्योंकि हमें पाप पसन्द है।"

"रिज़वान चाची साल बीतने के साथ-साथ जवान होती जा रही हैं," जुराख़ां ने मुस्कुराते हुए कहा। उसके गालों की उभरी हुई हड्डियों पर हल्की-सी लाली आ गयी।

"एक दिन हम ने सुना कि मालिक ख़ुद वर्कशॉप आयेगा। दादी अंज़िरत सच में घबड़ायी हुई थीं: "अरे, मेरी प्यारियो, मुस्कुराओ, ख़ुश नज़र आओ, वैर-भाव रखना पाप है। अगर उसने तुम्हारे साथ कभी ज़्यादती की है तो इसमें कुछ भी नहीं किया जा सकता। तुम इन चीज़ों से नहीं बच सकती... पुरानी बातें बुरे सपने की तरह बीत जाती हैं और भुला दी जाती हैं। देखो, अब क्या हो रहा है: मालिक को हुक्मरानों से भी इज़्ज़त मिली हुई है। ठीक उसी तरह जैसे पहले! वह बाप की तरह हमारी देख-भाल करता था, अब हमें देखने ख़ुद आ रहा है, चमकते चाँद की तरह, यह देखने कि हम किस तरह रह रहे हैं। और हम यहाँ मुंह फुलाये हैं... यह नहीं चलेगा!" थोड़े में, वह और नज़ाकत मालिक से मिलने गयी जबकि बाक़ी हम सब अपने करघों पर बस अपना सिर उठाये बिना बैठे रहे। यही हालत है! सहकारिता के खुलते ही आधी से अधिक बुनकर क़ुद्रतुल्लाह को छोड़ जायेंगी। रिज़वान कहती है कि अगर बाय ने हमें जाने नहीं दिया तो हम ख़ुद उसे निकाल बाहर करेंगे।"

"फिर भी हम अभी बहुत कम हैं, बहुत कम," जुराख़ां ने दुख से कहा। "नैमन्चा में मर्दों से ज़्यादा औरतें हैं फिर भी हम कहते हैं, कम हैं।"

उसने अपनी सहेलियों को चायख़ाना के पास देखे दृश्य के बारे में बताया और उसने यह इतनी दर्द भरी आवाज़ में सुनाया कि साफ़िया की आँखों में आँसू छलक आये।

"हम एक-दूसरे से अभी भी कितनी दूर हैं," जुराख़ां ने कहा। "क्या हम बहनें नहीं? यह एक अच्छी बात होगी कि हम घर-घर जायें, हरेक परिवार से मिलें और माताओं और पत्नियों को सचाई बतायें।"

"क्या वे समझ पायेंगी? क्या वे हर चीज़ समझ लेंगी?" अनाख़ां ने अपना सिर हिलाया।

"वे हमारी बातें समझेंगी! अगर दिमाग़ से नहीं तो दिल से। हमें मज़दूर औरत के दिल का ज़रूर भरोसा रखना चाहिए!"

अनाख़ाँ ने उत्तेजना से अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं।

"कभी-कभी मैं सभी औरतों को एक साथ उन्हें एकजुट करने के लिए इकट्ठा करना चाहती हूँ—उन सब को, दादी अंज़िरत और नज़ाकत सहित—और उन्हें वह सब कुछ बताना चाहती हूँ जो मेरे दिल पर बोझ बना है। लेकिन कैसे? किन लफ़्ज़ों से?"

"इस तरह," साफ़िया ने जवाब दिया। "इस तरह अन्या," उसने रूसी में दुहराया। "प्यारे कामरेडो! बहनो! अपने दिलों में बड़ी चोट छुपाये, आप अंधेरे में रहीं। बेसहारा, शरीअत की ज़ंजीरों में जकड़ी हुई, आपको बताया गया कि आप ग़ुलाम हैं, निजी सम्पत्ति हैं। आपको दया और हेय भाव से देखा जाता। आपको तिरस्कृत और ज़लील किया जाता। आपके तन व मन पर सितम किया जाता। आप जननी हैं, माँ हैं, फिर भी आपको प्रेम और रोशनी से वंचित रखा जाता। और जब आप यह बर्दाश्त नहीं कर पातीं और दर्द से चीख़ना चाहतीं, आप उस चीख़ को दबा लेतीं हैं, आपको डर होता कि कहीं आपकी चीख़ सुन न ली जाये। आप यह भूलने को मजबूर थीं और आप भूल गयीं कि आप भी इंसान हैं! आप अपने दिलों में सिर्फ़ चोट ही नहीं छुपाये रहतीं बल्कि सुख का एक सपना भी। क्या ऐसी बात नहीं? फिर आपको डर काहे का? अपना सिर उठाइये, अपने पँख फैलाइये! अपने चारों ओर देखिये और आप देखेंगी कि हर कहीं नये जीवन के अंकुर दिखाई दे रहे हैं। वह जीवन आपके बिना नहीं फल-फूल सकता। आगे बढ़िये और उसे अपनाइये। और याद रखिये कि अब आपका एक सच्चा हिमायती, एक दृढ़ रक्षक है—सोवियत सत्ता!"

साफ़िया अपने भावों में इस तरह बहकर बोल रही थी जैसे किसी बड़े जनसमूह को सम्बोधित कर रही हो। अनाख़ाँ सुनते-सुनते आत्म-विभोर हो उठी।

"काश, मैं भी इस तरह बोल पाती," वह खोयी-खोयी बुदबुदायी।

ज़ुराख़ाँ ने उसे बाँहों में भर कर चूम लिया।

"अगर यह सब तुम्हारे दिल में है, तुम इसे शब्दों में ढाल सकोगी। नैमन्चा में तुम्हीं हमारी उम्मीद हो। हाँ, तुम! यह मैं तुम्हें उस सत्ता के नाम पर कह रही हूँ जिसे क़ायम करने में तुम्हारे पति ने मदद की थी और जो क़ुद्रतुल्लाह की कोई क़द्र नहीं करती। इस अंज़िरत चाची को यह समझा दो। तुमसे अच्छा यह कोई नहीं कर सकता।"

दरवाज़ा खड़का और पल भर बाद शोर मचाती, दौड़ती बशारत और तुर्सुनाय आँगन में आ पहुँचीं। उन्होंने साफ़िया के गले में अपनी बाँहें डाल दीं और फिर शर्माते हुए अपने हाथ ज़ुराख़ाँ की ओर बढ़ाये।

ज़ुराख़ाँ की पोशाक को जिस स्पर्धा से लड़कियाँ देख रही थीं, उसे महसूस करके साफ़िया ने पसंदीदगी से अनाख़ाँ को इशारा किया।

"यह क्या बात हुई, वेरा," साफ़िया ने कहा, "तुम ने ही मुझे बुलाया और ख़ुद ग़ायब हो गयी?"

"अरी, साफ़िया चाची, डाँटिये मत। पलक झपकते आपके लिए कुछ ख़ूबानी चुन कर ले आऊँगी!" बशारत ने कहा और बरामदे की सीढ़ियों पर दौड़ गयी।

"और मैं उन्हें आपके लिए एक रूमाल में बाँध दूंगी," तुर्सुनाय ने कहा और गाना गाते हुए अपनी बहन के पीछे दौड़ पड़ी।
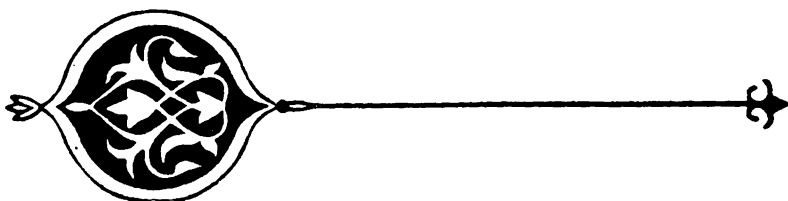
पाँचवाँ भाग

क़ुद्रतुल्लाह के घर पर अजीब गोलमाल था। बाय को प्रति दिन सुबह में अपने छायादार बग़ीचे के तलैये के पास क़िमिज़* पीने की आदत थी। लेकिन आज किसी ने भी वहाँ मेज़पोश बिछाने की परवाह नहीं की थी।

सुखट्टा मख़सूम पागलों की तरह ख़ूनी आँखें लिये आँगन में इधर-उधर दौड़ रहा था। वह नज़ाकत से चलता ज़नानख़ाने की ओर गया, फिर साटन की दुलाई और तकिया गोद में भरे बग़ीचे में दौड़ता वापस आया। इसके बाद फिर एक लम्बा झाड़ू और नहाने-धोने के काम आनेवाले ढलवे लोहे का भारी जग लिये लड़खड़ाता वापस लौटा, चमड़े के बालाई जूते उतारकर वह दीवानख़ाने में घुसा और सीने पर हाथ रखकर बोला:

"अस्सलाम..."

---

* क़िमिज़ – घोड़ी के दूध से तैयार एक क़िस्म का पेय।

यह उसने कई बार दुहराया।

लेकिन दीवानख़ाने में रूई के बोरे-सा मोटा दुकानदार मत्क़ोवुल के अलावा कोई न था। वह एक मुलायम अर्द्ध रेशमी कम्बल पर कोने में हमेशा की तरह अचल बैठा था। उसने मखसूम की ओर देखा भी नहीं। नाक के बाँसे के पास से जुड़ी दुकानदार की घनी भौहें उसके फूले-फूले पपोटों पर बुरी तरह आगे की ओर लटकती हुई किसी बकरे के समूर की तरह लग रही थीं। समय-समय पर वह अपनी गर्दन और बाल भरे सीने को एक बड़े पीले रूमाल से पोंछ लेता।

इसी आदमी ने आज सुखट्टा मख़सूम को आफ़त से बचाया था।

आज सुबह-सुबह मख़सूम बाय के घर दौड़ता हुआ आया था और बाय को नाली के पास अपने जाँघिये में देख कर, उसके क़दमों पर गिर पड़ा था:

"हुज़ूर, हुज़ूर..."

वह कँपा देनेवाली ख़बर लाया था: सरकार ने रोटी और सूती कपड़ों की क़ीमत कम करने के अपने फ़ैसले की घोषणा कर दी थी।

नयी आर्थिक नीतिवाले क़ुद्रतुल्लाह की आँखों के सामने अंधेरा ही अंधेरा छा गया। ग़ुस्से से उसने अपने सेवक के चेहरे पर थूक दिया।

सुखट्टा मख़सूम थूक पोंछने की भी हिम्मत नहीं कर पाया। वह अपने मालिक को इतना परेशानहाल देखने के बजाय इससे भी अधिक बड़ी ज़िल्लत सहने को तैयार था। क्या पता यदि दूकानदार मत्क़ोवुल नहीं आ जाता तो क्या होता। "ख़ुदा का शुक्र! वे एक-दूसरे को ढाढ़स देंगे।" मख़सूम ने अपने मन में सोचा और ऐसा लगा जैसे उसकी तड़पती हुई रूह पर चम्मच भर मलहम फैला दिया गया हो।

किसी सच्चे महात्मा की तरह मत्क़ोवुल ने कुछ ही शब्द नष्ट किये।

"आपने ख़बर सुनी, मालिक?" उसने धीरे से अपने मोटे होठों को नहीं के बारबर जुंबिश देते हुए कहा। इसके बाद वह एक भी शब्द नहीं बोला।

मत्क़ोवुल एक चलता-पुरजा व्यापारी था लेकिन दिन भर में वह मुश्किल से यह शब्द बोलता और जब भी बोलता, ऐसा लगता जैसे कोई नयी बात बता रहा हो। जब वह बोलना ज़रूरी समझता, संजीदगी से बोलता। फिर घण्टों चुप रहता और अपनी इसी ख़ासियत के कारण वह भरोसे का आदमी माना जाता।

क़ुद्रतुल्लाह-ख़्वाजा अपने कन्धों पर एक चोग़ा डाल दीवानख़ाने में आ गया। वह एक लम्बा, लगभग पचास साल का, छोटी, घनी दाढ़ीवाला बलिष्ठ आदमी था। उसके शरीर में सिर्फ़ उसका ललाट ही मांसल था जो बुरी तरह झुर्रियों से सिकुड़ा हुआ था और ख़ासकर उसकी सुग्गे जैसी नाक। ऐसा लगता जैसे उसके पूरे चेहरे में सिर्फ़ ललाट और नाक ही है लेकिन यही नाक-नक़्श उसे आम आदमियों से अलग एक अहं-कारी बाय बना देता।

वह अपने मेहमान के पास ही बैठ गया। आधा घण्टे बाद मेहमान हिला और अपनी घनी भौंहों को अर्थपूर्ण ढंग से ऊपर उठाते हुए बड़बड़ाया :

"फ़ैसले... सूती कपड़े सस्ते होंगे।"

गंभीरता से सोच-विचार कर और बिना किसी जल्दबाज़ी के बोले गये इन शब्दों से यह एकदम स्पष्ट था कि बुरी चीज़ निस्सन्देह ही बुरी होती है।

क़ुद्रतुल्लाह ने कराहकर अपना पहलू बदला।

सुनहले-पीले रोओंवाली एक आलसी बिल्ली आनंदपूर्वक घुर-घुर करती, खींचती उस कसे हुए तकिये पर अपने पंजों को आज़मा रही थी, जिसके सहारे बाय लेटा था। वह उठ खड़ा हुआ, बिल्ली को उसकी गर्दन के पीछे से पकड़ा, ग़ुस्से से उसे तकिये पर से खींचा और खिड़की से बाहर फेंक दिया। बिल्ली जो मक़्क़ोवुल के सिर के ऊपर से उछली तो अपने स्वभाव के विपरीत वह डरकर तेज़ी से बोल उठा।

"मालिक, ऐसा लगता है आपने... बिल्ली को भगा दिया?"

बाय ने जवाब देने की भी कृपा नहीं की।

दुकानदार ने भयभीत हृदय को शांत करने के लिए कई बार अपने बालों भरे सीने पर थू-थू किया।

आँगन में बूट चरमराये और एक आदमी बरामदे की सीढ़ियाँ तय करता नज़र आया। वह घुड़सवारी की नीली पतलून और शानदार झालरदार पेटी लगी एक सफ़ेद रेशमी क़मीज़ पहने था।

"आदाब अर्ज़ है," नईमी ने कहा और बीच में ही रुक गया। "कोई बुरी ख़बर..."

"तुम्हें क्या फ़िक्र है, गुरुजी?" बाय ने उसकी चमकती हुई क़मीज़

की ग्रोर इशारा करते हुए कहा। "तुम तो मास्को का यह रेशम कौड़ियों के मोल ख़रीदा करोगे।"

"जब मुसीबत ग्राती है कमज़ोर एक-दूसरे को बुरा-भला कहते हैं, मज़बूत लोगों को ढाढ़स देते हैं," नईमी ने कहा।

बाय व्यंग्यपूर्वक मुस्कुराया।

"ज़ाहिर है, तुम मज़बूत नस्ल के हो!"

नईमी ने उदास भाव से ग्रपने कन्धे उचकाये।

ग्राँगन से एकाएक एक प्रसन्नता भरी ग्रावाज़ ग्रायी। बाय ग्रौर मेहमान ने एक-दूसरे को इस तरह देखा मानो कह रहे हों: "यह तुम्हारी है!"

यह मुहम्मद सईद था, चायविक्रेता के नाम से मण्डी भर में मशहूर। ख़रीदफ़रोख़्त की दुनिया उसे एक ऐसे सूझ-बूझवाले व्यापारी के रूप में जानती थी जिसने पूर्व के सभी देशों की यात्रा की थी ग्रौर यात्रा करते ही बूढ़ा हुग्रा था। उसे ग्रफ़ग़ान समझा जाता जबकि कुछ उसे भारत से ग्राया मानते थे। कुछ साल पहले वह पुराने शहर ग्राया ग्रौर चाय की दुकान खोल कर बस गया। पास या दूर की, वह किसी भी क़िस्म की चाय दे सकता था — ईंट के ग्राकार में तैयार की गयी चाय की पत्तियाँ या फिर वज़न करके या पैकेटों में। दुकान से उसे कोई ग्रधिक मुनाफ़ा नहीं मिलता लेकिन उसे शिकायत न थी। "पवित्र स्थानों की यात्रा ही वह चीज़ है जो सच्चे मुसलमान को सब से ग्रधिक प्रिय होती है," वह कहता। इन विचारों ने व्यापारी को कोई महत्व प्रदान नहीं किया था। हालाँकि चाय-विक्रेता ग्रमीर न था, बाय उसे बराबरी का सम्मान देते। उसने बहुत कुछ देखा-जाना था ग्रौर पूर्व के बड़े व्यापारिक केन्द्रों के मोहक जीवन के बारे में कौशलपूर्वक बताता। उस बातूनी की यात्रा की बातें नयी ग्रार्थिक नीतिवाले क़ाबिल लोग मुंह बाये सुना करते।

क़ुद्रतुल्लाह उसी के इन्तज़ार में था। यह एक व्यावहारकुशल व्यापारी था। विदेशी काइयाँ तो था लेकिन उसकी उदासीनता सिर्फ़ बेवक़ूफ़ों को ही छल सकती थी। देखें, क़ीमतें कम हो जानेवाले इस काले दिन, वह क्या सुनाता है?

कई बार उसके सामने झुकते हुए सुखट्टा मख़सूम उस चिर-प्रतीक्षित मेहमान को मकान के ग्रन्दर ले ग्राया ग्रौर एक बार फिर ग्रपने मालिक

और मेहमानों को सलाम बजाते हुए तेज़ी से किसी क़ालीन की तरह भारी रेशमी मेज़पोश को लपेटा और एक दूसरा बिछा दिया। फिर एक बड़ी तश्तरी में फल-मेवे, लाल-लाल प्यालों में शीरचाय*, तिल छिड़के तन्दूरी नान सजा कर ले आया।

जलपान के आते ही मत्क़ोवुल ने उसके गुण बताने और अपने मेज़बान को ख़ुश करने के लिए ज़ोर-ज़ोर से चटखारे लेने शुरू कर दिये।

चाय-विक्रेता मुस्कुरा पड़ा। उसका धूसर-मटमैला चेहरा किसी थके बूढ़े की तरह दिखाई देता जबकि उसकी मुस्कान ने तो क़ुद्रतुल्लाह को क़रीब-क़रीब कँपा ही दिया।

अपने पैर फैलाकर घुटनों को सहलाते हुए चाय-विक्रेता ने अपनी कहानियाँ शुरू कीं। ऐसा लग रहा था मानो उसे यह देखने या अन्दाज़ लगाने की कोई फ़िक्र न थी कि इस घर में चिन्ता क्यों व्याप्त है। उसने उत्साहपूर्वक मशहद और कश्मीर में अपने प्रवास की याद की, कलकत्ता के व्यापारियों की भड़कीली पोशाकों का वर्णन किया। और क़ाशग़र के बाज़ारों के रीति-रिवाजों का तो कहना ही क्या! या इस मनोरंजक मामले को लें: क्या आपने सुना है कि बम्बई का एक व्यापारी किस प्रकार लन्दन गया?

क़ुद्रतुल्लाह चुपचाप पीला पड़ता गया। चाय-विक्रेता उसका मज़ाक़ उड़ा रहा था। और वह, नैमन्चा का भूतपूर्व मालिक, एक मामूली दुकानदार को खदेड़ देने की भी हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था।

"क्या बात है बाय? आपके चेहरे पर इतना धुआँ-धुआँ क्यों? क्या आपका दिल जल रहा है?" चाय-विक्रेता ने एकाएक धीरे से मनहूस हँसी हँसते हुए पूछा।

जन्मजात चापलूस नईमी ने इस तरह जताया मानो यह भद्दी चोट उस पर की गयी हो। फिर उसने भी अपनी आवाज़ ऊँची करते हुए कहा:

"अपने अदना सेवक से ख़फ़ा न हों, लेकिन यह ख़ुद आपकी ग़लती है, मालिक।"

"मेरी ग़लती?"

---

* शीरचाय – नमक, मक्खन और चाय की पत्ती मिला दूध।

"आप जाति के एक सर्वाधिक प्रभावशाली आदमी हैं। मुस्लिम जाति की शान हैं, आपने ख़ुद को यहाँ नैमन्चा में दफ़ना रखा है। आपने जो जाति के बल और गौरव हैं, आत्मा हैं, अपना धन छुपा दिया है ... और आपको क्या मिला? बोज़ के गट्ठर आपकी दुकानों में सड़ रहे हैं जब कि हम मास्को का रेशम पहन रहे हैं!"

"ओह, हुज़ूर मेरे, उस्ताद मेरे," क़ुद्रतुल्लाह ने तीखे स्वर में कहा। "आप किसी सुग्गे की तरह दस साल से एक ही चीज़ दुहराये जा रहे हैं। यह कहते-कहते आपने नाक में दम कर दिया है। जाति, जाति... मुस्लिम जगत... लेकिन अब एक मुसलमान किसी रूसी से ज़्यादा ख़तरनाक है। औरतें अपना सिर उठा रही हैं। एक औरत, कारीगर साबिर की विधवा से मैं क़ीमतों में कमी से भी ज़्यादा भयभीत हूँ।"

चाय-विक्रेता ने अपनी आँखें सिकोड़ीं और पूछा:

"क्या उसका नाम अनाख़ाँ है?"

क़ुद्रतुल्लाह ने अपने मांसल ललाट को सिकोड़ते हुए आश्चर्य से अपनी भौंहें ऊपर उठायीं।

"क्या तुम उसे जानते हो?"

"कभी-कभी मर्द के कान में औरतों की बातें भी पड़ जाती हैं," चाय-विक्रेता ने नईमी पर व्यंग्यपूर्ण नज़र डालते हुए जवाब दिया। "उनकी बातें कभी-कभी मर्द की ज़बान से भी निकल पड़ती हैं। गुरुजी की बात पर ध्यान दो, बाय। राजनीति में भी उसकी पैठ है! हवा का रुख़ देखो। ख़ुद को ज़रख़ेज़ बनाओ, बाय। कम्युनिस्ट बन जाओ! एक स्पृहणीय जीवन!.."

चाय-विक्रेता हँस पड़ा, फिर खाँसने लगा। हँसी और खाँसी से वह बेदम हो गया।

क़ुद्रतुल्लाह ने क्रोध और भय से उसे देखा।

"तुम्हारे जैसे आदमी से कभी-कभार ही किसी की मुलाक़ात होती है, मुहम्मद सईद। तुम तो जनाज़े में भी शहनाई छेड़ सकते हो। लेकिन तुम भी नहीं बचोगे!"

चाय-विक्रेता हँसता रहा।

"यही तो तुम ग़लत समझ रहे हो। तुम्हारी मुसीबतें मुझ पर असर नहीं करतीं। मेरे मुल्क में, अल्लाह का शुक्र है, ईमान का ख़ून नहीं

हो पाया है। हम अपने अख़बारों में औरतों के बारे में नहीं लिखते और मर्द अपना समय प्रचार में बर्बाद नहीं करते।" चाय-विक्रेता ने मज़ाक़ उड़ाने के अन्दाज़ में नईमी की ओर अपना सिर हिलाया। "हम सन्देह करते रहने का ज़हमत नही उठाते। हमारी सीख आसान है: कटार सीने के पार और सारी चिन्ताओं से छुटकारा! यही कारण है कि हमारा ईमान स्थायी है। मैं हँसता हूँ... अगर मैं तुम्हें समझ नहीं पाता तो मुझे हँसना क्यों नहीं चाहिये? समय ख़ून चाहता है लेकिन तुम लाड़-प्यार में लगे हो और किसी औरत की तरह रिरिया रहे हो। जब तुम्हारे गले में चाक़ू घुसेड़ा जाये तो तुम क्या कहोगे? 'इस तरह मामला नहीं सुलझता, दोस्त!' क्या तुम यही कहोगे? अनाख़ाँ! एक कारीगर की विधवा... नैमन्चा की दहशत! तुम भयभीत हो लेकिन मैं ख़ुश हूँ।"

"तो तुम समझते हो समय आ गया है..." बाय ने अपनी आवाज़ नीची करते हुए बुदबुदाकर कहा।

"समय?" चाय-विक्रेता ने उपेक्षा से अपने कन्धे उचकाये। "याद करने की कोशिश करो कि मैं ने पाँच साल पहले तुमसे क्या कहा था। दाने मत चुंगो। अण्डे सेनेवाली मुर्ग़ी मत बनो। अहा, सोवियत सत्ता के पिट्ठू! नयी आर्थिक नीतिवाले... समाज के स्तम्भ... मुझे उम्मीद है तुम्हें अहसास है कि तुम अण्डे सेनेवाली मुर्ग़ी हो? पाँच साल से तुम चूज़े पाल रहे हो: तुम अपने वर्कशॉप और माहिर बुनकरों पर ख़ुश होते रहे। कुछ चूज़ों पर! बोल्शेविक उनका मज़ा लेंगे और जहाँ तक अण्डे सेनेवाली मुर्ग़ी का सवाल है, वे उनकी गर्दन मरोड़ देंगे और उससे शोरबा तैयार करेंगे।"

दुकानदार मत्क़ोवुल ने चबाना बन्द कर दिया। अधजगे जैसी स्थिति में ही उस ने अपने तेलही होंठों पर जीभ फेरी।

"चूज़े का शोरबा," उसने अहमियत जताने के अन्दाज़ में अपना सिर हिलाते हुए कहा, "वहाँ के सबसे अच्छे भोजन में है।"

हँसता हुआ चाय-विक्रेता उठ खड़ा हुआ। अपने सीने पर एक हाथ रखकर उसने दरबारी अंदाज़ में सलाम बजाया।

"जलपान और बुद्धिमत्तापूर्ण बातचीत के लिए आपका शुक्रिया। मैं ने नाश्ता-पानी कर लिया। मैं आपकी मेहमाननवाज़ी की शिकायत नहीं करूँगा।"

तुरंत सुखट्टा मख़सूम सम्मानित मेहमान को मकान के बाहर ले जाने के लिए दरवाज़े पर हाज़िर हो गया।

चाय-विक्रेता ने सेवक पर नज़र डाली और एक बार फिर अपने मेज़बान को सलाम बजाया।

"आवारा! लण्ठ! मशहद के डाकघरों में कुछ हथकण्डे सीख लिए हैं!" चाय-विक्रेता के चले जाने के बाद नईमी ने कहा। "रट रखा है! पाँच साल पहले। क्या बदतमीज़ी है! वह चाहता क्या था?"

क़ुद्रतुल्लाह ने तिरछी नज़रों से देखते हुए जवाब दिया जो एक साथ ही दुष्टतापूर्ण और कायरतापूर्ण थी। पाँच साल पहले चाय-विक्रेता ने उसे अपना सोना बसमाचियों–"मुस्लिम सेनाओं"–के लिए हथियार ख़रीदने के लिए इस्तेमाल करने की सलाह दी थी।

"ओह!" नईमी ने विस्मय से कहा और अपने चारों ओर खटके से देखा। "वह लापरवाह है, वह आदमी निश्चित रूप से लापरवाह है। वह पागल है! आख़िर उसके पास खोने के लिए है ही क्या!"

"लेकिन तुम तो चौकस रहे हो," बाय ने निराशा से सोचा।

उपदेशक के पास अब कुछ भी नहीं बचा था। वह खाज भरी भेड़ की तरह बेकार हो चुका था। फिर भी वह कितना बातूनी था! जब वह बोलता, भीड़ उसका मुँह ताकते रहती। आपको यक़ीन नहीं होगा कि उन्नीस सौ सत्रह में इसी नईमी ने पुराने शहर के मुसलमानों को ग़िश्तमस्जिद में ईंट के मक़बरे में जमा किया था और उन्हें क़रीब-क़रीब ग़ज़ावत * के लिए तैयार भी कर लिया था। भीड़ को किस तरह उसने ललकारा था: "मुसलमानो, अमीर और ग़रीब, आप सब ख़ून से भाई हैं!" उसने उन लोगों से अर्ज़ किया था। "रूसी हुकूमत मुर्दाबाद! क़ोक़ान ख़ुदमुख़्तारी ज़िन्दाबाद!" वह जवान था लेकिन शरीअत के सरपरस्त सफ़ेद साफेवाले पाक उलमा उसके सामने झुक गये थे।

उसे एक सीधे-सादे शिक्षक और जागरण का दम भरनेलवाले के रूप में देख कर, लोग अब उन बातों की याद नहीं करते थे। किसी न किसी तरह उसने अपने लिए अधिकारियों का विश्वास प्राप्त कर लिया था। वह उन जगहों पर मिलता जहाँ चाय-विक्रेता अपनी नाक घुसेड़ने

---

* ग़ज़ावत – मुसलमानों का धर्मयुद्ध।

की भी हिम्मत नहीं करता। क्या उसी तरह काम किया जाना चाहिए?

नईमी चलने को हुआ। क़ुद्रतुल्लाह ने जितने स्नेह से उसकी आगवानी की थी, उससे कहीं अधिक स्नेह से उसे विदा किया। सच तो यह है कि सुखट्टा मख़सूम को एक ओर हटाते हुए उसने ख़ुद उसके लिए दरवाज़ा खोला था।

क़ुद्रतुल्लाह देखता रहा कि किस प्रकार, पीछे एक भी नज़र डाले बिना, नईमी गली पार करके दूसरी ओर चला गया। इसकी ज़रूरत भी क्या थी? ऐसा लगा जैसे सिर्फ़ मख़सूम ही अब भी बाप के प्रति समर्पित रह गया था।

दीवानख़ाने में पहुँच कर क़ुद्रतुल्लाह ने झटपट चतुर दुकानदार से छुटकारा पाया। वह ठीक उसी समय पहुँचा जब उसे अपने लड़के नुस्रतु-ल्लाह की आवाज़ आँगन में सुनाई पड़ी थी।

उसका लड़का अच्छा नहीं निकला और क़ुद्रतुल्लाह उसे पसन्द नहीं करता था।

बाप की चिन्ताओं और परेशानियों से बेटे को न तो कोई मतलब था और न ही दिलचस्पी। और न बाप को ही बेटे के काम-काज और आकांक्षाओं की कोई जानकारी थी। नुस्रतुल्लाह अपने बाप के दोस्तों से दूर रहता और अपने दोस्तों को भी अपने बाप से मिलवाने नहीं लाता। वह अपने बाप के मामलों में कोई हाथ न बँटाता और न बाप को ही उससे किसी लाभ की उम्मीद थी। उसने अपने बाप की जायदाद में एक पाई की भी बढ़ोतरी नहीं की थी और इसमें सन्देह ही था कि वह कभी ऐसा कर भी पायेगा। पैसे ख़र्च करने के सिवा वह कुछ नहीं करता। वह बाप के लिए सिर्फ़ घाटा ही घाटा था। कभी-कभी बाप कड़वाहट से सोचता कि जिस धन को जमा करने में उसने पूरी ज़िन्दगी लगा दी थी और कठिनाइयों भरे पिछले कुछ वर्षों में उसकी हिफ़ाज़त के लिए जो कुछ हो सकता था, किया था, वह एक नक्कारे और बेवक़ूफ़ के हाथों में चला जायेगा। उसे पूरा विश्वास था कि उसकी मौत के दूसरे ही दिन उसका बेटा सब कुछ हवा में उड़ा देगा और यहाँ तक कि क़ुद्रतुल्लाह-ख़्वाजा की याद में नाम लेने के लिए भी कुछ नहीं रह जायेगा। यहाँ तक कि इससे भी कुछ बुरा ही हो सकता है: हो सकता है इस

फ़िज़ूलख़र्च को जुए की ही लत पड़ जाये और पाँसे की एक चाल पर ही वह बाय की पूरी जायदाद की बाज़ी लगा जाय... ख़ुदा न करे।

"पल भर के लिए इधर आओ," दीवानख़ाने की दहलीज़ पर खड़ा हो कर क़ुद्रतुल्लाह ने कहा।

लेकिन उसके लड़के ने अपने चेचक के दाग़ों भरे चेहरे को उधर घुमाने का भी कष्ट नहीं किया जो ऐसा लगता था जैसे ओले ने हुलिया बिगाड़ दिया हो।

"मैंने आपके पैसे में से एक भी पाई नहीं छुआ है! मैंने कोई भी चीज़ नहीं ली है," उसने कहा और अन्दर आँगन में अपनी माँ के पास चला गया।

क़ुद्रतुल्लाह की पत्नी हाजर बिबि अपने बेटे से अत्यधिक प्रेम करती थी। उसने कभी भी यह सोचने का कष्ट नहीं किया था कि वह चालाक है या बेवक़ूफ़, काम-काजी है या आलसी। उसके दिमाग़ में सिर्फ़ एक ही बात थी कि उसका बेटा जवान हो गया है और समय आ गया है कि उसके लिए बहू पसन्द की जाये। यह माँ का ही उसके प्रति अन्धा प्यार था जिसने नुस्रतुल्लाह को परिवार से बाँध रखा था। वह उसे कभी ऐसे सवालों से परेशान नहीं करती, जैसे: तुम कहाँ थे? तुम क्या कर रहे थे? तुम क्या सोचते हो? किसी सेविका की तरह वह अपने बेटे की चाकरी की ओर लगी रहती – उसके लिए अपनी आँखें बिछाये रहती और उसे ख़ुश देख कर ख़ुश होती। उसे उसकी माँ जितना न तो कोई चाहता न ही मजबूर करता।

"जाओ, अपने बाप के पास जाओ," उसकी माँ ने इस विश्वास के साथ कहा कि वे कभी न कभी तो बहू की, उसके बेटे की शादी के बारे में बात करेंगे। भला इसके अलावा एक चहेते बाप और एक लायक़ बेटे के बीच दूसरा काम क्या हो सकता है?

नुस्रतुल्लाह ने अपने एक कन्धे पर बेक़सम * का चोग़ा डाला और बेदिली से अपने बाप के पास गया। उसे इस आमना सामना से किसी भी नतीजे की उम्मीद न थी और वह दीवानख़ाने के एक कोने की ओर

---

* बेक़सम – एक क़िस्म का धारीदार, रंगीन रेशमी कपड़ा।

सूनी-सूनी नज़रों से ताकने लगा। उसकी नाक पर के बड़े-बड़े चेचक के दाग़ आबनूस की तरह चमक रहे थे। गाल की चौड़ी हड्डियाँ लगभग कानों तक पहुँच रही थीं।

"बैठ जाओ, बेटा, बैठ जाओ। क्या तुम जानते हो, कैसी बदक़िस्मती ने तुम्हारे बाप को आ दबोचा है?"

हाजरबिबि, बातचीत में आ टपकने के लिए सबसे अच्छा बहाना, एक हुक़्क़ा लेकर कमरे में आ गयी।

"वह कैसे जान सकता है कि उसके बाप को क्या चीज़ परेशान कर रही है?" उसने अपने पति की ओर मोती की सीपी की बनी गुड़गुड़ी की नली बढ़ा दी और माचिस जलाकर देते हुए, प्रसन्नता भरे लहजे में कहा। "वह अपने दिल में सब कुछ महसूस करता है। हम सब की एक ही फ़िक्र है।"

"फिर ठीक है," बाय ने उसकी बात काटते हुए कहा। "अब से मैं चाहता हूँ कि तुम घर का काम और किफ़ायत से चलाओ। हर ऐरे-ग़ैरे के लिए दरवाज़ा मत खोलो। यह फ़िज़ूलख़र्ची का समय नहीं।"

हाजरबिबि ने सिर हिला दिया और जल्दी-जल्दी अध खाये तन्दूरी नानों और मिठाइयों के टुकड़ों को दस्तरख़ाँ पर से साफ़ करने लगी।

"पिता जी, फ़िक्र मत कीजिए। हम ख़ुद यह सब देख लेंगे। क्या आपने कल्पना की है कि हम नहीं जानते, ऐसे चिर-प्रतीक्षित मौक़े के लिए किस तरह तैयारी की जाये? जब तक हमें आपकी सहमति..."

"तुम किस चीज़ के बारे में बात कर रहे हो?" बाय ने परेशानी के साथ कभी अपनी बीवी, कभी अपने बेटे की ओर देखते हुए, धीरे से कहा। "कौन-सा मौक़ा? कैसी सहमति?"

हाजरबिबि दस्तरख़ाँ पर झुकी की झुकी निश्चल खड़ी रह गयी। अपने मुक्के नचाता हुआ क़ुद्रतुल्लाह धीरे-धीरे अपने लड़के की ओर बढ़ा।

"यह सब क्या है? अब तक तुमने क्या किया है, निठल्ले? तुम्हारे बाप को ही हर हालत से जूझना पड़ा है! सहकारिताएँ मास्को के सस्ते माल से ठसाठस भरी हैं, ताक के तख़्ते उनके वज़न से चरमरा रहे हैं। और यहाँ मैं किसी फटीचर, कंगाल ख़रीददार तक की बाट जोह रहा हूँ। कोई मेरा बोझ नहीं खरीदता, यहाँ तक कि मुफ़्त भी नहीं। कोई ऐसा मिले उससे पहले ही मुझे अपने सारे खाते बन्द कर

देने होंगे . . . और तुम — तुम किसी काम के नहीं हो, मौज उड़ानेवाले, दुश्मन और अपने ही बाप के लिए जहर हो। तुम सोच किस चीज़ के बारे में रहे हो? तुम्हारे इस भेजे में है क्या?"

एक ऊब भरी निगाह के साथ नुस्रतुल्लाह ने चेचक के दाग़ोंवाली नाक को खुजलाया। उसकी शीशे जैसी आँखों में चिन्ता की कोई परछाईं तक न थी। वह क्या सोच रहा है? ह्‌ह्‌. . .। वह इतना बेवक़ूफ़ नहीं कि सोचे-विचारे। यह उसके बाप का काम है। उसका बाप ऐसा आदमी था जो दिन-रात सोचा करता। तभी तो वह इतना लालची और मक्खीचूस था।

नुस्रतुल्लाह ने तय कर लिया था, इस बार वह ख़ुद अपने लिए बात करेगा। बाप के भाषण ख़त्म करने की प्रतीक्षा करते हुए उसने आलस भरे हठीलेपन से पूछा:

"आप मेरे लिए बहू कब ढूँढेंगे?"

चीखने से कमज़ोर पड़ गया बाप फिर अपने तकिये पर गिर पड़ा। ऐसे बेटे के साथ कुछ नहीं किया जा सकता!

हाजरबिबि की हिम्मत बंधी: अपने पीले, झुर्रीदार चेहरे पर, जो किसी न किसी तरह मुरझाये ख़रबूज़े की याद दिलाता था, एक मीठी मुस्कान फैल गयी।

"बच्चों के बापू नाराज़ न हों। अपने बेटे से बात करें। देखिये वह कितना अच्छा लड़का है। उसे अपनी जवानी का आनन्द लेने दीजिये। उसे अपनी शक्ति बर्बाद करते देख, क्या आपका दिल नहीं पसीजता?"

बाय ने नफ़रत से थूक दिया।

"घोंघा बसन्त! तुम्हे उस के लिए खेद है जो अपनी शक्ति आवारागर्दी में बर्बाद कर रहा है। और अपने पति के लिए? क्या उसके लिए तुम्हें खेद नहीं?"

वह एकाएक दुहरा पड़ गया, अपना सिर हाथों से थाम लिया और आर्तनाद करते हुए मुक्के से अपने सिर के पीछे ठोकने लगा।

भयभीत हाजरबिबि अपने पति की ओर दौड़ पड़ी। नुस्रतुल्लाह नहीं घबड़ाया।

"कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता," उसने एकदम बेपरवाही से कहा, "मैं नैमन्चा के कारीगर साबिर की बड़ी बेटी से शादी करूँगा।"

इस बात ने बाप और माँ दोनों को स्तब्ध कर दिया। उन्हें अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

"आह, काश मुझे मौत आ जाये!" हाजरबिबि किसी बच्चे की आवाज़ में चीख पड़ी। "यह तो अनाख़ाँ की बेटी है!"

बाय ने समय के तक़ाज़े के मुताबिक़ अपने कन्धे चुस्त-दुरुस्त किये और क्रुद्ध भंगिमा से दरवाज़े की ओर इशारा किया।

"निकल जा तू, नमकहराम, कमीना! मेरी नज़रों से दूर हो जा! पाजी! तू अपना ख़ामदान भूल गया है, चुड़ैल की औलाद! निकल जा!"

नुस्रतुल्लाह आराम से उठा जैसे एक मिनट के लिए आँगन में जाना हो। वह मुड़ा और शान्ति से कमरे के बाहर चला गया। उसकी माँ उसके पीछे रोती, हाथ मलती दौड़ी।

क़ुद्रतुल्लाह कोसे जा रहा था लेकिन उसकी आवाज़ में ग़ुस्से से ज़्यादा हैरानी थी।

"बेवक़ूफ़ कहीं का! आग में पानी डालना चाहता है... मुझे भले ही उसकी गर्दन उतार लेनी पड़े लेकिन उसे ऐसा नहीं करने दूंगा। उस जैसे लुच्चे से उम्मीद ही क्या की जाये।"

बरामदे में जाकर सीढ़ियों पर बैठकर उसने पेटेंट चमड़े के अपने बूट पहने और अधीरता से चारों ओर देखा। बरामदे के सामने चापलूसी से अपनी छोटी-छोटी रक्तिम आँखें झपकाता सुखट्टा मख़सूम खड़ा था।

"चारबाज़ार और क़ोश्क़ावाक़ की दुकानों पर जाओ," बाय ने आदेश दिया। "मैं ख़ुद दुकानों पर जाऊँगा। हम काफ़ी कह चुके हैं!"

उसने ख़ूब कशीदा की गयी अपनी टोपी को चौतहा करके अपने सीने के पास छुपा लिया। खूंटी पर टँगी पोस्तीन की टोपी से उसने एक पुरानी काली टोपी निकाली, दो बार अपने हाथ से उसे ठोका और साफ़ करके अपने सिर के पीछे रख लिया।

फिर भी वह शान्त नहीं हो पाया।

"क्या तुमने सुना! मेरे उस लाड़ले ने क्या चुनाव किया है! एक बेवक़ूफ़ कितना नीचे गिर सकता है! ख़ुदा न करे, नैमन्चा में कोई यह सुन ले। इस लड़ाकू विधवा ने मेरी ज़िन्दगी में ज़हर घोल दिया है।

आह, काश यह पुराने ज़माने में होता तो मैं गन्दे झाड़ू से उसे इस तरह निकाल बाहर करता कि उसका कोई चिह्न तक नहीं बचता।"

सुखट्टा मख़सूम ने हमदर्दी से आह भरी लेकिन अप्रत्याशित रूप से असहमति के साथ कहा:

"मालिक, मेरा ख़्याल है, आपको उसके साथ ज़्यादा सावधानी बरतनी चाहिए। वर्कशॉप की औरतें उसके आदेश उसी तरह मानती हैं जैसे किसी सुलतान का आदेश हरम की औरतें मानती हैं। जब वह कुछ कहती है, वे बहस तो करती हैं लेकिन फिर राज़ी हो जाती हैं। भला मैं आपको क्या सिखा सकता हूँ। आप ख़ुद जानते हैं। आप अनुभव के धनी हैं।"

क़ुद्रतुल्लाह ग़ुस्से से काँप उठा: यही देखने के लिए वह ज़िन्दा था! एक नौकर, अदना सेवक उसका विरोध कर रहा था। बाय चीखना, थूक देना, अपने घूँसे चलाना चाहता था लेकिन वह कुछ भी नहीं कर सका।

"आह?" वह असहाय बुदबुदाया।

मख़सूम ने विनयपूर्वक अपना सिर झुका लिया। काश, उसके दुम होती कि वह हिला पाता।

अपनी सुखट्टी अंगुलियों से दाढ़ी सहलाता हुआ बाय विचारपूर्ण हो उठा। चुपचाप मुड़ कर वह दीवानख़ाने में लौट गया।

सुखट्टा मख़सूम दबे पाँव चुपचाप उसके पीछे-पीछे चला। यह महसूस करके कि बाय कोई महत्वपूर्ण फ़ैसला ले रहा है, उसका दिल काँप उठा।

उसे ऐसा लगा कि बाय के चेहरे पर उसने कोई मुस्कान तैरते हुए देखा है।

"मेरी बीवी को बुलाओ।"

सुखट्टा मख़सूम दौड़कर दरवाज़े के बाहर चला गया और एक क्षण बाद ही हाजरबिबि अन्दर आ गयी।

"जाओ और अपने बेटे से कह दो कि मैंने उसे इजाज़त दे दी है," क़ुद्रतुल्लाह ने आदेश दिया।

हाजरबिबि भय से घुटनों के बल भहरा उठी।

"हाय! बच्चों के बापू, अपना फ़ैसला बदल डालो। अपने बेटे का ख़ानदान मत बिगाड़ो। क्या कोई ऐसी पाक लड़की नहीं जो हमारे घर के क़ाबिल हो?"

"मैंने कह दिया! जाओ। अपने लाड़ले को ख़ुश करो।"

हाजरबिबि भाग कर वहाँ से चली गयी और क़ुद्रतुल्लाह ने दुष्टतापूर्ण ठहाका लगाया।

"तो ?" वह अपने नौकर की ओर मुड़ा। "सुना तुमने, मैंने अपनी इजाज़त दे दी है ? तुम शायद क़ुद्रतुल्लाह ख़्वाजा को पागल समझते हो ? यह झूठ है! अभी भी मुझ में काफ़ी शक्ति बची है! अब मैं इस विधवा को अपने इशारे पर नचाऊँगा। अब वह नन्हीं चिड़ियाँ की तरह ख़ुद-ब-ख़ुद उड़ कर मेरे हाथ में आ जायेगी। क़ुद्रतुल्लाह-ख़्वाजा का रिश्तेदार होना कोई मज़ाक़ नहीं! वह उड़ती आयेगी, ठीक है! यह सुनते ही वह अपने सारे ख़्यालात भूल जायेगी। भिखमंगी... कटोरी भर शोरबे के लिए वह अपनी बेटी किसी कोढ़ी को भी दे सकती है। और यहाँ तो एक इतना समृद्ध ख़ानदान अपने दरवाज़े उसके लिए खोल रहा है। वह बेवक़ूफ़ औरत नहीं। उसे मालूम होना चाहिए कि उसके लिए क्या अच्छा है!"

"जी हाँ, मालिक, वह बेवक़ूफ़ नहीं," सुखट्टा मख़सूम स्पष्ट सन्देह से अपने कन्धे उचकाता हुआ बुदबुदाया।

क़ुद्रतुल्लाह ने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

"चलो, आख़िर हमारा मूर्खराज किसी काम तो आया!" उसने तीव्र आवेश से कहा। "मैंने कभी नहीं सोचा था, वह भी काम आयेगा। वह एक मुश्किल समय में अपने बाप की मदद कर रहा है..."
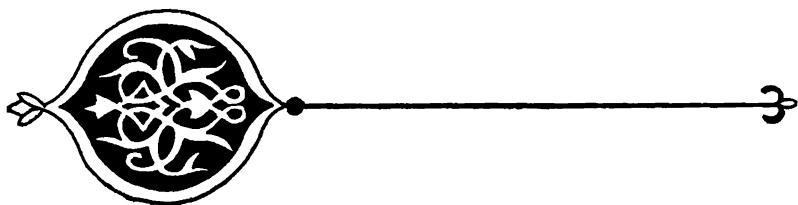
छठवाँ भाग

इस व्यस्त सार्वजनिक मार्ग को कभी बाज़ार मार्ग कहा जाता था। इक्का-अड्डा के पास जहाँ यह चौक की तरह चौड़ा हो गया था, अटारी-वाली एक सफ़ेद इमारत थी। १६१६ में इसमें शहर परिषद थी। बाज़ार की दुकानें चारबाज़ार चली गयीं, मार्ग पर पत्थर बिछा दिये और लोग इसे पत्थर-मार्ग कहने लगे।

इस सफ़ेद इमारत पर पूरे एक साल तक काले लोहे का एक साइन-बोर्ड टँगा रहा। साइनबोर्ड पर लिखा था: "पुरानी शहर परिषद।" दीवार पर इसका चिह्न पड़ गया। फिर मकान के साथ लकड़ी का एक लम्बा पूरक-भवन जोड़ा गया। खंभों पर लाल झण्डे फहराने लगे। उनके बीच धूप से मुड़े-तुड़े एक प्लाइबुड पर लिखा था: "पुराना शहर महिला क्लब।"

आज क्लब के बाहर बहुत-से लोग जमा थे। नंगे पाँव छोटी लड़कियों और चम्पत हो जाने को उतावले झबरे बालोंवाले छोटे लड़कों के साथ टोलियों में परंजी लगाये औरतें खड़ी थीं। खोंचेवाले घर की बनी मिठाइयाँ बेचने वहाँ जा जुटे थे—जहाँ भीड़ वहीं वे।

क्लब भी लोगों से भरा था। कुछ औरतें घुटनों पर परंजी रखे बेंचों पर पास-पास क़तारों में बैठी थीं, कुछ दरवाज़ों पर और दीवारों से लग कर खड़ी थीं। उन्होंने अपने चचवान सिर के पीछे कर रखे थे। लड़कियाँ हँस रही थीं और किसी दुतार* के तार का हल्का स्वर सुनाई पड़ रहा था।

हाल के एकदम अन्दर लाल कपड़े से ढँकी मेज़ के बायें, क्लब के ऑफ़िस में जाने का दरवाज़ा था। दरवाज़ा अधखुला था। ऑफ़िस में संगीत व कशीदाकारी मण्डलियों की प्रमुख तथा मुहल्ले के विभिन्न हिस्सों की महिला कार्यकर्ता थी। शिक्षक नईमी भी उन में था।

जुराख़ाँ औरतों से घिरी थी। सब के पास निबटाने के लिए कोई न कोई ज़रूरी काम था। हर व्यक्ति को जल्दी और परेशानी थी। अकेली जुराख़ाँ ही शान्त दिखाई दे रही थी। क्षण भर ख़ाली पाकर उसने अनाख़ाँ को अपने पास बुलाया।

"नैमन्चा की महिलाओं का क्या हाल है?" उस ने पूछा।

"वे यहीं हैं, बहन जुराख़ाँ। रिज़वान क़ुम्रि चाची को लायी है। सिर्फ़ नज़ाकत और दूसरी दो औरतें नहीं आयीं।"

"नज़ाकत कहाँ है? तुम्हें उसे नज़रों से ओझल नहीं होने देना चाहिए।"

मधुर मुस्कान के साथ अपने सोने के दाँत चमकाता नईमी बातचीत में आ टपका:

---

* दुतार—दो तारवाला एक बाजा।

"मुझ से मत कहिये, आप अब भी सन्तुष्ट नहीं, कॉमरेड जुराख़ाँ? आज क्या जशन मना रहे हैं हम। मैं तो भाग-दौड़ करते-करते थक गया हूँ। मैं यहाँ सुबह से आया हुआ हूँ। विश्वास कीजिए, मैं रोमांचित हूँ... "

"आप अपना ध्यान बिलकुल नहीं रखते, गुरुजी," जुराख़ाँ ने रुखाई से जवाब दिया और औरतों की ओर मुड़ गयी। "पोर्ट्रेट का क्या बना? हाफ़िज़ाख़ाँ, क्या पोर्ट्रेट तैयार है?"

एक नाटी, झाईंदार चेहरेवाली औरत अपनी लाल परंजी अलमारी पर डाल तेज़ी से उठकर चली गयी और दूसरे कमरे से उज्ज्वल, युवा आँखोंवाली एक बूढ़ी औरत का पोर्ट्रेट ले आयी। पोर्ट्रेट के गले में मालाएँ पड़ी थीं। जुराख़ाँ ने स्वीकृति में सिर हिलाया और पोर्ट्रेट को हॉल में ले जाया गया।

नईमी कमरे के कोने में हत्थेदार कुर्सी पर बैठी एक नौजवान औरत के पास जा पहुँचा। अपनी कमरबन्द के झब्बों से खेलते हुए उसने कूजती आवाज़ में पूछा:

"क्या आपने पेरिस की ख़ूबसूरती को मात देने का इरादा कर लिया है, ख़ानुम?"

ख़ानुम दूसरी सभी औरतों से अलग लिबास में थी। उसने एक खड़े कॉलरवाला हरे रंग का सैनिक ट्यूनिक पहन रखा था और कमर में एक चौड़ी पेटी कसी थी। घुटनों से नीचे न पहुँचनेवाला उसका छोटा स्कर्ट सिलाइयों से फूट पड़ता लग रहा था। उसके बाल छोटे कटे और पुरुषों जैसे संवरे थे। लम्बे चूड़ेवाली एक छोटी घुड़सवार टोपी बड़े बांकेपन से उसके सिर के किनारे लगी थी।

"अभी थोड़ा समय है," नईमी ने अपनी जेब-घड़ी का ढक्कन खोलते हुए आगे कहा। घड़ी उसने चाँदी की एक लम्बी चेन में लगा रखी थी। "शायद आप टहलना चाहें?"

वे हॉल में गये।

अदा से डोलती, छोटे क़दम रखती जब वह चलती तो पिंडलियों में एकदम ठीक आते ख़ानुम के ऊँचे बूट चरमरा उठते। नईमी ने उसके हाथ में हाथ डाल रखा था। कंधे से कंधा मिलाये भीड़ भरे गलियारे से होकर वे लाल कपड़ेवाली मेज़ के पीछे गये। उन्होंने पूरा हॉल पार

किया। वे धीमी आवाज़ में बातें करते रहस्यपूर्ण नज़रों का आदान-प्रदान कर रहे थे और बातचीत में इतने तल्लीन थे कि उन्हें अपने आसपास की कोई ख़बर न थी।

हॉल में असामान्य निस्तब्धता छा गयी जैसे यह एकाएक ख़ाली हो गया हो। फिर उस मौन की जगह हैरतभरी बुदबुदाहट ने ले ली। मज़दूर मुहल्लों की साधारण महिलाओं ने परेशानी से अपने मुंह फेर लिये। यहाँ तक कि नईमी की कक्षाओं में अपना चेहरा खुला रखनेवाली औरतों ने भी शर्म और परेशानी से लम्बी साँसें लीं जैसे कहना चाहती हों, "काश मौत आ जाती!" और सिर के पीछे किये अपने चचवान फिर गिरा लिये। आगे की क़तार में परंजीवाली एक औरत ने ख़ानुम और नईमी की ओर ताक-झाँक करने के लिए अपनी लड़की के ललाट पर ग़ुस्से से चपत लगा दी। अपनी सीट से उठकर माँ ने उनकी ओर पीठ कर ली और लड़की से बात करने लगी।

जब अनाख़ाँ हॉल में आयी, परंजीवाली एक औरत ने उसे रोक लिया।

"बेटी अनाख़ाँ, मैं घर जा रही हूँ।"

आवाज़ से अनाख़ाँ ने क़ुम्रि को पहचाना।

"क्यों?"

"मैं बच्चों को घर पर छोड़ आयी हूँ, फिर आटा भी गूंधा..."

"नहीं, तुम नहीं जाओगी। बैठक शुरू होने ही वाली है। फिर हम साथ-साथ चलेंगे। कृपया शान्त हो जाओ। यहीं मेरा इन्तज़ार करो।"

अनाख़ाँ ने सैनिक ट्यूनिकवाली औरत को इशारे से बुलाया और जुराख़ाँ के पास ले गयी।

"इसका क्या मतलब है? क्यों तुम्हारी सड़क से कोई नहीं आया?" जुराख़ाँ ने पूछा।

"मैंने सब को बता दिया था," ख़ानुम ने ढिठाई से जवाब दिया। "मैंने उन्हें समझाने, पूछने और फटकारने की कोशिश की... मैं तो इस भाग-दौड़ से क़रीब-क़रीब आजिज़ आ गयी हूँ, कॉमरेड जुराख़ाँ। सबने आने का वायदा किया था... ख़ुद मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।"

"मेरी बात सुनो," जुराख़ाँ ने उसे सिर से पाँव तक निहारते हुए

गुस्से से कहा, "औरतें तुम्हारे नक़्शेक़दम पर नहीं चलेंगी। क्या सवार है तुम पर? फिर अपना क्या बाना बना रखा है तुमने। तुरंत घर जाओ और कोई अच्छी पोशाक डाल लो। इस बेहूदे लिबास में क्लब मत आना।"

"आप मुझे मना करेंगी? क्या आप मेरी मृत सास की जगह लेना चाहती हैं, बहन ज़ुराख़ाँ?"

ज़ुराख़ाँ ने शान्तिपूर्वक और साधिकार हॉल की ओर इशारा किया।

"मज़दूर महिलाएँ इस हॉल में जमा हैं। वे तुम्हारी सास हैं। मैं तुम्हें चेतावनी देती हूँ। बात नहीं मानने पर हम तुम्हारा मज़ाक़ बनायेंगे। अगर तुम सच में इज़्ज़तदार औरत हो तो हमें ऐसा करने पर मजबूर न करो।"

ख़ानुम ने कोई जवाब नहीं दिया लेकिन अपनी आँखें झुका लीं और एक ओर चली गयी।

कार्यकर्ताओं की एक टोली के आगे-आगे ज़ुराख़ाँ हाल में आयी।

वे मेज़ के पास बैठ गयीं। मेज़ के पास एक सीट पर नईमी भी उनके साथ आ कर बैठ गया।

हॉल का माहौल तुरंत बदल गया। सब की आँखें ज़ुराख़ाँ की ओर जिज्ञासा से टिक गयीं। उसे अच्छी तरह देखने के लिए औरतें अपनी सीटों पर थोड़ा उझक गयीं और गर्दनें उचका लीं। वे जलहीन मरुभूमि के लम्बे सफ़र के बाद नख़लिस्तान के क़रीब पहुँचते लोगों जैसी थीं।

उनमें से बहुत-सी ज़ुराख़ाँ को उसके कामों से जानती थीं। तीसरी क़तार में लाल परंजी में हाफ़िज़ा नाम की एक औरत थी। उन दिनों लाल परंजी पहनने का वही मतलब था जो क्रान्ति के दिनों में पुरुषों के अपनी टोपी में लाल सितारा लगाने का था। जब हाफ़िज़ा के निर्दय पति और ससुर ने उस पर मिथ्यारोप लगाया था, ज़ुराख़ाँ अदालत में आ कर उसकी तरफ़ से घण्टा भर बोली थी। और अब दो वर्षों से हाफ़िज़ा लाल परंजी ही पहनती जिससे लोग देख सकें, किसने उसे बचाया था।

मेज़ पर रखे पोर्ट्रेट की ओर इशारा करते हुए ज़ुराख़ाँ ने कहा:

"साथियो, इस पोर्ट्रेट को देखो। क्या तुम्हें मालूम है हमने इसे मालाओं से क्यों सजाया है? हमारी बहन इस कम्युनिस्ट औरत ने आज

हमें एक ख़त भेजा है। जो अब तक इसे नहीं जानते उन्हें मैं बता दूं, यह हमारी चहेती क्लारा ज़ेत्किन है, व्लादीमिर लेनिन की जीवन संगिनी और विश्वस्त सहायिका।"

लेनिन की सहायिका। यह समझ के बाहर की बात थी, भला कोई औरत सहायिका कैसे हो सकती है। अगर ऐसी अनहोनी भी सच में संभव है तो इसका मतलब है कि दुनिया में कुछ भी नहीं जो औरत न कर सके।

जुराख़ाँ तेजस्वी, साहसी और बुद्धिमान लेकिन अब भी दूर और अगम्य क्लारा के बारे में बोलती रही जब कि क्या बूढ़ी, क्या जवान, सब ख़ुद जुराख़ाँ के बारे में सोच रही थी। हॉल में मौजूद हर किसी की तरह वह भी उज़बेक महिला थी लेकिन जो ख़ुशी उसे नसीब हुई थी, वह सिर्फ़ परी-कथा में ही संभव है: उसने लेनिन को अपनी आँखों से देखा था, उनसे हाथ मिलाया था। जुराख़ाँ के चेहरे को देखती और उसकी आवाज़ सुनती औरतों ने महसूस किया कि वह फिर अपनी ख़ुशियों की दुनिया में पहुँच गयी थी। १९२१ में जब जुराख़ाँ महिलाओं के एक सम्मेलन में भाग लेकर मास्को से लौटी थी, शहर भर के लोग उस औरत को देखने आये थे जिसने लेनिन से बात की थी।

श्रोताओं ने उसकी बातें आश्चर्य और निष्ठा से सुनीं। किसी में उपेक्षा न थी।

"उज़बेकिस्तान की प्यारी महिलाए," जुराख़ाँ ने क्लारा ज़ेत्किन का ख़त पढ़ा। "मध्य एशिया की विभिन्न जातियों की आपकी बहनों ने अपने मानवीय रुझान, अपने मानवीय सुख के लिए सोवियत जनतंत्र के महत्व को समझा है। सार्वजनिक जीवन का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र है जहाँ मध्य एशिया की महिलाओं ने हमारे मज़दूरों और किसानों के जनतंत्र में कम्युनिज़्म के निर्माण में अपनी दृढ़ इच्छा और अपनी सहायता की योग्यता न प्रदर्शित की हो... अपने दिल का सारा उत्साह, अपनी भावनाओं की सारी स्वच्छता और व्यग्रता, अपनी इच्छा-शक्ति जो कुछ भी आप में हैं, उसे सोवियतों के जनतंत्र को बनाये रखने और इसे एक कम्युनिस्ट भावना में पारंगत करने में अर्पित कर दें... "

"एकदम ठीक!" नईमी ने अपनी सीट से थोड़ा उठते हुए, अहमियत जताने के अन्दाज़ में कहा।

लेकिन जुराख़ाँ ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। देखा तक नहीं। श्रोताओं ने यह बात भाँप ली। कितनी बहादुर थी वह। कितनी गर्वीली। शिक्षक के साथ ठीक ही हुआ। बीच में आने का क्या काम। यह औरतों के बीच की बात थी, उनकी आपसी बात और उन्हें उसकी हामियों की ज़रूरत नहीं थी।

बहन क्लारा और बहन जुराख़ाँ उन्हें रूसी औरतों की मिसाल पर चलने का आह्वान कर रही थीं। जुराख़ाँ ने एक रूसी क्रान्तिकारी की बेटी अपनी सहेली साफ़िया नदेझदिना के बारे में बताया। बहन साफ़िया बहुत दूर से आ कर उनके शहर में बस गयी हैं। वह उज़बेक महिलाओं को बुनकर का काम और नये ढंग से रहना सिखायेंगी।

"प्यारे साथियो, आइये, अपने विचार प्रकट कीजिए," जुराख़ाँ ने कहा। "हम क्लारा ज़ेत्किन को क्या जवाब दें?"

औरतें मौन रहीं, सिर्फ़ किसी की गोद का बच्चा पें-पें कर उठा।

"मुझे इजाज़त दीजिए।" नईमी ने जोश से शुरू किया और यह जताने के लिए कि क्लारा ज़ेत्किन के ख़त से वह कितना अधिक प्रभावित हुआ है, छत की ओर अपने हाथ उठा लिये।

लेकिन जुराख़ाँ ने उसे रोक दिया:

"नहीं, पहले हम औरतों को सुनेंगे।"

एक बार फिर प्रशंसा भरी फुसफुसाहट की लहर पूरे हॉल में दौड़ गयी।

जुराख़ाँ ने अपनी बग़ल में बैठी औरत के कन्धे पर अपना हाथ रख दिया।

"कॉमरेड, आइये हम अनाख़ाँ से अनुरोध करें। वह लजा रही है। आइये, हम उससे अनुरोध करें।"

मंच पर बैठी औरतों ने, फिर श्रोताओं ने तालियाँ बजानी शुरू कर दीं। आख़िरकार, ज़र्द व सुर्ख पड़ती, अनाख़ाँ अपनी कुर्सी से धीरे से उठी और गहन शान्ति के बीच अस्पष्टता से बोली।

"मुझे कहना नहीं आता। मैं कभी नहीं बोली हूँ। लेकिन यह ख़त—यह इतना प्यारा ख़त है – इतना ख़ूबसूरत – जितना कि मेरी बेटी तुर्सुनाय गीत गाती है। अगर मैं ठीक-ठीक नहीं कह पायी तो मुझे माफ़ कर दीजिए। हमें ऐसा ख़त कभी किसी ने नहीं लिखा था।"

हर किसी ने साँस रोक कर सुना। यह एक मामूली जुलाहिन, एक विधवा, अनाथ बालिकाओं की माँ बोल रही थी। वह लजा कर बोली, लेकिन बोली तो सही। और औरतें उतना ही आश्चर्य कर रही थीं जितना उन्होंने जुराख़ाँ पर किया था। अनाख़ाँ ने इसे महसूस किया और थोड़ा उत्साहित हुई।

"इसके साथ ही मैं यह भी कहना चाहती हूँ कि हम नैमन्चा की जुलाहिन महिलाएँ एक सहकारिता में काम करना चाहती हैं, क्यों–मैं आपको बताऊँगी। कारण यह है कि हम जब तक क़ुद्रतुल्लाह के लिए काम करती रहेंगी, सोवियत जनतंत्र की मदद नहीं कर पायेंगी।"

नईमी की कुर्सी चरमरा उठी। इसने उसे दग़ा दिया और वह हड़बड़ा कर चीख़ पड़ा:

"एकदम ठीक!"

"हम सात हैं। सातों सहकारिता में काम करना चाहती हैं। और इसके साथ ही हम आपसे बहन क्लारा के ख़त के जवाब में अपने नाम दर्ज कराने का अनुरोध करती हैं। हम सात हैं।"

हाल में क़ुम्रि का शिकायत भरा स्वर सुनाई पड़ा।

"सात नहीं, बेटी। आठ लिखो।"

"आठ क्यों?" आवाज़ें गूंज उठीं। "दूसरी भी शामिल होना चाहती हैं। हम भी... उसने हम सब को लिखा है..."

अनाख़ाँ मुस्कुरा पड़ी। औरतें एक साथ ठीक वैसे ही बोल रही थीं जैसे नैमन्चा के वर्कशॉप में।

परंजी और चचवान बग़ल में दबाये रिज़वान चाची पिछली क़तारों से धकियाती हुई मंच पर जा पहुँचीं। मेज़ के पास पहुँच कर वह मुड़ीं और ज़ोर से बोलीं जिससे सब कोई सुन सके:

"लड़कियो, माफ़ करना, मुझ बूढ़ी की बात सुनो। बूढ़ी होते हुए भी मैं बैठक में आयी। मेरे बारे में भी कुछ बातें हुईं। तुम सबने सुना, नैमन्चा की आठ औरतें सहकारिता में शामिल होना चाहती हैं। तो मैं उनमें दूसरी हूँ। अनाख़ाँ पहली है, मैं दूसरी। वही मैं हूँ। और अब मैं अपनी बातें कहूँगी, पुराने समय के बारे में बूढ़ी औरत की बातें। हँसो मत। जुराख़ाँ ने तस्वीरवाली औरत के बारे में बताया..." रिज़वान चाची ने पोर्ट्रेट की ओर इशारा किया। "ज़रा इसके बारे में सोचो।

वह इतनी दूर रहती है फिर भी हम कैसे रहते हैं, जानती है और हमें मुबारकबाद भेजा है। जुराख़ाँ बहन साफ़िया के बारे में भी बोली। हम उसे जानते और इज़्ज़त करते हैं। और अब मैं तुम्हें ख़ुद जुराख़ाँ के बारे में बताऊँगी। जब भी मैं उसे देखती हूँ पुराने दिनों के ख़्याल मेरे ज़ेहन में मँडराने लगते हैं। नौ साल पहले जब जर्मन ज़ार के साथ लड़ाई चल ही रही थी, इसी बाज़ार मार्ग में, इसी मकान की खिड़की के पास जिस में हम बैठी हैं, एक ऐसी घटना हुई जिसे मैं कभी नहीं भूल सकती। ज़ार हमारे पति, लड़कों, दामादों को ले जाने लगा। पुराने शहर की हर औरत डंडा, अगखोदनी, यहाँ तक कि चूल्हे की सलाखें तक ले कर दौड़ पड़ी। इसी मकान में पुलिसिये थे और इसे कोई ऑफ़िस कहा जाता था। वे मकान से बाहर आये और एक क़तार में हमारा सामना किया। हमने चीख़ कर कहा कि हम उन्हें अपने बेटे नहीं देंगे और अगर उन्हें ले ही जाया गया तो हमें बताया जाये कि उससे किसका फ़ायदा होगा। उनमें एक बड़ी-बड़ी मूंछों और लाल चेहरा-वाला था। उसे पूरा शहर जानता था, काश, उसे मौत आती। उसने मुक्के दिखा कर धमकाया और कहा: 'मैं बताता हूँ, किसे फ़ायदा होगा!' औरतों ने खिड़कियों पर पत्थर फेंकने शुरू कर दिये और पुलि-सवालों पर डंडे बरसने लगे। मैं कह सकती हूँ, यह देखने लायक़ दृश्य था! तब मूंछोंवाला हाथ उठाकर चीख़ा: 'तैयार!' उसका मतलब था, अगर हम भाग खड़े नहीं होते, पुलिस हम पर गोली चला देगी। और सच में पुलिसवालों ने अपनी बन्दूकें हमारी ओर तान लीं। औरतें ठिठक गयीं, बहुत-सी भाग गयीं। लेकिन उनमें से एक ने अपना चचवान उठा लिया और खुले चेहरे, सीना ताने, कमर सीधी किये आगे बढ़ गयी। वह पुलिसवालों के पास पहुँच गयी। उनकी बन्दूकें ठीक उसके सीने का निशाना लिये थीं। दिल दहल उठता। लेकिन उसे किसी चीज़ का डर न था, उसकी आवाज़ साफ़ और बुलन्द थी। "तुम गोली नहीं चला सकते, बुज़दिलो! यहाँ बिज्जुओं जैसी तुम्हारे चरबी जम गयी है। तुम्हारी ख़ूनी लड़ाई तुम्हें ही मुबारक हो, तुम ख़ुद जाओ, अपने जर्मन ज़ार के पास। किसके ख़िलाफ़ तुम लड़ रहे हो—क़मज़ोर औरतों के ख़िलाफ़? अपनी बन्दूकें नीची कर लो, बेशर्मो!"

"मुझे एक-एक शब्द याद है जैसे उसने बस अभी ही कहा हो। और

क्या तुम सोच सकती हो: सोलह पुलिसवाले थे, सोलहों ने अपनी बन्दूकें ज़मीन पर झुका लीं। मूंछोंवाला तो बस ग़ुस्से से फट ही पड़ा। वह अपने आदमियों पर, उन्हें सूअर और न जाने क्या-क्या कहता, बरस पड़ा फिर उन्हें अपनी घुड़सवारी के चाबुक के दस्ते से मारने लगा। इसी बीच हमने ऑफ़िस को घेर लिया। वह औरत पलटी और हमारी ओर चेहरा किया। हमने देखा, उसकी आँखें धधक रही थीं। तुमने सुना होता, उसने कैसे कहा था: 'प्यारी माताए और बहने, ख़ूनी लड़ाई में अपने बेटों, पतियों और भाइयों को मत जाने दें।'

"मूंछोंवाले तथा दूसरे पुलिसवालों ने उसे क़ब्ज़े में ले लिया, हथकड़ि-याँ डाल दीं और खींच कर ऑफ़िस में ले गये। घुड़सवार सैनिक दौड़ पड़े और हमें पीटने व कुचलने लगे। मुझे नहीं मालूम, मैं घर ज़िन्दा कैसे पहुँची। लेकिन आज जब मैंने ज़ुराख़ाँ की आवाज़ सुनी और इस लाल मेज़ के पास उसे बैठे देखा, मुझे वह दिन और पुलिस का सामना करनेवाली उस औरत की याद ताज़ा हो आयी। हर कोई देख लो: वह यहाँ है। यही है वह औरत जिसके बारे में मैंने कहा। वह यही ज़ुराख़ाँ थी। हाँ, मेरे बच्चो, हाँ..."

रिज़वान चाची के गालों पर आँसू ढुलक आये। अनाख़ाँ ने अपनी बाँहें ज़ुराख़ाँ के गले में डाल दीं। अपने आँसू रोकने में रिज़वान चाची को काफ़ी समय लगा और हॉल में हर कोई उसके ख़ुद पर क़ाबू पाने की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करती रही।

"तुम्हें शायद आश्चर्य हो रहा होगा कि मैं आगे क्या कहना चाहती हूँ?" रिज़वान ने आगे कहा। "यही कि अगर हम ज़ुराख़ाँ की बात मान कर चलें तो ठीक करेंगे, हम ग़लती नहीं करेंगे। मेरे बच्चो, ज़ुराख़ाँ ने लेनिन को देखा है। उसने उनसे हाथ मिलाया है और उसका हाथ ख़ुशक़िस्मत है। अब मैं आख़िरी बात कहूँगी: बूढ़ी औरतों को नाराज़ मत करना। उनके नाम दर्ज करो और उन्हें भी सहकारिता में शामिल होने दो। हमें मालूम है, पुरानी ज़िन्दगी कैसी थी और हम नयी ज़िन्दगी देखना चाहती हैं।"

हॉल में सब कहीं हलचल मच गयी। ख़ुशी और उत्तेजना भरी आवाज़ें उमड़ पड़ीं:

"हम भी शामिल होना चाहती हैं। हमें भी मालूम है, पुरानी ज़िन्दगी कैसी थी।"

एक लड़की तेज़ी से मेज़ के पास पहुँची और ज़ुराख़ाँ को उसने धीमे से कुछ कहा। ज़ुराख़ाँ ने परेशानी से भौहें सिकोड़ीं: नगर समिति का कोई सन्देशवाहक उसकी प्रतीक्षा में था और कुछ मिनटों के लिए उसे हॉल से जाना पड़ेगा। वह अपनी सीट से उठ खड़ी हुई और लड़की के पीछे-पीछे मंच के बायेंवाले कमरे में चली गयी।

तभी नईमी को भाषण मंच पर क़ब्ज़ा जमाने का मौक़ा मिल गया। अब तक हर कोई मेज़ के पास खड़ा हो कर बोला था लेकिन कहने की जरूरत नहीं, उसे तो भाषण-मंच से बोलना था। लम्बी चेनवाली घड़ी निकाल कर वज़न माँपने के अन्दाज़ में उसने उसे हाथ में उछाला फिर चुस्ती से उसका ढक्कन उतार कर अपने सामने घड़ी रख ली। लटकती पैराफ़िन लैम्प के नीचे उसका मुंडा सिर चमक रहा था।

"मेरी असहाय, प्यारी माताए!"

तुरंत शान्ति छा गयी।

"रोशनी दिखाने के लिए हम सोवियतों के कृतज्ञ हैं। हमारे लिए युगों पुरानी जहालत को उखाड़ फेंकने का समय आ गया है। स्वाधीनता का युगोदय हो चुका है! यह घोर दुख की बात है कि हम विज्ञान के सर्वोत्कृष्ट जागरण कर्मी आपके मुरझा रहे चेहरों की या यूं कहें कि जो क्लेश यह परंजी आपको पहुँचा रही है, उस की चिन्ता करते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से हमारे बीच ऐसे कमज़ोर, असहाय इंसान हैं जो बाप-दादों के ज़माने से चले आ रहे रीति-रिवाजों के ग़ुलाम हैं। उन रीति-रिवाजों का हमें ख़ात्मा करना है। हाथ कंगन को आरसी क्या: देखिये कुछ औरतें अब भी किस तरह अपने पति और श्वसुर के इशारों पर नाचती हैं... वे परंजी से अपने चेहरे ढँकती हैं। उस युग के बारे में सोचिये जिस में हम रह रहे हैं! यह शर्म की बात है! सोवियत युग इस पिछड़ेपन को सहन नहीं कर सकता! और मैं आप से पूछता हूँ: आप कब तक अपने परिवारों में कानी गाय बनी रहेंगी? आप कब तक सुग्गा बोली बोलती रहेंगी कि आपके बच्चे हैं, पति है? जागरण का हामी होने के नाते मैं माँग करता हूँ कि आप अपनी परंजी फाड़ डालें और सहकारिता में शरीक हो जायें! डरें मत: सोवियत सरकार

आपके बच्चों को अनाथ नहीं होने देगी। यह आपके जाहिल पतियों को लगाम देने के लिए काफ़ी ताक़तवर है!"

श्रोताओं ने बेचैनी से पहलू बदले और एक बार फिर भयभीत बुदबुदाहट सुनाई पड़ने लगी:

"काश मुझे मौत आती..."

अनाख़ाँ ने खड़ी होकर हिचकिचाते हुए वक्ता को आवाज़ दी। लेकिन उसने आवेश में सुना ही नहीं।

"मैं फिर कहता हूँ: ऐसी भी औरतें हैं जो पतीले की कालिख बनी हैं। यह शर्मनाक है। बहुत हो गया! वे दिन लद गये। यह उन औरतों के लिए छोड़ दीजिए जो अपने बच्चों से प्रेम जताने के अलावा कुछ नहीं जानतीं, जो अपने पतियों से पीड़ित हैं। सोवियत सत्ता को महिला मज़दूरों की ज़रूरत है! अगर आपके परिवारवाले आपकी राह में रोड़े अटकाते हैं, आपको तुरंत सोवियत अदालत में दरख़्वास्त करनी चाहिए, ऐसे बेकार परिवारों का निश्चित रूप से त्याग कर देना चाहिए। कोई बात नहीं, पारिवारिक लाम-काफ़ नहीं तो न सही। लेकिन तब आपके पास गौरवशाली सोवियत सहकारिताएँ होंगी, बैरक होंगे। आपके बच्चों को यतीमख़ानों में ले जाया जायेगा। हमारी अग्रणी महिलाओं को सलाम।"

अब हॉल में सिर्फ़ एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी। पिछली क़तारों में बैठी औरतें चुपके से उठकर चलने की तैयारी करने लगीं।

मंच की मेज़ के पास बैठी सब औरतें अपने पैरों पर उछल कर खड़ी हो गयीं। अनाख़ाँ मेज़ के पास से दौड़ी और तेज़ी से दरवाज़े की ओर भागी।

"क़ुम्रि बहन! क़ुम्रि बहन, आप कहाँ जा रही हैं?"

तभी ज़ुराख़ाँ वापस आयी और नईमी उसे देखते ही अनाख़ाँ की ओर दौड़ पड़ा। अपने हाथ इस तरह फैला कर जैसे निराश हो, वह चीख़ा:

"प्यारी बहनो, कॉमरेडो... इसका क्या मतलब है? लौट जाओ। पाँच मिनट में बैठक ख़त्म हो जायेगी। प्यारी चाचियो..."

माजरा क्या है, यह समझने में ज़ुराख़ाँ को ज़्यादा समय नहीं लगा।

उसके आते ही बहुत-सी औरतें शान्त नज़र आने लगीं और दुबारा बैठ गयीं। फिर भी बहुत-सी सीटें ख़ाली रह गयीं।

अनाख़ाँ वापस आयी। वह बस किसी तरह अपने आँसुओं को रोके थी।

"क़ुम्रि चली गयी। उसने कहा कि हमारी सहकारिता से वह कोई मतलब नहीं रखना चाहती। क्या किया जाये? वह चली गयी। और अपने साथ दूसरों को भी ले गयी।"

नईमी खिन्न और परेशान दिखता अनाख़ाँ के पीछे-पीछे ही लौटा। अपने ललाट का पसीना पोंछते वह मेज़ के पास अपनी कुर्सी पर धम से गिर पड़ा।

"कॉमरेड ज़ुराख़ाँ, कम से कम आपने कोई संकेत तो दिया होता। आपने हमें आगाह तो कर दिया होता। मैंने सोचा था, आपने जिन औरतों को यहाँ जमा किया है, वे किस चीज़ की कमी है, समझ सकती हैं, कमोबेश वे विकसित बुद्धिवाली होंगी। क्या आप सोचती हैं, ऐसे लोगों से आप सहकारिता गठित कर सकती हैं? ज़ुराख़ाँ, मैं तो नहीं समझता। आप मुझे माफ़ करेंगी लेकिन हर साहस के काम में आपको सक्रिय टोलियों के समर्थन की ज़रूरत है। जो समझ सकते हैं, उनसे आपको शुरू करना चाहिए। काक झुंड से थोड़े हंस अच्छे!"

"मुझे बताइये," ज़ुराख़ाँ ने उसे रोकते हुए कहा। "आपने ऐसा क्यों किया? आप यहाँ क्यों आये?"

उसके लहजे ने नईमी को अकचका दिया, वह सकते में रह गया।

"मैं तो औरतों को आज़ादी के लिए बुलन्द होने का आह्वान कर रहा हूँ..."

"आप!" ज़ुराख़ाँ ने तेज़ी से कहा, फिर अपने पर क़ाबू पाते हुए शान्त हो गयी। "आपने माँ के रूप में उनकी भावनाओं को, बच्चों के प्रति उनके प्रेम को, पतियों के प्रति उनकी श्रद्धा को ठेस पहुँचायी। आपने सोवियत सरकार को बदनाम किया।"

"नहीं, नहीं। क्या सच?" भय से नईमी की घिग्घी बंध गयी। "नहीं, यह असंभव है। मैं ऐसा नहीं कर सकता। लेकिन अगर मैं कुछ उल्टी-सीधी कह गया तो मुझे ख़ुद उसे ठीक करने का मौक़ा दीजिए। आप कहती हैं, मैं ने उन्हें ठेस पहुँचायी?" सम्मान जताते हुए उसने सिर झुका लिया। "मैं माफ़ी माँगने को तैयार हूँ।"

"बैठ जाइये!"

वह बैठ गया।

औरतों ने ज़िन्दगी में पहली बार अपनी ही जैसी एक औरत को सार्वजनिक रूप से एक पुरुष को फटकारते देखा। न ज़मीन फटी, न आसमान गिरा। लेकिन यह उतना ही भयकारी था।

ज़ुराख़ाँ ने उन्हें कड़वाहट और दुख से देखा। "चऽ चऽ, अबलाओ, मेरी बहनो! ज़िन्दगी ने तुम्हें क्या दिया है—अन्धेरा और जहालत।"

उसे धीरज रखना होगा। और वह कर भी क्या सकती थी।

"प्रिय कॉमरेडो," उसने कोमलता से कहा, "सहकारिता की सदस्यता एकदम आपकी मर्ज़ी पर है।"

"ज़ाहिर है।" नईमी ने उत्साहपूर्वक अपना सिर हिलाते हुए कहा।

"यदि आपके पति नाराज़ होते हैं, उन्हें समझाने और राज़ी करने की कोशिश कीजिए। अगर फिर भी आपके लिए वे इसे ठीक नहीं मानते, तो शरीक मत हों। उन्हें समय दीजिए, बात उनकी समझ में आ जायेगी और अगर वह अन्धे नहीं तो ख़ुद भी तो देखेंगे। वह आपको शरीक होने देंगे। सहकारिता में शरीक होने के लिए आपको परंजी उतारने की ज़रूरत नहीं। यह महिलाओं की सहकारिता होगी। उसमें कोई भी पुरुष नहीं होगा। सदस्य अपनी सुविधा के अनुसार, जब उन्हें घर के काम-काज से फ़ुरसत मिले, कभी भी काम कर सकेंगी। अगर आप अपने साथ छोटे बच्चों को लायेंगी, हम उन के लिए खिलौनों और गुड़ियोंवाली ख़ास जगह का इन्तज़ाम करेंगे। हम आप को हुनर सिखायेंगे, बुनकर बनने में मदद करेंगे। और आप जो बोज़ बुनेंगी उसे सहकारिता की दरों पर औरतों की एक ख़ास दुकान में औरतों के लिए ही बेचा जायेगा।"

ज़ुराख़ाँ कोमल, शान्त लहजे में बोली जैसे कोई माँ आसानी से डर जानेवाले बच्चों के साथ बोलती है। केवल कुछ औरतें ही उसकी आवाज़ में प्रच्छन्न दुख और मलामत महसूस कर सकीं।

"क्या मेरी बात काम की है?" उसने मुस्कुराते हुए पूछा।

"ज़रूर, क्यों नहीं," आवाज़ें आयीं।

"आप डरी तो नहीं?"

"नऽ-नहीं," अगली क़तार में बैठी एक जवान औरत ने जवाब दिया।

जब बैठक ख़त्म हुई और औरतें जाने लगीं, जुराख़ाँ को घेरे खड़ी कार्यकर्ताओं के बीच से रास्ता बनाता नईमी आ पहुँचा। अपना सीना पीटता, विज्ञान की सेवा करते बिताये अपने तीस वर्षों में कितनी यातनाएँ और पीड़ाएँ उसे सहनी पड़ीं और जागरण व सांस्कृतिक क्रान्ति के आदर्शों के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग कर देने को तत्पर पुराने बुद्धिजीवियों के सामने अब भी कितनी कठिनाइयाँ हैं, वह इसका रोना रोने लगा। काश, उसे मौक़ा दिया जाता तो वह दूसरे दिन तक समझाता रहता . . .

जुराख़ाँ ने उसे चलता कर दिया।

वे क्लब के आॅफ़िस में चली गयीं। पटरियों का फ़र्श जिसे धो-पोंछ कर साफ़ किया गया था, लोगों के पैरों से गन्दा हो गया था। लम्बे अर्से से इतने सारे लोग क्लब में नहीं आये थे। लेकिन जुराख़ाँ सुस्त थी। वह बाग़ की ओर खुलनेवाली बड़ी खिड़की से बाहर ताक रही थी। खिड़की के नीचे एकाकी चीनी गुलाब का पौधा था। उसमें अधखिली कलियाँ लगी थीं।

"आज की घटना से हमें सबक़ लेनी चाहिए," उसने गहरी सांस लेकर कहा। "तुमने दिमाग़ से काम नहीं लिया। मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी। तुमने उस वाचाल को रोका क्यों नहीं? तुम उसे डाँट देती!"

"मुझे आता ही नहीं। मैं चाहती तो थी," अनाख़ाँ ने स्वीकार किया, "लेकिन वह शिक्षक है।"

"इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। तुम्हें अपने दिल की बात सुननी चाहिए," जुराख़ाँ ने कहा, "और इसे चुप रहने के लिए मजबूर मत करो। अनाख़ाँ, बहुत जल्दी ही तुम्हें इससे कहीं अधिक मुश्किल सवाल हल करने होंगे।"

"मैं क्लब में हर रोज़ हाज़िर रहूँगी। मुझे लगता है लोगों के नाम दर्ज करना मुश्किल नहीं बल्कि हिम्मत और सलाह देना मुश्किल है जिससे बात उनके दिमाग़ में एक बार बैठ जाये और वे क़दम पीछे न हटायें।"

जुराख़ाँ मुस्कुरा पड़ी।

"तुम्हें मालूम है, हम तुम्हें अपनी सहकारिता की अध्यक्षा चुनने जा रहे हैं।"

अनाख़ाँ ने बेबसी से हाथ हिलाये।

"जुराख़ाँ, मेरी प्यारी बहन। मैं... मैं इन्तजाम नहीं कर पाऊँगी, मैं कभी नहीं चला पाऊँगी। क्या तुम ख़ुद नहीं जानती? साफ़िया बहन कहीं ज़्यादा ठीक रहेगी।"

"साफ़िया तुम्हारी मदद करेगी।"

"मदद का काम मुझे ही करने दो।"

"नहीं। हमने महिला विभाग और नगर समिति में बातें की हैं और फ़ैसला कर लिया है। तुम मेरी जाँ, बुज़दिल कहीं की, इस काम के लिए तुम्हीं ठीक हो!"

"क्या वे नगर समिति में मुझे जानते हैं?"

"बेशक, क्यों नहीं! तुम समझती क्या हो?"

अनाख़ाँ ने अपने काँपते हाथ गालों पर रख लिये और महसूस किया जैसे बुखार से जल रहे हों।
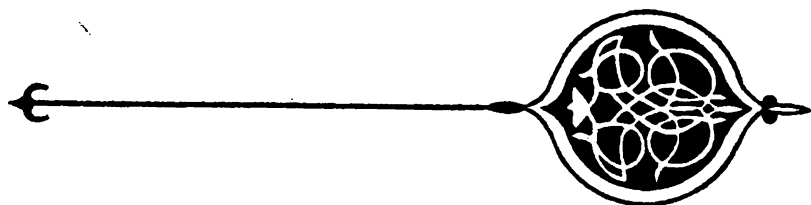
सातवाँ भाग

बचपन में नुस्रतुल्लाह को प्यार से मिठखाऊ कहा जाता। उसके हाथ मीठी गोलियों से हमेशा चिपचिपे और गाल माँ-बाप के चुंबनों से हमेशा तर होते। उसकी माँ के चुम्बन तो बहुत कुछ बिल्ली के चाटने की तरह होते। तब उसका बाप कहा करता: "यह मेरा पहला बच्चा है, मेरा वारिस। घर में सब कुछ हो लेकिन कोई वारिस नहीं तो इस अनिश्चित संसार की सारी सम्पदा भी बेकार है।"

क्या सुहाने वर्ष थे वे। माँ-बाप अपने बच्चे को ख़ुश करने के पीछे दीवाने हुए रहते, उसकी इच्छाओं की बाट जोहते रहते। बेताबी से क़ुद्रतुल्लाह प्रतीक्षा करता कि बच्चा कब बोलना शुरू करे। अगर वह उसे कोई असंभव से असंभव चीज़ भी लाने को कहता तो वह दुनिया के दूसरे छोर तक चला जाता—वह प्रकृति से विस्तारवादी था और अपने चहेते बेटे के लिए ख़र्च करने से नहीं हिचकता।

एक दिन क़ुद्रतुल्लाह अपने यहाँ आये किसी अमीर व्यापारी को विदा करने बेटे को गोद में लिये बाहर तक गया। जब व्यापारी अपनी बग्घी पर बैठा छोटे नुस्रतुल्लाह ने घोड़े की ओर अपने हाथ फ़ैला दिये – घोड़े के सिर के बालों के बीच दमकते मनके थे और कसे साज़ से शानदार फ़ुदने लटक रहे थे। बाप को बहुत ख़ुशी हुई। उसने बेटे के अन्तरतम की एक इच्छा आख़िरकार भाँप ही ली थी। उसने घोड़े के दो छौने ख़रीद लिये। उनमें से एक बड़ा भला साबित हुआ और नुस्रतुल्लाह दिन भर उससे खेलता रहा। सुबह से शाम तक वह छौने के अयाल पर कँटीले मोथे के सिरों से प्रहार करता रहा लेकिन दूसरे दिन लड़के ने उसकी ओर देखा तक नहीं। मीठी गोलियों के अलावा वह हर चीज़ से जल्दी ही ऊब जाता।

उन दिनों क़ुद्रतुल्लाह के घर पर प्राय: आनेवाला मदरसा का एक छात्र, ईशान का बेटा सलीम ख़्वाजा था। वह नुस्रतुल्लाह के आश्चर्य-जनक भविष्य के बारे में बढ़ा-चढ़ा कर बोलता, वह उसे नूतन पूर्व की आशा, जाति का गौरव बताता। ऐसी बातें हाजरबिबि को रास नहीं आतीं। वह छात्र की चिकनी-चुपड़ी बातों को शुबहे से सुनती, ख़ास कर तब जब वह कहता कि लड़के को ज्ञान-विज्ञान पढ़ाने का समय आ गया है।

"आपकी तो अक़्ल मारी गयी है, प्यारे सलीमख़्वाजा साहिब," वह घमंड से कहती। "उसे ज्ञान-विज्ञान की क्या ज़रूरत? क्या उसके बाप की दौलत काफ़ी नहीं?"

"हमारे ज़माने में काम विज्ञान की मदद से किये जायेंगे," नईमी ने समझाया। "विज्ञान धन बढ़ाता है। ज़्यादा धन हिसाब-किताब चाहता है, उन्हें जगह और फैलाव चाहिए। जाति के व्यापारियों को जिस चीज़ की ज़रूरत और कमी है, वह है बड़े पैमाने पर लेन-देन चलाने की क़ाबलियत, दूर-दूर जाने और दुनिया देखने की... "

"बकवास," हाजरबिबि ने झल्ला कर जवाब दिया। "हमारे बेटे के पास हिसाब-किताब जाननेवाले दुनियादार लोग होंगे। तुम्हारे वैज्ञानिक भी मेरे बेटे के पैसों पर नाचेंगे।"

ग़ुस्से से वह बेटे को अपने कमरे में ले जाती।

एक सचाई नुस्रतुल्लाह ने बचपन में ही हासिल कर ली थी, यह

कि हर कोई, ख़ास कर उसके माँ-बाप बस उसी की सेवा व हित-साधन के लिए रचे गये हैं। फिर किसी को प्रेम करने या क़द्र करने की भी ज़रूरत ही क्या थी। वह लोगों और चीज़ों को अपनी जायदाद समझता। जहाँ तक माँ-बाप का सवाल है, वह उनके अबाध लाड़-प्यार के कारण बचपन में ही ऊब गया था।

नुस्रतुल्लाह ज़िन्दगी को बोरियत से बचने के लिए कभी न ख़त्म होनेवाली तलाश मानता। और ऐसा करने का एक ही तरीक़ा उसे मालूम था – पैसे ख़र्च करना, पैसा जो उसके बाप का था। एक दिन ऐसा आया जब उसके बाप ने यह भूलना शुरू किया कि उसके जीवन का सबसे उदात्त उद्देश्य अपने बेटे के मनोरंजन के लिए पैसे देना है। वह निहायत कंजूस बन गया और अपने बेटे को एक बला, ख़ुदा का क़हर समझने लगा।

नुस्रतुल्लाह ने पाया, उसके और भी दुश्मन हैं। उनमें सब से ख़तरनाक कलूटा क़ुलमत था – मशहूर जुआड़ी जिसका कोई जवाब न था।

लम्बे समय तक नुस्रतुल्लाह कलूटे क़ुलमत का पत्ता साफ़ कर देने और किसी बड़े खेल में अपने पैरों पर गिरने को मजबूर कर देने का ख़्याली पुलाव पकाता रहा। अब तक कोई भी ऐसा न कर सका था। शादी का ख़्याल भी उसे आनन्दित करता। आख़िरकार उसके बाप ने घुटने तो टेके – उन्हें बाप का फ़र्ज़ तो याद आया...

लगातार दूसरे हफ़्ते भी घर में खलबली रही।

पिछले से पिछले साल आँगन में एक छोटा, दो कमरोंवाला मकान बनवाया गया था। दीवार पर ख़ूबसूरती से कशीदा काढ़ी एक नमनगान की सूज़ाना* टँगी थी। सन्दूक़ों को छोटे मकान में ले जाया गया और उनपर तह किये बिस्तर रखे दोनों ताक़ भर दिये गये। तलैये के पास औरतें और भी बिस्तर तैयार कर रही थीं। सुखट्टा मख़सूम बाज़ार से बोरियाँ, झोले और टोकरियाँ भर-भर कर लाता और फिर बाज़ार दौड़ पड़ता। हाजरबिबि के बूढ़े पैर जोश के मारे ज़मीन को छूते प्रतीत नहीं होते, वह घर में चकरघिन्नी बनी फिरती। मेहमानों का ताँता लगा रहता। मोमबत्तियों की खपत शाम में बढ़ गयी।

---

* सूज़ाना – दीवार पर टाँगा जानेवाला डिज़ाइनदार रेशमी कपड़ा।

तपती दोपहर में नुस्रतुल्लाह विलासितापूर्ण सज्जित अपने कमरे में चला जाता और बग़ल में तकिया दबा कर रेशमी गद्दे पर लोट-पोट हो जाता। आराम से सुखट्टा मख़सूम के लाये सूखा शहतूत, ख़ूबानी की सूखी फाकें या बादाम चबाता सोचता: "मैं दूल्हा बाबू हूँ!" वह बिस्तर पर लेट जाता, मेवे टूंगता सोचता रहता: "दूल्हा बाबू।"

आधा आँगन अब उसका था। लेकिन समय आयेगा जब सारी जायदाद, मकान, आँगन, बाग़-बग़ीचा और सुखट्टा मख़सूम उसका — नुस्रतुल्लाह का हो जायेगा।

वह किसी को हुक्म देने के लिए कुलबुलाने लगा।

"ए, माँ," वह माँ पर चीखा, "मेरे बूट लाओ।"

अपने हाथ फैलाकर फ़र्श पर बिछे क़ालीन को उसने थपथपाया। "जल्दी ही मेरी बीवी इन क़ालीनों पर नंगे पाँव दौड़ेगी... " उसने मन में तस्वीर खींची कि किस तरह उसकी बीवी लजाते हुए आयेगी और उसके कानों में उसका संगीतमय स्वर सुनाई पड़ेगा। "इजाज़त है, आपकी मालिश कर दूं?"

उसने बशारत का चेहरा नहीं देखा था लेकिन उसे कोई शक नहीं था कि वह उसी से मुहब्बत करता था। वसंत के समय जब वह इक्के पर जा रहा था, उसे पनचक्की के साथवाली नाली के पास दो लड़कियाँ दिखाई दी थीं। लम्बी चोटी और भय से आँखें फैलाये स्कार्फ-रहित छोटी लड़की ज़ोर-ज़ोर से चीख़ती हुई नाली में बहकर जाते एक गेंद की ओर इशारा कर रही थी:

"दीदी, दीदी! ग़ायब हो रहा है, डूब जायेगा!"

अपने सिर पर जैकेट लपेटे बड़ी लड़की ने जल्दी से सलवार ऊपर किया, कमरबंद में अपने कपड़ों के किनारे खोंसे और गेंद के पीछे नाली में वह कूद पड़ी। गीले चिपके कपड़ों में उसकी मज़बूत, दुबली-पतली आकृति की झलक नुस्रतुल्लाह को मिली थी। उसकी साँवली-सी पिंडलियाँ धूप में दमक रही थीं और उसे अपने पूरे शरीर में सिहरन महसूस हुई।

बाद में जब हम्माम की भट्ठी में लड़कियों की बात चली, विनोदी उमर ने आँख मारते हुए दलाल तुर्दिमत को बशारत के सौन्दर्य के बारे में बताया:

"मैंने कारीगर साबिर की बड़ी बेटी को देखा। वह सिर्फ़ चौदह की

है। लेकिन क्या चीज़ है। गोरी, गुलाबी... उस जैसी सुन्दरी को क़ालीन और रेशम बिछे शयनकक्ष में मुलायम-मख़मली गद्दे पर अपनी बग़ल में बैठा कर बाँहों में भरने और कमर में हाथ डाल क़रीब खींच लेने में, आह, क्या आनंद आयेगा!"

"कौन ख़ुशक़िस्मत उसे पायेगा?" दलाल तुर्दिमत ने आँखें मार लार टपकाते हुए अपनी राय दी।

नुस्रतुल्लाह ने उसे गुर्रा कर देखा और ज़ोरों से चीखा:

"मुंह धो लो!"

वह अपनी भावी पत्नी के प्रति चौकस हो उठा था।

लेकिन अब नुस्रतुल्लाह शान्त था। बशारत तो अब जैसे उसके हाथों में ही थी। जल्दी ही वह सपना नहीं रह जायेगी बल्कि वास्तविकता हो जायेगी और वह जो भी उसे कहेगा, हुक्म बजा लायेगी।

बचपन में उसका पालन-पोषण उसकी माँ करती थी, अब इसका ज़िम्मेवार उसकी बीवी बन जाएगी। उनके घर में ऐसा ही होता आया है और हमेशा होता रहेगा।

सगुनिये अब तक नहीं भेजे गये थे। महामना बाय और उनकी बीवी उसे मामूली काम सोच रहे थे। बहुत समय है। उन्हें इन्तज़ार करने दो। भावी बहू की माँ को परेशान होने दो—काश सुहानी अफ़वाहें सच हो जायें! उसे दिन-रात मनौतियाँ करने दो कि बाय अपना इरादा न बदल दें। उसे सगुनियों को ख़ुदाई सफ़ीरों की तरह स्वागत करने के लिए तैयार होने दो।

नुस्रतुल्लाह भी अपनी भावी सास पर हँसता। बेचारी ग़रीब विधवा कहीं ख़ुशी के मारे पागल न हो जाये। लेकिन ख़ुदा मेहरबान था। अगर ख़ुदा कहता है, ले मेरे ग़ुलाम, ग़ुलाम को वायदे पूरे होने का यक़ीन होना चाहिए। यह असंभव है कि कमबख़्त विधवा ग़रूर से फूल जायेगी: थोड़ा ज़्यादा ही ऊँचा उठ गयी है। क़ुद्रतुल्लाह ख़्वाजा का परिवार! कौन इस परिवार में शादी करना नहीं चाहेगा! चलो भिखमंगी को अपना सुख भोगने दो: बीवी नुस्रतुल्लाह की सेवा करेगी और सास उसकी माँ की।

सिर्फ़ एक ही चिन्ता उसे बेचैन किये थी, कहाँ से अधिक पैसे पाये जायें। जुए के खेल में उसे कलूटे क़ुलमत का मुक़ाबला करना था।

अच्छी भिड़ंत रहेगी और ज़्यादा पैसों की ज़रूरत होगी। इस समय वह बाप से भी नहीं माँग सकता था क्यों कि अत्यन्त ख़र्चीले विवाह के ख़र्चे पूरे करने थे। हालाँकि पहले भी उसे घिघियाना ही पड़ता, झूठी-सच्ची बातों से दिक़ करना पड़ता, बेसिर-पैर की कहानियाँ गढ़नी पड़तीं, जब तक मजबूर हो कर पैसे नहीं दे देते खड़ा होकर ताकते रहना पड़ता...

बकबकिये नईमी ने पैसे उधार देने का वायदा किया था। असल में वह सलाह दे रहा था। वह सच में बला हैं! डींग मारी थी कि स्कूल के लिए जमा पैसे दे देगा फिर क़सम खाते हुए कि जुराख़ाँ नाम की किसी दुष्ट औरत ने पैसे ले लिये और अपने आसानी से बच निकलने की ख़ुशी जताते हुए, एकाएक अपना इरादा बदल लिया। वाचाल। वह डरा हुआ था... इतनी लम्बी कहानी उसने कभी नहीं सुनी थी—भला एक औरत पर इतना ख़र्च! क्या बकवास है! काश उसके, नुस्रतुल्लाह के पास काफ़ी पैसे होते तो वह कलमुंहे क़ुलमत का दिमाग़ ठिकाने लगा देता!

असाका का कलूटा क़ुलमत ज़बरदस्त खिलाड़ी था! जुआ में उसका कोई सानी न था। उसे हरानेवाला तो दुनिया भर में मशहूर हो जायेगा।

कलूटा क़ुलमत सभी बड़े शहरों में जाना जाता था। किसी शहर के नौजवानों का सम्मान इस बात पर निर्भर करता कि उसके आने पर उनका आचरण कैसा रहा। अगर कोई भी उसकी चुनौती क़बूल नहीं कर पाता तो कहने की ज़रूरत नहीं, वहाँ के नौजवान ख़ुद को मर्द नहीं समझते। इस तरह पूरे शहर के नौजवानों की क़िस्मत का फ़ैसला हर बार जब कलूटा क़ुलमत हाज़िर होता, हो जाता।

पिछले हफ़्ते जब दलाल तुर्दिमत यह बखान कर रहा था कि किस तरह कलूटा क़ुलमत अपने हाथ हिलाये बिना इस छत की ऊँचाई तक पाँसा फेंक सकता है उसने जाते-जाते सुना कि मशहूर जुआड़ी नैमन्चा के बाय के लड़के नुस्रतुल्लाह का ज़िक्र कर रहा था। अगर यह सच है तो नुस्रतुल्लाह अपने शहर को ख़तरनाक हादसे से बचाने का सम्मान रखता है। शहर में और कोई दूसरा लायक़ बाय का बेटा न था जो कलूटे क़ुलमत के सामने टिक पाये। अगर कोई है भी तो क्या नुस्रतुल्लाह ऐसा सम्मान ख़ुद पाने से छोड़ देगा? ख़ुदा न करे, ऐसी अफ़वाह फैल जाये कि वह बुज़दिल है, कलूटे क़ुलमत ने उसकी हेकड़ी दुरुस्त कर दी।

क्या उससे भी ज़्यादा शर्मनाक कुछ हो सकता है? नहीं, नहीं, कलूटे जुआड़ी ने किसी भी तरह उसका नाम नहीं लिया होगा।

कलूटा क़ुलमत नुस्रतुल्लाह की प्रबल ईर्ष्या का शिकार बननेवाला पहला अकेला आदमी, पहला प्राणी था। नुस्रतुल्लाह लोगों से ईर्ष्या करने का आदी नहीं था और यह उसे ग्रस रहा था।

"कुत्ते नईमी ने मुझे धोखा दिया, बेइज़्ज़त किया!" नुस्रतुल्लाह अपने चेचक के दाग़ोंवाले चेहरे से पसीना पोंछता ग़ुस्से से बड़बड़ाया: "अब क्या किया जाये?"

हाजरबिबि अपने बेटे के बूट ले आयी। अपने बेटे को अप्रसन्न देख वह भय और करुणा से सिहर उठी। निस्सन्देह यह ज़ालिम बाप की ग़लती है। वह अपने प्यारे बेटे की राह में रोड़े अटकाता है।

नुस्रतुल्लाह ने अपने बूट इतने जोरो से खींचे कि सिलाई दरक उठी। वह उठ खड़ा हुआ और तेवर बदल लिये। उसने अपना चेहरा ख़ूंख़ार बना लिया। सांस लेने की भी हिम्मत न करते हुए हाजरबिबि कमरे से खिसक गयी।

नुस्रतुल्लाह सड़क पर निकल आया और अपनी आम दिशा—खली हमाम की भट्ठीख़ाने की ओर चल पड़ा।

इसी आज़माये रास्ते पर उसकी मुलाक़ात अपने दरियादिल यारों, बहादुर साथियों से हुई थी जो अपने बाप के पैसे उड़ाने में माहिर थे।

वे सच्चे आदमी थे, ज़िन्दादिल लोग। उसके बाप के मेहमानों और दोस्तों की तरह बोर, बेलुत्फ़, बस कभी न ख़त्म होनेवाली बनियागिरी की बातें करते, मक्खीचूस, लालची और उसके बाप की तरह अन्दर ही अन्दर एक-दूसरे से नफ़रत करनेवाले। नुस्रतुल्लाह ख़ुद उनसे शुरू से आख़िर तक नफ़रत करता था। कभी उनकी सोहबत हो भी जाये तो वह ऐसा आचरण करता जैसे गूंगा-बहरा हो। उसे बाप के काम-धन्धे की या उसके वाहियात लम्बे-चौड़े भाषणों की कोई परवाह न थी।

बाय को बहुत बार ऐसा लगा कि अंत आ गया है। उसका कलेजा मुंह को आ जाता। वह पागलों की तरह दौड़ पड़ता। शायद ही कोई ऐसा काम होता जिस में उसकी टाँग न अड़ी हो! जिस पर उसका हाथ पड़ जाता, उसी से फ़ायदा उठा लेता! उसने सब कुछ दाँव पर लगा दिया, ख़ुद को बर्बाद किया, फिर अपने पैरों पर खड़ा हुआ। नुस्रतुल्लाह

यह सब एकदम सामान्य मानता। कुछ साल पहले जब क़ुद्रतुल्लाह-ख़्वाजा तुर्किस्तान व्यापारिक कम्पनी में शरीक हुआ तब उसने सोचा कि उसे एक पनाह मिल गयी है लेकिन वहाँ बड़े व्यापारियों ने उसका मटियामेट कर दिया। नुस्रतुल्लाह इस बारे में कुछ नहीं जानता था। बाद में क़ुद्रतुल्लाह ने नईमी जैसे घनिष्ठ मित्रों को ही अपना सहयोगी बना लिया था जिनकी आपूर्त्ति तंत्र में गहरी पैठ थी। उसने "नाकेबन्दी द्वारा तुर्किस्तान का गला घोंट देने" के उनके वायदों पर विश्वास कर लिया। लेकिन यह सुखद आशाएँ और उज्ज्वल प्रत्याशाएँ उसी तरह चूर-चूर हो गयीं। लेकिन बाय ने फिर अपने को अथाह गर्त के किनारे पाया।

पर नुस्रतुल्लाह को उसकी कोई परवाह न थी। उसने बाप के जीवन में कोई तब्दीली महसूस नहीं की और उसके चिन्तित होने का कारण उसकी समझ में नहीं आया। उसे विश्वास नहीं होता कि कुछ बदल भी सकता है। ज़िन्दगी वैसे ही चल रही थी जैसे उसके दादे के ज़माने में और यह इसी तरह चलती रहेगी। एक नयी सत्ता क़ायम हो गयी थी लेकिन बाय तो थे ही और अब भी पैसा पैसा ही था।

यह सच है, नुस्रतुल्लाह ने सड़कों पर कुछ असामान्य चीज़ें देखीं। उनमें एक या दो तो चौंकानेवाली थीं। जैसे आप खुले चेहरेवाली औरतें देख सकते थे। लेकिन जहाँ तक नुस्रतुल्लाह का सवाल है, उसे यह सिर्फ़ मसख़रापन लगा। इसके लिए सोचने-विचारने की कोशिश करने की ज़रूरत थी और वह कभी किसी चीज़ पर सोच-विचार नहीं कर सकता था – यह एक बोरियत का काम था।

जब-तब उसके दोस्त भी बहुत तरह की अनसुनी चीज़ों के बारे में बोलते। आधे मन से वह क्रान्ति, सोवियतें, ग़रीबों की सत्ता जैसे शब्द सुनता। उसके दोस्तों और उसके बाप के बीच स्पष्ट विभेदक रेखा थी। उनका भरोसा किया जा सकता है। बाय के बेटे के दिल में क्षण भर के लिए ख़तरे का बिगुल बज उठता। लेकिन संगी-साथियों में चिन्ताएँ और परेशानियाँ जल्दी ही ग़ायब हो जातीं। बिनौला खली हमाम के भट्ठीख़ाने में घुसते ही और छिछोरे 'छोकरों की आवाज़ें सुनते ही, पुराना रंग लौट आता। मुक्त, उल्लासमय, ख़ुशियों भरा शान्त जीवन! कौन भला इसकी अवहेलना करेगा? ज़रूरत है आपको तो बस पैसों की... शराब, दिल्लगी, दोस्त! सिर्फ़ अंधा ही आगे की सोचेगा...

हुक्क़ों के धुम्राँ म्रौर शराब की चाल चलती यारों की साँसों से सरगर्म जुम्राख़ाने में नुस्रतुल्लाह म्रतिशय म्रानन्द की उस स्थिति में पहुँच जाता जहाँ वह दंभ म्रौर म्रालस्य के बीच बारी-बारी से झूलता रहता। यहाँ वह पैसे ख़र्चता – जो जी में म्राता करता।

* * *

खली हमाम चारबाज़ार मुहल्ले से दूर एकान्त स्थान में थे। नुस्रतुल्लाह ने म्रपना जायज़ा लिया म्रौर इस लिए कि उसके बूट न चरमराएं दबे पाँव म्रधखुले दरवाज़े से म्रन्दर म्राया।

उसने रुक कर म्राहट ली। जुम्राख़ाने में निस्तब्धता थी। म्राज सब से पहले नुस्रतुल्लाह म्राया था। गलियारे में उसकी मुलाक़ात दलाल तुर्दिमत से हुई जो किसी तख़्ती की तरह सपाट था म्रौर म्राधा सूती म्राधा रेशमी मिला चोग़ा पहन रखा था। वे नीचे जुम्राख़ाने में एक साथ गये। फ़र्शी सलाम मारते हुए दलाल ने बड़ी म्रदा के साथ "मैदाने जंग" की म्रोर इशारा किया। यह ख़ाली था! वहाँ कोई न था! कलूटे क़ुलमत के म्राने की ख़बर से हर बाय का बेटा भाग खड़ा हुम्रा था। चार-पाँच तमाशाबीनों ने कमरे में झाँका तो ज़रूर लेकिन म्रन्दर म्राने की हिम्मत नहीं की। म्रपने को छिपाते हुए वे कहीं म्रास-पास ही चक्कर काट रहे थे।

नुस्रतुल्लाह भी ख़ुद पर क़ाबू नहीं पा रहा था। दुबारा ग़ौर करने पर उसने फ़ैसला किया कि म्रगर वह हार भी जाता है तो देखनेवाले थोड़े से ही होंगे।

तुर्दिमत ने तो कमाल कर दिया था: दीवार के पासवाला कोना इतना साफ़ था कि दमक रहा था। लेकिन ख़ुद जुम्राख़ाना हमेशा की तरह म्रंधेरा म्रौर तंग था म्रौर यही तो कारण था कि इसको चाहनेवाले इसे इतना म्रारामदेह मानते थे। म्रंधेरे में छत नहीं दिखाई देती म्रौर ठीक इसके नीचे नीले शीशेवाली एक छोटी खिड़की थी। कमरे की एकमात्र खिड़की मुश्किल से फ़र्श के ऊपर थी। यह बाहर जलावन के काम में म्रानेवाले खलियों के ढेरों से भरे म्राँगन में खुलती। जुम्राख़ाने का फ़र्श ईंट का था। एकदम बीच में जहाँ खिड़की की रोशनी पड़ती थी, एक ईंट की इतनी

पॉलिश की गयी थी कि वह नयी बेल्ट के बक्कल की तरह चमकती। दीवारों के साथ चटाइयाँ, छोटे गद्दे और तकिये लगे थे।

"मैं तुम्हारी तारीफ़ करता हूँ!" दलाल तुर्दिमत ने चरस मिली तम्बाकू भरे हुक़्क़े को सलीक़े से जलाते हुए भावपूर्वक कहा। "अगर तुम्हारी बाबत ऐसा नहीं होता तो हमारा शहर बेइज़्ज़त हो जाता।"

पाइप खींच कर उसने नुसरतुल्लाह को दे दिया।

"वे इतनी तेज़ी से भाग खड़े हुए कि तुम उनकी परछाँई भी नहीं पा सकते। वे जानते हैं, कलूटे क़ुलमत को क्या कमाल हासिल है। सच तो यह है कि वह किसी पर रहम भी नहीं करता। जब वह अपने दाँव पर बाजी लगाता है, तुम्हें दृढ़ता से मुक़ाबला करना है! उसकी आँखें ख़ूँख़ार हो उठती हैं, उसके अन्दर का पशु जाग उठता है... यह सच है, मैं क़सम खाता हूँ!"

तुर्दिमत अपने असामी को ऊपर चढ़ाना चाहता था लेकिन यह महसूस करके कि आज का छोटा शिकार कहीं डर कर भाग न जाये, समय रहते ख़ुद को रोक लिया। देखते-देखते बाय का यह बेटा घबड़ा कर भाग खड़ा हो सकता था। दलाल ने बड़ी राशि और भारी बख़्शीश की उम्मीद लगायी थी लेकिन इस मामूली चार चुटकी आय से भी हाथ धो बैठता।

उसने धूर्त्तता से अपनी जाँघें थपथपायीं।

क़ुलमत का सामना करने लायक़ है कोई दूसरा माई का लाल? खेल में कुछ भी हो सकता है। अगर हार भी गये तो क्या? कभी-कभार आपकी भी जीत होती थी। जो खेलेगा ही नहीं, जीतेगा भी नहीं। गीदड़ों में तुम्हीं तो एक शेर हो। जब तुम चुनौती स्वीकार कर रहे हो तो समझ लो तुम जीत गये। कलूटा क़ुलमत कहता है, अब वह ताश के पत्तों से खेलना शुरू करने की सोच रहा है। हर कोई खेलने से डरता है। वक़्त ख़राब है, पाँसे के दिन पूरे हो रहे हैं। एक महान कला का अन्त हो रहा है। और जहाँ तक कलूटे क़ुलमत के न हारने की बात है, वह सब मनगढ़न्त है। वह जवान जुआ में अपना सब कुछ गँवा भले देगा लेकिन खेल नहीं छोड़ेगा। जब क़ुलमत के पास कानी कौड़ी भी नहीं बचती, वह पर्स, बूट, चोग़ा सब कुछ हार बैठता है, तब अपने हाथ, पैर, कान, नाक और ऐसा भी हुआ है कि अपना सिर तक दाँव पर लगा देता है। उसे बाँध दिया जाये, ज़ंजीरों से जकड़ दिया जाये लेकिन वह उसी तरह खेलता रहेगा।

खेल के जोश में न तो वह कुछ देखता है, न सुनता है और न महसूस करता है। तुम खुद यह देखोगे! जानते हो क्या कहता है वह? वह कहता है कि जो अपनी मौत मरता, वह जुआड़ी नहीं। मैं तुम्हें एक रहस्य से परिचित कराऊंगा: उसके एक ही कान है। उसका एक जोड़ था – शाह-अहमद, बेचारा अब मर गया। वह कभी एक-दूसरे से रत्ती भर भी हार नहीं माने। एक दिन कलूटा क़ुलमत उससे हार गया और मैंने अपनी आँखों से उसे अपना बायाँ कान काट कर शाह-अहमद को देते देखा..."

गलियारे में पैरों की आवाज़ हुई। तुर्दिमत ने अपने कान खड़े कर लिये, और खड़ा हो सीढ़ियों की ओर भाग लिया।

जुआख़ाने में अंधेरा और निस्तब्धता थी। भट्टियों से खली के जलने की दुर्गंध, साँस घुटानेवाली बू आ रही थी। लेकिन नूस्रतुल्लाह इसे ख़ून की बू समझ रहा था। वह आतंकित था। उसे एक जाल में फ़ँसा लिया गया था – रोटी के टुकड़े के लोभ में फँसे चूहे की तरह। उसे भाग जाना चाहिए, यहाँ से निकल जाना चाहिए! ऐसा सोच कर, वह दलाल के पीछे दौड़ा।

लेकिन तब बहुत देर हो चुकी थी!

एक नीची क़द, ख़ूबानी के पेड़ की तरह मज़बूत और हृष्ट-पुष्ट आदमी नीचेवाली सीढ़ियों से चला आ रहा था। वह अपना सीना आगे किये इस तरह चला आ रहा था जैसे अपने सिर से किसी अदृश्य नाके को चकनाचूर करने जा रहा हो। नुस्रतुल्लाह उसके लिए रास्ता छोड़ पीछे खिसक गया। यह कलूटा क़ुलमत था!

सच में वह कोयले जैसा काला था। उसका नुकीला मुंडा सिर उसके शरीर पर सीधा जमा था। गर्दन थी ही नहीं। यह ऐसे ही नहीं कहा जाता था कि इस आदमी का गला नहीं घोंटा जा सकता। उसके सिर की बायीं तरफ़ कान की सिर्फ़ ललकी थी जब कि दायाँ कान अतिवृद्धि की तरह प्रतीत होता। घनी, कँटीली भौंहें तीतर जैसी गोल-गोल आँखों की शैतानी चमक को बढ़ाती हुई उभरे ललाट के नीचे बुरी तरह उगी थीं। सकसाऊल वृक्ष की तरह गाँठों से भरी प्रतीत होतीं लम्बी बाँहें घुटनों तक पहुँच रही थीं। ऐसे आदमी को पछाड़ा भी नहीं जा सकता।

कलूटा क़ुलमत हल्के डग भरते हुए नुस्रतुल्लाह के आगे उस पर कोई ध्यान दिये बिना चला गया। दलाल तुर्दिमत ने नीचे झुकते हुए सम्माननीय अतिथि को दीवार के साथवाली सीट दिखाकर अगवानी की।

नशे में धुत्त विनोदी उमर उसके पीछे कमरे में घुसा। यह दोस्त था, बेलाग पिट्ठू – पेशे से इक्कावान, काम से पियक्कड़। वह कभी जुआ नहीं खेलता लेकिन रोज़ जुआख़ाने में आता – ख़ुशी ख़ुशी दूसरों की जेब से पीता। उसके बिना जुआख़ाना इतना ही बेरौनक़ होता जैसे विदूषक के बिना किसी राजा की नृत्य-सभा।

विनोदी उमर ने अपनी आँखों में वास्तविक भावावेग के आँसुओं के साथ नुस्रतुल्लाह को गले लगा लिया। वह मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था और अपना सिर नहीं उठा सकता था लेकिन असाधारण रूप से लड़ने के मूड में था, इतना कि उसके मुंह के कोनों से झाग निकल रहा था।

"भाई नुस्रतुल्लाह, मुझे थामे रहो! मैं तेरे हरेक दुश्मन को चूर-चूर कर दूंगा! मैं उनमें से हरेक को मौत की नीन्द सुला दूँगा... हरेक को, सात पीढ़ियों तक... ह-रे-क! आख़िर तक! सुन, अबे, तू नाराज़ तो नहीं? तू ना-रा-ज़ तो नहीं?"

नुस्रतुल्लाह को थोड़ा बेहतर महसूस हुआ। लेकिन अगले ही पल उसे कलूटे कुलमत की धीमी बेसुरी आवाज़ सुनाई पड़ी। अपने तकियों के सहारे बैठा, किसी की ओर देखे बिना एक कानवाले ने अपने होंठ एकदम न के बराबर हिलाते हुए कहा:

"क्यों नौजवान उस्ताद, अब तक जुआ नहीं छोड़ा? मैंने सुना है तुम्हारे पास उतने ही पैसे हैं जितने आसमान से तारे... बरसाती रात में?"

विनोदी उमर कलूटे क़ुलमत की ओर मुड़ा और उसकी बात पर ग़ौर करके बिछे नमदे पर लोट पोट होता कर्कश हँसी हँस पड़ा।

नुस्रतुल्लाह ने उसे सुनी-अनसुनी कर दी। वह क्या जवाब दे। क्या बदतमीज़ी है! सलाम-दुआ की तो छोड़ो, यहाँ तक कि देखा भी नहीं और इसके बावजूद उसका मज़ाक उड़ा रहा था। बदले में वह उठ कर जाने को हुआ। लेकिन दलाल तुर्दिमत ने उसे सम्मानपूर्वक बैठने का अनुरोध किया। नुस्रतुल्लाह बैठ गया।

विनोदी उमर ने नकियाती आवाज़ में अपना मनपसन्द गीत शुरू किया:

देखो, कौवे उड़ते जाते
मर्ग़िलान की राह पर बढ़ते जाते...

फ़िर वह फलसफ़ा झाड़ने लगा:

"ओह्-हो, ख़ुदा ने हमें बेमज़ा हो कर बनाया, ख़राब मूड में। हाँ, वह बहुत ख़राब मूड में था: यह भी नहीं कहा: ख़ुदा के नाम पर... मैंने ऐसे ख़ुदा को इनकार कर दिया है। दूसरी ओर मैं उसे समझ सकता हूँ और मुझे उससे हमदर्दी है। हमारे चारों ओर इतना गड़बड़झाला करना कोई मज़ाक नहीं। जैसे हमारे परम आदरणीय, महान कुलमत-बेक को ही लो। उन्होंने क्या किया?" ख़ी-ख़ी करते हुए उसने अपनी नशे से भरी आँखें आकाश की ओर उठायीं। "हीरों का। जवाहरातों का... अब हमारे श्रद्धेय और बेजोड़ तुर्दिमत जी को देखिये! वही खुशबू... और फिर मेरे अज़ीज़ दोस्त भाई नुस्रतुल्लाह..."

"वह तो अभी भी छोकरा है," कलूटा कुलमत रुखाई से बुदबुदाया। फिर उसने एक इतना लम्बा कश खींचा जैसे पूरा हुक्का ही निगल जाना चाहता हो और तीखा धुआँ नुस्रतुल्लाह के चेहरे पर फूंक दिया। "याद रखो! मैं तुम्हारे बाप की जायदाद नहीं हथियाना चाहता। अब यह भरोसे लायक भी नहीं।"

नुस्रतुल्लाह गुस्से से अपने पैरों पर उछल खड़ा होने को था लेकिन विनोदी उमर ने कन्धे पर गिरते हुए उसे आलिंगनबद्ध कर लिया।

"भाई नुस्रतुल्लाह – तुम मेरे बाप और आध्यात्मिक गुरु हो! मैं तुम्हारे सारे दुश्मनों को चकनाचू-र कर दूंगा! तुम नाराज़ तो नहीं, आँ? बता दो इन सब को तुम कौन हो! बोज़ा* लोगे? मैं मंगाऊँगा। तुम मेरे उस्ताद हो, मैं तुम्हारे लिए सब कुछ करूँगा। तुर्दिमत, बोरिजर** जाओ, तेज़ी से। थोड़ा बोज़ा ले आओ। वहाँ बर्फ़ की तरह ठंडा मिलता है!"

दोहरा होता हुआ दलाल तुर्दिमत सीढ़ियों पर ऊपर दौड़ पड़ा।

उमर फिर गाने लगा:

मेरे सुत्रातित हमदम
तुम पी-ड़ि-त...
मैं पी-ड़ि-त...

---

* बोज़ा – बाजरे की शराब।

** बोरिजर – एक जगह का नाम।

"हू-उ," उसने अत्यन्त कामातुर भाव-भंगिमा से कहा। "मैंने एक नाज़नीन को देखा। उसकी चाल तितली की तरह थिरकती हुई थी। खूबसूरत परी, मेरी तक़दीर में तुम्हारा ग़ुलाम होना बदा है! जादूगरनी की आँखों ने मेरे खोये दिल को बेध डाला। मैं सिर में पाँव तक मुहब्बत में सराबोर हो गया। मुझे सिहरन हो रही है, मैं मर रहा हूँ!" वह किलका और सो गया—उसका सिर उसके घुटनों के बीच झूल रहा था।

नुस्रतुल्लाह भय से ज़र्द पड़ गया। अब वह कलूटे क़ुलमत के आमने-सामने अकेला था। उसकी जीभ जैसे तालू से चिपक गयी थी और जबड़ों को लकवा मार गया था। वह अपना भय मज़ाक़ से भी नहीं टाल पा रहा था।

"मेरा सुझाव है, तुम भी मुहब्बत कर लो," कलूटे क़ुलमत ने ज़ोर से जंभाई लेते हुए कहा। "काँपने और मरने के लिए... तुम बस इसी के काबिल हों!"

चुपचाप, ग़ुस्से से नुस्रतुल्लाह ने अपना कमरबन्द ढीला कर दिया और अपने चारों ओर अनचाही नज़र डालते हुए उन पैसों को नीचे ईंट के फ़र्श पर डाल दिया जिन्हें वह अपने बाप से चुरा कर लाया था।

कलूटे क़ुलमत ने पैसों पर सिर्फ़ एक सरसरी निगाह डाली और तत्क्षण ही किसी बाज़ीगर की तरह पाँसा निकाल दिया। यह बताना मुश्किल है कि पाँसे उसकी हथेलियों से उछल कर निकल आये या आस्तीन से।

चुपचाप अधिकारपूर्वक उसने आधे पैसों को हुक़्क़े की पाइप से नुस्रतुल्लाह की ओर बढ़ा दिया।

"यह इक्के को देने के लिए है," उसने निर्विकार ढंग से कहा। "तुम्हें सच बताऊँ, मैंने तुम जवान छोकरों का नाम जुआड़ियों की लिस्ट से काट दिया है।"

विनोदी उमर जाग पड़ा। अपनी नीन्द में भी उसे पैसों की बू मिल गयी थी। इसी बीच नुस्रतुल्लाह अब तक अपने पर काबू नहीं पा सका था और ठीक अपने सामने चिकनी चमकती ईंट पर उछाले जाने के बाद जैसे गोंद से चिपके पड़े पाँसों की ओर खिन्नता से देख रहा था।

"वोऽ-मारा!" उमर जोश से चीख़ पड़ा।

पाँसा जीत का संकेत दे रहा था।

"मैंने कौल लिया है," उसने उपेक्षा से कहा, "पैसों के लिए नौ-जवान छोकरों के साथ नहीं खेलूंगा।"

पाँसे फिर ऊपर गये, उछले और उसी चिकनी ईंट पर आ टिके।

नुस्रतुल्लाह सुन्न। वह पाँसे से अपनी आँखें नहीं हटा पा रहा था।

"सात!" विनोदी उमर ने रुँधी आवाज़ में कहा। तुरंत होश में आता हुआ उसने आनन्द के साथ पैसों को गिनना और पैकेटों में लपेटना शुरू कर दिया।

नुस्रतुल्लाह को अपने शरीर पर ठंडा पसीना रेंगता महसूस हुआ। सात... इसका मतलब है उसे दाँव में सात हज़ार रूबल डालने होंगे। शैतान ही उसे आज जुआख़ाने लाया था। लेकिन वह कर ही क्या सकता था।

दाँव में पैसों का ढेर—चौदह हज़ार रूबल के पैकेटों का ढेर लग गया। कलूटा क़ुलमत थोड़ा सचेत हो उठा। अब वह हुक्के की पाइप से रुपयों की ओर नहीं ताक रहा था। उसने बोरियत से जम्हाई लेना बन्द कर दिया। अपने हाथ में पाँसे उछालता वह घुटनों के बल बैठ गया।

दलाल तुर्दिमत ने बोज़ा की प्यालियाँ खिलाड़ियों की ओर बढ़ा दी। नुस्रतुल्लाह ने अपनी प्याली एक घूंट में ही गटक ली। उसके हाथ काँप रहे थे, उसके कान भरे-भरे से लग रहे थे और आँखों के सामने लाल कुहासा छा रहा था।

उमर की आवाज़ कहीं ओर से आती प्रतीत हुई।

"उस्ताद, देखो तुम हमारे नुस्रतुल्लाह को मत नाराज़ करना... लोगों को मत नाराज़ करना... लोगों को नाराज़ करना ठीक नहीं..." विनोदी उमर की झुकी प्याली से बोज़ा नुस्रतुल्लाह के कॉलर के नीचे गिर पड़ा। "मैंने सुना है, उसकी जल्दी ही शादी होनेवाली है। क़सम से, उसके बाप की जायदाद उसकी हो जायेगी। तब हमारा खेल जायेगा!"

पहली बार कलूटे क़ुलमत के चेहरे पर कुछ मुस्कुराहट-सी रेंग गयी।

"जब उसे मिल जायेगी तब हम वह बड़ा खेल खेलेंगे। शादी अच्छी चीज़ है। और तुम, उमर-बेक, तुम ठीक नहीं करते। तुम ऐसा क्यों बोलते हो? क्या मैंने नौजवान छोकरे को नाराज़ करनेवाली कोई बात कही है? बल्कि मैं तो उसे पसंद करता हूँ।" उसकी आवाज़ में व्यंग्य का कोई पुट न था।

उसने एक के बाद एक बोज़ा की कई प्यालियाँ गटक लीं। फिर पाँसा फेंका और आशा के विपरीत बाज़ी हार गया...

उसने खुद दाँव के पैसे जमा करके रूमाल में बाँधकर नुस्रतुल्लाह की ओर बढ़ा दिया।

बाय का बेटा चकरा गया। दलाल तुर्दिमत ने ठीक ही कहा था: कोई आश्चर्य नहीं कि इस कलूटे ने अपना एक कान काट डाला हो। उसके हाथ को चलानेवाला शैतान चूक गया था! पाँसे की तरह क़िस्मत के भी चार मुखड़े हैं। ऐसे कोई भी खेल सकता है! अब वह ख़तरा उठा सकता है। पाँसा नुस्रतुल्लाह के पास आ गया।

"वाह, खेल बन पायेगा!" उसने सोचा और अपने सीने का बटन खोल दिया।

पाँसा उछालते हुए उसने अपने नंगे सीने को ज़ोर से ठोंका और पूरे जोश के साथ चीख़ा:

"गार्तकम!"*

"मार लिया!" उमर चीखा।

नुस्रतुल्लाह ने फिर पाँसा फेंका।

"गार्तकम!"

"बाजी तुम्हारी है!" उमर फिर चीखा।

नुस्रतुल्लाह के पास दाँव में रूमाल से दूना पैसा था। वह जीत रहा था!

विनोदी उमर और दलाल तुर्दिमत ने एक-दूसरे को तिरछी निगाहों से देखा। वे एक-दूसरे को समझ गये। बिल्ली चूहे को ठीक अपनी नाक के सामने फुदकने दे रही थी। बिल्ली यक़ीन दिला रही थी कि उसके पंजे को लकवा मार गया है। पंजे को एकाएक ठीक होते देखना, रोचक रहेगा... तब चूहा हक्का-बक्का रह जायेगा।

पाँसा कई बार इस हाथ से उस हाथ होता रहा। कलूटे क़ुलमत का जी खेल जारी रखने को तरसता था। उसने जी भर बोज़ा पीया और अपने प्रतिद्वन्द्वी की तारीफ़ की। तुर्दिमत और विनोदी उमर ने भी उसकी

---

* गार्तकम — जुआ में बाज़ी जीतने के लिए की जानेवाली एक मनौती।

तारीफ़ की और हँसते हुए कलूटे क़ुलमत को अपना एक मात्र कान अर्थपूर्ण ढंग से खुजलाते देखा।

अंधेरा होने लगा था। दलाल ने एक मोमबत्ती जला दी।

आखिरकार, कनकटा आदमी ऊब गया और दूसरा घण्टा बीतते-बीतते सारा पैसा उसके पास लौट गया।

नुस्रतुल्लाह उसके सामने किंकर्त्तव्यविमूढ़ लग रहा था। उसे न कुछ दिखाई दे रहा था, न समझ आ रहा था। शुरू कहाँ उसके पर्स के मोटा होने और दिल में सर्द भय से हुआ था और ख़त्म उसके पर्स के ख़ाली होने और जैसे बुख़ार में काँपते पूरे बदन से हुआ था।

नुस्रतुल्लाह को इसकी याद न थी कि वह यहाँ कब आया और कितना हारा। उसे तो बस छोटा, पीला, चमकता पाँसा ही नज़र आ रहा था... हाँथीदाँत के इन टुकड़ों के पीछे सारी दुनिया घूम रही थी। लेकिन अब वह कभी उन्हें अपने हाथों में नहीं ले पायेगा। वे कलूटे के बालदार पंजे में ग़ायब हो गये थे जिसे न तो मिन्नतें न धमकियाँ डिगा सकती हैं।

पैसे जमा करते हुए उसने कहा:

"मैं बपौती जायदाद के लिए नहीं खेलता।" उसकी आवाज़ फिर उदासीन और बेसुरी थी।

सब ख़त्म हो चुका था। नुस्रतुल्लाह ने फ़र्श खरोंच कर अपने नाखून तोड़ डाले। उसके पैर जवाब दे रहे थे और उठने की ताक़त न थी। वह पी कर मदहोश था। उन्होंने उसे मदहोश कर दिया था।

गुर्राता हुआ वह विनोदी उमर की ओर मुड़ा। विनोदी उमर उसकी गुर्राहट से सहम गया:

"ओ-हो... तुम समझते हो हमारा ख़ात्मा हो गया? उस्ताद, तुम ग़लती कर रहे हो! बाज़ ने सिर्फ़ अपने नाख़ून थोड़े तेज़ किये हैं। अमीर दूल्हे ने तो यह केवल अपनी शुरुआत भर की है। बात आगे बढ़ी तो वह अपनी दुल्हन तक दाँव पर लगा देगा!"

झूमता नुस्रतुल्लाह अपने पैरों पर उठ खड़ा हुआ। वह ग़ुस्से से अंधा हो रहा था। उसके चेहरे के चेचक के दाग़ सूजकर काले पड़ गये थे, एक अजीब बेमेल आवाज़ उसके सीने से उठ कर गले में अटक रही थी। वह कुछ नहीं कह सका। कुछ नहीं कर सका। काँपते हाथों से सीढ़ी के ब़ाड़े के सहारे घिसटते वह सीढ़ियों पर चढ़ा।

कोई उसके पीछे नहीं आया। डगमगाता, हाथों और कुहनियों से दीवारों का सहारा लेता वह अंधेरी, सूनी गलियों में, कहाँ जा रहा है, इससे अनजान, भटकता रहा। एक गली के नुक्कड़ पर वह रुका और अपने सीने के बल एक टेलीग्राफ़ पोस्ट पर झुक गया। उसने खेल के दौर को याद करने की कोशिश की लेकिन उसके दिमाग़ में कुछ न आया। उसका दिमाग़ उसके क़ाबू में न था। उसने चारों ओर देखा। वह है कहाँ? लेकिन उसे अपने सामने बस सपाट, एक कानवाले कलूटे क़ुलमत का सिर दिखाई दे रहा था। उमर की आवाज़ उसके कानों में साफ़ गूंज रही थी: "वह अपनी दुल्हन भी दाँव पर लगा देगा।"

नुस्रतुल्लाह ने अपने दाँत पीस लिये।

"मैं ऐसा करूँगा तो किसी का क्या? मैं उसे दाँव पर लगा दूंगा! किसी के बाप का क्या जाता? शायद मैं अपने बाप को ही दाँव पर लगा दूं... तुम झूठे हो! कमीने... तुम मुझे डरा नहीं सकते। ठहर, काले शैतान! मैं फिर आऊँगा... मैं फिर भी तुम्हारा मुक़ाबला करने आऊँगा, तुम्हारे गले में अपने दाँत चुभो दूंगा!"

उसी समय लोगों की नज़र से बचने की कोशिश करता कलूटा क़ुलमत चाय-विक्रेता के रूप में मशहूर सरल, सीधे-सादे मुसलमान मुहम्मद सईद के घर की ओर चला जा रहा था।

आठवाँ भाग

क़ुम्रि को बैठक से चले जाने के बाद से अनाख़ाँ ने नहीं देखा था और क़ुद्रतुल्लाह के लिए अब तक काम कर रही औरतों के मिजाज के बारे में भी वह कुछ नहीं जानती थी।

"हमने उन्हें छोड़ दिया है... यह ग़लत है।" जुराख़ाँ ने उसे झिड़का। "तुम्हें उनके घर जाना चाहिए।"

क़ुम्रि नैमन्चा में चारों ओर से अर्धगिरी दीवारों से घिरे एक छोटे-से

टूटे-फूटे मकान में रहती थी। सरकण्डों से घेरे बरामदे के पास ही अनाखाँ को वह मिल गयी।

क़ुम्रि के हाथों में धुंए से काली पड़ी ढलवाँ लोहे की केतली थी। उसके दोनों बच्चे नंगी चटाई पर बैठे थे और बूढ़ी अंजिरत थोड़ा हटकर छाया में बैठी थी।

जब बरामदे में आकर अनाखाँ ने अपनी परंजी हटायी, अंजिरत न जाने क्यों घबड़ा-सा गयी और तेज़ी से उठ खड़ी हुई।

"अरी, अनाखाँ, यह तुम हो, बेटी?" वह धीरे से बोली और खुद को क़ाबू में लाने के अंदाज़ में अपने सीने पर दो-एक बार फूंक मारी।

अनाखाँ ने ख़ाली-ख़ाली आँगन की ओर खिन्नता से देखा। धूप से झूलसते आँगन में एक भी पेड़ न था, यहाँ तक कि घास की एक पत्ती भी नहीं। बीच में मुट्ठी भर पुरानी कपास और इसकी बग़ल में केनाफ़ की डोरी और चिथड़ों में एक साथ मिलाकर बाँधा कमज़ोर चरखा और टिन का टुकड़ा पड़ा था जो किसी पुरानी ट्रे की तरह लग रहा था। टिन के ऊपर दो या तीन सरकण्डे की फिरकियाँ और उलझे धागे के टुकड़े पड़े थे।

क़ुम्रि काफ़ी दुबली हो गयी थी, उसकी आँखों में गड्ढे पड़ गये थे और उसके झुर्रीदार होठों के पीछे से लम्बे-लम्बे दाँत आगे निकल आये थे। उसके छिटपुट बालों के बीच सफ़ेद चमक रहे थे। "बेचारी अकेली है और उसकी परवाह करनेवाला कोई नहीं," अनाखाँ ने दुख से सोचा।

"तुम काम पर नहीं गयी, क़ुम्रि बहन?"

"हाँ। आज मेरी तबीयत ठीक नहीं? क्या बैठोगी नहीं? तुम आयी, बड़ा अच्छा किया। मुझे भूली नहीं, इसके लिए तुम्हें शुक्रिया। आओ, बैठो।"

"क्या तुम घर पर भी काम करती हो?"

"जितना हो सकता है, कर रही हूँ। अब तुम वर्कशॉप में कुछ नहीं कमा सकती। लोग बाय का बोज़ नहीं ख़रीदते और अब उसने हम पर नज़र रखना भी बंद कर दिया है। वहाँ कोई काम नहीं और लगता है हमें मज़दूरी भी नहीं मिलेगी। हालाँकि दस्तारख़ान पर कुछ नहीं, मैं अभी आग पर चाय चढ़ाऊँगी।" नंगे पाँवों में महसी चट-चट करते क़ुम्रि अंगीठी के पास गयी।

"हमारे पास जो कुछ है, अलहमदुलिल्लाह," अंजिरत दादी ने अपने चौड़े आस्तीन से हवा करते हुए रुखाई से कहा। "बहू, तुम हमेशा क़िस्मत

की शिकायत करती रहती हो। बस यही हम औरतों की क़िस्मत में बदा है। अगर यह इस से भी ख़राब हो जाय तो हम क्या कर सकते हैं?"

अनाख़ाँ बच्चों के पास गयी। वे चटाई से उठ गये और अग़ल-बग़ल खड़े हो गये। दो लड़के। दोनों बिना जाँघिये के। दोनो की तोंदें बाहर निकली थीं और गन्दी क़मीज़ें उन्हें मुश्किल से ढँक पा रही थीं। धूप से बुरी तरह संवलाये उनके अनधोये चेहरे पसीने से चमक रहे थे।

"तुम्हारा नाम क्या है?" अनाख़ाँ ने बड़े लड़के से पूछा। "तुमने चेहरा इतना गन्दा क्यों कर रखा है?"

"अनाथों से तुम साफ़ रहने की उम्मीद नहीं कर सकती, मेरी प्यारी बहू।" अंज़िरत ने लड़के की ओर से जवाब दिया।

अनाख़ाँ ने पीड़ा महसूस की: उसके भी बिना बाप के बच्चे थे।

"बच्चे न हों तब भी बदक़िस्मती और हों तब भी। चाहे जैसे भी देखो, यह तकलीफ़देह है," अंज़िरत ने आगे कहा। "औरतों के चारों ओर बदक़िस्मती है।"

"तुम गिला तो नहीं कर रही, क्यों दादी? कहो: अलहमदुलिल्लाह!" अनाख़ाँ व्यंग्य से मुस्कुरा पड़ी।

"कहूँगी; मेरी बच्ची, कहूँगी। ऐसे भी लोग हैं जिनकी हालत इससे दस गुना बदतर है। अलहमदुलिल्लाह।"

क़ुम्रि एक ट्रे ले आयी और दोनों बच्चों को मक्के की रोटी का एक-एक टुकड़ा थमा दिया। उसने चटाई उठाकर बेंत के बाड़े पर डाल दिया जिस से अनाख़ाँ के बैठने की जगह पर छाया हो जाये।

काँपते हाथों से अंज़िरत दादी ने जल्दी से मक्के की रोटी का एक छोटा टुकड़ा तोड़ा और पोपले मुंह में डालकर मसूड़ों से चबाने लगी।

"मैं तुम्हें देखकर, बेटी," उसने अपनी पोशाक पर गिरे भुरकों को आहिस्ता से इकट्ठा करते हुए कहा, "मैं तुम्हें देखकर अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर सकती। मुझे बताया गया था कि बाय का वर्कशॉप छोड़ने के बाद तुमने अपना चचवान और परंजी आग में झोंक दिया, नाई के यहाँ अपने बाल कटा लिये और होंठ रंगकर घूमती फिरती हो। थू-थू! मैं मानती हूँ, मुझे इसका विश्वास हो गया, बूढ़ी जो ठहरी। अलहमदुलिल्लाह, उन्होंने तुम्हारे बारे में झूठ कहा था, कहानी गढ़ी थी।"

अनाख़ाँ अपने प्रति सचेत हो उठी।

"कौन यह कहानियाँ कहता है?"

"हमारी धर्मात्मा ग्रौरतों में एक, हज़रत की बीवी जिसने चालीस दिनों तक मातम मनाया। कल उसने बड़ा जोश दिखलाया। मातम ख़त्म होने पर उसने एक भोज दिया। बड़ा ही शानदार था यह, ग्रनगिनत लोग थे। पूरे मुहल्ले के लिए काफ़ी हलीम* तैयार किया गया था। तुम जानती ही हो हलीम पाक माना जाता है। भई तो मैंने सोचा, मुझे भी जाना चाहिए, ख़ासकर चूंकि मेरी पोती बीमार थी। वह एकाएक बीमार पड़ गयी ग्रौर बेचारी बच्ची दो हफ्ते में ही पीली पड़ गयी। मैं उसे साथ ले गयी। जैसे ही उस धर्मात्मा ग्रौरत ने उसे देखा, बोल पड़ी: 'यह किसी शैतान रूह का काम है। हे परवरदिगार। यह सिर्फ़ बच्ची को नहीं तकलीफ़ दे रही बल्कि उसकी टोपी में भी घुस गयी है।' उसने मेरी पोती के सिर से टोपी उतार ली। 'देखती हो,' उसने कहा, 'ताबीज़ बेकार हो गयी है।' इससे मुझे याद ग्राया, एक पूरी रात टोपी ग्रखरोट के पेड़ के नीचे पड़ी रह गयी थी ग्रौर हाँ, यह तो सभी जानते हैं, शैतानी रूहें ग्रखरोट के पेड़ों पर सोती हैं। धर्मात्मा ग्रौरत ने ताबीज़ निकालकर ग्राग में डाल दी, फिर एक नयी लिख दी। उसके बाद बच्ची की जीभ पर थूका। मैं उसके पैरों के पास बैठी थी। जब उठी, ग्राह, क्या ख़ुदा की ताक़त है, मैंने बच्ची के गालों पर रौनक़ देखी।"

"फिर क्या हुग्रा?"

"तेशिक्क़ोप्क़ोक़ से एक जादूगरनी ग्रायी हुई थी। उसने दौड़ना-नाचना शुरू किया..."

"लेकिन उन्होंने कहा क्या?" ग्रनाख़ाँ ने ग्रपनी बेताबी छुपाने की कोशिश करते हुए पूछा।

"यह ग्रौरत – जादूगरनी, चक्कर पर चक्कर लगाती रही जब तक कि लोगों ने उसे उसकी बाँहों से थाम नहीं लिया। वह इतनी कमज़ोर ग्रौर बेबस हो गयी कि ग्रौरतों के बीच ज़मीन पर गिर पड़ी, उसके होंठ झाग भरे थे। फिर उसने हम लोगों की चारों ग्रोर देखा, फिर धर्मात्मा शेख़ बहावुद्दीन के बारे में कुछ बुदबुदाने लगी। 'ग्रो, कमज़ोर ग्रौरतें,' उसने

---

* हलीम – प्याज़, गोश्त ग्रौर गेहूँ का शोरबा जिसे बहार के दिनों में चौबीस घंटे तक ग्राग पर पकाया जाता है।

कहा, 'पापियों से सावधान रहो। पापी मर्दों से सावधान। शैतान रूहें विधवाओं को गुमराह करती हैं।"

"यह कहने से उसका क्या मतलब था?"

"विधवाएँ रोग का कारण हैं। किसी के भयानक पाप की यह हमारी सज़ा है। किसी प्रेतबाधा की तरह प्रेम का रोग जवान और बूढ़े दोनों पर एक समान हमला करता है। उनकी औरतों की कमज़ोरी उन्हें दर्द से छटपटाती है, वे तपने लगती हैं और शैतान की ताक़त उन्हें मर्दों के पास खींच ले जाती है... मुझे नहीं मालूम, हम नादान लोग हैं। हे खुदा, हमें मुसीबतों से बचा।" अंज़िरत दादी ने प्रार्थना की और फूट-फूटकर रोने लगी।

अनाख़ाँ दुख के साथ मुस्कुरायी:

"रोओ मत, दादी। मुझे बताओ: शायद मैं खुद को नहीं समझ पाती और मैं कहाँ जा रही हूँ, नहीं देख पाती।"

अंज़िरत निष्कपट भय से बुदबुदायी:

"विधवा की वही कमज़ोरी मर्दों को भी, लगता है, परेशान करती है। ऐसा प्रतीत होता है, वे अपनी बीवियों और बच्चों को अलग कर देते हैं और रोग से पीड़ित इतनी औरतें हैं कि अधिकारियों ने उन्हें गलियों से बचाने के लिए "सहकारिताएँ" खोल दी हैं। सहकारिताओं में औरतों के लिए चूल्हा-चौका का प्रबंध किया गया है। यही कुछ इस बड़ी दुनिया में हो रहा है। धर्मात्मा औरत ने भविष्यवाणी की कि जल्दी ही औरतों को पीटा जाने लगेगा। शैतान से हार नहीं मान जानेवाले मर्द अपनी बीवियों को पीटेंगे। इसलिए, उसने कहा, हैरान मत होना, अगर, अगर कि... " अंज़िरत दादी वाक्य पूरा करने के लिए खुद को तैयार नहीं कर पायीं। "इस लिए, मैं कहती हूँ: अलहमदुलिल्लाह। अलहमदुलिल्लाह।"

एक अजीब, पीड़ादायक चुप्पी छा गयी। अपनी जगह पर बैठी क़ुम्रि अपना सिर ऊपर करने और अनाख़ाँ से आँखें मिलाने में डर रही थी। अंगीठी पर चढ़ी क़ुम्ग़ान ज़ोर से सूं-सूंकर उठी और क़ुम्रि उसकी ओर इस तरह तेज़ी से भागी मानो अनाख़ाँ की नज़रों से बचने के इस मौक़े से बहुत खुश थी। हंडे साफ़ करनेवाले कालिख भरे चिपचिपे कपड़े से क़ुम्रि ने क़ुम्ग़ान को अंगीठी से उतारा और चाय तैयार करने लगी। वह बरामदे में दुबारा जाने से हिचकिचा रही थी।

"या खुदा, कितना भयानक, कितना अपमानजनक है।" दादी अंज़िरत बुदबुदायी।

"वह ठीक ही कहती है," अनाख़ाँ ने सोचा, "यह भयानक है, एक अपमान है..."

"अब मेरी बात सुनो," अनाख़ाँ उठती हुई, अपनी परंजी लेकर बोली। "अगर इन बातों पर तुम सच में विश्वास करती हो, क़ुम्रि चाची, मैं तुम्हारे घर पर अब और नहीं रुक सकती।"

"अनाख़ाँ, बहन," क़ुम्रि ने अपनी आँखें उठाये बिना परेशानी से कहा।

"मैं एक नादान औरत हूँ, मेरी बेटी," अंज़िरत ने कुटिलता से कहा। "खुदा के सौ बार शुक्रिया, मेरा मन साफ़ है। मैं दूसरों के बारे में कुछ भी कहने की हिमाक़त नहीं करती—चाहे सहकारिता खोलनेवाली तुम ही क्यों न हो।"

"तुम्हारा क्या ख़्याल है, क़ुम्रि चाची? मेरे बारे में तुम्हें कुछ कहना है? क्या वह कमज़ोरी, वह रोग तुम मुझ में भी देखती हो? सच है, मैंने सहकारिता खोली। मैं अध्यक्षा हूँ। लेकिन मैं किसके बारे में सोचती हूँ? अपने बारे में? मर्दों के बारे में? तुम मुझे जानती हो और तुम जानती हो कि मैं बिना बाप के बच्चों के बारे में सोचती हूँ। तुम्हारे और अपने बच्चों के लिए। अंज़िरत दादी, मैं मज़हब के ख़िलाफ़ कुछ नहीं कहूँगी लेकिन यह कुत्सित, नीचतापूर्ण, कलंक और बेपर की बातें नास्तिक, बेहया लोगों ने गढ़ी हैं। अगर मेरी बातें तुम्हें पसन्द नहीं, बेअदबी के लिए माफ़ करना लेकिन मैं अपनी पसंदीदा राह से लौटूँगी नहीं।"

"अनाख़ाँ," उसका रास्ता रोकते हुए क़ुम्रि ने ज़ोर से कहा। "बेचारी नज़ाकत को कल उसके शौहर ने पीटा। अनाख़ाँ प्यारी, मुझे दोष मत दो, मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता लेकिन तुम खुद देख सकती हो..."

अनाख़ाँ चौंक पड़ी।

"नज़ाकत को पीटा गया?"

"बेचारी ज़ोर-ज़ोर से चीख रही थी।"

"यही बात है। यही बात है, अनाख़ाँ, मेरी बच्ची," अंज़िरत ने रोते हुए आगे कहा, "मैं विश्वास नहीं करना चाहती लेकिन भविष्यवाणी सच हो रही है।"

सोचती हुई अनाख़ाँ ड्योढ़ी की ईंटवाली सीढ़ी पर बैठ गयी।

दरवाज़ा चरमराया। दरज़ी मद्रईम की पतोहू शाहिस्ता अपने हाथों में बच्चा लिये दौड़ती हँसती आँगन में आ गयी।

"आदाब, क़ुम्रि चाची। आदाब, दादी अंज़िरत। अनाख़ाँ जां, मैंने तुम्हें यहां आते देखा और तुम्हारे पीछे दौड़ी चली आयी... अरे, लेकिन तुम लोग बुत की तरह चुप क्यों हो?"

"आओ शाहिस्ता, आओ बेटी," क़ुम्रि ने गहरी साँस लेकर कहा। "कितनी हँसमुख हो गयी हो तुम। कम से कम हमें अपनी आँखें तो जुड़ा लेने दो।"

"तुम्हारा बेटा कितना अच्छा बढ़ रहा है," अंज़िरत दादी ने खड़ा होकर बच्चे को अपने हाथों में लेते हुए कहा। "च् ऽ च्। खुदा बुरी नज़रों से बचाये। कितना मोटा-ताज़ा और गोरा है यह। च् ऽ च्।"

शाहिस्ता खुशी से हँस पड़ी। बच्चा भी हँसने लगा।

"बता हम कैसे हैं, मुन्ना!" उसने अंज़िरत से अपने बेटे को लेते हुए बार-बार कहा। "हम लोहे की खाट पर सफ़ेद चादर डालकर सोते हैं, हम मलाईदार दूध पीते हैं, टब में नहाते हैं। और ऐसे उड़ते हैं।" उसने बच्चे को सिर से ऊपर उछाल दिया और बच्चा तनिक भी डरे बिना खुशी-खुशी हँसता रहा।

"तुम उसे गिरा दोगी। तुम्हारी उम्र दराज़ हो... बैठ जाओ।"

"नहीं, इन्हें कह दो हम काम करने जा रहे हैं," शाहिस्ता ने बच्चे को छाती से लगाते हुए जवाब दिया।

"तुम उसे अपने साथ ले जाती हो?" क़ुम्रि ने सन्देह और ईर्ष्या से पूछा।

"बेशक! उन्हें बताओ, तुम और मम्मी, दोनों काम करने जाते हैं। मम्मी – सहकारिता में, तुम – सहकारिता की नर्सरी में। अध्यक्षा बहन," अनाख़ाँ की ओर मुड़ती हुई शाहिस्ता ने कहा, "क्या हम साथ चलेंगे? मैं दौड़कर कपड़े बदल आऊँगी।"

अनाख़ाँ अपनी मुट्ठियाँ भींचते धीरे-धीरे बरामदे के आगे बढ़ गयी। अन्त में दृढ़ निश्चय के साथ उसने मुलायम लहजे में कहा:

"मैं नज़ाकत को देखने जाऊँगी, बहन।"

क़ुम्रि और अंज़िरत ने एक-दूसरे को भय से देखा। फिर वे अपने हाथ हिलाते हुए अनाख़ाँ की ओर दौड़ीं:

"हमें खुदा बचाये। मत जाओ। तुम उसके शौहर को नहीं जानती। वह तुम्हें बेइज़्ज़त कर देगा..."

"हाँ, बीच में मत पड़ो। इससे कोई मतलब मत रखो, मेरी बच्ची। अलहमदुलिल्लाह, नज़ाकत एकदम ठीक-ठाक है।"

"चीखो मत, नादानो, शान्त रहो," अनाख़ाँ ने शान्तिपूर्वक जवाब दिया और ज़ुराख़ाँ के शब्द दुहराये: "अपने दिल की बात तुम्हें ज़रूर सुननी चाहिए, इसे चुप रहने के लिए मजबूर मत करो। मेरी राह ऐसी ही है, कुम्रि चाची। और फिर नज़ाकत मेरी राह देख रही है, ठीक जैसे तुम देख रही थीं, क्या यह सच नहीं?"

चुपचाप कुम्रि ने अपना सिर झुका लिया और अनाख़ाँ दरवाज़े की ओर बढ़ गयी।

* * *

छैला नारमत का मकान शोरगुल भरे सड़क के नुक्कड़ पर एक अति विशाल पॉपलर वृक्ष की छाया तले था। वृक्ष इतना ऊँचा था कि मुहल्ले के किसी भी हिस्से से दिखाई देता। बूढ़े-पुरानों को याद है कि पॉपलर और इस पर बने सारस का घोंसला उनके बचपन से है। छैला नारमत एक कारीगर था लेकिन अमीर वह अपने करघे पर काम करके नहीं बल्कि चरस बेचकर बना था।

लोग कहते हैं, उसकी छत पर रहनेवाला बूढ़ा सारस भी कुकनार का आदी है। छैला नारमत पोस्ते के सूखे बीजों के बचे-खुचे भाग छत पर फेंक दिया करता था और सारस उन्हें खा जाता। धीरे-धीरे वह नशाख़ोर बन गया। वह छत पर उतरकर इसकी तलाश करता और अगर रोज़ की तरह बचा-खुचा हिस्सा वहाँ नहीं होता, सारस घण्टों एक टाँग पर उदास खड़ा रहता।

जवानी में नारमत एक जाना-माना छैला था और इसी से उसका नाम छैला पड़ गया था। क़िस्मत उसे और महाजन क़ुद्रतुल्लाह को निकट ले आयी। वे दोस्त बन गये और बाय ने उसकी शादी नमनगान के अपने एक दूर के रिश्तेदार की बेटी अनाथ नज़ाकत से करा दी। ऐसी अफ़वाह थी कि क़ुद्रतुल्लाह ने कुकनार बेचने में छैला नारमत की मदद की।

अपना चचवान सिर के पीछे करते हुए अनाख़ाँ सीधे भीतर आँगन में चली गयी। नज़ाकत अपने शौहर के वर्कशॉप की दहलीज़ पर एक सूती चटाई पर ठंडी खुली हवा में लेटी थी। वह एक टोपी पर कशीदा कर रही थी। अनाख़ाँ को देखकर उसने टोपी एक ओर रख दी लेकिन चटाई से उठी नहीं।

"तुम क्यों आयी हो?" उसने गुस्से से और रुखाई से पूछा। फिर वह एकाएक रोने लगी। सुबकते हुए उसने दर्द के साथ कई बार दुहराया: "तुम यहाँ क्यों आयी हो?" हमेशा खुश और बेपरवाह रहनेवाला उसका सुन्दर चहरा बीमारों की तरह पीला पड़ गया था। उसकी आँखों और होंठों में सूजन थी, गालों पर उस्मा बिखरा था। अनाख़ाँ ने महसूस किया कि वह उठ पाने में लाचार है। उसकी बग़ल में बैठती हुई अनाख़ाँ ने पूछा:

"उसने तुम्हें मारा क्यों?"

नज़ाकत जवाब दे उससे पहले उसका शौहर आँगन में आ गया।

"खुदा मुझे उठा ले," हड़बड़ी में वह बुदबुदा उठी।

छैला नारमत बतख़ की तरह मटक कर चलता था। वह क़द से छोटा, मटमैला झोल पड़ते चेहरेवाला था। उसकी आँखें फूली थीं जैसे अभी सो कर उठा हो। वह चुस्त-दुरुस्त कपड़े पहने था, नयी सफ़ेद पतलून ऊपर उठे हुए थे, बूट चमकदार।

गुस्से ने अनाख़ाँ को हिम्मत दी। अपना चचवान नीचे किये बिना उसने सीधे मर्द की आँखों में देखा और छैला नारमत क्षण भर के लिए ठिठक गया। वह कभी भी किसी खुले चेहरेवाली अजनबी औरत से अपने घर में नहीं मिला था। उसे कभी ऐसी उपेक्षापूर्ण दृष्टि का सामना नहीं करना पड़ा था।

"मुझे बताओ, तुमने अपनी बीवी को क्यों पीटा?"

छैला नारमत खिन्नता से शहतूत के ठूंठ पर बैठ गया और अपना पुरुष सम्मान बनाये रखने के लिए दूसरी ओर देखने लगा। इससे पहले कभी किसी औरत ने उससे इतनी आज़ादी और कठोरता से बात नहीं की थी।

परसों उसने बाय क़ुद्रतुल्लाह से ख़ुद इसी तरह का सवाल पूछा था: "मैं अपनी बीवी को क्यों पीटूँ?"

क़ुद्रतुल्लाह ने नज़ाकत पर अपने यहाँ काम कर रही औरतों को बरगलाने का आरोप लगाने की कोशिश की। लेकिन छैला नारमत ने यह कहते

हुए अपनी बीवी का पक्ष लिया कि वह वर्कशॉप में ही रहती है और उसका कहना मानती है।

"मैंने तुम्हें बीवी की तारीफ़ सुनाने के लिए नहीं बुलाया है," बाय ने अपने मांसल ललाट सिकाड़ते हुए कहा। "तुम अन्धे हो – वह तुम्हें धोखा दे रही है। लेकिन तुम्हें मुझ पर भरोसा रखना चाहिए, मैं जानता हूँ, उस पर विधवा रोग का कितना असर है। यही समय है, इस छूत के रोग को ख़त्म कर दिया जाये। मैंने कहा है, तुम्हें उसे ज़रूर पीटना चाहिए और जैसा मैंने कहा, तुम्हें करना चाहिए। वह तुम्हारी बीवी और मेरी भतीजी है। छड़ी लो और शुरू हो जाओ। जाओ।"

छैला नारमत दुविधा में था: लाज़िमी तौर पर उसे अपने बड़े का कहना मानना था लेकिन एकदम बिना किसी वजह के वह अपनी बीवी को पीटे तो कैसे? हाँ, कोई बहाना मिल जाये।

उसे तब बहाना मिल गया जब नज़ाकत ने बाय के वर्कशॉप के बारे में बोलना शुरू किया। उसने सचाई बयान की थी: अब बाय के लिए काम करना किसी फ़ायदे का न था जब कि सहकारिता में औरतें बहुत बुरा नहीं कमा रही थीं। सहकारिता में शरीक होने की नज़ाकत की कोई मंशा न थी लेकिन उसने बाय की शिकायत की थी। नारमत के लिए यह काफ़ी था और सवेरे-सवेरे चीखों और सुबकियों से आँगन भर उठा।

नज़ाकत को उसके शौहर ने पहले कभी नहीं पीटा था। उसने प्रतिरोध किया। इससे छैला नारमत और भड़क उठा। खुद पर क़ाबू पाने तक वह अपनी बीवी को बाय की इच्छा से भी कहीं अधिक पीट चुका था। उसने यह सोचकर खुद को सान्त्वना दी कि अन्त में इस पिटाई से सिर्फ़ उसकी बीवी को ही लाभ पहुँचेगा: उसने भयानक रोग को पीटकर उससे बाहर निकाल दिया था। औरतें कभी नहीं महसूस करतीं कि उनका लाभ किस चीज़ में है।

लेकिन इसके साथ ही उसका अन्तःकरण उसे परेशान कर रहा था। उसे अपनी बीवी के लिए दुख था और लोगों के सामने वह अच्छा नहीं महसूस करता।

वह एक कारीगर की विधवा, इस ढीठ और ख़तरनाक मेहमान को अपने घर से निकाल बाहर करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था। उसके सवाल के जवाब में उसके पास कहने को कुछ भी न था।

"तुम जवाब क्यों नहीं देते?" अनाख़ाँ ने कड़वाहट से अपना सिर हिलाते हुए पूछा। "ज़रा सोचो, तुमने किसे पीटा, किसे बेइज़्ज़त किया है? तुमने खुद को पीटा है। तुमने खुद को बेइज़्ज़त किया है। क्या तुममें दादी अंज़िरत जितनी ही समझदारी है? बेपर की बातों का यक़ीन करते हो। यह मुल्ला की शरारत है। किसके कहने में आ कर यह तुमने ऐसा किया?"

छैला नारमत चौकस हो गया। मुल्लों की शरारत। "छेड़-छाड़" क्या है? वह इसे नहीं समझ सका और इसने उसे भयभीत कर दिया। लेकिन सबसे बड़ी बात तो यह थी कि कारीगर साबिर की विधवा ने कैसे अन्दाज़ा लगाया कि यह उसने किसी और के कहने से किया? यह तो नज़ाकत भी नहीं जानती थी। अपने बचाव के लिए उसने पीछे हटने का फ़ैसला किया—इस तरह वह जाल में नहीं फँस सकेगा।

"वह मेरी जायज़ बीवी है," ठूँठ पर से तेज़ी से उठते हुए उसने धीरे से कहा। "मैं नहीं समझता किसी को हमारे बीच में आना चाहिए।"

बस अनाख़ाँ उससे इतना ही जान सकी। लम्बे डग भरता वह चला गया। इसके बावजूद जो कुछ उसके शौहर ने कहा और जिस ढंग से कहा, नज़ाकत ने महसूस किया कि वह अपना बचाव कर रहा था। वह यह नहीं जान पायी कि किस बात पर ज़्यादा अचंभा करे—अपने शौहर की बौखलाहट पर या उस औरत पर जिसने उसे बौखला दिया।

"मैं तुम्हारा शुक्रिया कैसे अदा करूँ?" वह बुदबुदायी और जैसे खुद को सही साबित करते हुए बोली: "तुम्हारे और रिज़वान चाची के बिना वर्कशॉप कितना फीका लगता है।"

"जब अकेली हो तो और भी बुरा लगता है। खुद को हम लोगों से अलग-थलग मत रखो, नज़ाकत बहन," अनाख़ाँ ने कहा। "याद रखो, तुम्हारी सहेलियाँ भी हैं।"

"क्या तुम इतनी जल्दी चली जाओगी?"

"कोई हमारी प्रतीक्षा में है।"

"तुम्हारी बेटियाँ?"

"नहीं। बहनें।"

"क्या यह सच है कि तुम अध्यक्षा हो?"

"आ जाओ थोड़ी देर के लिए। तुम खुद देख लोगी।"

"इतना ज़ोर से नहीं," नज़ाकत सावधानी से बुदबुदायी।

"नहीं, बहन, नहीं, जितनी मेरी इच्छा होगी, उतना ज़ोर से बोलूंगी।"

"गुस्सा मत करो। मुझे तुम्हारे लिए डर है।"

"लेकिन दिल से तुम ईर्ष्या करती हो," जाने के लिए तैयार होती हुई अनाख़ाँ ने कहा। "फिर भी तुम छोटी हो... और मैं एक विधवा।"

नज़ाकत उदास निगाह से दरवाज़े तक अपने मेहमान को छोड़ने आयी।

धूप पूरे ज़ोर पर थी। इस समय लोग बाज़ार से लौटने लगते और पुराने शहर की संकरी सड़कें भीड़-भाड़ से भर जातीं। मवेशी को बाज़ार से ले जा रहे थे तो दूसरा रंगा हुआ पालना ले जा रहा था। एक आदमी गधे पर उसकी दोनों ओर लदी भारी बोरियों के ऊपर अपना पूरा वज़न डाले बैठा था। छोटे-छोटे लड़के सरकण्डे की सीटियाँ बजाते इधर-उधर दौड़ रहे थे। साधनहीन घुमक्कड़ खुद को सड़क पर घसीटे चले जा रहे थे। दही की लस्सी बेचनेवाले अपने-अपने ऐरान की ज़ोरों से, अनथक तारीफ़ किये जा रहे थे – इसे बर्फ़ की तरह शीतल होने का दावा कर रहे थे। इधर-उधर ख़ानाबदोश कठपुतली नचानेवालों को देखा जा सकता था।

अनाख़ाँ खटालों को और लुहार-मुहल्ला पार कर दो पटवाले बड़े फाटक के पास रुक गयी। घर में बनाये गये एक साइनबोर्ड पर लिखा था: "लाल अक्तूबर। पुराना शहर महिला सहकारिता।" साइनबोर्ड एक बिना रंगे खंभे पर टंगा था। अनाख़ाँ जब-जब फाटक से होकर जाती, इस साइनबोर्ड को पढ़ती।

फाटक के आगे एक लम्बा-चौड़ा आँगन था। इसके आर-पार लम्बाई-चौड़ाई में रस्सियाँ फैलायी गयी थीं। आँगन के एकदम अन्दर जाकर चमकते, नये बिना रोग़न किये खिड़की के चौखटोंवाले कम ऊँचे सफ़ेद भवन थे। खिड़कियों से करघों की खड़खड़ाहट और औरतों की हंसमुख आवाज़ें आतीं।

आँगन में अनाख़ाँ ने अपनी परंजी उतारी और फाटक के नज़दीक बने हल्के-से उपरिभवन – बालाख़ाना की सीढ़ियों पर चढ़ने लगी। यहीं सहकारिता का दफ़्तर था।

साफ़िया बोरिसोवना दरवाज़े पर ही उसे मिल गयी।

"हम तुम्हारा ही इन्तज़ार कर रहे थे," उसने कहा।

साफ़िया बोरिसोवना के बच्चा हुए अभी एक ही महीना हुआ था लेकिन उसने काम करना शुरू कर दिया था। पहले-पहल सहकारिता की नर्सरी में आनेवाली उसी की बच्ची वेरा ही थी। फिर शाहिस्ता अपने बेटे को ले आयी। सहकारिता ने सबसे पहले और सबसे ज़्यादा ध्यान नर्सरी और डाइनिंग-रूम पर दिया। बहुत-सी खाटें, चादरें और बड़े-बड़े, तामचीनी के धुलाई-टब नर्सरी के लिए लाये गये और डाइनिंग-रूम को मेज़-कुर्सी से सजाया गया, प्लेटें और तश्तरियाँ लायी गयीं। यह तुरंत ही स्पष्ट हो गया कि सही काम किया गया क्योंकि सहकारिता में शामिल होनेवाली औरतें इसकी उत्साही हामी बन गयीं। यह एक अच्छी शुरुआत थी।

"नैमन्चा में क्या चल रहा रहा है?" साफ़िया बोरिसोवना ने पूछा।

"नैमन्चा उबाल खा रहा है। हमारी सहकारिता एक वास्तविकता है और यही इसका सबसे अच्छा प्रचार है। क़ुम्रि हमारे साथ शरीक हो रही है।"

"क्या उसने ख़ुद ऐसा कहा?"

"नहीं, उसने कुछ भी वायदा नहीं किया। सच तो यह है कि उसने कुछ नहीं कहा। लेकिन मैं जानती हूँ, वह आयेगी।"

"यही तो तुम्हारा कमाल है, मैं यह कभी नहीं कर पाती। तुम एक-दूसरे को समझती हो।"

"कल मैं अपने साथ रिज़वान चाची को ले जाऊँगी।"

"बिलकुल ठीक। यहाँ अपने करघे से कहीं ज़्यादा वह नैमन्चा में तुम्हारे साथ कर पायेगी। याद करो, जुराख़ाँ ने क्या कहा था: बोज़ तैयार करने में तुम ख़ुद को भूल मत जाओ, अपने आस-पास के लोगों को मत भूलो। इस समय हम कितना बोज़ बुनते हैं, यह कोई मायने नहीं रखता बल्कि हम कितनी औरतों को अपनी सहकारिता की ओर आकृष्ट कर सकते हैं।"

साफ़िया बोरिसोवना ने अनाख़ाँ के परेशान चेहरे को ग़ौर से देखा।

"अब बताओ – हुआ क्या?"

"जानती ही हो," अनाख़ाँ ने खिन्न मुस्कान से कहा। "तुम भी लोगों को समझती हो जितना मैं।"

उसने साफ़िया बोरिसोवना को "धर्मात्मा औरत" के आग्रहों, उसकी भविष्यवाणियों के बारे में मालूम हुई बातों और बेचारी नज़ाकत के साथ जो कुछ हुआ था, बताया।

"हमें ऐसी ही उम्मीद थी," साफ़िया बोरिसोवना ने कहा। "यह बचकाना काम है। इस तरह के चारे के लोभ में एकदम नादान लोग ही फँसेंगे।"

"लेकिन औरतें पिटाई से ज्यादा बदनामी से डर कर भागती हैं। नज़ाकत की ज़बर्दस्त ख़्वाहिश है लेकिन वह हमसे मिलने के लिए आने की हिम्मत नहीं कर पाती है।"

"कोई बात नहीं। सचाई देखने में हम उसकी मदद करेंगे। सुनो, अभी-अभी मेरे दिमाग़ में एक बात आयी है। अगर हम ठीक नैमन्चा में ही अपनी सहकारिता की दुकान खोलें तो कैसा रहेगा? औरतों की दुकान! ज़रा सोचो! सिर्फ़ औरतों के लिए। क़ुरान औरतों को जिस तरह बाज़ार जाने की मनाही नहीं करता, वैसे ही दुकानों में जाने से भी नहीं करता।"

दिलचस्पी से अनाख़ाँ साफ़िया बोरिसोवना के और क़रीब झुक गयी।

"मुझे विश्वास है ज़ुराख़ाँ यह मान जायेगी," साफ़िया बोरिसोवना ने आगे कहा। "औरतों की दुकान – कोई मर्द इसमें नहीं जा पायेगा और औरतें रीति-रिवाज के प्रति चौकसी बरते बिना, भयभीत हुए बिना जायेंगी। क्या यह सच नहीं? वे दुकान में अपनी सहेलियों से मिलेंगी, अपनी परंजी उतारकर आज़ादी से बिना किसी जल्दबाज़ी के बातें करेंगी। जैसे उदाहरण के लिए, हमारे बोज़ की ख़ासियत के बारे में और इसके साथ-साथ बात-बात में हमारी सहकारिता में क्या चल रहा है, इसके बारे में। ख़बरें सुनकर वे घर लौटेंगी। ज़माने से लोग कहते आये हैं कि जब कोई औरत छलनी उधार माँगने घर से बाहर जाती है, अपने साथ दो लफ़्ज़ ले जाती है लेकिन जब लौटती है पचास लेकर। क्या उज़्बेकों में ऐसा नहीं कहते? लाज़िमी है, हम भी इसके साथ बैठे-ठाले नहीं रहेंगे। दुकान में औरतें तुमसे, मुझसे और ज़ुराख़ाँ से मिलेंगी। बच्चों को कैसे नहाया जाये, इसके बारे में हम बतायेंगे और इश्तेहार व तस्वीरें टाँगेंगे। सब कुछ ठीक से समझाने के लिए हम एक विक्रेतृ ले आयेंगे। क्या मेरी बात समझ रही हो?"

"साफ़िया, मेरी जाँ, तुम बेहद अक़्लमंद हो। कितनी होशियार!"

"तुम्हारे ख़्याल में विक्रेतृ के लिए हम किसे बहाल करें ?"

"हाजिया," अनाख़ाँ ने बेहिचक कहा। "वह अच्छी लड़की है और क्लब में लिखना-पढ़ना सीख गयी है। अब वह मुझसे एर्गश के लिए ख़त नहीं लिखवाती। वह ख़ुद लिखती है।"

"क्या वह बहुत छोटी नहीं ?" साफ़िया बोरिसोवना ने सन्देहपूर्वक कहा।

"अपने काम में हम सब छोटे ही हैं !" अनाख़ाँ ने ज़ोरों से कहा। "अगर बहन जुराख़ाँ मुझ पर निर्भर कर सकती है तो मुझे हाजिया पर करना ही चाहिए।"

साफ़िया बोरिसोवना ने स्नेहपूर्वक अनाख़ाँ के ललाट पर आ गये बालों को सँवार दिया।

"तुम इतनी बदल गयी हो, अन्या, कि मैं तुम्हें शायद ही पहचान सकती हूँ।"

"साफ़िया बहन, तुमने खुद कहा था – सहकारिता में एक दिन बन्द मकान में जीवन भर रहने के बराबर है।"

वे एक-दूसरे को देखकर मुस्कुरा पड़ीं और साथ-साथ सहकारिता के वर्कशॉप में चली गयीं।
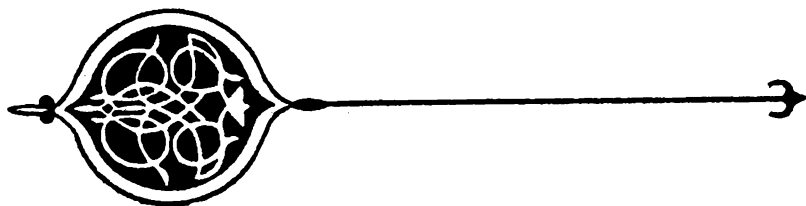
नौवाँ भाग

कुछ समय से नईमी क़ुद्रतुल्लाह के घर सिर्फ़ रात होने पर ही दिखाई देता। किसी को बाय की दरियादिल मेहमाननवाज़ी और जाति की नियति व इस्लाम के बारे में उसके और उसके मित्रों से होनेवाली सनसनीख़ेज़ बातचीत से इनकार करना एकदम मुश्किल था लेकिन सावधानी तो बरतनी ही चाहिए। अब नैमन्चा में बहुत से ऐसे लोग थे जो बाय की कुछ भी परवाह नहीं करते और उससे वास्ता रखनेवाले किसी भी व्यक्ति को सन्देह की दृष्टि से देखते थे।

बाय के घर में भी दिन-ब-दिन उदासी बढ़ती जाती। आदरणीय क़ुद्रतु-

ल्लाह्-ख़्वाजा तुनकमिज़ाज हो गये। वह कंजूस और विड़चिड़े हो, धीरे-धीरे अपने प्रशंसकों का रुझान खोने लगे।

विधवा अनाख़ाँ की बेटी से नुस्रतुल्लाह की शादी करने का अजीबो-ग़रीब विचार जिस पर सुखट्टा मख़सूम तक ने शक ज़ाहिर किया था, बाय के लिए फज़ीहत का मामला बन रहा था। पता नहीं इस मुनाफ़े की शादी की अफ़वाहें विधवा तक पहुँची या नहीं, वह तो स्वाभाविक रूप से अपना काम किये जा रही थी। घमंडी बाय सगुन को टाले जा रहा था जबकि वह अपने काम में मग्न थी। नैमन्चा के भूतपूर्व मालिक ने खुद को मज़ाक़ बना लिया था। पीठ पीछे दोस्त उसका मज़ाक़ उड़ाते लेकिन वह कर ही क्या सकता था।

अपनी आदत के मुताबिक़ नुस्रतुल्लाह ग़ाफ़िल रहा। वह खुद को दूल्हे के ख़्यालों में डुबोये मज़े उड़ाता रहा और सुखद कुंवारेपन को पीकर काटता हुआ एक सुखदतर जीवन – एक पारिवारिक व्यक्ति के जीवन की तैयारी करता रहा। हाजरबिबि ने भी खुशी-खुशी अपने बेटे की शादी हो जाने की उम्मीद नहीं छोड़ी जिससे वह शान्तिपूर्वक मर सके। छिपे-छिपे उसने सगुनियों को तैयार भी कर लिया था और दुल्हन के घर उन्हें भेजने में देर थी तो बस, शौहर की इजाज़त मिलने भर की। लेकिन बाय और खिन्न होता जा रहा था।

एक दिन शाम को देर गये जब नईमी घर पर ही था बाय के दीवान-ख़ाने की दहलीज़ पर सुखट्टा मख़सूम हाज़िर हुआ और अपने मालिक की ओर किसी मार खाये कुत्ते की तरह दया और बहती हुई आँखों से देखने लगा।

"हाँ, तो? और क्या?" क़ुद्रतुल्लाह ग़ुस्से के मारे आपे से बाहर होता चीखा।

"मालिक, मेहरबानी करके ग़ुस्सा मत हों। हमारे वर्कशॉप में बची-खुची सात औरतों में से आज सिर्फ़ दो काम पर आयीं।"

"क्या! क्यों?"

"मालिक, वह चुड़ैल क़ुम्रि उन्हें अपने साथ महिलाओं की सहका-रिता में ले गयी।"

बाय अपना सिर थामे और तकिये पर गिर पड़ा। उसकी शेख़ी जाने कहाँ चली गयी थी! मेहमानों के सामने अपनी भावनाएँ प्रकट करने में भी उसे कोई झिझक न हुई।

सुखट्टा मख़सूम अपने दुखी चेहरे से जो कुछ हुआ उसके लिए अपार

दुख जताता, सारा दोष अपने कन्धों पर लेने के लिए तत्परता प्रकट करता दहलीज़ पर खड़ा था।

"तुम मुँह फाड़े क्या कर रहे हो?" क़ुद्रतुल्लाह फिर उस पर हुँकार उठा। "काम ख़त्म करो। अपने मेहरबान का भी क़िस्सा तमाम कर दो।"

"मुझसे ख़फ़ा मत हों, मालिक। पहले तेशिक्कोप्कोक से एक आदमी आया फिर चारबाज़ार से एक लड़का। उनका कहना है, दुकानों में कुछ नहीं बिक रहा। पिछले कुछ दिनों में उन्होंने बोज़ का अर्शिन* भी नहीं बेचा। और आपका दुकानदार मतग़ाज़ि दुकान छोड़कर सहकारिता में काम करने चला गया..."

"बस, बस। दफ़ा हो जाओ!" अपने मुक्के हिलाता बाय उछल खड़ा हुआ। "नमकहराम कमीनो!"

पीछे खिसकता, सिर झुकाता सुखट्टा मख़सूम विनयपूर्वक चला गया। उसके जाते ही क़ुद्रतुल्लाह अपनी पीठ झुकाकर चुप हो गया। फिर हिम्मत हारते हुए बुदबुदाने लगा:

"कुछ नहीं बचा। मैं ख़त्म हो गया, भाई महमूद-ख़्वाजा।"

अपने मेज़बान को ढाढ़स देने के लिए कोई शब्द न पा, गावदी की तरह नईमी हाथी दाँत के मूठवाली अपनी छड़ी से खेलता रहा।

"इसका मतलब है ख़ात्मा। तुम्हारा बाय क़ुद्रतुल्लाह ख़त्म हो गया, मेरी बात सुनते हों, मुस्लिमो?" क्षण भर के लिए बाय की उदास आँखों में भूतपूर्व दर्प चमक उठा।

लेकिन मुसीबतें अकेली नहीं आतीं। वे इकट्ठी आती हैं...

दरवाज़ा भड़ाक से खुला और नुस्रतुल्लाह सहसा कमरे में घुस आया। उसके सिर पर टोपी न थी, आँखें पथरायी थीं, सीने से क़मीज़ फटी थी। वह मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था। उसके चेहरे और सीने से पसीने की धार फूट रही थी।

"अब्बा," उसने रुँधी आवाज़ में मुश्किल से अपनी हिला देनेवाली सुबकियों पर क़ाबू पाते हुए कहा, "मैं अपनी दुल्हन हार गया ..."

मोती की सीपी और लाल, श्वेतकण्ट के मनकों की लड़ी बाय के हाथों से छूटकर फ़र्श पर गिर पड़ी और बाय के पीले बूटों की ऊँची

---

* अर्शिन – ०,७११ सेंटीमीटर।

एड़ियों के नीचे मसली जाकर चरमरा उठी। लड़खड़ाता, सिर पीटता नुस्रतुल्लाह अपने बाप के आगे जाकर साथ लगे कमरे के दरवाज़े को न जाने अपने माथे या घुटने के धक्के से खोल फ़र्श पर लोट गया।

"आह-ह्! काले साँप, कनकटे कुत्ते!" नुस्रतुल्लाह गुर्राया।

सूखे ख़रबूज़े-सा चेहरा बनाये, आँसू बहाती हाजरबिबि कमरे में दौड़ी आयी।

"दफ़ा हो यहाँ से।" बाय उस पर चीख पड़ा।

ख़ामोशी से माँ दरवाज़े की आड़ में छिप गयी। नईमी उसके पीछे-पीछे जाकर उसे औरतों के कमरे तक ले गया और यह कहते हुए उसे दिलासा दिया कि नुस्रतुल्लाह ने बस पी रखी है, कोई बड़ी बात नहीं, अच्छी नीन्द उसे ठीक कर देगी...

नईमी आशंकित दीवानख़ाने में लौटा और बाय को दयनीय मुद्रा में घबड़ाया-सा उकड़ूं बैठे देखा।

"भाई महमूद-ख़्वाजा, जल्दी उसके पास जाओ। उसे बिलखते सुन रहे हो? खुदा न करे कोई सुन ले। क्या मुझे विधवा से ज़लील होने में कोई क़सर रह गयी थी जो मेरा बेटा पूरी कर रहा है! मेरी मदद करो, प्यारे भाई! उसे चुप करो। मना करो। अगर लोगों को पता लग गया: मैं बाहर मुँह दिखाने क़ाबिल नहीं रह जाऊँगा।"

नईमी ने सावधानी से साथवाले कमरे की दहलीज़ पार की।

बाय का बेटा चीख-पुकार से बेबस और भारी हुआ मुंह के बल क़ालीन पर पड़ा था। नईमी ने हल्के से अपनी अंगुली से उसके कन्धे को छुआ।

"शान्त हो जाओ, मेरे अज़ीज़। जो खो गया, उसे लौटाया नहीं जा सकता। जवानी में कुछ भी हो सकता है। आओ, उठो..."

"जवानी में? मैं दिखाऊँगा, वह कितना जवान है, कलमुँहा बदमाश। मैं उसका जूता उसी के सिर लगाऊँगा।"

"धमकियों की कोई ज़रूरत नहीं। तुम बहुत थके हो। हम इस मामले को रफ़ा-दफ़ा करने की कोशिश करेंगे। सब कुछ ठीक हो जायेगा। वह खुशक़िस्मत था, इसका कोई चारा नहीं।"

"खुशक़िस्मत? हम देखेंगे। आप देखेंगे, कौन किसकी खाल उधेड़ता है।"

अनचाहे, नईमी हिचकिचा उठा। उसे अपनी टाँग किसी नाखुशगवार, ख़तरनाक मामले में फँसती महसूस हुई।

"मेरे अज़ीज़, होश में आओ। तुम अपनी अक़्ल खो बैठे हो। क्या यह समय इतनी असावधानी, इतने उतावलेपन से काम करने का है? मेरी बात सुनो और अपने दिमाग़ से यह भोंडी—अरे दो—बेकार की बेवकूफ़ी निकाल फेंको। अपना मुँह बन्द रखो और थोड़ा सब्र करो। किसी न किसी तरह हम यह मामला ठीक कर लेंगे।"

नुस्रतुल्लाह शैतानी हँसी हँस पड़ा।

"आप कलूटे क़ुलमत को नहीं जानते। आप कहते हैं, ठीक कर लेंगे... हम टॉफी के काग़ज़ों के लिए नहीं खेलते। वह आयेगा और मुझे उसका सामना करना है।" अपनी काँपती अंगुलियों से नुस्रतुल्लाह ने फ़र्श पर बिछे नमदे के नीचे टटोलना शुरू किया और काले-म्यानवाला एक कटार झटके से निकाल लिया। "आने दो उसे लेकिन अच्छा हो वह अपने लिए कफ़न भी साथ लेता आये। अज्राइल की तरह, अपने नाख़ूनों से मैं उसका सीना काढ़ लूँगा।"

नईमी तेज़ी से बुदबुदाता, चौंककर पीछे हट गया:

"क्या—तुम क्या कह रहे हो—मेरे अज़ीज़, तुम्हारा मतलब क्या है? अपने माँ-बाप को तो बख़्शो। क्या मुसलमान ऐसे ही करते हैं? तुम्हें इसके बारे में सोचना भी नहीं चाहिए। सच्चे आदमी एक-दूसरे से ऐसे पेश नहीं आते। इसके अलावा, अगर बात इतनी ही बढ़ गयी है, खुदा ख़ैर करे, अगर वह लड़की को ले जाना चाहता है तो उसे ले जाने दो। इससे पहले कि किसी को पता लगे। इससे पहले कि कोई टंटा खड़ा हो। और बात यहीं ख़त्म हो जायेगी।"

नुस्रतुल्लाह ने अपनी पूरी ताक़त से कटार क़ालीन में दे मारा।

"मैं उसे नहीं ले जाने दूँ। वह उसे ज़िन्दा कभी नहीं ले जायेगा। वह उसे मुर्दा मिलेगी। न मुझे मिलेगी न उसे।"

हक्का-बक्का नईमी ने अपना मुँह ऐसे फाड़ लिया जैसे साँस लेने में कष्ट हो रहा हो। जितना उसने सोचा था, मामला उससे कहीं बदतर है। उसे चम्पत हो जाना चाहिए और जितनी जल्दी, उतना अच्छा।

खुशक़िस्मती से नुस्रतुल्लाह जल्दी ही ढीला पड़ गया। उसके माँसल

मुंह के कोनों पर झाग दिखाई देने लगा। अपनी आँखें बन्द किये, हाथ-पाँव फैलाये वह क़ालीन पर पड़ गया।

"यह ठीक है, बहुत ठीक। तुम कल के लिए तरोताज़ा हो जाओगे," उसने शहद भरी आवाज़ में इतने ज़ोर से कहा जिससे दूसरे कमरे में सुनाई पड़े और जल्दी से दबे पाँव दरवाज़े पर आ गया।

बाय उसी की प्रतीक्षा कर रहा था।

"क्या बना? उसके दिमाग़ में कुछ काम की बात डाल सके?"

"वह सो रहा है। खुदा की मेहरबानी हुई तो कल तक ठीक हो जायेगा।"

"उसे हुआ क्या था, पागल हो रहा था?"

"कुछ नहीं, कुछ नहीं। सब कुछ ठीक हो जायेगा," नईमी ने चापलूसी भरी आवाज़ में कहा। "कल सबसे पहले, मैं चाय-विक्रेता से बात करूँगा। मेरा ख़्याल है वह ठग क़ुलमत को जानता है। इसके साथ ही आपको भी अपने बेटे से साफ़-साफ़ बात करनी है। वह निराश है। मुझे सच में लड़के के लिए अफ़सोस है।"

एक मिनट बाद ही नईमी अपने पीछे बाय के घर का दरवाज़ा बन्द कर रहा था। लेकिन दस क़दम आगे जाने के बाद ही उसने राहत की साँस ली।

उसका चाय-विक्रेता के यहाँ जाने का तनिक भी इरादा न था। इन सबसे जितनी दूर रहा जाये, उतना ही वह बचा रहेगा। ख़ुदा ख़ैर करे। उन्होंने तो उसे डरा ही दिया था। इन लोगों से मुसीबत के अलावा और किसी चीज़ की उम्मीद नहीं की जा सकती। किसी भी क्षण वे तो डूब ही सकते हैं, दूसरे को भी अपने साथ ले डूबेंगे।

अब किसका सहारा ले वह? अब कम से कम गोपनीय बातों के लिए वह कहाँ आश्रय पा सकता है? क्या शहर में कोई ऐसा भी बचा है जो शिक्षक नईमी के संजोये सपनों से हमदर्दी जताये? विशाल मुस्लिम तुर्किस्तान के सपने। और क्या ऐसी ताक़तें भी हैं जो इन सपनों को साकार कर सकें?

गली अंधेरी और सुनसान थी। नईमी मुश्किल से पेड़ों, मकानों और दीवारों में भेदकर पा रहा था। हवा का कोई झोंका न था, यहाँ तक कि खरखराहट भी नहीं। पैरों की आवाज़ तक नहीं सुनाई पड़ती।

किसी चीज़ ने शिक्षक को मुड़कर देखने पर मजबूर कर दिया। उसने अपना सिर घुमाया और जो कुछ देखा उसके पाँव काँप उठे, एक आदमी निःशब्द उसकी बग़ल में चल रहा था।

कलूटा क़ुलमत...

बेचारा शिक्षक खरहे की चुस्ती से एक ओर उछलकर हो गया और हाथी दाँत के मूठवाली अपनी छड़ी को अपने सामने कर लिया।

"डरो मत। मैं तुम्हें घर तक छोड़ दूँगा," उस आदमी ने फ़ब्ती कसी और आवाज़ से नईमी ने चाय-विक्रेता को पहचाना।

शिक्षक ने अंधेरे में झाँका। सच में यह क़ुलमत नहीं था। किसी को अंधेरें में बस वहम न हो...

"आदाब अर्ज़ है। कहते हैं जब कोई डरा हो अपनी परछाँई को भी मौत का फ़रिश्ता समझता है," नईमी ने शिष्टता से राय ज़ाहिर की। "आज मैं आपको ही ढूंढ़ रहा था, मुहम्मद सईद साहिब।"

"और मैं आपको ढूंढ़ रहा था, मास्टर साहिब। क्या अनोखा संयोग है," चाय-विक्रेता ने उसी लहजे में जवाब दिया।

नईमी ने अपने पर नियंत्रण पा लिया। यह भय से पैदा अपने ढंग का विशेष आत्म-नियंत्रण था। वह बेलगाम बातूनी हो उठा। बाय के बेटे ने क्या किया। कैसा बेमुनासिब और नागवार तमाशा खड़ा किया और किस तरह एक जाने-माने अतिथि को जो सम्मानित चाय-विक्रेता का अच्छा दोस्त समझा जाता है, धमकाने की हिम्मत की – इन सब का उसने बखान किया।

"नौजवान, साहिब मेरे," चाय-विक्रेता ने सर्द लहजे में जवाब दिया। "आप इसमें कुछ नहीं कर सकते। उसे खुद अपना दिल बहलाने दीजिए।

"लेकिन वह बेवक़ूफ़ लड़की को मार डालेगा।"

"दूसरों की तरह वह भी एक लड़की है। वह उसके साथ क्या करता है, यह उसका मामला है।" चाय-विक्रेता ने बेलाग जवाब दिया। "इससे आपको या मुझे क्या? क्या आप इस बारे में कुछ कहेंगे? नहीं। बस, बात यहीं ख़त्म। क्या ऐसा नहीं?"

शिक्षक ने बातचीत में आयी मोड़ को पसन्द किया। उसने उत्साह से सिर हिलाया।

"मुझे उम्मीद है," चाय-विक्रेता ने कहा, "आपने उसे मना करने

की कोशिश नहीं की? नौजवानों के पागलपन में पड़ने में क्या अक़्लमन्दी है?"

"खुदा न करे। बेशक। बस समय बर्बाद करना होगा।"

चाय-विक्रेता व्यंग्य से मुस्कुरा उठा। नईमी को उसके काले चेहरे में दाँतों की चमक मिल गयी। फिर चाय-विक्रेता ने विनयपूर्वक शिक्षक का हाथ थाम, उसे अंधेरी गली में सावधानी से साथ-साथ ले चलते हुए कहा:

"दूसरी ओर आप मानेंगे कि हमारे ज़माने में चाक़ू मारना बिरले ही होता है। कोई नौजवान इस शानदार हथियार को चलाना जानता है तो वह इज़्ज़त के क़ाबिल है। और ठीक निशाने पर वार होते देखना ज़रूर मायने रखता है। क्या आप ऐसा नहीं समझते?"

नईमी के पैर फिर काँपने लगे लेकिन चाय-विक्रेता ने उसे कोहनी से कसकर थाम लिया। अजनबी लगातार ज़रूरत से ज़्यादा शिष्टता बरत रहा था।

"अब मुझे बताइये, मेरे मास्टर साहिब, अगर मैं ग़लती नहीं कर रहा हूँ तो उसने अभी हाल से ही आपके स्कूल में आना शुरू किया है?"

"आपका मतलब किस से है?" नईमी ने निःशब्द लम्बी साँस ली।

"अगर मैं ग़लती नहीं कर रहा हूँ," चाय-विक्रेता ने दुहराया, "वह अपनी माँ की परंजी पहनती है। क्या आपकी नज़र इस पर नहीं पड़ी? शाम को झुटपुटे में माँ-बेटी में फ़र्क़ करना मुश्किल है।"

नईमी धक् से रह गया, अपने आस-पास देखा और अपनी कोहनी झटके से छुड़ा लेनी चाही। लेकिन चाय-विक्रेता ने जैसे शिकंजे में जकड़ रखा था।

"बस, बस," उसने शान्तिपूर्वक हँसते हुए कहा। "महिला विद्रोह के सूरमा! मैंने भी महिला क्लब में आपकी नामवरी के बारे में सुना है। सच कहूँ तो मैंने कभी आपसे इस तरह की चीज़ की उम्मीद ही नहीं की थी। लेकिन हम शब्दों की क़ीमत आँकना जानते हैं जब वे काटते हों। आप जानते हैं, मुझे हर तेज़ चीज़ से प्यार है।"

"मैं-मैं-नहीं चाहता कि..." नईमी ने दृढ़ता से कहना चाहा जो उसके लिए असामान्य बात थी।

"समझता हूँ, समझता हूँ," चाय-विक्रेता ने उसे भलामानस-सा रोक दिया। "आप अपनी ओर ज़्यादा ध्यान आकृष्ट नहीं कराना चाहते। आप

नहीं चाहते लोगों को मालूम हो आप क्या हैं और इससे भी ज़्यादा कि लोगों को याद न आये, आप कौन थे। आप एकदम ठीक भी हैं। दरअसल इसकी जरूरत भी क्या है? आपकी ही तरह मैं भी, यक़ीन कीजिए, इस बारे में बात नहीं करना चाहता। मैं फिर कभी आपकी याद्दाश्त को नहीं झकझोरूँगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, इसके लिए मुझमें काफ़ी महारत है। कुल मिलाकर, मैं आपको एक दोस्त के नाते पसन्द करता हूँ।"

शिक्षक ढीला पड़कर अपनी छड़ी पर भारी मन झुक गया।

"हमें अपने दोस्तों को प्यार करना चाहिए," चाय-विक्रेता ने झिड़की भरे लहजे में आगे कहा। "आप मुझे आज क्यों ढूंढ़ रहे थे, याद कीजिए। बेशक, आप एक दुखी बाप को, हमारे एक मित्र की मदद करना चाहते थे। बहुत खूब। नेक काम। आइये, धर्मभीरु होने के नाते हम उसकी मदद करें।"

नईमी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसका स्वभाव फूंक-फूंककर चलने का था और अगर वाजिब न हो तो बहसों से वह कन्नी काट जाता।

"कल शाम स्कूल के बाद," चाय विक्रेता ने मुलायम लहजे में आगे कहा, "अगर मुझे सही-सही याद है तो आप अपनी साहित्यिक मण्डली बुला रहे हैं? हाँ, हाँ, कल शाम को, अब मुझे याद आ गया। इत्तफ़ाक़ से पाठ तो देर तक खिंच ही जायेगा। क्यों नहीं, होगा ही। लड़की ज़्यादा से ज़्यादा देर होने पर घर लौटे। नहीं तो यह कैसे हो सकता है।"

"मैं-मैं ..." नईमी फिर बुदबुदाया।

"अजी साहिब," चाय-विक्रेता ने फिर इत्मीनान कराते हुए कहा, "धरती पर सब कुछ खुदा पर निर्भर करता है। क्या कोई सच्चा मुसलमान उसके काम में अड़चन डालने की हिमाक़त करेगा? तिस पर आप दयालु, पुराने शिक्षक ठहरे। आपका फ़र्ज़, आपका काम उत्साह के साथ, इस प्रेरणा के साथ पाठ और मण्डलियाँ चलाने का है कि अपने श्रोताओं के दिल जीत लें और वे अपनी सीटों पर जमे रहें। इसके लिए आपको कौन डाँट-फटकार सकता है? बाक़ी बातों से – सभी तरह की अफ़वाहों, जाँच-पड़ताल, पूछ-ताछ – हमें क्या मतलब। क्या आप इस बारे में कुछ कहना चाहेंगे? नहीं।"

आख़िरकार चाय-विक्रेता ने नईमी की कोहनी छोड़ दी।

जब दयालु पुराने शिक्षक ने थोड़ा-बहुत अपने आप में आकर चारों

ओर देखा तो खुद को गली में अकेले पाया। वह अपने घर से थोड़ी ही दूर पर था। यह भी चारों ओर से बाय के घर की तरह ही सुनसान, स्तब्ध और अन्धेरा था।

"मैंने इस बारे में कुछ कहा? नहीं," नईमी रात की शीतलता में काँपते हुए बुदबुदाया।

* * *

उस रात नईमी एक झपकी भी नहीं ले पाया और सवेरा होने से बहुत पहले ही क़ुद्रतुल्लाह के यहाँ दौड़ पड़ा। शिक्षक को डर था, कहीं देर न हो जाये। वह बाय के यहाँ उसके लड़के को अपनी बेहूदी सनक भरी योजनाओं को त्याग देने के लिए मना करने दृढ़ संकल्प से गया था।

नईमी और नुस्रतुल्लाह नौजवानों के लिए बनाये गये छोटे-से मकान में सबसे अलग-थलग जा बैठे। क़ुद्रतुल्लाह ने अपनी बीवी को कड़ाई से उन्हें तंग करने के लिए मना कर दिया। वह ख़ुद खिसक आया। बाय को शिक्षक पर पूरा भरोसा था: वह लड़के के कान बक-बक से इस तरह भर देगा कि वह कब खेला था, किसे हारा था और यह सब दुनिया के किस कोने में हुआ था – सब कुछ भूल जायेगा।

नुस्रतुल्लाह वोद्का की एक बोतल से सुड़कता रहा। सन्दूक़ के पीछे उसने दूसरी रख छोड़ी थी। यह उसकी शादी के लिए जमा माल का हिस्सा थी। यह मानते हुए कि कभी-कभी मदहोश भेजे में काम की बात घुसाना आसान होता है, नईमी ने उसे नहीं रोका।

अजीब तो यह था कि नईमी ने खुद पी नहीं थी और अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए कृत-संकल्प भी था, उसकी जीभ लड़खड़ा रही थी। उसने ख़ुद को चाय-विक्रेता के शब्द याद करते पाया: "हमारे ज़माने में चाक़ू मारना बिरले ही होता है... धरती पर सब कुछ ख़ुदा पर निर्भर करता है... बेशक, आप एक दुखी बाप की, हमारे एक-से दोस्त की मदद करना चाहते हैं..." पूरी कोशिश के बावजूद वह इन शब्दों को अपने दिमाग़ से निकाल-बाहर नहीं कर सका था। ख़ुदा गवाह है, जो कुछ वह कहने आया था, वह नहीं कह पा रहा था। शिक्षक ने जवान आदमी के सम्मान के बारे में कहा अपनी इच्छा के विरुद्ध। कभी-कभी तो उसे ख़ुद अपनी वाक-पटुता पर अचंभा होने लगा। उसकी बातें अत्यन्त आवेगमय

और उल्लासपूर्ण थीं। उसने अब कितने थोड़े सच्चे, इज़्ज़त के लिए मर-मिटनेवाले लोग इस धरती पर रह गये हैं, किसी भी क़ीमत पर किस तरह एक मुसलमान को, मुसलमान के बेटे को अपनी इज़्ज़त क़ायम रखनी चाहिए और बात ही बात में मुसलमान की दुल्हन किस तरह की परंजी पहनती है, बता दिया।

इस बार नुस्रतुल्लाह ने नईमी की बात ग़ौर से सुनी। कभी-कभार ही उसने मदहोशी में अपने दुश्मनों को लानत भेजी, बंद पिंजड़े में जंगली जानवर की तरह कमरे में अपना चाक़ू निकालकर कूदा-फांदा।

अन्त में, पूरी तरह थककर, अपनी मजबूरी और होनी के निरालेपन से हतोत्साहित शिक्षक नईमी क़ुद्रतुल्लाह के घर से विदा हो गया।

बाय कृतज्ञतापूर्वक दरवाज़े तक अपने दोस्त को छोड़ने गया और अपने बेटे को ख़ुद कुछ पैसे दे कर अपनी ख़ुशी ज़ाहिर की।

नुस्रतुल्लाह रात होने तक पीता रहा और माँ-बाप दोनों उसे समझ रहे थे: उसे अपना ग़म ग़लत करना था।
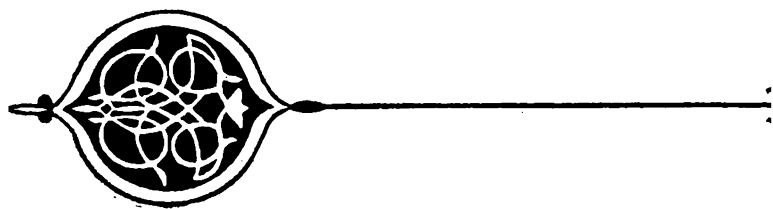
दसवाँ भाग

उस शाम तुर्सुनाय क्लब में गानेवाली थी जो रेलवे कर्मियों के लिए एक संगीत-गोष्ठी पेश कर रहा था। बशारत संगीत-गोष्ठी में जाना और अपनी बहन का गाना सुनना चाहती थी लेकिन शिक्षक ने साहित्यिक मण्डली के पाठ से उसे छुट्टी नहीं दी। तो भी किसी न किसी तरह बशारत तुर्सुनाय के मंच पर आने के ऐन मौक़े पर क्लब में पहुँच ही गयी। बेचारी माँ, साफ़िया चाची और यफ़ीम चाचा सच्ची अदाकारा की तरह किस तरह तुर्सुनाय की वाहवाही हुई, यह सुनने के लिए वहाँ मौजूद नहीं थे।

संगीत-गोष्ठी के बाद अब्दुसमत ने तुर्सुनाय को छोटा लेकिन खूबसूरत गुलदस्ता भेंट किया।

"कोम्सोमोल सेल की ओर से," उसने कहा। "बिना किसी ग़ैर-हाज़िरी के फ़ैसला सर्वसम्मति से हुआ। हम आपको यह मंच पर ही देना चाहते थे लेकिन आप भाग गयीं। सवाल यह है कि इतने समय तक आप कहाँ छुपी रहीं।" उसने अपना हाथ इतने जोश से हिलाया कि उसकी क़मीज़ में लगे अनगिनत बेज झंकार कर उठे।

तुर्सुनाय घबड़ाकर सुर्ख़ हुई, अपना सिर नीचे लटकाये थी – रंगीन फ़ीतों से गुंथी उसकी लम्बी चोटियाँ घुटनों तक पहुँच रही थीं! बशारत ईर्ष्या से सुर्ख़ थी! ज़रा सोचिये, अब्दुसमत ने कहा था: "कोम्सोमोल सेल की ओर से।"

"सच तो यह है, बूढ़े प्रोफ़ेसर खुद आपको ढूंढ़ रहे थे," अब्दुसमत ने आगे कहा।

तुर्सुनाय उल्लसित हो उठी।

"अरे, कहाँ हैं वह?"

"घर चले गये। उन्होंने आपको अपने पास बुलाया है।"

"वह बहुत अच्छे बुजुर्ग आदमी हैं," तुर्सुनाय ने कहा। "मैं उनके घर गयी थी। उनके पास एक बड़ा, काला दस्ती बाजा है और उन्होंने मुझे बहुत अच्छी तरह बजाकर सुनाया था। जब जवान थे, वह गायक भी थे। सब उन्हें जानते थे, जहाँ यफ़ीम चाचा रहते थे, उस शहर में उन्होंने गाया था, जब ज़ार मौजूद ही था। फिर वह बीमार पड़ गये। डॉक्टर ने उनके गले का इलाज करके उन्हें ठीक कर दिया। लेकिन अब वह गा नहीं सकते थे। मुझे यह बताते-बताते वह रो पड़े थे और मुझे उनके लिए बहुत अफ़सोस हुआ। उन्होंने मुझसे कहा: 'बेटी, अपनी आवाज़ का ख़्याल रखो। यह तुम्हारे पास सबसे प्यारी चीज़ है – तुम्हारे लिए और दूसरे लोगों के लिए भी...' उन्होंने मुझे बताया कि एक बहुत बड़ा शहर है और उस शहर के केन्द्र में एक बहुत बड़ा थिएटर है – दुनिया में सब से बड़ा। उस थिएटर में सिर्फ़ गीत गाये जाते हैं... अदाकार बातें नहीं करते, वे सिर्फ़ गाते हैं... मैं उसका नाम भूल गयी हूँ।"

"अरी बेवक़ूफ़ लड़की, जिसके बारे में तुम कह रही हो, वह थिएटर नहीं, संगीत-गोष्ठी है," बशारत ने यह जताने की इच्छा से कि उसे भी कुछ मालूम है, कहा।

"नहीं, यह थिएटर है। बुजुर्ग ने यही कहा था," तुर्सुनाय ने विरोध

किया और अपनी बात का वज़न बढ़ाने के लिए बोली: "मैं भी स्कूल में पढ़ूंगी। और मैं भी एक कोम्सोमोल बनूंगी!"

"लेकिन क्या वे तुर्सुनाय को कोम्सोमोल में स्वीकार करेंगे?" बशारत ने तेज़ी से अब्दुसमत से पूछा।

"क्यों नहीं?"

"साफ़िया चाची ने तो कहा कि कोम्सोमोलों को कारख़ाने बनाने चाहिए, दुश्मनों के ख़िलाफ़ युद्ध करना चाहिए। लेकिन तुर्सुनाय तो गायेगी। सब काम करेंगे, निर्माण करेंगे, लड़ेंगे और वह सिर्फ़ गीत गायेगी?"

अब्दुसमत हँस पड़ा।

"गीतों के बिना लोग न काम, न लड़ाई कर सकते हैं। वे उनके बिना नहीं रह सकते।"

"एक ही बात है," बशारत ने हठपूर्वक कहा, "मैं उस बुज़ुर्ग आदमी की तरह रोना नहीं चाहती। मैं माँ, साफ़िया चाची और ज़ुराख़ाँ चाची की तरह बनना चाहती हूँ। मैं लड़ना चाहती हूँ।"

लड़कियों और नौजवानों के चहरों पर अपने लिए पसन्दगी महसूस करके बशारत ने आगे कहा:

"माँ की सहकारिता में एकदम वैसा कुछ नहीं होता जैसा क़ुद्रतुल्लाह के वर्कशॉप में होता था। माँ की सहकारिता में औरतें अच्छी तरह मिल जुलकर रहती हैं और रेलवे मरम्मत-खाते के मज़दूरों की तरह वे सुखी हैं। आपके ख़्याल में ऐसा क्यों है? इसका कारण यह एकदम नहीं कि वे गीत गाती हैं बल्कि यह कि वे संघर्ष करती हैं और अब वे भी मेहनतकश वर्ग का अंग हैं।"

अब्दुसमत ने अपने दोस्तों से निगाहों का आदान-प्रदान किया।

"सुनो, बशारत," उसने कहा, "तुम्हारे लिए हमारे पास एक महत्वपूर्ण काम है। यह बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन हमारा ख़्याल है, तुम इसे कर लोगी।"

बशारत एकबारगी ख़ुशी से दमक उठी।

"मेरे लिए? एक महत्वपूर्ण काम?"

"मैं तुम्हें एक छोटी-सी किताब दूंगा लेकिन इसमें वे सारी बातें हैं जिन्हें एक कोम्सोमोल को ज़िन्दगी भर याद रखनी चाहिए।"

अपनी जेब से अब्दुसमत ने माचिस की डिबिया जितनी एक नन्हीं-सी किताब निकाली – कोम्सोमोल के नियम।

"पहले इसे खुद पढ़ो। जो समझ में न आये, पूछो, हम तुम्हें समझा देंगे। फिर अपने स्कूल की लड़कियों को पढ़कर सुनाओ और समझाओ। जो भी सुनना चाहे, सुनने दो। कोम्सोमोल की नगर समिति से एक आदमी तुम्हारे पास भेजा जायेगा। अगर उन्होंने मुझे भेजा, मैं आ जाऊँगा। और हम तुम्हारे स्कूल में एक कोम्सोमोल सेल क़ायम करेंगे। यह काम तुम्हारे ज़िम्मे है।"

बशारत ने दोनों हाथों से उस नन्ही किताब को थाम लिया।

"मैं इसे कंठस्थ कर जाऊँगी।"

अब्दुसमत ने लड़की की ओर अपना हाथ बढ़ा दिया। बशारत अपनी बहन की ओर गर्व के साथ देखा। वह अब उसके लिए उतनी ही खुश थी जितना अपने लिए।

बहनें जल्दी-जल्दी घर लौट पड़ीं।

शाम के समय सड़क की धूल ठंडी पड़ जाती और उस पर नंगे पाँव चलना बड़ा अच्छा लगता।

गुलदस्ता, हल्की चट्टियाँ जिन्हें तुर्सुनाय हाथ में ले जा रही थी और उसकी चोटियों के फीते – सारी चीज़ें उसे क्लब में दी गयी थीं। माँ को दिखाने के लिए उसके पास निश्चित रूप से कुछ न कुछ तो था ही!

बशारत ने माँ की नयी परंजी डाल रखी थी और किनारों के थोड़ा बड़ा होने के कारण ऊपर कर लिया था। बशारत अब बड़ी हो गयी थी और सारी रात उसे नीन्द नहीं आयेगी। माँ को भी अध्यक्षा बनने पर नीन्द नहीं आ पा रही थी।

आकाश में तारे खुशी-खुशी टिमटिमा रहे थे और बशारत की खुशी में चिन्ता की पुट थी। माँ शायद उनके इन्तज़ार में बैठी होगी। इधर उसका वज़न कम हो गया था क्योंकि उसे बहुत काम करना पड़ता। वह रोज़ सवेरे सहकारिता जाती और इतना थककर देर से घर आती कि खाना खाने के लिए मनाना पड़ता। लेकिन पहले की तरह अब वह रोया नहीं करती। हाँ, अगर वह बीमार न पड़ी हो... बशारत तब क्या करेगी? नहीं, नहीं, इससे अच्छा होगा, बशारत ही उसके बदले बीमार पड़ जाये। माँ कितनी अच्छी है। वह औरतों के लिए, सबके लिए, कितना कर रही थी। लोग उससे प्यार करें, एकदम वाजिब है।

लड़कियाँ नैमन्चा की परिचित संकरी टेढ़ी-मेढ़ी गलियों की ओर मुड़ गयीं। बशारत ने परंजी में घुटन महसूस की। उसने अपना चचवान ऊपर कर लिया। इस अंधेरे, सुनसान में भला कौन उसे देखेगा।

बशारत ने बहन को जल्दी-जल्दी चलने को कहा। तुर्सुनाय हाँफ़ उठी लेकिन पिछड़ी नहीं। दोनों माँ को देखना, उससे चिपट जाना चाहती थीं। हाँ, उसने उनके बिना खाना भी नहीं खाया होगा। आज उसे ख़ुद मेज़ लगाना पड़ा होगा।

अपने घर के पास लड़कियाँ पल भर के लिए रुकीं। उन्होंने ठीक दरवाज़े के पास एक अजीब-सी परछाँई देखी। वहाँ ज़मीन पर कोई था। पियक्कड़ तो नहीं? तुर्सुनाय को पियक्कड़ों से डर लगता। बशारत भी कोई ख़ास हिम्मत नहीं कर पाती। वे अन्दर कैसे जायेंगी?

परछाँई हिली। लड़कियाँ बुत बन गयीं।

उन्हें एक अस्पष्ट चीख सुनाई पड़ी। लड़कियाँ एक-दूसरे से चिपकते हुए भय से जम गयीं।

परछाँई शान्त पड़ गयी और लड़कियाँ जहाँ की तहाँ खड़ी रहीं जैसे उन पर जादू कर दिया गया हो। उन्हें हिलने-डुलने, चीखने में भय लग रहा था।

किसी भीतरी आवाज़ ने बशारत को परछाँई की ओर दौड़ जाने को कहा। बहन को छोड़कर उसने दरवाज़े की ओर एक क़दम बढ़ाया, फिर दूसरा, अन्धेरे में झाँकते हुए वह सहसा अपनी माँ की परंजी पहचान गयी।

"माँ!" वह बेतहाशा चीख पड़ी।

"माँ, मम्मी जाँ!" तुर्सुनाय भी उसी तरह चीख पड़ी।

भय से त्रस्त लड़कियाँ अपनी माँ की गतिहीन, मौन, शरीर से बेबस, अन्धे बिल्ली के बच्चों की तरह टहोका देती चिपक गयीं।

पड़ोस के आँगन में आवाज़ हुई और कोई लालटेन लिये दौड़ता आया। बशारत ने छैला नारमत को हाथ में लालटेन लिये अपने पर झुकते देखा। सहसा एक औरत क्रन्दन कर उठी: उसकी नज़र बशारत के हाथों पर पड़ गयी थी – वे खून से तर थे।

"दौड़ो! दौड़ो!"

औरतों ने बेहोश अनाख़ाँ को उठाया और घर में ले गयीं। किसी ने बत्ती जला दी।

"पानी, जल्दी से, पानी। ज़िन्दा है..."

* * *

नैमन्चा में सवेरे तक कोई नहीं सो पाया। घरों और आँगनों में बत्तियाँ जलती रहीं। मर्द, औरत और बच्चे अनाख़ाँ के घर के पास जमा हो गये।

रिज़वान, हाजिया और क़ुम्रि ने अनाख़ाँ को पल भर के लिए भी नहीं छोड़ा। उन्होंने उसके कपड़े उतारे, दायें कन्धे पर जख़्म को धोया और अपनेतया अच्छी तरह पट्टी बाँध दी। ख़ून बहना रुक गया।

छैला नारमत को चारबाज़ार से रूसी डॉक्टर बुलाने के लिए भेजा गया। अंधेरे के भय से पहले वह जाने को तैयार नहीं हुआ। औरतों ने उसकी थूड़ी-थूड़ी की और दरवाज़े पर खड़े एक आदमी को उसका साथ देने के लिए तैयार किया। कुछ लोग यफ़ीम दनीलोविच और ज़ुराख़ाँ को बुला लाने के लिए तैयार हो गये।

नज़ाकत टाँग अड़ानेवालों को आँगन में घुसने से रोकने के लिए दरवाज़े पर खड़ी हो गयी।

अंज़िरत दादी घुटने टेके मिन्नतें करती, दुआएँ माँगती और बात के आयी-गयी हो जाने के लिए खुदा का लाख-लाख शुक्रिया करती, बैठी रही। कहीं इससे भी बुरा होता तो। अलहमदुलिल्लाह, अलहमदुलिल्लाह...

अनाख़ाँ को सिर्फ़ थोड़ी देर के लिए होश आया। वह बहुत कमज़ोर हो गयी थी। औरतों ने उसे थोड़ा पानी दिया। अपने होंठ मुश्किल से हिलाती वह धीरे से बोली:

"बेटी कहाँ..."

तुर्सुनाय और बशारत को उसके पास ले जाया गया। वह उन पर एक धुंधली नज़र डालकर फिर बेहोश हो गयी।

छैला नारमत डेढ़ घण्टे तक बाहर रहा और जब लौटा, अकेला था। लगभग हर घर का दरवाज़ा खटखटाने के बावजूद चारबाज़ार में उसे कोई रूसी डॉक्टर नहीं मिला।

यफ़ीम दनीलोविच और ज़ुराख़ाँ को लाने गये लोग भी नहीं लौटे थे।

अनाख़ाँ के कन्धे की पट्टी ख़राब हो गयी। अंज़िरत दादी थोड़े मकड़ी के जाले ले आयी और उन्हें ज़ख़्म पर लगा देने के लिए कहा। अनाख़ाँ ने अपनी आँखें खोलीं। रिज़बान ने उसे नाम लेकर पुकारा मगर उसने कोई जवाब नहीं दिया। उसके हाथ बर्फ़ जैसे ठंडे थे।

ग्रनाख़ाँ के पास मौजूद ग्रौरतें चिन्तित हो उठीं। बशारत ग्रौर तुर्सुनाय हाजिया व क़ुम्रि की बाँहों में छटपटाती फिर फूट-फूटकर रोने लगीं। नज़ाकत को दरवाज़े से हटा दिया गया: पड़ोसी ग्रनाख़ाँ को ग्रलविदा कहने की इजाज़त माँग रहे थे।

तभी जुराख़ाँ ग्रौर साफ़िया बोरिसोवना घर में ग्रा पहुँचीं। उनके साथ ऐनक लगाये, तेज़ नुक़ीली लाल-लाल-सी दाढ़ी ग्रौर कन्धों तक पहुँच रहे सफ़ेद बालोंवाला एक बूढ़ा ग्रादमी था। उसने ग्रनाख़ाँ के पास जाकर उसके दिल की धड़कनें सुनीं ग्रौर सूई लगाने के लिए एक सीरिंज तैयार करने लगा। ग्रंज़िरत दादी ग्रार्तनाद करती पलट पड़ीं ग्रौर ज़ोर-ज़ोर से रोकर बददुग्राएँ देने लगी। उसे ग्राँगन के एक कोने में ले जाया गया।

"उसे चाकू मारा गया है," बूढ़े ग्रादमी ने ज़ख़्म की जाँच करके ग्रपना सिर हिलाते हुए रूसी में कहा। "ज़ाहिर है, रसोईवाले चाकू से। बहुत खून निकल गया है लेकिन उसका दिल ठीक-ठाक है, क़िस्मत से ज़ख़्म ख़तरनाक नहीं। चूक गया। बदमाश ने उसके पीछे से चाकू मारा है। कसाई ने गर्दन का निशाना लिया था।"

रिज़वान बूढ़े ग्रादमी के पास गयी ग्रौर सलाम किया।

"वह कैसी है, डॉक्टर, हमें बताइये, वह कैसी है? क्या वह मर रही है?"

"बच जायेगी," उसने उज़बेकी में जवाब दिया। "बच्चों को दूर ले जाग्रो।"

पानी गर्म किया गया।

ग्रनाख़ाँ होश में ग्रायी ग्रौर कराहने लगी।

"दर्द है?" जख़्म को साफ़ करते हुए बूढ़े डॉक्टर ने पूछा।

दरवाज़े के पास लोग कोलाहल कर उठे: "ग्रनाखाँ ज़िन्दा हो रही है! डॉक्टर ने कहा है, बच जायेगी।"

यफ़ीम दनीलोविच यूरोपीय कपड़ों में एक ग्रजनबी नौजवान के साथ ग्राये।

"यह कहाँ हुग्रा?" नौजवान ने पूछा।

"दरवाज़े के पास।"

उसने निराशा से ग्रपनी भौंहें सिकोड़ीं।

"यहाँ तो ज़मीन ही रौंद डाली गयी है। उसे किसने देखा?"

"लड़कियों ने, उसकी बेटियों ने।"

"बड़ों में पहले किसने देखा?"

छैला नारमत को उसके पास ले जाया गया।

"तुम्हें कोई चीज़ मिली थी? जैसे कोई चाक़ू?"

"वहाँ कोई चाकू न था। मुझे नहीं मालूम। मैं तो डॉक्टर के लिए चला गया था।"

कुछ औरतें आगे आ गयीं।

"उसने कुछ कहा?"

"नहीं," रिज़वान ने जवाब दिया।

"एक शब्द भी नहीं?"

"बस उसने इतना ही कहा 'मेरी बेटियाँ कहाँ है।'"

"कुछ और?"

"कुछ नहीं।"

नौजवान ने अनाखाँ की परंजी की जाँच की। फिर वह डॉक्टर को एक ओर ले गया।

"कैसी है वह?"

"होश में है। लेकिन उसे सो जाना चाहिए। मैं आपको सिर्फ़ एक सवाल पूछने दूँगा।"

नौजवान अनाख़ाँ पर झुक गया।

"क्या तुमने चाक़ू मारनेवाले को देखा?"

अनाख़ाँ ने कमज़ोरी से अपना सिर हिला दिया।

"क्या किसी पर आपको शक है?"

"नहीं... मैं नहीं जानती..."

अनाख़ाँ ने अपनी आँखें बन्द कर लीं। उसे बरामदे से घर के अन्दर ले जाया गया।

यफ़ीम दनीलोविच और नौजवान चले गये।

अनाख़ाँ सुबह तक सोती रही। वह बेचैनी से सोयी और उसे सुध न थी।

बड़बड़ाहट में उसकी बातों का कोई भी मतलब ज़ुराख़ाँ या साफ़िया बोरिसोवना नहीं लगा पायीं। सिर्फ़ रिज़वान चाची का ख़्याल था कि उसने यह शब्द सुने थे: "न मुझे, न तुझे!.."

तड़के अनाखाँ ने पानी माँगा और फिर गहरी नीन्द में सो गयी। इस बार वह ज़्यादा शान्ति से सोयी।

सुबह में नैमन्चा भर की औरतें अनाख़ाँ के घर आ जुटीं। वे उसके बारे में मालूम करने आयीं और आँगन में ज़मीन पर बरामदे के नज़दीक इन्तज़ार करती बैठी रहीं।

उनमें कई अनाखाँ और उसकी बेटियों के लिए खाना लायी थीं। बर्तनों, सूप की रकाबियों और पोटलियों से बरामदा भर गया। घर में जाते या आते हर किसी को तुरंत लोग घेर लेते और अनाख़ाँ के बारे में और हमलावर पकड़ा गया या नहीं जैसे सवालों की बौछार लग जाती।

अनाख़ाँ बेहतर है। आँगन में जमा औरतों ने बिना ग़लती किये उसकी बेटियों के मिज़ाज से इसे भाँप लिया। लड़कियाँ रो नहीं रही थीं और आँगन में कौतूहल भरी नज़र डालने बाहर आती रहीं।

जब अनाख़ाँ को आँगन के माहौल के बारे में बताया गया वह बहुत विच-लित हो उठी। उसने अपने को बरामदे में ले चलने या औरतों को अपने पास आने देने के लिए कहा।

"इसकी कोई ज़रूरत नहीं। तुम्हें आराम करना चाहिए और फिर से अपना स्वास्थ्य ठीक करना चाहिए," जुराख़ाँ ने कहा। "मैं ख़ुद उनसे बात करूँगी।"

"मैं सुनना चाहती हूँ..."

"हम खिड़कियाँ खोल देंगे और तुम सब कुछ सुनोगी।"

खिड़कियाँ खोल दी गयीं और जुराख़ाँ व साफ़िया बोरिसोवना बरामदे में चली गयीं। बरामदे के चारों ओर भीड़ लगाती औरतें उठ खड़ी हुईं।

"बहनो, मैं समझती हूँ," जुराख़ाँ ने कहा, "आप अनुभव करती हैं कि हमारी अनाख़ाँ पर किसने हमला किया।"

"बदमाश को ज़रूर पकड़ना चाहिए!" औरतें चीख़ पड़ीं। "पकड़कर हमें सौंप दीजिए! हम उसे दिखा देंगें, चाक़ू कैसे घोंपा जाता है... हम उसकी आँखों में झाँककर देखेंगे और उसके घिनौने दिल को निकाल फाड़ेंगे।"

"आज हम दादी अंज़िरत को बोलते नहीं देख रहे हैं," जुराखाँ ने धीरे से साफ़िया बोरिसोवना को कहा।

"अच्छा ही है। अलहमदुलिल्लाह," साफ़िया बोरिसोवना ने मुस्कराकर जवाब दिया।

जुराख़ाँ ने औरतों को अपने चारों और एक छोटे से घेरे में बैठा दिया और जब शान्ति हुई, उन्हें क़ुन्दुज़ सुलइमानोवा की कहानी बतायी।

"यह घटना बुख़ारा में रेगिस्तान चौक पर सोवियतों की पहली कांग्रेस — क़ुरुलताई के समय हुई।

"फ़रवरी की बरसाती रात थी। रेत के टीलों के बीच स्तेपी में सियार चीख़ रहे थे। तेज़ हवा चल रही थी और जब-तब कोई चील हल्के नीले आकाश के नीचे महाकाय काले धब्बे की तरह तेज़ी से गुज़र जाती। एक अकेली गाड़ी सड़क पर चरमराती चली जा रही थी, इसके पहियों की आवाज़ स्तेपी में दूर-दूर तक जा रही थी। औरतों द्वारा चुनी प्रतिनिधि क़ुन्दुज़ सुलइमानोवा गाड़ी से सोवियतों की पहली कांग्रेस में जा रही थी। अपने गांव की औरतों की ओर से सोवियत सरकार को बधाइयाँ देने वह बुख़ारा की राह तय कर रही थी।

"इतिहास में पहली दफ़ा एक पूर्वी औरत इतनी बड़ी कांग्रेस में बोलने जा रही थी। उस ज़माने में एक गाँव से क़ुन्दुज़ सुलइमानोवा की बुख़ारा तक की यात्रा को बेमिसाल जीवट का काम माना जाता था। बिना किसी संगी-साथी के स्तेपी से होकर रात की वह यात्रा एक कारनामा थी।

"लेकिन कांग्रेस के प्रतिनिधियों की क़िस्मत में साहसी क़ुन्दुज़ सुलइमानोवा की आवाज़ सुनना नहीं बदा था। स्तेपी में उस पर सियारों या चीलों ने हमला नहीं किया। बुख़ारा के प्रवेश द्वारों के पास एक चौराहे पर नरपशुओं ने उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया। तेईस बार उसे चाक़ू घोंपा गया। बासमाचियों ने उसके चार टुकड़े करके सियारों के पास फ़ेंक दिया।

"उसी हाथ ने अनाख़ाँ को चाक़ू मारा है," जुराख़ाँ ने कहा। "निस्सन्देह, आप महसूस कर सकती हैं कि वे बेईमान लोग हमें डराना चाहते हैं। और अब मुझे बताइये: क्या हम भयभीत हैं? अनाख़ाँ आपकी बात सुन सकती है। उसे बताइये।"

औरतें उछलकर खड़ी हो गयीं। सब की आँखें खिड़की की ओर मुड़ गयीं। इतनी शान्ति छा गयी कि लोग अपने दिल की धड़कनें सुन सकते थे।

बशारत तेज़ी से घर के अन्दर भागी और चोट लगने से बचाते हुए अपनी माँ के पैरों में बेसब्री से अपनी बाँहें डाल दीं। और आँगन में लड़की के बुदबुदाने की आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी:

"मम्मी जाँ, मैं तुम्हें प्यार करती हूँ, कितना चाहती हूँ।"

फिर अनाख़ाँ की कमज़ोर आवाज़ खिड़की से आयी:

"मेरी बहनो, मेरी प्यारी सहेलियो..."

वह इससे ज़्यादा कहने की ताक़त नहीं जुटा पायी। लेकिन आँगन में उसकी आवाज़ सुनाई दे गयी।

"तुम हम पर भरोसा कर सकती हो, अनाख़ाँ! ठीक हो जाओ, जल्दी से! हमें कोई नहीं डरा सकता!" रिज़वान और कुब्रि ने उसे चीखकर जवाब दिया। पीछे खड़ी नज़ाकत बरामदे के और क़रीब आ गयी। उसने साफ़िया बोरिसोवना का हाथ पकड़ लिया।

"मेरा भी नाम लिख लो। मैं सहकारिता में शामिल होना चाहती हूँ।"

गहन अविश्वास से साफ़िया बोरिसोवना ने कहा:

"तुम? तुम सहकारिता में शामिल होना चाहती हो?"

नज़ाकत ने घबड़ाकर उसके हाथ कसकर भींच लिये।

"मुझे जान जाने का डर है। मुझे घर में अकेली हो जाने का डर है। मैं तुम्हारी तरफ़ हूँ, मैं तुम्हारे साथ होना चाहती हूँ...

"अनाख़ाँ!" साफ़िया बोरिसोवना ने पुकारा। "नज़ाकत हमारी सहकारिता में शामिल हो रही है।"

"यह सुनकर मैं ख़ुश हूँ," अनाख़ाँ ने जवाब दिया।

नंगे पाँव, तार-तार हुई परंजी डाले एक औरत जुराख़ाँ के पास बढ़ आयी।

"तुम्हारा भी नाम लिख लूं?" जुराख़ाँ ने पूछा।

"नहीं, आप मुझे नहीं जानती, आप मेरा नाम नहीं लिख सकतीं।"

"एक मिनट। मैंने पहले कहीं तुम्हें देखा है?"

जुराख़ाँ ने औरत का चेहरा ग़ौर से देखा और उसे याद आया: मनकों और समुद्री घोंघों से शानदार ढंग से सजा-बजा गधा... मीठी फ़िरनी की प्लेट पर हाथ साफ़ करता मोटा आदमी... एक पुराना, सूखा शहतूत का पेड़... लाल टोपी से बाहर निकली चुटियावाला बच्चा... हाँ, यही वह अकेली, असहाय, पद दलित माँ है।

"तुम्हारा पति कौन है?"

औरत ने पल भर के लिए हिचकिचाकर अपने चारों ओर देखा।

"आप जज हैं। मैंने आपके बारे में सुना और आपको तलाश रही थी। मुझे बताया गया, आप यहाँ हैं। मेरी एक शिकायत है।"

स्पष्ट था, वह सबके सामने नहीं बोलना चाहती थी। उसका हाथ पकड़कर जुराख़ाँ बरामदे में ले गयी।

"तुम्हारे आने से मुझे खुशी हुई। मैं भी तुम्हें ढूँढ़ रही थी।"

"ख़ुदा आपको दौलत व लम्बी उम्र दे," औरत ने जुराख़ाँ के पीछे-पीछे आते हुए झुककर कहा।

बरामदे के कोने में वे काफ़ी समय तक बातें करती रहीं।

जब जुराख़ाँ और साफ़िया बोरिसोवना अनाख़ाँ के पास लौटीं, उसने चिन्तित होकर कहा:

"पिछली रात मुझसे कुछ पूछा गया था?"

"हाँ, हाँ।"

"मुझे याद आ गया है..."

"क्या?"

"जब मैं गिर पड़ी, मुझे एक आवाज़ सुनाई दी थी। अगर मैं ग़लती नहीं कर रही, इसने कहा था: 'न मुझे, न तुझे'।"

"तुमने बेहोशी में यह कहा था।"

"हाँ, लेकिन मुझे याद आ गया। यह एक कर्कश आवाज़ थी और इसने कहा था: "न मुझे, न तुझे'।"

"इसका क्या मतलब हो सकता है?"

"मैं नहीं जानती।"
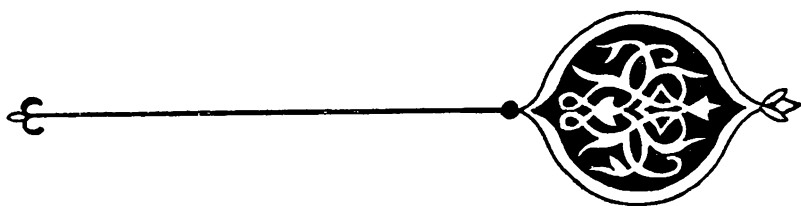
ग्यारहवाँ भाग

जब अनाख़ाँ बेहतर महसूस करने लगी और बूढ़े डॉक्टर को कोई ख़तरा न होने का इत्मीनान हो गया, रिज़वान चाची घर चली गयी। वहाँ एक सुखद आश्चर्य उसकी प्रतीक्षा में था।

आँगन में उसने सैनिक लिबास में एक अजनबी को सरपत के नीचे

ज़मीन पर बग़ल में अपना सफ़री थैला रखे बैठे देखा। पहले रिज़वान अपना चचवान उठाने की हिम्मत नहीं कर पायी फिर एकाएक चीखती हुई आगे दौड़ पड़ी, उसकी परंजी फिसल कर बीच आँगन में ज़मीन पर गिर पड़ी।

"बेटा!"

एर्गश माँ को गले लगा हल्के-हल्के उसके सफ़ेद बालों को सहलाने लगा।

"रो मत, माँ।"

वह लम्बा और हृष्ट-पुष्ट था। लाल सेना का उसका ट्यूनिक पीठ पर से रंगहीन हो गया था और पसीने से सफ़ेद पड़ गया था। उसके बड़े मोटे बूट धूल से तर थे। स्तेपियों की गर्म हवा से सँवलाये उसके चेहरे पर मर्दानगी झलक रही थी।

सेना के चार वर्षों ने उसे जवाँमर्द बना दिया था लेकिन उसकी माँ ने तत्क्षण ही उसकी चाल में वही बचपन जैसी जल्दबाज़ी और उतावलापन देख लिया। उसे देखकर ऐसा लगता जैसे अभी उठ खड़ा होगा और कहीं दौड़ पड़ेगा।

अपनी जेब से घटिया तम्बाकूवाला एक डिब्बा निकालकर वह एक सिगरेट तैयार करने लगा। रिज़वान अंगीठी के पास काम में लग गयी।

"क्या मैं सपना देख रही हूँ?" अपने आँसू छुपाने की कोई कोशिश किये बिना उसने कहा। "तुम कितने बड़े और खूबसूरत हो गये हो।"

"माँ," एर्गश ने कठोरता से जवाब दिया, "क्या मेरे पीछे तुम काफ़ी नहीं रो चुकी हो?"

"वे यही आँसू नहीं थे, मुसीबत के थे। अब वे बिलकुल अलग ढंग के हैं, मेरे बेटे।"

जब वह चाय बना रही थी, एर्गश ने अपने बूट उतार कर हाथ-मुँह धो डाला। फिर वह आँगन के छायादार हिस्से में बने मिट्टी के चबूतरे, सुपा पर जाकर पालथी मारकर बैठ गया।

"कितनी ख़ुशी की बात है, मैं फिर सुपा पर बैठा हूँ," पूरे आँगन पर नज़र दौड़ाते उसने कहा।

आँगन उपेक्षित दिख रहा था। वर्षा से सरकण्डे की छत ख़राब हो गयी थी। अंगीठी, भंडार घर और मंडप, सब की मरम्मत करने की

सख़्त ज़रूरत थी। फट्टे और पुरानी चटाइयाँ सब कहीं बिखरी पड़ी थीं। इतने सालों तक अकेले रहकर माँ को बड़ी मुश्किल का समय काटना पड़ा था।

"मुझे पूरा विश्वास है, इस तरह छोड़ जाने के लिए तुम ज़रूर मुझे कोसती होंगी," एर्गश ने कहा। "लेकिन मैं क्या-क्या करता रहा, यह जानकर तुम फूली नहीं समाओगी। मैंने जो कुछ भी किया, हमेशा तुम्हें ध्यान में रखकर और उसी ढंग से जो तुम्हें रास आता। और हमेशा ऐसा ही होगा।"

"शुक्रिया, बेटे। मैं तुमसे कभी नाराज़ नहीं रही। अधिकारी मेरी क़द्र करते हैं, खुदा उन्हें सुखी रखे, वे मुझे लाल सेना के सिपाही की माँ कहते हैं। तुम्हारे जाने के बाद दो नौजवान आये। वे सरकारी थे। उन्होंने मेरा हाल पूछा। तब से मैं सात बार नया शहर जा चुकी हूँ और हर बार उन्होंने मुझे पैसे दिये। क़ुद्रतुल्लाह के यहाँ भी काम किया। किसी तरह मैंने काम चला ही लिया।"

"आपने क़ुद्रतुल्लाह बाय के लिए काम किया।" एर्गश ने ग़ुस्से से कहा। "लाल सेना के सिपाही की माँ।"

यह बात उसे माँ के ख़तों से ही मालूम हो गयी थी लेकिन इसे न तो वह समझ सका था और न मन मारकर क़बूल ही लिया था।

"हमने अपनी सहकारिता खोल ली है," उसकी माँ ने जवाब दिया। "लेकिन दुष्ट लोग हमारी अध्यक्षा पर वार भी कर चुके हैं। वे हमारे नैमन्चा की सबसे हिम्मतवर औरत को मार डालना चाहते थे।"

"यह कैसे हो सकता है?" एर्गश चीख पड़ा।

"मुझे नहीं मालूम लेकिन दुष्ट लोग औरतों को सिर उठाने नहीं देना चाहते।"

"दुष्ट लोग? वे दुश्मन हैं जिनसे मैं चार वर्षों तक लड़ता रहा।"

रिज़वान चाची का चेहरा मुरझा गया और आँखों में भय उतर आया। वह अपने बेटे को देखने की ख़ुशी धूमिल नहीं करना चाहती थी लेकिन नैमन्चा में उसके आने से ठीक पहले क्या हुआ था उसे यह बता देने के अलावा कोई दूसरा चारा न था।

एर्गश सुपा से उछलकर उतर गया।

वह समझ नहीं सका कि ख़ून चूसनेवाले बायों को शहर में अब भी लोग क्यों सहन कर रहे हैं और उसके बाप के हत्यारे क़ुद्रतुल्लाह को छोड़

क्यों रखा है। लाल सेना के लोग जो लड़ाई बसमाचियों के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे, क्या यहाँ अब भी चल रही है?

उन्नीस की आयु में १९२१ में एर्गश सुल्तानोव स्वयंसेवक के रूप में लाल सेना में शामिल हुआ था। क़ुद्रतुल्लाह और उसके जैसे लोगों से नफ़रत ने उसे यह क़दम उठाने के लिए प्रेरित किया था। अपने बाप का घर और बूढ़ी माँ को छोड़कर जाने के बाद ताशक़न्द पहुँचने तक उसे कठिन समय का सामना करना पड़ा था। वहाँ उसे लाल रक्षकों का मुख्यालय मिल गया जहाँ उसे एक बन्दूक़ और कारतूसों की दो पेटियाँ दी गयीं। लेकिन आइदिन स्टेशन की लड़ाई के बाद ही उसकी क़िस्मत चमकी: उसे लाल सेना में दर्ज होने की इजाज़त मिल गयी।

कई मुठभेड़ों में वह लड़ा और उसका जोश ठंडा नहीं पड़ा। उसने उज़बेक रेजिमेंट में काम किया और इस्सीक़-कुल के तट पर बसमाचियों से लड़ाई लड़ी जो जनता द्वारा पायी गयी आज़ादी को बेच डालना चाहते थे। बिना जी-जान की परवाह किये वह बहादुरी से लड़ा: न आग उसे मैदान से डिगा सकी न उसने दुश्मन के सामने पीठ फेरी। वह मानता था कि ऐसा ही बर्ताव चँडावल के लोगों को करना चाहिए। उन्होंने उसके अपने शहर के अमीरों, बायों के पंख अब तक कुतर क्यों नहीं डाले? वे जीते-जागते और पहले की तरह व्यापार करके अमीर बनते जा रहे थे, यहाँ तक कि लोगों पर चाक़ू भी चलवा रहे थे...

माँ उसका ध्यान इन उद्वेगपूर्ण बातों से हटाकर कुछ ख़ुशी भरी, उल्लासमय बातें करना चाहती थी।

"ख़त तुम्हें मिले थे?" उसने रहस्यपूर्ण मुस्कान के साथ अपने हाथ से मेज़पोश के किनारे को दबाते हुए पूछा।

एर्गश ने उसकी बात न समझने का बहाना किया।

"कैसे ख़त?"

लेकिन माँ ने कुछ इतने मुक्त उल्लास से निहारते हुए पूछा था कि उसे लगा वह उससे कुछ नहीं छुपा सकता।

"माँ, क्या आपको वह ख़त दिखा देती थी?"

"वह तो नहीं लेकिन, हाँ, उसे पेंसिल और काग़ज़ की ज़रूरत क्यों पड़ती थी, इससे अन्दाज़ लगा लेना मुश्किल तो नहीं? यहाँ लोग कहते हैं, मुहब्बत ने हाजिया को पढ़ना-लिखना सिखा दिया।"

"हाँ। इधर के ख़त उसने ख़ुद लिखे थे," एर्गेश ने कहा, उसका तूफ़ान का मारा चेहरा मुलायम पड़ गया। "लेकिन वे बहुत छोटे थे, बस इतने बड़े," उसने अपनी आधी हथेली दिखायी।

"गिला न करो, मेरे बेटे। अगर उनमें कोई अनुभूति, कोई भावना है तो आकार क्या मायने रखता है... मैं हाजिया को अपनी ही बेटी मानती हूँ। लोग कहते हैं, वह दूसरी अनाख़ाँ बनेगी। नैमन्चा में जो दुकान हमने खोली है, उसका कार्यभार उसे ही सौंपा गया है।"

"दुकान? कैसी दुकान?"

"फिर व्यापार," उसने अरुचि से सोचा। "वे यहाँ भी ख़रीद-फ़रोख़्त कर रहे हैं।"

"यह औरतों के लिए ख़ास दुकान है," उसकी माँ ने जवाब दिया जैसे ख़ुद अपना औचित्य सिद्ध कर रही हो।

एर्गेश ने हैरत से अपने कन्धे सिकोड़े।

"मेरा ख़्याल है क़ुद्रतुल्लाह ने आप को ख़रीदना बेचना सिखाया होगा? वह लोगों के सिर मुंडने में पुराना उस्ताद है।"

उसकी माँ ने बुरा मान लिया।

"तुम्हें इस तरह नहीं बोलना चाहिए। जुराख़ाँ शायद ही यह कहती है। हमारी दुकान में काम करनेवाली हर किसी को लेनिन, सोवियत सत्ता और इसके अलावा बहुत सी बातों के बारे में जानना ज़रूरी है। जो लोग नहीं समझ पाते, उन्हें किस तरह समझाया जाय, उनके लिए यह जानना ज़रूरी है। हाजिया यह कर सकती है।"

"शायद वह मुझे भी समझा पायेगी क्या?" एर्गेश ने व्यंग्यपूर्वक सोचा।

"वह बहुत चतुर, बहुत तेज़ और बुद्धिमान है," उसकी माँ ने आगे कहा। "ख़ुदा उसे सेहतमंद रखे। तुम खुद उसे देखोगे ही।"

एर्गेश ने मान लिया कि उसकी माँ जो कुछ कह रही थी, उसे वह समझ नहीं पायी है। लेकिन उसे भी बहुत-सी ऐसी बातों से दो-चार होना था, जिन्हें वह सेना में नहीं जान पाया था। उसे भी अपनी राय बनानी थी और उन्हें समझना था।

दूसरे दिन सवेरे वह घर के काम-काज में लग गया। चार साल से घर में कोई मर्द नहीं रहा था।

पुराने सरपत से उसने एक लम्बी, सीधी शाखा जो छाया नहीं कर

पाती थी, काट डाली, फिर उसे काट-छाँट कर मंडप के लिए एक टेक तैयार की। फाटक के बायें, जहाँ इस साल कोई फूल नहीं लगाये गये थे, उसने एक छोटा-सा गढ़ा खोदा, उसमें गिलावा तैयार किया और बरसाती पानी की नाली के नीचे मकान के एक कोने की पलस्तर की। उसने वह जगह साफ़ की जहाँ उसके बाप का करघा खड़ा था। उसके बाद आँगन में रास्ते को चौरस किया।

और तभी जब वह नाली के पास सिगरेट पीने के लिए बैठा, उसने परंजी में लेकिन बिना चचवान के एक औरत को अपनी ओर देखते पाया। वह चुपचाप, दुविधा में पड़ी, परंजी के फुदने खींचती उसके पास आकर रुक गयी।

"भाई एर्गश, तुम्हें कभी थकान न हो। आप कैसे हैं? सब ठीक-ठाक है न?" अपनी आँखें नीची करती हुई वह बोली।

एर्गश ने थोड़ा अन्दाज़ लगाया फिर उस पतले-पतले हाथोंवाली लड़की को वह पहचान गया। इतने वर्षों में, जबसे उसने उसे नहीं देखा था, वह कितनी खिल गयी थी। ख़तों से तो लड़की ही मालूम पड़ी थी लेकिन देखने पर महसूस हुआ, अब वह बच्ची नहीं रही थी। और हाँ, उसने कपड़े भी ख़ास तौर पर इस मुलाक़ात के लिए ही पहन रखे थे। एर्गश हड़बड़ा उठा और कुदाल की टेक लिये खड़ा रह गया – उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अपने इन हाथ-पैरों से, आस्तीन और सलवार ऊपर मोड़े, सिर से पाँव तक कीचड़ में सना वह क्या करे।

"शुक्रिया, हाजिया," उसने नम्रता से कहा। "और तुम कैसी हो?"

लड़कियों के अलिखित विधान के मुताबिक़ उसने कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन उसकी साँस ऊपर-नीची होने लगी: ज़ाहिर था वह उसके घर भागी आयी थी।

"रिज़वान चाची ने आपको तनिक नहीं बख़्शा, आते ही काम में लगा दिया," हाजिया ने ऐसे लहजे में कहा जिसमें सहानुभूति भी थी, तारीफ़ भी।

"तुम इसे काम कहती हो," एर्गश ने भी उसी लहजे में कहा। "सुना है तुम सहकारिता में काम करती हो।"

"अच्छा, तो रिज़वान चाची ने आपको पहले ही बता दिया?"

"मुझे उम्मीद है तुम ख़ुद मुझे यहाँ का हाल-चाल बताओगी।"

"हमारी बातें बड़ी सीधी-सादी हैं, आपका मन नहीं लगेगा। आप लाल सेना के सिपाही हैं, एक वीर..."

"अपनी दुकान के बारे में बताने में वह घबड़ाहट महसूस करती है," एर्गेश ने अपने मन में सोचा और भावुकता से कहा:

"मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानना चाहता हूँ।"

"इसका मतलब कि आप हमारी मदद करेंगे?"

"मैं तुम्हारी मदद को हमेशा तैयार हूँ, हाजिया," उसने कोमलता से कहा।

"सिर्फ़ मेरी नहीं..." उसने कहा। हालाँकि उसने यही जवाब सुनना चाहा था। लेकिन उसे इतनी जल्दी और आसानी से यह सुनने की उम्मीद न थी।

अपने सुर्ख़ चेहरे को पीछे घुमाते हुए उसने लटपटा कर पूछा:

"क्या रिज़वान चाची घर पर हैं?" जैसे उसने उसे सहकारिता में नहीं देखा हो और एर्गेश के लौट आने के बारे में रिज़वान चाची ने नहीं बताया हो। "अरे, आपने बताया भी नहीं कि घर पर कोई नहीं – क्यों आपको लाज नहीं आती।"

वह जाना चाहती थी लेकिन एर्गेश ने रोक लिया।

"ठहरो, हाजिया।"

नाली में जल्दी से हाथ धो वह घर में दौड़ पड़ा। एक मिनट में जब वह लौटा, उसके हाथ में एक नया रेशमी रूमाल था: इस पर नीली पृष्ठभूमि में एक उज्जवल, बर्फ़-से सफ़ेद कपास बीजकोष की आकृति बनी थी।

"दुकान की प्रबंधिका होने के नाते तुम ऐसी चीज़ों की आदी हो लेकिन मैं चाहता हूँ तुम इसे ले लो।"

"नहीं, एर्गेश, नहीं।"

"क्यों नहीं? यह ठीक वैसा ही है, जैसा मैंने माँ को दिया है।"

"काश, इसी पल मैं मर जाऊँ। लोग तुरंत जान जायेंगे, आपने मुझे यह दिया है।"

"जानने दो। मुझे... मुझे इस पर गर्व होगा, हाजिया।"

"और मुझे भी," वह कहना चाहती थी लेकिन इसके बदले उसने कहा:

"आपने इतनी ज़हमत क्यों उठायी?"

हाजिया को पता भी नहीं चला कि नाज़ुक, मुलायम और ख़ूशबू से ताज़ा रूमाल कब उसके हाथों में आया और कैसे उसने उसे सीने से लगा लिया। एर्गश को लगा, वह रूमाल को नहीं उसे अपने सीने से लगा रही है। न जाने कितनी बार, घर से दूर, स्तेपियों और पहाड़ों में, खुले आकाश व टिमटिमाते तारों के नीचे उसने इस क्षण का सपना देखा था।

झुककर आदाब बजाते हुए हाजिया रूमाल लेकर भाग गयी। एर्गश उसे सुखद, हैरतभरी निगाहों से जाते देखता रहा।

* * *

अच्छी तरह इस्तरी किये ट्यूनिक और छोटी सैनिक पट्टी कसे एगश अपने शहर की गलियाँ तय करने लगा, उसके भारी बूट चरमरा रहे थे।

एक दो घोड़ेवाली गाड़ी धूल के बादल उड़ाती, उसके पास से निकल गयी। लोग अपने ब्रीफ़केस लिये तेज़ी से व्यापारी मुहल्ले की ओर बढ़े जा रहे थे। बूढ़ी औरतें बच्चों के हाथ पकड़े लिये जा रही थीं। औरतें फलों की टोकरियाँ लिये बाज़ार से लौट रही थीं। सफ़ेद मटमैले एप्रन में, पलस्तर करनेवाले और रंगसाज़ बाल्टियाँ और लम्बे ब्रुश लिये सड़क व पटरी पर घूम रहे थे। हर किसी को कहीं न कहीं की जल्दी थी। हर कोई अपने में ही मशग़ूल था। शहर का जीवन शान्तिपूर्ण था।

दूर रहकर बिताये इन लम्बे महीनों में लगभग लगातार युद्ध-यात्राओं के दौरान जब वे घोड़ों पर बैठे गाँवों से गुज़रते होते, दिन की धूप के बाद ठंडे पड़ गये बालू पर आग के पास सोते समय – एर्गश इस जीवन के लिए तरसता रहा था। लेकिन उसे आराम की इच्छा न थी। सुपा पर बेकार बैठे रहना, उसके स्वभाव में न था। वह काम करने, निर्माण करने आया था।

बाज़ार के क़रीब पहुँचते ही उसके कानों में एक जोशीले तन्दूरीवाले की आवाज़ पड़ी:

"गरमागरम तन्दूरी। जीभ पर रखते ही ग़ायब! सिर्फ़ यहीं मिलेगी।"

बटन खोले सफ़ेद क़मीज़ में एक लाल चेहरेवाला नानबाई सिर पर एक बड़ी टोकरी लिये था – इस में सफ़ाई से क़तारों में माँस और प्याज़ भरे समोसे सजाये थे।

हवा माँस भूनने, धातु के मर्तबानों में जलते धूप-गुग्गुल, तेज़ मिर्च और फल की गंध से भरी थी।

"चालीसों मज़े लीजिए! जो न खाये, पछताये।" एक सीख़ कबाब बेचनेवाले ने अंगीठी से उठते धुंएँ से अपना चेहरा बनाते हुए आवाज़ लगायी।

काशग़र बावर्ची लग़मान के पीजे आटे को अपने हाथों की पहुँच तक चौड़ी किये जा रहे थे।

"सबसे अच्छा, सबसे बढ़िया।"

एक कारवाँसराय के फाटक की छाया में ख़ून से लथपथ चेहरा और हाथोंवाला एक नाटा-मोटा कसाई एक भेड़ के धड़ की काट-छाँट इतनी तेज़ी और होशियारी से करता जा रहा था कि उसके हाथ और चाक़ू की गति का अनुसरण कर पाना असंभव था।

एर्गश बड़े पैमाने पर रंग-बिरंगे कपड़ों का ढेर लगाये एक सुसज्जित दुकान के पास रुक गया। खूटियों पर धागे के लच्छे टँगे थे और बक्सों में सफ़ेद च्विंगम, उस्मा और हिना सजाकर रखे थे।

मोटा-थुलथुला दुकानदार पालथी मारकर बैठा था। उसका चेहरा थुलथुला जामुनी था। एक कान पर पैमाइशी फीता रखे, कसे-पीटे तकिये जैसी अपनी तोंद पर दोनों हाथ रखे वह आराम से बैठा था।

"अरे, यह तो दुकानदार मल्क़ोवुल है," एर्गश ने मन में सोचा। "वही, उतना ही मोटा जितना चार साल पहले, मकड़ा..."

दुकान के पास भीख के लिए तुम्बा लिये चीथड़ों में लिपटा एक भिखमंगा बंदगी करता अल्लायार* के नज़्म बुदबुदा रहा था। नज़र लगने से बचने के लिए अचूक लोहवान का खुशबूदार धुंआ वहाँ फैला था।

थू करता एर्गश आगे बढ़ गया।

एक बड़े मकान की खिड़की से सारंगी की कर्ण कटु ध्वनि से उसका ध्यान खिंच गया। हर खिड़की पर झिलमिली लगी थी। पहले तो इसमें किसी अमीर बाय का होटल था। अब क्या है? मुख्य प्रवेश-द्वार के पोर्च के ऊपर एक बहुरंगा साइनबार्ड टँगा था: "निजी कॉफ़ी की दुकान। मिंगा-लियेव बन्धु।"

---

* सूफ़ी अल्लायार – १८ वीं सदी का उज़्बेक रहस्यवादी कवि।

पहले एर्गश ने साइनबार्ड को किसी तरह बेवाक होने से बच गया समझा लेकिन फिर उसकी नज़र खिड़की के सीशों पर तिरछा-तिरछी "मिंगा-लियेव बन्धु" लिखा देखा। उसे याद ग्राया, नये शहर में कभी इसी नाम का एक बड़ा-सा शराबख़ाना था।

ट्युनिक पर बेल्ट ठीक करता वह कॉफ़ी की दुकान में गया। वहाँ मेज़ों के गिर्द धुंधली ग्राँखों ग्रौर सुर्ख़ गर्दनोंवाले बैठे लोग शोर मचाते, बहस कर रहे थे। वे शोर मचाने में एक दूसरे से बाज़ी मार जाना चाहते थे। ग्रपने ग्रास-पास से बेख़बर मुलायम चमड़े का बूट पहने एक गोल-मटोल नौजवान बेधड़क गाली गलौज किये जा रहा था। प्रमादपूर्ण ग्रट्टहास के साथ उसने ग्रपनी मेज़ की ख़ाली बोतलों को ठोकर मारकर तोड़ दिया फिर शराब लाने के लिए हल्ला मचाने लगा। एक छोटे मंच पर ग्रकेला सारंगी-वादक घुटने मोड़े पेंगे भरे जा रहा था। मंच के पास ख़ूबसूरती से नक़्क़ाशी की गयी टोपियाँ लगाये दो नौजवान बैठे थे, उनके बीच लाल भौंहोंवाली ख़ूब सजी-बजी एक श्याम केशी महिला बैठी थी। वे नशे में थे। महिला के कन्धे पर एक हाथ रख कर उनमें से एक ऊंघने लगा। दूसरे ने उसके कान में कुछ कहा। उनके पास की मेज़ बोतलों के भार से चरमरा रही थी।

ग्रपने कान में बुदबुदाते ग्रादमी को एक ग्रोर करके महिला ने एर्गश को ग्राँख मार दी। वह ग्रकचका कर देखने लगा। उसे ऐसी जगह पर किसी महिला से मुलाक़ात की उम्मीद न थी।

"ग्रापके लिए क्या लाऊँ?" एक बूढ़े वेटर ने एर्गश के पास दौड़कर ग्राते हुए, ग्रादर से झुककर पूछा।

एर्गश लौट पड़ा ग्रौर तेज़ी से सड़क पर ग्रा गया।

वह कहाँ ग्रा गया है? वह ग्रपने शहर में निखट्टुग्रों की वही भीड़, व्यापारियों का वही पहले जैसा बाजारू शोर-शराबा देख रहा है।

कठिनाइयों ग्रौर मुसीबतों के चार साल... बसमाचियों के ख़िलाफ़ लगातार लड़ाई के चार साल... उसके यह चार साल किस काम ग्राये? ऐसा लगा जैसे वे चार साल थे ही नहीं।

शराब की एक दुकान से गुज़रते हुए उसने एक के ऊपर एक रखे छोटे-बड़े पीपों को रास्ता रोके पाया। पीपों के पीछे से दुकानदार का काला चेहरा झाँकता दिखाई पड़ा। एर्गश को देखकर उसने खीसें निपोड़ दीं, उसका पोपला मुंह एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल गया।

"क्या सेवा कर सकता हूँ, नौजवान? शराब, वोद्का, बीयर, बोज़ा, मुसल्लस?" *

जवाब का इंतज़ार किये बिना एक प्याला बोज़ा वह गुस्ताख़, चापलूसी भरी हँसी के साथ एर्गश के मुंह के पास ले ग्राया।

"कौन हो तुम?" एर्गश ने उसे ताकते हुए पूछा।

"इससे तुम्हें क्या?"

"मैं तुमसे पूछ रहा हूँ, कौन हो तुम? यह किसकी दुकान है? किसकी शराब है? तुमने किसके पैसे मार लिये हैं?"

दुकानदार के हाथों में प्याला काँप गया।

"मे-मेरे, भाई मेरे। लो पीग्रो। मेरी ग्रोर से। ग्रब पी भी लो।"

कुछ कहे बिना, एर्गश चला गया। "उसे मालूम है, ग्रसली मालिक कौन हैं," उसने दुकानदार के बारे में सोचा। "लेकिन जीवन को इतना ग्रासान क्यों बना रखा है?" कहीं वह सपना तो नहीं देख रहा। कहीं समय पीछे जा कर थम तो नहीं गया।

"नहीं। बस, काफ़ी है। काफ़ी देख लिया।" वह नये शहर की ग्रोर मुड़ गया।

डाकघर के पास पहुँचकर इसने देखा, मरम्मत करके उसे नीले रंग से रंग दिया गया है। लेकिन ग्रास पास की इमारतों पर ग्रभी भी गोलियों के निशान थे।

एर्गश कभी नहीं भूल पाता कि जब वह लड़का था किस तरह दुश्मनों की गोलीबारी के सामने से डाकघर से फ़ौजी क़िले तक दौड़ जाता। वह रेलवे कर्मचारियों का सन्देशवाहक था ग्रौर ग्रपने गालों में छुपाकर यफ़ीम चाचा से साबिर चाचा तक पुर्जा ले जाता। उसे मालूम था, युद्ध का नतीजा – क्रान्ति की नियति, उसके सन्देश देने या न देने पर निर्भर करती है। पिछली लड़ाई में साबिर चाचा बुरी तरह घायल हुए – यह उनकी ग्राख़िरी लड़ाई थी। यफ़ीम चाचा बचे थे जिनसे मिलने वह जा रहा है। वही उसके सवालों का जवाब देंगे, जो कुछ उसने बाज़ार में देखा था, उसके बारे में बतायेंगे।

रेलवे मरम्मत-खातों में लोहे की खनखन ग्रौर ठनठन ने उसका स्वागत

---

* मुसल्लस – स्थानीय ठर्रा।

किया। उसने एक ही नज़र में देख लिया कि खाते बड़े हो गये हैं और लोग नया, व्यस्त जीवन जी रहे हैं। उसने इन खातों को इतने लोगों, इतने शोरशराबे से भरा कभी नहीं देखा था — जहाँ नज़र जाती वहीं गहन, सुन्दर तालमेल से काम चल रहा था — काम उसे अद्वितीय पैमाने पर चल रहा प्रतीत हुआ।

प्रकटत: वह थोड़ा सहम भी गया और जब, ट्रेड यूनियन समिति के दफ़्तर में उसकी मुलाक़ात यफ़ीम दनीलोविच से हुई, वह पहले से कहीं अधिक संयत हो चुका था। तथापि उसके हृदय में कोई शान्ति या ख़ुशी न थी।

उसने यफ़ीम दनीलोविच में कोई भी परिवर्तन नहीं पाया। वह हमेशा की तरह भले मानस, मैत्रीपूर्ण और शिष्ट थे। शायद यफ़ीम चाचा — एर्गश के पहले कमांडर और शिक्षक — अपने इसी विनीत स्वभाव के कारण यह सब बर्दाश्त कर रहे थे जिसे एर्गश क़बूल नहीं कर पा रहा था?

यफ़ीम दनीलोविच ने तत्क्षण ही अपने युवा मित्र के चेहरे पर खिंचाव के भाव भाँप लिये।

"क्या बात है? क्या हुआ?" हाथ मिलाने के बाद उन्होंने पूछा। "मुझ से मिलकर लगता है, तुम्हें खुशी नहीं हुई। तुम ठीक तो हो?"

"मुझे अपनी सेहत से कोई शिकायत नहीं," एर्गश ने जवाब दिया। "लेकिन आज मैंने जो कुछ देखा, उससे मुझे खुशी नहीं हो सकती। मैंने शहर का चक्कर लगाया, बाज़ार में घूमा। मैं समझ नहीं पाता, मुझे अपनी आँखों पर भरोसा करना चाहिए या नहीं। फिर वही मत्क़ोवुल, वही मिंगालियेव बन्धु... यफ़ीम दनीलोविच, मुझे बताइये, आख़िर माजरा क्या है?"

यफ़ीम दनीलोविच ने एक क़दम पीछे जाकर एर्गश को ऊपर से नीचे तक देखा और ठठाकर हँस पड़े।

"अच्छा, तो हमने लड़ाई किस लिए की थी?"

"हाँ। किस लिए?" एर्गश ने चुनौती से दुहराया। "हमने दुश्मनों को किस लिए मार भगाया था, फिर ढाक के उसी तीन पात के लिए? हम स्तेपियों में मारे फिरे, बालू फाँकते रहे, मशीनगनों को सीनों पर झेला — किस लिए? और आप? क़ैद से आप किस लिए निकल भागे? फ़ौजी क़िले पर हमले की अगुवाई आपने किस लिए की थी? मैं-मैं आपको हमेशा

समझ पाता हूँ। मुझे बताइये। कुछ भी मत छुपाइये। शायद आपने हर चीज़ से पीठ फेर ली है, थककर अपने क़दम वापस लौटा लिये हैं?"

"बैठो। मैं तुमसे कुछ भी नहीं छुपाऊँगा," यफ़ीम दनीलोविच ने मूंछों के बीच मुस्कुराते हुए कहा। "अगर तुम्हारा दिमाग़ सही-सलामत है तो तुम मेरी बात ज़रूर समझ लोगे।"

मेज़ के पास एक बेंच पर एर्गश बैठ गया – अब उसे थोड़ी राहत महसूस हो रही थी। क्यों न हो, आख़िर वह यफ़ीम चाचा पर यक़ीन करने का आदी जो हो चुका है।

"तुम्हारा कहना है, तुमने शहर का चक्कर लगाया और तुम्हें अपनी ही आँखों पर भरोसा नहीं हो पा रहा है। लेकिन तुमने बहुत कुछ नहीं देखा।"

"मैंने दुश्मन को देखा।" एर्गश ने फिर अपनी बात पकड़ी।

"मानता हूँ। तुममें उन्हें देखने का माद्दा होना चाहिए। हमेशा दुश्मन को अपनी नज़रों में रखो। लेकिन क्या तुम्हें दोस्त नज़र आये? या हमारे मोर्चे? तुमने देखा–कपास ओटन मिल किस ज़ोर-शोर से काम कर रहा है? इसका निर्देशक हम लोगों का पुराना दोस्त – योद्धा और निपुण कर्मी अब्दुकरीम है। लेनिन मार्ग के स्टेट बैंक के बारे में क्या ख़्याल है? उसके मालिक भी हम ही हैं। उपभोक्ता सहकारिता और उत्पादक सहकारिताओं के बारे में क्या ख़्याल है? उन्हें शहर में देखा? महिलाओं की पहली सहकारिता के बारे में क्या ख़्याल है – उसे तुमने देखा? इसका महत्व तुम समझ रहे हो? और हमारा मरम्मत खाता... तुम्हारे जानते-जानते यह गाड़ी मरम्मती संयंत्र बन जायेगा। तुम्हें इसका अहसास हुआ? वाह रे पहरुवे!"

"वह सब समझता हूँ," एर्गश ने कहा।

"हाँ, तो उठाओ हथौड़ा और फिटर का शिकंजा... उनके लिए तुम्हारे हाथ नहीं खुजलाते?"

"मेरा ख़्याल है, बन्दूक़ रखने में मैंने जल्दी कर दी।"

"नहीं, मेरे भाई। वह कामयाब रही है। और याद रखो, हर चीज़ बन्दूक़ से नहीं सुलझती। हथौड़े से हम अपना सबसे महत्वपूर्ण काम करते हैं। जी हाँ, हथौड़े, मेरे गर्म मिज़ाज दोस्त। हमारे राज्य-चिह्न पर हँसिया-हथौड़ा बेमतलब नहीं। हम अपने श्रम से क्रान्ति की उपलब्धियों को मज़बूत

ग्रौर विकसित करेंगे। हमने लड़ाई काम करने के लिए जीती है, ऐसा काम जिसे पहले कोई भी नहीं कर सका।"

"काम?" एर्गश ने कहा। "अच्छा हो कहें: ख़रीद-फ़रोख़्त।"

"तुम्हें हर काम करने लायक़ होना चाहिए," यफ़ीम दनीलोविच ने उसकी बात काटते हुए कहा। "ग्रौर पहले के मालिकों से बेहतर। क़ुद्रतुल्लाह-ख़्वाजा को ही लो, वर्षों हाथ-पाँव मारता रहा लेकिन ग्राख़िर कहाँ गर्त में चला गया। हमारी सहकारिता नैमन्चा की महिलाग्रों के लिए ग्रधिक लाभदायक, ग्रधिक रुचिकर ग्रौर ग्रधिक ग्राकर्षक सिद्ध हुई है। ग्रौर ज़रा देखो तो वे युगों पुराने ग्रंधविश्वासों, चाक़ू से पीठ पीछे दुश्मनों के हमलों के बावजूद काम कर रही हैं, जूझ रही हैं। एर्गश यह विजय फौजी क़िले पर हमारे क़ब्ज़े से कम नहीं।"

"ग्राप तो कहेंगे ही," एर्गश ने कहा लेकिन तुरंत ही उसे ग्रपने शब्दों ग्रौर लहजे पर खेद हो ग्राया, उसने कहा: "मैं ग्रपनी माँ को नहीं पहचान पाया, यफ़ीम दनीलोविच। उसकी बातें मैंने सुनी-ग्रनसुनी कर दीं। ग्रब मैं यह महसूस करता हूँ, उसकी बातें मुझे फिर से सुननी चाहिए।"

"ग्रब भेजे की बात कर रहे हो तुम," यफ़ीम दनीलोविच ने प्रशंसा से कहा। "ग्रौरतें क्या कर रही हैं, ध्यान से देखो। लोगों के काम को समझो। तुम जनता के बीच के ग्रादमी हो, तुम सब कुछ समझ लोगे। तुम्हें यह समझाने की मुझे कोई ज़रूरत नहीं कि वर्ग-संघर्ष क्या है, इसे बन्दूक़ से, हथौड़े से या ज़रूरत पड़ने पर भावुकतापूर्ण, चतुराई भरे शब्दों से कैसे चलाया जाये।"

व्यग्रतापूर्वक एर्गश ग्रपनी बेंच से उठ खड़ा हुग्रा।

"मैं कितना मूर्ख हूँ यफ़ीम दनीलोविच — मैंने ठीक ढंग से ग्रापको ग्रभिवादन भी नहीं किया।"

"तो ग्राग्रो, हम 'हलो' कहें," यफ़ीम दनीलोविच ने रूसी में कहा ग्रौर ग्रपने हाथ फैला दिये।

वे गर्मजोशी से गले मिले।

"ग्ररे, ग्ररे, तुम तो मेरी पीठ ही तोड़ डालोगे," यफ़ीम दनीलोविच कराह उठे। "बूढ़े पर रहम करो, भाई।"

लम्बे, मज़बूत काठी के दोनों ग्रादमियों ने एक-दूसरे से इस तरह कन्धे से कन्धा मिलाया जैसे ग्रलग ही नहीं होंगे।

"यफ़ीम दनीलोविच, ग्राप यहाँ कारख़ाना समिति के ग्रध्यक्ष हैं न?"

"देख ही रहे हो।"

"मैंने सोचा था, ग्राप कम से कम नगर के मेयर या नगर पार्टी समिति के सचिव तो होंगे ही। यानी कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति।"

यफ़ीम दनीलोविच ने गंभीरता से जवाब दिया:

"जनता के लिए काम करते समय, जो भी किया जाता है, महत्वपूर्ण होता है। एक रूसी कहावत है, जगह ग्रादमी को बड़ा नहीं बनाती, ग्रादमी जगह को बड़ा बनाता है। ईमानदारी से जियो, जनता के लिए काम करो – ग्रौर तुम महत्वपूर्ण बन जाग्रोगे।"

"मैं काम शुरू करने के लिए इंतज़ार नहीं कर सकता," एर्गश ने तत्परता से कहा।

"ग्रोग्रो," यफ़ीम दनीलोविच ने एर्गश की पीठ थपथपाते हुए शिष्टता से कहा। "मैं तुम्हें ग्रपनी गोलीबारी का मोर्चा दिखाऊँगा।"

वह रेल-पटरी के साथ-साथ मरम्मत खाते के एक छोर से दूसरे छोर तक गये। मरम्मत खातों के साथ लगा सारा का सारा विशाल क्षेत्र एक निर्माण स्थली में रूपान्तरित कर दिया गया था। लाल ईंटोंवाली एक नयी ऊँची इमारत की दीवारें उठ रही थीं। उनके बग़ल में पुरानी कालिख-पुती इमारत मुर्ग़ियों के दरबे की तरह छोटी ग्रौर संकरी लग रही थी। तख़्तों, रेलों, छत के लोहे ग्रौर पकी ईंटों के ढेर ग्रासमान को छू रहे थे। बड़े-बड़े लकड़ियों के बक्सों में ग्रपनी बारी की प्रतीक्षा कर रहे थे मशीनी यंत्रोपकरण – दो डायनमो – वैसे डायनमो एर्गश ने पहले कभी नहीं देखे थे।

"हाँ, तो ग्रब?" यफ़ीम चाचा ने पूछा।

"महान!" एर्गश ने उल्लासपूर्वक जवाब दिया।

बारहवाँ भाग

"मैं तुम्हें कुछ श्रौर दिखाऊँगा," यफ़ीम दनीलोविच ने एर्गश से दूसरे दिन कहा।

वे महिलाओं के क्लब में गये। वहाँ इतनी भीड़ थी कि उन्हें हॉल में जाने के लिए ज़ोर लगाना पड़ा। वे दोनों एक कुर्सी पर बैठ गये।

मंच के पासवाली पहली बेंच पर सिर्फ़ एक मोटा श्रादमी बैठा था—नुकीली कालीनी टोपी श्रौर धारीदार चोग़ा पहने। उसके पास ही श्रपने ट्यूनिक में लाल बेल्ट लगाये एक नौजवान सैनिक खड़ा था। उसके दायें कन्धे से ऊपर बन्दूक की फलकदार संगीन चमचमा रही थी।

श्रादमी बेंच पर दोनों हाथ मोड़कर तोंद पर रखे बैठा था। उसकी श्राँखें पूर्ण उपेक्षा से एक जगह टिकी थीं।

"पहचाना उसे?" यफ़ीम दनीलोविच ने धीरे से एर्गश से कहा।

"ज़रूर"।

"हमारे हाथ इस तक पहुँच गये हैं। श्रौर वह हाथ ज़ुराख़ाँ का है।"

"माँ उसकी हिम्मत के बारे में कह रही थी।"

"लेकिन सच कहा जाये तो, वह कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति भी नहीं," यफ़ीम दनीलोविच ने टिप्पणी की।

एर्गश झेंपता हुश्रा हँस पड़ा।

"नागरिक मत्क़ोवुल वल्द मर्दोन्क़ुल!" लाल कपड़े से ढँकी मेज़ के पीछे से श्रावाज़ श्रायी।

दुकानदार न हिला न डोला।

"श्रदालत श्रापसे मुख़ातिब हो तो खड़े हो जाइये।"

दुकानदार ज़ोर से बेंच को एक श्रोर खिसकाकर उठ खड़ा हुश्रा।

"क्या श्राप मानते हैं, शादमान की बेटी नागरिका ख़ालनिसा का बच्चा श्रापकी श्रौलाद है?"

मत्क़ोवुल ने कोई जवाब नहीं दिया, गला साफ़ किया, अपने मोटे होठों को जुंबिश दी और फिर ऐसी गंभीरता से बोला जैसे कोई बहुत गहरी बात कह रहा हो:

"मर्द के लिए औरत बीवी है। और बीवी बच्चे जनती है।"

जज ने फिर कहा:

"क्या आप मानते हैं कि शादमान की बेटी ख़ालनिसा आपके घर में नौकरानी थी?"

मत्क़ोवुल फिर काफ़ी देर तक सोचता रहा फिर एकाएक अपने पहलू थपथपाकर बोला:

"बीवी हमेशा शौहर की ख़िदमत करती है।"

जिरह करती जुराख़ाँ ने पूछा:

"क्या आप मानते हैं कि मुद्दई ख़ालनिसा को आपने ग़ुलाम के रूप में ख़रीदा?"

"क्या?" मत्क़ोवुल ने पूछा।

जुराख़ाँ ने सवाल दुहरा दिया। मत्क़ोवुल ने उसे फिर दुहराने के लिए कहा। जज ने धैर्यपूर्वक सवाल का मतलब समझाया।

,'व्यापारी को ख़रीद फ़रोख़्त करना ही चाहिए," मत्क़ोवुल ने अपने गोल कन्धों को उचकाते हुए जवाब दिया।

पूरे हॉल में ग़ुस्से की लहर दौड़ गयी।

"अदालत को जवाब दीजिए: आप अपना क़सूर मानते हैं?" जज ने जवाब माँगा।

"हर मुसलमान खुदा के सामने क़सूरवार है," मत्क़ोवुल ने जवाब दिया।

लेकिन वह अपनी बेवकूफ़ी या अल्लाह में विश्वास की पनाह नहीं पा सका।

शहर के हर मुहल्ले से क्लब-हॉल में जमा हुई औरतें साँस रोके बाज़ार के सबसे अमीर और ख़तरनाक आदमी, दुकानदार मत्क़ोवुल से औरत जज जुराख़ाँ को सवाल करते सुनती रहीं। जब ख़ालनिसा से सवाल पूछे गये, वह रोने लगी। वह परंजी ओढ़े, अस्पष्ट शब्दों में बोली, लेकिन उसका हर शब्द कटु सत्य था।

बहुत-सी औरतों को ख़ालनिसा के साथ जो कुछ हुआ था, उसमें कुछ भी असामान्य नहीं लगा। औरतों की यही क़िस्मत रही है और

रहेगी... लेकिन जुराख़ाँ ने जब अपना भाषण शुरू किया, उन्हें अपने विचारों पर ग्लानि महसूस हुई।

उनमें बहुत-सी जुराख़ाँ को सुनने आयी थीं। माँ बेटियों को और बेटियाँ माँ को लायी थीं। औरतों की दिलचस्पी अदालती कार्रवाई या सज़ा में उतनी न थी। जुराख़ाँ क्या कहती है, इसमें उनकी दिलचस्पी थी। उसकी बातें सुनने के बाद औरतें अपने हृदय में नयी उम्मीदों के सपने लिये घर लौट गयीं। उन्होंने महसूस किया कि पहले की तरह जीना उनके लिए दूभर है।

एर्गश ने भी यही महसूस किया।

"वह लोगों को समझती है। लोगों की ख़्वाहिशें उसे मालूम हैं," उसने रोमांचित होते हुए सोचा।

ख़ालनिसा की माँ येरमाज़ार नामक गाँव में किसी बाय की नौकरानी थी। लड़की जहाँ तक हो पाता, उसकी मदद करती। लेकिन बूढ़ी माँ कमज़ोर और बीमार रहती, बाय ने उस निकम्मी बूढ़ी से छुटकारा पाने की सोची। लेकिन वह कुछ करे, इससे पहले ही बुढ़िया मर गयी। वह दिन-ब-दिन कमज़ोर पड़ती जाती और लगता लोग बेसब्री से उसकी मौत का इन्तज़ार कर रह थे। एक डरावनी रात में ओसारे के पासवाले मैले-कुचैले छोटे कमरे में अपनी बेटी की बाँहों में उसने आख़िरी साँस ले ली। बहुत दिनों तक लड़की गुमसुम-सी मारी फिरती रही, उसे कमरे में जाने से डर लगता। आख़िर वह घर छोड़कर भाग खड़ी हुई। वह जो कपड़े पहने थी, उन्हीं में बिना खाना-पीना लिये भाग खड़ी हुई।

नंगे पाँव, पैबन्द लगी परंजी में वह एक बड़े नगर में आ पहुँची। उस गँवई लड़की को बस मोटा-झोटा काम ही आता था। वह काम की तलाश में बाज़ार में निरर्थक भटकती रही। तभी कमर झुकी होने के कारण कौवे-सी दिखती एक फुर्तीली औरत की नज़र उस पर पड़ गयी।

दूसरों की तरह लड़की उसके सामने भी अपना रोना रोयी – शायद दसवीं दफ़े। बुढ़िया दूसरों से अधिक दयालु और ध्यान देती साबित हुई। उसने सवाल पूछे, हमदर्दी दिखायी। फिर ख़ालनिसा की बाँह अपने सुखट्टे हाथ में थामकर एक बड़ी-सी बज़ाज़ी की दुकान में ले गयी।

कपास की कसी बोरी जैसा एक आदमी पेट पर अपने अंगूठे फिराता दुकान में बैठा था।

बुढ़िया ने उससे धीमी आवाज़ में बात की फिर ख़ालनिसा का चेहरा उघारकर दिखाया। लड़की को मोटी नाक, पिलपिले गाल और मोटे होंठ-वाला दुकानदार भोला और दोस्ताना लगा। लेकिन जब उसने उसे कान पकड़कर मुंह खोलने के लिए कहा, डर से उसका कलेजा मुंह को आ गया। समझ में न आनेवाली चीज़ हमेशा डरावनी होती है।

"मालिक, मैं सिर्फ़ घर का काम कर सकती हूँ" लड़की ने अपने से बुजुर्ग को धोखा न देने के इरादे से कहा।

फुफकारते, अपने होंठ चबाते हुए दुकानदार ने ठसक से जवाब दिया:

"ठीक, यही तो एक नौकरानी का जानना चाहिए।"

बुढ़िया ने फिर बुदबुदाते हुए दुकानदार से बात शुरू कर दी:

"आपकी घरवालियाँ," उसने उसकी बीवियों का हवाला देते हुए कहा, "गिला करती रहती हैं और आपको कोई सुकून नहीं देतीं। अब इसे ले जाइये मालिक, और उन्हें सौंप दीजिए। मेरा विश्वास कीजिए, इससे बेहतर कोई नहीं मिलेगी। आप ख़ुश हो जायेंगे। चीज़ है — मैंने सिर्फ़ आपके लिए ढूंढ निकाली है — आपके प्रति अपने सम्मान के नाते..."

दुकानदार ने उसके हाथ पर कुछ रख दिया। निहाल हो, बुढ़िया ने ख़ालनिसा से चीख़कर कहा:

"अपने मददगार को याद रखना। मत्वान-बुवी को दुआएँ दो," उस मेहरबान का यही नाम था। "और अपनी मालकिनों की मेहनत से सेवा करो। तुम्हें खाना-कपड़ा मिलेगा, आमीन।"

मत्वान-बुवी चली गयी।

ख़ालनिसा दिलचस्पी से दुकानदार को पैरों पर खड़ा होते देखती रही। उसकी बाँहें और टाँगें छोटी और कमज़ोर थीं, क़मरबन्द तौलिये जितना चौड़ा था — शायद तोंद को अपनी जगह बनाये रखने के लिए...

मत्क़ोवुल कारवाँसराय से बहुरंगी सज्जावाला एक गधा ले आया। मान्यवर दुकानदार महोदय का वश चलता तो वह एक डेग भी नहीं चलते। अप्रत्याशित चुस्ती से वह ज़ीन पर चढ़ गया और ख़ालनिसा नंगे पाँव घिसटती उसके पीछे चल पड़ी।

मत्क़ोवुल नौकरानी को अपनी बीवियों के पास ले आया और ज़नानख़ाने में धकेल दिया, फिर अपने हाथ इस तरह झाड़े जैसे बाज़ार से कोई झाड़ू या टोकरी ख़रीद लाया हो।

"उसे काम दो और चौकसी रखो कि करती है या नहीं," मुँह मोड़े बिना वह बड़बड़ाया। "मैंने इसे मुफ़्त नहीं ख़रीदा है।"

खालनिसा ने समझा, उसे पैसे मिलेंगे। नौकरों को काम का पैसा मिलता है। लेकिन यह उसका भ्रम था।

मत्क़ोवुल की दो बीवियाँ थीं।

बड़ी अपने शौहर जैसी मोटी-थुलथुली थी। तंग कपड़े अब भी उस पर रास आते थे हालाँकि बाल सफ़ेद हो चले थे। और उम्र बढ़ने के साथ-साथ वह अपने कपड़ों व बनाव-सिंगार पर ज़्यादा ध्यान देती। उसकी जड़ आँखें उसे दग़ा देतीं: वह गावदी थी। इस भ्रम में कि इससे वह जवान लगती है, हर चीज़ देखकर खीं-खीं कर उठती। दुख क्या है, उसे नहीं मालूम था।

छोटी बीवी बीमार, चेहरे-मोहरे से कमसिन बीमार लड़की-सी लगती। उसके गालों, ललाट और होठों पर हल्की झुर्रियाँ थीं। उसकी पीठ और कन्धे सुखट्टे थे, छातियाँ चिचुक गयी थीं। वह ज़्यादा से ज़्यादा बारह साल की उम्र में ब्याह दी गयी होगी और जब अभी लड़की ही रही होगी, जवानी गँवा बैठी। यह दुखी, विकृत औरत, साँप की तरह ज़हरीली थी।

ख़ालनिसा को अपनी इन्हीं मालकिनों की सेवा करनी थी।

नगरों की कुलीन, अमीर औरतों की तरह ही उन्होंने उसे गाँव की भिखारिन के रूप में लिया।

ख़ालनिसा ने सिर झुकाकर उनकी बन्दगी की लेकिन उन्होंने इस पर तनिक ध्यान नहीं दिया, उसे उपेक्षापूर्ण आश्चर्य से देखती रहीं। बड़ी औरत चिड़चिड़ाते हुए उसके पास गयी जैसे कोई घूसनेवाली गाय हो और दो अंगुलियों से उसका चचवान ऊपर उठा दिया। छोटीवाली भी उसी की तरह अपने सर्पवत होंठों को चबाते हुए उसके पास आयी। दोनों ने ग़ुस्से भरी नज़रों का आदान-प्रदान किया: नौकरानी नौजवान है। बड़ीवाली एकाएक ठठा पड़ी। छोटी ने नफ़रत से थूक दिया।

फिर वे बकबक करने लगीं, ग़रीब लड़की का मज़ाक बनाने लगीं।

"गूँगी है।"

"ज़मीन ताक रही है।"

ख़ालनिसा किंकर्त्तव्य विमूढ़ थी – कहाँ जाये, क्या बोले या क्या देखे।

निस्सन्देह वह सीधी-सादी, नादान लड़की थी, इसके कारण वह और हास्यास्पद लग रही थी।

"शादी हो चुकी है?" छोटीवाली ने पूछा।

ख़ालनिसा ने अपना सिर हिला दिया।

"पैर धोना जानती हो?"

"मैं घर का काम-काज कर सकती हूँ..."

बड़ीवाली खीं-खीं करती चीख पड़ी:

"जा, नहा-धो ले, फिर हम देखेंगे।"

लेकिन जब ख़ालनिसा नहा-धो आयी, बीवियों की जीभ तालू से चिपक गयी। उसकी जवानी और खूबसूरती ने उन्हें चुप कर दिया था।

बिना बोले वे एक-दूसरे को समझ गयीं। कल तक आग-पानी-सी बेमेल सौतिनें, नौकरानी के प्रति अपने क्रोध और निर्दयता में एक हो गयी थीं। वे ज़रूर चौकस रहेंगी कि वह ख़ाली न रहे। वे उसके लिए काम सोचती थकी मर रही थीं। लेकिन काम से वह घबड़ायी नहीं। नौकरानी असाधारण रूप से मेहनती साबित हुई और जो कुछ कहा जाता, करने को तत्पर रहती। वह आज्ञाकारी और अथक थी। वह धैर्यपूर्वक गालियाँ और मज़ाक, चाँटे और पीड़ा झेल जाती। वह दिल ही दिल में अपनी बड़ी मालकिन पर हँसती जब वह घण्टों आईने के सामने खड़ी होकर हिना और सुरमा से खुद को रंगा करती।

लेकिन एक बात ऐसी थी जो दोनों को थोड़ी देर के लिए राहत देती।

एक दिन, जब मत्क़ोवुल दूकान पर था, दो अजनबी नौजवान–एक रूसी, एक उज़बेक–उसके घर पर आये। वे साथ में फाइलें लाये थे, उन्हें खोला और पेंसिलें निकालीं।

"तो आपके यहाँ एक नौकरानी है?" काग़ज़ों को देखते हुए रूसी ने पूछा।

"हाँ," बड़ी बी ने परंजी के पीछे खीं-खीं करते हुए जवाब दिया।

"नाम और उपनाम?"

"मत्क़ोवुल-बाय..."

"मुझे लड़की का नाम चाहिए।"

"मेरा ख़्याल है, ख़ालनिसा..."

"और कुलनाम ?"

बड़ी ने छोटी को बुलाया :

"अरी पंडिताइन रानी, उसका कुलनाम क्या है ?"

छोटी बी ने ज़नानख़ाने से जवाब दिया :

"क्या नौकरानी का कुलनाम होता है ?"

"कहाँ है वह ? उसे बुलाइये," उज़बेक ने कहा।

बड़ी बी ज़नानख़ाने में चली गयी। ख़ालनिसा डबरे के पास रास्ता बुहार रही थी। खीं-खीं करती मालकिन ने उसकी बग़ल में अपने मुक्के से टहोका लगाया।

"जा। वे तुझे चाहते हैं। लगता है तेरे चाहनेवाले हैं और तूने हमें कुछ बताया भी नहीं। अरी नागिन, झूठी यतीम। तेरी कलई खुल जाय, जा।"

अपना चेहरा ढँके ख़ालनिसा उन आदमियों के पास गयी। वे वित्त विभाग के प्रतिनिधि थे।

उसने उन्हें अपना कुलनाम तो बता दिया लेकिन अपने मालिक के साथ किसी समझौते के बारे में कुछ नहीं बता सकी। समझौता क्या होता है, उसे मालूम न था।

उन लोगों ने काग़ज़ के एक टुकड़े पर कुछ लिखकर बड़ी बीवी को दिया और बता दिया कि नौकरानी रखने के लिए समझौता कल तक ज़रूर पंजीयित हो जाना चाहिए।

उनके जाने के बाद बीवियाँ आनन्दित हो उठीं। ख़ालनिसा का "नाम दर्ज" हो जाने से अब वह ख़तरनाक नहीं रह गयी थी। अधिकारियों ने उसे काग़ज़ों पर नौकरानी के रूप में दर्ज कर लिया था। चाहे वह उनसे सौ गुना अधिक जवान और ख़ूबसूरत हो, अब मत्क़ोवुल की बीवी नहीं बन सकती।

इस पर मत्क़ोवुल की प्रतिक्रिया एकदम ही अलग हुई। जब बड़ी बीवी ने वित्त विभाग का काग़ज़ उसे दिया, उसे झुरझुरी हो आयी। वह चीख़ने लगा, अपने पाँव पटके और उसका चेहरा, हाथ व तोंद कंपित हो उठे।

कर... मज़दूर समिति को तीन प्रतिशत और वित्त विभाग को पाँच प्रतिशत। नौकरानी तो सच में महँगी साबित हो रही थी।

मत्चान-बुवी को दिये पैसे ही वह नहीं भूल पा रहा था। अब उसे लड़की को भी देना पड़ेगा? कर? क्या कोई आदमी इतना महँगा हो सकता है?

लेकिन यह कोई आदमी नहीं—एक औरत थी। सिर्फ़ एक औरत... यह एक सुखद बात थी। क्या घर में रहनेवाली औरत मर्द की बीवी नहीं हो सकती? बीवियों पर कर नहीं दिये जाते। बीवी को मज़दूरी नहीं दी जाती। बीवी से सस्ती चीज़ क्या हो सकती है?

मत्क़ोवुल कोई गहन विचारवान न था लेकिन अपना कारोबार वह बड़ी सफ़ाई भरी धूर्तता से चलाता जिससे कभी-कभी चतुर व्यक्ति भी उसके खोखलेपन पर संदेह नहीं कर पाते। इसके अलावा वह साधन-सम्पन्न था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि सियार साबित बचा था जब कि क़ुद्रतुल्लाह जैसे भेड़िये जाल में फँस चुके थे।

नौकरानी को बीवियों से तैयार करा के वह अपने गधे पर बैठ गया और ख़ालनिसा उसके पीछे-पीछे शहर में कहीं चल पड़ी। यह कहना फिज़ूल है कि वह वित्त विभाग या समझौता पंजीयित कराने नहीं गया। मत्क़ोवुल-बाय अपनी जेब बचाना जानता था।

घर लौटकर दुकानदार ने अपनी बड़ी बीवी को दूसरा काग़ज़ थमा दिया।

"अगर वे आकर समझौता देखने माँगें, उन्हें कह देना, हमारे यहाँ कोई नौकरानी नहीं। उन्हें यह काग़ज़ दिखा देना।"

"यह क्या है, बच्चों के बापू?"

"यह शादी का प्रमाणपत्र है। वे इस पर कर नहीं लगाते।"

गावदी, सजी-बजी बीवी पहले आदतन खीं-खीं कर उठी फिर क्रन्दन कर उठी:

"हाय, मैं कितनी अभागिन हूँ! हाय!"

छोटी बीवी भी दौड़ती हुई कमरे में आ पहुँची और क्रन्दन करने लगी।

"कौन? नौकरानी? वह गँवारन? हमने ख़ुद अपनी मुसीबत बुला ली!"

"चुप," बाय उन पर चीख पड़ा।

उन्होंने कुछ नहीं सुना। वह उन्हें निरर्थक अपनी योजना समझाता रहा कि ख़ालनिसा नौकरानी ही रहेगी पर उसे कुछ देना नहीं पड़ेगा। बीवियों को उसका विश्वास नहीं हुआ।

ख़ालनिसा के लिए जीवन असह्य हो गया।

लगता दुकानदार की बीवियाँ अपनी सुधबुध गँवा बैठी थीं।

"तू चौपट हो जा! तेरी गर्दन टूट जाये! तेरी क़ब्र में आग लगे!"– ख़ालनिसा दिन भर यही सब सुनती रहती।

दिन-रात उस पर नज़र रखी जाती। निकम्मापन और ईर्ष्या की मारी दोनों काहिल औरतें अपनी एक आँख उस पर ही लगाये रहतीं। वे उसे मारतीं तो मारते जातीं जब तक कि हाथ न थक जायें। और ख़ालनिसा जिसके धैर्य की कोई सीमा न थी, ज़्यादातर रोती रहती।

"तेरी आँखें निकल आयें। चुप!" दोनों उस पर झपट पड़तीं।" मर्दों के कान में न पड़ जाये। मरती क्यों नहीं!"

जब कभी ख़ालनिसा कपड़े साफ़ करने लगती और मालिक की कमीज़ धुलाई-टब में डालती, उसे कभी भी "ठीक" नहीं बताया जाता। उसे तुरंत फटकारा और पीटा जाता। जब कभी जग में पानी लेकर मालिक के हाथ धुलाने जाती, इतनी बुरी तरह उसके हाथों से जग झपट लिया जाता जैसे वे उसके हाथ भी उखाड़ लेना चाहती हों।

छोटी बीवी सबसे ज़्यादा बकबक करती। वह ख़ालनिसा को धकेलकर कोने में ले जाती और अपनी सुखट्टी अंगुलियाँ चुभो देती।

"तो तुझे शौहर चाहिए? तुझ जैसी डाइन को शौहर के बारे में सोचने ही कौन देगा?"

वे विरल क्षण जब ख़ालनिसा को गालियाँ नहीं सुननी पड़ती और वह अकेली होती, उसके लिए अतिशय आनन्द के क्षण होते। लेकिन दोनों उसे चैन नहीं लेने देतीं। वे थककर बिलबिला उठतीं लेकिन वे किसी जंगली जानवर पर छोड़े गये कुत्तों की तरह उसे काट खाने को तत्पर रहतीं और खुद भी परेशान होती रहतीं।

तभी एक नयी मुसीबत ख़ालनिसा के सिर आ पड़ी। दुकानदार ने बीवियों की ईर्ष्या का मतलब अपने ढंग से लगाया। वे जितनी ख़ूँख़ार होती गयीं, वह जवान नौकरानी पर उतना ही कृपालु होता गया। वह उसकी ताकझाँक महसूस करती और हमेशा डरी रहती। रात में तनिक भी आवाज़ होने पर वह अपने बिछावन से उछल खड़ी होती – उसे लगता उसने मालिक के पैरों की आवाज़, उसकी फुफकार और होठों के चटखारे सुने हों।

उसकी आत्मा कराहती रहती, वह मदद के लिए प्रार्थना करती रहती।

कोई उसकी नहीं सुनता। वह अपना कुलनाम पूछनेवाले लोगों को ढूँढ़ निकालना चाहती लेकिन उन्हें ढूँढ़े तो कहाँ। फिर वह उनसे भयभीत भी थी। वहाँ ऐसा कोई न था जिससे वह मदद माँगती – ठीक उसी तरह जैसे उसकी ग़रीब माँ मर रही थी तो कोई मदद करनेवाला न था।

एक रात जब ख़ालनिसा अकेली थी, मालिक उसे अपने कमरे में ले गया।

वह किससे गिला करती? किससे हमदर्दी माँगती? हाँ, बूढ़ी औरतों से जो उससे नफ़रत करती थीं। उसका दुनिया में और कोई न था। वह उनके पैरों पर गिरी, उनके कपड़े और हाथ थामे, चूमे, अपने लिए क्षमा की भीख माँगी।

वह बता नहीं सकती, बाय की बीवियों ने उसे पीटा या कुछ और किया वह अपने में न थी – पीड़ादायक सन्निपात में बेसुध लोटपोट करती। स्नायविक विक्षोभ से वह तड़फड़ाती रही। यह कितनी देर रहा, उसे मालूम नहीं – एक घंटा, एक दिन या एक हफ़्ता।

युवावस्था ने संतुलित होने में उसकी मदद की। धीरे-धीरे वह इस आघात से उबर गयी और मत्क़ोवुल अपनी चमड़ी बचाने के भय से। पहले तो उसने अपनी बीवियों को उसकी सेवा के लिए बाध्य तक किया।

बाद में घर की गाड़ी फिर पुराने ढर्रे पर चल पड़ी। दोनों बीवियों ने ख़ालनिसा को अपने शौहर की तीसरी बीवी मानकर सन्तोष कर लिया लेकिन इसका ध्यान रखा कि वह उनकी सेवा करती रहे। यही काफ़ी था कि उन्होंने उसे मालिक के लिए जग भर पानी और उसके सूजे पाँव रगड़ने दिया।

दुकानदार दर्प और आत्मतुष्टि से फूला नहीं समाता: उसने इस मामले को बड़े सुन्दर ढंग से रफ़ा-दफ़ा किया था। नौकरानी को न तो बीवी के हक़ थे न बतौर नौकरानी की मज़दूरी पाने के। वह घर में एक दासी थी और हमेशा की तरह बिना शिकवे-शिकायत की।

एक बेटा पैदा हुआ। ख़ालनिसा की जिन्दगी पहले से कहीं ज़्यादा मुश्किल हो गयी। दूसरी परेशानियों के अलावा उसे अपने बच्चे को बड़ी बीवियों की नफ़रत से भी बचाना था। माँ बन जाने के बावजूद घर में उसकी कोई क़द्र न थी। इसके विपरीत, वह ख़राब नौकरानी बन गयी। वह पहले की तरह काम नहीं कर पाती – बच्चे के कारण उसका ध्यान

बँट जाता। और तो और, मालिक को उसे और बच्चे दोनों को खिलाना लाभदायक नहीं लगता...।

बीवियों की मलामतों से दुकानदार की नाक में दम आ गया। इस बार उनका तीर ठीक निशाने पर लगा था। मत्क़ोवुल मक्खीचूस और लालची था। लाज़िमी तौर पर वह ख़ुद को बर्बाद नहीं होने दे सकता। हिसाब लगाने पर जब उसने पाया कि नौकरानी पर पहले से ज़्यादा ख़र्च आ रहा है, उसने बेहिचक उसे और उसके बेटे को अपने घर से निकाल दिया।

यह उसकी भूल थी। बेघर और क्या करे, इस से अनजान ख़ालनिसा को आख़िरकार एक पनाह मिल गयी। उसे जुराख़ाँ मिल गयी।

...जुराख़ाँ ने अपना मुक़दमा ख़त्म किया। ख़ालनिसा को वह कैसे मिली और नौकरानी ने कैसे सचाई और इंसाफ़ पाया, उसने इसका वर्णन किया।

"तो? समझे?" यफ़ीम दनीलोविच ने फ़ैसले पर विचार करने के लिए जजों के चले जाने के बाद एर्गश से पूछा। "समझ लिया, हमारा तुम्हारा कर्त्तव्य क्या है?"

"मैं अपनी राय आपको बता चुका हूँ," एर्गश ने अपनी मुट्ठियाँ भींचते हुए जवाब दिया। "हमें बायों के घोंसलों का जहाँ औरतों की इज़्ज़त लूटी जाती है, निरंकुशता का राज है, मज़दूरों का ख़ून चूसा जाता है, ख़ात्मा करना होगा।"

"यह काफ़ी नहीं, एर्गश, काफ़ी नहीं," यफ़ीम दनीलोविच ने उसे बीच में ही रोकते हुए कहा। "तुम्हारी बातें भावावेशपूर्ण हैं, तुम क्रोधान्ध हो – तुम दूर तक नहीं देख पाते। दूर से दूर और साफ़-साफ़ देखना सीखो।"

"देखने के लिए और है क्या?"

"यही कि तुमसे और अधिक की माँग है। ख़ालनिसा को मत्क़ोवुल से बचाना ही काफ़ी नहीं। हमें उसके लिए एक नये जीवन का निर्माण करना चाहिए। निर्माण करो, प्यारे एर्गश, जैसे हम कोई घर बनाते हैं। अगर हम कम्युनिस्ट हैं तो हमें इस लायक़ बनना ही होगा।"

तेरहवाँ भाग

शिक्षक नईमी संतप्त था। जहाँ कहीं वह जाता, कल्पना में उसके साथ चलता, मज़बूती से उसकी कोहनी थामे चाय-विक्रेता दिखाई देता। अंधेरा होते ही हर दरवाज़े पर उसकी कल्पना में कोई नौजवान आदमी किसी औरत की पीठ में चाकू मारता दिखाई देता। ऐसे क्षणों में शिक्षक ख़ुद अपने हाथों को विह्वलता से देखने लगता... लेकिन उसके होंठ दुआ के अन्दाज़ में अनजाने हिलने लगते:

"तुम्हें तो कुछ भी नहीं मालूम? है न..."

अपना अकेलापन उसे पीड़ित करता। वह क़ुद्रतुल्लाह के घर जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाता। कच्चे धागे से गर्त में लटकते लोगों को अपनी उपस्थिति से बोझिल करने में क्या तुक है। मत्क़ोवुल की दुकान तख़्ते लगा, कील ठोक बन्द की जा चुकी थी। मुक़दमे के बाद नौकरानी को बाय से चार साल की मज़दूरी मिल गयी थी। यह उसके लिए ख़ुशक़िस्मती थी जब कि नईमी के लिए एक घर का दरवाज़ा और बन्द हो गया जहाँ वह चाय की चुस्कियाँ लेता इस्लाम की नियति पर बातें करने का आनन्द लेता।

उसे स्कूल में भी शान्ति न थी। अपने छात्रों के सामने जिह्वा-विलास से अपने आत्माभिमान को तुष्टि देकर जी हल्का कर लेता। जिस तरह एक बार उसने मुसलमानों की भीड़ के सामने किया था, वैसे ही कक्षा में अतिशयोक्तिपूर्ण जोशीले भाषण करता। उसकी जो इच्छा होती, वह कहता। लेकिन हाल-फ़िलहाल से उसकी बातें वहाँ भी ध्यान से नहीं सुनी जातीं। नईमी ने लड़कियों की ओर से प्रच्छन्न, मौन विरोध महसूस किया। स्कूली लड़कियाँ उसे भांप लेंगी, यह सोचना तो बेकार ही था। तो भी, उसे चौकस रहना था।

खेल के समय और स्कूल के बाद लड़कियाँ बशारत के पास जमा हो जातीं। वह कभी अकेली न होती: उसकी स्कूली सहेलियाँ उसकी बातें बड़ों की बातों की तरह सुनतीं। वह सहकारिता की अध्यक्षा की बेटी थी जिसकी प्रसिद्धि और शक्ति किंवदन्तियों की तरह फैली थी। अनाख़ाँ को जान से मार डालने की कोशिश के बावजूद लड़कियाँ हिम्मत हारकर भाग खड़ी नहीं हुई थीं। इसके विपरीत, ऐसा लगता जैसे यह उन्हें बशारत के और क़रीब ले आयी। यह बात समझ से बाहर थी!

और ख़ुद बशारत अभी हाल से बहुत हिम्मती हो गयी थी। वह अपनी माँ के चरणचिह्नों पर चल रही थी। नईमी यह जानकर दहल उठा कि बशारत रूसी बोल और पढ़ सकती है। उसने कई बार उसे एक छोटी किताब की बातें स्कूली सहेलियों को बड़े उत्साह और अध्यवसायपूर्वक समझाते देखा था। किताब वह किसी को नहीं देती। नईमी उस किताब को जानता था। इस में कोम्सोमोल के नियम लिखे थे। उसने उसके हाथों में एक और किताब देखी। यह गोर्की की 'माँ' थी। यह लो, क्या ज़माना आ गया है...

शिक्षक ऐसे ही लज्जास्पद पूर्वाभास से पीड़ित था कि इस लड़की के कारण उसकी स्थिति तीन-तेरह की हो जायेगी, वह उसके लिए सर्वनाश बन जायेगी। शायद क़िस्मत को भी यही गवारा था कि यह बातें उसकी उम्मीद से भी जल्दी हो जायें।

आम तौर से पाठ के दौरान नईमी की मेज़ और छात्राओं के बीच सफ़ेद बोज़ का परदा डाल दिया जाता। लड़कियाँ इसे शिक्षक का चचवान कहतीं। इस बार भी परदा गिरा था। पाठ पूर्ण मार्यादित ढंग से शुरू हुआ।

हाज़िरी के दौरान नईमी बशारत से उसकी माँ का हाल पूछ बैठा। दरअसल वह हर पाठ के दौरान श्रद्धेया बहन अनाख़ाँ के स्वास्थ्य के बारे में पूछता और उसकी बेटी से कृतज्ञता के शब्द सुनकर राहत की साँस लेता।

लेकिन आज बशारत ने परदे के पीछे से एकाएक जवाब दिया:

"दुश्मन मेरी माँ का ख़ून कर डालना चाहते थे।"

"तुम्हारी आवाज़ में," नईमी ने पितृवत झिड़की के साथ कहा, "मुझे ग़ुस्से और नफ़रत का कम्पन महसूस हो रहा है। क्या यह सच है?

बशारत ने जैसे उसका सवाल ही नहीं सुना।

"कुछ भी हो," उसने गर्व से कहा, "मेहनतकश वर्ग को किसी चीज़ का डर नहीं। मेहनतकश वर्ग से ज़्यादा ताक़तवर कोई नहीं!"

एक नाख़ुशगवार, जटिल चुप्पी कमरे में छा गयी। नईमी ने धैर्य रखने की कोशिश की। एक लड़की से बहस शुरू करना बेवक़ूफ़ी होगी। उसे घबड़ाना नहीं चाहिए। वह उसे और दूसरी लड़कियों को अपनी बातें सुनने के लिए मजबूर कर देगा और अपनी अभीप्सित बातें उनके दिमाग़ में बैठा देगा।

"अपने पिछले पाठ में," परदे के सामने फ़र्श पर चहलक़दमी करता, पक्की सिलाईवाले सुंदर पीले बूट चरमराता, उसने कहना शुरू किया, "हमने आपको अपने ज्ञानी विद्वान और महान कवि क़ुलख़्वाजा अहमद यस्सवी * के अद्वितीय और विरल गुणों के बारे में बताया था। वह एक सर्वाधिक उदात्त चरित्रवाले मुसलमान थे जिन्होंने ग़रीबों व अनाथों के प्रति दया-भाव दिखाया, उनकी ज़रूरतों और पीड़ाओं के प्रति हमदर्दी दिखायीं और ख़ुद जीवन भर रोते-सुबकते रहे। जब लोगों के दुख-दर्द पर वे उदासीन नहीं रह पाते और नेक सलाह देते। सुनिये मैं उनकी एक नज़्म पढ़ता हूँ:

दर्द सारे सह लो,
हतक करती है तल्ख़ी
ज़ालिम को,
सब्र करो ख़ुद।
गर पड़े चाँटा दायें पर,
कर दो बायाँ गाल आगे को,
न जवाब दो ख़ुद।
गर ज़ालिम पेश आये नाहमवारी से,
कहो और नाहमवार बनने को,
ख़ामोश रहो ख़ुद।"

---

* क़ुलख़्वाजा अहमद यस्सवी – (जन्म ११०५, मृत्य ११६६) एक धार्मिक रहस्यवादी कवि जिन्होंने बुराइयों का मुक़ाबला न करने और क़िस्मत के सामने घुटने टेक देने की शिक्षा दी।

नईमी ने इन पंक्तियों को अत्यन्त भावावेशपूर्ण घिघियाती और झींकती आवाज़ में पढ़ा। उसने ग़ौर किया: लड़कियाँ पंक्तियों को लिख रही थीं। उसने चतुराई भरी मुसकान के साथ आगे कहा:

"महान क़ुलख़्वाजा अहमद ने कहा: धरती पर लोग एक-दूसरे को कैसे चोट पहुँचाते हैं, मेरी आँखें यह न देखें"—और जब वह पैग़ंबर की उम्र के हुए धरती के गर्भ में सात तह अन्दर उतर गये और हरेक साल एक किशमिश खाकर एकांतवास करने लगे। और यही उन्होंने लिखा है:

ओ, मुसलमानो, भाइयो,
मैं चला गया हूँ,
पार सात तह के..."

"मैं एक सवाल पूछ सकती हूँ?" बशारत ने एकाएक कहा।

नईमी चौंक पड़ा: लड़की की आवाज़ बेहूदे ढंग से तेज़ थी।

"पहले हम अपने निष्कर्ष लिख लें" शिक्षक ने हल्के-हल्के साँस लेते हुए कहा। "लिखो: क़ुलख़्वाजा अहमद यस्सवी, क़ाबिलों में सबसे क़ाबिल, दुनिया में ग़रीबों के सबसे बड़े रक्षक और हमारे सबसे बड़े लेखक रहे हैं।"

"यह सच नहीं!" बशारत चीख़ पड़ी। "मैं इसे नहीं लिखूंगी। सबसे बड़े लेखक हैं मक्सीम गोर्की!"

कक्षा लड़कियों की आवाज़ों से भर गयी।

नईमी को अपना दम घुटता महसूस हुआ। कक्षा को शान्त करने की कोशिश में वह खँखारा।

"लड़कियो, लड़कियो," उसने नम्रता से कहा। "छि: छि:। यह बुरी बात है। तुम्हारा पहला कर्त्तव्य शिष्ट और नम्र बनना है, तुम्हें मालूम है, विद्यालय विज्ञान और जागृति का मन्दिर है। और तुम्हें याद रखना चाहिए कि तुम्हारे शिक्षक के शब्द तुम्हारे लिए क़ानून है। जब मैं स्कूल जाता था जो कुछ बताया जाता, सुनता और लिखता था। फिर मैं तुम्हें सार्वजनिक शिक्षा की कमिस्सारियत के निर्देशनों के अनुसार पढ़ा रहा हूँ। सोवियत सरकार से मुझे निर्देश मिलते हैं।"

कक्षा शान्त पड़ गयी।

"हाँ वास्तव में मक्सीम गोर्की नाम का एक लेखक है," नईमी ने भौंहें चढ़ाते हुए माना: "लेखक तो है लेकिन उससे हमारा क्या वास्ता? वह हमसे बहुत दूर रहता है और हमारे बारे में नहीं लिखता। वह तुर्किस्तान, यहाँ के ग़रीबों के जीवन के बारे में न तो जानता है न जान सकता है। वह उनके ग़म और आँसू कैसे समझ सकता है?"

जब चिड़िया खेत चुँग गयी, शिक्षक को अहसास हुआ वह एक मामूली लड़की से बहस में उलझ गया है। ख़तरनाक बात! खीझ भरी भूल। परदे से उसने बशारत को अपनी सीट से उछलते देखा।

"यह सच नहीं! यह सच नहीं!" वह ज़ोर से निर्भीकतापूर्वक चीखी। "मक्सीम गोर्की ने हमारे पिताओं के संघर्ष के बारे में लिखा है..."

"साबिर की बेटी," नईमी आत्मनियंत्रण खोता हुआ चीखा। उसे अपनी आवाज़ पर ही हैरत हुई। परदे के सामने रुककर वह तीखे लहजे में कूजता हुआ बोला:

"मुझे तुम्हारे व्यवहार पर आश्चर्य है। हमारे पिताओं... बड़ी हिम्मत की कहने की। अगर मैं भूल नहीं कर रहा तो तुम हमारे अविस्मरणीय मुल्ला साबिर की बेटी हो। लेकिन मक्सीम गोर्की रूसियों के बारे में लिखता है। तुम भूल गयी हो कि तुम एक उज़बेक की बेटी हो। हाँ, कहीं ग़लती से तुम्हारी पैदाइश किसी रूसी से न हो गयी हो..."

"आह!" भय और लज्जा से परदे के पीछे लड़कियाँ चीख पड़ीं।

झटके से बशारत ने अपना चेहरा हाथों में छुपा लिया, अपने कन्धे ऐसे झुका लिये जैसे चाँटा मार दिया गया हो और फूट-फूटकर रोने लगी।

शिक्षक नईमी ने अपनी ज़ुबान रोक ली। वह सीमा लाँघ गया था। घंटी ने उसे उबार लिया। पाठ ख़त्म हो गया।

"तुरंत कॉमन रूम में जाओ," अपनी घबड़ाहट छुपाने के लिए बशारत को नईमी ने आदेश दिया और रोब से बाहर चला गया।

वह अपने किये पर भयभीत था: कक्षा के बाहर बहस नहीं चलायी जा सकती। उसकी भयानक लापरवाही थी... बिना देर किये लड़की के प्रति सहानुभूति दिखाना और उसे शान्त करना ज़रूरी था।

कुछ ही मिनटों में कॉमन रूम नईमी की छात्राओं से भर गया। बशारत उन्हें लायी थी।

"मैंने साबीरोवा को बुलाया था," नईमी ने कठोरता से कहा। वह दूसरों को घर भेज देना चाहता था लेकिन शब्द उसके गले में अटक गये।

सहेलियों के पीछे से बशारत सामने आ खड़ी हुई और आँसुओं से तर चेहरे से चचवान उटा दिया।

"बेटी, मेरी बच्ची," नईमी ने कहा, "तुम्हें ख़ुद पर शर्म आनी चाहिए!"

"नहीं। मुझे नहीं, आपको शर्म आनी चाहिए," बशारत ने इस तरह शिक्षक को जवाब दिया जैसे किसी बराबरीवाले से बोल रही हो। "मेरे माँ-बाप के बारे में इस तरह बात करने के लिए आपको शर्म आनी चाहिए। मेरे पिता मेहनतकश वर्ग के थे! उसी तरह यफ़ीम दनीलोविच और साफ़िया बारीसोवना भी हैं जो उज़बेक न होने के बावजूद दुनिया के सर्वश्रेष्ठ लोग हैं। मेरी माँ से उनके बारे में पूछिये। मैं उसे बताऊँगी, आपने किस तरह उसका अपमान किया है। जो कुछ आपने कहा, वह झूठ है, झूठ है।"

क़िस्मत का फेर, प्रधानाध्यापिका और दूसरी कक्षाओं की शिक्षिकाएं कमरे में आ पहुँचीं। नईमी ने ख़ुद को बग़लें झाँकते महसूस किया। लाख सिर पाँव मारने पर भी वह ख़ुद को नहीं बचा पाया। बहुत से गवाह थे।

लड़कियों में दृढ़ एका हो गया। बशारत अपना चेहरा ढंके बिना बोली और इससे उसकी सहेलियाँ न घबड़ायीं, न डरीं। नईमी ने अपनी ज़िन्दगी में ऐसा दृश्य कभी नहीं देखा था।

नाराज़गी का बहाना करके उसने लड़कियों को बरगलाने की कोशिश की। उसने शिक्षक के अधिकार, अनुशासन, कक्षा में शिष्टता की बातें कहीं, लेकिन सब बेकार। लड़कियाँ उसकी दलीलें इन शब्दों से काट देतीं: यह सच नहीं। चापलूसी भी काम न आयी। लड़कियों ने उसे माफ़ नहीं किया।

"अब मुझे बताइये," प्रधानाध्यापिका ने एकान्त होने पर नईमी से पूछा, "आप हैं क्या? शिक्षक या उत्तेजना फैलानेवाले?"

* * *

लड़कियों की शोरगुल करती, प्रफुल्ल भीड़ ने बशारत को घर तक छोड़ा। अब वे एक सच्ची मित्रता में बंध चुकी थीं – ऐसी मित्रता में जो एक कठिन परीक्षा से गुज़र चुकी थी। बशारत को अब्दुसमत द्वारा कोम्सो-मोल का सौंपा गया दायित्व पूरा करने में अब कोई सन्देह न रह गया था।

उसने सड़क पर भी परंजी नहीं डाली और उसे बग़ल में दबाये घर ले आयी।

अनाख़ाँ खिड़की के पास लेटी थी, उसके कन्धे पर कस के पट्टी बँधी थी। पट्टी ताज़ा थी जिसका मतलब था डॉक्टर आज उसे देखने आया था। तुर्सुनाय बरामदे में गाकर, मण्डली के पाठ के लिए अपनी तैयारी कर रही थी।

जल्दी से खाना गर्म करके जिसे पड़ोसिन ने तैयार कर दिया था, बशारत ने चम्मच से माँ को खिलाया।

"क्या आप बेहतर महसूस कर रही हैं, माँ? आपकी आँखें चमक रही हैं..."

"मैं जल्दी ही चलने-फिरने लगूँगी, मेरी बच्ची," अनाख़ाँ ने जवाब दिया। "सहकारिता की याद आती है। मुझे लगता है, कोई असाधारण बात वहाँ चल रही है। वे मुझे नहीं बता रहे। तुम भी अपने बारे में कुछ नहीं बता रही। मैं देखती हूँ, तुम अपनी माँ से ही छुपा रही हो। क्यों?"

"मैं छुपा नहीं रही। कोई बात दबाकर नहीं रख रही। अगर मैं आपको बताऊँ, आप परेशान तो नहीं होंगी?" बशारत ने तमतमाते हुए कहा।

अनाख़ाँ ने हल्के से उसके सिर पर हाथ फेरा।

फिर बशारत ने उसे स्कूल में हुई घटना के बारे में बता दिया।

अनाख़ाँ ने उसकी बातें न तो आश्चर्य और न तो अविश्वास से सुनीं। उसने बशारत को कुछ बातें फिर से दुहराने के लिए कहा।

"क्या? तुमने उससे क्या कहा?"

और बशारत ने वे बातें बार-बार दुहरा दीं जो उसने कक्षा और कॉमन रूम में कही थीं।

"रुको, रुको! तुमने अपना चेहरा कैसे उघारा? ठीक उसके सामने?" माँ ने ऐसे पूछा जैसे नाराज़ हो।

"लेकिन माँ, परंजी के बिना बहस करना कहीं ज़्यादा आसान था।" लड़की ने जैसे अपनी सफ़ाई देते हुए जवाब दिया।

उसी पल उसने माँ की आँखों में आँसू देखे और सहम गयी।

"देखिये मैंने आप को परेशान कर दिया न। मैंने यह सब आपको बताया ही क्यों?"

आवेगपूर्वक अनाखाँ ने लड़की को अपने से इतने ज़ोरों से चिपका लिया कि वह कन्धे के दर्द से कराह उठी।

"मेरी प्यारी बिटिया – मेरी नन्हीं शिक्षिका," उसने धीमे से कहा। "इस शिक्षा के लिए शुक्रिया। तुम ठीक कहती हो। बहस करते समय हमें अपना चेहरा खुला रखना चाहिए। हम साथ ही यह परंजी डालते रहे और साथ ही इसे फेंक भी देंगे।"

"माँ! क्या आप सच कह रही हैं?"

"क्या तुम समझती हो, मुझे तुमसे पीछे रहने में शर्म नहीं आयेगी? मैं बारह साल की उम्र से इसे पहन रही हूँ। मेरे लिए इसे फेंकना तुमसे कहीं अधिक मुश्किल है। लेकिन जिस दिन इससे मेरा ख़ून बहा, वह परंजी में मेरा आख़िरी दिन था। अगर तुम्हारे पिता ज़िन्दा होते, हम दोनों की पीठ ठोंकते।"

"तुर्सुनाय!" बशारत हर्षातिरेक से चीख पड़ी। "तुर्सुनाय! क्या तूने सुना?"

उस दिन एक और आश्चर्य अनाखाँ की प्रतीक्षा में था। एर्गश सुल्तानोव को अपने साथ लेकर उससे मिलने जुराखाँ, साफ़िया बारीसोवना और यफ़ीम दनीलोविच आये। अभी उन्होंने दहलीज़ पार ही की थी कि अनाख़ाँ से सुयूंची की माँग की।

"कॉमरेड अध्यक्षा, आप की सहकारिता बस कुछ महीनों की मेहमान है," यफ़ीम दनीलोविच ने कहा। "यह अपना मक़सद पूरा कर चुकी है और अब हम आगे बढ़ रहे हैं।"

"कैसे? कहाँ?"

"बहुत आगे। सरकार ने हमारे शहर, नैमन्चा में कपड़ा मिल बनाने का फ़ैसला कर लिया है। इवानोवो-वज़्नेसेंस्क मशीनें भेज रहा है।"

"मैंने सोचा भी नहीं था, मुझे इतनी जल्दी अपने शहर के बारे में सुनने को मिलेगा" साफ़िया बारीसोवना ने आगे कहा। "और वह हमारी ओर हाथ बढ़ा रहा है, अन्या।"

अनाख़ाँ ने बशारत को बुलाया और उसकी आँखों में खोजपूर्ण निगाहों से देखते हुए पूछा :

"कहो बेटी, क्या तुम समझ रही हो, हम किसके बारे में बातें कर रहे हैं? क्या तुम्हें मालूम है कौन हमारी ओर हाथ बढ़ा रहा है?"

लड़की ने तालियाँ बजायीं:

"मैं कल स्कूल में लड़कियों को इसके बारे में बताऊँगी। मैं सबों के सामने कक्षा में... शिक्षक को बताऊँगी।"

"तुम उसे कक्षा में नहीं देख पाओगी," जुराख़ाँ ने कहा। "स्कूल में आज का पाठ उसका आख़िरी था। तुम्हें दूसरे, बहतर शिक्षक मिलेंगे।"

* * *

उस शाम यूरोपीय कपड़ों में वही आदमी उससे मिलने आया जो अनाख़ाँ पर हुए हमलेवाली रात आया था। आँखों से उसने लड़कियों की ओर इशारा किया। अनाख़ाँ ने उन्हें आँगन में भेज दिया।

"क्या हमलावर की कही बात आपको याद है?" नौजवान ने पूछा।

"हाँ। 'न तुम्हें न मुझे'।"

"आपके ख़्याल से इसका क्या मतलब है।"

"मैं इस बारे में सोचती रही हूँ। लेकिन मैं इनका मतलब नहीं निकाल पायी।"

"माफ़ कीजिए," नौजवान ने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहा, "लेकिन आप मुझे एक नाज़ुक सवाल पूछने की इजाज़त देंगी। आप एक विधवा हैं। क्या आप किसी ऐसे आदमी को जानती हैं जो दूसरी औरतों के मुक़ाबले आप पर विशेष ध्यान दे रहा हो?"

अनाख़ाँ के चेहरे पर थकी मुस्कान आ गयी। आगन्तुक ने आगे कहा:

"मेहरबानी करके ऐसा मत सोचिये, मेरा इरादा यह प्रकट करना है कि आपकी जान लेने की कोशिश ईर्ष्यावश या इसी तरह के दूसरे कारण से की गयी। आपको समझना चाहिए, दुश्मन हमेशा ऐसे कमज़ोर और आवारा लोगों को अपना मोहरा चुनता है जो इस पर सन्देह नहीं कर पाते।"

"नहीं, मुझे ऐसा कोई आदमी नज़र नहीं आया," अनाख़ाँ ने जवाब दिया।

नौजवान ने अव्यक्त रूप से अपना सिर हिलाया।

"क्या यह सच है कि आपकी बड़ी बेटी आपकी परंजी पहनती है?"

"हाँ।"

"प्राय:?"

"हाँ।"

"वह वयस्क लड़की है, शादी की उम्र की?"

"यह सच है," अनाख़ाँ ने तेज़ी से कहा,उसके मन में असंख्य आशंकाओं ने घर कर लिया।

"बताइये, स्कूल से वह कब घर आती है?"

"चार बजे।"

"हमेशा?"

"कभी-कभी देर हो जाती है। लेकिन विरले ही।"

"और हमले के दिन? क्या आपको मालूम है, वह कहाँ थी?"

"महिलाओं के क्लब में। नहीं। मैं ग़लत कह गयी, रेल-कर्मचारी कलब में।"

"अकेली?"

"अपनी बहन के साथ।"

"क्या आपको पूरा विश्वास है?"

"निस्सन्देह। उसकी बहन ने कंसर्ट में गाया था। वे इकट्ठे घर आयीं।"

"क्या आपकी बेटी आपको बताये बिना या इजाज़त बिना घर से कभी बाहर रही है?"

"नहीं, कभी नहीं। ऐसा कभी नहीं हुआ।"

"आपको उस पर किसी तरह का सन्देह नहीं?"

"नहीं। बशारत एक बहादुर लड़की है लेकिन इसके साथ ही आज्ञाकारी और नेक चलन।"

"एक बार और माफ़ी चाहूँगा। मुझे उससे यही नाजुक सवाल, जो मैंने आपसे पूछे, पूछने की इजाज़त दीजिए।"

अनाख़ाँ हँस पड़ी।

"वह आपकी बात नहीं समझ पायेगी।"

"शायद। लेकिन आप जानती हैं हमारे यहाँ बहुत से लोग हैं जो इसकी तनिक भी परवाह नहीं करते कि कोई औरत या लड़की उन्हें समझती है या नहीं। क्या बशारत को ख़ुद अपने संबंध में कुछ सन्देहास्पद लगा?"

"उसने मुझे कभी कुछ नहीं बताया।"

"और आप? क्या आपने कुछ महसूस किया?"

"नहीं।"

"क्या ग्रापने मुझे सब कुछ साफ़-साफ़ बताया है?"

"मैं ग्रापसे क्यों कुछ छुपाने लगी?"

ग्रागन्तुक सोचता हुग्रा चुप हो गया, फिर एकाएक पूछा:

"क्या ग्राप मुझे यह बताना चाहती हैं कि कोई ग्रापकी लड़की का हाथ माँगना चाहता है, ग्राप नहीं जानतीं?"

"यह मैंने पहली बार सुना है," ग्रनाख़ाँ ने उलझन से कहा। "ग्राप मज़ाक कर रहे हैं। कौन है वह?"

"क़ुद्रतुल्लाह, नयी ग्रार्थिक नीतिवाला।"

ग्रनाख़ाँ हँसने की हिम्मत नहीं कर पायी, वह बहुत चकित ग्रौर भयभीत थी।

"ग्रापके ऐसा सोचने का कारण?"

"जब मौक़ा मिले, दादी ग्रंज़िरत से पूछिये। लेकिन मेरा ख़्याल है न पूछिये तो ग्रच्छा। इस बारे में किसी से बात मत कीजिए। यही ठीक रहेगा। ग्रपने सन्देह की बात भी किसी को मत बताइये।"

"क्या ग्राप समझते हैं, मेरी बेटी ख़तरे में है?"

"ग्रब नहीं। नहीं, मेरा ख़्याल है ग्रब ऐसा नहीं होगा।"

"इसका मतलब है, वह ख़तरे में थी?"

"मुझे सन्देह है। निशाना ग्राप थीं।"

"फिर ग्राप बशारत का नाम क्यों ले रहे हैं?"

"क्योंकि वह ग्रापकी बटी है।"

"लेकिन इस ऊटपटाँग शादी ग्रौर मुझे चाकू मारने में क्या संबंध?"

"ग्रब तक मैं सिर्फ़ ग्रनुमान ही कर सकता हूँ।"

ग्रनाख़ाँ पीली पड़ गयी ग्रौर ग्रपने तकिये पर लेट गयी।

"मैंने ग्रापको थका दिया," ग्रागन्तुक ने उसकी ग्रोर हमदर्दी से देखा ग्रौर दृढ़ता से कहा: "मैं झूठे दिलासा देकर ग्रापको शान्त नहीं करना चाहता। मुझे ग्रापके साहस पर विश्वास है। जल्दी ठीक हो जाइये... मुझे ग्रापको यह देने के लिए कहा गया है।" नौजवान ने ग्रपनी हथेली ग्रागे बढ़ायी।

ग्रनाख़ाँ दहल उठी: उसकी हथेली पर एक छोटा रिवाल्वर था। ग्रनाख़ाँ को पहली बार यफ़ीम दनीलोविच के हाथ में इसे देखकर ग्रपने भय की याद ग्रा गयी। ग्रब उसे ख़ुद ग्रपने हाथ में लेना होगा।

"मैं इसे चलाना नहीं जानती," उसने कहा।

"और आप भयभीत हैं," नौजवान ने कहा। "लेकिन आपको सीखना होगा। जुराख़ाँ आपको सिखायेगी। उसके पास एक ठीक ऐसा ही रिवाल्वर है।"

आगन्तुक ने रिवाल्वर को अनाख़ाँ के पास कम्बल पर रख दिया।
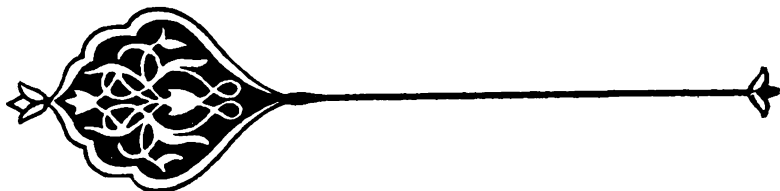
चौदहवाँ भाग

बहुत साल से या यूं कहिये, पेतेरबुर्ग विश्वविद्यालय से स्नातक होने के बाद से ही, इंजीनियर सेर्गेय ल्वोविच दोब्रोख़ोतोव ने अपना जीवन बेकार और निरुद्देश्य मान लिया था।

"मेरा जन्म और मेरी शिक्षा निर्माण के लिए हुई लेकिन मेरी क़िस्मत में भयानक विनाश के युग में रहना बदा है। यही मेरे जीवन की त्रासदी है," वह अपनी निष्क्रियता को वाजिब सिद्ध करने की कोशिश में ख़ुद से कहता।

कड़ुवाहट से वह अपने छात्र-जीवन के सपनों के बारे में सोचता। उनका साकार होना बदा न था। कभी ऐसा भी समय था जब नोवगोरोद के निम्न मध्यम वर्ग से आये उसके बूढ़े माँ-बाप सेर्गेय को गिरजाघरों, प्रसिद्ध सेतुओं और विजय-तोरणों के भावी निर्माता के रूप में देखा करते थे। सीधे-सादे, सहृदय... सेर्गेय अपने माँ-बाप की क़ब्र पर इस भय से जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाता कि कहीं वे अपने जर्जर ताबूतों से निकलकर उसकी तुच्छता और नीचता प्रकट करते हुए लज्जित न कर दें।

दो दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएँ उसके जीवन में एक साथ हुईं: उसकी शादी और विश्व युद्ध।

उसने युद्ध की पूर्ववेला में अमीर हुए एक वकील शेयरहोल्डेर वर्नाव्स्की की बेटी से शादी की। रिम्मा वर्नाव्स्काया एक ख़ूबसूरत लड़की और

स्पृहणीय दुल्हन थी। सेर्गेय ने उसे अपने सपनों से मोह लिया लेकिन जल्दी ही यह स्पष्ट हो गया कि वह रिम्मा और उसके परिवार के उपयुक्त नहीं बन सकता।

उसकी बीवी ने लाभदायक सैनिक सट्टेबाज़ी कारोबार में हाथ बँटाने की उसकी अयोग्यता और अनिच्छा के कारण उससे घृणा की। रिम्मा का बड़ा भाई कमिसरी में एक उच्चाधिचकारी था और बाप-बेटा दोनों हाथ से धन बटोर रहे थे। वर्नाव्स्की परिवार सिपाहियों के ख़ून से दौलत इकट्ठी कर रहे थे। वे दिन दूना, रात चौगुना फूलते-फलते जा रहे थे। जब कि दूसरी ओर सेर्गेय अपनी बीवी के दहेज में एक पाई भी नहीं जोड़ पाया। रिम्मा अपने बाप और भाई की तरह उसे अपमानित करने लगी। वे उसे मानवतावादी और शान्तिवादी कहते। उनके होठों पर यह शब्द गाली की तरह प्रतीत होते।

"आप विध्वंसक, वहशी लोग हैं," वह ग़ुस्से से काँपते हुए उन्हें जवाब देता था। "रूस का आपने क्या हाल कर दिया है? यह धरती राख और खंडहरों से भर गयी है। हे भगवान, इन वर्षों में मैं एक मामूली मकान तक नहीं बना पाया जहाँ लोग रह सकें, अपने बच्चों का पालन-पोषण कर सकें।"

एक-दूसरे से आँखें चार करते हुए वर्नाव्स्की परिवारवाले मन ही मन सिर्फ़ हँसते रहे। सेर्गेय के श्वसुर ने अपने हाथ इस तरह मले मानो उन्होंने अपनी तारीफ़ सुनी हो।

क्रान्ति ने अचानक इन व्यापारियों को धर दबोचा लेकिन यह इन्हें नष्ट नहीं कर पायी। वे दूरदर्शी थे और उनका खाता एक फ़ांसीसी बैंक में था। अब उन्हें बस किसी तरह पेरिस तक पहुँच भर जाना था।

१९१८ में वर्नाव्स्की परिवार ने बोल्शेविक रूस से भागने की योजना बनायी। सेर्गेय के अपने साथ चलने का उन्हें पूरा विश्वास था। सच में इस हतभाग्य दार्शनिक के पास वहाँ करने को और था भी क्या जो अपने छात्र-जीवन की मरीचिका से भी छुटकारा नहीं पा सका था? पेरिस, यूरोप – हो सकता है उसे होश में ला दे...

सेर्गेय के लिए उनके पीछे अकेले नोवगोरोद में रह जाना कठिन था। वर्नाव्स्की परिवार में बैठे-ठाले बिताये इन वर्षों ने उसे जीवन से दूर, कूपमण्डूक बना दिया था। न दोस्त न रिश्तेदार। फिर भी वह गया नहीं।

चाहे जैसा भी हो, रूस को छोड़ जाना विश्वासघात था, उसने सोचा। जुदाई के समय रिम्मा के आँसू फूट पड़े। नफ़रत से उसने उसे परे धकेल दिया। बदमाश – वर्नाव्स्की परिवार को कहा गया सेर्गेय का यह अन्तिम शब्द था। उन्होंने जवाब में उसे बेवक़ूफ़ कहा। इसके बाद वे चले गये।

वर्नाव्स्की परिवार कोई चिह्न छोड़े बिना चला गया। उनकी याद दिलाने के नाम पर सेर्गेय के पास कुछ रेखांकन सेट, बीवी और श्वसुर से मिले जन्म दिन के उपहार बच गये। रेखांकन सेट बिलकुल नये थे, उनका कभी इस्तेमाल नहीं हुआ था और वे उसका मज़ाक उड़ाते प्रतीत होते: वे उसकी दयनीय निष्क्रियता की कहानी सुनाने को दिये गये थे।

अभाव से निर्बल पड़े अधभूखे फटेहाल मज़दूरों को देखकर सेर्गेय में कड़ुवाहट भर जाती। उसे लगता, वे शहर में निरुद्देश्य सुनसान कारख़ानों की इमारतों और आवासों में मारे-मारे फिरते हैं। लकड़ी से बनी हर चीज़ जिस पर उनके हाथ पड़ जाते, उसे ईंधन के काम में लगा दिया जाता। दोब्रोख़ोतोव में उनके प्रति एक साथीपन की भावना थी लेकिन वह उन्हें समझ नहीं पाता था। वह उन्हें क्रान्ति के नाम से पुकारी जाने-वाली एक भयानक तबाही का वाहक और बलि का बकरा मानता।

मज़दूरों ने ध्वस्त कारख़ाने को फिर से बहाल करना शुरू किया। उन्हें इन खण्डहरों से फिर महल बनाने का पूरा विश्वास था। कुल मिलाकर, उन्हें पूरे रूस का काया-पलट करने का विश्वास था। इस विश्वास ने दोब्रोख़ोतोव पर असर दिखाया। उसे ख़ुद अपने संजोये सपने याद आ गये। वह अपने अन्दर उन्हीं की तरह जीवन के बेहतर और उज्जवल बना डालने का विश्वास पैदा करना चाहता था – लेकिन अपने ख़्याल से वह विश्वास और उम्मीद से परे जा चुका था, उसमें यह माद्दा रह ही नहीं गया था।

अब शहर के बाज़ार में कारीगर घर की बनी सिगरेट लाइटर नहीं बेचते और कारख़ाने में पूरे जोर-शोर से काम चल रहा है। अधिकाधिक लोग वहाँ जमा हो रहे थे और दोब्रोख़ोतोव ने अपने अविश्वास के बावजूद ख़ुद को उनकी ओर खिंचा महसूस किया।

एक दिन दो आदमी उससे मिलने आये। उनमें से एक को उसने पहचान लिया, वह कभी सिगरेट लाइटर बेचा करता था।

"लोग कहते हैं आप इंजीनियर हैं।"

"था।"

"क्या खिचड़ी पका रहे हैं, अन्तध्र्वंस की? पुराने मालिकों के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं?"

"नहीं। मैं किसी की प्रतीक्षा नहीं कर रहा।"

"फिर अपनी माँद में क्यों घुसे बैठे हैं?"

"बताइये, मेरे लिए करने को और है भी क्या? नक़्शा बनाने के मेरे रेखांकन-सेटों को ज़ंग लग रहा है और मुझे भी।"

"तकनीकी काम संभालने के लिए हमें किसी आदमी की ज़रूरत है। क्या आप हमारे साथ आयेंगे?"

"ज़रूर, क्यों नहीं!"

मज़दूर दोब्रोख़ोतोव को अपने साथ ले गये।

मज़दूरों के साथ बिना थकान महसूस किये उसने ज़मीन खोदी, कुन्दे और लोहे बार-बरदार किये। सच तो यह है कि उसे थकान महसूस करके ख़ुशी हुई। वह ख़ुद को नहीं पहचान पाता। दूसरों की बराबरी में राशन पाकर उसे गर्व होता। मज़दूर उससे बेतकल्लुफ़ थे और यह उसे रास आता।

जब काम कुछ और जटिल हुआ और उसने ख़ुद को एक प्रबंधक के रूप में पाया, हालात बदतर हो गये। उसका अतीत उसके पीछे दुम की तरह लगा था। उसने एकाएक मज़दूरों के बीच खुद को एक विशेषज्ञ के रूप में पाया। उसके ख़्याल से इस उपाधि में सन्देह और परायापन की ध्वनि थी। एक बार फिर उसके और उसके नये दोस्तों के बीच एक अलंघ्य दीवार आ गयी। वह उन्हें पसन्द करता था, वे थोड़ा-बहुत असहिष्णु होने के बावजूद नेक और ईमानदार थे।

वह अपने पहले का पीड़ादायक और घृणास्पद अकेलापन अब और नहीं चाहता था। लेकिन यह उसका पीछा नहीं छोड़ता। कारख़ाने में लोगों ने कहना शुरू किया कि इंजीनियर की बीवी और श्वसुर क्रान्ति-विरोधी उत्प्रवासी हैं। भय और शर्म से सेर्गेय पीड़ित था। उसे वर्नाव्स्की परिवार के बारे में सीधे सवाल पूछे जाने का भय था। वह जानता था, झूठ नहीं बोल पायेगा।

रात को वह सो नहीं पाता। उसने बहुत पहले वर्नाव्स्की परिवार का घर छोड़ दिया था लेकिन वह ख़ुद से भागकर कहाँ जाये? उसका हृदय मज़दूरों, इन समस्त निस्स्वार्थ मेहनतकशों, अनाम वीरों के प्रति सहानु-

भूतिपूर्ण श्रद्धा से भरा था – अकाल और ठंड के बावजूद, पूरी दुनिया के अविश्वास और नफ़रत के बावजूद वे अपने उद्देश्य की ओर आगे बढ़े जा रहे थे। लाज़िमी तौर पर उन्हें भी अपने दुश्मनों से उतनी ही नफ़रत और घृणा करने का हक़ था।

हर दिन, हर पल दोब्रोख़ोतोव को वर्नाव्स्की परिवार से अपने रिश्ते की बात अपने सिर मढ़ दिये जाने का, उनके साथ मुजरिमाना ताल्लुक़ात का आरोप लगाये जाने का अन्देशा बना रहता। उसे उस रिश्ते से नफ़रत थी और वह इसे अपनी याद्दाश्त से निकाल-बाहर कर देना चाहता था लेकिन उसके गिरगिट या ग़द्दार न होने पर कौन यक़ीन करेगा?

आख़िरकार उसकी हिम्मत जवाब दे गयी और वह एक टूटे-फूटे सूटकेस में अपने रेखांकन सेट, कुछ कपड़े, मन पसन्द किताबें रखकर नोवगोरोद से रवाना हो गया। हालाँकि अपने पूर्वजों के नगर, ईंटों और लोहे के ढेर से, लकड़ियों की कतरनों के पीले फेन, कुचली पुरानी घास के बीच आश्चर्यजनक रूप से उभरते कारख़ाने को छोड़कर जाने में उसे दुख हुआ।

वह जितनी दूर जा सकता था, चला गया – देश के सब से भयानक और सुनसान कोने में – मध्य एशिया के बारे में यही उसका ख़्याल था। लेकिन उसे न तो शान्ति मिली न सन्तोष ही हुआ। वह बार-बार ख़ुद को कायरता से धिक्कारता: क्या उसने अपने जीवन के अभिन्न अंग का त्याग नहीं कर दिया था?

वह साल भर नगरपालिका के एक उद्यम में नक़्शानवीस और नक़ल-नवीस का काम करता रहा।

और वहाँ भी एक इंजीनियर की ज़रूरत पड़ी। यह नोवगोरोद से भी ज़्यादा अप्रत्याशित और आश्चर्यजनक था।

एक सुबह जब वह अपने पुराने फटे सोफ़े पर लेटा एक उद्यमी मकड़े को खिड़की के ऊपर कोने में जाला बुनते देख रहा था, एक धूप से झुलसे हाथ ने खिड़की खटखटायी और खुले झरोखे से छोटा काग़ज़ का एक टुकड़ा फेंका। यह नगर पार्टी समिति में तुरंत पहुँचने का बुलावा था। पहले दोब्रोख़ोतोव ने इसे एक भूल सोचा।

समिति में उसका स्वागत मज़बूत क़दकाठी और बिना परंजीवाली एक उज़्बेक औरत ने किया। यह एक और आश्चर्य था।

"सेर्गेय ल्वोविच दोब्रोख़ोतोव?" उसने उठकर दोस्ती के साथ अपने हाथ बढ़ाते हुए पूछा। "क्या हाल है, इंजीनियर!"

"भूतपूर्व इंजीनियर," दोब्रोख़ोतोव ने कड़वाहट से उसे सही किया।

"और अब?"

"एक किरानी।"

"ऐसी हालत में आपको एक नये पेशे के लिए प्रशिक्षित करना होगा," जुराख़ाँ ने मुस्कराते हुए कहा।

उसे बैठने का इशारा करते हुए जुराख़ाँ ने उससे सेहत के बारे में पूछा मानो बस यही पूछने के लिए बुलाया हो। वह जानना चाहती थी कि वह उसकी क्या सेवा कर सकती है और उसकी आँखों में इतनी अधिक समझ और हमदर्दी थी कि दोब्रोख़ोतोव ने अनजाने ही उसके सामने अपना दिल खोलकर रख दिया। पूछने पर वह शायद ही बता पाता, उसने झट से इस औरत का भरोसा क्यों कर लिया था। शायद उसमें किसी की तवज्जह की ललक थी, वह अपने अकेलेपन से ऊब चुका था। कारण चाहे जो भी हो, उसने उसके सामने अपना दिल खोल दिया।

"जानती हूँ, मैं सब जानती हूँ," जुराख़ाँ ने ध्यानपूर्वक उसकी बातें सुनते हुए कहा।

उसके शब्दों ने उसे चकित कर दिया। "भला आप कैसे जान सकती हैं?" उसने सोचा। लेकिन सबसे असाधारण बात थी, वह उस पर विश्वास कर लेना चाहता था। इस उज़्बेक औरत की तरह उससे कभी किसी ने बात नहीं की थी। उसे उसकी व्यवहार-कुशलता, आग्रहकारिता और स्पष्ट-वादिता पसन्द आयी।

"समझती हूँ, आप बहुत उद्विग्न हैं," जुराख़ाँ ने इंजीनियर की बग़ल में बैठते हुए कहा। "आपको वास्तविक काम की तलाश है। क्या आप अपना ज्ञान किसी वास्तविक उपयोगी काम में, लोगों की मदद में लगाना चाहेंगे? मुझे बताइये, क्या इसी के लिए आप लालायित हैं न?"

"यह मेरा एक सपना था," दोब्रोख़ोतोव ने जवाब दिया। "सिर्फ़ एक सपना, मेरे दोस्त। आप कहती हैं, मैं उद्विग्न हूँ। कितना सच है। लेकिन मैं समझता हूँ टीस जा चुकी है। अब मैं किसी चीज़ का सपना नहीं देखता।"

"सुनिये, इंजीनियर। जो नष्ट हो गया है, हम उसे फिर से बहाल

कर रहे हैं, नव निर्माण कर रहे हैं और सपने जगा रहे हैं। सच तो यह है, कम्युनिस्टों ने सपना देखना कभी नहीं छोड़ा है।"

"आप मुझे इंजीनियर कहें, यह मखौल लगता है।"

"इसका मतलब है, हम आपका मूल्यांकन उससे कहीं ज़्यादा करते हैं, जितना आप ख़ुद का करते हैं।"

"आप भूल कर रही हैं।"

"तब सुनिये मैं आपको वचन देती हूँ: हम आपको इंजीनियर बना कर रहेंगे।"

"आप?"

"हाँ।"

जुराख़ाँ से मिलने के बाद सेर्गेय दोब्रोख़ोतोव दूसरा आदमी बनकर जा रहा था। उसने उस अविस्मरणीय दिन ख़ुद को ज़्यादा नौजवान महसूस किया।

"कपड़ा मिल। मिल..." वह अपने आस-पास के लोगों से बेख़बर अपने-आप बुदबुदाया। "यह मुझे सौंपा जा रहा है! यही तो उसने कहा था। है ईश्वर, काश, यह मज़ाक न हो! विकृत स्वप्न नहीं, तो यह है क्या? इंजीनियर। 'हम आपको इंजीनियर बनाकर रहेंगे'!"

घर लौटकर उसने सूटकेस से अपनी किताबें जल्दी-जल्दी निकालीं। क़िस्मत की ही तो बात है जो नोवगोरोद छोड़ते समय वह उन्हें अपने साथ ले आया था! वहाँ वे अगाध, प्रिय, विश्वस्त मित्र थीं। क्या वह उन्हें दुख के अलावा किसी और अनुभूति के साथ खोलने जा रहा है–एक ऐसी अनुभूति के साथ जिसे फिर कभी महसूस करने की उम्मीद वह खो चुका था?

प्रेमपूर्वक उसने एक के बाद दूसरी किताब खोली, अधभूले फार्मूलों, नक्शों, रेखांकनों को पढ़ते हुए उसने उसके पृष्ठ उलटे। अधभूले? नहीं। वह उन्हें जानता था, उनसे प्रेम करता था। उसकी चेतना को वे पीड़ित न करें, इसके लिए उन्हें भूलने की निरर्थक कोशिश से जूझते इन वर्षों के बावजूद अपने दिमाग़ में उन्हें दुबारा स्पष्ट रूप से बैठाने के लिए बस एक ही नज़र काफ़ी थी।

उसे किताबें लेकर नगर समिति में जुराख़ाँ के पास दौड़ पड़ने की ज़बर्दस्त ख़्वाहिश हो रही थी। वह चिल्लाकर कहता "मैं कोई भी इम्तहान

पास कर सकता हूँ!" वह दौड़कर बाज़ार की सबसे भीड़-भाड़वाली जगह जाकर राहगीरों से पूछना चाहता था: "किरानी दोब्रोखोतोव को जानते हो? वह एक मिल का निर्माण करने जा रहा है। देश के सुदूरतम ग्रौर सबसे पिछड़े हिस्से में। बोल्शेविकों के साथ, 'कला विध्वंसकों' के साथ..."

छोटे-से कमरे में चहलक़दमी करता वह किसी नौजवान जैसे उत्साह से बुदबुदाता रहा था।

"हाँ तो श्रीमान् वर्नाव्स्की महोदयो! श्रीमती रिम्मा जी! नीवगोरोद के पेरिसवासियो! ग्रब ग्राप ग्रौर हम "स इरा!"* का मतलब देखेंगे!"

उसने बिन घरनीवाली ख़स्ताहाल ग्रपनी रिहायश पर नज़र डाली – टूटे स्प्रिंगवाला एक छोटा-सा सोफ़ा, सिलवट पड़ी बिछावन की चादर का खिड़की से लटकता... ग्रपनी रिहायश के बारे में उसने जुराख़ाँ से कुछ भी नहीं कहा था। लेकिन ज़ाहिर था कि वह जानती है। झाड़ू लेकर उसने मकड़ों के घने जाले कमरे के कोनों से बुहार दिये। इस तरह इसका ख़ात्मा हुग्रा। ग्रब उसे मकड़े को किसी इंजीनियर जैसी पक्की महारत के साथ ग्रपना जाला बुनते देखने की कोई ज़रूरत न थी। कुछ घण्टों तक दोब्रोखोतोव ने तत्परता से ग्रपने कमरे को साफ़-सुथरा किया, धुलाई के लिए गन्दे कपड़े जमा किये, खिड़की की चौखट पर इस तरह किताबें सजायीं मानो ताक पर सजी हों, ग्रपने रेखांकन सेटों से धूल झाड़ी ग्रौर इस काम से हो रही सहज खुशी पर ग्रनवरत ग्राश्चर्य करता रहा। छोटे ग्राईने के पास वह काफ़ी देर तक ग्रपने नकबाँसे ग्रौर मुँह के कोनों के पास पड़ गयी झुर्रियोंवाले तंगहाल चेहरे को देखता-परखता रहा। "बुढ़ऊ, हम ज़िन्दा रहेंगे। काम करेंगे!"

दूसरे दिन निश्चित समय पर वह नगर समिति में था।

प्रतीक्षा-कक्ष में उसे एक लड़की दिखाई पड़ी। वह मेज़ पर ग्रख़बार रखे बैठी थी। नमस्ते करते हुए उसने उसे बताया, कॉमरेड जुराख़ाँ ने उसे मिलने का समय दे रखा है।

"नहीं हैं। वह ग्रब तक नहीं ग्रायी हैं," लड़की ने नमस्ते का जवाब दिये बिना सहसा ग़ुस्से से कहा।

---

* फ़्रांसीसी क्रांति का गीत।

दोब्रोख़ोतोव सर्द पड़ गया। इंतज़ार करे या नहीं, यह पूछने में भी उसे डर लगा। भय ने उसे आ दबोचा: वे उसके बारे में कहीं भूल तो नहीं गये या... शायद उन्होंने अपना इरादा बदल दिया हो? उसकी पूरी दुनिया मटियामेट हो गयी!

प्रतीक्षा-कक्ष के एक कोने में जाकर वह बैठ गया और चुपचाप बहुत दिनों से मरम्मत न की गयी दीवारों को देखने लगा: वे पीले धब्बों से भरे पड़े थे। आँखें उठाकर गुस्सावर लड़की की निगाहों से निगाह मिलाने में उसे भय हो रहा था... उसे लगा, ऐसा करने पर वह उसे निकाल बाहर कर देगी।

गलियारे में भारी क़दमों की आवाज़ सुनाई पड़ी। प्रतीक्षा-कक्ष का अध खुला दरवाज़ा इतने ज़ोरों से खोला गया कि वह ज़ोरों से आवाज़ करता हुआ दीवार से जा टकराया। तूफ़ान का मारा चेहरावाला एक नौजवान गले से बटन खोले सैनिक ट्यूनिक में मेज़ के पास बैठी लड़की तक अपने बूट खटखटाता ऐसे पहुँचा जैसे बूट से कील ठोंक रहा हो।

"कहाँ है वह? क्या, आ गयी?"

"कॉमरेड सुल्तानोव, मैं आपको बता चुकी हूँ..."

एर्गश ने अपने कन्धे उचका लिये। उसकी आँखें क्रोध से जल उठीं।

"मैंने कभी सोचा भी न था कि ऐसे नौकरशाह यहाँ भी आ घुसे हैं। उन्होंने जड़ें जमा ली हैं और उन्हें निकाल बाहर नहीं किया जा रहा। वे अपनी मेज़ों पर ऐसे बैठते हैं जैसे फ़ौजी क़िले में पत्थर की दीवार के पीछे बैठे हों। मशीनगन उन्हें नहीं उखाड़ पायेगा। तोप चाहिए!"

"इतने ज़ोरों से मत बोलिये, कॉमरेड सुल्तानोव," लड़की ने उसे आगाह किया।

उस पर कोई ध्यान न देते हुए एगश ने गलियारे की ओर अपने मुक्के हिलाये।

"ठहर जा, नौकरशाह! निकम्मे! हम तुम्हें दल-बल समेत निकाल बाहर करेंगे।"

"कॉमरेड सुल्तानोव, यहाँ शोर मचाना बन्द कीजिए," लड़की ने फिर प्रार्थना की।

"तुम, तुम भी यह समझना छोड़ दो कि तुम दूध की धुली हो।" एर्गश ने कड़ी निगाहों से उसे देखा: "ज़रा देखो, तुम्हारे आस-पास क्या

हो रहा है – लेकिन तुम्हें क्या परवाह। तुम न देखती हो, न सुनती हो – सब दिखावा ही दिखावा है।"

बुरा मानते हुए और गुस्से से उबलती लड़की उठ खड़ी हुई और प्रतीक्षा-कक्ष से बाहर चली गयी।

एर्गेश दोब्रोख़ोतोव की ओर मुख़ातिब हो गया। दिल की बातें कहने के लिए उसे किसी की ज़रूरत थी।

"देख रहे हैं... शायद आपने लम्बी दाढ़ीवाले दरबान को देखा होगा... उसकी दाढ़ी किसी पैग़म्बर की तरह है! और वह पैग़म्बर आपको दरवाज़े के पास फटकने भी नहीं देगा। आप क्यों आये हैं, क्या काम है, यह बताये बिना वह कभी आपको घुसने ही नहीं देगा। मेरे जैसे आदमी को अपना काम दरबान से बताना पड़ता है! बहरहाल, मैंने बुढ़ऊ को एक ओर कर दिया और अन्दर चला आया। और मैंने क्या देखा? एक आदमी बाय की तरह तकिये लगाये बैठा था। वह बनात का सूट पहने था, मेज़पोश भी बनात का था और दिल भी बनात का! इतना बनात उसे मिला कहाँ से? थोड़े में कहिये, मैं व्यस्त हूँ, उसने कहा। मैंने पूछा, मिल के निर्माण के लिए कितना धन उपलब्ध है। (दोब्रोख़ोतोव चौंक पड़ा) लेकिन बस हैरत से उसने अपनी आँखें फाड़ लीं: कैसा मिल? कैसा धन? सारा शहर बस इसी के बारे में बातें कर रहा है, बच्चा बच्चा मिल के बारे में जानता है, लेकिन सोवनारख़ोज़... * इस बनातधारी के लिए सब कुछ बेकार। वह व्यस्त है! उसका काम इसकी परवाह किये बिना कि बाक़ी लोग क्या सोचते, क्या चिन्ता करते हैं, अपनी मेज़ पर बड़ा साहब बनकर बैठना भर है। उद्योग ब्यूरो,** ज़रा देखिये, अब तक उसे विचार करने का समय नहीं मिल पाया है, उद्योग ब्यूरो के पास स्वीकृति के लिए योजनाएँ पेश करने का समय अब

---

* सोवनारख़ोज़ – राष्ट्रीय अर्थतंत्र को निदेशित करने के लिए क़ायम एक स्थानीय सत्ता निकाय। ऐसे निकाय १९१७ के अंत और १९१८ के आरंभ में स्थापित किये गये थे और चौथे दशक तक अस्तित्व में रहे।

** ब्यूरो – यहाँ लेखक का मतलब प्रतिक्रान्तिकारी, ख़ुफ़िया और तोड़-फोड़ करनेवाली उद्योग पार्टी संगठन (१९२६-३०) से है।

तक नहीं मिल पाया है। मैं आपके उद्योग ब्यूरो को नहीं जानता: मैं उससे कहता हूँ और मैं आपको नहीं जानता: वह जवाब देता है। मैं यहाँ कोई व्यक्तिगत शिकायत लेकर नहीं आया हूँ बल्कि सामाजिक काम से आया हूँ। "लिखकर दीजिए..." देखा, बात को कैसे मोड़ा? आपके दिल में क्या है, उसे इसकी कोई परवाह नहीं। उसे एक काग़ज़ चाहिए। आप समझ रहे हैं न?"

"हाँ, ज़रूर," दोब्रोख़ोतोव ने हकलाते हुए जवाब दिया।

उसने एर्गश की बातें पूरे ध्यान से सुनीं। उसे इस नौजवान का उत्साह, ओज और आत्मविश्वास पसंद आया। लेकिन क्या वह ज़्यादा बकबकिया न था? काश वह जानता, किससे बक-बक कर रहा है। फिर उसका लहजा कैसा होता...

एर्गश ने दोब्रोख़ोतोव की परेशानी महसूस की और इसका मतलब अपने ढंग से लगाया।

"मैं लोगों में बेपरवाही नहीं सहन कर सकता," उसने जैसे ख़ुद को पुष्टि करते हुए कहा। "हर कोई महसूस करता है, मिल कोई छोटा, मामूली काम नहीं। ऐसी हालत में चीखने से ज़्यादा काम करने की ज़रूरत है। आपको ज़रूर मालूम होना चाहिए, इसका निर्माण कैसे किया जाये, कहाँ शुरू किया जाये जिससे ख़ुद को शर्मिन्दगी न हो। हमें एक भेजेवाले आदमी की ज़रूरत है। प्रशिक्षित आदमी। लेकिन मैं या आप बस मामूली लोग हैं। हमें शिक्षा ही क्या मिली है? यह एक अच्छी बात है, हम पढ़-लिख सकते हैं (दोब्रोख़ोतोव संकोच से मुस्कुराया, लेकिन उसे रोकने की हिम्मत नहीं कर पाया)। हमें किसी ने नहीं पढ़ाया... सफ़ेद दाढ़ीवाले तुन्दैलों ने अपनी लॉर्डशाही सिखायी। हमारे जैसों को तो उन्होंने कभी गधाशाला से आगे क़दम रखने ही न दिया! कोई बात नहीं – हम अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं। हम ज़रूरत भर पढ़े-लिखे लोग ढूंढ लेंगे। अगर वे ख़ुद नहीं आयेंगे, हम उनकी गर्दन पकड़ लायेंगे और काम करने पर मजबूर करेंगे, जनता के लिए अपनी बुद्धि काम में लाने को मजबूर करेंगे। हम किसी भद्र पुरुष को, किसी विशेषज्ञ को जोत देंगे और वह ख़ुशी-ख़ुशी हमारी गाड़ी खींच ले जायेगा – उसे अपनी खोज-ख़बर लेने का कोई समय ही नहीं होगा!"

दोब्रोख़ोतोव ने धीमे से अपना गला साफ़ करते हुए अपने खुश्क होंठों

को जीभ से गीला किया। "विशेषज्ञ," "भद्र पुरुष"... वह कई बार सुन चुका था। सिर्फ़ जुराख़ाँ ने उससे अलग ढंग से बात की थी। इसके बावजूद, इस नौजवान ने इतने दर्द, काम के प्रति इतनी निष्ठापूर्ण व्यग्रता से बात कही थी कि दोब्रोख़ोतोव को बुरा नहीं महसूस हुआ। यह नौजवान दिमाग़दार है और इसमें भरपूर कर्मठता है। और उसका हृदय भी बनात का नहीं। उसे अच्छी तरह जानने के लिए दोब्रोख़ोतोव में उससे बातचीत करने की इच्छा हो आयी।

"मेरा ख़्याल है," दोब्रोख़ोतोव ने ख़ुद को चौंका देनेवाली दृढ़ता से कहा, "दूसरी चीज़ों के अलावा किसी प्रशिक्षित व्यक्ति से थोड़ी-बहुत सलाह लें तो कोई बुरी बात नहीं होगी..."

"वाह, भाई," एर्गश ने मुस्कराकर अनायास बेतकल्लुफ़ होते हुए जवाब दिया, "तुम पूरे चौकस नहीं।"

उन्होंने गलियारे में आवाज़ें सुनीं। दोब्रोख़ोतोव और एर्गश ने तत्क्षण ही उनमें से एक आवाज़ पहचान ली और दोनों ही दरवाज़े की ओर मुड़ गया।

जुराख़ाँ तेज़ी से चलती हुई अन्दर आयी। उसके कपड़े हल्के सफ़ेद थे और उसने हाथ में एक रेशमी रूमाल ले रखा था। उसके पीछे लगभग दौड़ता, नज़ाकत से क़दम रखता मुंडे सिरवाला एक मोटा आदमी था। उसकी पतलून, जैकिट और हाथ में रखी टोपी बारीक बनात की थी।

"वह ज़रूर सोवनारख़ोज़वाला आदमी होगा," तत्क्षण दोब्रोख़ोतोव ने सोचा।

जुराख़ाँ की सुरमेदार भौंहें चढ़ी थीं लेकिन एर्गश और दोब्रोख़ोतोव को देखते ही उसका चेहरा चमक-सा उठा।

"मुझे आपको देखकर ख़ुशी हुई," उनसे हाथ मिलाते हुए उसने कहा। "लगता है, आप पहले ही मिल चुके हैं?"

एर्गश और दोब्रोख़ोतोव ने एक-दूसरे को चुपचाप ऐसे देखा जैसे वे अभी-अभी मिले हों। वे चकित से और पेशोपेश में थे।

जुराख़ाँ ज़ोरों से हँस पड़ी।

"हाँ, हाँ... आपको हाथ से हाथ मिलाकर एक साथ काम करना होगा। आइये परिचय करा दूँ: एर्गश सुल्तानोव, मिल परियोजना के प्रमुख और नौकरशाहों के लिए आतंक। और यह हैं सेर्गेय ल्वोविच दोब्रोख़ोतोव,

इंजीनियर, वही विशेषज्ञ जिसकी हमें तलाश थी। बस जहाँ तक मैं समझती हूँ, उन्हें काम का डर नहीं। कृपा करके इनसे मिलिये।"

एर्गश और दोब्रोख़ोतोव भी ज़ोरों से हँस पड़े और एर्गश ने अपना हाथ पहले बढ़ा दिया।

ज़ुराख़ाँ उन्हें अपने ऑफ़िस में ले गयी। प्रतीक्षा-कक्षवाली लड़की अन्दर आयी।

"नदेझ्दिन कहाँ हैं?" ज़ुराख़ाँ ने पूछा।

"चल चुके हैं," लड़की ने एर्गश की ओर आँखें तरेरते हुए जवाब दिया।

"अच्छा। तो अब, वे रोड़े अटका रहे हैं, आपको काम करने का मौक़ा नहीं दे रहे," ज़ुराख़ाँ ने फिर अपनी भौंहें सिकोड़ते हुए कहा और वे सब जानते थे, वह किसे सम्बोधित कर रही है।

सोवनारख़ोज़वाले आदमी ने अपना टोपीवाला हाथ ऊपर उठाया।

"कॉमरेड ज़ुराख़ाँ," उसने स्त्रियों की-सी आवाज़ में कहा, "मैं आपको यह सरकारी तौर पर कह रहा हूँ। जब तक मुझे टेलीफ़ोन नहीं मिलता, विभाग में काम के बारे में मैं कोई भी जवाब नहीं दे पाऊँगा..."

"अब आप क्या कर रहे हैं? आप किस चीज़ में लगे हैं?" ज़ुराख़ाँ ने उसे बीच में रोकते हुए पूछा।

"मैं?"

"सोवनारख़ोज़।"

"मैं रिपोर्ट लेकर आपके पास आ सकता हूँ..."

"आप तो यहाँ हैं ही। अपनी रिपोर्ट दीजिये!"

"आप अच्छी तरह जानती हैं कि हमारे पास कुछ सर्वथा विनिर्दिष्ट कार्य हैं। हमने सहकारिता और खातों में साज-सामान की एक फ़र्द फ़ेहरिस्त तैयार की है..."

"लेकिन आपने मिल परियोजना के तख़मीने के बारे में क्या किया है?"

"मैं फिर कहता हूँ: हम उसी के लिए ज़िम्मेवार हैं जो हमारी अधिकार-सीमा में आता है। उद्योग ब्यूरो से आये निर्देशनों के बिना हमें कोई हक़ नहीं..."

"हम उद्योग ब्यूरो के बारे में बाद में बात करेंगे। लेकिन आप? आप

क्या कर रहे हैं और आप अपने सर्वथा विनिर्दिष्ट क्षेत्र में क्या करने का इरादा रखते हैं?"

"हमारा काम उद्योग ब्यूरो के आदेशों का पालन करना है।"

एर्गेश व्यंग्यपूर्वक कहे बिना नहीं रह पाया:

"थोड़े में, मिल जाये भाँड़ में... काग़ज़ों का ढेर लगाइये।"

"नौजवान!" सोवनारखोज़-प्रमुख सहसा तीखी आवाज़ में चीखा। उसके होंठ काँप रहे थे। "तुम, तुम – अपने को मत भूलो। सोवनारखोज़ एक पुनीत कार्य कर रहा है – जनता की सम्पत्ति की सुरक्षा का। मैं तुम्हारी शिकायत करूँगा। मैं ऐसे हालात में काम नहीं कर सकता।"

"हाँ, यह तो साफ़ ज़ाहिर है," जुराख़ाँ ने शान्तिपूर्वक कहा। "तो भी देखिये हम स्थानीय आय से मिल के लिए क्या राशि निर्धारित कर सकते हैं। अपने आस-पास नज़र दौड़ाइये, और जहाँ कहीं से एक कोपेक भी मिले, प्राप्त कीजिये। शुरुआत के लिए थोड़ा बहुत भी ठीक रहेगा।"

"लेकिन, कॉमरेड जुराख़ाँ, आप ज़रा ख़ुद को मेरी जगह रखकर..."

"नहीं तो, प्यारे कॉमरेड, मुझे डर है, कहीं कोई टेलीफ़ोन भी आपको न बचा पाये। आप जा सकते हैं।"

सोवनारखोज़वाला आदमी कमरे से चला गया।

जुराख़ाँ ने दोब्रोख़ोतोव और एर्गेश को बैठने के लिए कहा।

"आप धूम्रपान कर सकते हैं," उसने कहा। "धूम्रपान शायद हमें चुस्त बनने में मदद करे... अपने विचार एकत्र करने में।"

एर्गेश उसका मतलब समझ गया और हँसते हुए तम्बाकू की डिबिया निकाली, सिगरेट बनायी और डिबिया दोब्रोख़ोतोव को पेश किया। उसने झुककर उसे स्वीकार किया (यह उसके अन्दर का बुद्धिजीवी था)। फिर कुशलता से सिगरेट तैयार की और बिना खांसे गहरी कश ली।

"हालात," जुराख़ाँ ने आगे कहा, "इस तरह हैं। हमें अगस्त में ज़रूर ही शुरुआत कर देनी चाहिए और तैयारियों के लिए एक महीना से भी कम है। इसके साथ ही, आपको सच बताऊँ, हमारे पास पैसे नहीं हैं। हमारे पास आवश्यकतानुसार मज़दूर भी नहीं। मशीनें भी नहीं और उन्हें पाने का हम भरोसा भी नहीं कर सकते। मिल के क़ायम हो जाने पर ही हमें कल-करघे मिलेंगे..."

"मैं समझ नहीं पाया," दोब्रोख़ोतोव ने कहा मानो उसने कहीं थोथा

मज़ाक सुना हो। "आपके पास है क्या? आप किस पर निर्भर कर सकती हैं?"

जुराख़ाँ ने एर्गश की ओर देखा। वह कनखी से अविश्वासपूर्वक दोब्रोख़ोतोव की ओर देख रहा था।

"अपने आस-पास के लोगों को, घटनाओं को ध्यान से देखिये, सेर्गेय ल्वोविच" जुराख़ाँ ने जवाब दिया। "अपने दिल की बातें सुनिये, और आप महसूस करेंगे, हमारे पास क्या है और हम किस पर निर्भर कर सकते हैं। एक आदमी, बहुत ही अच्छा आदमी शीघ्र ही यहाँ आयेगा — वह आपको हर चीज़ पर विजय पा लेनेवाली एक महान शक्ति पर जो हमारी ग़रीबी और विनाश सब कुछ का साधक हो सकती है, यक़ीन करना सिखायेगा।"

"वह आदमी हाज़िर है," ऑफ़िस के दरवाज़े पर खड़े यफ़ीम दनीलोविच ने उल्लासपूर्वक कहा। "लेकिन न तो ऐसा सोचिये न उम्मीद रखिये कि हम पैसे न होने की बात सोचते हाथ पर हाथ रखकर बैठ जायेंगे। नहीं। ऐसा कुछ भी नहीं होगा, मेरे प्यारे दोस्तो! आपको उदार भाव से ख़र्च करना होगा। हम जबरन आपके गले से काढ़ लेंगे, मानते हो न?" उन्होंने एर्गश से पूछा।

"बिल्कुल! आप ठीक कहते हैं!"

एर्गश अपनी जगह से उछल पड़ा।

"शान्त, शान्त। बस शान्त रहो," यफ़ीम दनीलोविच ने उसे रोक लिया लेकिन चेतावनी के साथ कहा, "हम देखेंगे, मैं कितना अच्छा आदमी हूँ!"

धूम्रपान से काली पड़ गयी अपनी लाल-लाल मूँछों को सहलाते हुए वह इंजीनियर की ओर मुड़ गये।

"तो तुम दोब्रोख़ोतोव हो, क्यों नहीं? मैंने तुम्हारे बारे में सुना है। मैं तुम्हें अभी ही बता दूँ: चिकने-चुपड़े लफ़्ज़ों का यक़ीन न करो। ग़ुस्सा करना सीखो। हम एक मुश्किल काम शुरू कर रहे हैं और देश के इस हिस्से में यह अभूतपूर्व है। इसके बहुत से दुश्मन हैं। और मैं एकदम शुरू में ही तुम्हें इतना डरा देना चाहता हूँ जिससे फिर कोई चीज़ तुम्हें कभी भी भयभीत नहीं कर पायेगी। हम सिर्फ़ एक मिल का निर्माण ही नहीं बल्कि इसके लिए संघर्ष भी करने जा रहे हैं। एर्गश सुल्तानोव जाना-माना योद्धा है। वह ख़ुद को सेनापति मानता है..."

जुराख़ाँ यफ़ीम दनीलोविच के पास गयी और उनके कन्धे पर अपना हाथ रख दिया।

"और यह, कॉमरेडो, कमिस्सार हैं!"

दोब्रोख़ोतोव मौन रहा। वह तुरंत ही उलझ गया और ढीला पड़ गया। दूसरों के मुक़ाबले यफ़ीम दनीलोविच को समझना आसान लगा लेकिन इसके बावजूद उनकी धमकियाँ अजीब थीं। वे बहुत भले मानस थे।

सहसा, अब तक की कहीं बातों से बिना किसी सम्बंध के जुराख़ाँ ने एलान किया:

"नगर समिति ने मास्को स्थित त्र्योख़गोर्नाया मैन्युफ़ैक्तुरा मिल में अध्ययन के लिए बीस बुनकरों को भेजने का फ़ैसला किया है।"

नैमन्चा से किसे भेजा जाये, इस पर एर्गश, यफ़ीम दनीलोविच और जुराख़ाँ विचार-विमर्श करने लगे।

"यह क्या है? बचकानी बुद्धिहीनता?" दोब्रोख़ोतोव ने ख़ुद से पूछा। "अभी तो उन्होंने मिल का निर्माण भी नहीं किया, पेड़ का पता नहीं और आम बेचना शुरू कर दिया।"
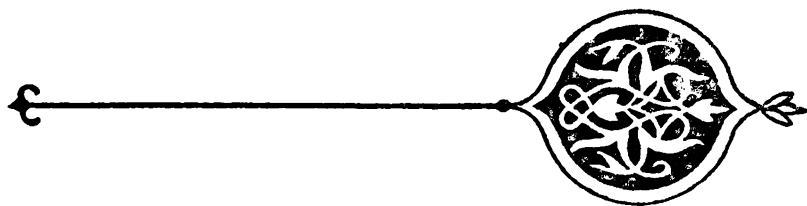
पन्द्रहवाँ भाग

सुबह से ही तेज़ धूप थी, आसमान चकाचौंध साफ़ लेकिन शाम होते-होते बादलों के घिर आने से सहसा नैमन्चा के ऊपर अंधेरा छा गया। हवा साँय-साँय चलने लगी और पॉपलर पेड़ के पत्ते तड़िज्झंझा के पहले झुटपुटे में चमकने खड़खड़ाने लगे। समीप ही बिजली चमक उठी और आसमान कान बहरा देनेवाली मेघ-ध्वनि से कौंध उठा। हालाँकि वर्षा कुछ दूर में हो रही थी, कलकल करता गन्दा पानी आस-पास की पहाड़ियों से नीचे गड्ढों और नालियों में आने लगा था।

तुर्सुनाय गरज-तरजवाली आँधियों से हमेशा भयभीत हुआ करती थी।

लेकिन आज वह तनिक भी भयभीत न हुई। उसकी प्यारी मम्मीजाँ आज पहली बार उठ खड़ी हुई थीं और गरजवाली आँधियाँ भी उसकी ख़ुशी को धूमिल न कर सकीं।

आकाश की ओर अपने हाथ उठाये लड़की बरामदे से नीचे कूद पड़ी और वर्षा रानी को लुभाने सड़क पर दौड़ पड़ी। वहाँ उसे अपनी कुछ सहेलियाँ नज़र आ गयीं।

"सखियो, सखियो," वह कोमल तेज़ आवाज़ में चीखी। "जल्दी आओ। आओ अपने बाल लम्बे करें!" अपने शलवार का घेरा ऊपर करते हुए, वह पानी के एक सोते की ओर दौड़ पड़ी और नंगे पाँव उसमें चलने लगी।

उसकी सहेलियाँ एक-दूसरे से आगे दौड़ती हुई, उसकी देखा-देखी करने लगीं। चारों ओर छपछप मच गयी। उनकी हँसी-किलकारी से सड़क गूँज उठी।

बरसो, बरसो, मेहा बरसो
टप-टप करती बून्दें बरसो...

धारा अपने साथ कूड़ा-कचरा बहाती-धोती, नीची दीवारों के पास से तेज़ी से बढ़ गयी। तुर्सुनाय अपना बाल खोले दूसरों के आगे दौड़ती निकल गयी। उसकी आवाज़ घंटी जैसी साफ़ दूर तक गूँज रही थी।

वर्षा की पहली बून्दें पड़ने लगीं। लड़कियों की किलकारियाँ पहले से तेज़ हो गयीं, उन्होंने अपना सिर बून्दों की ओर ऊपर कर लिया और उन्हें हाथों से पकड़ने लगीं।

तुर्सुनाय की नज़र जुलाहा सलीम की सौतेली बेटी अदालत पर सबसे पहले पड़ी। वह एक पुरानी, जर्जर दीवार पर बैठी थीं। दीवार ऐसी लग रही थी जैसे अब-तब में धारा में धसक जायेगी। अदालत ने अपनी सहेलियों को हाथ के इशारे से सावधान करते हुए आवाज़ दी।

लड़कियाँ दीवार की ओर दौड़ पड़ीं।

"चुप। गाना, चीख़ना बन्द करो," अदालत ने दीवार की उस ओर अन्देशा से झाँकते हुए कहा।

अदालत अपनी सहेलियों से बड़ी थी। लड़कियाँ चुप हो गयीं।

तुर्सुनाय धारा की दूसरी ओर फलाँग गयी। वहाँ पुदीने के पौधे घने उगे थे। वह वहाँ बैठ गयी। उसकी आँखें फैली थीं।

"क्यों? वहाँ क्या हो रहा है?"

अदालत फिर से पीछे की ओर देखकर धीरे से बोली:

"ख़ालबू चाची बरसी कर रही हैं। यह क़िपचाक़ मदुमर का घर है, याद है, पिछले साल मरा था न..."

"तो तुम यहाँ क्या कर रही हो?"

"बरसी में मैं माँ के साथ आयी थी। इधर आओ। बड़ा दिलचस्प है। ऊपर चढ़ जाओ, तुम्हें कोई नहीं देख पायेगा। यहाँ, अपना हाथ पकड़ाओ।"

तुर्सुनाय ने सहलियों को अपने पीछे आने और दीवार पर चढ़ने का संकेत किया। वह ख़ुद तो दीवार पर चढ़ गयी लेकिन लड़कियाँ पीछे छूट गयीं। अदालत और तुर्सुनाय आँगन में कूद गयीं और एक घने नाशपाती के पेड़ के पीछे छुपती नाले के साथ-साथ बरामदे के क़रीब पहुँच गयीं। हाथ पकड़े ही पकड़े बरसाती के पास पहुँचकर वे दहलीज़ के क़रीब उकड़ूँ बैठ गयीं। वहाँ कुछ जोड़े बलाई जूते पड़े थे।

बरामदा औरतों से भरा था। उन्होंने चेहरों पर सफ़ेद मलमल का रूमाल लगा रखा था। तुर्सुनाय ने देखा, औरतें अपनी हथेलियाँ घुटनों पर उपासना के बाद "आमीन" कहने की मुद्रा में उठा रखी थीं। वे काफ़ी देर तक मौन बैठी रहीं। आख़िरकार एक पतली नाक, मोटे होंठवाली प्रौढ़ औरत ने जो दूसरों के मुक़ाबले कहीं ज़्यादा आज़ादी से काम ले रही थी, अपनी हथेलियाँ अपने पर फेर लीं। दूसरी औरतों ने भी तत्क्षण ही उसी तरह किया। वे मानो फिर से जी उठीं, हिलने-डोलने और बातें करने लगीं। दहलीज़ पर बैठी लड़कियों की हिम्मत और बढ़ गयी। चारों ओर हो रहे शोर-शराबे में वे किसी के सुन लेने के भय के बिना धीरे-धीरे बातें कर सकती थीं।

"उस बीचवाली औरत को देखो," अदालत ने रहस्यपूर्ण ढंग से अपनी आँखें फैलाते हुए कहा। "वह तेशिक्क़ोप्क़ोक़ की जादूगरनी है। तुमने उसे सुना होता, वह कितनी तेज़ी से क़ुरान पढ़ती है—कितनी दुख भरी थी उसकी आवाज़ और जानती हो, सब बैठी, सुबकती अपने दिल हल्का कर रही थीं। तुम्हें मेरा यक़ीन नहीं? झूठ बोलूँ तो मैं मर जाऊँ।"

"वह किसकी माँ है?" तुर्सुनाय ने अपनी सर्वज्ञा सहेली के और क़रीब खिसकते हुए पूछा।

"अरे, तुम तो कुछ नहीं समझ पाती। वह किसी की माँ नहीं। मैं तुम्हें बता चुकी हूँ – वह जादूगरनी है। वह भूतों, डाइनों और प्रेतों से बातें कर सकती है। वह उनसे उसी तरह बात करती है जैसे हम तुम कर रहे हैं।"

"भूत होते ही नहीं। माँ ने मुझे बताया है। और बशारत..."

"किताब में लिखा है, भूत होते हैं।"

"वह झूठी किताब है।"

"जानती हो हमारे पास की क़ब्रगाह में भूत-पिशाच हैं? डाइनें, भूत, प्रेत..."

"तुम्हें किसने बताया?" तुर्सुनाय ने पीला पड़ते हुए पूछा।

"जिससे चाहो पूछ लो। कोई भी तुम्हें बता देगा..."

एकाएक उकड़ूं बैठी-बैठी ही अदालत मेढक की तरह उछल पड़ी।

"देखो, देखो, अब क्या होनेवाला है।"

दहलते हुए तुर्सुनाय ने उस ओर देखा जिधर अदालत इशारा कर रही थी।

जादूगरनी उठ खड़ी हुई। गाँठदार छड़ी के सहारे वह धीरे-धीरे बरामदे के दूसरे सिरेवाली सीढ़ियों से नीचे उतर गयी और एक छोटे से झोंपड़े की ओर चल पड़ी जिस ओर एक सफ़ेद बालोंवाली बुढ़िया दोनों हाथों से इशारा कर रही थी।

अदालत तुर्सुनाय की बाँह पकड़ उसे अपने पीछे-पीछे खींच ले गयी। वे आँगन में दीवार के साथ-साथ दौड़ते हुए झोंपड़े के पीछे, खिड़की के नीचे पहुँच गयीं। पहले अदालत, फिर तुर्सुनाय ने सावधानी से खिड़की में झाँका। झोंपड़े में आँगन से ज़्यादा अंधेरा था और लड़कियाँ बस जादूगरनी के सिर पर लगी मलमली रूमाली ही देख पायीं। सफ़ेद बालों-वाली औरत ने झोंपड़े के दरवाज़े को एक डण्डे से धक्का दिया। बरसाती पर औरतें परियों जैसी स्तब्ध खड़ी थीं।

"वे क्या कर रही हैं? यह सब क्या है?" तुर्सुनाय भय से बड़बड़ायी।

"देख लोगी। याद है टेढ़ी टाँगोंवाला लड़का, वही जो सड़कों पर दौड़ता

फिरता था? याद है, उसका मुँह टेढ़ा था? वे उसे पगला मन्नाप कहते हैं। देखो, वह वहाँ फ़र्श पर पड़ा है..."

"क्या जादूगरनी उसे ठीक कर रही है?"

"वह उस पर से भूत हटा रही है। वह दर्द हर सकती है, जादू फूंक सकती है, टोना कर सकती है। वह भूत की जीभ बाँध दे सकती है..."

"लेकिन वह है कहाँ?"

"कौन?"

"वही भूऽ भूत," तुर्सुनाय हकला उठी। "क्या वह लड़के के साथ है?"

"ठहर जाओ, ख़ुद देख लोगी।"

"मुझे डर लग रहा है," तुर्सुनाय ने मुश्किल से सुनाई पड़नेवाली आवाज़ में बुदबुदाकर कहा।

"तुमने तो अभी-अभी कहा था, भूत होते ही नहीं। सब डरे हैं।"

बहरहाल नैमन्चा में वर्षा तो नहीं हुई लेकिन अंधेरा-सा हो आया। थोड़े समय के लिए गर्मी से राहत मिली। लेकिन यहाँ, झोंपड़े और दीवार के बीच पहले जैसी ही दम-घोंट गर्मी थी।

चारों ओर वहाँ पीड़ादायक निस्तब्धता थी।

झोंपड़े से एकाएक कहीं दूर में किसी सियार के रोने जैसी अजीब, रुँधी-सी आवाज़ आयी। दहशत में तुर्सुनाय दीवार की ओर उछल पड़ी। अदालत ने चेहरा खिड़की से लगा दिया।

जादूगरनी बीमार लड़के के चारों ओर घूम रही थी और नकियाती आवाज़ में अरबी में कुछ बड़बड़ाती, टूटी-फूटी प्रार्थनाएँ करती और जादू-मंतर पढ़ती जाती:

"मेहरबान ख़ुदा के नाम पर, आमीन..., अल्लाह का फज़ल, बस तुम एक हो-हो... ओ मेहरबान, तेरे नाम पर और पाक क़ुरान के नाम पर... ओ सर्वशक्तिमान विधाता... ओ रसूलो, पैग़म्बरो, फ़क़ीरो... ओ परम पावन, दुष्टात्मा को भगा दे... रोगी का रोग हर, लोबान जला दे..."

थोड़ी-थोड़ी देर में तुर्सुनाय को भयानक चीख सुनाई पड़ती: "ख़ी, ख़ी!"

"वह, वह वहाँ क्या कर रही है?" तुर्सुनाय ने काँपते हुए पूछा।

"देखती हो, दुष्टात्माएँ उसके सिर पर मँडरा रही हैं और जादूगरनी

उन्हें पवित्र शब्दों से खदेड़ रही है। अगर वे नहीं भाग जातीं तो बड़ा भयानक होगा। जादूगरनी ख़ौफ़नाक शब्दों में जिन्हें सिर्फ़ भूत-पिशाच ही समझ सकते हैं, मंत्र पढ़ना शुरू कर देगी।"

जादूगरनी झोंपड़े में ऐसे दौड़ती फिर रही थी जैसे कोई पागल कुत्ता उसका पीछा कर रहा हो: हवा में उछलती, अपनी छड़ी हिलाती, सभी दिशाओं में थू-थू करती, चीखती और चिल्लाती। रूमाल उसके सिर से गिर पड़ा और उसके बाल खुलकर बिखर गये। फिर वह एक ही जगह पर घूमने, तड़फड़ाने लगी जैसे ज़हर निगल लिया हो। उसके होंठों पर झाग दिखाई देने लगे।

ज़ोरों से काँपते हुए तुर्सुनाय अदालत के कपड़े से लिपट गयी।

"अब क्या हो रहा है?"

"उसका दम घुट रहा है..."

"कौन उसका दम घोंट रहा है? भूत? क्या तुम उसे देख सकती हो?"

"नहीं, वह... वह उससे मन्नाप की आत्मा का पीछा छुड़ा रही है।"

"अगर वह ऐसा नहीं कर पायी तो? क्या मन्नाप मर जायेगा?"

"मुझे नहीं मालूम, ठहरो तो..."

"चलो, हम चलते हैं।"

"एक मिनट रुको। अब सबसे दिलचस्प वाक़या हम देखेंगे। देखो।"

"नहीं, मैं नहीं देखना चाहती।"

"तुम्हें डर किस बात का है? मेरी माँ यहीं है। वह वहाँ है – देखती हो?"

सिर्फ़ अदालत ही डरी नहीं मालूम पड़ रही थी। बरामदे में बैठी औरतें एक लफ़्ज़ निकालने में भी डर रही थीं। उनकी आँखें झोंपड़े पर टिकी थीं।

जादूगरनी मिट्टी के फ़र्श पर इस तरह लुढ़क रही थी, बल खा रही थी जैसे उसे डंक मार गया हो। फ़र्श पर वह अपना सिर पटक रही थी, अपने नाख़ूनों से ज़मीन कुरेद रही थी, धपाधप छड़ी पटकती कर्कश आवाज़ में चीख रही थी। उसके बाल उसके चेहरे पर गिर आये थे और वह ख़ुद एक प्रेतात्मा-सी लग रही थी।

तुर्सुनाय में खिड़की से झाँकने की हिम्मत फिर हो आयी। पहले उसे

कुछ भी दिखाई नहीं दिया, फिर हल्के अंधेरे में उसने मन्नाप को अपना सिर कम्बल पर से उठाते देखा। उसका पीला, सूजी आँखोंवाला भय से विकृत चेहरा इतना भयावह लग रहा था कि तुर्सुनाय जोरों से चीख पड़ी।

अब अदालत भी डर गयी और वह तुर्सुनाय को खींचकर खिड़की से दूर ले गयी। बरामदे के पास वे थोड़ा शान्त चित्त हुईं।

"तुम्हारी ग़लती के कारण हम सबसे दिलचस्प वाक़या नहीं देख पायेंगे," अदालत ने बुदबुदाकर कहा।

"हम क्या नहीं देख पायेंगी?"

"प्रेतात्मा पर उसे जादू करते हुए।"

"लेकिन तुमने तो कहा था कि यहाँ बरसी हो रही हैं..."

"कितनी बुद्धू हो! उन्होंने बरसी मना ली लेकिन जब जादूगरनी यहाँ आयी तो वे मन्नाप को उसके पास ले आयीं।"

"मैं नहीं देखना चाहती – मुझे डर लगता है," तुर्सुनाय ने बुदबुदाकर कहा। "मैंने सब कुछ देख लिया: मन्नाप भी भयभीत है। वे उसको इस तरह क्यों पीड़ा पहुँचा रहे हैं?"

"तुम कितनी मूर्ख हो। यह प्रेतात्मा है। क्या सुन रही हो – तुम्हें सुनाई दे रहा है?"

झोंपड़े से भयानक मंत्रोच्चार की आवाज़ आ रही थी। जादूगरनी की नकियाती भारी आवाज़ कुत्ते के भौंकने की तरह रुक-रुककर आ रही थी:

"रे, गे, मर-जर! झिज्ज-बिज्ज, छी, नीच। गन्दे, शैतान, भूत-पिशाच-खी! दून-प्लून, ग्रियान, ट्रियान। छड़ी से मारूँगी, पैर से मार भगाऊँगी, ले बच, ले बच। तिर-तिर-तिर! ज़ंजीर बाजे – झंगीर-झंगीर। रे, गे, मर-जर – भाग जा चाहे जहाँ। छोड़ूंगी नहीं। सूरज का शैतान गिर जा! बन्दर उछला ख़ूबानी पैड़ पर। जा भाग जा, मर जा। हूऽऽ वऽ !"

अपने कन्धे कूब की तरह निकाले सफ़ेद बालोंवाली औरत जल्दी से झोंपड़े से दूर चली गयी। बरामदे की औरतों ने अपने हाथ ऐसे उठा लिये जैसे आमीन कर रही हों। तुर्सुनाय अदालत से चिपकते हुए पूरी तरह काँप उठी।

"क्या? क्या हो रहा है?"

"उसने दुष्टात्मा को मार दिया है। उसने उसके पंख तोड़ डाले हैं।"

मुश्किल से साँस लेने की हिम्मत करते हुए तुर्सुनाय ने दरवाज़े की ओर ताका, उसकी टकटकी-सी बंधी थी।

वह सोच रही थी कि किसी भी पल दरवाज़ा भड़ाक से खुलेगा और पिशाच व दुष्टात्माएँ अपने टूटे पंख घसीटती झोंपड़े से धड़ाम से निकल आयेंगी।

वह भाग जाना चाहती थी लेकिन अदालत को छोड़कर बरामदे से एक क़दम भी आगे बढ़ा पाने की हिम्मत नहीं कर पायी। इस झुटपुटे में दुष्टात्माएँ कहीं उसे न पकड़ लें। अब घर कैसे जा पायेगी?

झोंपड़े में क्रन्दन की आवाज़ थम गयी। सफ़ेद बालोंवाली औरत चुपचाप दरवाज़े के पास गयी और सावधानी से उसमें लगे डंडे को हटा लिया।

दरवाज़ा चरमराया और खुल गया। बरामदे की औरतों ने राहत की साँस ली। सिर झुकाये, कमज़ोर-सी जादूगरनी अपनी छड़ी टेकती झोंपड़े से बाहर आयी। वह किसी थके घोड़े की तरह साँस ले रही थी। उसके मोटे होंठों पर झाग की सफ़ेद पपड़ी चमक रही थी।

आगे बढ़ते हुए उसने सफ़ेद बालोंवाली औरत के हाथों में कुछ पकड़ा दिया और हाँफ़ते हुए कहा:

"अपने बेटे के कमरे की दहलीज़ में इन जादुई सूइयों को गाड़ दो। फ़रिश्ते तुम्हारा घर छोड़ गये है।"

फिर वह बरामदे की सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर गयी और औरतों के बीच अपनी जगह पर बैठ गयी। उसने अपने हाथ ऊपर उठा लिये और शान्त स्वर में कहा:

"आमीन! मैं सर्वशक्तिमान ख़ुदा की वन्दना करती हूँ। आरामगाह में सोये पैग़ंबर की ख़ातिर सभी फ़क़ीरों की शान के नाम पर, अपने इस अदना सेवक पर दया कर। आमीन!"

तुर्सुनाय उसकी ओर तरस के साथ देख रही थी: बेचारी, कितनी थक गयी है... अगर वह दुष्टात्माओं के पंख नहीं तोड़ पाती तो क्या हुआ होता? क़िस्मत से बात इस तरह ख़त्म हुई...

"लेकिन भूत-प्रेत किधर हैं?" तुर्सुनाय ने पूछा।

"चुप रह," अदालत ने कहा।

मेज़बान औरत ने चाय पेश की। एक नौजवान औरत जादूगरनी के

पास जाकर रूमाल से हवा करने लगी । सब ओर से सवालों की झड़ी लग गयी :

"उसे कौन-सी चीज़ तकलीफ़ पहुँचा रही थी, जादूगरनी जी?"

"क्या कोई बुरी नज़र थी?"

"उसे क्या तकलीफ़ थी?"

बिना हड़बड़ाये, आशीर्वाद देते हुए जादूगरनी ने चाय का एक प्याला क़बूल किया और ख़ुशी से चुस्कियाँ लेने लगी। अपने मोटे होंठ गीला करते हुए, उसने गंभीरता से जवाब दिया :

"उसे क्या तकलीफ़ है, आपने ख़ुद देखा। मगर कारण? पवित्र आत्माओं का क्रोध और कोप है, मेरी प्यारियो।"

चकित तुर्सुनाय अदालत की ओर मुड़ गयी और विजयपूर्वक उसकी बग़ल में टहोका लगाया।

"अहा, अहा! और तुमने कहा था यह भूत-प्रेत थे।"

"चुप," अदालत ने फिर कहा।

जादूगरनी ने क़ीमती मख़मली जिल्दवाली एक मोटी पुस्तक अपने घुटनों पर रख ली।

"अब मैं आपको सचाई बताऊँगी। यह कलामे पाक मुहिद्दीन अरबी का ख़्वाबनामा है। यह बताती है कि पवित्र एकान्तवास, ऐसी जगहें जहाँ पीर हमेशा-हमेशा के लिए आराम करते हैं, उन जगहों पर सब कुछ देखने-वाले खुदा की निगाहें रहती हैं। उन पर उसकी आँख हर वक़्त रहती है। आपका नैमन्चा भी एक ऐसी ही जगह है। इसे हमारे सरपरस्त पीर ताक़तवर हज़ारशैख़ के क़दमों ने पाक किया है। उन्हें अपना मुक़द्दस मक़सद यहीं नैमन्चा में हासिल हुआ, जाविद अमन हासिल हुआ और परवरदिगार ने उन्हें अर्शे आले में बुला लिया है। उस अज़ीम पीर का मुक़द्दस मक़बरा यहीं पर है।"

"हाँ, हाँ, हज़ारशैख़ का मक़बरा यहीं नैमन्चा में है," औरतों ने कहा।

जादूगरनी ने किताब खोलकर नकियाती आवाज़ में पढ़ना शुरू किया :

"मक्कार, शैतान के झाँसे में पड़कर जो गुनहगार मुक़द्दस जगहों को नापाक करते हैं, उन पर परवरदिगार के मुसाहिबों का तैश होता है क्योंकि मरहूम पीरों की रूहें अपने आराम की जगहों पर हमेशा-हमेशा बनी रहती हैं... रे आजिज़ इंसानो, इसे जान ले!"

"हे परवरदिगारे आलम..."

"शैतान के झाँसे में पड़े गुनहगार दफ़नाये जाने के हक़ के बिना काफ़िरों की तरह जहन्नुम में जायेंगे और एक दोज़ख़ से दूसरे में मारे फिरेंगे – सातों दोज़ख़ में और हर दोज़ख़ में उन्हें सफ़ेद गर्म ओखली में जलाया जायेगा... आजिज़ हे फ़ानी इंसानो, इसे याद रख!"

"हे रहमान, हमें नजात दे!"

"हे आजिज़ इंसानो," जादूगरनी ने अपनी अंगुली से उन्हें धमकाते हुए आगे कहा। "तुम्हारे बीव शरीअत से मनाही की गयी दुश्मनी है। मुसलमान मुसलमान के ख़िलाफ़ सिर उठा रहे हैं। क्या अज़ीम पीरों की हैरतअंगेज़ ताक़त पर शक किया जा सकता है? हे रहमान, अपने बन्दों को पाक रहने में मदद कर..."

"चतुर जादूगरनी जी," सफ़ेद बालोंवाली औरत ने श्रद्धापूर्वक कहा, "ऐसी बला लड़के के सिर क्यों आ पड़ी? वह तो अभी भी बच्चा है और ख़ुदा के सामने मासूम है।"

जादूगरनी ने मलामत से अपना सिर हिलाया।

"मैं तुम्हें बताऊँगी। मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगी। जब मेरे पीर हज़ार-शैख़ की पैदाईश हुई, उन्होंने आसमान से एक आवाज़ सुनी: लोगों को ठीक रास्ते पर ला। इस फ़ानी आलम में दयानतदार के लिए दूसरी दुनिया में जन्नत के सदर दरवाज़े खुले होंगे। जैसे ही उस रूहे मुक़द्दस में बोलने की ताक़त आयी, उसने कहना शुरू किया: क्या धरती पर ज़िन्दगी बहुत दिनों तक बनी रहती है? और वे सब फ़ानी हैं... उन्होंनें फ़िज़ूल दुनियावी लोभ और लालचों को तर्क कर दिया और अपनी आँखें ज़मीन पर टिकाये रखीं। वह तड़क-भड़कवाला चोग़ा नहीं पहनते और जली रोटी व पानीदार शोरबे का एक कौर खाकर इतमीनान कर लेते थे। अपनी नौजवानी में ही वे बियाबान में रहने चले गये। उन्होंने दो बार हज किया। वह पीरे मुक़द्दस कमज़ोर और बेसहारों से रहमदिल थे। दरियादिली से वह ख़ुद अपनी भीख दूसरों की झोली में डाल देते। ख़ाकसारी से ग़रीब और बीमार के सामने झुककर कहते: "मैं तुम्हारे सिर आनेवाले हर दुख-दर्द को अपने ऊपर ले लेता हूँ।" मुहतरम ईशान और उलमा, मुकर्रम मुल्ला और क़ाज़ी उनके मुरीद थे। वे उनके नक़्शे क़दम पर चलते और उन्हें अपना पीर मानते। धरती के सातों हिस्सों में उनके बहुत से मुरीद थे लेकिन

तनहाई को उन्होंने तरजीह दी।" जादूगरनी ने पटाख से किताब बन्द कर दी। "आप सब जानती हैं कि यहाँ आपके पास उन्हें अपना आरामगाह मिला जहाँ ख़ुद परवरदिगार और अल्लाह से उनकी मुलाक़ात हुई। यहाँ आप के पास उनके बहुत से मुरीद दफ़नाये गये हैं। उनके हमेशा-हमेशा के आरामगाह मुक़द्दस जगह हैं। हो सकता है हज़ारशैख़ या उनके फ़रिश्ते की ख़फ़ीफ़ और भयानक रूह इस पल हमारे ऊपर मँडरा रही हो। हे परवरदिगार, तू मेरी दुआएँ क़बूल कर!"

जादूगरनी ज़ाहिरी तौर पर प्रबोध और भावावेग से रो पड़ी। और मानो सहज आदेशवश बाक़ी औरतें भी अपने रूमाल और आस्तीनें आँखों पर लगाने लगीं।

"लेकिन लड़के को क्या हुआ?" सफ़ेद बालोंवाली औरत ने फिर पूछा।

जादूगरनी ने गहरी साँस ली।

"लड़के ने क़ब्रगाह से गुज़रते हुए हज़ारशैख़ के किसी मुरीद की मज़ार को अपने पैरों से छू दिया। यही हुआ है।"

"हे परवरदिगार!"

"उस पर गाज गिरे," जादूगरनी ने अपनी आवाज़ ऊँची करते हुए कहा, "जो मुक़द्दस क़ब्रों को नापाक करता है; पीर का ग़ुस्सा उसे ढेर कर देगा। रात में पीर अपने मक़बरे से निकलकर अपने आरामगाह को आग जला करके देखते हैं। मौत का फ़रिश्ता क़ब्रगाह में उनकी आग की बन्दगी करने आता है!"

"माँ-माँ!"

किसी बच्चे के करुण क्रन्दन ने जादूगरनी की बात बीच में ही रोक दी। औरतें अपने पैरों पर उछल खड़ी हुईं और मुड़मुड़कर देखने लगीं। यह तुर्सुनाय थी।

भय स सिकुड़ी अदालत तुर्सुनाय की बग़ल में खड़ी थी।

अदालत की माँ जल्दी से लड़कियों के पास दौड़ पड़ी और जादूगरनी के संकेत पर उन्हें हाथों से पकड़कर दूर ले गयी।

घबड़ायी-सी अंज़िरत दादी जादूगरनी की बातें सुनती बरामदे के किनारे बैठी थी। बीच-बीच में वह अपने हाथ उठा लेती, सिर हिलाती, आहें भरती और जादूगरनी के आख़िरी अल्फ़ाज़ इस तरह दुहराती जैसे वे किसी प्रार्थना के शब्द हों।

"लोगों का कहना है," अंजिरत दादी ने जिज्ञासा, क्रोध और अपमान मिश्रित दबी आवाज़ में सहसा कहा, "कि इस समय जहाँ क़ब्रगाह है, वहाँ एक मिल की स्थापना होगी, जादूगरनी जी। लेकिन एक लड़के ने किसी मुरीद की क़ब्र छू दी और पागल हो गया तो उनका क्या होगा जो ख़ुद पीर का मक़बरा नेस्तनाबूद करके मिल क़ायम करेंगे? जादूगरनीजी, क्या उन्हें ज़मीन नहीं निगल जायेगी?"

अंजिरत दादी की बात से अकचकाते हुए मानो ख़ुद की वकालत करते हुए झटके से जादूगरनी ने अपने हाथ ऊपर कर लिये।

"हे ख़ुदाये रहमान... मैं कुछ नहीं जानती, कुछ नहीं जानती," उसने जवाब दिया और अपने हाथ चेहरे तक दुआ के अन्दाज़ में ले गयी। ख़ुदा पीर का ग़ुस्सा कम कर... मैं कुछ नहीं जानती। मुझ जैसी ख़ुदा पर यक़ीन रखनेवाली का ऐसे गुनाहगराना मंसूबों से क्या मतलब? मैं सिर्फ़ पाक पैग़म्बर से हमें विरासत में मिले पाक कानूनों के बारे में बोलती हूँ और शरीअत के अलावा कुछ भी नहीं जानती। घर लौटकर मैं अपने सिर पर राख डालूंगी और आठ-आठ आँसू बहाऊँगी जिससे सारे ओछेपन से अलग हो जाऊँ। काफ़िरों की क़िस्मत में शर्मिन्दगी और सज़ा है... ईमान्दारों पर रहम कर!"

जादूगरनी ने जल्दी से मख़मली जिल्दवाली किताब खोल ली।

"मैं जो कुछ कहती हूँ, वह परवरदिगार का इलहाम है। उनके अल्फ़ाज़ मैं आपके ज़हन में डाल रही हूँ। सुनिये। उसने पढ़ना शुरू किया: काफ़िर को पत्थर मारना ख़ुदा के नेक बन्दे का मुक़द्दस फ़र्ज़ है। क़यामत आयेगी और काफ़िर व नाख़ुदा जहन्नुम में धँस जायेंगे, तारे शहतूत के फल की तरह आसमान से गिर आयेंगे, धरती उलट जायेगी, लोग अपना नंगापन छुपाना और दुआ करना बन्द कर देंगे..."

जादूगरनी का चेहरा शोकपूर्ण हो गया। वह ज़ोरों से सुबकने लगी और सुबकते-सुबकते उसने दरवेशिनों की तरह गाना शुरू कर दिया:

"जो नहीं ख़ौफ़ खाता है परवरदिगार से झोंका जायेगा जहन्नम में . . ."

सभी औरतें जो भी प्रार्थनाएँ जानती थीं, बुदबुदाते हुए रोने लगीं।

तेज़ी से अंधेरा छा गया। गर्जन करनेवाले मेघ इतने नीचे उतर आये कि ऐसा लगता जैसे हाथों की पहुँच में हों।

यह याद करके कि रात में मौत का फ़रिश्ता क़ब्रगाह में मक़बरे की रोशनी के आगे सिर झुकाने आता है, मकान मालकिन ख़ोलबू को दीपक

जलाने की हिम्मत न हुई। भयपूर्वक वह आकाश में दूर बिजली का चमकना देखती रही।

अंजिरत दादी बुदबुदायी :

"अलहमदुलिल्लाह ! अलहमदुलिल्लाह ! "
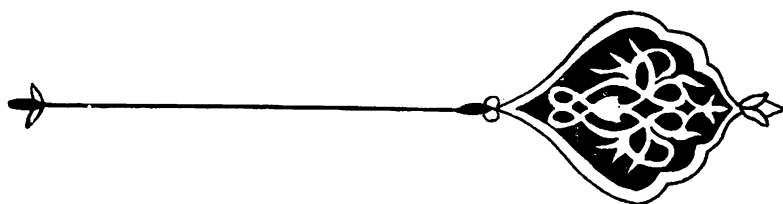
सोलहवाँ भाग

अभी अनाख़ाँ रोग-शय्या से उठी ही थी कि उसके कन्धों पर नये दायित्व आ पड़े। इन नये दायित्वों के साथ ही साथ नयी परेशानियाँ भी आयीं। लेकिन यह अब शर्म की बात होती अगर वह उन्हें निबाहने में अपनी क़ाबलियत पर सन्देह करती। उसे ख़ुद को और बेहतर बनाना था, आख़िर इसी पर तो नैमन्चा की बहुत-सी औरतों का भविष्य निर्भर करता था।

जीवन में पहली बार उसने अपना चेहरा ढँके बिना बाहर क़दम रखा। उसके क़दमों में दृढ़ता थी, लेकिन ऐसा महसूस हुआ जैसे उसके पैरों के नीचे धरती काँप रही हो। ऐसा प्रतीत होता जैसे सिर्फ़ लोग ही नहीं बल्कि दीवारें भी उसे घूर रही हों। परंजी के बिना अपना सिर सीधा किये रहना, एकदम सीधे आगे की ओर देखना, बिना ज़ोर लगाये डेग बढ़ाना मुश्किल हो रहा था। सहकारिता तक रास्ते भर वह पानी-पानी होती रही।

आदत आसानी से पीछा नहीं छोड़ती... अनाख़ाँ ने परंजी नहीं डालने का निश्चय कर लिया था फिर भी उसे दिल ही दिल में भय होता कि लोग उसे कहीं बन्दरिया की तरह देखकर मुँह न फेर लें। यह अच्छी बात थी, जो पुरुष उसके सामने से गुज़रे वे उसे नहीं पहचानते थे। किसी ने अनाख़ाँ का चेहरा नहीं देखा था।

घर लौटते समय वह ज़्यादा शान्तचित्त थी और कई वर्षों में पहली बार शाम की शीतलता का आनन्द पाया, नैमन्चा के ऊपर डूबते सूर्य की अल्पकालिक लाली देखी और अच्छी क़िस्मत का प्रतीक दूज का चाँद

देखा। अपने दरवाज़े पर उसने ख़ुद को आज़ादी के अहसास के साथ देखा। उसे ख़ुद पर नाज़ करने का पूरा हक़ था, वह अपने निश्चय से विमुख नहीं हुई थी।

सहकारिता में औरतें अनाख़ाँ को कहा करती थीं कि वह अब भी जवान है और उस की उम्र की पतझड़ तक अभी बहुत दूर है।

अनाख़ाँ उनकी बातें सुनकर किसी लड़की की तरह और लजा जाती।

वह क़िस्से-कहानियों जैसे नगर मास्को जानेवाली थी जहाँ की औरतें परंजी क्या चीज़ है नहीं जानती। त्र्योख़गोर्नाया मैन्युफ़ैक्तुरा नामक एक बड़ी आश्चर्यजनक मिल थी जहाँ बहुत-सी हुनरमंद रूसी जुलाहिन बहनें काम करती थीं। इस मिल में चौंका देनेवाले कल-करघे थे। वैसे ही करघे नैमन्चा में भी भेजे जायेंगे और नैमन्चा की जुलाहिनों को उनको चलाना सीखना पड़ेगा।

अनाख़ाँ अपने जन्म के क़स्बे से कभी बाहर नहीं गयी थी। सहकारिता में ऐसी औरतें भी थीं जो पड़ोस के मुहल्लों में लोग कैसे रहते हैं, यह भी नहीं जानती थीं। और यही बात भला कितनी पुरानी है कि उन्होंने अपने चूल्हे-चौके के आगे देखना शुरू किया? वे दूर मास्को में किस तरह पेश आयेंगी?

"क्या हम अपनी काली बेढब पोशाकों में राजधानी जायेंगी?" अनाख़ाँ ने मायूसी से सोचा। "लोग क्या कहेंगे? वे हमारा स्वागत कैसे करेंगे?"

रिज़वान चाची अनाख़ाँ के क़दमों पर चलते हुए सवालों की झड़ी लगा देती थी:

"वे मशीनें कैसी हैं? कोई उन मशीनों को किस तरह चला पायेगा? क्या मैं उन्हें अपने इन बूढ़े सींग जैसे हाथों से चला पाऊँगी? तुम्हारा क्या ख़्याल है, अध्यक्षा बहन?"

अनाख़ाँ ने उसे ऐसे आत्मविश्वास के साथ आश्वस्त किया जो वह ख़ुद नहीं महसूस कर पा रही थी।

दूसरी चिन्ता लड़कियों के कारण थी। उसे लम्बे समय तक उन्हें अपने भरोसे छोड़ना पड़ेगा।

निस्सन्देह, बशारत पर भरोसा किया जा सकता है। वह बहुत से बड़े-बड़ों से कहीं अधिक स्व-निर्भर और समझदार थी। बिना किसी की मदद के उसने जान लिया था कि वहाँ फ़ोरमैन के लिए एक स्कूल होगा

ग्रौर उसके बारे में विस्तृत जानकारी पहले सोफ़िया बोरिसोवना से फिर जुराख़ाँ से प्राप्त कर ली थी कि उस स्कूल में क्या पढ़ाया जायेगा। उसके तुरंत बाद ही ग्रनाख़ाँ ने उसे दरख़्वास्त लिखते पाया। तुर्सुनाय उसके पीछे से उसकी ग्रोर जिज्ञासा के साथ देख रही थी। बशारत ने लिखने में ख़ास एहतियात बरती थी। हर शब्द मानो नक़्क़ाशी किया गया था: कोम्सोमोल के ग्राह्वान पर..."

"क्या तुम फ़ोरमैनी के स्कूल जाने की सोच रही हो?" ग्रनाख़ाँ ने ईर्ष्या के साथ पूछा। "क्या तुमने यह नहीं सोचा कि पहले मुझसे इजाज़त ले लेनी चाहिए?"

"मम्मी प्यारी, मैं इसे भेजने से पहले ग्रापको दिखा देना चाहती थी।"

बशारत निर्माण फ़ोरमैन बनने के ग्रपने फ़ैसले को विवाद-रहित समझती थी।

ग्रनाख़ाँ तुर्सुनाय के बारे में ज़्यादा परेशान थी। लड़की फिर बोदी हो गयी थी, ग्रासानी से डर जाती, ग्रंधेरा उतर ग्राने पर कभी घर से बाहर नहीं जाती। जल्दी सोने चली जाती ग्रौर नीन्द भी बेचैनी भरी होती। रात के समय वह माँ या बहन को जगाती:

"माँ, सो रही है क्या?"

"बशारत, सुन रही है? कोई घर के पास चल रहा है।"

कभी-कभी विचारों में खोयी, ध्यानमग्नता में सहसा ग्रत्यधिक ग्रप्रत्याशित प्रश्न पूछ बैठती:

"क्या यह सच है कि क़ुद्रतुल्लाह हज़ारशैख़ का मुरीद है?"

"तुमने ग्रंज़िरत दादी से सारी वाहियात बातें सीख ली हैं," बशारत उसका मखौल उड़ाती। "तुम एकदम बुढ़िया जैसी हो! जाग्रो, ग्रौर जाग्रो ग्रपने उन श्राद्धकर्मों में तब ग्राख़िर में पता लगेगा कि तुम्हें कोम्सोमोल में नहीं लिया जा सकेगा!"

"मैं ग्रब कभी नहीं जाऊँगी, बशारत, कभी नहीं," तुर्सुनाय डरकर कहती।

इधर हाल से उसका चेहरा व्यथित-सा दिखाई देता, वज़न भी काफ़ी कम हो गया था।

"तुम्हें क्या तकलीफ़ है, बेटी," माँ पूछती। "कहीं दर्द महसूस होता है?"

"नहीं।"

"तुम किस से भयभीत हो? हर ग्रावाज़ पर चौंक क्यों उठती हो?"

"मुझे नहीं मालूम..."

"फिर भी, मुझे तो बताग्रो।"

तुर्सुनाय या तो चुपचाप माँ से चिपक जाती या घबड़ाकर चीख़ पड़ती:

"मैं डरी नहीं हूँ, तनिक भी नहीं," लेकिन उसकी ग्राँखों में विषाद होता।

हर पल सभी तरह की बातें ग्रनाख़ाँ के दिमाग़ में ग्रा घुसतीं: कुत्सित, झूठी ग्रफ़वाहें भावी मिल के बारे में शहर में फैल रही थीं। उन्हें कौन फैला रहा है?

इसके बावजूद परियोजना के प्रति जनता के हौसले बढ़ते जा रहे थे।

ग्रनाख़ाँ घर पर ही थी जब दरवाज़ा चरमराया ग्रौर बिना चचवान की लाल परंजी लगाये ख़ालनिसा ग्रन्दर ग्रायी। उसके साथ कुछ ग्रौरतें भी थीं जिन्हें ग्रनाख़ाँ ने पहले कभी नहीं देखा था। वे पाँच थीं ग्रौर उन्होंने धूप से बेरंग हुई पुरानी परंजी डाल रखी थी। उनके पैरों में धूल भरी महसियाँ ग्रौर हाथों में पुलिन्दे थे।

बरामदे में ग्रपनी परंजी उतारते हुए ख़ालनिसा ने तेज़ी से कहा:

"ग्रनाख़ाँ प्यारी, यह सब मेरी सहेलियाँ हैं। हम एक ही गाँव की हैं। यह ग्रौरत एक खेतिहर मज़दूर थी ग्रौर मेरी तरह ही मुसीबतज़दा। हम जज ज़ुराख़ाँ के प्रति ग्रपना सम्मान प्रकट करने ग्रायी हैं।"

"ग्रपना सम्मान?"

"हम उसे ग्रपनी ग्राँखों से देखना चाहती हैं," सबसे बूढ़ी ग्रौरत ने ग्रपने धूप से साँवलाये चेहरे पर से चचवान हटाते हुए कहा। उसके चेहरे पर पसीना झलमला रहा था। "उसने ग्रपने सारे सपने पूरे कर लिये हैं। हमें बताया गया है कि उसने ख़ुद लेनिन को देखा है, ग्रल्लाह उसकी उम्र दराज़ करे। ग्रब हम उसे देखना चाहती हैं।"

"ज़ुराख़ाँ तुम लोगों को देखकर ख़ुश होगी। वह गाँवों में ख़ुद जाती है। क्या वह तुम्हारे गाँव नहीं गयी है?"

"नहीं, बेटी। शायद ख़ालनिसा ने तुम्हें बताया हो कि हमारा गाँव ज़रा दूर-दराज़ है ग्रौर इसे पत्थर-पहाड़ियों में ग्रासानी से नहीं ढूंढ़ा जा सकता। हमने ख़ुद ग्राने का फ़ैसला किया। ग्रौर हमें ख़ुशी है कि हम

यहाँ आ पहुँची हैं। ख़ालनिसा ने हमें बता दिया है कि किस तरह औरत जज ने उसकी मदद की है। हमें इसका कभी विश्वास नहीं होता अगर इसे हमने अपनी आँखों से देखा और कानों से नहीं सुना होता। हमारे गाँव के किसी आदमी को इतना सम्मान और वह भी एक औरत को!"

"हमें बताया गया है, जज ज़ुराख़ाँ ने तुम्हारी भी बड़ी मदद की है?"

"हाँ।"

"हमें बताया गया है कि तुम भी मास्को जा रही हो?"

"हाँ। मैं सफ़र की तैयारी कर रही हूँ।"

"क्या सच है कि कोई तुम्हें मार डालना चाहता था? क्या तुम भयभीत नहीं?"

"नहीं। जिसने मुझे पीछे से चाकू मारा, वह भयभीत है। वह मुझसे डरता, छुपता रहे!"

औरतों ने हैरत से अपने सिर हिला दिये।

हाजिया तेज़ी से आँगन में आयी और आते-आते अपनी परंजी उतार फेंकी। बशारत और तुर्सुनाय उसकी ओर दौड़ पड़ीं, अपने हाथ उसके गले में डाल दिये। हाजिया ने उन्हें चूम लिया और आस-पास बेताबी से देखा।

"क्या बहन ज़ुराख़ाँ यहाँ हैं?"

...ज़ुराख़ाँ धीरे-धीरे सड़क के छायादार हिस्से की ओर से चली आ रही थी। पहले की तरह इस दफ़े उसने चायख़ाना के नुक्कड़ के पास सड़क पार नहीं किया। छोटे रूमाल से हवा करते हुए, वह चुपचाप चायख़ाना के आगे धूल-भरी ज़मीन का चक्कर काटते हुए, जिसपर चौकस चायख़ाना के मालिक ने पानी का छिड़काव किया था, चली गयी। ज़ुराख़ाँ को अब इसका डर नहीं था कि उसे गाली गलौज या मखौल का निशाना बनाया जायेगा। चायख़ाना से सिर्फ़ उसे यही बुदबुदाहट की आवाज़ सुनाई पड़ी जिसमें आदर का भाव था: "वही है! मैं कहता हूँ, यह वही है..."

ऐसा भी समय था जब उसे नैमन्चा में अपना चेहरा दिखाने में भय होता था; किसी भी क़ीमत पर वह रात होने के बाद वहाँ ठहर पाने की हिम्मत नहीं कर पाती थी।

लोगों के देखते-देखते कभी का गन्दा, अभावग्रस्त और बेदख़ल नैमन्चा

जो क़ुद्रतुल्लाह् बाय के मकड़ी के जाले में फँसा था, बदल रहा था। दुकानदार का घर घेरा जा चुका था, बाय का वर्कशॉप सुनसान हो चुका था... पुराने शह्र के इस मुहल्ले को अब फिर से मरम्मत की गयी इमारत से जाना जाता। यही महिलाओं की सहकारिता और उस की दुकान थी। दुकान को चमकते नीले रंग से रंगा गया था। शह्र भर की औरतें हमेशा यहाँ भीड़ लगाये रहतीं। फिर नया स्कूल भी था जिसे मुहल्ले में रहनेवाले लोगों ने बनाया था। कपड़ा मिल की भी योजना तैयार थी। कपड़ा मिल के बनते ही नैमन्चा शह्र के केंद्रीय इलाक़ों में एक बन जाएगा।

जुराख़ाँ के घर के पास सड़क निर्जन और निस्तब्ध थी। बच्चों की आवाज़ भी नहीं सुनाई पड़ती थी। जुराख़ाँ पल भर के लिए दरवाज़े के पास रुकी और अनजाने ही उस ओर नज़र डाली जहाँ पर अनाख़ाँ पर हमला किया गया था। चाकू से हमला करनेवाले उस आदमी का अब तक पता नहीं चला था। यह कोई इत्तफ़ाक़ न था। इससे प्रकट होता था, नैमन्चा में अब भी ऐसी जगहें मौजूद हैं जहाँ क़ातिल छुप सकता है।

दरवाज़े के नीचे किसी सफ़ेद-सफ़ेद-सी चीज़ ने जुराख़ाँ का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। वह किसी रूमाल की तरह लग रही थी जो शायद किसी की ग़लती से गिर पड़ा था। वह उसे उठाने के लिए झुकी और उसका हाथ बीच हवा में अटक गया। यह रूमाल न था बल्कि एक चौतहा काग़ज़ का टुकड़ा था... एक पत्थर से उसे दबाकर रखा गया था। उस पर धूल न थी जो प्रकट करती थी कि इसे अभी-अभी वहाँ रखा गया है।

जुराख़ाँ ने उसे उठाकर खोला। उस पर पेंसिल से अरबी में दो पंक्तियाँ लिखी थीं। जुराख़ाँ ने तहरीर पढ़ी और तेज़ी से अपने आस-पास देखा जैसे उसे अपने पीछे किसी के होने का अहसास हुआ हो। लेकिन सड़क पहले की ही तरह निर्जन और निस्तब्ध थी। मुलायम घनी धूल की परत पर किसी आदमी के दरवाज़े से तिरछे दौड़कर जाने के पद-चिह्न थे।

जुराख़ाँ दरवाज़े पर झुक गयी, उसे अपनी ताक़त जवाब देती प्रतीत हुई। उसे अपना दिल डूबता-सा लगा। उसने तहरीर को फिर से पढ़ा और ख़ुद को सीधा खड़ा करने की कोशिश की। शायद दुश्मन आड़ में छुपा उसकी निगरानी कर रहा था। ख़ैर, अगर वह मौजूद भी है तो जुराख़ाँ को वह बुज़दिल नहीं पायेगा!

दरवाज़ा खुला और अनाख़ाँ व हाजिया मेहमान से मिलने बाहर आ गयीं। दोनों चीख पड़ीं:

"क्या बात है। बहन?"

"क्या हुआ?"

"क्या तुम्हें यहाँ आये देर हुई, हाजिया?" जुराख़ाँ ने पूछा।

"मैं... मैं अभी-अभी आयी हूँ।"

जुराख़ाँ ने तहरीर दिखायी।

"क्या तुमने इसे दरवाज़े पर देखा था?"

"न-नहीं।"

"और क्या घर के आस-पास किसी को देखा था?"

"कोई भी नहीं।"

"सोचो।"

"मुझे पूरा विश्वास है। अभी की तरह यह निर्जन था..."

"और तुमने भी किसी को नहीं देखा, अनाख़ाँ?"

"मेरा ख़्याल है, नहीं। यह है क्या?"

"हमारे दोस्तों को हम कब और कहाँ जाते हैं, इसकी ठीक-ठीक ख़बर रहती है," जुराख़ाँ ने अनाख़ाँ को तहरीर देते हुई जवाब दिया।

वे आँगन में आ गयीं। अनाख़ाँ ने तहरीर पर नज़र डाली और धक से रह गयी। उसने हाजिया को थमा दिया, हाजिया ने उसे ज़ोर से पढ़ा:

"इस बार तुम नहीं मरोगी लेकिन अगर तुमने दुबारा यहाँ क़दम रखा तो तुम्हारी लाश नैमन्चा से जायेगी।"

"यह कौन लिख सकता है?" ख़ालनिसा ने विस्मय से कहा।

अनाख़ाँ ने ग़ुस्से से अपना चेहरा दरवाज़े की ओर मोड़ा:

"ज़रूर वही होगा जिसने मुझ पर हमला किया था।"

गाँव की औरतों में हड़कंप मच गयी। एक ने अपनी परंजी डाल ली। दूसरी ने अपनी पोशाक का कॉलर ज़ोर से खींचते हुए अपने सीने पर थू-थू किया।

"है ख़ुदा, हम पर रहम कर... बस तू ही तू है ख़ुदा!"

लेकिन उनमें से सबसे बड़ी ने अपने ललाट का पसीना पोंछा और साथियों से चीखकर बोली:

"किकियाना बन्द करो! विलाप क्यों करती है – जैसे मर रही है। किसी को बोलने का मौक़ा भी देगी..."

वह ज़ुराख़ाँ की ओर मुड़ गयी:

"बेटी, परवाह न करो। ऐसी चिट्ठी लिखनेवाले का हाथ गल जाये! तुम्हारे अनमोल मस्तक की ओर हाथ उठाने की हिम्मत कौन करेगा? अगर ज़रूरत हुई, कोई पुरानी परंजी डाल लेना, जैसे मेरा... अपना चेहरा ढँक लेना और चली जाना। कोई तुम्हें नहीं पहचान पायेगा।"

अब चुप हुई औरतों को नज़दीक से देखते हुए ज़ुराख़ाँ नम्रता से मुस्कुरा पड़ी।

"तुम लोग कहाँ की रहनेवाली हो, चाची?"

"वे किसी दूर के गाँव की हैं," बशारत ने बीच में ही जल्दी से कहा। "वे आपको एक नज़र देखने आयी हैं।"

अपनी माँ से चिपकी तुर्सुनाय तहरीर पर आँखें टिकाये थी।

ज़ुराख़ाँ ने हाजिया की ओर मलामत भरी नज़र डाली। उसने उसकी नज़र का मतलब समझ लिया। उसने तहरीर को मोड़कर अपनी पोशाक की जेब में डाल लिया। फिर ज़ुराख़ाँ ने गाँव से आयी हर औरत से हाथ मिलाया और प्यार से तुर्सुनाय का गाल थपथपाया। लड़की डर से बुत बनी थी। तुर्सुनाय हाजिया की जेब की ओर तिरछी नज़रों से देखते हुए करुणा से मुस्कुरायी।

ज़ुराख़ाँ ने बच्ची को धीरे से अपनी ओर खींचकर, बग़ल में बैठा लिया। फिर उसे कसकर चिपकाते हुए आस-पास बैठी औरतों से कहा:

"नहीं, प्यारी चाची! नहीं, बहनें! मैंने परंजी इस लिए नहीं उतार फेंकी है कि फिर उसमें छिपूँ। यही तो बदमाशों, नाइंसाफ़ लोगों, हमारी जान के दुश्मनों की ख़्वाहिश है! लेकिन फिर कभी सूरज को मुझ से कुछ भी नहीं छुपा पायेगा – न चचवान न धमकियाँ। मैं अपनी परंजी झोंक चुकी हूँ और यह पहली दफ़ा लोगों ने मुझे डराने की कोशिश नहीं की है... मैं एक कम्युनिस्ट हूँ। और कम्युनिस्ट व कोम्सोमोल," ज़ुराख़ाँ ने तुर्सुनाय के चेहरे की ओर देखते हुए आगे कहा, "को अंधेरे या इस तरह की धमकियों से या जादूगरनी से जो निरा फरेब भर है, नहीं डरना चाहिए... क्यों बेटी, ठीक है न?"

"हाँ," तुर्सुनाय ने जुराख़ाँ की ग्रोर पूरे विश्वास ग्रौर कृतज्ञता के साथ देखते हुए धीरे से कहा।

उसके पीले चेहरे पर हल्की लाली दौड़ गयी।

जुराख़ाँ ने खोये-खोये-से ग्रन्दाज़ में ग्रपना सिर ऊपर उठाया।

"हम में से किसे याद है जब हम पैदा हुए ग्रौर ग्राँखें खोलकर पहली बार रोशनी देखी तो हमारे दिल में क्या था? किसी को भी नहीं, सच है न लेकिन ऐसा लगता है मुझे ग्राज भी याद है ग्रौर जब तक मैं ज़िन्दा हूँ उस क्षण को कभी नहीं भूल पाऊँगी। मैंने लोगों को इस बारे में बताया ग्रौर उन्हें इसके बारे में बताते में कभी नहीं थकूंगी..."

गाँव से ग्रायी ग्रौरतों ने जिज्ञासा के साथ एक-दूसरे की ग्रोर देखा। "तुम ऐसी बात कैसे याद रख सकती हो?" सबसे बूढ़ी ग्रौरत ने ग्राश्चर्य से कहा।

"कैसे, मैं बताती हूँ। ऐसा चार साल पहले हुग्रा, उन्नीस सौ इक्कीस में... हाँ, हाँ! इसी साल – इससे थोड़ा भी पहले नहीं – जब मेरा जन्म हुग्रा ग्रौर मैंने ग्रपनी ग्राँखें खोलकर रोशनी देखी। हम सत्तर ग्रौरतें – उज़बेक, ताजिक, तुर्कमानी – एक सम्मेलन में मास्को गयीं। हम वहाँ सलाह लेने, एक नये तरीक़े से – ऐसा तरीक़ा जिसमें सब सुखी होंगे – कैसे रहा जाये, यह सीखने गयी थीं। यह एक लम्बा सफ़र था ग्रौर जब हम पहुँचीं तो जो कुछ हमने देखा, उससे चकाचौंध रह गयीं। वहाँ देखने के लिए इतना कुछ था कि बस हम सब कुछ नहीं देख सकीं। पहले तो हमें सड़कों पर घूमने में भी भय हुग्रा – मकान ऊँचे-ऊँचे – मीनारों से भी ऊँचे थे। हम हर क़दम पर सकपका जातीं, हमें डर होता कहीं वे हमारे सिर पर न गिर पड़े।"

ख़ालनिसा ने ग्राश्चर्य से ग्रपनी जीभ चटका ली। जुराख़ाँ ने ग्रागे कहा:

"हमें एक बड़े सफ़ेद हॉल में ले जाया गया ग्रौर बताया गया कि लेनिन ग्राकर हमारा स्वागत करेंगे... मैंने ग्रपनी परंजी पहन रखी थी। लेकिन वहाँ ग्राने से पहले मैंने महसूस किया था कि सड़कों पर ग्रौरतें रुककर मुझे इस तरह ताकतीं जैसे मैं किसी दूसरी दुनिया की होऊँ। ग्रौर उनकी ग्राँखों में दया थी। ग्रौर उन्होंने मुझसे इस तरह बातें कीं जैसे लोग बच्चों से करते हैं मानों परंजी में मैं वयस्कों की बातें नहीं समझ पाती। पहले

मुझे ठेस लगी लेकिन बाद में मुझे शर्मिन्दगी महसूस हुई। मुझे लगा, मैंने ख़ुद को ठेस पहुँचायी है, ख़ुद को बेइज़्ज़त किया है। जैसे मैं अपने मुंह में बच्चों की चुसनी लगाये घूम रही हूँ... उस सफ़ेद हॉल में खड़ी होकर मैंने मन ही मन में सोचा: लेनिन मुझ तक आयेंगे और अपना हाथ बढ़ायेंगे... और मैं? क्या मैं उन्हें चचवान के अन्दर से देखूंगी और उनसे बात करूँ-गी? वह भी मेरी ओर दया-भाव से देखेंगे... मेरे अन्दर सब कुछ बागी हो उठा! मुझे लगा, मेरा ख़ून उबाल खा रहा है। लेनिन के आने तक मैं यह सहन करती रही। जब उन्होंने आकर हम लोगों से हाथ मिलाना शुरू किया, मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर पायी। मैंने अपनी परंजी उतार फेंकी और वह अभिशप्त चीज़ लेनिन के पैरों पर जा गिरी। अगर मैंने वैसा नहीं किया होता तो तत्क्षण ही वहीं भुक से जल उठती या मेरा मन मुझे जीवन भर धिक्कारता रहता। और लेनिन... उन्होंने क्या किया, जानती हो? सहसा नीचे झुककर परंजी उठाकर उन्होंने मेरी मदद करनी चाही। उन्होंने सोचा, शायद गिर पड़ी हो। मैं नहीं जानती मुझे ऐसा करने को किस चीज़ ने बाध्य किया या मुझे कैसे इतनी ताक़त आ गयी, मैं परंजी पर अपने पैर रखकर खड़ी हो गयी... जैसे वह कोई साँप हो! मैं कोई शब्द कहती, उससे कहीं ज़्यादा बेहतर ढंग से मेरी मुद्रा से लेनिन सब कुछ समझ गये और अपना हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया।

"कैसी हो?" उन्होंने कहा। "क्या नाम है?"

मैंने क्या जवाब दिया, मुझे याद नहीं। फिर उन्होंने कहा:

"मेरी ओर से तुम्हें बधाई, कॉमरेड जुराख़ाँ।"

"मेरा ख़्याल है मैंने कहा, "धन्यवाद।"

"तुम्हें धन्यवाद, कॉमरेड', उन्होंने कहा, 'बोल्शेविकों की पार्टी की ओर से।' यही उन्होंने मुझसे कहा था!"

और फिर उन्होंने आगे कहा:

"उज़बेकिस्तान की महिलाओं को, उन सब को जो मानवीय और नागरिक सम्मान के लिए संघर्ष कर रहे हैं, मेरी ओर से अभिनन्दन प्रेषित करना। इस संघर्ष में सोवियत सरकार तुम्हारा समर्थन करेगी।"

"मुझे कहीं बाद में उनके शब्दों का मतलब समझ में आया। मैं ठीक से उत्तर नहीं दे पायी। मैंने बस इतना ही कहा: धन्यवाद, धन्यवाद। दूसरी औरतों की भी यही स्थिति हुई थी... हमने पढ़ा और सुना था

कि लेनिन दिग्गज योद्धा रहे हैं। लेकिन नहीं, वह दिग्गज योद्धा से नहीं लगते थे। वह एकदम सीधे-सादे थे। लेकिन उन्होंने मुझ से किस तरह हाथ मिलाया, यह मैं कभी नहीं भूल पाऊँगी... इसी हाथ को..."

जुराख़ाँ ने अपना दायाँ हाथ ऊपर उठाया फिर अपने सीने से लगा लिया और सभी औरतें हाथ की ओर साँस रोके इस तरह एकटक देखती रहीं जैसे उन्हें किसी असाधारण चीज़ को देखने की उम्मीद हो।

"चाची, अब मुझे बताओ," जुराख़ाँ ने सबसे बूढ़ी औरत की ओर मुड़ते हुए कहा, "क्या उसके बाद मैं परंजी के पीछे छुप सकती हूँ?"

"मैं तो गाँव की एक अनपढ़ औरत हूँ। यदि मेरे शब्दों से तुम्हारी भावनाओं का ठेस पहुँची हो तो, मुझे माफ़ करना, आख़िर मैं बूढ़ी गंवार औरत जो ठहरी। ख़ुदा की मेहरबानी है, उसने तुम जैसे लोग बनाये हैं।"

"ख़ुदा ने तो इस तरह की धमकी भरी तहरीर लिखनेवालों को भी बनाया है," जुराख़ाँ ने कहा।

गाँव की औरतों ने तुरंत ही बोलना शुरू कर दिया।

"उस आदमी का हाथ सूख जाये.... नरक में पड़े... "

जब अंधेरा घिरने लगा, सभी औरतें जुराख़ाँ को घर छोड़ने गयीं। दरवाज़े पर वे थोड़ी देर रुकीं।

"हम यहाँ किस लिए रुके हैं? आओ, देर हो चुकी है," हाजिया ने कहा।

"तुम हम लोगों के साथ आ रही हो?" जुराख़ाँ ने पूछा।

"मैं नगर समिति तक साथ जाऊँगी..."

"फिर जल्दी करो।"

"मैं तैयार हूँ," हाजिया ने जवाब दिया।

वह बिना परंजी के थी। जुराख़ाँ ने मुड़कर देखा: लड़की की परंजी गेंद की शक्ल में पोर्च की सीढ़ियों पर लुढ़की पड़ी थी।

प्रसन्न हाजिया चुपचाप आनन्दपूर्वक हँस रही थी।

जुराख़ाँ ने उसे गले लगा लिया। अनाख़ाँ और बशारत भी उसके पास दौड़कर आयीं, अपनी बाँहें उसके गले में डालकर उसका गाल चूमने लगीं। तुर्सुनाय ने भी उसके गले में अपनी बाँहें डाल दीं।

"मैं ऐसी चीज़ कभी नहीं पहनूँगी," तुर्सुनाय ने पोर्च पर उछलते हुए और सीढ़ियों के नीचे से परंजी की झाँकती हुई किनारी को पाँवों से रौंदते हुए कहा...

* * *

लगभग ग्राधी रात हो ग्रायी थी जब हाजिया घर लौटी। शहतूत के पेड़ के नीचे घर के पास एर्गश उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

"हमने एक-दूसरे को लम्बे ग्रर्से से नहीं देखा है," यह कहते-कहते वह चुप हो गया। लड़की की ग्रोर देखते हुए उसके चेहरे पर उलझन के भाव ग्रा गये।

"तुम क्या कहना चाहते हो?" उसने ललकारते हुए पूछा। उसकी चूप्पी से उसे ठेस पहुँची थी ग्रौर वह चौकन्ना हो गयी थी।

"दिन में – क्या तुम दिन में भी इसी तरह घर से बाहर जाती हो?" उसने पूछा।

"क्या तुम्हें विश्वास नहीं होता? या तुम्हें शायद यह पसन्द नहीं?" उसने तेज़ी से जवाब दिया।

"ग्रच्छा तो तुम ऐसी हो," उसने तारीफ़ करते हुए बुदबुदाकर कहा। "ग्रच्छा तो तुम ऐसी हो, हाजिया।"

बेबस, उसने ग्रपनी ग्राँखें ज़मीन पर टिका दीं।

उसने उसका हाथ थाम लिया।

"मुझे नहीं मालूम – मैं तुम्हारे बारे में बहुत कुछ नहीं जानता। दूसरों के बारे में भी नहीं। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि हमारे नैमन्चा की ग्रौरतें इतनी साहसी हैं। मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ, ग्रगर ग़रूर से तुम्हारा सिर बहुत फिर नहीं गया हो... ग्रपनी दुकान के साथ तुमने काफ़ी नाम कमा लिया है। सारा शहर तुम्हें जानता है।"

"यह सब जुराख़ाँ की वजह से है," हाजिया ने लगभग फुसफुसाकर कहा।

एर्गश ने सिर झुकाकर उसकी ग्राँखों में झाँकने की कोशिश की।

"मत सोचो कि मैं ग्रंधा-बहरा हूँ। मैं देख-सुन सकता हूँ। मैं तुम्हारे पीछे वैसे ही लगा रहता हूँ जेसे हिरण के पीछे शिकारी कुत्ता। तुम जिस तरह काम कर रही हो, मुझे पसन्द है। मेरा विश्वास करो, मैं तुम्हारी क़द्र करता हूँ।"

"यह सब जुराख़ाँ की वजह से है," हाजिया ने फिर कहा।

"तुम मास्को जाग्रोगी ग्रौर पढ़ी-लिखी बनकर वापस ग्राग्रोगी। तुम

मेरी ओर देखना भी नहीं चाहोगी। मुझे छोड़कर चिड़िया की तरह फुर्र से उड़ जाओगी।"

हाजिया मौन रही। एर्गश की आँखें चमक उठीं।

"लेकिन जान लो मैं तुमसे पीछे नहीं रहूँगा। मैं तुम्हारे बराबर आ ही जाऊँगा, चाहे तुम आसमान तक क्यों न पहुँच जाओ।"

सहसा हाजिया ने अपना सिर ऊपर उठा लिया और सीधे एर्गश के चेहरे की ओर देखते हुए साहसपूर्वक और उत्साह के साथ कहा:

"तुम मेरी बराबरी करोगे? क्या तुम्हारा यही मतलब है? आओ, देखें कौन किसे हराता है! हो जाये आज़माइश?"

"अच्छा तो तुम ऐसी हो!" उसके गर्म-गर्म हाथ को अपनी हथेलियों में हल्के-हल्के दबाते हुए उसने फिर कहा।

सत्रहवाँ भाग

नैमन्चा में क़ब्रगाह से सटा बंजर ज़मीन का एक बहुत बड़ा अनाम टुकड़ा था। विहगावलोकन से यह किसी धूल भरे, सिकुड़े, फटे बूट की तरह लगता।

वसन्त की शुरुआत में हरियाली के नाम पर वहाँ मीडो स्वीट, बदबूदार झाड़ियों और बथुआ के उग जाने से वह बंजर ज़मीन पट जाती जो बीच गर्मियों में सूख जाते। इसमें काँटों के चुभे बिना एक क़दम रखना भी असंभव था। चप्पे-चप्पे में लडूरी खारी दलदलों, कंकड़-पत्थर, ढूहों और खड्ढों से भरी यह बंजर ज़मीन किसी कुष्ठ रोगी की तरह प्रतीत होती। इसके नैमन्चावाले छोर के साथ-साथ लीद और बिनौले की नीली-नीली राख का ढेर लगा था। यही वह जगह थी जहाँ न जाने कब से पूरा शहर कूड़ा-कचरा जमा करता आ रहा था।

आवारा कुत्ते कूड़े-कचरे के ढेर में मारे फिरते। आकाश से गिर आये-से मक्खियों के बादल सुबह से रात तक हवा में लटकते रहते।

यहाँ से पुराना नैमन्चा जो बंजर ज़मीन की ढलान से उतरता हुआ यहाँ आ मिलता था, अपने सटे-सटे, धूल से अटे आँगनों की भरमार, ऊबड़-खाबड़, भुरभुराती दीवारों, मिट्टी के छोटे-छोटे झोंपड़ों और लकड़ी के बरामदों के साथ मधुमक्खियों के छत्तों का एक पुंज-सा मालूम पड़ता। सबसे ऊँची ज़मीन पर बनी नीले गुम्बदवाली मस्जिद और हरे-हरे बग़ीचों से घिरा क़ुद्रतुल्लाह का बड़ा मकान, दोनों ऐसी चीज़ें थीं जो इस पृष्ठभूमि से बाहर मालूम पड़तीं।

इस "बूट" की एँड़ी खुली ढलान थी जिसे शेर का टीला कहा जाता। लेकिन अलस शेर का अपना सादृश्य यह कब का गँवा चुका था। हवा और वर्षा ने उसे सान पत्थर की तरह सपाट बना दिया था जबकि लोगों ने उसे यहाँ-वहाँ से विरूप बना डाला था। टीले की चोटी के साथ-साथ एक नीची मिट्टी की दीवार थी—कभी लोगों ने वहाँ ईंटों का एक भट्ठा बनाना शुरू किया था।

क़ब्रगाह "बूट" के पना से होती हुई बंजर ज़मीन के किनारे-किनारे चली जाती। इसमें ऊँची-नीची क़ब्रों के बीच गुम्बद और आलोंवाला हज़ार-शैख़ का पत्थर का मक़बरा सिर उठाये खड़ा था। मक़बरे के कोनों में लम्बे खेमे लगाये हुए थे और उन पर फटे-पुराने गूदड़ लटकते रहते जो धूप-पानी से फ़ीके पड़ गये थे और घोड़े के बालों के गुच्छे झाड़ू की तरह दिखाई देते।

भिनसरे एर्गश, यफ़ीम दनीलोविच और दोब्रोख़ोतोव शेर के टीले में आ पहुँचे थे। इंजीनियर के आग्रह पर ज़मीन चौरस करनेवाले आदमी तिपाईवाले यंत्र लिये बंजर ज़मीन में इधर-उधर फैल गये।

एर्गश लगातार धूम्रपान किये जा रहा था। दोब्रोख़ोतोव अपनी पुरानी शिकन पड़ी टोपी की किनारी से अपनी आँखें बेचैनी से सिकोड़े झाँक रहा था। एर्गश और इंजीनियर को एक-दूसरे पर दृष्टिपात करते देख यफ़ीम दनीलोविच अपनी मूँछों के बीच चुपचाप हँस पड़ते।

"आपकी क्या राय है, सेर्गेय ल्वोविच? क्या आपको जगह नहीं पसन्द आयी?" अपनी भौंहों के ऊपर चमकते टोपी के चूड़े को ऊपर उठाते हुए यफ़ीम दनीलोविच ने पूछा।

"मनहूस है," दोब्रोख़ोतोव ने जवाब दिया।

"प्रलय के बाद ख़ुदा यहाँ नरक बनाना चाहता था," एर्गश ने कहा।

"मैं सोचता हूँ, मिल को कोई बेहतर जगह मिलनी चाहिए थी," दोब्रोखोतोव ने प्रच्छन्न विक्षोभ से अपनी राय दी।

यफ़ीम दनीलोविच ने अपना सिर हिलाया।

"हमारा काम बंजर ज़मीन को विकसित करना है। अच्छी ज़मीन पर हम कपास पैदा करेंगे।"

'कपास ..." दोब्रोखोतोव ने मन में सोचा। "बेचारे मिस्र से मुक़ाबला करने की सोच रहे हैं!"

"भुनभुनाना छोड़ो!" यफ़ीम दनीलोविच ने कहा। "अपने सिर ऊँचा रखो! हम इन आजिअस अस्तबलों* को, जैसा कि तुम इन्हें कह सकते हो, साफ़ कर डालेंगे। लोग मदद करेंगे। पूरा शहर हमारी मदद को आ जुटेगा।"

"इतने सालों से चले आ रहे इस कूड़ा भण्डार को आप कुछ दिनों में साफ़ कर डालना चाहते हैं।"

"वे अस्तबल कैसे थे? आपने हमें खुद उनके बारे में बताया था... क्या हम पुरातनों से भी बदतर हैं? हम भी लोगों की अजस्र शक्ति की धारा प्रवाहित कर देंगे!"

दोब्रोखोतोव अविश्वासपूर्वक हँस पड़ा।

एक दस इंच लम्बी छिपकली घनी उगी मोथे की झाड़ियों से तेजी से निकल भागी और एक पत्थर की छाया में आदमियों की ओर निस्पंद, बेजान-सी आँखों से ताकती हुई चुपचाप रुक गयी।

ओस से भीगी घास से दमघोंट भाप उठ रही थी।

दोब्रोखोटोव झुककर अपनी पतलून से काँटे निकालने लगा। एर्गश यफ़ीम दनीलोविच को बुलाकर एक ओर ले गया और धीमी आवाज़ में कहा:

"इंजीनियर तो कायरता दिखा रहा है।"

"वह घबड़ा रहा है। लेकिन इसका मतलब बस यही है कि वह इस काम को गंभीरता से ले रहा है।"

"भूतपूर्व विशेषज्ञ। वह तो हमारे लिए महँगा पड़ेगा..."

---

* आजिअस अस्तबल – इन गन्दे अस्तबलों को हरक्यूलिस ने नदी लाकर साफ़ किया था – अनु।

"महँगा?" यफ़ीम दनीलोविच ने अपनी जेब से एक नोटबुक निकाली और खोलकर एर्गश को थमा दिया। "पढ़ो, यहाँ क्या लिखा है।"

एर्गश ने पढ़ा:

"बुर्जुआ विशेषज्ञों से काम सीखने में कम्युनिस्ट भयभीत न हों... सीखने के लिए कुछ भी उठा मत रखो: सीखना सोद्देश्य हो तो उसके लिए कुछ भी महँगा नहीं।"

"दोब्रोख़ोतोव इतनी बुद्धिमत्ता जताने की कोशिश मुझ पर कर चुका है," एर्गश अपने कन्धे उचकाते हुए बड़बड़ाया।

"यह लेनिन के शब्द हैं, जिन्हें तुम इतनी बुद्धिमत्ता कहते हो।"

एर्गश ने अपनी जीभ काटी, दुबारा नोटबुक की ओर देखा और विचार-मग्न हो उठा।

"अगर दुश्मन बुद्धिमान हो तो उससे भी कैसे सीखा जाये, यह जानना चाहिए," यफ़ीम दनीलोविच ने आगे कहा।

परियोजना के प्रमुख और कमिस्सार को फुसफुसाकर बातें करते देख दोब्रोख़ोतोव होशियारी से वहाँ से दूर चला गया। वे दोनों शेर के टीले के निचले सिरे में उससे आ मिले।

यहाँ से पूरी बंजर ज़मीन, पच्चर-सी घुस आयी धब्बों की तरह फैली क़ब्रोंवाली क़ब्रगाह, पनचक्की को जाती सड़क और उसके पीछे ख़ूबानी का छोटा-सा बग़ीचा – सब साफ़-साफ़ दिखाई देते।

"इंजीनियर, क्या आप नहीं सोचते, हमें शेर के टीले से अपना काम शुरू करना चाहिए?" यफ़ीम दनीलोविच ने नम्रता से कहा। "हम इसे डायनामाइट से उड़ा देंगे और दोनों ओर से ईंट-पत्थर हटाने के लिए दो कोम्सोमोल टीमें आ जायेंगी।"

"क्या, आपने क्या कहा?" एर्गश ने विस्मय से पूछा। "क्या यहाँ चौरस ज़मीन काफ़ी नहीं, यफ़ीम दनीलोविच? आपकी क्या योजना है? टीले को उड़ा देने की, क्या सचमुच?"

"तुम्हें अपनी वह चौरस ज़मीन कहाँ दिखाई दे रही है?"

"क्या मतलब है आपका? यहीं है। अपनी आँखें खोलिये।"

"लेकिन वह क़ब्रगाह है। मुर्दे वहाँ सो रहे हैं।"

"इससे क्या। क्या हम मुर्दे से डर जायेंगे? जहाँ तक मुझे याद है, यह तब से क़ब्रगाह है..."

"यही तो बुरी बात है। चीफ़, तुमने इस पर ठीक से ग़ौर नहीं किया है।"

एर्गश ने अपने सख़्त होंठों को व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ सिकोड़ा।

"यफ़ीम दनीलोविच, अगर हम इस्लाम की बात करें तो यह ज़ाहिर होगा कि मैं आपसे कहीं ज़्यादा मुसलमान हूँ। लेकिन जब हमारे सामने मैदान है, मैं क्यों पागलों की तरह इस दीवार से अपना सिर टकराऊँ?" एर्गश ने शेर के टीले की ओर इशारा किया।

"तुम एक अच्छे मुसलमान हो। लेकिन क्या तुम्हें पूरा विश्वास है कि तुम एक अच्छे कम्युनिस्ट भी हो?" यफ़ीम दनीलोविच ने स्नेहपूर्ण मुस्कान के साथ जवाब दिया। "यह दीवार उस सदियों पुरानी दीवार के मुक़ाबले, जिसे तुम् नहीं देख पाते, कुछ भी नहीं।"

"मुझे तो बस यही दिखाई देता कि आप सब भयभीत हैं!" एर्गश क्रोध से जल उठा। "आप नैमन्चा के चार-पाँच बकर-दाढ़ीवाले साफ़ाधारी बुड्ढों से भयभीत हैं! तेशिक्क़ोप्क़ोक़ की जादूगरनी आपको राह दिखायेगी या क्या? सिर्फ़ उपेक्षित पत्थरों के इस ओर एक भी ताज़ा क़ब्र नहीं। भूतों के इस बसेरे," उसने हज़ारशैख़ के मक़बरे की ओर अपना मुक्का दिखाया, "छिपकलियों की इस माँद का जहाँ तक सवाल है, यह हज़ार साल से ज़्यादा पुराना है—और यही समय है जब इसे मिट्टी में मिला दिया जाये। इस ख़ाली पत्थर के सामने सिर झुकाकर और अपना सिर पटककर लोग ख़ुद की काफ़ी ऐसी-तैसी करा चुके हैं। क्या हमें भी इसके सामने सिर झुकाना चाहिए? अगर सिर से पाँव तक अंधविश्वास में डूबे थोड़े से इन बेवकूफ़ों और कट्टर-पंथी कलहानल फैलानेवालों ने एक भी शब्द बोलने की हिम्मत की तो मैं सौगंध खाकर कहता हूँ, मैं ख़ुद उनका गला काट डालूँगा!"

यफ़ीम दनीलोविच ने गहरी साँस ली और उसकी ओर देखा।

"लोग साथ नहीं देंगे, एर्गश, तुम्हारे जैसे योद्धा का अनुसरण वे नहीं करेंगे। वे काम करना चाहते हैं लेकिन तुम्हें हमेशा लड़ाकू ही नहीं बना रहना चाहिए। अगर तुम्हें लोगों के सिर की टोपी उतारने कहा जाये, तुम उनका सिर भी कलम करने लग जाओगे और आख़िर में अकेले रह जाओगे। नहीं, लोग तुम्हें नेता के रूप में नहीं चाहेंगे।"

दोब्रोख़ोतोव दिलचस्पी से यह बहस सुन रहा था। पहले सुल्तानोव की

बात उसकी जल्दबाज़ी के बावजूद उसे ठीक लगी फिर वह नदेझ्दिन के पक्ष में ग्रा गया। सौभाग्य से ग्रपनी राय निश्चित करने से पहले उसने बहस में भाग नहीं लिया था...

यह कोई मामूली परियोजना न थी, इसके लिए इंजीनियर को एक ख़ास नज़रिये की ज़रूरत थी। शुरू से ही दलदल में न फँस जाये, इससे बचने के लिए वह एक ऐसा नज़रिया सोच निकालना चाहता था।

एर्गश ने इंजीनियर की खोजपूर्ण निगाह भाँप ली ग्रौर भौंहें सिकोड़ते हुए तम्बाकू के लिए जेब में हाथ डाला।

"क्या मैं फिर चीख रहा हूँ?" उसने इस तरह पूछा जैसे उसे ख़ुद पर ग्राश्चर्य हो।

"हाँ, तुम चीख रहे हो," यफ़ीम दनीलोविच ने शान्तिपूर्वक जवाब दिया।

"जुराख़ाँ को दी गयी धमकी के लिए मैं दुश्मन को माफ़ नहीं कर सकता। मेरा दिल इसे गवारा नहीं करेगा।"

"यह ग्रादमी जैसी बात हुई। मेरी भी यही राय है कि हमें बिना देर किये जवाब देना चाहिए," यफ़ीम दनीलोविच ने सिगरेट के लिए एर्गश से तम्बाकू लिया। "क्या ख़्याल है, इंजीनियर?"

दोब्रोख़ोतोव को उस सवाल की उम्मीद न थी लेकिन उसने बेझिझक उत्साहपूर्वक जवाब दिया:

"जितनी जल्दी हो सके, हमें परियोजना शुरू कर देनी चाहिए। ग्रपनी योजना से कम से कम एक हफ़्ता या नहीं तो एक ही दिन पहले। हम सबसे ग्रच्छा जवाब यही दे सकते हैं, क्या ग्राप ऐसा नहीं सोचते?"

यफ़ीम दनीलोविच ने ग्रर्थपूर्ण दृष्टि से एर्गश की ग्रोर देखा। झटके से ग़ुस्से के साथ वह दोब्रोख़ोतोव की ग्रोर मुड़ा।

"कितना पहले, इंजीनियर? साफ़-साफ़ कहो।"

दोब्रोख़ोतोव ने ग्रपनी ग्राँखें सकुचित कीं।

"भाई, ग्रगर ग्राप जगह की सफ़ाई तेज़ी से कराते हैं तो मैं भी सख़्ती से काम में जुता रहूँगा ग्रौर पन्द्रह दिनों में तख़मीने के साथ तैयार हो जाऊँगा।"

एर्गश के मुँह से ख़ुशी की चीख निकल गयी लेकिन इसके साथ ही उसने धमकी देते हुए कहा:

"तो इसे हम दर्ज कर लेंगे, इंजीनियर..."

क़दम से क़दम मिलाकर चलते हुए तीनों शेर के टीले की ओर चल पड़े।

* * *

बैठकख़ाने की खुली खिड़की पर झुका कुद्रतुल्लाह बाय ग़ुस्से और दुःख से सुन रहा था। ज़ोरदार विस्फ़ोट से हवा काँप उठी, खिड़की के शीशे देर तक धीमे-धीमे खड़खड़ाते रहे। ज़नानख़ाने से रोती हुई आवाज़ में प्रार्थना करती हाजरबीबी की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी।

"तो वे ख़ामोश नहीं पड़े," क़ुद्रतुल्लाह बुदबुदाया। "मुझे कभी इसकी उम्मीद न थी। वह भी इतनी जल्दी! उन्हें यह सारे साधन मिलते कहाँ से हैं?"

"बाय, वे तुम्हारे पैर के नीचे की ज़मीन उड़ाये डाल रहे हैं!" कमरे के भीतरी भाग से एक मखौल उड़ाती आवाज़ ने जवाब दिया। "बूड़ने से पहले अल्लाह का नाम जप लो।"

क़ुद्रतुल्लाह खिड़की से हट आया और असहाय अपने तकिये पर लद से बैठ गया। कोयला-सा काला चाय-विक्रेता आँखें सिकोड़े उसे आजिज़ किये जा रहा था।

"इस बार गोबर गणेश मत बनो। सिर रहते, जैसी हमने योजना बनायी है, वैसा करो। समय मत गँवाओ!"

"कहना आसान है..." क़ुद्रतुल्लाह ने मोटी आवाज़ में कहा। "तुम यहाँ अजनबी हो। तुम्हारी सारी जमा-पूँजी चाय के बंडल में है। तुम जीवन भर दुनिया में मारे फिरते रहे हो। तुम्हारे लिए यह कुछ भी नहीं।"

"बकरे की माँ कब तक ख़ैर मनायेगी!" चाय-विक्रेता ने दाँत-पर दाँत जमाये हुए कहा।

सीने पर हाथ मोड़कर रखे दरवाज़े के पास बैठा सुखट्टा मख़सूम हिला, वह भी बातचीत में शरीक हो गया। उस की आवाज और निगाह में दासोचित तरफ़दारी व दासोचित अपनापन का मिला-जुला भाव था।

"हुज़ूर, क्या आप उदाहरण के लिए, ईशान नईम-ख़्वाजा की तरह नहीं कर सकते? जो आदमी अपने जीवन की रक्षा नहीं करता, उसे ईश्वर अपना ग़ुलाम नहीं क़बूल करता। लोगों ने अपनी आँखों से ईशान को हालाँकि उसे बहुत दुख हुआ होगा, अपना शानदार साफ़ा उतार फेंकते और चाय की एक पेटी पर चढ़ते देखा..."

"चाय की पेटी, क्या कहते हो?"

"झूठ बोलनेवाला सातों फ़िरक़ों में मुसलमान नहीं... वह अब एक पवित्र भूमि में है और एक बार फिर मशहूर ईशान नईम-ख़्वाजा बन गया है। ऐसी जगहों पर किसी धर्मात्मा व्यक्ति के पाँव में काँटे तक चुभने की हिम्मत नहीं करते!"

क़ुद्रतुल्लाह सर्वाधिक प्रतिष्ठित ईशान के पेटी में या जैसा कि कुछ लोग कहते थे, बछड़े की खाल में छुपकर सीमा पार चले जाने की बात पहले ही सुन चुका था।

"नहीं!" वह निराशाजनित दृढ़ निश्चय के साथ चीख पड़ा। "क़ुद्रतुल्लाह ख़्वाजा ईशान के पीछे नहीं भाग खड़ा होगा। अभी मुझे यहाँ का हिसाब चुकता करना बाक़ी है। कोई परवाह नहीं अगर मुझे अपनी सारी जायदाद लगा देनी पड़े। मैं सोने की डली बनकर सोवियतों के गले में वैसे ही अटक जाऊँगा जैसे भेड़िये के गले में भेड़ की हड्डी। मैं सारे बचे-खुचे क़ुर्बाशियों * को ख़रीद लूँगा और उनके ख़ूनी हाथों से मौत का खेल शुरू करा दूँगा। वे पवित्र शाहिमर्दान ** में मेरा इन्तज़ार कर रहे हैं।"

"मैं जानता हूँ। मुझे मालूम है, महानुभाव बाय," चाय-विक्रेता ने रूखेपन से कहा।

क़ुद्रतुल्लाह ने उस पर एक तिरछी नज़र डाली लेकिन कुछ कहा नहीं। इस बात से कि चाय-विक्रेता सभी नयी घटनाओं की जानकारी रखता है, अब उसे कोई आश्चर्य नहीं होता था।

"राह में बस एक ही रोड़ा अटका है। मुझे डर है, मेरे निठल्ले बेटे को लेकर कोई और शिगूफ़ा खड़ा होने जा रहा है," क़ुद्रतुल्लाह ने हठात शोकाकुलता से कहा। "जब मैंने चारबाज़ार के फलों के बाग़ को बेच डालने का संकेत दिया, उसका चेहरा स्याह पड़ गया। वह नीच कभी कुछ समझ भी पायेगा, मैंने इसकी सारी उम्मीद छोड़ दी है!"

"स्वभावत:" चाय-विक्रेता ने उपहासात्मक युक्तियुक्तता के साथ टिप्णी

---

* कुर्बाशी – बसमाचियों के गिरोहों के सरदार।

** शाहिमर्दान – (फ़र्ग़ाना घाटी में) धार्मिक कट्टरपंथियों का एक प्रतिक्रांतिकारी गढ़ था।

की, "जब जानवरों के बाड़े में आग लगती है, गधा अन्दर ही रहता है क्योंकि उसे जलते फाटक से जाने में भय होता है।"

क़ुद्रतुल्लाह ने निराशा से अपना हाथ झटक दिया।

"कोई औरत है यहाँ जिसने उसे अपने जाल में फँसा रखा है। दीवानों की तरह मारा-मारा फिरता है।"

"अहा! दुलहिन! हाँ, मैंने उसके बारे में सुना है," चाय-विक्रेता ने कहा।

इस बार बाय का माँसल चेहरा बैंगनी हो गया और ख़ून की अधिकता से सूज-सा गया: दिवालियेपन से कहीं ज़्यादा दुलहिन की चर्चा उसे विदीर्ण कर जाती।

चाय-विक्रेता ने शान्तिपूर्वक उस तकिये को ठीक किया जिस पर वह बैठा था।

"तसल्ली रखो, मेरे परम आदरणीय दोस्त। तुम्हारा बेटा तुम्हें दुख देता है। इसके बावजूद मेरा ख़्याल है, वह जो कर रहा है, फिलहाल ठीक ही है, बुरा नहीं। कभी-कभी बच्चे ऐसी बेवक़ूफ़ियाँ कर बैठते हैं जिनसे बड़े कोई थोड़ा फ़ायदा नहीं उठाते। बच्चों को इसका गुमान तक नहीं हो पाता। मेरी विदाई की सलाह सुनो: अपने बेटे को यहाँ छोड़ जाओ।"

"क्या!"

"क्या तुम्हारी उससे ठनी नहीं रहती? बहुत ख़ूब। यह बात उसे अधिकारियों का विश्वास तेज़ी से जीतने में सहायक होगी। लड़का प्रेमासक्त है, बाप उससे मूँह फेर गया है और उसने अपने बदमाश बाप से संबंध-विच्छेद कर लिया है। उसे यह बात पूरी गंभीरता से लेने दो—यह उसके लिए बुरा सबक़ नहीं होगा। लड़का यहाँ काम का साबित होगा। इस जगह वह तुम्हारी विश्वसनीय आँख होगा और मैं उसका दिमाग़। मैं उसकी मदद करूँगा, तुम इसका भरोसा कर सकते हो: अपने बाप की ग़ैर-हाज़िरी में एक बाय के बेटे को फ़ाक़ा नहीं करना पड़ेगा। लेकिन देखो, अपना भेद मत खोलना। और, ख़ुदा न करे, फ़िलहाल अपनी बीवी को कुछ भी मत बताना। अपने बेटे को छोड़कर जाते समय उसे असली आँसू बहाने दो।"

"तुम... मुझे सलाह देते हो?" क़ुद्रतुल्लाह ने सायास कहा।

"क्या यह संगत नहीं?"

बाय ने कोई जवाब न दिया।

* * *

उसी समय तलैये के पास नुस्रतुल्लाह के लिए बनाये गये छोटे से नये मकान में शिक्षक नईमी के साथ उसकी गोपनीय बातचीत चल रही थी।

बाय का बेटा चोग़ा डाले तकिये के सहारे लेटा था। नईमी दुखी चेहरा बनाये अपनी छड़ी से खेलता, हाथी दाँत की मुठिया को ठुकठुकाता अपने शब्दों के प्रभाव से अपने साथी के चेचक के दाग़ोंवाले चेहरे के चढ़ते-उतरते रंग को चोरी-चोरी देखे जा रहा था।

"आह, क्या वक़्त है! जहाँ तक तुम्हारा और मेरा सवाल है, मेरे दोस्त, मुझे तुम्हें ढाढ़स बंधाकर ख़ुशी हुई होती, मैं तुम्हें बढ़ावा देता और तुमसे बढ़ावा लेता लेकिन सब हमें छोड़ गये हैं, सब! अब मुसलमान इस्लाम पर नहीं चलता, बाप बेटे के सिर हाथ नहीं देता..."

"क्या रोना ले बैठे हो?" बाय का बेटा चीखा। "ख़ुदा ने तुम्हें इतनी अच्छी क़िस्मत दी है, और क्या चाहिए तुम्हें? वास्तव में मैं अभागा हूँ। अगर मेरा बाप बाय नहीं होता, वह मेरे घर आ गयी होती। अब सब गुड़ गोबर हो गया! मैं दुल्हिन से किस मूँह से कुछ कह सकता हूँ?"

"मुझे भी अपने बाप से बहुत कुछ भुगतना पड़ा है, मेरे अज़ीज़ दोस्त और मैं तुम्हें समझ सकता हूँ। मत भूलो कि वह उस जायदाद को बेच डालना चाहते हैं जो एक दिन तुम्हारी हो सकती थी। बीवी लाने के लिए तुम्हारे पास कोई घर तक न होगा। इसी लिए मैं परेशान हूँ। अब कोई उपाय नहीं। एक जवान भूल करने के बजाय मौत वरण करता है। यदि तुम्हारा बाप तुम्हें अपना बेटा मानने से इनकार कर देने की घुड़की देना तय कर चुका है, तुम भी उसे बाप मानने से इनकार कर देने की घुड़की दो। वक़्त तकल्लुफ़ में पड़े रहने का नहीं, मेरे अज़ीज़ दोस्त। मैं यह दुखते दिल से कह रहा हूँ: तुम बिना जायदाद, बिना बीवी के रह जाओगे। मुझे तुम्हारे लिए अफ़सोस है..."

"अफ़सोस?" अपना चोग़ा उतार फेंकते हुए नुस्रतुल्लाह उछलकर खड़ा हो गया। "तुम क्या सोचते हो, ख़ुदा ने मुझे यह किस लिए दिया है?"

उसने चीखकर कहा और अपने जूते से झपाक से चाकू निकालकर अपनी आस्तीन में छुपा लिया।

नईमी सहमकर पीछे हट गया। अपनी छड़ी उसने ढाल की तरह आगे कर ली थी।

"काबू में रहो, मेरे प्यारे दोस्त? हर चीज़ की सीमा होती है। चाहे जैसा भी हो लेकिन याद रखो, **आख़िर** वह तुम्हारा बाप है। गाल पर दो जन्नाटेदार तमाचा उसे होश में लाने के लिए काफ़ी होगा।"

नुस्रतुल्लाह ने सहसा चाकू फेंक दिया और तकिये पर लेटकर सुबकने लगा।

"मेरा कोई नहीं! न बाप, न बीवी, न दोस्त। मेरे पास कुछ भी नहीं – न पैसा, न कोई काम। मैं किसी क़ाबिल नहीं। मैं ख़त्म हो गया!"

"अरे, अरे," नईमी ने मक्कारी भरी फ़ाख़्ता आवाज़ में कहा। "तुम्हारी आँखों में आँसू, शेर को साफ़ी। ख़ुद पर क़ाबू रखो और मुझ पर भरोसा। मैं तुम्हारी हिम्मत और हौसले के अनुरूप काम ढूंढ़ निकालूँगा। तुम हमेशा ज़िन्दादिल जवान ही रहोग।"

नुस्रतुल्लाह ने सिर उठाया और दाँत पीसता हुआ सुनता रहा।

"मैं उनके चेहरे पर कालिख पोत दूंगा और छिप जाऊँगा। मेरी तलाश करते रहें, लौट आने की विनती करते रहें। मैं उन्हें अपने पैर चुमा दूँगा।"

गरजता हुआ वह कमरे से तेज़ी से निकल गया। नईमी संताप के साथ आसमान की ओर हाथ उठाये, छड़ी भाँजते, उसके पीछे-पीछे भागा।

"भाई, नुस्रतुल्लाह! मुल्ला नुस्रतुल्लाह!" उसने आवाज़ दी। "माँ बाप के प्रति आदर ख़ुदा के प्रति आदर है!"

लेकिन तब तक बैठकख़ाने से तनातनी और क्रॉकरी टूटने की आवाज़ें आनी शुरू हो गयी थीं।

"हाथ मत लगा, नीच, बदमाश!"

"अहसास है, तुम किसे भिखारी बना डालना चाहते हो, मुझे बताओ तो ज़रा?"

"तू मेरा थूक भले चाट ले लेकिन तुझे अपनी जायदाद मैं नहीं दूँगा!"

"तुम्हें भी आज का दिन याद करा दूँगा!"

"लानत है तुझ पर, सिरफिरा कहीं का!"

"तुमने मुझे बर्बाद कर दिया!"

कान फाड़नेवाले दुहरे विस्फोट में चीखें दब गयीं। शेर के टीले पर कहीं दूर पीली धूल का बादल उठा और धीरे-धीरे क़ब्रगाह की ओर चला गया।

बैठकख़ाने में निस्तब्धता छा गयी।

क़ालीन पर टूटे प्यालों के टुकड़े इधर-उधर बिखरे थे।

विस्फोट की दिशा में देखते हुए बाय और उसके बेटे का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया जब उन्होंने एर्गश सुल्तानोव को दहलीज़ पर खड़ा देखा।

नईमी तो जैसे हवा में लोप गया। चाय-विक्रेता ने अपना चेहरा तकिये से छुपाकर सिर को कुहनियों में रख नशे में होने का बहाना बना लिया। सुखट्टा मख़सूम ने बंदगी के लिए सिर झुकाया तो झुकाये ही रहा।

"सलाम, मेरे मालिको। लगता है परिवार में कुछ झगड़ा हुआ है!" एर्गश ने कमरे की चारों ओर देखते हुए कहा। "और तुम नगरवासी," उसने मख़सूम के सिर के पिछले हिस्से को सम्बोधित करते हुए कहा, "क्या तुम्हारे पेट में दर्द है जो इस तरह झुके हो?"

मख़सूम चाटुकारिता से खी-खीकर उठा लेकिन सीधा नहीं हुआ।

आख़िरकार क़ुद्रतुल्लाह ने स्वयं पर नियंत्रण पा लिया।

"स्वागत है, मेरे प्यारे एर्गश-बाय। अन्दर आ जाओ। हम बहुत दिनों से एक-दूसरे से नहीं मिल पाये हैं। बर्षों हो गये, कितना बदल गया है! छुटपन में देखा लड़का जब इतना बड़ा आदमी बन जाये तो देखकर कितनी ख़ुशी होती है। तुम्हारे अनोखे कारनामों के बारे में हमने बहुत कुछ सुना है। बुड्ढा जो ठहरा, मुझे तुम पर बड़ी हैरानी होती और हमेशा इसका शोक करता कि मेरा बेटा तुमसे दिमाग़ और हुनर में कितना पिछड़ा है। ख़ुदा ने मुझे सज़ा दी है, उसने मुझे ऐसा बेटा दिया..."

"मुझे अफ़सोस है," एर्गश ने अपने नेक मेज़बान की बातें भावहीनता से सुनते हुए जवाब दिया। "फिर भी सारे फेर-बदल के बावजूद मैं बाय नहीं बन गया हूँ। इसे याद रखिये। और मुझे डर है मैं आपको किसी तरह की ख़ुशी नहीं दे पाऊँगा, उतनी भी नहीं जो मेरे पिता आप को तब तक देते रहे जब तक आपने उनके प्राण नहीं हर लिये।"

"हे भगवान! तुम्हें ऐसा नहीं... तुम कैसे इस तरह बात करते हो?" बाय ने मलामत से कहा।

"क्यों नहीं? क्या यह सच नहीं? यह आदमी गवाह है," एर्गश ने

सिर से सुखट्टा मख़सूम की ओर इशारा किया। "यह सब तुम्हारी आँखों के सामने हुआ था, क्यों याद है?"

मख़सूम इस तरह सिर हिला-हिलाकर झुकने लगा जैसे उसे टिकटिकी लग गयी हो।

"क्यों नहीं, क्यों नहीं!" वह हर्षातिरेक से बुदबुदा उठा।

"मेरी आँखों के सामने – मुझे याद है। मुझे तो अब भी दिखाई देता है। वे हमेशा जन्नतनशीं रहें, हमारी ओर ऊपर से नजर रखे रहें..."

एर्गश ने नफ़रत से थूक दिया।

एक ही स्थिति में पड़ रहने से चाय-विक्रेता थक गया। वह अपनी दूसरी ओर पलट गया और अपना चेहरा उघारे बिना बनावटी आवाज़ में गाने लगा:

बंधु मेरे, देखो, कौवे उड़ते जाते
मर्गिलान की राह पर बढ़ते जाते...

"नगरवासियो, अब मैं जो कहना चाहता हूँ, सुनिये," एर्गश ने कहा, "काफ़ी समय आप निठल्ले बैठे रहे हैं: बाप-बेटा दोनों एक-दूसरे की जान लेने पर उतारू हैं। क्या आपने सूचना पढ़ी है? हमारे शहर के बाशिन्दे होने के नाते इसका संबंध आप से भी है। आप को दस जुलाई को मिल के लिए बंजर जमीन की सफ़ाई में हाथ बटाने के लिए हाजिर हो जाना है। आप सब को! अगर आप अपनी मर्ज़ी से नहीं आते – हम आपको जबर्दस्ती ले जायेंगे। जीवन में पहली बार तो जनता के लिए कुछ करने का कष्ट उठाइये। थोड़ा पसीना बहा लेंगे तो शायद बदमाशी भरे पुर्जे भेजने का इरादा छोड़ देंगे..."

क़ुद्रतुल्लाह पल भर के लिए गर्म पड़ गया।

"कैसे पुर्जों के बारे में तुम बात कर रहे हो? मेरी तो समझ में नहीं आता..."

चाय-विक्रेता ने जोर से हिचकी ली और सिर छुपाता हुआ कम्बल के नीचे सरक गया।

"कौन है यह?" एर्गश ने पूछा।

"बीमार है, एकदम परेशान हाल है..."

"कौन है यह?" एर्गश ने मख़सूम से पूछा।

सुखट्टा मख़सूम एर्गश की ओर कुत्ते जैसी निगाह से ताकता हुआ बुत-सा खड़ा रहा। वह चाय-विक्रेता का नाम बता देनेवाला ही था, पर एर्गश भौंहें चढ़ाकर और बिगड़कर बोल उठा:

"इसे अपने साथ लाना। दस जुलाई को। मैं ख़ुद तुम्हारा काम देखूंगा।"

"क्या मैं आज आ सकता हूँ? मैं आना चाहूँगा," नुस्रतुल्लाह ने सहसा एर्गश की ओर एक क़दम उठाते हुए टूटती आवाज़ में कहा।

"तुम? आज?" एर्गश ने भौंहें चढ़ाकर उसे परखते हुए कहा।

"मैं काम करूँगा। मैं काम करना चाहता हूँ!" नुस्रतुल्लाह ने कहा।

"चाहते हो? कब से? और कितनी देर? क्या तुम्हें विश्वास है, तुम गंभीरता से कह रहे हो?"

"हाँ, क़सम से!"

"इससे मुझे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता," एर्गश ने क़ुद्रतुल्लाह की ओर सन्देह के साथ देखते हुए उसे रोका।

लेकिन बाय कुछ नहीं बोला।

एर्गश ने अपने कन्धे उचकाये।

"ठीक है, साथ आ जाओ।"

वह मुड़ा और बाहर चला गया।

नुस्रतुल्लाह अपना जूता ठीक करता हुआ, जहाँ उसने कटार छुपा रखी थी, उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।
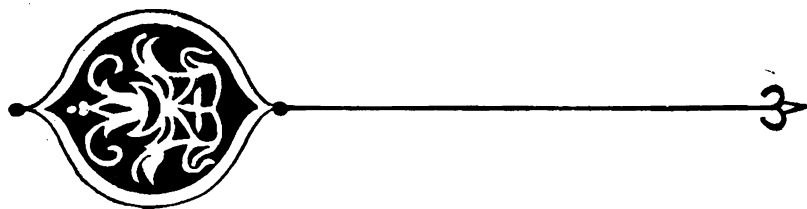
अठारहवाँ भाग

सूर्य डूब चुका था लेकिन इसकी आख़िरी किरणों से चमकते हुए बैंगनी बादलों की नीलाभ धारियाँ अब भी दैदीप्यमान थीं।

बशारत और तुर्सुनाय हाथ थामे रेलवे कर्मियों की बस्ती से लौट रही थीं। वे प्रफुल्लित थीं और जुड़े हाथों को झूले की तरह पेंगें दे रही थीं।

नाले के साथ-साथ उगे पुदीने के पत्ते शाम की शीतलता से भारी हुए नीचे लटक आये थे। तुर्सुनाय ने झुककर अंगुलियों में टहनी फँसा कर एक कुकरौंधा तोड़ लिया। वह इसमें फूँक मार, खिलखिलाकर हँस पड़ी, फिर एक गाना गाने लगी। उसकी कोमल, सहज आवाज़ इतनी आनन्ददायी थी कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

अपनी बहन के गाने के बारे में बशारत इससे पहले न तो कुछ सोचती थी, न कभी तारीफ़ ही करती थी। वह समझ नहीं पाती थी कि तुर्सुनाय की आवाज़ बड़ों को आकृष्ट क्यों कर लेती है। लेकिन चूँकि ऐसा ही होता था, वह ज़्यादा कठोर होने की कोशिश करती जिससे लड़की का सिर न फिर जाये...

लेकिन आज किसी कारणवश बशारत तुर्सुनाय के गाने से मंत्रमुग्ध-सी थी। गाने के प्रति न जाने कैसी भावना उसके दिल में उठ रही थी। उसे लगा, वह आकाश की ओर अपनी आँखें टिकाये रखना चाहती है, पहला तारा उगते ही उसे दिखाई दे। उसे लगा, वह तुर्सुनाय को बाँहों में भर लेना चाहती है...

"आज तुम क्लब से ज़्यादा बेहतर गा रही हो," बशारत ने कहा।

तुर्सुनाय मुस्कुरा उठी। वह अपनी लाल चट्टी के अगले हिस्से की ओर देखती, शरीर को बड़ी लड़कियों की तरह लाज और सम्मान के साथ हल्का-सा झटका देते हुए चल रही थी।

"क्या मैं तुम्हें कुछ बताऊँ?" बशारत ने धीरे से कहा।

इस तरह के रहस्यपूर्ण सवाल के साथ उसकी बहन आम तौर से किसी नौजवान के बारे में बात शुरू करती थी।

"क्या अब्दुसमत के बारे में?" तुर्सुनाय ने पूछा।

बशारत एकाएक पलट पड़ी।

"तुम्हें कैसे मालूम?"

"बताओ मुझे, बताओ तो..."

"नहीं। तुम बताओ, तुम्हें कैसे मालूम?"

"मुझे नहीं मालूम – मैं कुछ भी नहीं जानती, बशार... बताओ तो मुझे!"

"माँ के चले जाने पर साफ़िया चाची हमारी देखभाल करेंगी।" बशारत

ने कठोरता से कहा। "जब तुम पूर्वाभ्यास कर रही थीं, वह आयी थीं। अब्दुसमत भी आया था..."

तुर्सुनाय ने कुछ न बोलने की चौकसी रखी।

"और उसने कहा – 'कोम्सोमोल की ओर से हम आपको एक ज़िम्मेदारी दे रहे हैं।"

"वह माँ को कैसे कोई ज़िम्मेदारी सौंप सकता है?"

"उसने यही कहा था – 'कोम्सोमोल की ओर से'!" बशारत ने हठ के साथ ज़ोर देते हुए कहा और इसके साथ ही मनोरंजक ढंग से उसने अपने कंधे उचकाये। "फिर उसने माँ को किसी सैनिक की तरह सलाम किया... इस तरह! माँ हँस पड़ी थी।"

तुर्सुनाय ठठाकर हँस पड़ी। बशारत ने अब्दुसमत की नक़ल करते हुए अपनी भौंहें सिकोड़ीं।

"'जब आप ताशक़न्द में होंगी,' उसने कहा, 'मेहरबानी करके ज़रा संगीत विद्यालय में भी चली जायेंगी। हम जानना चाहते हैं कि वह एक और छात्र दाख़िल कर सकते हैं या नहीं। और अगर ताशक़न्द में कोई जगह ख़ाली न हो, मास्को में पता करेंगी। हमारे यहाँ एक प्रतिभाशाली लड़की है, हम उसे विद्यालय में भेजना चाहते हैं...'"

"प्रतिभा क्या होती है?"

"प्रतिभा? कितनी मूर्ख है तू! उसका मतलब तुम से था, समझी? अब्दुसमत ने तुम्हें विद्यालय में ले लिया जाये, इसके मुतल्लिक़ बूढ़े प्रोफ़ेसर का एक सिफ़ारिशी ख़त माँ को दिया।"

"लेकिन मैं तो अपने नये विद्यालय में जाना चाहती हूँ। कितना सुन्दर विद्यालय है।"

"सुन्दर। निस्सन्देह, सुन्दर है! लेकिन जो कुछ अब्दुसमत ने कहा, वह कोम्सोमोल की ओर से दी गयी ज़िम्मेदारी है। तुम इसे क्यों नहीं समझती? अब्दुसमत ने कहा कि बूढ़ा प्रोफ़ेसर चाहता है, माँ तुम्हारे लिए मास्को में एक ऊनी जर्सी ख़रीदे। अब्दुसमत पैसे ले आया था और कहा कि यह भी कोम्सोमोल की ओर से दी गयी ज़िम्मेदारी है।"

"ओह, तुम कितनी प्यारी हो," तुर्सुनाय उल्लास से चीखी। "क्या यह सच है?" उसने बशारत को गले लगा लिया। "ऊनी जर्सी?"

"और तुम माँ के चले जाने पर मिनमिनाओगी तो नहीं?"

"अरे, नहीं।"

"और तुम अंधेरे से डरोगी तो नहीं?"

"न-नहीं," तुर्सुनाय ने बहन को छोड़ते हुए जवाब दिया।

बशारत ने उसे हाथ पकड़कर खींचा।

"जल्दी आओ। माँ कल जा रही है।"

अंधेरा हो चुका था और धुँधली रोशनी में लड़कियाँ मुश्किल से सड़क पहचान पा रही थीं। चाँद अभी तक उगा नहीं था। अपनी बहन का हाथ आक्षेपपूर्वक मज़बूती से पकड़कर खींचते हुए तुर्सुनाय हठात् रुक गयी। कोई अजीब सी काली धुँधली चीज़ सामने दिखाई दी।

"अरे – हम कहाँ आ गये हैं?"

"आओ, आओ। छोटे रास्ते से नज़दीक पड़ेगा।"

"लेकिन यह – यह तो क़ब्रगाह है। मैं वहाँ नहीं जाऊँगी!"

"मूर्ख न बन। इसका चक्कर काटकर जाने में काफ़ी देर लगेगी। क्या भूल गयी, माँ इन्तज़ार कर रही है?"

"नहीं, आओ चक्कर काटकर चलते हैं – घूमकर।"

"ज़िद न कर। जैसे इसके पहले तुमने क़ब्रगाह कभी देखी नहीं! यह रास्ता है, देखती है?"

"हाँ।"

"फिर आ जा। हाँ सावधान रहना।"

"क्यों?"

"जिससे किसी पत्थर पर भहराकर गिर न पड़।"

"पत्थर। क़ब्र का पत्थर!"

"जाहिल है तू। जैसे यहाँ कोई और पत्थर ही नहीं! आ। मुझे पकड़ ले।"

रास्ता क़ब्रों के बीच लहराता चला गया था। उस नीरवता में उनके पैरों के नीचे कंकड़ों की कर्र-कर्र की आवाज़ दूर तक फैल जाती। नैमन्चा की ओर कोई रोशनी नहीं दिखाई दे रही थी। बशारत तक़रीबन रास्ता टटोलते और दिशा का अन्दाज़-सा लगाती बढ़ी जा रही थी।

तुर्सुनाय को न कुछ दिखाई, न सुनाई दे रहा था। वह पूरी तरह स्तम्भित थी – उसे सिर्फ़ अपने दिल की तेज़ हो गयी धड़कनों और बशारत के हाथ की गर्मी का अहसास था। उसने आँखें बन्द करके चलने की को-

शिश की लेकिन नहीं चल पायी और खोल दी: उसे लगा, उसने कुछ देखा है।

लड़की ने डर लगनेवाली कोई भी बात न सोचने की कोशिश की लेकिन उसने जितनी कोशिश की उसे उतनी ही स्पष्टता से मुड़े मुँहवाला, पीठ के बल चित लेटा मिरगी का मारा मन्नाप दिखाई देता। उसे अपने चारों ओर उसकी अनर्गल बुदबुदाहट सुनाई देती प्रतीत होती।

उसकी हिम्मत बढ़ाने के लिए बशारत ने अपना गला साफ़ किया और लड़के की तरह ज़ोर-ज़ोर से सीटी बजाने लगी।

"धत्", तुर्सुनाय कहना चाहती थी लेकिन डर के मारे उसका मुँह ही नहीं खुला।

एक कूबदार परछाँई उसके सामने उठ खड़ी हुई। वह क़ब्र के ढूह की तरह नहीं लग रही थी बल्कि रास्ते में बैठे किसी आदमी की तरह थी। आदमी मुर्दे की तरह निस्पन्द और मौन था।

तुर्सुनाय भय से काँप उठी। बशारत उसे सीधे आदमी की ओर लिये जा रही थी। जैसे-जैसे वे नज़दीक पहुँचती जातीं, उस पर उतनी ही बड़ी ऊँची – मीनार जितनी ऊँची परछाँई उठती जाती।

"म-माँ!" तुर्सुनाय चीख पड़ना चाहती थी लेकिन उसके गले से कोई आवाज़ नहीं निकली।

"हम मक़बरे के पास हैं," बशारत ने कहा। "अब हम जल्दी ही घर पहुँच जायेंगे।"

तुर्सुनाय ने निःशब्द अपनी साँस पर क़ाबू पाया। ऊँची परछाँई मक़बरे की थी और छोटी, कूबदार छाया एक कंटीली झाड़ी थी।

लेकिन मक़बरा को पार करके कैसे जायें? तुर्सुनाय को याद आया कि रास्ता मक़बरे से घूमकर गूदड़ और घोड़े के बालोंवाले लम्बे-लम्बे खंभों के नीचे से जाता था। बशारत का हाथ कसकर दबाते हुए, उसने अपने कपड़े का किनारा अपने ख़ाली हाथ से पकड़ लिया और सम्मोहित-सी, बहन के कन्धे की ओर देखने लगी। उसे लगा उसने कोई ऐसी चीज़ देखी है जिसका न तो वह नाम बता सकती है न उस जैसी कोई चीज़ ही बता सकती है।

लड़कियाँ अभी खंभों के पास से गुज़र ही रही थीं कि उन्हें एक भयानक, कर्कश आवाज़ सुनाई पड़ी। यह इतनी तेज़ थी कि बशारत पल

भर के लिए तो बहरी ही हो गयी। बर्फ़-सी सर्द तुर्सुनाय उसकी बाँहों में आ गिरी। बहन का पूरा वज़न अपने पर पड़ जाने से पीछे की ओर डगमगाती बशारत ने किसी भयभीत पशु की तरह अपने चारों ओर देखा। एक उसे क्षीण-सी टिमटिमाती लौ दिखाई दी, लेकिन वह दूर है या पास, बशारत नहीं जान सकी।

लेकिन न जाने कहाँ से उसमें ताक़त आ गयी! तुर्सुनाय को किसी बच्चे की तरह उठा कर वह क़ब्रगाह के पार दौड़ पड़ी। तुर्सुनाय के पैर - उसके पीछे ज़मीन पर टकरा रहे थे।

कहाँ जा रही है, इससे अनजान निराशा से उत्पन्न ताक़त के साथ बशारत अपनी बहन को क़ब्र के पत्थरों पर पैर रखती, बेलों-लतरों के बीच से रास्ता तय करती, घसीटे लिये जा रही थी। वह अपने चहेते बोझ को आपे से बाहर हुए लिये जा रही थी। वह सिर्फ़ तभी रुकी जब एक गबड़े में पाँव पड़ जाने से लड़खड़ा गयी। उसने अपने पाँव खींचकर, चमड़े का बलाई जूता वहीं गबड़े में ही रहने दिया। अगले ही पल उसका नंगा पाँव काँटे पर जा पड़ा लेकिन उसे दर्द महसूस नहीं हुआ। जब तक उसकी ताक़त जवाब नहीं दे गयी वह तुर्सुनाय को घसीटे ले गयी फिर उसी के साथ गिर पड़ी और भारी-भारी साँसें लेने लगी। इसके बावजूद काँपते हाथों से अपनी बहन का चेहरा, हाथ और सीना छुए जा रही थी।

तुर्सुनाय का ललाट और गाल ठंडे पसीने से शराबोर था। बड़ी-बड़ी बूंदें... लेकिन दिल धड़क रहा था। ज़िन्दा थी।

फिर क़ब्रगाह उनके पीछे छूट चुकी थी।

"तुर्सुनाय – प्यारी – मुन्नी। तुम मेरी बात सुन सकती हो? मुझसे बोलो तो," बशारत ने भारीपन से साँस ली।

बहन ने कोई जवाब नहीं दिया।

बशारत ने देखा, यहाँ थोड़ा हल्का उजाला हो आया था। उसने तुर्सुनाय के चेहरे की ओर देखा: उसकी आँखें खुली थीं। एकाएक वह काँपी, बशारत की बाँहों से ख़ुद को छुड़ाकर, इधर-उधर आँखें घुमाने लगी। बशारत को उसकी आवाज़ पहचान में न आयी।

"वहाँ! वह वहाँ है – मौत का फ़रिश्ता!"

सहज प्रेरणा से बशारत ने बहन को अपने शरीर की ओट में कर लिया और उसकी ओर दहशत के साथ देखा।

पॉपलर पेड़ों की शाखाओं के पीछे से अपनी पीली एक आँख से जो एक सिकुड़ा पत्ता-सा लग रहा था, चाँद उसकी ओर देख रहा था।

अपनी बची-खुची ताक़त बटोरते हुए बशारत दुबारा तुर्सुनाय को उठाकर चल पड़ी। उसका नंगा पाँव बुरी तरह पीड़ा दे रहा था। लेकिन लँगड़ाती, आगे की ओर झुक-झुक-सी पड़ती वह बढ़ती ही गयी। उसे चक्कर-सा महसूस हुआ। कानों में घंटियाँ बज उठीं।

तुर्सुनाय अब भी बेहोश थी। पता नहीं बशारत उसे कब तक ढोती रही—घंटे भर या रात भर। उसके इर्द-गिर्द कोई जीवित प्राणी न था। एक आवारा कुत्ता लड़कियों के पास तक आया, भय से उछला और अँधेरे में लोप हो गया।

बशारत को पुदीने की ख़ुशबू महसूस हुई और एक नाला दिखाई पड़ा। वह पसीने से भींग गयी थी लेकिन थकान से इतनी चेतना सुन्न हो रही थी कि नाले के पास रुककर पानी पीने या अपनी बहन के चेहरे पर थोड़ा पानी छिड़कने का ख़्याल ही उसके दिमाग़ में नहीं आया। यह बात उसके दिमाग़ में तब आयी जब वह कुछ क़दम आगे जा चुकी थी। लौटने की ताक़त उसमें न थी।

अपने दरवाज़े के पास बशारत और तुर्सुनाय ज़मीन पर काफ़ी देर तक पड़ी रहीं। बशारत ने अपनी माँ को आवाज़ देने की कोशिश की लेकिन उसकी आवाज़ ने उसका साथ नहीं दिया।

अनाख़ाँ को ख़ुद किसी गड़बड़ी का अहसास हो रहा था। उसके माँ के दिल ने उसे घर से बाहर जाकर सड़क पर देखने को मजबूर कर दिया। उसने दरवाज़ा खोला और लड़कियाँ नज़र आ गयीं।

जब बशारत स्वस्थ हुई, उसने पाया कि घर औरतों से भरा है।

ख़तरे और मलामत भरी आवाज़ में उसकी माँ ज़ुराख़ाँ से कह रही थी:

"अरी, बहन, तुम क्यों आयी? क्या कुछ कम हुआ है जो ऐसे समय में, रात में तुम अकेली आयी हो। हमारी बातें तो तुम टाल ही जाती हो। तुम्हें इतना असावधान होने का कोई हक़ नहीं।"

"कोई बात नहीं, मेरी जाँ," ज़ुराख़ाँ ने जवाब दिया।

हाजिया बशारत के पैर में पट्टी बाँध रही थी और बशारत समझ नहीं पा रही थी कि जब कोई दर्द ही नहीं, वह ऐसा क्यों कर रही है।

अंजिरत दादी पास ही बैठी माचिस की तीली जितना मोटा एक काँटा अपने हाथों में लिये इस तरह उसकी जाँच-पड़ताल कर रही थीं जैसे यह कोई ऐसी चीज़ हो जिसे उन्होंने कभी देखा ही न हो।

"मैं समझ गयी, क्या हुआ है," वह बुदबुदायी। "हज़ारशैख़ पीर के पाक मक़बरे की चिरंतन शांति!"

तुर्सुनाय बशारत के बग़ल में लेटी थी। कपड़े बदल दिये उसे कम्बल ओढ़ा दिया गया था। उसकी आँखें बन्द थीं और चेहरा चॉक-सा सफ़ेद।

"कैसी तबीयत है?" ज़ुराख़ाँ ने बशारत से पूछा।

बशारत ने बहन पर से अपनी आँखें नहीं हटायीं।

"क्या, यह सो रही है?"

"तुम कहाँ थी, मेरी बच्ची?" ज़ुराख़ाँ ने पूछा।

"माँ, यह सब मेरी ग़लती है। हम क़ब्रगाह से होकर चली आयी थीं।"

"आह!" अंजिरत चौंक पड़ी और जल्दी-जल्दी बुदबुदायी: "अलहमदु-लिल्लाह! अलहमदुलिल्लाह!"

और तभी जैसे बहुत ज़ोर लगाकर तुर्सुनाय ने अपनी आँखें खोल दीं। वे धुंधली और निद्रालस मालूम पड़ती। माँ उस पर झुक गयी लेकिन उसकी आँखें माँ पर नहीं, कहीं और टिकी थीं। अनाख़ाँ उसके चेहरे के और क़रीब आ गयी लेकिन लड़की के चेहरे के भाव में कोई परिवर्तन नहीं आया। माँ ने उसे उठाकर सीने से चिपका लिया लेकिन लड़की को कुछ भी महसूस होता प्रतीत नहीं हुआ।

अनाख़ाँ ने तुर्सुनाय का चेहरा अपनी ओर करके चूम लिया।

"मेरी बच्ची, तुम्हें क्या हो गया है? मैं तुम्हारी माँ हूँ। क्या तुम मुझे देख सकती हो? पहचान सकती हो? मैं कया कह रही हूँ, तुम्हें सुनाई दे रहा है? मैं तुम्हारी माँ हूँ, तुम्हारी माँ..."

तुर्सुनाय ने कोई जवाब नहीं दिया। वह उसकी ओर सूनी-सूनी आँखों से देखती रही मानों गहरी नीन्द में हो।

बशारत गुड़ीमुड़ी, साँस रोके अपनी बहन को देखे जा रही थी। क्या नन्ही, लजीली, प्यारी तुर्सुनाय फिर कभी "मम्मीजाँ" नहीं कह पायेगी? क्या माँ और वह कभी भी उसकी स्वच्छ, प्यारी आवाज़ दुबारा नहीं सुन पायेंगी?

"वह बोल नहीं सकती! वह अपनी आवाज़ खो बैठी है, माँ!" बशारत सुबक पड़ी।

तुर्सुनाय को अपने से चिपकाये अनाख़ाँ फूट-फूटकर रो उठी।

"मुझे किस चीज़ की सज़ा मिल रही है? किस लिए... बेचारी मेरी नन्ही बिटिया – मेरी छोटी-सी ख़ुशी – मेरी बुलबुल... मैंने क्या किया कि मुझे ऐसा फल मिला?"

अंज़िरत असाधारण चुस्ती से उठ खड़ी हुई। अपने झुर्रीदार हाथ बढ़ाते हुए वह अनाख़ाँ के पास गयी और उसको तथा उसकी बेटी को गले से लगा लिया। बुढ़िया की आवाज़ ऐसे ग़ुस्से से भरी थी जिसके ख़िलाफ़ वह दूसरों को आम तौर से सावधान किया करती थी।

"सच, सच, अनाख़ाँ बेटी," घुटनों के बल खड़ी होती हुई उसने कहा। "मैं तो बेवकूफ़ सठियायी बुढ़िया हूँ। मेरे दिन गिने रह गये हैं लेकिन मैं कहूँगी यह सच है! हज़ारशैख़ की क़ब्र हमेशा पाक रहे लेकिन इसकी शान्ति के रखवालों को बच्चों से कोई मतलब नहीं होना चाहिए! बच्चे फ़रिश्ते हैं। माताएँ बच्चों की जान बचाते मर जाती हैं। माताएँ प्यार करती हैं और बच्चों के लिए भुगतती हैं। माँ का गुनाह बच्चों को नहीं लग सकता है, अगर वह बच्चों के लिए वह सब करती है। मुझे बताओ, क्या यह सच है?"

जुराख़ाँ बुढ़िया के पास गयी और उसे घुटनों से उठाकर बैठा दिया। और जब अंज़िरत दादी बैठ गयी, उसने श्राद्ध के अवसर पर तेशिक्क़ोप्क़ोक़ की जादूगरनी ने क्या-क्या किया और कहा था, उसका बखान किया।

जुराख़ाँ ने बस इतना ही पूछा:

"यह किस तरह का श्राद्ध था, दादी?"

अंज़िरत उसका जवाब नहीं दे पायी।

"मैं नहीं जानती, मेरी बच्ची।" और फिर आदतन वह बुदबुदा पड़ी: "अलहमदुलिल्लाह! अलहमदुलिल्लाह!"

जुराख़ाँ अनाख़ाँ की बग़ल में बैठ गयी, तुर्सुनाय को फिर कम्बल के अन्दर लपेटकर लिटा दिया और दुख भरी आवाज़ में दृढ़ता से कहा:

"तुम कल नहीं जा सकती। और कोई उपाय नहीं। जब तक तुर्सुनाय ठीक नहीं हो जाती, यहाँ तुम्हारी जगह और कोई नहीं ले सकता। चिन्ता की कोई बात नहीं। दल की ज़िम्मेदारी हाजिया संभाल लेगी। बेशक, यह उसके लिए कठिन होगा..."

हाजिया ने घबड़ाकर अपना हाथ हिलाया लेकिन जुराख़ाँ ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

"अब मैं यहाँ से चलूँगी। मुझे जाना चाहिए। और मैं हाजिया को अपने साथ ले जाऊँगी।"

अनाख़ाँ शायद अब कहीं जाकर जुराख़ाँ की बात का मतलब समझ पायी थी। उसने उसका हाथ पकड़ लिया।

"मत जाओ! उजाला होने तक तुम्हें यहीं ठहर जाना चाहिए। मैं नहीं जाने दूँगी। बेकार। वे बस किसी ऐसे ही मौक़े की ताक में बैठे हैं।"

जुराख़ाँ ने उसे किसी बच्चे की तरह गले लगा लिया और चूम लिया।

"तुम्हें शान्त रहना चाहिए। लोगों के सामने मुझे शर्मिन्दा मत करो। ठीक? जाओ, आँखें पोंछो।"

अनाख़ाँ उसे और हाजिया को दरवाज़े तक विदा करने आयी। बेचैनी से वह उन्हें चाँद की ठंडी धुँधली रोशनी में जाते देखती रही। वह कान खड़े किये काफ़ी देर तक वहाँ खड़ी रही।

* * *

सुबह में अब्दुसमत और मण्डली के कुछ और सदस्य तुर्सुनाय को देखने आये। वह बिस्तरे पर लेटी थी, उसने अपने दोस्तों में कोई रुचि नहीं दिखायी। उसने उनके अभिवादन का भी जवाब नहीं दिया और जब उन्होंने उसे नाम लेकर पुकारा तब भी वह कुछ नहीं बोली।

उसकी आँखें पहले से साफ़ थीं लेकिन निगाह वैसी ही उदासीन जब-तब उसकी आँखों में एक दुखपूर्ण, पीड़ित भाव आ जाता जैसे वह कुछ याद कर रही हो। अपने सामने कुछ देख रही हो और उसे परख रही हो।

एक पल के लिए उसकी आँखें अब्दुसमत पर ठहरीं। उसके होंठों ने हिलने की कोशिश की। उसने भारी-भारी साँसें लीं। लेकिन उसकी निगाह यह कहती प्रतीत होती: "नहीं, मैं नहीं बोल सकती। मैं नहीं बोल सकती।"

अब्दुसमत और उसके दोस्त तुर्सुनाय के सामने खड़े हो गये। उसके संकेत पर कोम्सोमोलों ने धीमी आवाज़ में गाना शुरू किया। उन्होंने गाने के लिए तुर्सुनाय का सबसे मनपसन्द गीत चुना जो हम्ज़ा की सबसे अच्छी रचनाओं में एक था।

तुर्सुनाय के चेहरे पर रौनक़ आती-सी लगी। उसकी आँखें कुछ ढूँढ़ रही थीं। ख़ुद उठते हुए, उसने अपना सिर उठाया जैसे सुन रही हो, फिर एकाएक हाथों से कानों को ढँक लिया और बिस्तरे पर दुहरा हो गयी, तकिये में अपना चेहरा छुपा लिया। आँखें डबडबा आयीं और उनमें इतनी पीड़ा थी कि प्रतीत हुआ जैसे वह दुख से बिलख उठेगी। लेकिन होंठ ख़ामोश थे।

गीत रुक गया। हक्का-बक्का कोम्सोमोल-सदस्य अपनी मण्डली के नेता की ओर सकरुण दृष्टि से देखने लगे।
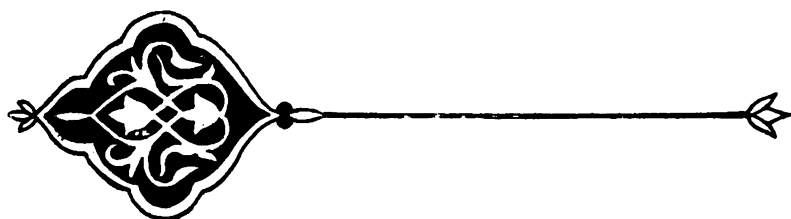
उन्नीसवाँ भाग

शिक्षक नईमी चाय-विक्रेता के आमने-सामने पुराने शहर के उसके छोटे-से कमरे में बैठा था। कमरा एक ऐसी अकिंचन मड़ैया में था कि कोई भिखारी भी द्वार खटखटाने में हिचकिचा जाता। यह किसी लोमड़ी की माँद की तरह संकरा, अंधेरा और गन्दा था। लेकिन उधर कुछ अर्से से शिक्षक नईमी को यहाँ भी दिमाग़ी शान्ति नहीं मिल पाती। वह दुख के साथ मनन करता गर्म-गर्म चाय पी रहा था। उसका मेज़बान विदेशी ट्रेडमार्कवाले सूअर की खाल मँढे ख़ूबसूरत - से थर्मस-फ्लास्क से उसे एक के बाद दूसरी चाय की प्याली दी जा रही थी। वह ख़ुद चुस्कियाँ लेता, होंठ चटखारता पीली-सुनहली ब्राण्डी पी रहा था। ब्राण्डी का भंडार कम होने के कारण वह कंजूसी से पी रहा था और इसे पाना दिन-ब-दिन कितना मुश्किल हो रहा है, इसका रोना रोते जाता।

वह एक मामूली-सा दुकानदार था लेकिन बावजूद इसके, नईमी जो कभी एक राजनीतिज्ञ, दार्शनिक और लोगों के दिमाग़ों पर शासन करनेवाला माना जाता था, आज पूरी तरह उसके क़ाबू में था। कभी-कभी नईमी विदेशी

की ग्रोर इस तरह देखता जैसे कोई ख़रगोश ग्रजगर की ग्रोर देखता है। राक्षस। ग्रावारा कलूटा। उसने शिक्षक को भय से पीड़ित ग्रौर ग्रभिभूत कर दिया था। जैसे इतना काफ़ी न हो, वह नईमी का मखौल उड़ाता ग्रौर जब कभी कमरे के पीछे किसी चूहे के खर-खर करने पर नईमी काँपकर ग्रपने कन्धे झुका लेता, उस पर छींटे कसता।

लेकिन ऐसे भी क्षण होते जब चाय-विक्रेता नईमी के प्रति ईमानदार प्रतीत होता ग्रौर उसके साथ ग्रपने विश्वस्त सलाहकार की तरह ग्राचरण करता। ऐसे क्षणों में नईमी महसूस करता कि यह ग्रथाह ग्रौर ख़तरनाक ग्रादमी भी ग्रकेला था। कोई ग्राश्चर्य नहीं कि वह ग्रपनी प्रिय माँद में नईमी के साथ छुपा बैठा था – वह भी भयत्रस्त था। छुपे-छुपे, मन ही मन ख़ुश होता नईमी चाय ग्रौर ब्राण्डी डालते हुए चाय-विक्रेता के हाथों को देखता। उन्हें हल्के-हल्के काँपते देखकर उसे प्रसन्नता होती।

"ग्राज कौन-सा दिन है?" चाय-विक्रेता ने ग्रपने छोटे से चाँदी के जाम को ग्रपने धागे जैसे पतले होंठों तक लाते हुए पूछा।

नईमी इस ग्रप्रत्याशित सवाल से चौंक पड़ा लेकिन तत्क्षण ही इसका मतलब समझ गया – चाय-विक्रेता के होंठ थोड़े वक्र हो उठे थे। वह निःशब्द हँस रहा था। सच तो यह था कि ऐसा कुछ भी न था जिस पर चाय-विक्रेता हँस सकता था। वह बन रहा था, ग्रभिनय कर रहा था। ग्रब कोई ऐसा न था जिसका वह मखौल उड़ा सके।

नईमी ने नम्र, तलाश भरी नज़र डालते हुए जवाब दिया। वह चाय-विक्रेता की ग्रोर भला ग्रौर किन नज़रों से देख सकता था।

"नुस्रतुल्लाह को तो हमने ठीक संभाल लिया।" चाय-विक्रेता ने ख़ुश्क लहजे में कहा। "मैंने जितना सोचा था उससे कहीं ज़्यादा ग्रच्छी तरह वह पेश ग्राया। कितना गावदी है – लेकिन मैं जिन कुछ चतुर लोगों को जानता हूँ उनसे कहीं वह ज़्यादा लाभदायक साबित हुग्रा है। वे नुस्रतुल्लाह की वह गाँठ जल्दी नहीं खोल पायेंगे। लेकिन कुछ बहुत ही बुरी बातें भी हैं: उन्होंने एक ग्रौर सूत्र पा लिया है ग्रौर हमारे पीछे परछाँई की तरह लग गये हैं। मुझे वे ठीक पीठ के पीछे महसूस होते हैं।"

ज़र्द हो, नईमी ने ग्रपनी प्याली रख दी।

"ग्राप मुझे किसी चीज़ के लिए दोष नहीं दे सकते..."

"नहीं – फ़िलहाल तो नहीं। मैं तेशिक्क़ोप्क़ोक़ की उस औरत के बारे में सोच रहा हूँ।"

"लेकिन उसने ... क्या किया है उसने? सच कहूँ तो मैं उसके कौशल पर ईर्ष्या करता हूँ। उसे ऐसी बातें बोलने की छूट मिल जाती है जो एक शिक्षक नहीं कह सकता। और ऊपरी तौर पर यह मात्र जादू टोना है, गंवई इलाज।"

चाय-विक्रेता ने रोशनी में अपनी बोतल पर नज़र डाली।

"वह बहुत आगे चली गयी, कायर। बहुत चलता-पुर्जा है। बहुत चतुर। उसने इसमें बच्चों को भी शामिल कर लिया..."

"अच्छा, सचमुच। शायद छुप जाना चाहती होगी?"

"हाँ, ऐसी ही बात है लेकिन वह बच सकेगी, मुझे सन्देह है। तुम जानते हो रूसी भेड़ियों का शिकार कैसे करते हैं? जादूगरनी के चारों ओर झण्डे लगाये जा चुके हैं: वह घिर चुकी है। हमारी जादूगरनी अच्छे घपले में पड़ चुकी है। और अपने साथ वह हमें भी ले डूबेगी।"

"आपकी राय में क्या करना चाहिए?"

चाय-विक्रेता मौन रहा। नईमी काँप उठा।

"आप चाहते हैं, मैं जाकर उसे चेतावनी दूँ?"

"नहीं," चाय-विक्रेता ने सख़्तीं से कहा। "मैं अपने लोगों से ख़ुद भुगतता हूँ यह मेरा नियम है। हमें चाहिए कि," उसने जाम को बोतल से टकराया, "इसे बीच में ही ख़त्म कर दें।"

"किसे ख़त्म कर दें?"

"सूत्र को।"

नईमी और कुछ पूछने से डर गया। वह प्रतीक्षा करता रहा कि चाय-विक्रेता अपनी बात का मतलब ख़ुद समझायेगा। लेकिन ज़ाहिर था कि चाय-विक्रेता अपनी समझ से ख़ुद को काफ़ी स्पष्ट कर चुका था।

"तुम दस जुलाई का ख़्याल रखोगे," उसने नईमी को याद दिलाया और अपने होंटों को लगभग बिना हिलाये ही आगे कहा, "लक्ष्य से तुमसे ज़्यादा निकट कोई नहीं रहा है। मैं आश्वस्त हो चुका हूँ कि तुम बारीकी से काम कर सकते हो। मुझे आशा है, इस मामले में तुम अपने प्रति ईमानदार रहोगे। अपनी छड़ी घर पर ही छोड़ आना – संयोगवश तुम इसे गिरा दे सकते हो। ठीक पूर्ण व्यस्तता के मौक़े पर ... सावधान रहना, कोई ऐसा चिह्न न छूट जाये कि वे तुम्हें पा लें!"

ग्रौर फिर नईमी ने जवाब में बस सकरुण दृष्टि से देखा।

एक बार फिर उसकी रात बिना नीन्द कटी। सिर तक कम्बल ताने, उसने मुट्ठी भींचकर ग्रपना सीना पीटा, क़सम खायी कि इस क्षुद्र विदेशी से एक दिन वह भयानक बदला लेगा। सारी रात वह इन शब्दों के मतलब पर मग़ज़ मारता रहा: "मैं ग्रपने लोगों से ख़ुद भुगतता हूँ ग्रौर सूत्र को बीच में ही ख़त्म कर दो।"

ग्रगला दिन जवाब मिल गया।

शिक्षक संयोगवश महिलाग्रों की दुकान के क़रीब निकल ग्राया। हमेशा की तरह शहर के सभी हिस्सों की ग्रौरतें इसके इर्द-गिर्द झुंड लगाये थीं। लेकिन ग्रपनी ग्रादत के विपरीत वे ग्राज ज़्यादा शोर-गुल कर रही थीं। उनमें से कई ने ग्रपने चचवान उठा रखे थे या पीछे कर लिया था जिससे कही जा रही कोई भी बात सुनने से वे वंचित न रह जायें। वे बिना एक पल रुके बकबक किये जा रही थीं। हवा वस्तुत: उनकी ग्रावाज़ों से भरी थी। इन सब से ग्रलग खड़ी रोजिन चबाती, बाँहों में बच्चा लिये एक लम्बी ग्रौरत ने ग्रपने हाथ से तिरस्कार की मुद्रा प्रकट की ग्रौर साफ़ उपेक्षा से कहा:

"इससे मेरा कोई मतलब नहीं। जो बंजर ज़मीन पर जाना चाहें, ग्रभी, इसी पल चले जायें लेकिन मैं तो नहीं जाऊँगी ग्रौर देखती हूँ क्या होता है।"

बूढ़ी ग्रंज़िरत ने बच्चा उसके हाथों से ले लिया।

"ग्रगर मुझे सही-सही याद है तो जब सहकारिता खुल रही थी, तुमने कहा था, 'समझे बूझेंगे' लेकिन फिर इसके खुलने के बाद एक हफ़्ते से पहले ही तुम ग्रपने बच्चे के साथ चली ग्रायी।"

"तो फिर, इससे क्या? क्या हुग्रा, ग्रगर मैं ग्रा गयी? सहकारिता एक चीज़ है लेकिन पवित्र क़ब्रों, ग्रपने पिताग्रों की क़ब्रगाह उजाड़ना दूसरी चीज़ है।"

ग्रास्तीन से ग्रंज़िरत ने पहले बच्चे की, फिर ग्रपनी नाक पोंछी।

"मैं तुम्हें एक कहानी सुनाना चाहूँगी – ग्रगर इसका संबंध तुमसे हो तो बुरा मत मानना।"

तत्क्षण ही ग्रंज़िरत के चारों ग्रोर श्रोता जमा हो गये।

"हमें सुनाग्रो। हमें कहानी बताग्रो!"

अपने हाथ के पीछे से अंज़िरत ने अपने झुर्रीदार होंठ पोंछे।

"बहुत-बहुत समय पहले पक्षियों और पशुओं में एक बहस छिड़ गयी। एक चमगादड़ अपने पंख बाहर निकाले कौन जीतता है, इसकी प्रतीक्षा करता अलग-थलग रहा। पशुओं का पलड़ा भारी रहा और चमगादड़ उनके पास जा पहुँचा। उन्हें अपने दाँत, कान और स्तन दिखाते हुए कहा: 'मैं एक जानवर हूँ!' ठीक है, जानवरों ने सोचा। कुछ समय बीता और पक्षी जीत गये। चमगादड़ सोचता रहा, सोचता रहा और पक्षियों के पास जा पहुँचा! उसने उन्हें अपने पंख दिखाये और कहा: 'मैं एक पक्षी हूँ'!" अंज़िरत ने दुख के साथ आह भरी। "बेचारा ग़रीब कभी इस ओर कभी उस ओर मारा-मारा फिरता रहा। आख़िरकार पशुओं और पक्षियों दोनों ने उसे खदेड़ दिया। तब से चमगादड़ ओलतियों में छुपा फिरता है और सिर्फ़ रात में उड़ता है..."

औरतें हँस पड़ीं और फिर गलबात शुरू कर दी, चीख़ने में सब एक दूसरे को मात कर देना चाहतीं।

"यह तो तुम्हारे लिए है, दादी अंज़िरत!"

"दादी ने उसका दिमाग़ ठिकाने लगा दिया!"

"क्या तुम वही चमगादड़ हो ख़ालबू चाची?"

"तभी तो एक ओर खड़ी रहना चाहती है!"

ख़ालबू ने बच्चे को अंज़िरत से ले लिया: वह अपनी चमकीली काली आँखों से चारों ओर देखकर बिना दाँतोंवाले दाढ़ दिखाता उल्लासपूर्वक हँस पड़ा। गुस्से से माँ ने बच्चे को एक धोल जमा दिया। बहस और शोर दुकान के पोर्च तक पहुँच गया।

एक नौजवान औरत जिसकी लटें तारकोल-सी काली थीं और पेशानी पर पसीने की बूँदें झलमला रही थीं, पोर्च पर ऊपर-नीचे कर रही थी, कभी सीढ़ियों पर दौड़कर जाती, कभी भीड़ में वापस लौट आती और चीखती जाती:

"मैं अपने हाथों से अपनी सास को ढोकर वहाँ ले गयी थी। क्या एक औरत होकर मैं वहाँ उसकी क़ब्र उजाड़ने जाऊँगी? मैं ख़ुद को दफ़न कर दूँगी लेकिन यह नहीं करूँगी। अगर मैं ऐसा करूँ तो मेरे हाथ गल जाएं। मेरी सास की क़ब्र को हाथ लगानेवालों के नाक-कान गल जायें!"

"हे भगवान, क्या भयानक बात वह कह रही है..."

"लेकिन क्या वह ठीक नहीं कह रही? वह एक कर्तव्यपरायण बहू है।"

अंज़िरत दादी भीड़ में घुस गयीं और नौजवान औरत की बाँह पकड़ ली।

"तुम्हें क़ब्र को उजाड़ करने के लिए कौन मजबूर कर रहा है, ज़रा बताओ मुझे?"

लेकिन नौजवान औरत ने उसके कमज़ोर हाथ को झटक दिया और पोर्च पर उछलकर आ गयी।

"ख़ुदा का शुक्र है कि देखने-सुनने के लिए मेरी आँखें और मेरे कान है। ज़रा सोचो: वे क़ब्रगाह धरती पर से मिटा देना चाहते हैं। वे एक पवित्र जगह पर नापाक दीवारें, औरतों का एक मिल बनाना चाहते हैं! और यह किसने शुरू किया? अनाख़ाँ ने। उस सहकारिता के चक्कर में वह अपनी सारी श्रद्धा भूल बैठी है और इसके लिए उसे भुगतना नहीं पड़ा, यह बात नहीं, मैं तो कहूँगी, उस पर फ़क़ीरों का कोप उतरा है। हर रोज़ उसके सिर एक नयी बला आती है। कौन इसे नहीं जानता? सब जानते हैं! चमत्कार ही था जो वह मरने से बच गयी। ख़ुदा मेहरबान था, उसे छोड़ दिया। लेकिन वह अपने पुराने रास्ते पर ही चलती रही। अब सजा उसकी बेटी को मिल गयी है—वह गूँगी हो गयी है। बेटी माँ के पदचिह्नों पर चल पड़ी थी: उसने हज़ारशैख़ के मक़बरे के पास एक अश्लील गाना गाया और अब उसकी जीभ को ही लक़वा मार गया है। परमात्मा ने उसकी अपवित्र जीभ ही छीन ली!"

"धर्मात्मा औरत, जादूगरनी की बातें सच हो रही हैं, मेरे प्यारो!" एक अपाहिज बुढ़िया मूढ़ता से चीखी। "हे सर्वशक्तिमान्, अपने ग़ुलामों को श्रद्धा से वंचित न कर। ओ निरीह प्राणियो, पवित्र शरीअत को याद रख!"

अंजिरत दादी परिश्रमपूर्वक पोर्च की सीढ़ियों पर चढ़ गयी। नौजवान औरत को एक ओर कर दिया और अपनी कमज़ोर आवाज़ में कहा:

"अनाख़ाँ को शर्मिन्दा करने का किसी को कोई हक़ नहीं। तुममें से किसी को भी नहीं। यह सब झूठ है, सरासर झूठ! औरतो, मेरी बात सुनो। दुश्मन ने अनाख़ाँ को चाकू मारा। और इसी जादूगरनी के कारण उसकी बेटी डरकर बेहोश हो गयी। इसके अलावा वह एकदम पाक नहीं, काश वह अपनी क़ब्र में जल मरे!"

कोलाहलपूर्ण, ग़ुस्से भरी आवाज़ में अंज़िरत की बूढ़ी, कमज़ोर आवाज़ दब गयी।

"अभागिन!"

"तुम नहीं जानती, क्या कह रही हो, भगवान तुम्हारी रक्षा करे!"

"जादूगरनी के बारे में तुम ऐसी बातें कैसे कह सकी?"

"तुमने अपनी जीभ को इस तरह बेलगाम कैसे कर दिया?"

"बुढ़िया पागल है।"

"अनाख़ाँ ने उसे भेजा है।"

"अपना चेहरा दिखाने से डरती है।"

"उस पर दुहरी मार पड़ी है – ख़ुद और बेटी पर..."

"इसी के क़ाबिल है!"

लेकिन बूढ़ी अंज़िरत ने हिम्मत नहीं हारी। सही होने की अन्तश्चेतना ने उसे हिम्मत दी। अपनी साँस पर क़ाबू पाते हुए, वह ग़ुस्से से चीख पड़ी:

"ज़रा मुझे बताओ तो तुम्हारी उस धर्मात्मा औरत के साथ क्या हुआ है? तुम्हारी उस जादूगरनी का क्या हश्र हुआ है, जवाब दो मुझे! यहाँ सच-सच बताओ, सब के सामने!"

वहाँ तुरंत शान्ति छा गयी और यहाँ तक कि नईमी भी जो सड़क की दूसरी ओर खड़ा था, अंज़िरत की बातें सुन सकता था।

"उसने क़ब्र नहीं उजाड़ी या मिल नहीं बनाया। उसने हमें सहकारिता में नहीं बुलाया, उसने हमें काम नहीं दिया कि हम अपने बच्चों को खिला सकें। उसने हमें पीरों के बारे में बताया, मुँह झाग-झाग हो जाने तक अपने सरपरस्त पीर की प्रार्थना की – मैंने ख़ुद उसे देखा। और पीर उसकी रक्षा करते थे, मैं तुम्हें बता सकती हूँ। क्या मैं सच कह रही हूँ?"

कोई जवाब न मिला।

"इसलिए अगर अनाखाँ पर पीरों का प्रकोप उतरा तो मुझे ज़रा समझाओ, उस धर्मात्मा औरत को क्या हुआ? क्या मुझे कोई बता सकता है?"

"क्या? क्या हुआ? उसके साथ क्या हुआ?"

"वह कुत्ते की मौत मरी, तुम्हारी उस धर्मात्मा औरत के साथ यही हुआ!"

वहाँ नईमी इतनी तल्लीनता से सुन रहा कि अनजाने ही औरतों के क़रीब खिसक आया।

"कुत्ते की मौत," अंज़िरत ने दुहराया। "अपने बिस्तरे पर उसे चाकू से मार डाला गया! अलहमदुलिल्लाह! और तुम जानती हो, उसके घर में उन्हें क्या मिला? डेढ़ पौंड अफ़ीम—यही उन्हें मिला! धर्मात्मा औरत को अफ़ीम की क्या ज़रूरत? क्या धर्मात्मा लोग अफ़ीम का रोज़गार करते हैं क्या?"

सूखी घास से होकर गुज़रती हवा की तरह मर्मर ध्वनि भीड़ में फैल गयी।

"अफ़ीम?"

"ज़रा सोचो तो! डेढ़ पौंड।"

"क्या इतनी ग़लीज़ होने पर तुम उसे माफ़ कर सकती हो?" अंज़िरत ने पूछा।

"किसे मालूम था?"

"कितनी अधम..."

"शर्म की बात है, मैं तो कहूँगी।"

"उसने हमें बेवकूफ़ बनाया, मज़ाक़ उड़ाया! उसने हमारी श्रद्धा का मज़ाक उड़ाया, ईमानदार लोगों को बदनाम किया, कमज़ोरों को धमकाया और मासूम बच्चों को डराकर उन्हें पागल बनाया। जो हुआ याद रखो। क्या वह पैग़ंबर थी? अब सोचो: किसने उसे चाकू मारा? वह भी ख़ुद उसी के बिस्तरे पर..."

बिना पीछे देखे, लड़खड़ाता नईमी सड़क पर भाग खड़ा हुआ।

एक छोटी, नंगे पाँव लड़की कोनेवाले मकान के फाटक से निकल आयी और शिक्षक के कान में ज़ोर से बोल पड़ी:

"नमस्ते, शिक्षक जी!"

नईमी उसके पास से इस तरह बिदककर भागा जैसे कोई भिखारी रखवाले कुत्ते को देखकर भागता है और गुस्से से कोसा:

"तुम्हारे बाप-दादों की क़ब्र पर थू!"

वह रात होने तक घूमता रहा। सूखे मुँह और पीठ से पसीना चुआते, वह जादूगरनी के घर के पास सड़कों पर चक्कर लगाता रहा।

वह बहुत धूर्त थी... अगर उसके घर में बहुतायत से सोना पाया जाता

तो नईमी को कोई ग्राश्चर्य न होता। इसका मतलब है कि ग्रगर चाय-विक्रेता ने ग्रफ़ीम पर तक हाथ नहीं लगाया तो उसको सोना भी प्राप्त नहीं हुग्रा है। वह जल्दी में था, पाजी। लेकिन इसका तो इत्मीनान किया ही जा सकता है कि उसने कोई ऐसा सुराग नहीं छोड़ा है, जिससे उसका पता लग सके। इसमें कोई सन्देह नहीं। वह सच्चा जवान था। उसके बारे में चिन्ता की कोई ज़रूरत नहीं।

सबसे बड़ी बात है, सहज व्यक्ति का दिमाग़ भी ठंडा होना चाहिए। बेलाग बात तो यह है कि वह एक ग्रौरत थी, इससे ज़्यादा कुछ भी नहीं। नईमी के लिए वह क्या थी? उसने उससे एक प्याली चाय भी तो नहीं पी थी। ग्रौर फिर – ग्रविचलित रहना चाहिए, ठीक रखना चाहिए। वह उन सब को धोखा दे सकती थी। ठीक समय पर उसे चुप कर दिया गया...

ग्रागे चलकर नईमी का भी ग्रपने पर ग्रधिकार नहीं रह गया। उसकी जिन्दगी ग्रौर ख़्वाहिश क़िस्मत के हाथों थी। लेकिन जब तक वह जीवित है, वह बुद्धिमान रहेगा:

"क्या तुमने कुछ देखा? नहीं..."
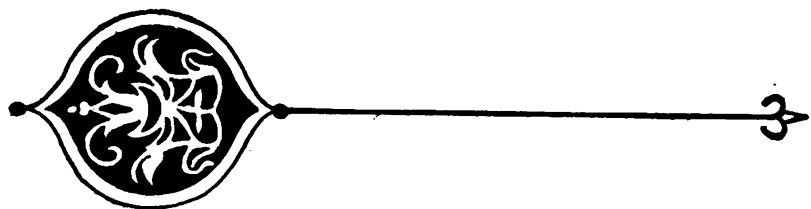
बीसवाँ भाग

दस जुलाई को नग़ाड़ों के धम-धम, सुरनयों* की कर्णभेदी ग्रावाज़ ग्रौर करनयों ** की ज़ोरदार ग्रावाज़ "वक्क-वक्क-वक्कु-वा" से शहर जाग उठा। सुबह की पहली किरण के साथ ही सड़कों पर लोगों की रेल-पेल मच गयी। कोई गा रहा था तो कहीं हँसी के ठहाके पड़ रहे थे, कहीं बातों का गुलगपाड़ा। बच्चे सरकण्डे के ग्रपने ग्रलग़ोज़ों से सप्तम छेड़ते

---

* सुरनय – एक क़िस्म की शहनाई।

** करनय – छः फुट लम्बी तुरही।

इधर-उधर दौड़ रहे थे। सभी दिशाओं से लोग पताकाएँ, फरहरियाँ और इश्तिहारी दफ्तियाँ लिये नैमन्चा की ओर उमड़े पड़ रहे थे। उनके साथ कुदाल, बेलचा और ठेलों से भरी बैलगाड़ियाँ थीं। बाज़ार से गुज़रते समय उन्हें मखमली टोपी लगाये दुकानदार अपनी छोटी दुकानों से सिर बाहर निकाल-निकालकर देखते। इस जन-प्रवाह ने उन्हें भी और उन सब को जो रास्तों में, सड़क पर, चायख़ानों में और आँगनों में मिले, प्रभावित कर दिया।

एक घंटे से भी कम समय में बंजर ज़मीन और विस्फोटों से चौरस हुआ शेर का टीला एक छोर से दूसरे छोर तक लोगों से भर गया। जहाँ कहीं नज़र जाती औरतों के नीले व लाल रूमाल, कमर से ऊपर तक के कपड़े उतारे पुरुषों के दमकते सँवलाये कंधे और सब्बलों व गैंतियों पर चमकती धूप दिखाई देती। लाल सेना के दस्ते क़ब्रगाह के नज़दीक क़तार लगाये जुटे थे—वे भी हाथ बँटाने आये थे। अधिकाधिक लोग आते जा रहे थे और वह जगह अधिकाधिक शोरगुल से भरती जा रही थी।

"यह क्या है?" दोब्रोख़ोतोव बार-बार कहता जाता। वह ख़ुश भी था और चिन्तित भी। "ऐसा तो पहले कभी हुआ ही नहीं है। मैंने अपने जीवन में कभी ऐसा दृश्य देखा ही नहीं।"

"यह हशर * है। आम जनता का हशर।" एर्गश ने कहा। "रिवाज पुराना है लेकिन मक़सद नया।"

वे फोरमैन और कार्य-प्रबन्धकों के तंग घेरे के बीच खड़े थे। दस्तों के नेता काम की माँग कर रहे थे। कुछ लोग बेताबी से इंजीनियर की बाँह खींचे जा रहे थे।

"बारी-बारी से, एक बार में एक।" इंजीनियर ने अपने नक़्शों पर नज़र डालते हुए जवाब दिया।

"लेकिन हम पहले आये हैं। जब हम आये थे, कोई भी न था।"

"आप के पास अधिकतर नौजवान लोग हैं, क्यों, है न? आप यहाँ सर्वाधिक सक्षम व्यक्ति हैं..."

"फिर हमें रोक क्यों रखा है?"

"धीरज रखिये। आपको अधिक मुश्किल हिस्सा मिलेगा।"

---

* हशर—किसी काम को पूरा करने में परस्पर सहायता।

"और अधिक सम्मानजनक भी," यफ़ीम दनीलोविच ने कहा।

"ज़रा सुनिये। अधिक सम्मानजनक क्यों?" दूसरे नेता ने दख़ल दिया। "जूते बनानेवाले बुरे क्यों?"

"शांत, शांत। आप सब को काम मिलेगा। हम किसी को नज़रअन्दाज़ नहीं करेंगे। काफ़ी काम है। आप जितना कर पायेंगे, हम देंगे – बाद में शिकायत न करना।"

"जूते बनानेवालों की बस यही शिकायत होती है कि उनके पास जूते कभी नहीं होते..."

धीरे-धीरे आवाज़ों की भनभनाहट ख़त्म हो गयी। गाना बन्द हो गया। एकाएक ऐसा लगा जैसे बंजर ज़मीन की सीमा और बढ़ गयी हो। काम शुरू हो गया।

"कॉमरेड सुल्तानोव," जुराख़ाँ ने एर्गश को बुलाया। "मैं आप से एक निजी सवाल पूछना चाहती हूँ। क्या आपने ख़त लिख दिया?"

"सीमेंट के बारे में? ताशक़न्द? बेशक!"

"नहीं, मास्को।"

पल भर के लिए एर्गश को न सूझा, क्या कहे।

"सच कहूँ," उसने कहा, "पिछली रात मैं घर ही नहीं गया। मैं बनातधारी के कार्यालय में मेज़ पर सो गया। खाने के लिए भी समय नहीं मिला, वादा करता हूँ, आज लिख डालूँगा।"

"अगर मैं याद न दिलाती, आपको कभी याद भी न आता," जुराख़ाँ ने उसे झिड़का। "आप पल भर के लिए अपनी माँ से मिल आयें। चीफ़ होने के बावजूद अपनी माँ को भूलना ग़लत है, एर्गश।"

"बहन जुराख़ाँ, यहाँ बहुत-सी माताएँ हैं," एर्गश ने आँखों में उल्लास-पूर्ण चमक के साथ आस-पास देखते हुए कहा। "मैं तो अवाक् हूँ। मुझे तो ऐसी, उम्मीद ही न थी।"

तारीफ़ सुनकर जुराख़ाँ मुस्कुरा पड़ी।

"कम से कम आधी औरतें ही हैं? है न?"

"परंजी बाधा डाल रही है, परंजी..." यफ़ीम दनीलोविच ने राय दी। "नहीं तो हम कह सकते थे – औरतें मिसाल क़ायम कर रही हैं!"

"बाय तो भाग गया," एर्गश ने मज़ाक़ से खेद जताते हुए कहा।

"उसे हाथों में बेलचा लिये देखने का मौक़ा मुझे नहीं मिला। लेकिन बेटा तो घोड़े-सा जुता है... आपने देखा?"

बंजर ज़मीन और शेर के टीले के ऊपर धूल का एक आवरण-सा छाया था। पत्थरों पर गाड़ियों के पहियों की धीमी आवाज़ हो रही थी। ठेलों में मिट्टी के फेंके जाने पर तेज़ खड़-फड़, तख़्तियों से टकराते ईंट-पत्थर की खट-खट और बिना तेलवाले पहियों की चरर-चूँ की आवाज़ हो रही थी।

क़ब्रगाह के पास कहीं से किसी गधे की हिचकी लेने जैसी थोड़ी रेंकने की आवाज़ आ रही थी। हँसी की एक लहर बंजर ज़मीन के इस छोर से उस छोर तक फैल गयी। "ज़ोर लगा के, हा-सा... और ज़ोर से ... जल्दी-जल्दी, मूर्खो..."

अब्दुसमत के हिस्से में सरकण्डों को आग लगा दी गयी थी। फुत्कारती, तड़-तड़ करती लपटें हवा में उछल पड़ीं और काला, बदबूदार धुआँ ज़मीन पर छल्ले की तरह फैल गया। आग काँटेदार सरकण्डों को निगल गयी और उड़ती राख बच गयी। अदृश्य गड्ढे, दरारें व बिल दिखाई देने लगे। ऐसा प्रतीत होता मानो ख़ुद पत्थर, ज़मीन धूल व धुएँ में जल रहे हों।

अपने पीछे लम्बे तख़्ते लगाये दो पहियोंवाली छः गाड़ियाँ चरमराती आ पहुँचीं। ठेलों के लिए रास्ते का काम देने तख़्तों को तेज़ी से ले जाया गया।

गाड़ीवान अपनी गाड़ियाँ हाँककर कूड़े के ढेर के पास ले गये और किंकर्त्तव्यविमूढ़ से रुक गये। उन्हें समझ नहीं आ रहा था इस ढेर को कुदालों या तंगली से कैसे उठाया जाय।

"आपको सब्बल चाहिए।"

"देखिये, पत्थर-सा कड़ा है..."

"क़ीमती संगमरमर, क्यों?"

"जला देने का ख़्याल तो अच्छा है, लेकिन यह जलेगा नहीं।"

कुछ ने कूड़े के क़रीब जाने की कोशिश की लेकिन बदबू बर्दाश्त न होने के कारण लौट आये।

सफ़ेद बालोंवाला एक हट्टा-कट्टा बूढ़ा सब्बल लेकर आया।

"ख़ुदा का शुक्र, आख़िर हमारे मुहल्ले की हवा साफ़ हो जायेगी।"

वह नैमन्चा का था। अपना सब्बल झुलाते हुए उसने ग़ुस्से से एक ढेर पर प्रहार किया।

"दूर हो, भाग जा। इस घिनौने ढेर ने जब से मैं पैदा हुग्रा हूँ, साँस नहीं लेने दिया है।"

चीखते हुए गाड़ीवानों ने कूड़े के ढेर पर हल्ला बोल दिया।

ग्रौरतें सरकण्डों को कुल्हाड़ियों, गड़ासियों व खुरपियों से जड़ें काटती हुई उखाड़े जा रही थीं। वे खोदकर उन्हें ज़मीन से निकालतीं, हाथ में भर-भरकर ले जातीं ग्रौर ग्राग में झोंक देतीं।

चार ग्रौरतें, एक-दूसरे की कमर पकड़े बदबूदार कंटीली जड़ उखाड़ रही थीं। यह साल वृक्ष की तरह बड़ी ग्रौर कड़ी थी ग्रौर उनके प्रयासों को निष्फल कर रही थी। ग्रपनी पूरी ताक़त लगाकर खींचते हुए एक गोल-मटोल नौजवान ग्रौरत उस रस्सा-कशी में ग्रौर शामिल हो गयी। जड़ों ने हार मान ली, पाँचों ग्रौरतें एक-दूसरे पर हँसती-किलकती गिर पड़ीं। नौजवान ग्रौरत उछलकर खड़ी हो गयी ग्रौर दूसरों को उठने का मौक़ा न देते हुए उन्हें गुदगुदी करने लगी।

जुराख़ाँ दूर से ग्रपनी साथियों के उधम ग्रौर उनके हाँस-परिहास का ग्रानन्द लेती देख रही थी। वे एक साथ ख़ुश ग्रौर उल्लासपूर्ण थीं। हाथ में हाथ लिये, कंधे से कंधा मिलाये, वे तब एकदम भिन्न प्रतीत होतीं जब ग्रकेली थीं।

जुराख़ाँ ने लूट के माल की तरह परंजी में लिपटे सरकण्डों का गट्ठर ग्रपने कंधे पर ले जा रही एक प्रौढ़ ग्रौरत को रोका।

"ग्रापको कभी थकान न हो!"

ग्रौरत ने गट्ठर एक ढेर पर फेंका ग्रौर पलट पड़ी। यह क़ुम्रि थी। उसकी बाँहों पर सरकण्डों के कारण हरे-हरे धब्बे पड़ गये थे। चेहरा धूल ग्रौर पसीने से सना था। लेकिन उसकी ग्राँखें मुस्करा रही थीं।

जुराख़ाँ क्या सोच रही है, यह ताड़ते हुए उसने ज़मीन पर उल्लासपूर्ण दल की ग्रोर सिर से इशारा किया।

"देखो, यह बेचारी भी हँसना जानती हैं, जुराख़ाँ बहन। उनके लिए धमा-चौकड़ी करना संभव हो गया है..."

"उनके लिए ग्रादमियों की तरह जीना संभव हो गया है, क़ुम्रि चाची," जुराख़ाँ ने कहा। "ग्रापकी नेता कौन है?"

"बशारत। ग्रनाख़ाँ की बेटी। कितनी चतुर लड़की है! वह सब कुछ जानती है, ख़ुदा करे, वह बड़ी होकर ग्रति सुन्दर बने। उसने हमें बताया

कि क्या करना है, हम सब को कोई न कोई काम सौंप दिया। आप पाँच वर्ग करो, आप छः..."

"आपको कितना करने के लिए कहा?"

"छः। उसने कहा, चूँकि मैं नैमन्चा की हूँ, इस लिए मुझे यह सम्मान मिलना चाहिए। मैं ने कहा न, किसे क्या कहा जाये वह जानती है। अफ़सोस, अनाख़ाँ उसे देखने के लिए – हमारा यह महोत्सव देखने के लिए यहाँ नहीं। अभी तो उसे किंचित सुख नहीं। यह रही हमारी फ़ोरमैन!"

बशारत अपने पिता के भारी जूते पहने थी। उसके हाथों में ज़मीन मापने का लकड़ी का एक यंत्र था, उसने फ़ोरमैन के अन्दाज़ में कान में एक पेंसिल खोस रखी थी। उसका चेहरा दमक रहा था।

ज़ुराख़ाँ ने बराबरी जैसा व्यवहार करते हुए अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया।

"कहो, तुर्सुनाय पहले से बेहतर है?"

"नहीं... मुझे पता नहीं चलता, क्या करें। पिछली रात माँ ने सोचा मैं सो रही हूँ और तुर्सुनाई के पास बैठकर रोने लगी... ओह, कैसे रो रही थी वह!"

बशारत की आवाज़ काँप उठी। क़ुम्रि ने चुपके से आँख पोंछ ली।

"आज शाम को अब्दुसमत भाई और कोम्सोमोल के सदस्य, हशर में आये सब लोगों के लिए गीत गायेंगे... ओह, काश तुर्सुनाय यहाँ रहती," बशारत ने अपना सिर लटका लिया।

अचानक किसी पुरुष ने उसका नाम लेकर पुकारा और उसका चेहरा तत्क्षण ही चमक उठा, उसने जोश के साथ ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाकर जवाब दिया।

"मैं तो टेलीफ़ोन बन गयी हूँ... मर्दों और औरतों के बीच," उसने उल्लासपूर्वक कहा और दौड़कर चली गयी।

ज़ुराख़ाँ ने क़ुम्रि के कंधे पर अपना हाथ रख दिया।

"आज काम के बाद जाकर अनाख़ाँ को देख आना। मैं नहीं जा सकती..."

"ज़रूर, बहन, ज़रूर।"

ज़ुराख़ाँ बूढ़ी अंज़िरत के पास चली आयी, उससे बेलचा लिया और अपनी आस्तीनें चढ़ाकर खोदना शुरू कर दिया।

"थक गयी, अंजिरत दादी?"

"अलहमदुलिल्लाह, बेटी। रुकिये... आप क्यों खुदाई करने लगीं जब यहाँ इतने लोग हैं ही?"

"क्या यह गुनाह है?"

"बिलकुल नहीं। आप एक अच्छा काम कर रही हैं। नैमन्चा में कितने लोग हैं और हम कितने सालों से यहाँ रह रहे हैं लेकिन किसी के दिमाग़ में इस मच्छर-बाज़ार को साफ़ करने की बात नहीं घुसी। अलहमदुलिल्लाह, मैं यह सुनहरा दिन देखने के लिए ज़िन्दा रही। ख़ुदा की मेहरबानी से मैं मिल भी देख ही लूंगी।"

"याद है, आप तो मौत चाहती थीं?"

"हाँ, मेरी बेटी, ख़ुदा माफ़ करे। यह सोचना भी कितना भयानक है, मैं अपने को किस तरह लोगों से अलग-थलग रखे थी। मैं अपने पाप धो डालूंगी, भला वह भी कोई ज़िन्दगी थी, याद करते उबकाई आती है। अब तो मुझे अपनी उन औरतों से स्पृहा होती है जो यात्रा पर जा रही हैं। पहले सिर्फ़ पुरुष, धर्मात्मा पुरुष मक्का जाते थे। लेकिन अब मामूली औरतें मास्को गयी हैं। क्या उनका कोई समाचार आपको मिला? मैं तो इंतज़ार करती-करती थक गयी।"

"अब किसी भी दिन कुछ आने की उम्मीद कर रही हूँ।"

"रिज़वान, बेवक़ूफ़... बुढ़ापे मैं मुझे उसकी याद सता रही है। बड़ी इतरा रही होगी वहाँ, मास्को में। मिल-कर्मी बनकर लौटेगी – यह कोई छोटी-मोटी बात नहीं है... मुझे उसे आश्चर्य में डाल देना है। पूछना उससे, मुझ से ख़ुश है न! आख़िर हम ख़ुदा के सामने, लोगों के सामने साथी हैं। लेकिन सच कहूँ तो मैं ने उसका अपमान किया है..."

"सहेली का आप कैसे अपमान कर सकती हैं?"

"यह मेरी ही नादानी थी, बेटी, नादानी। तुम ख़ुद जानती हो... मैं उसके कानों में उस अफ़ीम बेचनेवाली औरत के शब्द फूंका करती थी – वही जिसकी हत्या कर दी गयी। लेकिन मैं जानती थी, बहुत अच्छी तरह जानती थी, वह बेगानी है, हरामख़ोर है – बिना सगा-संबंधियों की। मुझे उसके बदचलन होने का गुमान था। मैंने अपनी आँखों से क़ुद्रतुल्लाह ख़्वाजा को ठीक सुबह होने से पहले उसके घर से निकलते देखा था – वह जब तक जिये क़दम-क़दम पर ठोकरें खाये। मुझे लगा, मैंने उसके प्रति

गुनाह किया है, ख़ुदा हम पर रहम करे और वैसे लोगों से बचाये... अरे, बेटी, बेलचा मुझे दे दो। अपने लिए कोई दूसरा ढूँढ़ लो।"

"थोड़ा आराम कर लीजिए दादी। जाकर लोगों से बातें कीजिए। अलफ़ाज़ दर्जनों खुदाई करनेवालों से ज़्यादा प्रभावशाली हैं।"

"मैं चुप कब हूँ," अंज़िरत ने जवाब दिया। "मैं कभी नहीं चुपचाप रही, अलहमदुलिल्लाह।"

सहसा ज़ुराख़ाँ ने महसूस किया, उसकी निगरानी की जा रही है। वह पीछे मुड़ना चाहती थी लेकिन ख़ुद को रोक लिया। बेलचे पर झुककर उसने अपनी कोहनी से झाँककर देखा और चौंक पड़ी।

शिक्षक नईमी गैंतों पर झुका अपने पड़ोसी के कंधे के पीछे से उसकी निगरानी कर रहा था। ज़ुराख़ाँ ने विनम्र और शिष्ट शिक्षक की आँखों में ऐसा भाव पहले कभी नहीं देखा था। उसकी आँखों में ज़बर्दस्त नफ़रत मिली निपट दहशत थी – यह जाल में फँसी मार्जारिका [जैसी दृष्टि थी।

लेकिन जैसे ही ज़ुराख़ाँ सीधी खड़ी हुई, नईमी गैंती उठाकर काम करने लगा। और अब उसके चेहरे पर उत्साह के अलावा कोई दूसरा भाव दिखाई नहीं दे रहा था। वह अपनी गैंती से इतनी मेहनत से काम कर रहा था कि उसके आस-पास के लोग चकित थे। इसके चारों ओर पत्थर और मिट्टी के ढेले छिटके रहे थे। उसकी रेशमी क़मीज़ बदन से चिपककर पसीने से स्लेटी हो उठी थी। नईमी ने बदस्तूर कुली या खुदाई करनेवालों की तरह कमर में एक रस्सी बाँध रखी थी।

धूल के घने बादल के मँडराते घेरे के बीच वह उत्साहपूर्वक काम कर रहा था और ज़ुराख़ाँ को लगा उसे भ्रम हो गया था – शिक्षक उसे ऐसी दृष्टि से नहीं देख सकता।

ज़ुराख़ाँ उसके पास आयी।

"तो आज आप हम लोगों के साथ हैं?"

"मेरे बहुत-से छात्र यहाँ पर हैं," नईमी ने अपने ललाट का पसीना पोंछते हुए नाराज़गी से कहा। "आप यह भूल रही हैं। लेकिन माफ़ कीजिए मुझे अपना काम ख़त्म करना है। बाद में अगर हो सका, मैं एक छोटी-सी प्रार्थना लेकर आप के पास आऊँगा।"

"अगर चाहें तो आप अभी कह सकते हैं।"

"नहीं, नहीं, काम के बाद। श्रौर श्रगर संभव हो, मैं नहीं चाहूँगा, कोई श्रौर जाने।"

"हूँ! ख़ूब!"

नईमी ने सिर झुकाया।

पास ही सुखट्टा मख़सूम बैठा श्रपनी महसियों में घुस श्रायी मिट्टी को झाड़ कर निकाल रहा था। कुदालों श्रौर बेलचों के भद-भद के ऊपर उसकी श्रनुग्रहपूर्ण श्रावाज़ कहती सुनाई दे रही थी:

"हालाँकि मेरी ज़िन्दगी वीरानी रही है, मैं प्रेम के बारे में दो-एक बात जानता हूँ। मर्द को वफ़ादार श्रौर श्रौरत को नम्र होना चहिए हाँ... श्रगर इसका श्रभाव हो तो पारिवारिक जीवन का न तो कोई उद्देश्य रह जाता है, न कोई श्रानन्द।"

मख़सूम के नज़दीक कोई बेलचा या ठेला न था। ऐसा प्रतीत होता जैसे वह उतना काम नहीं कर रहा था जितना काम करनेवालों का मनोरंजन।

"एक बार एक बधिया मुर्ग़ा ताम्रचूड़ के लिए श्रर्ज़ी दाखिल करने गया..." किसी ने मज़ाक़ किया।

"श्रौर मुर्ग़ियों ने उसे चोंच मार दी" दूसरे ने जोड़ा।

लेकिन सुखट्टा मख़सूम श्रविचल कहता गया:

"श्रपने बारे में तो मैं यही कहूँगा। मैंने श्रपनी बीवी से तब शादी की जब उसने मेरा दिल जीत लिया। फिर मैं प्रेम की श्राग में जलने लगा। शादी के बाद पहले ही दिन वह मुझे छोड़ गयी। वह चिमिल्दिक़* के पीछे से भागी थी लेकिन मुझे उससे कोई वैर-भाव नहीं। पति होने के नाते मुझे उसके प्रति वफ़ादार रहना चाहिए था। मैंने कभी दुबारा शादी नहीं की, क़सम से, ऐसी थी मेरी वफ़ादारी। मेरी बीवी को वह मिल गया जिसे लोग क़िस्मत में लिखा कहते हैं। मैं श्रब भी कभी-कभी उसे देखने जाता हूँ श्रौर मुझे उसके बच्चों को देखकर ख़ुशी होती है। ख़ुदा का शुक्र, मैं ने श्रपनी वफ़ादारी को नापाक नहीं किया। हाँ..."

"उसका पति तुम्हारा स्वागत कैसे करता है?"

"श्रच्छे शब्दों से या श्रच्छे डंडे से?"

---

* चिमिल्दिक़ — यह पर्दा जिसके पीछे नवविवाहित दम्पत्ति श्रपनी पहली रात बिताते हैं।

"मैं उस से वैसे ही बातें करता हूँ, जिस तरह आप से कर रहा हूँ," मख़सूम ने बिना मुस्कराये जवाब दिया।

जुराख़ाँ चली गयी।

दूर में सायकिल थामे चले आ रहे आदमी को उसने पहचान लिया। उसने सिर के पीछे चूड़ेवाली फीकी पड़ी टोपी पहन रखी थी। वह अपने साथ-साथ सायकिल चलाये जा रहा था और आस-पास के लोगों से हास-परिहास भी करता जाता। सबों ने एर्गश और यफ़ीम दनीलोविच की ओर इशारा करते हुए, उसके लिए रास्ता बना दिया। वह कोई और नहीं, दीर्घ-प्रतीक्षित डाकिया था। जुराख़ाँ ने उसे एर्गश को एक ख़त देते देखा। एर्गश ने डाकिये के पास से हटकर ख़त खोला। जबकि यफ़ीम दनीलोविच ने स्नेहपूर्वक मुस्करा कर उसके कंधे पर धौल जमायी। जुराख़ाँ जल्दी-जल्दी चलकर उनके पास आ पहुँची। ख़त मास्को से आया था।

एर्गश ने ख़त खोला, दुविधा से अपनी भौंहें सिकोड़ीं।

"मिल परियोजना के चीफ़ कॉमरेड एर्गश सुल्तानोव।"

इसका क्या मतलब? उसने दस्तख़त पर नज़र डाली। ख़त हाजिया ने भेजा था। वह औपचारिक लहजा क्यों इस्तेमाल करने लगी? उसके ख़त हमेशा इस तरह शुरू होते थे: "मेरे सब से प्यारे भाई एर्गश..."

उसने जल्दी-जल्दी बेताबी से पढ़ा। लेकिन कहीं भी, किसी भी पंक्ति में उसे दुबारा अपना नाम नहीं मिला। प्यार-मुहब्बत की एक भी बात नहीं। "हम महान नगर में सकुशल पहुँच गये।" आख़िर तक यही सब था... "हम... हमारी महिलाएँ... स्थानीय महिलाएँ..."

दस्तख़त के ऊपर की पंक्ति को सावधानी से काट दिया गया था। सिर्फ़ अलहदा-अलहदा अक्षर पढ़े जा सकते थे। यह अन्दाज़ लगाने की कोशिश में कि हाजिया ने क्या लिखा होगा कि उसे बाद में काट देने की ज़रूरत पड़ी, वह उस पंक्ति को घूरे जा रहा था, लेकिन तभी यफ़ीम दनीलोविच ने उससे ख़त ले लिया।

ध्यान से उसे पढ़ने के बाद वह एर्गश की ओर मुड़े।

"अच्छा ख़त है! अच्छी लड़की... तुम्हें क्या खल रहा है, चीफ़?"

"मुझे? मेरा भी यही ख़्याल है—अच्छा लिखा है। सिर्फ़ एक पंक्ति कटी हुई है।"

"कहाँ ?"

एर्गश ने अंगुली से दिखाया।

"यह ?" यफ़ीम दनीलोविच ने गंभीरता से पंक्ति को देखा। "लेकिन यह तो एकदम स्पष्ट है। तुम इसे नहीं पढ़ सके ?"

"न-नहीं। आप पढ़ सकते हैं ?"

यफ़ीम दनीलोविच ने अपनी मुस्कराहट छुपाने के लिए त्योरी चढ़ायी।

"मुझे तुम पर हैरत है। क्या तुम अनपढ़ हो ? समझते हो, लड़की कोई दुख की बात ऐसे ही भूल से लिख जाती है।"

"दुख की बात ?"

"बेशक। ख़ुद देख लो।"

दिलचस्पी से एर्गश ख़त पर झुक पड़ा और यफ़ीम दनीलोविच ने देखे बिना उस कटी हुई पंक्ति के साथ-साथ अपनी अंगुली चलाते हुए "पढ़" दिया :

"मेरे प्यारे, मुझे तुम्हारी याद आती है और तुम भी मुझे निश्चित रूप से याद करते होगे ? मैं कितनी ख़ुश होती अगर तुम अकस्मात यहाँ मेरे पास आ पहुँचते..."

एर्गश सिर उठाकर ठहाका लगाने लगा।

"यफ़ीम चाचा," सेना में जाने से पहले "कमिस्सार" को वह इसी तरह सम्बोधित करता था। उसने कहा, "अब से मैं उसके सारे ख़त आपको दे दिया करूँगा। आप उन्हें पढ़ना जानते हैं और आप की आवाज़ भी दिलकश है।"

"मैं तो बस इतना कह सकता हूँ कि इस तरह लजाकर काटी गयी पंक्ति को सिर्फ़ ख़त में नहीं, आदमी को अपने दिल में तलाशनी चाहिए," यफ़ीम दनीलोविच ने कहा, "और सिर्फ़ लड़की के दिल में नहीं।"

एर्गश की हँसी थम गयी।

"आप का मतलब फिर दोब्रोख़ोतोव से है ? क्या आप ने सुना, उस ने क्या कहा ? 'मुफ़्त के कुली...' उसका मतलब हमारी जनता से था ! 'मुफ़्त के कुली !"

"मैं सब कुछ सुनता हूँ, एर्गश। लेकिन इन शब्दों के बाद ही कटी हुई पंक्ति का मतलब समझ में आया और पूरी बात उस पंक्ति में थी।"

"कैसी बात ?"

"ख़ुद पढ़ लो।"

दोब्रोख़ोतोब सिर से पाँव तक धूल में सना था। उसकी क़मीज़ कोहनी पर से फट गयी थी। थकान के कारण कष्टपूर्वक चलता वह शेर के टीले से नीचे आया। एक छोटी सी चाँदी की ज़ंजीर लगी घड़ी जेब से निकालते हुए उसने इसकी ओर इशारा किया।

"क्या समय हो गया?" यफ़ीम दनीलोविच ने अपनी घड़ी पर नज़र डालते हुए पूछा।

"यह मेरी समझ से बाहर है, उन्हें ताक़त कहाँ से मिल जाती है," इंजीनियर ने कहा। "वे मज़दूर नहीं हैं, शेर! और औरतें – शेरनी! फिर भी, धूप चरम सीमा पर पहुँच चुकी है। उन्हे कम से कम दम तो लेने दीजिए। मेरा ख़्याल है, वे भूखे हैं। औरतें शायद घर छोड़ आये अपने बच्चों को देखना चाहती हों। सच तो यह है कि बच्चे भी यहीं हैं।"

एर्गश क्या कहेगा, इसकी प्रतीक्षा करते हुए यफ़ीम दनीलोविच मुस्कराये। एर्गश ने अनिश्चितता से अपने कंधे उचकाये। ख़त के लिए हाथ बढ़ाती ज़ुराख़ाँ तेज़ी से उसके पास आ पहुँची।

"मैं अगर ख़त दूँ तो मुझे क्या इनाम मिलेगा?" यफ़ीम दनीलोविच ने पूछा।

तभी एर्गश ने संकेत दिया। बंजर ज़मीन और शेर के टीले के आर-पार पटरियों पर सलाख़ों के टकराने की ज़ोरदार आवाज़ गूँज उठी।

"बस! सिगरेट-पानी कर लो!" क़ब्रगाह की ओर से जहाँ लाल सेना के लोग काम कर रहे थे, कोई रूसी में ज़ोर से बोला।

अब्दुसमतवाले हिस्से में गीत शुरू हो गया। कुछ लोग जहाँ छाया मिली, जा बैठे। दूसरे तम्बाकू, रोटी, प्याज़, नमक निकालकर कामवाली जगह पर ही बैठ गये। बस थोड़े-से ही घर गये।

ज़ुराख़ाँ ने औरतों के नाम का ख़त ले लिया।

आग पर क़ुम्रि के लाये गये बड़े काले-से जग में पानी उबल रहा था। ढक्कन खड़खड़ कर रहा था।

एक बूढ़े गाड़ीवान ने दूर से क़ुम्रि को आवाज़ दी कि वह भी चाय पीने आयेगा। क़ुम्रि ने जवाब दिया कि कहीं उसके होंठ न जल जाये।

"कॉमरेडो," ज़ुराख़ाँ ने अपनी धीमी लेकिन गूँजती आवाज़ में कहना शुरू किया। "मास्को से आया, हमारे गाँव की औरतों का ख़त अगर सुनना चाहती हो तो पास-पास बैठ जाओ।"

प्रतिध्वनि की तरह पूरी बंजर ज़मीन में आवाज़ें गूँज उठीं:

"ख़त मास्को से – हमारी महिलाओं के यहाँ से।"

औरतें ज़ुराख़ाँ की चारों ओर जमा हो गयीं। मर्द भी कुछ नज़दीक आ गये। औरतों को संकोच न हो, इस लिये वे उन से कुछ हटकर बैठ गये।

"अहा, रिज़वान ने – आख़िर उस औरत ने मेरा भी ख़्याल रखा!" अंजिरत दादी ने अपना चेहरा ढंके बिना सामने बैठते हुए ज़ोरों से घोषणा की।

दूसरी औरतें भी आदत के विपरीत कुछ ज़्यादा आज़ादी बरत रही थीं। बहुतों ने अपनी परंजी उतार दी और चेहरों पर बस हलके-से रूमाल सामने रख लिये।

ज़ुराख़ाँ के ख़त पढ़ते समय कोई भी नहीं बोला। जब तब दबी हुई विस्मय की आवाज़ों से ही चुप्पी भंग होती।

"हमें यहाँ एकदम घर जैसा महसूस होता है। हम सब को एक-एक रूसी जुलाहिन काम सिखाती है और पहले दिन से ही हम एक-दूसरे से बहनों की तरह प्यार करने लगीं। उन्होंने अपने होस्टल में हमें कमरे दिये हैं, हमेशा हमारे साथ रहती हैं – करघे पर, कैंटीन में और काम के बाद भी।

"प्राय: वे हम से हमारे जीवन के बारे में पूछती हैं। वे आपको अपना लाल सलाम कहती हैं।

"जब यहाँ हमने उनका मिल देखा, हमें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। यह एक पूरा शहर है। मकानों के बड़े-बड़े ब्लाक हैं और उनके सामने फूलों की क्यारियाँ हैं। काश, आप करघे देख पातीं! पहले तो हम निराश हो गयीं लेकिन जब हमने काम समझना शुरू किया, हमने महसूस किया कि जटिल होने के बावजूद करघे बहुत आज्ञाकारी भी हैं। मैं कह सकती हूँ, हमारे यहाँ वैसे ही करघे होंगे। और कुल मिलाकर जो कुछ इस समय हमें देखने को मिल रहा है, भविष्य में वह सब हमारे यहाँ होगा – एक भाषण में हमें यही बताया गया है।"

दोब्रोख़ोतोव मज़दूरों के पास बैठकर ज़ुराख़ाँ की बातें सुनकर समझने की कोशिश कर रहा था कि कौनसी ऐसी चीज़ है जो उसे इतनी अजीब तरह से विचलित कर रही है: ख़त की सादगी या गर्व की वह भावना

जिसके साथ उसे सुना जा रहा था? औरतें हाजिया के ख़त के कुछ शब्द नहीं समझ पा रही थीं: "होस्टल", "मकानों के ब्लाक..." जुराख़ों को उन्हें समझाना पड़ रहा था। इसके बावजूद यही लोग थे जो मिल का निर्माण करने के लिए कमर कसकर खड़े हो गये थे! क्या यह बात इतनी पुरानी पड़ गयी कि रूसी मज़दूर जो अब मार्क्स और लेनिन को पढ़ते हैं, कभी अनपढ़ भू-दास थे?

हाजिया ने नैमन्चा के निर्माताओं की सफलता की कामना की थी। कितनी बेलाग ख़ुशी इन शब्दों ने पैदा कर दी थी। औरत और मर्द चीख पड़े, तालियाँ बजायीं, पैरों पर उछल खड़े हुए और अपनी टोपियाँ हवा में उछालीं। इसे देखे बिना दोब्रोख़ोतोव भी उठ खड़ा हुआ और चीख पड़ा "हुर्रा!"

पीठ पर पड़ी एक धौल उसे होश में ले आयी। एर्गश ने उसके कंधे को ज़ोर से अपनी बाँहों में जकड़कर जोश के साथ कान में बुदबुदाकर कहा:

"मेरा मतलब तुम्हारी भावनाओं को ठेस पहुँचाना कभी नहीं रहा, इंजीनियर। मेरे प्रति कोई दुर्भाव मत लाना, ठीक?"

"मान लिया और यही बात मेरे साथ भी लागू होती है," दोब्रोख़ोतोव ने अत्यधिक भाव-विह्वलता से जवाब दिया।

दोपहर के बाद जब काम शुरू हुआ, लोग दूने उत्साह से काम में जुट गये। अब्दुसमत की टीम अपने बेलचे और ठेले लाने लोहे की पटरी पर घंटी बजने के बहुत पहले ही चली गयी।

झुटपुटा होने तक बंजर ज़मीन के ऊपर धूल के बादल तैरते रहे, पुरुषों की पसीने से गीली क़मीज़ें सूख नहीं पायीं।

जब अंधेरा होने लगा गाड़ी-मरम्मत कारख़ाने के कोम्सोमोलों ने ज़मीन का एक हिस्सा, जिसपर कभी शेर का टीला था चौरस कर दिया और उसपर पटरियाँ बिछा दीं। यह बात चारों ओर दूने वेग से फैल गयी: कलाकार आ गये हैं, मनोरंजन होगा।

क़ुम्रि जिसने अपने छहों "वर्ग" साफ़ कर लिये थे, अपने बच्चों को लानेवाली पहली थी और उन्हें ठीक पटरियों के बग़ल में बैठा दिया।

"मंच" के इर्द-गिर्द मशालें जला दी गयीं। मशालों से चिनगारियाँ फूट पड़ीं और मिट्टी के तेलवाले चिथड़ों की बू फैल गयी। जवान-बूढ़े,

कंधे से कंधा मिलाये एक अर्द्धवृत्त में बैठ गये। बच्चों ने "मंच" की चारों ओर चींटियों की तरह झुंड में भीड़ लगा दी थी। कलाकार उन्हें फाँदकर मँच तक आये।

दोब्रोख़ोतोव क्या करे, समझ नहीं पा रहा था: आम तौर से उसे घूमकर देखना चाहिए था कि आज दिन में क्या काम हुआ है लेकिन दिल में वह आज का काम बन्द कर देना और दूसरों के साथ बैठकर मज़दूर कलाकारों द्वारा पेश कंसर्ट देखना चाहता था। लोगों ने उसे बुला लिया और एक ठेले पर उसके लिए आराम से बैठने की जगह बना दी। वह बात मानकर ख़ुशी-ख़ुशी ठेले पर बैठ गया, फिर थकी-दुखती टाँगों को मुड़ी पीठों के बीच फैला लिया।

नीली क़मीज़ों में कोम्सोमोल मंच पर आ गये। वे काम के समयवाले कपड़ों में ही थे – सिर्फ़ थोड़ी धूल झाड़ ली थी। लेकिन लड़कों और लड़कियों के सीने पर लाल फीते लगे थे और हर कोई तुरंत जान गया कि वे कलाकार हैं।

व्यापक श्रोता समुदाय तुरंत चुप हो गया। दो बच्चों की बहस साफ़ सुनाई दे रही थी:

"वे गायेंगे।"

"नहीं, वे अभिनय करेंगे..."

किसी ने उन्हें आँखें दिखायीं और वे भी चुप हो गये।

लेकिन कलाकारों ने अपना कार्यक्रम शुरू करने में काफ़ी समय लिया। नौजवानों ने एक पैर का भार दूसरे पर डाले एक-दूसरे की ओर देखा, लड़कियों ने परेशानी से मुँह फेर लिया और आस्तीनों से अपने चेहरे ढँक लिये मानो मशालों की चमक से बचाव कर रही हों। कुछ दर्शक हँसने-बोलने लगे।

अब्दुसमत दौड़कर मंच के सामने आ गया। कलाकार तैयार हो गये और एक सीधी पंक्ति में एक-दूसरे के पास-पास खड़े हो गये। लेकिन लगता था जैसे अब्दुसमत भी भूल गया था कि यहाँ लोग किस लिए जमा हुए थे। कोम्सोमोलों की पंक्ति के पास आकर धीमी आवाज़ में उसने कुछ पूछा। जवाब में उन्होंने सिर हिलाकर कंधे उचका दिये।

"आश्चर्य, बात क्या है?" दोब्रोख़ोतोव ने जैसे ख़ुद "मंच" पर हो, अजीब महसूस करते हुए सोचा।

सहसा किसी ने उसका कंधा छुआ। उसने मुड़कर देखा। एर्गश ने उसे इशारे से बुलाया।

दोब्रोख़ोतोव को लगा कुछ गड़बड़ी हो गयी है। एर्गश की त्योरी चढ़ी थी, वह परेशान दिख रहा था।

"तुमने जुराख़ाँ को देखा है?" उसने इंजीनियर को एक ओर ले जाकर पूछा।

"नहीं।"

"मैंने कुछ समय से उसे नहीं देखा है। मैं सब जगह ढूंढ़ चुका हूँ। अजीब बात है। कहाँ जा सकती है वह?"

धीमी आवाज़ के बावजूद कुछ लोगों ने उनकी बातें सुन लीं।

हवा के झोंके की तरह मशाल की विषम, कंपित रोशनी में जगमगाती भीड़ के इस छोर से उस छोर तक खटके भरी बुदबुदाहट फैल गयी। अब्दु-समत आगे झुक गया और मशालों के पार अंधेरे में झाँकते हुए लोगों की बातें सुनने की कोशिश करने लगा। अब हँसी की कोई आवाज़ नहीं आ रही थी।

"जुराख़ाँ कहाँ है? वह कहाँ है, भाइयो!" एक औरत चीखी।

यफ़ीम दनीलोविच आ पहुँचे। उनका चेहरा, आँखें, गालों की हड्डियाँ, मूंछें जैसे पथरा-सी गयी थीं। उनके हाथों की मुट्ठियाँ बंधी थीं लेकिन अशक्त, निश्चल लोगों ने थोड़ा-थोड़ा खिसककर उनके लिए अपने बीच में रास्ता बना दिया। बिना इधर-उधर देखे, वह आगे बढ़ते चले गये। तेज़ी से ख़ाली हो गये मंच पर पहुँचकर वह रुक गये। बहुत समय तक उनके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला। फिर भी लोग चुपचाप बैठे इंतज़ार करते, व्याकुलता से उन्हें भारी-भारी साँस लेते, ख़ुद पर क़ाबू पाने की कोशिश करते देख रहे थे।

तभी मशालों की रोशनी में लोगों ने उनके गालों पर आँसू लुढ़कते देखे।

"भाइयो-बहनो," आख़िर यफ़ीम दनीलोविच ने कहा। "दुश्मन ने हमारी जुराख़ाँ की हत्या कर दी है!.."
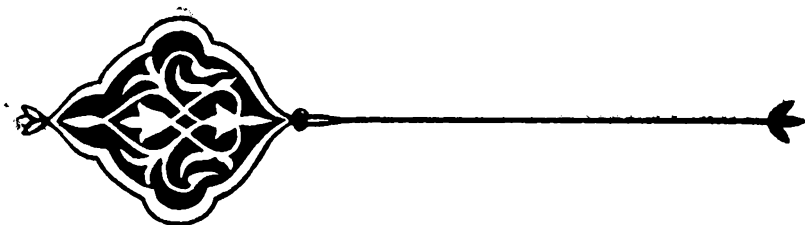
इक्कीसवाँ भाग

दूसरे दिन सुबह, शहर के सभी हिस्सों से लोग फिर निर्माण-स्थल पर उमड़ पड़े। सड़कें एक बार फिर भीड़ों से भर गयीं, लेकिन इस बार वे चुप थीं। लोग पूर्व-झांझावात के बादलों की तरह मँडरा रहे थे। हवा में लहराती पताकाओं पर फीते लगे थे।

शेर के टीले पर फूलों से आच्छादित एक लम्बा ताबूत अरथी के ऊपर रखा था। जुराख़ाँ का जीवित-सा प्रतीत होता सफ़ेद चेहरा बंद आँखों से लोगों को घूर रहा था। उस के होंठ एक दूसरे से थोड़ा अलाहदा थे, उसकी बारीक भौंहें ज़रा-सी तनी थीं। उसे देखकर लगता जैसे उसने जो कुछ कहना शुरू किया था, उसे वह पूरा नहीं कह पायी थी। उसका चेहरा देखकर लोगों पर यही असर पड़ता कि मौत ने उस पर ठीक उसी समय हमला किया जब वह कुछ सहृदय, कुछ हार्दिक बात कह रही थी।

अरथी के अगले सिरे पर सिर पर काला रूमाल बाँधे एक श्वेत केशी वृद्धा जो जुराख़ाँ की माँ थी, अनाख़ाँ के साथ एक-दूसरे को बाँहों में भरे बैठी थीं। अनाख़ाँ शोक-संतप्त माँ का सिर अपने सीने से लगाये हलके-हलके किसी बच्चे की तरह झुला रही थी। वह जुराख़ाँ के चेहरे को ख़ुश्क, जलती आँखों से ताक रही थी। सिर्फ़ उसके होंठ कभी-कभी फड़क उठते जैसे उसे हठात दर्द का दौरा पड़ जाता हो। मृत के पैरों के पास अपना सिर अवज्ञापूर्वक उघारे बशारत खड़ी थी, उसका चेहरा किसी कन्या-सा सुकुमार नहीं बल्कि कठोर दिखाई दे रहा था, मानो रातों-रात उसे नारीत्व प्राप्त हो गया हो।

जुराख़ाँ को अलविदा, ताबूत पर, अरथी पर और ज़मीन पर फूलों की वर्षा करके लोग धीरे-धीरे आगे बढ़ जाते। इसी बीच लगातार

बढ़ती जाती भीड़—ऐसी भीड़ इस छोटे-से मुहल्ले में पहले कभी जमा नहीं हुई थी—अर्द्धवृत्त में शेर के टीले के सामने खड़े हो गयी। सामने औरतों की बड़ी जमघट लगी थी। कभी-कभी उनकी रुँधी, बलात् रोकी सुबकियाँ फूट पड़तीं। फिर भयावह मौन छा जाता। बच्चे भी शान्त थे। ख़ामोश और दुखी मन वे सवाल पूछने की हिम्मत न करते हुए, भागने की शक्ति ख़ुद में जुटा पाने में असमर्थ अपने माँ-बाप से चिपके जा रहे थे।

एक-दूसरे से सट-सटकर चलती औरतों का एक दल ताबूत के पास आया। वे पाँच थीं और परंजी में थीं। अनाख़ाँ ने सुदूर गाँव की उन महिलाओं को पहचान लिया। उनकी नेता ने अपना चचवान उठा लिया फिर हाथ फैलाते हुए वह बुक्का फाड़कर रोती-कलपती ताबूत पर गिर पड़ी। देर तक वह ख़ुद पर क़ाबू नहीं कर पायी और किसी ने उसे रोका नहीं।

सूरज आसमान में काफ़ी चढ़ आया था जब यफ़ीम दनीलोविच और एर्गश अनाख़ाँ के पास आये और उसकी बग़ल में खड़े हो गये। अनाख़ाँ उठ खड़ी हुई और अपने सिर से रूमाल उतार लिया। एक छोर से दूसरे छोर तक भीड़ भयानक चुप्पी के साथ आलोड़ित हो उठी।

"कॉमरेडो! कर्मियो, ईमानदार लोगो!" अनाख़ाँ ने अपनी आवाज़ ऊँची नहीं की थी, लेकिन सब सुन रहे थे। "मेरी प्यारी बहनो! देखो, कितने लोग हमारी निडर ज़ुराख़ाँ को अन्तिम यात्रा पर अलविदा कहने आये हैं। देखो, उसके कितने मित्र थे, उससे कितने लोग प्यार करते थे। मैं उन औरतों के नाम लेना चाहती थी जिनकी उसने मदद की है। उनकी संख्या बहुत बड़ी है। मैं उनके नाम नहीं गिनाऊँगी, क्योंकि उसने यहाँ जमा सभी लोगों की मदद की है: औरत और मर्द सब की। उसने उन सब की मदद की है जिनके पास मज़दूरों के हाथ और मज़दूरों की चेतना है। हमारे क़स्बे को देखिये: इसने सहकारिता से शुरुआत की, फिर दुकानें, नया स्कूल और मिल जिसका हम निर्माण कर रहे हैं। कितनी अच्छी चीज़ें! मुझे बताइये: नैमन्चा का मालिक क़ुद्रतुल्लाह कहाँ है? दुकानदार मत्क़ोवुल कहाँ है? सारे छोटे-बड़े मकड़े कहाँ हैं? कोई बच्चा भी आप को बता सकता है कि हमारे क़स्बे में कहीं ज्यादा अच्छी चीज़ें और थोड़े-से बुरे लोग हैं। हम में से हर कोई जानता है कि ज़ुराख़ाँ ने यह सारी चीज़ें शुरू कीं, उनमें अपना दिल

लगा दिया। हमारे लिए, जनता के लिए अपनी पूरी ताक़त लगा दी, अपनी जान तक लगा दी।" अनाख़ाँ एक क़दम आगे बढ़कर ज़ोर से बोली: "और एक ऐसे व्यक्ति को दुश्मन ने मार डाला है।"

भीड़ ने गहरी साँस ली जैसे यह किसी एक ही सीने से निकली हो।

अनाख़ाँ कहती गयी, उसका सिर ताबूत पर झुका था:

"हम तुमसे प्यार करते थे, प्यारी बहन। हम तुम्हें कभी नहीं भूलेंगे। और मैं तुम्हारी सौगंध लेती हूँ... कॉमरेडो, आइये, हम एक सौगंध लें। तुमने जो काम शुरू किया था, उसे हम पूरा करेंगे। आज हम शोक मना रहे हैं—तुम्हारे लिए शोक मना रहे हैं। हमने तुम्हें खो दिया है। ज़ुराख़ाँ, हमें माफ़ करना। लेकिन हमारे दिलों में कोई भय नहीं। विश्वास रखो, हम हतोत्साह नहीं होंगे। और कल जब हमारा मिल इस बंजर ज़मीन के टुकड़े पर उठ खड़ा होगा, तुम्हारा नाम सब से पहले याद किया जायेगा। और तब तुम हमारे साथ उसी तरह बनी रहोगी जैसे जीवित रहने पर थी। अलविदा, बहन। अलविदा; हमारी माँ।" अपना मुक्का हवा में लहराती अनाख़ाँ सहसा मुड़ी। "लोगो, मेरी बात सुनो। हत्यारों का नाश हो। कॉमरेड ज़ुराख़ाँ की याद हमेशा बनी रहे!"

सैकड़ों आवाज़ों ने उन शब्दों को दुहराया।

आँसुओं से तर चेहरा और जलती आँखों से क़ुम्रि ताबूत के पास दौड़ पड़ी। उसने अपने काले, काम से क्लान्त हाथों को ऊपर उछाला फिर उन्हें अनाख़ाँ की ओर बढ़ाया।]

"अनाख़ाँ। बहन! तुमने हमें बताया कि कैसे व्यक्ति को दुश्मनों ने मार डाला है, उनकी आँखें सिर से बाहर आ जाएं, वे कभी दिन की रोशनी न देख पायें। लेकिन तुमने यह नहीं कहा कि वह मुँह छुपाकर नहीं मरी है! दुश्मन ने ख़ुद को छुपा लिया है लेकिन वह नहीं छुपी। अब मैं यही कहना चाहती हूँ। वे मुझे भी मार डालें। वे मेरा खुला चेहरा देखकर आँखों में ख़ून उतार लायें, लो!" अपने दोनों हाथों से उसने सिर से परंजी उतार कर फाड़ डाली और पोटली बनाकर ज़मीन पर फेंक दी। उसके हल्के पड़ रहे, सफ़ेद-सफ़ेद धारियोंवाले बाल खुलकर बिखर गये। उस समय उसका ग़ुस्से से भरा चेहरा देखने में भयानक

लगता। "दुश्मन मुझ से आँख मिलाये। बुज़दिल गीदड़ अपना चेहरा तो दिखाये!"

"बहन।" गहन चुप्पी को तोड़ती एक दूसरी आवाज़ चीखी। "बहन। मैं भी तुम्हारे साथ हूँ!" भावावेग से बोझिल साँस लेती ख़ालनिसा क़ुम्रि की बग़ल में आ खड़ी हुई। "बहनो, तुम सब जानती हो जुराख़ाँ ने मुझ पर कितनी मेहरिबानियाँ की हैं। मैं ने उसकी सलाहों पर ध्यान नहीं दिया, नादान औरत जो हूँ मैं। यह मेरे लिए एक कड़ुवा अनुभव है कि वह मुझे नहीं सुन पायेगी। लोगो! मेरी बात सुनो। जब जुराख़ाँ ने मुझे मत्क़ोवुल से बचाया, उसने माँ की तरह मुझ से कहा: 'ख़ालनि-सा, अब तुम आज़ाद हो। अपना चेहरा उघारकर रोशनी देखो।' मुझे ऐसा करते डर महसूस हुआ। अब देखो! मैं उसे तब तक अलविदा नहीं कह पाऊँगी जब तक उसकी सलाह का पालन नहीं कर लूँगी!"

अपनी लाल परंजी और चचवान उतारकर उसने क़ुम्रि की परंजी पर फेंक दिया, फिर एक क़दम पीछे हटकर उन पर थूक दिया।

ऐसा करते ही वह दौड़कर औरतों के बीच, छुपने की एक अनचाही प्रेरणा के वशीभूत, चली जाना चाहती थी। उसे एक साथी गाँववाली ने, उसके गाँव की औरतों की नेता ने रोका। सब लोगों की आँखों के सामने उसे गले से लगाकर उसका ललाट चूमते हुए, बूढ़ी औरत उसके साथ ताबूत के पास गयी, झुककर बन्दगी की फिर लोगों की ओर झुककर बन्दगी की।

"बेटियो! बेटो! मुझे भी बोलने की इजाज़त दो। हाल में ही मैंने जुराख़ाँ को बोलते सुना था। वह ज़िन्दा थी, पुरजोश थी, और उसके शब्द बुद्धिमत्तापूर्ण थे। उसने हमें लेनिन के बारे में बताया। उसकी आँखों ने लेनिन को देखा था। उन्होंने उससे हाथ मिलाया था। अब उसकी आँखें धूंधली पड़ गयी हैं और हाथ ठंडे। अब हम उसे नहीं सुन पायेंगे। लेकिन मैं, बूढ़ी औरत होते हुए भी उसके चेहरे की ओर आख़िरी बार खुले हुए और आज़ादी से देखना चाहती हूँ।"

धूल-धूसरित परंजी उसके सिर और कंधों से सरक गयी। वह देखने में अब भी जवान लगती थी, ज़ाहिरी तौर पर जवानी में तो ज़रूर ही ख़ूबसूरत रही होगी। परंजियों पर डग भरते हुए उसने जुराख़ाँ के पाँवों

को सीने से लगा लिया। फिर सच्चे दुख व ग्राज़ादी के आँसू बहाती बोल उठी:

"तुम्हारी ज़िन्दगी छोटी रही लेकिन ग्रासमान में तुम्हारे सुख का सितारा बुलन्दी पर है! वह सितारा हमें भी रोशनी दे!"

उस समय तक बरक़रार चुप्पी दौर ख़त्म हो गया। भीड़ से परंजी ग्रौर चचवानों की पोटलियाँ ग्रौरतों के सिर पर से होती ज़ुराख़ाँ के ताबूत के पास गिरने लगीं। कुछ ही मिनटों में वहाँ एक बड़ा ढेर लग गया। ग्रौरत ग्रौर मर्द चीख पड़े:

"उन्हें जला दो!"

"इस कूड़े को, काले कफ़न को जला दो!"

"हमारे सामने इन्हें जला दो!"

"जलाकर राख कर दो!"

बिना परंजी के नज़ाकत ताबूत के पास दौड़ पड़ी, उसके बालों में लगे सिक्के धूप में चमक रहे थे।

"प्यारी बहनो!" उसकी ग्रावाज़ चीखों से ऊपर गूँज उठी। "मैं बूढ़ी माँ से बात करूँगी।" उसने ज़ुराख़ाँ की माँ के सामने सिर झुकाया जो ग्रनाख़ाँ के पैर के पास उकड़ूँ बैठी थी। "माँ! शोक न करो, कमर सीधी करो। तुम्हारी बेटी हमारी सच्ची बहन-सी थी। ग्रौर हम सब तुम्हारी बेटियाँ हैं। जिस तरह हम उससे प्यार करती थीं, वैसे ही तुमसे प्यार करेंगी ग्रौर हम उसी की तरह रहेंगी!"

इसी बीच ग्रब्दुसमत ने एक जलती मशाल परंजी के ढेर पर डाल दी। बशारत ने एक ग्रौर फेंका। मिट्टी का तेल ऊपर से छिड़का होने के कारण चिथड़ों ग्रौर घोड़े के बालों के ढेर से लपटें उठने लगीं। तड़तड़-फड़फड़ करता बदबूदार काला धुग्राँ सीधा ग्रासमान की ग्रोर उठता चला गया। ग्रधिकाधिक स्लेटी-काले पुलिन्दे ग्राग में झोंके जाते रहे।

खुले चेहरेवाली ग्रौरतें ग्रागे ग्रा गयीं। जिन्हों ने ग्रपनी परंजियाँ नहीं फेंकी थीं, वे पीछे रहीं, लेकिन वे भी दबे पाँव, ग्रपनी गर्दनें लोगों के सिर ग्रौर कन्धों के पीछे ऊँची किये ग्राग को एक नज़र देखने के लिए खड़ी रहीं।

कुछ जो सहानुभूति से ग्रधिक जिज्ञासावश ग्राये थे, चुपचाप भीड़ से ग्रलग हो, ग्रनदेखे खिसक लिये। इक्के-दुक्के धर्मान्ध बूढ़े एकाकी

दल में खड़े थे। आज उन्हें अपनी आवाज़ उठाने की हिम्मत नहीं हुई।

हवा में उड़ती राख को हाथ से हटाते हुए, बुझती आग के पास नईमी अप्रत्याशित रूप से आ पहुँचा। उसके हाथ में छड़ी न थी। वह बोलना चाहता था।

"नागरिको," उसने कर्कश आवाज़ में ठसक के साथ कहना शुरू किया। "हम ने परंजियों को लपटों के हवाले कर दिया है। इसका मतलब है, हमने पुरानी जीवन-पद्धति को लपटों के हवाले कर दिया है!"

सहज प्रेरणावश अनाख़ाँ उसके पास से हट गयी जब कि एर्गश प्रचण्ड क्रोध से बुदबुदाया:

"साँप!"

नईमी ने इर्द-गिर्द देखा, सहमकर पीछे हो गया, खखारा और जल्दी-जल्दी अपनी बात ख़त्म की:

"मैं यह कहूँगा: दुश्मन का नाश हो और आज़ादी व ज्ञान का प्रसार हो!"

जल्दी-जल्दी चलता हुआ वह भीड़ में गुम हो गया।

आग बुझ गयी। स्लेटी राख को हवा उड़ा ले गयी।

लोगों ने अपनी बेटी के ताबूतवाली अरथी उठा ली। अब फिर कंधों से कंधा मिलाकर चलती क़तारों पर मौन छा गया। यद्यपि गहन दुख से उनके सिर झुके और कंधे मुड़े थे, उन लोगों ने इससे पहले कभी भी अपने को एक-दूसरे के इतना क़रीब नहीं महसूस किया था। इससे पहले नैमन्चा में कभी इतने मित्र एक साथ नहीं जमा हुए थे।

जुलूस देर तक नहीं चला। जुराख़ाँ को इंजीनियर द्वारा बतायी गयी जगह में दफ़न कर दिया गया: भावी मिल के हर्म्यमुख के सामने। जब सूर्य पश्चिम में डूबने लगा, लोग ताज़ा क़ब्र के पास से विदा होने लगे।

बाईसवाँ भाग

तुर्सुनाय की हालत में कोई सुधार न था। वह दर्द से तो पीड़ित नहीं लगती थी लेकिन अनाख़ाँ मायूसी से उसकी आवाज़ सुनने का इन्तज़ार कर रही थी।

कभी-कभार तुर्सुनाय उस मखमली-टोपी के साथ हाथ में सूई-धागा लिये माँ की बग़ल में जा बैठती जिस पर वह कशीदा कर रही थी। उसके कशीदा किये फूल उतने ही मनोहर और भाव-प्रवण थे जितने उसके गाये गीत हुआ करते थे। उसे अपनी कशीदाकारी में आनन्द मिलता, लेकिन न जाने क्यों, अचानक हक्का-बक्का-सी वह अपने काम को घूरने लगती, उसकी आँखों में आँसू भर आते। वह अपने आँसू छुपा लेती। अनाख़ाँ भी ऐसा ज़ाहिर करती जैसे उसने कुछ भी न देखा हो। वह तेज़ी से आँगन में चली जाती और फूट-फूटकर रो पड़ती। बच्ची को निःशाब्द सुबकते देखना उसकी शक्ति के बाहर था। शायद वह इसलिए सुबकती हो कि बड़े लोग जो बात अपने आप नहीं समझ पा रहे हों, उसे समझाना चाहती हो, शायद अपने ऊपर आयी विपत्ति के बारे में बताना चाहती हो।

तुर्सुनाय विरले ही बाहर जाती। वह लोगों से कतराती। उसकी सहेलियाँ उससे मिलने आयीं। लेकिन कभी देर तक नहीं ठहरीं। उन्हें उसके सामने हँसते-बोलते रहना ख़राब लगता और वे उसकी ख़ामोशी से भय खातीं। उन्हें डर लगता कि कहीं वे हँस न पड़ें और वह रोने लगे। तुर्सुनाय को उनकी कमी खलती लेकिन अकेली कहीं ज़्यादा राहत महसूस करती प्रतीत होती। यहाँ तक कि बशारत भी बहाने बनाकर घर से बाहर चली जाती। उसे अपनी नन्ही बहन की आँखों में एक अनकहा उलाहना दिखाई देता। "तुम तो हँसती खेलती, मज़बूत और ख़ुश हो जबकि मैं . . ." वे कहती प्रतीत होतीं। बशारत उसे लाड़-प्यार करने की

भी हिम्मत नहीं कर पाती ताकि उसे यह न पता लग जाये कि उसे उसके लिए कितना अफ़सोस है। तुर्सुनाय से यह बात छुपी न थी।

अनाख़ाँ खोयी-खोयी रहती। वह जो भी करती होती, उसके ख़्यालों में तुर्सुनाय ही रहती। वह सहकारिता से इस उम्मीद में जल्दी से जल्दी घर आने का मौक़ा तलाशती कि वहाँ तुर्सुनाय उसका स्वागत चिर-प्रतीक्षित आवाज़ "माँ!" से करेगी।

बशारत निर्माण-स्थल से थकी, धूल से तर, हाथों में खरोंच लगाये लौटती, लेकिन वह ख़बरों से लबालब भरी होती। उसके पास हमेशा इतनी ख़बरें होतीं कि बिना रुके वह रात भर बातें करती रह सकती थी लेकिन वह और माँ तुर्सुनाय के सामने निर्माण-स्थल के कामों के बारे में बातें करने से बचतीं। वह उनकी बातचीत दिलचस्पी से सुनती लेकिन शनैः शनैः उसकी आँखों में पीड़ा भर आती। आम तौर से घर में घण्टों चुप्पी छायी रहती।

सारा दिन अनाख़ाँ और बशारत दिमाग़ लड़ाती रहीं कि कौन-सा अच्छा तरीक़ा होगा जिससे उसे हाजिया के भेजे ख़त से एक ख़बर बतायी जाये। बूढ़े प्रोफ़ेसर के अनुरोध का ताशक़न्द में अच्छा स्वागत हुआ था और अब पूरी उम्मीद थी कि तुर्सुनाय को संगीत विद्यालय में ले लिया जायेगा। लेकिन न जाने यह ख़बर उसे कैसी लगे? उन्होंने उसे यह न बताने का फ़ैसला किया।

तुर्सुनाय को एक पुरानी छोड़ी गुड़िया मिल गयी थी जिसे वह बहुत पहले भूल चुकी थी। उसने उसके लिए पोशाक सिलानी शुरू की। यह उभरी-उभरी शीशे की आँखोंवाली चिथड़े की गुड़िया थी, उसके गाल पके सेब की तरह भरे-भरे और लाल थे। तुर्सुनाय के गाल पीले थे और बारीक नीली नसें उसकी पतली बाँहों में दिखाई देतीं। उसने ख़ुद को गुड़िये में व्यस्त कर लिया, उसे पोशाक पहनायी, शैतान होने के लिए उसे चपत लगायी और निःशब्द अपने होंठ हिलाते हुए ज़ाहिरी तौर पर उसे फटकारा। गुड़िया ने उसपर अपनी आँखें दिखायीं और अपनी एक-सी स्थायी मुस्कान के साथ मुस्कुरा पड़ी। गुड़िया और उसकी नन्हीं "माँ" दोनों एक ही तरह गूँगी थीं।

एक दिन, अपने को और अधिक रोक पाने में असमर्थ अनाख़ाँ ने

उसे बाँहों में भर लिया, और सीने से चिपकाकर निराशा भरी आवाज़ में उससे अनुनय करने लगी:

"मुझसे कुछ कहो – जल्दी से। माँ, कहो। क्या तुम सुन रही हो? म ऽ माँ! चलो, कोशिश करो, मेरी बच्ची, मेरी नन्ही बुलबुल..."

तुर्सुनाय चुप रही, आँखों में भय भरे वह माँ की ओर ताक रही थी, उसके होंठ कठिनाई से काँप रहे थे। माँ के चेहरे के पास फुसफुसाने में उसने अपनी पूरी ताक़त लगा दी। उसने काफ़ी ज़ोर लगाया लेकिन उसके होठों से कोई आवाज़ नहीं निकली। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

अनाख़ाँ ने ख़ुद पर क़ाबू किया। तुर्सुनाय को घुटनों पर बैठाकर उसने उसके आँसू पोंछ दिये।

"बस, बस। कोई बात नहीं। मैं जानती हूँ, अब तुम जल्दी ही बोलने, गाने लगोगी। तुम नये स्कूल में जाओगी, तुम्हारी सहेलियाँ तुम्हें देखकर ख़ुश हो जायेंगी," अनाख़ाँ ने एक भी शब्द पर यक़ीन न करते हुए कहा।

लेकिन तुर्सुनाय ने उसकी बातें उस विश्वास के साथ सुनीं जो सिर्फ़ एक माँ ही दिला सकती थी।

वह हमेशा अपनी बहन से ज़्यादा भावुक रही थी। वह अपनी माँ का मन जानना सीख गयी थी। इसके कारण अनाख़ाँ को कभी-कभी झुँझलाहट भी होती क्योंकि उसे सावधान रहना पड़ता: लड़की बड़ों की चिन्ताएँ और परेशानियाँ दिल में बैठा लेती थी। अब उसे कैसा महसूस होता होगा? उसके नन्हे से टूटे गायक दिल पर क्या बीत रहा होगा?

जिस दिन ज़ुराख़ाँ की हत्या हुई और दूसरे दिन जब उसे दफ़न किया गया, तुर्सुनाय अपनी माँ की ओर ऐसी परेशान निगाह से ताक रही थी कि अनाख़ाँ को उसकी ओर पलटकर देखने की हिम्मत न हुई थी। तुर्सुनाय घर में चारों ओर उसके पीछे-पीछे मँडराती रही, उसकी आँखों में झाँकती रही। जब अपना चेहरा छुपाने के लिए उसकी माँ ने अपनी बाँहें उसके गले में डाल दीं, तुर्सुनाय ने धीरे से ख़ुद को उसकी बाँहों से छुड़ा लिया। अनाख़ाँ मौन रही लेकिन तुर्सुनाय की निगाह अधिकाधिक आग्रहपूर्ण, याचनापूर्ण होती गयीं जैसे कह रही हों: "तुम

मौन क्यों हो? तुम छुपा क्या रही हो? मैं महसूस कर सकती हूँ, कुछ बहुत बुरी घटना हो गयी है।"

अनाख़ाँ को लगता, वह उससे झूठ नहीं बोल सकती। लेकिन उसे सच-सच बता देने की भी हिम्मत न होती।

अनाख़ाँ के लिए वे भयानक रातें थीं। थोड़ी-थोड़ी देर के लिए वह सो जाती, फिर इस तरह जाग पड़ती जैसे किसी ने उसे ज़ोर का धक्का दे दिया हो। अधखुली आँखों से वह तुर्सुनाय को देखती, उसकी साँसों की आवाज़ सुनती। लगता वह शान्तिपूर्वक साँस ले रही है। दूसरी रात माँ ने महसूस किया, लड़की सोयी नहीं है। वे एक-दूसरे की निगरानी कर रही थीं।

सुबह में अनाख़ाँ ने उसे बताया, सहकारिता वर्कशॉप में हवा का झोंका लग जाने से उसे ठंड लग गयी है। उसे यह बताकर खेद हुआ क्योंकि इससे हालत और भी ख़राब हो गयी। लड़की ने ऐसा जताया जैसे उसे उसकी बात का यक़ीन आ गया हो...

यह देखकर कि लड़की जानती है, उसे बहलाया जा रहा है, अनाख़ाँ के दिल को भय ने जकड़ लिया। वह उसकी कैसे सहायता करे?

तुर्सुनाय घर में आनेवाले हर किसी को तलाश और सन्देह भरी नज़रों से देखती। यफ़ीम दनीलोविच उनके यहाँ एक बार आये। उन्होंने तुर्सुनाय को अपने सामने बैठाकर बताना शुरू किया कि किस तरह क़ब्रगाह के पासवाली बंजर ज़मीन का रूपान्तरण हो गया है और किस तरह "...फ़ोर-मैन" बशारत परियोजना में अपना नाम प्रसिद्ध कर रही है। लेकिन तुर्सुनाय हठपूर्वक उनकी नाक के बाँसे की ओर देखती, सचाई बताये जाने का इन्तज़ार करती रही। उसकी स्थिर दृष्टि ने यफ़ीम दनीलोविच को परेशान कर दिया।

अपनी बेटी के पीछे बैठी अनाख़ाँ ने होंठों पर अंगुली रखकर निराशा भरी मुद्रा में हाथ फैला दिये। तुर्सुनाय तत्क्षण ही पलट पड़ी और माँ की ओर खटके से देखा।

देर गये, एक शाम जब अनाख़ाँ उसे बिछावन पर सुला रही थी, दोब्रोख़ोतोव अप्रत्याशित रूप से आ पहुँचा। उसके साथ घनी दाढ़ीवाला एक आदमी था।

"माँ, यह हमारे इंजीनियर सेर्गेय ल्वोविच हैं," बशारत ने दोब्रोखोतोब का परिचय कराते हुए कहा।

"और यह मेरे एक पुराने दोस्त हैं, विकेन्ती फ़्योदोरोविच," उसने नमस्कार करते हुए कहा। "यह एक बहुत अच्छे विशेषज्ञ हैं – स्नायु रोग विशेषज्ञ, आपकी बेटी को इन्हीं की जरूरत है।"

बहुत ख़ुश होते हुए अनाख़ाँ ने आगन्तुकों का स्वागत किया और उनसे बैठने का अनुरोध किया। डॉक्टर ने इशारे से उसे मना कर दिया।

"नहीं, आप हमें माफ़ करेंगी, हम बैठेंगे नहीं," उसने कारोबारी, शान्त लहजे में कहा – ज़ाहिरी तौर पर इस तरह कि तुर्सुनाय सुन ले। उसने कमरे में आते ही तुर्सुनाय को देख लिया था। "आम तौर से मैं ज्यादा बैठना पसन्द नहीं करता। मैं लोगों का इलाज जल्दी से, आसानी से और बिना दर्द पहुँचाये करता हूँ। रोगी को अहसास भी न हो पाता कि वह ठीक कैसे हो गया। और फिर मैं आपको एक राज़ की बात बताऊँगा। जब मैं बैठ जाता हूँ, मेरी दाढ़ी तेज़ी से बढ़ने लगती है।" वह कुछ क्षणों के लिए बैठ गया। "देखा कैसे बढ़ती है? देखा!"

अनाख़ाँ हँस पड़ी, बशारत चुपके से खी-खीकर उठी।

तुर्सुनाय की आँखें डॉक्टर पर टिकी थीं। उनमें पहले से कहीं ज्यादा चमक और दिलचस्पी थी।

"सच तो यह है," डॉक्टर ने उठते हुए आगे कहा, "मैं उन लोगों का इलाज करना पसन्द करता हूँ जो लम्बे अर्से से बीमार हों और उन्हें कोई दूसरा ठीक नहीं कर पाया हो। यहाँ, इस छोटी-सी पुस्तिका को देखिये।" अपनी जेब से उसने एक सुनहले-किनारियोंवाली चमड़े की जिल्द लगी मोटी-सी नोटबुक निकाली। "जिन लोगों को मैंने ठीक किया है, उन सब के नाम इस में हैं। हर पृष्ठ पर दस नाम हैं। और इसमें सौ पृष्ठ हैं। गिन लीजिए, कितने लोगों को मैंने ठीक किया है।"

तुर्सुनाय लजाते-लजाते अपने बिस्तरे पर उठ गयी और इस असाधारण डॉक्टर की नोटबुक को देखा। उसके लहजे से दिखाई दे रहा था, वह गिन रही है। जब उसने गिनना ख़त्म कर लिया, डॉक्टर की ओर एक सच्ची श्रद्धा भरी दृष्टि डाली।

"हाँ तो अब," डॉक्टर ने कहा, "मैं आपके रोगी का पहले नाम लिखूंगा फिर उसे ठीक करूँगा। उसका पहला नाम?"

"तुर्सुनाय!" बशारत ने जवाब दिया।

"उपनाम?"

"साबीरोवा!"

"सा-बी-रो-वा," डॉक्टर ने लिखते हुए दुहराया। "एक मिनट! क्या इसके पिता साबीरोव नहीं थे–क्रान्ति के एक नायक, जिन्होंने सारे दुश्मनों को नाकों चने चबवा दिया था? मैंने उनके बारे में सुना है। तो यह उनकी बेटी है जो बीमार है? ऐसी हालत में, हम रुके किस लिए हैं? जल्दी से मुझे रोगी को दिखाइये!"

"वह यहाँ है, डॉक्टर, बिस्तरे पर।"

डॉक्टर ने उस पर एक सरसरी निगाह डाली और भर्त्सनापूर्वक अपना सिर हिलाते हुए बशारत की ओर मुड़ा।

"क्या यही तुर्सुनाय साबीरोवा है? मुझे लगता है, इसका नाम अपनी नोटबुक में नहीं लिखना चाहिए था।"

"नहीं क्यों?"

"क्योंकि इसे कोई बीमारी नहीं!" डॉक्टर ने लगभग गुस्से से कहा। "मैं बीमार लोगों का इलाज करना पसन्द करता हूँ लेकिन यह तो एकदम बीमार नहीं। आपने मुझे धोखा क्यों दिया?"

बशारत और उसकी माँ ने एक-दूसरे की ओर परेशानी से देखा।

"डॉक्टर, ज़रा उसे ठीक से देख लीजिए।"

"मेरे देखने के लिए है क्या? मैं एक नज़र में देख सकता हूँ! निस्सन्देह, यह बुरी तरह डर गयी थी। मैं यह देख सकता हूँ। जब मैं छोटा था, मैं भी बुरी तरह डर गया था। लेकिन यह क्या कोई बीमारी है? जब-तब हर आदमी डर जाता है।"

डॉक्टर ने अपनी नोटबुक जेब में रख ली। तुर्सुनाय उसकी हरेक हरकत अपने को क़सूरवार मानते हुए देख रही थी। आदतन, जब दाढ़ीवाला अजनबी घर में घुसा तो वह डर गयी थी, उसकी ओर वह आँखों के कोनों से देख रही थी। कोई बात नहीं, वह बीमार नहीं तो न सही। बीमार न होने के लिए वह शर्मिन्दा थी तो भी सिर्फ़ इतना चाहती थी, यह आदमी कहीं चला न जाये।

"विकेन्ती फ़्योदोरोविच," दोब्रोख़ोतोव ने अनुरोध किया, "आप यहाँ आ ही गये हैं तो देख लीजिए, आख़िर इसके साथ गड़बड़ी क्या है। कृपया देख लीजिए न।"

"मैं आपको बता चुका हूँ, कोई गड़बड़ी नहीं। क्यों, ऐसा नहीं? सिर्फ़ उसे बात करने में दिक़्क़त हो रही है। वह भूल गयी है, उसे अपनी जीभ का इस्तेमाल करना चाहिए।"

तुर्सुनाय के होंठ एक-दूसरे से थोड़ा जुदा हुए: उसने अपनी जीभ हिलाई।

"अच्छा, ठीक है! अब यहाँ आ ही गया हूँ और आप कह रहे हैं तो एक नज़र डाल लूँगा। बस आप लोगों के घेरे रहने से उसे आराम महसूस नहीं होगा। और आप लोगों के कारण मुझे भी दिक़्क़त पेश आयेगी। बहुत अच्छा होगा, अगर आप हमें अकेले छोड़ दें। मैं लोगों का इलाज उसी ढंग से करना पसन्द करता हूँ जो उन्हें आरामदेह महसूस हो। कृपया हमें छोड़ दीजिए और जब तक हम न बुलायें, बाहर इन्तज़ार कीजिए।"

अनाख़ाँ, बशारत और दोब्रोख़ोतोव बाहर बरामदे में चले गये।

दोब्रोख़ोतोव ने अपनी नयी क़मीज़ का कॉलर ठीक किया फिर बहुत कुछ पुराने ढंग के शिष्टाचार के साथ अनाख़ाँ को सम्बोधित किया:

"आपकी मैं अकृत्रिम प्रशंसा व्यक्त करने की आज्ञा चाहूँगा। मैंने आपके बारे में सुना है और शव-यात्रा के दौरान आपके भाषण से मैं मुग्ध हो गया था।"

"ओह, कृपया इसके बारे में बातें ने कीजिए," अनाख़ाँ ने चिन्तापूर्वक डॉक्टर की अस्पष्ट सुनाई दे रही आवाज़ सुनते हुए कहा।

"लेकिन क्या ऐसे व्यक्ति को भूला जा सकता है?" दोब्रोख़ोतोव ने भावावेशपूर्वक विरोध किया। "क्या आप उन्हें भूल जाना चाहती हैं? आप ख़ुद भी तो बहुत कुछ उन्हीं जैसी हैं।"

अनाख़ाँ ने खिड़की की ओर एक क़दम बढ़ाया। दोब्रोख़ोतोव ने हल्के से उसकी कोहनी छूते हुए उसे रोक दिया।

"कृपया चिन्ता न करें। वह एक अच्छे डॉक्टर, एक अच्छे आदमी हैं। अगर उनमें यह ख़ूबी न होती, मैं तो शायद अकेलेपन से पागल ही हो गया होता। उन जैसे दूसरे व्यक्ति जिनसे मेरी मुलाक़ात हुई, वह

जुराख़ाँ थी। उनके बारे में बातें करने से आपको दुख होता है। मैं समझता हूँ।"

"धन्यवाद, कॉमरेड इंजीनियर," अनाख़ाँ ने कहा। "शायद आपके मित्र मेरी बेटी को बचा लेंगे। मैं नहीं जानती आपका कैसे शुक्रिया करूँ। मैंने भी आपके बारे में सुना है।"

"आपने सुना है? यह शायद बहुत ख़ुशी की बात नहीं," सेर्गेय ल्वोविच ने व्यंग्यपूर्वक मुस्कुराते हुए कहा। "मैं पुरानी दुनिया का आदमी हूँ। लेकिन मेरा विश्वास कीजिए, मैं बहुत कृतज्ञ हूँ, स्पष्ट रूप से ख़ुश हूँ कि ज़िन्दगी मुझे जुराख़ाँ, आप और यफ़ीम दनीलोविच जैसे लोगों के संपर्क में ले आयी।"

इंजीनियर की स्पष्टवादिता, उसकी निःसंगता और मैत्रीपूर्ण लहजे ने अनाख़ाँ को विस्मित और प्रभावित कर दिया।

"अब भी एर्गश आपके साथ बुरा व्यवहार करता है, क्यों?" उसने पूछा।

"नहीं, आपको ऐसा नहीं सोचना चाहिए!" इंजीनियर ने तत्परता से जवाब दिया। "जानती हैं जो आपने सोचा, वैसा ही मैंने भी महसूस किया था। यही बात मुझे सबसे ज़्यादा चोट पहुँचाती है। एर्गश सुल्तानोव नौजवान है लेकिन वह आत्माभिमानी और दृढ़ इच्छा शक्तिवाला है। व्यक्तिगत रूप से मैं एक निहायत बेकार आदमी हूँ और यही कारण है कि मैं वैसे लोगों के प्रति आकृष्ट हूँ। और फिर, उसके पास दिमाग़ है और वह बहुत क़ाबिल है। जब वह तैश में नहीं होता, वह तेज़ी से बातों को समझता है। मैं इसे सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण मानता हूँ। सच तो यह है, आपकी बड़ी बेटी भी वैसी ही है। वह बहुत कर्मठ है और अत्यधिक प्रभावशाली हो चुकी है, मेरा ख़्याल है, यह आपके प्रशिक्षण का परिणाम है।"

"आप बहुत सहृदय व्यक्ति हैं," अनाख़ाँ ने मुस्कुराकर बशारत की ओर देखते हुए कहा जिसका चेहरा सुर्ख़ हो उठा था। "और हमें यहाँ आपकी ज़रूरत है।"

इस बार दोब्रोख़ोतोव का चेहरा सुर्ख़ हो गया था।

"ऐसा सोचकर आप मुझे बहुत सम्मानित कर रही हैं।" उसने काँपती आवाज़ में कहा। "और आपकी बेटी भी मुझ पर बहुत कृपालु हैं।"

"मुझे ख़ुशी है कि आपको उसके प्रति कोई शिकायत नहीं," अनाख़ाँ ने जवाब दिया।

कमरे में क़दमों की आहट हुई। दरवाज़े पर डॉक्टर प्रकट हुआ। अनाख़ाँ उसकी ओर दौड़ पड़ी।

"शान्ति से, शान्ति से," डॉक्टर ने सन्तोषपूर्वक अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा। "आप अपनी बेटी के पास जा सकती हैं लेकिन जाने से पहले कृपया शान्त हो लीजिए। आपने सुना, मैंने उससे किस तरह बात की? आपको भी उसके सामने उसी तरह का व्यवहार करना चाहिए। आइये, आइये, कोशिश कीजिए—आख़िर आप भी सयानी हैं!"

"लेकिन डॉक्टर, आप मुझे कुछ तो बता सकते हैं? वह कैसी है? मुझसे कुछ भी न छुपाइये।"

डॉक्टर शान्तिपूर्वक हँस पड़ा।

"आइये, हम एक साथ अन्दर चलेंगे।"

अनाख़ाँ कमरे में गयी।

आँखों में एक साथ ख़ुशी और भय भरे हुए तुर्सुनाय ने माँ की ओर अपने हाथ फैला दिये।

"मम..." उसके होठों से निकला जो एक आर्तनाद-सा प्रतीत हुआ।

अनाख़ाँ डॉक्टर की सलाह का पालन नहीं कर पायी। आँखों में आँसू भरे और क्या कर रही है, यह महसूस किये बिना वह लड़की के पास दौड़ पड़ी और उसकी आँखों, हाथों, बाँहों व घुटनों को चूमने लगी। बशारत उन दोनों को चूमते रो पड़ी।

दोब्रोख़ोतोव और डॉक्टर बिना एक-दूसरे की ओर देखे, चुपचाप दरवाज़े के पास खड़े रहे।

वे दो बार और तुर्सुनाय को देखने आये। दोनों दिन तुर्सुनाय ने अपनी माँ को उसी छोटे-से शब्द से बुलाया और उससे दुबक गयी।

"अब तुम्हें मेरी ज़रूरत नहीं," डॉक्टर ने तीसरी बार उससे विदा लेते हुए दृढ़ता से कहा। "मेरा ख़्याल है, तुम धीरे-धीरे बोलने लगोगी। तुम ख़ुद क्या सोचती हो?"

तुर्सुनाय पल भर के लिए सोचती रही फिर अक़स्मात अपना सिर हिलाया और बोली:

"हाँ।"

"तो हमारे बीच समझौता हो गया न? वादा करती हो?"

"हाँ।" तुर्सुनाय ने फिर कहा।

"अच्छी लड़की। अलविदा।"

"मम-मी," तुर्सुनाय ने डॉक्टर और इंजीनियर के विदा हो जाने के बाद शब्द को तोड़-तोड़कर कहा। शब्दों को इस तरह अलग-अलग कहना, उसकी बोली की विशेषता बन गया। "ब-शार। चाची ज़ु-रा-ख़ाँ कहाँ हैं?"

* * *

सूर्य पश्चिम में डूब रहा था। मीनारों की लम्बी पड़ती छाया अध-टूटी होकर बेडौल अर्द्ध जर्जर दीवारों पर पड़ रही थी। बाज़ार सूना, उदास और गन्दा था। ख़रबूज़ों के छिलकों पर मक्खियाँ झुंड लगाये थीं। गोश्त की दुकानों के पास भिड़ें भिन-भिना रही थीं।

नईमी दो दुकानों के बीच एक बदबूदार जगह पर उकड़ूं बैठा था।

एक घण्टा पहले उसने मलबे में एक रिवाल्वर गाड़ दिया था। यह एक रूमाल में लिपटा था। लपेटने से पहले नईमी ने अल्कोहल से उसे धो-पोंछ लिया था और नंगे हाथों इसे स्पर्श न करने की चौकसी रखी। रूमाल सिल्क का था। नईमी ने बड़ी मेहनत से ख़ुद इस पर अरबी अक्षरों में सम्मानित क़ुद्रतुल्लाह ख़्वाजा का नाम काढ़ा था। अगर रिवाल्वर पा लिया जाये तो उसके लिए अच्छा बचाव हो जायेगा।

अंधेरा होने तक वह इस छुपने की जगह पर ठहरा रहा। बदबू के मारे उसकी आँखों से पानी बहने लगा था, उसकी नाक में लगातार ज़ोरदार सुरसुरी हो रही थी। छींक रोकने के लिए वह नाक मले जा रहा था। हर आहट पर वह पत्ते की तरह काँप उठता।

ज़ुराख़ाँ की शवयात्रा का भयानक दृश्य उसके दिमाग़ से नहीं निकल पा रहा था। निस्सन्देह चाय-विक्रेता को मामला के इस तरह रुख़ पकड़ लेने की उम्मीद न थी। किसी को भी ऐसी उम्मीद न होती। एर्गश का छोटा-सा शब्द "साँप!" नईमी के कानों में गूंज रहा था। बेशक, यह

संयोग मात्र था। नहीं तो भिखमंगे बुनकर का वह बच्चा, नईमी के मुश्के बाँध देने से हिचकता नहीं। तो भी नईमी रातों में अपने घर से बाहर रहता। वह दोस्तों या दुश्मनों, दोनों से दूर रहता। कौन कह सकता है, चाय-विक्रेता दिमाग़ी शान्ति के लिए वही आज़माया तरीक़ा न इस्ते-माल करे जो जादूगरनी के मामले में इतना कारगर साबित हुआ था?

एकदम अंधेरा होने तक इन्तज़ार करने के बाद नईमी अपने छुपने की जगह से निकला और चोरी-छिपे रेलवे-स्टेशन की ओर चल पड़ा। अंधेरी रात थी लेकिन शिक्षक ने पक्के तौर पर सुनकर निश्चित कर लिया: कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा।

फ़रग़ाना जानेवाली गाड़ी चल पड़ी थी जब नईमी एक डिब्बे की सीढ़ियों पर उछलकर जा चढ़ा। स्टेशन का प्लेट फ़ार्म दूर-दूर छूटता गया। गाड़ी रेलवे सिग्नल से आगे बढ़ गयी। नईमी ने अपनी पीठ सीधी की।

वह शाहिमर्दान जा रहा था। उसे जुराख़ाँ की क़ब्र से जितना संभव हो, उतनी दूर चला जाना था...
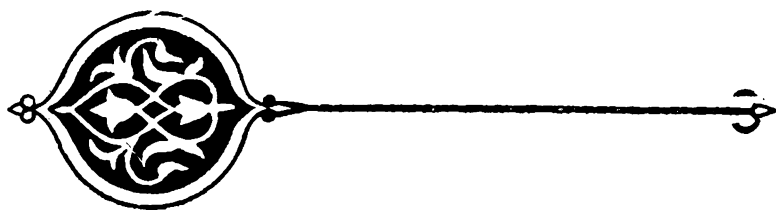
तेईसवाँ भाग

एर्गश सुल्तानोव शहर में व्यापक रूप से मशहूर हो गया। टेलीफ़ोन पर उसकी आवाज़ न सिर्फ़ नगर पार्टी समिति और नगर सोवियत में ही बल्कि सहकारिता कार्यालयों, रेलवे स्टेशन और राजकीय अभियोक्ता कार्यालय में भी पहचानी जाती।

जिस क्षण से सोवनारख़ोज़ में टेलीफ़ोन लगा था "बनातधारी" के कानों को चैन न थी। एर्गश स्थानीय आय का आधा हथिया भी चुका था लेकिन प्रति दिन टेलीफ़ोन करता:

"धन के बारे में अन्तिम समाचार क्या है? उद्योग ब्यूरो से कोई समाचार आया?"

"बनातधारी" अपने टेलीफ़ोन से नफ़रत करने लगा। वह एर्गश को समझ नहीं पाता। जब उसका तक़ाज़ा सफलतापूर्वक पूरा हो जाता, वह मज़ाक़ करता और "बनातधारी" के साथ एक पुराने मित्र जैसा व्यवहार करता:

"तुम्हारी लम्बी उम्र हो, मैं अपनी बन्दूक के कुन्दे की सौगंध खाता हूँ, तुमने फ़ौरन ही ऐसा कर दिया होता..."

लेकिन जैसे ही कोई रुकावट आती और एर्गश "कल" शब्द सुनता, वह बिगड़ उठता:

"तुम कोई की तरह जम गये हो। नौकरशाहो। हम तुम्हें तुम्हारी मुलायमे आराम कुर्सियों से निकाल बाहर करेंगे!"

हर बार उसकी धमकियाँ इतनी गंभीर और ज़ोरदार होतीं, "बनातधारी" किसी भी क्षण उम्मीद करने लगता कि एर्गश उसे "निकाल बाहर" करना शुरू कर देगा।

लेकिन सच तो यह था कि मिल परियोजना कार्यालय में सोवनारख़ोज़ के मुक़ाबले कहीं ज़्यादा गद्देदार मेज़-कुर्सियाँ थीं। कार्यालय नैमन्चा में क़ुद्रतुल्लाह की हवेली में था।

जब बाय शहर छोड़कर भागा, मकान बेटे को सौंप गया लेकिन नुस्रतुल्लाह ने अप्रत्याशित रूप से इसे मिल परियोजना को दे दिया या जैसा कि नैमन्चा की बूढ़ी औरतें कहा करतीं, एर्गश को "उपहारस्वरूप" भेंट कर दिया। बाय के विलासितापूर्ण बैठकख़ाने को एर्गश ने अपने कार्यालय के रूप में बदल दिया। उसने अपने लिए मेज़ सोवनारख़ोज़ से प्राप्त की जिस पर हरा कपड़ा लगा था। तलैये के पास नुस्रतुल्लाह का अविवाहितों का जो मकान था, उसे हिसाब-किताब विभाग को दे दिया। सवेरे से रात तक वहाँ गणनाफलकों के खट-खट की आवाज़ सुनाई देती रहती। बग़ीचे की ओर खुलनेवाली खिड़की के ऊपर निर्माण परियोजना का सर्वाधिक लोकप्रिय साइनबोर्ड टँगा था: "ख़ज़ांची।"

ख़ूबसूरत नक़्क़ाशीवाले दरवाज़े के पास काग़ज़ पर छपी सूचनाएँ चिपकी थीं। वे सब एक ही शब्द से शुरू होतीं: "ज़रूरत है..." सूचनापट्ट के सामने हमेशा लोगों की भीड़ लगी रहती जिनमें सर्वाधिक वैसे अनपढ़

लोग होते जो किसी ऐसे आदमी की प्रतीक्षा करते रहते जो पढ़ सके। जब उन की मदद करनेवाला कोई सामने नहीं होता, वे दरवाज़े से अन्दर चले जाते और "ख़ज़ांची" के नामपट्टवाली खिड़की खटखटाते।

परियोजना-चीफ़ के कार्यालय से वे एक ग़ुस्से से मिली उत्साहपूर्ण आवाज़ सुनते:

"हलो! हलो! भाड़ में जाय!"

हाथ से बनायी एक मोटी सिगरेट पीता एर्गश बेचैनी से चहलक़दमी कर रहा था। थोड़ी-थोड़ी देर में वह टेलीफ़ोन के बक्से के पास ठहराता और हेण्डल को तेज़ी से घुमा देता।

"हलो! तमारा! क्या तुम हो, तमारा? पहरेदार के झुनझुने की क़सम, क्या तुम जिन्दा हो, सही-सलामत हो? आपके इस टेलीफ़ोन का इन्तज़ार करते, घुमाते-घुमाते तो मेरी मूँछें बढ़ आयीं। क्या? भाड़ में जाने दो इसे। हलो! हलो! तमारा! तुम कहाँ गुम हो जाती हो? सुनो, तुम्हारे प्रति हमारा प्यार दिन-ब-दिन बढ़ता ही जायेगा। विश्वास करो, इवानोवो-वोज़्नेसेंस्क से माल चल चुका। हम अमीर दुल्हे हैं, मैं तुम्हें कह सकता हूँ। कारवाँ का ताँता हमारे विवाहोपहार लेकर आ रहा है—पाँच गाड़ियाँ, तीन प्लैटफ़ॉर्म। ऐसी हालत में—समारा दुबारा लगा दो, तमारा। मेरा मतलब है, माफ़ करना, तमारा, समारा से टेलीफ़ोन मिला दो।"

रिसीवर पर हँसी की आवाज़ सुनाई देती। एर्गश भी जी भर हँसता। माल आ रहे थे। मिल के लिए साज़-सामान आ रहा था। पूरे दिन तमारा सुदूरवर्ती रेलवे स्टेशन समारा से एर्गश के लिए टेलीफ़ोन मिलाने की कोशिश करती रहती थी। वह उसे उत्साहित करता रहता। "तमारा, हमारी परियोजना जितनी तेज़ी से आगे बढ़ेगी, उतना ही तुमसे अधिक हम प्यार करेंगे। हमें अभी भी सीमेंट प्राप्त करना है। और तुम जानती हो क्या? एक वास्तविक पेंच काटने की खराद। नयनाभिराम। ख़ुदा की मेहरबानी से हम मिल चालू कर देंगे और तुम्हें फूलदार सर्पिन्का के पहले तीन गज़ मिलेंगे। तुम अपने लिए फ़ैशनेबुल तंग परिधान बना लेना... क्या? ओहो! मैंने तो सोचा ही नहीं था, तुम इतनी लम्बी हो। मामला पेचीदा हो गया। अच्छा कोई बात नहीं, तुम्हें साढ़े तीन गज़ मिल जाएंगे, ठीक? और तुम प्यार के बारे में इतना

जानती हो फिर मेरे दिल का कबाब न बनाओ तमाराजान। समारा से मेरी लाइन मिला दो... "

आख़िर लाइन मिल गयी। सब कुछ ठीक-ठाक था। माल स्टेशन से आगे बढ़ चुके थे। इसने एर्गश के सामने एक नयी समस्या पैदा कर दी। वह उनको वसूल करने के लिए तैयार न था। तख़्तियों, सीमेंट, शीशा और लोहे से लदे दो डिब्बे रेलवे मालगोदामों में बिना वसूली पड़े थे। परिवहन-साधनों की कमी थी लेकिन चीफ़ की परेशानी यह थी कि अग्रप्रेषी एजेंट बेकार था। वह ख़ुशामदी और निरुत्साह था। वह चालान इस तरह पेश करता जैसे उसके व्यक्तिगत प्रार्थना-पत्र हों। वह लाल टोपी पहने रेलवे अधिकारी के सामने गिड़गिड़ाता। बेचारे को इससे पहले इतने बड़े पैमाने पर, कुछ भी करने का मौक़ा कभी मिला ही नहीं था। इसके इलावा, वर्षों से वह जैसे-तैसे काम चलाये जा रहा था—वह इस काम के लिए थोड़ा ज़्यादा बूढ़ा हो गया था। कोई काम की बात थी तो सिर्फ़ यह कि वह पढ़ा-लिखा था और हस्ताक्षर ख़ूबसूरती से कर सकता था। हाँ, अगर कोई उसका सहायक, नौजवान और ज़्यादा फुर्तीला आदमी उसके लिए मिल जाये तो भले ही... "

एर्गश अपने दिमाग़ में एक-एक करके सभी बढ़ईयों, राजमिस्तरियों, रंगसाज़ों और यहाँ तक कि नौसिखुवों को भी देख गया। उनमें से एक भी इस काम के लिए तनिक भी उपयुक्त न था, एक-आध अपवादों सहित वे सब निरक्षर थे।

एर्गश निर्माण-स्थल पर गया।

पहले की बंजर ज़मीन और शेर के टीले को पहचानना मुश्किल था। कोई सरकण्डा, कूड़ा, पट्टियों की लीक या ढूह नहीं दिखाई देता। स्थल एकदम साफ़-चौरस दिखाई दे रहा था। टीले की जगह अब मिल की नींव की रेखाएँ खिंची थीं। चौरस की गयी नर्म ज़मीन पर खुदाई करने-वाले चींटियों की तरह झुंड लगाये थे। सफ़ेद तख़्तियाँ सावधानी से ढेर में लगायी थीं। लाल ईंटों के ढेर धूप में लहकते प्रतीत होते। चूना, बालू, सीमेंट, और बजरियों के ढेर नीलाभ, पीले, गहरे भूरे व भूरे शंकुओं के रूप में चस्पाँ हो रहे थे। इंजीनियर ने हर सामग्री के लिए जगह निश्चित कर दी थी जिससे उन्हें चार पहियोंवाली गाड़ियों या ठेले या कुदाल से आसानी से लाया जा सके।

तारकोल से रंगे नमदों की छतवाले ओसारे के नीचे वर्कशॉप थे। भट्ठियों में आग धधक रही थी और पसीने से दमकते लुहार भाथी चला रहे थे या हथौड़े खनका रहे थे। फ़िटर शिकंजों पर झुके थे। बढ़ई अपनी बेंचों की बग़ल में घुटने-घुटने भर लकड़ी के छीलन में खड़े लकड़ी चिकना कर रहे थे। औरतों ने एक बड़ी डेगची के नीचे आग जला रखी थी और लकड़ी के छीलन उस में डाल रही थीं। हर जगह समुचित व्यवस्था थी। इंजीनियर ने यहाँ भी अपने ढंग से काम की व्यवस्था की थी – उसने काम अपने हाथ में ले लिया था और मात्र नक़्शे उसके मार्ग-दर्शक थे।

बिना हो-हल्ले के काम आगे बढ़ रहा था। एर्गश ने सिर्फ़ एक जगह, पत्थर का काम करनेवालों में ज़ोर-ज़ोर से शोर मचता महसूस किया। उनमें से दो अपने हाथ हिला रहे थे और ज़ोर-ज़ोर से बहस कर रहे थे। वे दोनों थे, सुखट्टा मख़सूम और धूल से सनी दाढ़ीवाला एक बूढ़ा, हट्टा-कट्टा मज़दूर। नैमन्चा में वह मामाजान भारिक के नाम से जाना जाता था। झगड़ा बढ़ गया था। एर्गश ने उनकी ओर क़दम बढ़ाया।

"तुम कल एकदम ही नहीं आये," मामाजान चीखा, "और पूरा दिन बर्बाद हो गया। आज उपदेशक की तरह बकबक करने में पूरे दो घंटे बिता चुके हो। 'वफ़ादारी', 'मुहब्बत'... तुम्हारी वफ़ादारी और मुहब्बत कौन चाहता है?"

"ज़ाहिर है, यह बात तुम्हारी समझ से ऊपर है," मख़सूम ने जवाब दिया।

"ऊपर है या नीचे, मुझे इसकी कोई परवाह नहीं। मैं बस इतना चाहता हूँ कि तुम काम करो। मैं तो मर जाऊँगा, तुम्हारे जैसे भागीदार के साथ तो मैं बर्बाद हो जाऊँगा! सुखट्टे बधिये!"

मख़सूम ने अपनी लाल, बरौनी-विहीन आँखें सिकोड़ लीं और नुकीले टेंटुएँवाली अपनी पतली, झुर्रीदार गर्दन फैला ली। उसकी गर्दन टरकी मुर्गे-सी अकड़ गयी।

"तुम्हें मेरी देख-रेख के लिए किसने नियुक्त किया है? अब कोई नाज़िर नहीं! वह ज़माना लद गया!"

"मैं नाज़िर नहीं! तुम्हीं भेदिये कुत्ते रहे हो। जब कुद्रतुल्लाह के टुकड़ों पर पलते थे तब तुम्हीं बहुत करते थे!"

"अपनी जुबान संभालो, मामाजान। मैं बाय के यहाँ ग़ुलाम था। बाय के चरणों में मेरे जीवन के तीस वर्ष बर्बाद हो गये। अब मैं और सब की तरह आज़ाद हूँ! भूतपूर्व ग़ुलामों के मौजमज़ा का समय आ गया है। मेरी जुबान आज़ाद है और हाथ पैर भी। मुझ पर दबाव डालने से तुम्हें कोई मतलब नहीं!"

"भाड़ में जाओ – जब तक चमड़ी साबित बची है, यहाँ से भाग जाओ। मैं अकेले कर लूँगा! या मैं बाय के बेटे को अपना भागीदार बना लूँगा – वह भी तुम से अच्छा है। हालाँकि नया मुल्ला है, उसने बजरी का पूरा पहाड़ ही आटे की तरह उठाकर रख दिया है।"

नुस्रतुल्लाह पास ही में काम कर रहा था। सीने से अपना चोग़ा खोले और खुले दाहिने हाथ से वह बजरी को बेलचे से उठा रहा था। हर खेप में जितना संभव हो, वह अपना बेलचा पूरा भर लेता। सुखट्टा मख़सूम ने उस पर एक द्वेषपूर्ण दृष्टि डाली और बड़बड़ाया फिर मामाजान भारिक पर चीखा:

"तो तुम मेरी तुलना नये मुल्ला से कर रहे हो। मुझ से – जो बाय के अत्याचार का शिकार रहा? अगर तुमने सावधानी नहीं बरती तो मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ राजनीतिक कार्रवाई शुरू कर दूँगा।"

मामाजान सहम गया।

"ज़रा देखो, कहीं तुम ख़ुद ही न फँस जाओ। तुम ख़ुद काम नहीं करते और दूसरों के काम में बाधा डालते हो।"

"हम आज़ाद कर दिये गये हैं। जब मेरी मर्ज़ी होगी, मैं काम करूँगा! मेरा कोई मालिक नहीं। वह ज़माना लद गया! या तुम आज़ादी के ख़िलाफ़ हो? क्यों? बोलो!"

मामाजान चुप हो गया और मख़सूम उद्दंडतापूर्वक उसके सामने बालू पर अपने घुटनों पर हाथ रखकर बैठ गया।

एक मज़बूत हाथ ने मख़सूम की गर्दन पीछे से जकड़कर, कठोरता से उसे ज़मीन पर से उठा लिया। एर्गश उसके सामने खड़ा था।

"क्या तुमने कहा, कोई मालिक नहीं? तुम चाहते हो, दूसरे काम करते रहें और तुम बक़वास करते रहो? तो यह तुम्हीं हो जिसके लिए हमने और हमारे पिताओं ने आज़ादी हासिल की? राजनीतिक कार्रवाई से डरानेवाले तुम कौन हो? हमारी तरह एक मज़दूर?"

"मैं-मैं-आप स्वस्थ रहें। आप कैसे हैं, मालिक? मेरा मतलब है, कॉमरेड मालिक," सुखट्टा मख़सूम ने सिर को कन्धों के बीच दुबकाते हुए लड़खड़ाकर कहा।

"मैं ठीक हूँ," एर्गश ने कहा, "और हमारी राजनीति सरल है: अगर तुम काम नहीं करते, ख़ज़ांची की खिड़की पर तुम्हारे जाने की कोई ज़रूरत नहीं! क्या यह ठीक नहीं, मामाजान भाई?"

"हाँ एर्गश भाई," मामाजान ने अपना पोपला मुँह निपोरते हुए जवाब दिया।

झुकते हुए, मख़सूम दबे पांव अपने कुदाल की ओर दौड़ पड़ा।

एर्गश नुस्रतुल्लाह के पास चला गया।

"क़ुद्रतुल्लायेव!"

नुस्रतुल्लाह सीधा होकर अपनी आस्तीन से चेहरे का पसीना पोंछता हुआ मुड़ा। पिछले कुछ हफ़्तों में उसकी दाढ़ी उग आयी थी, उसके चेहरे के चेचक के दाग़ बिलकुल छुप गये थे। बाहर से उस में और किसी खुदाई करनेवाले या पत्थर के मिस्तरी में कोई भेद नहीं किया जा सकता था। उसके हाथों में घट्ठे पड़ गये थे—वे एक मज़दूर के हाथ थे। लेकिन उसकी आँखों में पहले जैसी ही दमित खिन्नता थी।

"कैसा चल रहा है?" एर्गश ने पूछा।

"खुद देख लीजिए" नुस्रतुल्लाह ने उदासी से कहा।

"अतीत चोट तो नहीं पहुँचाता ?"

"चोट मेरे अन्दर है, चीफ़।"

"अन्दर? अपना काम ईमानदारी से कीजिए और चोट बिसर जायेगी।"

"ठीक यही तो मैं कर रहा हूँ।"

"क्या आपको अपने पिता की याद सताती है? या अपने पिता का मकान दे देने का अफ़सोस है?"

"नहीं, मुझे उनकी कमी नहीं खलती और मुझे कोई खेद नहीं। मुझे उसकी तनिक परवाह नहीं! और फिर मैं हतभाग्य हूँ।"

"क्यों?"

"ज़ाहिर है, कि नहीं?"

"क्या मुझे नहीं बता सकते?"

"मेरे बिना बताये आप जानते हैं।"

"शायद मैं नहीं जानता। क्या तुम बता नहीं सकते?"

अकस्मात नुस्रतुल्लाह छाती पर मुक्का मारते हुए एर्गश की ओर बढ़ आया।

"मैंने अपना मकान दे दिया, पूरी मेहनत से काम करता हूँ और क्रा. यो. अ. स. स* को अपना बकाया अदा कर दिया लेकिन इसके बावजूद सब मुझे नवाबज़ादा समझते हैं। जहाँ तक आपका सवाल है, मैं आपके लिए भी नवाबज़ादा हूँ—जीवन भर।"

"तुम ग़लत समझ रहे हो," एर्गश ने बेतकल्लुफ़ लहजे में कहा। "तुम कैसा प्रदर्शन करते हो, यह इस पर निर्भर करता है!"

"मुझे कोई भी काम करके ख़ुशी होगी लेकिन मैं अपने बूते से बाहर तो काम नहीं कर सकता हूँ," नुस्रतुल्लाह ने सिर लटकाते हुए जवाब दिया।

"मेरी बात सुनो," एर्गश ने विचारमग्नता से कहा, "तुम अच्छी तरह पढ़े-लिखे तो होगे ही? क्या तुम पढ़-लिख सकते हो?"

"हाँ।"

"रूसी में भी?"

नुस्रतुल्लाह कुटिलता से मुस्कुराया।

"मेरे बाप का सपना था, मैं सिमबिर्स्क और मास्को से तिजारत करूँगा।" एर्गश ने अपना मुक्का लहराया।

"तो फिर मैं जो कह रहा हूँ, उसे दुहराओ: सभी देशों के मज़दूर एक हो!"

जैसा कहा गया, नुस्रतुल्लाह ने वैसा ही किया। एर्गश ने चेहरा बनाया।

"अं-हाँ। तुम्हें तुरंत लगेगा, तुम दूसरे नस्ल के हो। फिर भी मैं तुम्हारे लिए जोड़ी ठीक ही कर दूँगा।"

"जोड़ी?" नुस्रतुल्लाह आश्चर्य से सफ़ेद पड़ता हुआ बोला।

एर्गश ने उसे कन्धे से पकड़कर ज़ोर से हिला दिया।

---

* क्रा॰यो॰अ॰स॰स॰ — क्रांतिकारी योद्धाओं के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सहायता संगठन।

"सोचो, तुम अपनी भावी दुल्हन के सामने खड़े हो... सच-सच जवाब दो! क्या तुम सोवियत सत्ता की सेवा करना चाहते हो?"

"हाँ।"

"तो अपना बेलचा नीचे रख दो और अग्रप्रेषी एजेंट की तलाश करो। क्या तुम उसे जानते हो?"

"हाँ।"

"तो ठीक है, उसे कार्यालय में मेरे पास ले आओ। तुरंत जाओ! मैंने कहा न, तुम्हारे लिए जोड़ी ठीक कर दूँगा।"

नुस्रतुल्लाह ने अपना बेलचा फेंक दिया और जल्दी से कलोरिन मिश्रित पानीवाले एक पीपे की ओर बढ़ गया। उसने रबड़ की नली से निकल रहे पानी के सामने अपना धूल भरा चेहरा सामने कर दिया और चेहरा पोंछे बिना मालगोदाम की ओर दौड़ पड़ा।

सुखट्टा मख़सूम आश्चर्य से मुँह बाये उसे देख रहा था।

लोहे की एक पटरी पर हथौड़ी से ठन-ठन की आवाज़ निर्माण स्थल में गूँज गयी। नींव का गड्ढा खोदते मज़दूर किनारों पर चढ़ आये और एक दूसरे के पीछे एक ओसारे के शेड में आ गये।

यफ़ीम दनीलोविच और अनाख़ाँ एर्गश के पास गये।

अनाख़ाँ ने निर्माण-स्थल पर काम कर रही औरतों को रोज़ाना देखने जाने का नियम बना लिया था। हशर के बाद काम में मदद देने के लिए नैमन्चा की बहुत-सी औरतें वहीं ठहर गयी थीं। योग्यता के अनुसार उन्हें काम दे दिया गया था। कलेवा के लिए मिली फ़ुर्सत के समय वे हमेशा चाय तैयार करतीं।

"चीफ़," यफ़ीम दनीलोविच ने एर्गश को सम्बोधित किया। "ज़रा चारों ओर देखो। तुम्हें क्या दिखता है?"

हर जगह मज़दूर आग के ऊपर जग चढ़ा रहे थे। चाय के बिना कलेवा कैसा! इसके अलावा, तेज़ गर्मी के दिन थे, लोग प्यास से व्याकुल हो उठते। अपने काँसे के जग का ढक्कन खनखनाते ही अब्दुसमत तेज़ी से दौड़ पड़ा। निर्माण-स्थल के दूरवर्ती छोर से जहाँ पानी की टंकी थी, वह तीखे, असन्तुष्ट लहजे में कहता सुनाई दे रहा था:

"क़तार में अन्तिम कौन है? धत्त तेरे की, पानी फिर नहीं उबला! मुझे अपनी सारी टीम के लिए चाय की ज़रूरत है। यह रहा "मामला।"

मुस्कुराते हुए एर्गश यफ़ीम दनीलोविच की ओर मुड़ा।

"यह क्या है जो मुझे ज़रूर देखना चाहिए?"

"ख़ुद देख लो।"

"आप हमेशा ऐसी चीज़ें देख लेते हैं जो मैं नहीं देख सकता। मुझे बताइये तो, संशय में मत रखिये।"

"सब तुम्हारी आँखों के सामने है। यह क्या है? रैन बसेरा? पड़ाव? आग, आग... कमर की पेटी से टँगे जग, जूतों में खोंसे चम्मच। मज़दूरों की एक मामूली कैंटीन जहाँ शोरबा मिल सके, उसकी बात तो छोड़ो, यहाँ तक कि तुम्हारे पास एक अच्छी-सी बेंच भी नहीं जहाँ बैठकर कोई सिगरेट पीने या चाय की प्याली की चुस्कियों का मज़ा ले सके।"

"औरतों का कहना है," अनाख़ाँ ने आगे कहा, "अगर उनके लिए तुम आटे का इन्तज़ाम कर दो, वे पुरुषों के लिए नान तैयार कर देंगे। नौजवान औरतों में से उन्होंने नानबाई नियुक्त भी कर लिये हैं। यह आग अब उनके लिए असह्य हो रही है। उनके चेहरे ही नहीं, उनके दिल भी, इनके कारण पसीने-पसीने हो रहे हैं, कॉमरेड चीफ़।"

विनोदपूर्वक, यह दिखाते हुए कि वह मात खा गया है, एर्गश ने अपना हाथ गर्दन पर फेरा।

"ठीक है। उन्हें आटा मिल जाएगा। इन्तज़ाम करने के लिए कम से कम मुझे एक दिन का समय तो दीजिए। आपको विश्वास है, तब औरतें गड़बड़ी नहीं करेंगी?"

"मेरे ख़्याल से तो नहीं, एर्गश भाई।"

यफ़ीम दनीलोविच ने अपनी टोपी की ओलती आँखों पर झुका ली। दोपहर का सूरज अंधा किये डाल रहा था।

"औरतें जुझारू बन गयी हैं," उसने सन्तोषपूर्वक कहा।

"साफ़ कहूँ तो आज उन्होंने मुझे एक मुश्किल में डाल दिया है," अनाख़ाँ ने जवाब दिया। "वे पूछ रही थीं, क्या यह सच है कि जुराख़ाँ पार्टी की सदस्य थी और मैं नहीं हूँ।"

"वे बिलकुल सही हैं!" यफ़ीम दनीलोविच ने ज़ोर से कहा। "मैं यही सवाल दूसरी तरह से पूछूंगा: क्या दरख़्वास्त लिख दी है?"

परेशानी में अनाख़ाँ ने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं।

"क्या वे मुझे स्वीकार कर लेंगे, यफ़ीम दनीलोविच? मैं जुराख़ाँ नहीं बल्कि एक मामूली जुलाहिन हूँ। सच बताइये, आप मेरे भाई की तरह हैं।"

"अरे, अन्या, अन्या," यफ़ीम दनीलोविच ने मलामत से कहा। "तुम्हारे प्रस्तावक तुम्हारे सामने खड़े हैं: एर्गश और मैं। क्या तुम महसूस नहीं करती, पार्टी तुम्हारी अपनी है? क्या यह पार्टी नहीं जो हमें स्वजन बनाती है? जुराख़ाँ अब हमारे बीच नहीं। लेकिन पार्टी तुमसे उसकी जगह लेने की आशा करती है। पार्टी की माँग है कि तुम इसे करो! क्या तुम यह अहसास नहीं करती?"

"हाँ।"
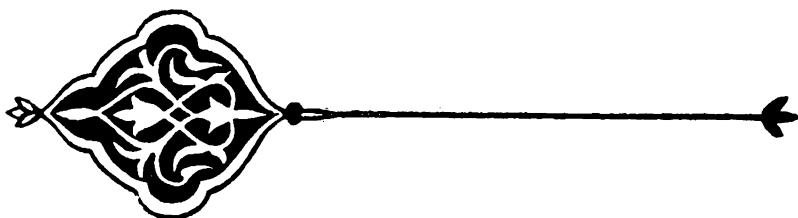
चौबीसवाँ भाग

उस रात पतझड़ की पहली मूसलाधार बारिश हुई। सुबह में सिर्फ़ थोड़ी देर के लिए आकाश साफ़ हुआ और निर्माण-स्थल के ऊपर बादल फिर गहरा आये।

निर्माण-स्थल की भुरभुरी मिट्टी गीली हो गयी थी, सब कहीं कीचड़ ही कीचड़ था। नींव के गड्ढों में पंकिल जल भर गया हवा के साथ दूर-दूर से उड़कर आये पीले पत्ते उस पर तैरने लगे।

निर्माण-स्थल मानो सुनसान दिखाई दे रहा था। कुछ लोग उथली किनारेदार नालियाँ खोद रहे थे जिनसे होकर कीचड़-पानी सीमेंट और चूनेवाले गोदामों से दूर निकलकर बह जाये। दो औरतें बाल्टियों से नींव के गड्ढों से पानी उलींच रही थीं।

नये साज़-सामान – कताई ढाँचों और कल-करघोंवाली ट्रेन पहुँच चुकी थी। सवेरे से ही पत्थर-राजगीर और खुदाई करनेवाले माल उतार रहे थे।

मशीनों को निर्माण-स्थल तक ले जाने का काम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। शहर का एकमात्र ट्रक और ट्रैक्टर एर्गश को सौंप दिया गया था। फ़ोईसन ट्रैक्टर बेकार हो जाने की स्थिति में पहुँचनेवाला था। यह पहले पुल तक चलता रहा, फिर ठीक बीच में रास्ता जाम करते हुए ख़राब हो गया। गाड़ी खींचने के लिए घोड़ों को लाना पड़ा।

तख़्तियों से ढँकी और तारों से कसी भारी दीर्घायत मशीन लकड़ी की गाड़ी पर किसी चट्टान की तरह ऊँची खड़ी थी। नथुने फुलाते, लड़खड़ाते, पूरा ज़ोर लगाते तीन घोड़े इसे कीचड़ से खींचे ले जा रहे थे। सुखट्टा मख़सूम बीच में जुते घोड़े की पीठ पर नीचे झुका बैठा था और अपनी सीटी जैसी आवाज़ में कोसता जा रहा था। वह छड़ी हिलाता जाता और जब-तब घोड़े की पसीने-पसीने होती पीठ पर फटकार देता। मामाजान भारिक और छैला नारमत सिर से पाँव तक कीचड़ से लथपथ होते गाड़ी की बग़ल में कीचड़ के बीच में परिश्रमपूर्वक पैदल चल रहे थे। बारी-बारी से वे स्लेज के नीचे बल्लियाँ डालते जाते। जब कोई बल्ली टुकड़े-टुकड़े होकर स्लेज के नीचे फटाक करती बिखर जाती, उनमें से एक दौड़कर सामने चला जाता और घोड़ों के पैरों के नीचे दूसरी बल्ली फेंक देता। वे एक घंटे में आधा मील से ज़्यादा नहीं तय कर पाते। माल स्टेशन से निर्माण-स्थल कोई तीन मील था।

सड़क बदतर होती गयी। गाड़ी दो गहरी रेखाएं बनाती चल रही जैसे वे हलों से बनायी गयी हों। हाँफ़ते घोड़े थोड़ी-थोड़ी देर पर अटक रहे थे। सुखट्टा मख़सूम बदहवासी से उन पर अपनी छड़ी फटकारे जा रहा था। घोड़े बार-बार अपने पिछले पैरों को मोड़कर, चारों ओर मिट्टी के बड़े-बड़े चोते छिटकाते, रस्से पर ज़ोर लगा रहे थे लेकिन गाड़ी को टस से मस नहीं कर सके। कसे तार बज उठे और मामाजान और नारमत जो मशीन की बग़ल में बौनों की तरह लग रहे थे, डरकर रास्ते से हट गये। खीझे और थके, उन दोनों ने भी अपना ग़ुस्सा घोड़ों पर उतारा।

एक गाँव के उपान्त में पीले, वर्षा से तर मक्के के डंठलों के बीच बच्चे आ गये। हरेक के हाथ में आधे-आधे सूर्यमुखी फूल थे। उनके होंठों के चारों ओर बीज के छिलके लटक रहे थे। थोड़ी ही देर में औरतें और बूढ़े मर्द भी उन के पास आ पहुँचे।

सड़क ऊपर चढ़ती चली गयी थी। ढलान के पास घोड़े इस तरह ठहर गये जैसे वे ज़मीन में गड़ गये हों। भारी बोझ से लदी गाड़ी एक ओर झुककर कीचड़ में और गहरे धँस गयी। दम लगाते-लगाते थककर काँपते घोड़ों ने धीरे-धीरे हार मान ली।

मशीनवाली पेटी ने नीची गाड़ी को पूरी तरह ढँक रखा था। पेटी के ज़मीन की सतह तक धँस जाने के कारण गाड़ी तो अदृश्य ही हो गयी थी।

बच्चों ने गाड़ी को घेर लिया और मैगपाई पक्षियों की तरह चीं-चीं करने लगे। उनमें से जो कुछ ज़्यादा साहसी थे, उन्होंने हाथों से पेटी ली और इस तरह उछलकर पीछे हट गये मानो अंगुलियाँ जल गयी हों।

"मेरे ख़्याल से तो यह हाजिमत के बैल जितना बड़ा है।"

"दो बैल इसमें समा जा सकते हैं।"

"लेकिन यह है क्या?"

"मिल है और क्या! इसी तरह एक और कल यहाँ पर से गुज़रा था। ठोस लोहा है।"

"अरे भाई, तू तो बहुत जानता है। ज़रा सोच, क्या सचमुच दो बैलों जितनी ठोस लोहे की बनी किसी चीज़ को धरती संभाल सकती है?"

"तू गधा है। लोहे की बनी इससे भी बड़ी-बड़ी चीज़ें होती हैं।"

"ज़मीन के नीचे शायद..."

दो बूढ़ों ने आकर चीं-चीं करते बच्चों को खदेड़ दिया, मामाजान और नारमत के साथ मिलकर पहियों के नीचे फँसी बल्ली को छुड़ाया और तब गाड़ी थोड़ी ठीक हुई।

लेकिन बूढ़े बच्चों से कम विस्मित न थे।

"हे ख़ुदा! क्या चमत्कार है, यह ज़मीन को कुचल नहीं डालता!"

"क्या अचंभा है यह, मेहरबानी करके बता सकते हो?"

"यह मास्को से आया है," मामाजान भारिक ने थकी लेकिन गर्वपूर्ण आवाज़ में जवाब दिया। "कोई मशीन है! मैं तो इतना ही कह सकता हूँ, इसने हमारा कस-बल ही निकाल लिया है।"

"यह क्या करती है?"

"सूत कातती है।"

"क्या कहते हो! क्या यह सच है, यह ठोस लोहे से बनी है?"

"बेशक! छूकर देखो। बर्फ़ जैसी ठंडी है। और ज़िन्दों की तरह काम करती है।"

"इस में पेंच लगे होंगे शायद जो ख़ुद-ब-ख़ुद सूत कातते होंगे, क्यों?"

"पेंच! तुम जानते हो इसमें कितने पेंच लगे हैं? सात और सात हज़ार। वे इसे मिल में लगा रहे हैं। एक दिन में वह पचीस वरस्ताती* के बराबर काम कर सकती है।"

"हे ख़ुदा। लेकिन क्या यह आदमी की जान भी ले सकती है?"

"बेवकूफ़ की नाक तो मक्खी भी काट जा सकती है।"

"तुम कहते हो यह मिल में लगायी जाएगी? क्या वही तो नहीं जो नैमन्चो में बनाया जा रहा है?"

"तुम और किस मिल के बारे में सोच रहे हो?"

बूढ़ों ने अपनी छड़ियाँ ज़मीन पर फेंक दीं और आस्तीनें चढ़ाकर दूसरों को आवाज़ लगायी:

"आओ, वफ़ादारो, हमारी मदद करो! सब मिल कर!"

घोड़ों को बढ़ावा देते हुए बच्चे चीखे, सीटी बजायी और हाथ हिलाये। बीच में जुते घोड़े पर बैठा सुखट्टा मख़सूम सबसे ज़्यादा ज़ोर से चीखा। बूढ़ों ने गाड़ी पर अपना पूरा ज़ोर लगा दिया।

"सब मिलकर! ज़ोर लगाओ!"

अपने खुरों से कीचड़ को मथते घोड़ों ने झटके के साथ ज़ोर लगाया। थमकर उन्होंने फिर से ज़ोर लगाया और गाड़ी चढ़ाई पर धीरे-धीरे पुल से हट कर चल पड़ी।

"अरे! तुम कहाँ जा रहे हो?" तिनकों की टोपी लगाये एक बूढ़े ने चीखकर मख़सूम से कहा। "घोड़ों को मोड़ लो!"

मख़सूम ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। वह आगेवाले घोड़े पर बेरहमी से चाबुक बरसाये जा रहा था।

"रुक जाओ! मैं कहता हूँ, मोड़ लो! वहाँ तुम फँस जाओगे।"

---

* वरस्ताती – पुरातन लकड़ी के करघे।

"रास्ते से हट जा, बूढ़ा मक्का-ख़ोर!" मख़सूम ने ग़ुस्से से किट-किटाते हुए कहा। "मैं यहाँ पुल पर रात बिताना नहीं चाहता।"

"पुल की मरम्मत की गयी है, सुन रहे हो तुम? इसकी मरम्मत की गयी है! ठहर जाओ!"

लेकिन सुखट्टा मख़सूम जैसे बहरा हो गया हो। बीचवाले घोड़े पर ऊपर नीचे हिलकोरे खाता, अपनी छड़ी फटकारता, वह घोड़ों को पुल के परे एक नाले के साथ-साथ हाँक ले चला। मामाजान, नारमत, बूढ़े और लड़के कीचड़ में फँसे पीछे रह गये। ढलान के एकदम ऊपर कीचड़ में गाड़ी अग़ल-बग़ल से फिसल जाती। पल भर के लिए ऐसा लगा जैसे वह नाले पर लटक रही हो। "उलट जाएगी! उलट जाए-गी!" बच्चे चीखे। बहरहाल, गाड़ी ख़तरनाक जगह से सुरक्षित रूप से निकल गयी और सीधी हो पहले से कहीं ज़्यादा तेज़ी से चल पड़ीं।

"वाह!" एक बूढ़े ने कहा। "देखने में इतना कमज़ोर फिर भी कितना स्वावलम्बी है वह।"

"वह बस जैसे-तैसे घोड़े को हाँके जा रहा है।" दूसरे बूढ़े ने जवाब दिया। "ख़ाली गाड़ी से भी तुम वह रास्ता तय नहीं कर सकते।"

"देखो, देखो!" लड़के चीखे। "यह फिर गिर रहा है! आओ! जल्दी से!"

गाड़ी फिर ढलान की ओर एक तरफ़ से फिसल रही थी। तेज़ गति ही इसे इस बार बचा सकती थी। थोड़ी-सी भी बाधा पड़ने से यह लुढ़ककर नाले में जा गिरेगी। लेकिन घोड़े अलाहदा तौर पर झटके दे-देकर खींच रहे थे। वे सुखट्टा मख़सूम की बेमानी चीखों और बीचवाले घोड़े पर उसके ग़ुस्से से थके व डरे थे। गाड़ी उछली और नाले में फिसलने लगी।

"घोड़ों को फटकारो! घोड़ों को हाँको, बेवक़ूफ़!" बूढ़े चीखे।

लेकिन तब तक देर हो चुकी थी! अकस्मात सुखट्टा मख़सूम बीचवाले घोड़े से उछाल खा गया। उसने हवा में इस तरह कलाबाज़ी ली जैसे किसी अदृश्य शक्ति ने उसे धकेल दिया हो।

तार फटाक से टूट गये और सारंगी के तार की तरह झनझना उठे। मशीनवाली पेटी बेआवाज़ गाड़ी से सरककर अपने एक किनारे से लाल मिट्टी को खोदते हुए धप से नाले में जा गिरी। अगर तार टूटा नहीं होता तो मशीन अपने पीछे गाड़ी और घोड़ों को भी घसीट ले जाती।

मख़सूम गेंद की तरह लुढ़का, धीरे-धीरे कराहता गाड़ी के पास कीचड़ में पड़ा था। वह टूटे तार के छोर के झटके से उछाल फेंका गया था।

मामाजान और नारमत उसे उठाकर हाँफ़ते घोड़ों से दूर ले गये। मख़सूम की क़िरमिची पतलून तार से चाक हो गयी थी और दोनों नितंब छिल गये थे।

लड़के शांत हो गये, तिनके की टोपीवाला क्रोध में बोल रहा था।

"ऐसे काठ के उल्लू को इतना महत्वपूर्ण काम उन लोगों ने कैसे सौंप दिया! उसके कान देखो, गधा है! अब तुम इसे लिख लो। इस लौह दानव को नाले से कोई भी नहीं निकाल पायेगा। वाह, क्या शानदार आदमी हो तुम! ख़ुद को तो घायल किया ही घोड़ों का भी कचूमर निकाल दिया।"

दो घोड़ों से खींची जा रही एक दूसरी गाड़ी पुल के पास आकर रुक गयी। गाड़ीवान दौड़ते आये, एर्गश और नुस्रतुल्लाह भी पीछे-पीछे दौड़ पड़े।

"वाह, बहादुरो, ठीक है—मशीन तोड़ डाली," एर्गश ने नाले की ओर देखते हुए कहा।

मामाजान भारिक और छैला नारमत एर्गश के सामने बारी-बारी से हाथ फैलाते चुपचाप खड़े थे।

"यह उनकी ग़लती नहीं। उन्हें दोष नहीं देना चाहिए," बूढ़ों ने एक साथ कहा।

एर्गश नुस्रतुल्लाह की ओर मुड़ा।

"तुम इसके लिए ज़िम्मेवार हो! दीदे क्या नचा रहे हो? तुमने यहाँ पुल पर गाड़ीवानों को रास्ता बताने के लिए किसी को तैनात कर दिया होता। बेशक, मशीन तुम्हारी नहीं। यही कारण है, तुम ने अपना दिमाग़ काम में नहीं लाया।"

सुखट्टा मख़सूम पीड़ा से कराहा। उसके इर्द-गिर्द खड़े लोग अलग हट गये और एर्गश ने उसे ज़मीन पर देखा।

"यह क्या है?"

बूढ़े-बच्चे फिर एक साथ बात करने लगे। एर्गश मख़सूम पर झुक पड़ा और एकाएक चीखा:

"शान्त रहो! नुस्रतुल्लाह, सबसे कम थके घोड़े को लो और भागकर डॉक्टर को बुला लाओ।"

कई आदमी घोड़ों को खोलने दौड़ पड़े जबकि तिनके की टोपीवाले बूढ़े ने अपने पड़ोसी का ध्यान एर्गश की ओर आकृष्ट किया:

"तुम्हारे लिये क्या शानदार नौजवान है। नैमन्चा का जवान।"

* * *

रात के अंधेरे में अपने मकान के सामने एक नम दीवार से पीठ लगाये नुस्रतुल्लाह खड़ा था। उसके बाप के भूतपूर्व बैठकख़ाने की खिड़की में रोशनी हो रही थी। एर्गश की तेज़ आवाज़ उस तक पहुँची। नुस्रतुल्लाह ज़नानख़ाने में खिसक जाये या नहीं, तय नहीं कर पा रहा था। अब वह वहीं रह रहा था।

"तुम इसके लिए ज़िम्मेवार हो। मशीन तुम्हारी नहीं है।" काश चीफ़ जान पाता, वह कितना सही था। क्या उसे किसी बात का सन्देह था?"

परसों इसी समय जब नुस्रतुल्लाह रेलवे स्टेशन से घर लौट रहा था, चायख़ाना के सामने उसे चाय-विक्रेता ने रोक लिया और किसी झोंपड़ी में ले जाकर तेज़ शराब पिलायी थी, नुस्रतुल्लाह जल्दी ही नशे में आ गया और चीखते हुए अपने मेज़बान के धूसर चेहरे के आगे अपने मुक्के नचाने लगा। चाय-विक्रेता रहस्यपूर्ण अन्दाज़ से उसकी बातें सुनता रहा फिर उठ खड़ा हुआ और चुपचाप अपनी फौलादी अंगुलियों से नुस्रतुल्लाह का गला जकड़ लिया।

निकल आती आँखों से नुस्रतुल्लाह ने उन मज़बूत अंगुलियों को अपने गले पर से हटाने का निरर्थक प्रयत्न किया। पल भर में उसका नशा काफूर हो गया। चाय-विक्रेता निःशब्द हँस पड़ा।

"पिल्ले! जब मैं बोलूँ, ध्यान से सुना कर।"

नुस्रतुल्लाह को छोड़कर वह अपनी जगह इस तरह जा बैठा जैसे कुछ हुआ ही न हो, फिर चाँदी के जाम में ब्रॉण्डी उँडेलते हुए बनावटी शिष्टता से बोला:

"आपके आदरणीय पिता ने आपको मेरी देख-भाल में छोड़ा है।"

"मैं ने अपने बाप को छोड़ दिया है," हक्का-बक्का नुस्रतुल्लाह ने भर्राई आवाज़ में कहा।

"अब से मैं आपका बाप हूँ, नौजवान," चाय-विक्रेता ने कहा, "मैं आपको आदमी बनाऊँगा।"

खाँसता हुआ, नुस्रतुल्लाह उसके हाथ की ओर देखे जा रहा था। उसने उसे मुक्के की तरह भींचकर अपने घुटने पर टिका रखा था।

चाय-विक्रेता ने उसे स्थिर होने का समय दिया। उन्हों ने एक जाम और लिया। नुस्रतुल्लाह को अब नशा नहीं हो पाया। वह बैठा, पथरायी नज़रों से उसकी ओर देख रहा था और विक्षोभपूर्वक थूक निगले जा रहा था—उसका गला दुख रहा था।

"आप मिल परियोजना के आदरणीय चीफ़ के कार्यालय की बग़ल में रहते हैं," चाय-विक्रेता ने बिना जल्दबाज़ी के कहना शुरू किया। "यह बहुत ख़ुशक़िस्मती है। उसकी आवाज़ काफ़ी तेज़ है। लेकिन आपको उसकी बुदबुदाहट तक सुन लेनी है। उसकी हर क़दम पर नज़र रखिये। टोह लिया कीजिये, वह कब उत्तेजित होता है।"

"क्यों, मैं ऐसा क्यों करूँ?" नुस्रतुल्लाह की ज़बान लड़खड़ा उठी।

"क्योंकि आप मेरे कान हैं, मेरी आँखें, मेरी गुद्दी हैं। मेरी तो एक पुरानी कमज़ोरी है—मैं जिज्ञासु हूँ। हर व्यापारी को जिज्ञासु होना ही चाहिए।"

नुस्रतुल्लाह उठ खड़ा होना चाहता था लेकिन चाय-विक्रेता अलक्ष्य रूप से उस की ओर बढ़ आया। वह हाथों से अपना गला ढँकते हुए रुक गया।

वह इस क्षुद्र आदमी को अपने बाप के घर में प्राय: देखा करता था, लेकिन कभी इस पर कोई ख़ास ध्यान नहीं देता था। यहाँ तक कि नईमी भी उसके बारे में हिक़ारत से बोलता। वह और कुछ नहीं, एक आवारा, मामूली व्यापारी, बाय की मेज़ के लिए चाय बेचनेवाला आदमी ही तो था। अब यही कलूटा नुस्रतुल्लाह की ओर अधखुली, निद्रालु प्रतीत होती पलकों से देख रहा था और नुस्रतुल्लाह खुलकर साँस लेने में भी डर रहा था।

जुआख़ाने में कलूटे क़ुलमत ने उसे इसी तरह ताका था।

"आप मुझे यहाँ क्यों लाये हैं? आप क्या चाहते हैं, मुहम्मद सईद?" नस्रतुल्लाह ने सायास कहा।

"तुम्हारे मामलों पर हम बातें करेंगे। तुमने कारीगर साबिर की बेटी से शादी करना तय कर लिया है?"

नुस्रतुल्लाह ने अकस्मात मुक्के से अपना सीना पीट लिया। निराशा ने उसे शक्ति दी।

"और मैं ज़रूर करूँगा!"

"बहुत ख़ूब, बहुत ख़ूब। तुम सोवियतों के लिए ईमानदारी से काम करके उसका दिल जीत लेने की आशा करते हो?"

"मैं उसे कैसे जीतता हूँ यह मेरा काम है, इससे आपको कोई मतलब नहीं! आप मुझसे क्या चाहते हैं? आप मुझे यहाँ क्यों लाये हैं? आप ख़ुद शांति से रहिये और मुझे भी शांति से रहने दीजिये। मैं आपको नहीं जानता और मैं आपको जानना भी नहीं चाहता।"

"मेरे प्यारे नौजवान दोस्त," चाय-विक्रेता ने शांतिपूर्वक कहा। "जब आप ने उसकी माँ को चाकू मारा, आप लक्ष्य के क़रीब थे।"

नुस्रतुल्लाह की साँस घुटने लगी जैसे फिर गला दबाया जा रहा हो, उसने अपने ख़ुश्क होंठों पर जीभ फेरी।

उसकी रीढ़ में तेज़ कँपकँपी की लहर दौड़ गयी। यही चीज़ थी जिससे वह सबसे ज़्यादा भयभीत था। वह जानता था, कोई उसे इस की याद दिलायेगा।

"आपको कैसे मालूम?" उसने लड़खड़ाते हुए, अपनी जीभ को मुश्किल से जुंबिश देते हुए कहा।

चाय-विक्रेता भव्य अंदाज़ में झुकता हुआ खीं-खीं कर के हँस पड़ा:

"तो इसमें तुम्हारी दिलचस्पी है? तुम भी थोड़े जिज्ञासु हो, क्यों? तुम अच्छे व्यापारी बन सकते हो। अफ़सोस तुम चूक गये। लड़की अनाथ हो जाती और उससे शादी करना आसान हो जाता। क्यों, ऐसा नहीं? मैं ठीक कह रहा हूँ न?"

नुस्रतुल्लाह ने निःशब्द अपने होंठ चलाये। उसके पैर काँप रहे थे।

"सिर्फ़ एक आदमी और इसके बारे में जानता है," चाय-विक्रेता ने चुपचाप हँसते हुए आगे कहा। "सिर्फ़ एक आदमी। बड़ा ही बातूनी और अविश्वासनीय आदमी। लेकिन वह यहाँ से बहुत दूर है। बहुत दूर! वह कह नहीं सकता। लेकिन आप मुझपर भरोसा कर सकते हैं। मैं आपको अपनी भूल सुधारने में मदद करूँगा।"

नुस्रतुल्लाह किसी तरह फिर बोल पाया।

"दुबारा!" वह सहमकर लड़खड़ाते हुए भर्राई आवाज़ में चीखा। "मैं नहीं चाहता—मैं नहीं करूँगा। मैं नहीं कर सकता।"

चाय-विक्रेता ने उद्धत्तापूर्वक नुस्रतुल्लाह की आस्तीन पकड़कर उसे अपनी ओर खींच लिया।

"आप मूर्ख हैं। मेरी बात सुनिये। आपकी चंहेती सिर्फ़ नन्हीं, कमज़ोर-सी डाल है और आप इसे बिना किसी प्रयास के तोड़ लेंगे। आपको तो उस डाल को काट डालना है जिस पर यह लगी है। ओह, काँपना छोड़िये, जो मैं कह रहा हूँ, ध्यान से सुनिये, इस बार मैं आपको कटार नहीं दूंगा, आप उसके आदी नहीं। इसके अलावा, हमें अपना तरीक़ा बदलना है। यदि मैं ग़लती नहीं कर रहा हूँ तो करघे कल उतारे जाएंगे। क्यों ठीक है न? आप अग्रपेषी एजेंट हैं। गाँव के पास एक पुल है। यह पुराना है और टूटनेवाला ही है..."

नुस्रतुल्लाह ने चाय-विक्रेता की पकड़ से अपनी आस्तीन छुड़ा ली। उसके दाँत बज रहे थे, होंठ ऐसे बिचक आये थे जैसे अब-तब में रो पड़ेगा। वह जल्दी-जल्दी बुदबुदाया:

"नहीं, मैं नहीं कर सकता। मैं ने आपका क्या बिगाड़ा है? मुझे जाने दीजिये। मैं ख़त्म हो चुका हूँ और मेरे जीवन में कुछ भी नहीं बच रहा। मैं दुनिया में एकदम अकेला हूँ। मुझे कुछ भी नहीं मालूम, एकदम कुछ भी नहीं।"

वह उन्मत्त-सा हो उठा।

चाय-विक्रेता थोड़ी ब्रॉण्डी ढालकर पीते हुए नुस्रतुल्लाह के शांत होने की प्रतीक्षा करता रहा। लेकिन जब नुस्रतुल्लाह के शांत होने के कोई आसार नज़र नहीं आये, उसने थूककर निराशा से कहा:

"अच्छा, ठीक है। अपनी नाक पोंछिये। आपको परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं। लेकिन कल आप सब से अच्छी मशीन को चुनेंगे। क्या सुन रहे हैं—सब से अच्छी और क़ीमती मशीन। जल्दी करने या उत्तेजित होने की कोई ज़रूरत नहीं और ख़ुदा करे आपसे ग़लती हो जाए! आप उनके पास जो घोड़े हैं, उनमें सबसे मज़बूत तीन घोड़े लेंगे और अपने पुराने ग़ुलाम मख़सूम को बीचवाले घोड़े पर बैठा देंगे। बाक़ी से आपको कोई मतलब नहीं।"

दोनों हाथों से अपना सिर पकड़कर नुस्रतुल्लाह रो पड़ा, उसने अपना चेहरा चोग़े की आस्तीनों से ढँक लिया...

और अब, दो दिन बाद वह अंधेरे में एर्गश की तेज़ आवाज़ सुनता, अपने घर के सामने खड़ा, निस्सहाय सोच रहा था:

"अब वह मेरे लिए जोड़ी का इंतिज़ाम नहीं करेगा। नहीं, वह नहीं करेगा।"
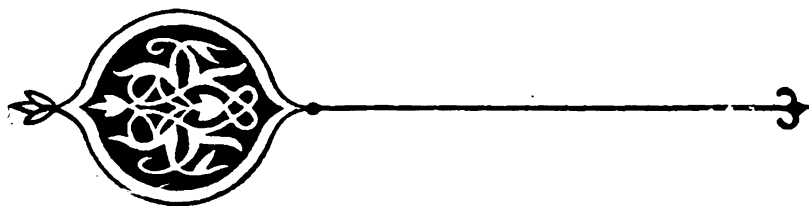
पच्चीसवाँ भाग

एक ठंडी सुबह मिल की नींव डाली गयी।

तेज़ हवा में पताकाएँ फड़फड़ा रही थीं। नींव की खाई के पास चारों ओर सभी निर्माता एकत्र हो गये। शहर से एक प्रतिनिधि मण्डल आया था और जनतंत्र की राजधानी से प्रतिनिधि आये थे। पीतल के बाजा बजानेवालों के बाजे धूप में चमक रहे थे।

नींव की पहली ईंट डालने का सम्मान अनाख़ाँ को मिला था। उसने एक साफ़ सफ़ेद एप्रन डाल रखी थी। यफ़ीम दनीलोविच ने उसकी पीठ के पीछे एप्रन की डोरी बाँधी। एर्गश ने उसे एक लोहे की नली दी थी जिसपर आधारशिला का लेख ढाला गया था – ढालने के बाद अभी भी नली से धुआँ निकल रहा था। दोब्रोख़ोतोव एक साफ़ लाल ईंट और करनी में सीमेंट लिये तैयार था।

अनाख़ाँ ने ईंट लेकर इसे सिर से ऊपर उठाया। हवा के साथ-साथ उसका पुरजोश सम्बोधन गूँज उठा: "कामरेडो..." यह नैमन्चा के दूर उपान्तों तक में सुनाई पड़ा।

"यह पहला पत्थर है" अनाख़ाँ ने कहा, "और इसे बहन जुराख़ाँ ने लगाया होता। वहाँ नींव की खाई के सामने उसकी क़ब्र है। लेकिन दुश्मन जान ले, मेरा हाथ उसका हाथ है! और मैं चाहती हूँ, कॉमरेड

निर्माताओ और आप बहनो, यह जान लें कि मेरा हाथ आपका हाथ है! यह मैं अकेली नहीं बल्कि आप सब, समूचा मेहनतकश वर्ग, आज हमारे जनतंत्र के पहले कपड़ा मिल की नींव डाल रहे हैं! इसी ख़ुशी को देखने के लिए हम जिन्दा रहे हैं। आज का दिन याद रखो, बहनो।" अनाख़ाँ की आँखों में आँसू छलछला आये। "मैं नहीं जानती और क्या कहूँ..."

"अहा प्रभु-अनुपम, अनुपम," दोब्रोख़ोतोव अनजाने बुदबुदा पड़ा।

"देखो, कहीं तुम्हारे इस हर्षोन्माद में सीमेंट न गिर जाये, सेर्गेई ल्वोविच," यफ़ीम दनीलोविच गुर्राये। वह गहन रूप से प्रभावित थे।

"काश मेरे पिता ज़िन्दा रहते तो आज क्या कहते?" एर्गश ने निष्ठापूर्वक शान्त नैमन्चा के लोगों पर दृष्टिपात करते हुए सोचा।

सब की आँख़ों के सामने ईंट को चूमते हुए अनाख़ाँ नींव की खाई में उतर गयी। उसने नींव के लेखवाली नली को इसके लिए तैयार किये गये खाँचे में रख दिया, सीमेंट बिछाया और पहले करनी से फिर हाथ के पंजे से बराबर किया। फिर दोनों हाथों से सीमेंट की तह पर ईंट को इस तरह रखा जैसे किसी बच्चे को पालने में डाल रही हो।

जब अनाख़ाँ खाई से ऊपर आयी, दर्शकों ने गाना शुरू कर दिया;

हम नहीं चाहते कोई कृपाशील उद्धारक
करने की शासन हमपर बैठा कक्ष में करता न्याय
हम मेहनतकश वर्ग नहीं मांगते उनसे दया-दृष्टि की भीख
आओ करें मंत्रणा हम सब जन हिताय।

शाम को एक और रोमांचक घटना अनाख़ाँ की प्रतीक्षा कर रही थी। यह उसके लिए ख़ुशी का दिन था। उसे पार्टी में स्वीकार कर लिया गया था।

परियोजना की छोटी-सी पार्टी इकाई के सदस्य एर्गश के कार्यालय में जमा हुए। बैठक में अनाख़ाँ एकमात्र महिला थी।

उसका दिल गर्व और अदृश्य दर्द से धक-धक कर रहा था।

"अबला।" उसने ख़ुद से कहा। "तुझे वर्जित सीमा पार करने का साहस कैसे हुआ? ऐसी नास्तिकता के लिए तुम्हें पथराया नहीं जायेगा?"

अनाख़ाँ दुसरों की आँखों से ख़ुद को देखने की कोशिश में इस क्षण

के बारे में प्रायः सोचा करती। बहुत बार उसने जैसे मलामत करते हुए ख़ुद से पुनः पुनः कहा था:

"अबला नारी। इस दुनिया में आने पर अचेतन रूप से तुम्हारी नज़र सबसे पहले अपने नाराज़, उदास बाप और दुखी माँ के चेहरों पर पड़ी थी। अपने जन्म से तुमने उन्हें दुखी किया था। 'लड़की' उन्होंने गहरी साँस लेते हुए कहा और इस एक शब्द से उन्होंने अपने दिल की सारी बातें ज़ाहिर कर दीं थी।

"तुम्हें अबला की संज्ञा मिली। वही अबला जिसे पवित्र पुस्तकों को लिखनेवाले पैग़ंबरों ने तिरस्कृत किया। उसे धर्मशास्त्रियों और साधुओं ने कोसा जो भूल गये कि किसने उन्हें जन्म दिया, किसका दूध पीकर वे बड़े हुए। धार्मिक, दुनियावी नियमों ने तुम्हारे प्रारब्ध में दासता का जीवन नियत कर दिया, विधान बना दिया कि तुम्हें मर्दों से एक हाथ गहरी क़ब्र में दफ़न किया जाये।

"यहाँ तक कि यह भी पर्याप्त न लगा। इस्लाम का नृशंस धर्मोन्मादी इब्न-क़ुताइब सुदूर अरबी रेगिस्तानों से आया और तुम्हें घोड़े के बाल से मुँह पर पर्दा डालने को मजबूर कर दिया। मदीना के खंडहरों के उस काले मकड़े ने हज़ारों साल पुराने ज़हर से तुम्हारा विवेक मार दिया।

"अबला... 'उसके बाल लम्बे हैं लेकिन दिमाग़ छोटा'। 'जिसके कोई लड़का नहीं, कोई ख़ुशी नहीं, अगर कोई लड़की नहीं, कोई परवाह नहीं।' यही समझ थी जो तुम्हारे जीवन को संचालित करती थी। और गीत कौन-से गाती थी?

जिस पथ से गुजरते हो तुम मेरे प्रियतम,
अपनी काली-काली वेणियों से बुहारूँगी उसे मैं।
जिस पथ से गुजरते हो तुम, मेरे प्रियतम,
अपने आँसुओं से छिड़क डालूंगी उसे मैं।

"तुम गाती थी जैसे रो रही हो। और पथ से जवाब में तुम्हें बायों के बेटों की ऐयाशी भरी, नशे में डूबी-आवाज़ें सुनाई देतीं जो तुम्हारे लिए स्पर्धा-योग्य व इच्छित वर समझे जाते थे:

बाट जोहने की न कोई दरकार, नौजवान :
लड़कियाँ हैं ससती मार्गिलान में।

"एक अच्छे घोड़े की क़ीमत तुमसे ज़्यादा आँकी जाती, तुम्हें कुछ नहीं के बराबर समझकर बेच डाला जाता। और तुम्हारा वसन्त जल्दी ही पतझड़ में बदल जाता। लेकिन किसी को उसकी चिन्ता न थी। किसी को परवाह न थी। पति अपने वास्ते नौजवान बीवी ख़रीद लाता।

"तुमने कभी उसकी उम्मीद भी नहीं की थी और सपना भी नहीं देखा था कि इसके अलावा भी कुछ हो सकता है, तुम सोच भी नहीं सकती थी, जीवन बदल सकता है। वह परी-कथाओं में भी नहीं होता। तुम्हें भगवान और शैतान में, सपनों व भविष्यवाणियों में विश्वास था, लेकिन अपनी नियति में विश्वास नहीं था। तुम भूल गयी, तुम कभी जान ही नहीं पायी कि धर्म और कहानियाँ लोगों द्वारा गढ़ी गयी हैं..."

ऐसी सैकड़ों अबलाओं में एक अनाख़ाँ ने जागते हुए एक नयी कथा में प्रवेश किया। यह अश्रुतपूर्व थी, इसके बावजूद किसी ने इसे अचंभा नहीं समझा।

पुरुष, जो बाहरी तौर पर उन पुरुषों से भिन्न नहीं प्रतीत होते थे जिनके पाँव औरतों को दिन भर की मेहनत-मशक़्क़त के बाद धोना पड़ता था, अनाख़ाँ की बातें एकाग्रता और आदरभाव से सुन रहे थे।

उसने उन्हें अपनी कहानी – जन्म से लेकर अब तक की कहानी – सुना दी थी। यह एक सामान्य, साधारण जीवन की कहानी थी जो स्मृति से, खुली हथेली से उड़ती राख की तरह, निकल रही थी। लेकिन वे... उन्होंने साभिप्राय दृष्टियों से एक दूसरे की ओर देखा और अपने सिर इस तरह हिलाये, जैसे, किसी नायिका की जीवनी सुन रहे हों। जब अनाख़ाँ ने अपनी विश्रृंखलित कहानी समाप्त की, वे ख़ुद उसके बारे में बातें करने लगे। उनके शब्द सौम्य और हार्दिक थे, मानो अनाख़ाँ के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करना अपना कर्तव्य मान रहे हों।

फिर उन्होंने अपने हाथ उठा दिये – सबने – और अनाख़ाँ उनकी समकक्ष हो गयी।

"सर्वसम्मति से स्वीकृत," यफ़ीम दनीलोविच ने कहा और उठ

खड़े हुए। "मुबारक हो, कॉमरेड ग्रनाख़ाँ। मुझे पूरा विश्वास है, तुम एक सच्ची कम्युनिस्ट बनोगी – मेहनतकश वर्ग के उद्देश्य के प्रति समर्पित। मुझे विश्वास है, तुम ग्रपनी बेटियों को भी ग्रपनी जैसी बनाग्रोगी..."

बारी-बारी से सब ने ग्रनाख़ाँ से हाथ मिलाया। ग्रौर उसने सब से कहा: "धन्यवाद।" "मेरी भी शुभकामनाएँ।"

उसे उम्मीद थी, भविष्य में उसके ग्राचरण के बारे में बताया जायेगा। लेकिन कम्युनिस्ट ग्रपनी सीटों पर लौट ग्राये ग्रौर ग्रध्यक्ष की ग्रोर मुँह करके बैठ गये। यफ़ीम दनीलोविच ने घोषणा की:

"कॉमरेडो, हमारी कार्य-सूची में एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। यह सतर्कता के बारे में है।"

ग्रनाख़ाँ, पुरुषों को ग्रपने में बातें करने को छोड़, चुपचाप जाने को तत्पर हुई। वह दरवाज़े तक चली गयी।

यफ़ीम दनीलोविच दुविधा भरी दृष्टि से उसे जाते देखकर चुप हो गये। फिर सुजनता से हँस पड़े।

"ग्रन्या। तुम कहाँ जा रही हो? बैठक ख़त्म नहीं हुई है। हर कम्युनिस्ट को ग्रपनी इकाई की बैठक में निश्चित रूप से मौजूद रहना चाहिए।"

एर्गश ने हँसते हुए रुखाई से कहा:

"शायद कोई बहुत ज़रूरी पारिवारिक काम हो? शायद उसे हमें घर जाने देना चाहिए?"

दरवाज़े पर रुकती हुई ग्रनाख़ाँ तुरन्त नहीं समझ पायी कि उसे रोका क्यों जा रहा है ग्रौर सहसा यफ़ीम दनीलोविच ग्रौर दूसरे लोग एर्गश पर क्रुद्ध क्यों हो उठे हैं। जब ग्राख़िर उसे कारण समझ में ग्राया, वह परेशान हो उठी, किसी स्कूली लड़की की तरह उसका चेहरा लाल हो उठा।

"बैठ जाग्रो, ग्रनाख़ाँ, ग्रौर हमारे काम में हाथ बटाग्रो," यफ़ीम दनीलोविच ने एर्गश की ग्रोर त्योरी चढ़ाते हुए कहा।

ग्रनाख़ाँ ग्राँखें झुकाये ग्रपनी जगह पर वापस जा बैठी। वह शर्म से पानी-पानी हो रही थी। उन्हें एर्गश को फटकारना नहीं चाहिए था। उसकी ग्रपनी ग़लती थी। क्या उन्होंने उसे पार्टी में सिर्फ़ मुबारक देने ग्रौर विदा कर देने के लिए स्वीकार किया था? क्या ग्रब से उनका

काम, उसका काम नहीं? लेकिन उसने क्या किया? वह जाने लगी। ठीक किसी औरत की तरह, अपने स्कर्ट की किनारी थामे वह चुपचाप अपनी जगह चली जाना चाहती थी।

लेकिन अब क्या होनेवाला है? "हमारे काम में हाथ बटाओ" इसका क्या मतलब है? क्या वे उससे किसी भाषण की उम्मीद करते हैं? ख़ास ढंग का भाषण। उसका ख़्याल था, इकाई की बैठकों में लोग किसी ख़ास ढंग से बोलते, साँस लेते हैं।

इससे पहले कि वह अपने विचारों को संजो सके, कुछ अनोखी बातें हो गयीं। यफ़ीम दनीलोविच और फिर सभी दूसरे लोगों ने एर्गश को फटकारना शुरू कर दिया। परियोजना में हुई सारी वारदातों का दोष उस पर लगाया जा रहा था: "फोर्डसन" ट्रैक्टर के ख़राब हो जाने और उस बहुमूल्य करघे के लिए जिसे सुखट्टा मख़सूम ने नाली में उलट दिया था।

यह साफ़ तौर पर ग़ैरवाजिब था। अनाख़ाँ की दुविधा बढ़ गया। क्या एर्गश से कॉमरेड इतने क्रुद्ध थे कि सारी परेशानियों, गड़बड़ियों का दोष उसके सिर थोप देने को कटिबद्ध थे। यह भी ज़ाहिर हुआ कि जुराख़ाँ की मृत्यु के लिए सबसे ज़्यादा दोषी मिल परियोजना का चीफ़ ही है। दुश्मन ने उसके कार्यालय के सामने, जुराख़ाँ को सिर के पीछे से गोली मारी थी। कम्युनिस्टों ने कहा, यह भी एर्गश की ही ग़लती है। वह चीज़ के लिए ज़िम्मेवार था।

अनाख़ाँ उसके पक्ष में एकाध लफ़्ज़ कहना चाहती थी। लेकिन तभी उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा जब एर्गश अपने बारे में कही गयी हर बात से सहमत हो गया। और उसने ख़ुद ही इसका कारण स्पष्ट कर दिया।

"यह एकदम सच है: उतावला सो बावला, धीरा सो गंभीरा," उसने हाथ से बनी मोटी सिगरेट पीते हुए कहा। "लगता है, हमें कोई बुख़ार-सा चढ़ आया है, ख़ुद मुझे और हम में से अधिकांश को। हम हड़बड़ी मचा रहे हैं, उतावले हो रहे हैं। इसके फलस्वरूप, हम दुश्मन के सामने एक के बाद दूसरा कमज़ोर पक्ष उजागर कर देते हैं। आप सब की ही तरह मेरा ख़्याल है, सतर्कता की शुरुआत अच्छे संगठन से होती है।"

"तुम्हारा मतलब इसकी शुरुआत तुमसे होती है!" यफ़ीम दनीलोविच ने कहा। "तुमसे और हम से।"

"यह भी कहने की बात है," एर्गश ने जवाब दिया। "लेकिन यफ़ीम दनीलोविच, आपने ही मुझे लोगों को भाँपना, उन पर निर्भर करना सिखाया था। सतर्कता एक पारस्परिक ज़िम्मेदारी है। लोग ही सतर्कता हैं।"

"मैं मानता हूँ।"

"और संयोगवश आप ख़ुद हर स्थिति में दोब्रोख़ोतोव का पक्ष लेने को तत्पर रहते हैं।"

"मैं लेता हूँ।"

"आप उसका ध्यान इस तरह रखते हैं जैसे मुर्ग़ी अपने चूज़ों का रखती है," एर्गश ने आगे कहा। "लेकिन मुझे पूछने की आज्ञा दीजिए कि वह अग्रप्रेषी एजेंट क़ुद्रतुल्लायेव से किस भांति बेहतर है? एक बाय का बेटा है और दूसरा एक कुलीन का!"

"मैं दोब्रोख़ोतोव पर विश्वास करता हूँ।"

"तो ठीक है, मैंने नुस्रतुल्लाह को उसके काम पर नियुक्त किया है," एर्गश ने तीक्ष्णता से कहा, "और मैं ही फ़ैसला करूँगा कि उसे बर्ख़ास्त किया जाये या नहीं! यह मैं दो टूक कह रहा हूँ। मैं किस तरह का चीफ़ होऊँगा कि मैं अपने आदमी का चुनाव न करूँ और उनके लिए काम न निकालूं?"

"मैं यह बात समझना चाहूँगा, कॉमरेड चीफ़," यफ़ीम दनीलोविच ने एर्गश जैसे लहजे में ही जवाब दिया। "आपका दिशा-निर्देशक क्या है: दृढ़ता, जनता में विश्वास या घमण्ड और प्रभावलिप्सा? दोनों बातें अलग-अलग ध्रुव जैसी हैं।"

"मुझे अपने निर्णयों पर क़ायम रहना चाहिए," एर्गश ने कहा, "और आपको व पार्टी इकाई को मेरी प्रतिष्ठा बनाये रखनी चाहिए।"

यफ़ीम दनीलोविच ने अंगूठे से अपनी मूँछें सहलायीं।

"देखो एर्गश, प्रतिष्ठा का मतलब है—सही निर्णय। मैं यही चाहता हूँ।" यफ़ीम दनीलोविच ने कोमलता से कहा। "तुम उनके पूर्व की तुलना कर रहे हो: एक बाय का बेटा, एक कुलीन का बेटा जैसे वे एक ही खेत के मूली हों। लेकिन मैं उनके काम की तुलना करता हूँ।"

एर्गश ने हठपूर्वक अपने कन्धे सिकोड़े।

"मुझे अभी भी इंजीनियर को उस नये मुल्ले की तरह पसीने-पसीने होते देखना है।"

इसी समय उत्साहपूर्वक अनाख़ाँ बोल पड़ी:

"इंजीनियर एक सहृदय व्यक्ति है।"

चूँकि वह अनजाने यह बात बोल उठी थी, उसने जल्दी से आगे कहा:

"माफ़ कीजिए, मैं बेमौक़े बोल गयी।"

"तुम इसे बेमौक़े क्यों सोचती हो?" यफ़ीम दनीलोविच ने जल्दी से कहा। "तुम एकदम ठीक कहती हो। अच्छे लोग और अच्छा काम हमारी सामान्य प्रतिष्ठा को बढ़ाते और मज़बूत करते हैं। हम कम्युनिस्टों के लिए यह सर्वाधिक बहुमूल्य चीज़ है। सच है या नहीं?"

"कौन इसके बारे में बहस कर रहा है।" एर्गश ने ज़ोर से कहा।

यफ़ीम दनीलोविच ने अपनी चमकदार पीली भौंहें चढ़ायीं।

"कॉमरेडो, क्या हम यह बहुत जल्दी नहीं भूल रहे हैं कि हमने जुराख़ाँ को कैसे खो दिया? क्या हम क्षति की अपनी अनुभूति को भुलाने में बहुत जल्दी नहीं कर रहे? कैसे व्यक्ति, कैसे अनमोल जीवन को हमने गँवा दिया! बेशक, उस आघात ने बहुत से लोगों को पंक्ति-बद्ध किया और उनकी आँखें खोल दीं। लेकिन यह इसका एक ही पहलू है, दूसरा भी है।"

"हाँ, है" अनाख़ाँ दुखित-सी बोल उठी।

शब्द फिर अनजाने उसके होंठों से निकल पड़े थे। लेकिन सब उसकी ओर मुख़ातिब हो गये और उसने आगे कहा:

"आप सब दादी अंजिरत को जानते हैं। वह हशर में आयी थी और अपने साथ एक नहीं, कई औरतों को लायी थी। उसने बेलचा लेकर दूसरों की तरह काम किया और कहती रही: 'अलहमदुलिल्लाह।' लेकिन वह शव-यात्रा में नहीं आयी! पिछले कुछ दिनों से मैंने उसे कहीं भी नहीं देखा है। वह घोंघे की तरह छुपी है और दूसरी उसके उदाहरण पर चल रही हैं। वही एक मात्र नहीं।"

एर्गश मुस्कराये बिना नहीं रह सका।

"मैं मानता हूँ, मैंने बुढ़िया पर कोई ध्यान नहीं दिया," उसने

खिड़की से सिगरेट के बचे-टुकड़े को फेंकते हुए कहा। "हाँ यह मेरी ग़लती है।" विनम्रता से उसने अन्त में कहा: "जब हवा बहती है, बालू को बिखेर देती है, बहन अनाख़ाँ।"

लेकिन अनाख़ाँ ऐसी दृढ़ता से विरोध किया जिसकी उसने कभी कल्पना तक नहीं की थी:

"तुम ग़लत कह रहे हो, एर्गश भाई! यह तुम नहीं थे जिसने उन बालू के कणों को जमा किया था। और उन्हें बिखेर देना तुम्हारे हाथ की बात नहीं—एकदम नहीं!"

एर्गश ने बनावटी घबराहट से अपने हाथ ऊपर उठा लिये।

"मैं कोशिश भी नहीं कर रहा, प्रिय कॉमरेड। मुझे बख़्श दीजिए। मेरे हाथ में काफ़ी है! मेरी ख़ुद की एक बड़ी सहकारिता है, बहन अध्यक्षा।"

इस बार अनाख़ाँ ने एर्गश की बात नापसन्दगी से सुनी। उसे पता ही न चला कि वह अपनी घबराहट पर क़ाबू पा चुकी है। एर्गश जितना उग्र होता गया, उतना ही आत्मविश्वास अनाख़ाँ में भरता गया। वह भूल गयी, उसे एक ख़ास ढंग का भाषण करने की इच्छा थी। अब जो उसे अत्यन्त महत्वपूर्ण चीज़ प्रतीत हो रही थी, वह कोई भिन्न ही चीज़ थी, कुछ एकदम सीधी-सादी-सी। उसे ठीक मालूम था वह क्या चाहती थी।

"बुरा मत मानिए, कॉमरेड चीफ़," उसने शांतिपूर्वक कहा। "मैं भी अपके मामलों में दख़ल दूँगी। मेरा ख़्याल है, मुझे कह देना चाहिए..."

"जैसी आपकी इच्छा। कहती जाइये। मैं तैयार हूँ! एक ही बार में सब कुछ उछाल दीजिए।"

अनाख़ाँ ने निश्चितता से अपनी बात जारी रखी:

"मैं कहना चाहती थी कि हमें एक तार मिला है। हाजिया अपने दल के साथ मास्को से लौट रही है।"

"हाजिया! इतनी जल्दी!" एर्गश चीख़ पड़ा।

वह अपने विचार या अहसास ख़ुद तक छुपाकर नहीं रख सकता था। वह हमेशा अपना ग़ुस्सा भी दिखाता और ख़ुशी भी। उसकी स्पष्टवादिता, हालांकि यह कभी-कभी तीखी और रूखी होती, लोगों के हृदय

छू जाती। शायद यही चीज़ लोगों को उसकी ओर आकृष्ट करती।

"क्या, क्या उन्होंने अपना प्रशिक्षण पूरा कर लिया? मास्टर बन चुकी हैं?" उसने पूछा।

"हाँ।"

"कब—उनके आने की कब तक आशा है?"

"वे चल चुकी हैं। इसी वजह से मैं परेशान हूँ। वहाँ वे छात्रा थीं लेकिन यहाँ वे अध्यापिका होंगी। हमें उनके आगमन की तैयारी करनी चाहिए और जितनी जल्दी उतना अच्छा। हमें उनका समुचित स्वागत करना चाहिए।

"अरे! कुछ फूल लाने में कितना समय लगेगा और अब्दुसमत अपने बाजेवालों को ले आयेगा।"

"तुम ऐसा क्यों कह रहे हो?" अनाख़ाँ ने उसकी मलामत की। "आख़िर तुम नहीं जानते कि हमें एक तकनीकी स्कूल की ज़रूरत है?"

"तुम्हारे पास साज़-सामान हैं। यही मुख्य चीज़ है।"

"लेकिन मकान, मकान! अभी ही यह हालत है कि शहर शिकायत कर रहा है, हमने चंगेज़ख़ाँ के ज़माने के मुग़लों की तरह इस पर कब्ज़ा जमा लिया है।"

"मेरा ख़्याल है, हम क़ुद्रतुल्लाह के पुराने वर्कशॉप को काम में ले सकते हैं।" अनाख़ाँ ने कहा। "बीच की दीवारों को गिरा दो और एक बड़ा हॉल निकल आयेगा। साफ़ करके दीवारों में कुछ खिड़कियाँ निकलवा दो और छत की भी फिर से मरम्मत करनी है जिससे बायों के नहीं आदमियों के रहने लायक हो जाये। उड़ायी चौखटों और करघों को अन्दर इस तरह रखा जाये जिससे वे छात्रों के लिए तैयार रहें, यह नहीं कि गोदामों जैसे पड़े रहे। मेरी इंजीनियर से बात हुई थी। वह सहमत है और जगह को एकदम उपयुक्त बताया है।"

अनाख़ाँ ठीक कह रही थी और एर्गश ने इसे तुरंत मान लिया। लेकिन इंजीनियर के उल्लेख ने उसकी दुखती रग को छू दिया। इसका मतलब है, इंजीनियर और अनाख़ाँ ने उसकी पीठ पीछे सारी बातें तय कर ली थीं।

"एक मिनट," एर्गश ने जबरन मुस्कराते हुए कहा। 'यह सब

आपको क्यों इतना परेशान कर रहा है? सहकारिता की अध्यक्षा के नाते या बस महिला श्रम की एक प्रोत्साहिका के नाते?"

अनाख़ाँ ने अपने कन्धे सीधे किये।

"एर्गश भाई, तुमने पार्टी में मेरी सिफ़ारिश की है," उसने सादगी से कहा। "तुम नहीं जानते कि आज मुझे पार्टी में स्वीकार कर लिया गया?"

कम्युनिस्ट प्रशंसापूर्वक हँस पड़े और अनाख़ाँ ने तक़ल्लुफ़ से कहा:

"और फिर मुझे बताया गया कि मुझे जुराख़ाँ की तरह महिला विभाग में नियुक्त किया जायेगा।"

"शायद हम इस विषय पर तब बात करेंगे जब तुम्हारी नियुक्ति हो जायेगी?"

"लेकिन क्या यह उचित नहीं कि सब चीजें पहले से ठीक तरह से तैयार कर ली जायें?" अनाख़ाँ ने मुस्कराते हुए प्रत्युत्तर दिया। "क्या यह अच्छा संगठन और अच्छी सतर्कता न होगी?"

व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ एर्गश ने दूसरी सिगरेट जलायी।

"तुम्हारा क्या ख़्याल है, एर्गश, हमने उसकी सिफ़ारिश करके ग़लती नहीं की थी?" यफ़ीम दनीलोविच ने उससे थोड़ी तम्बाकू लेते हुए पूछा।

"अगर मैं जानता, यह ऐसी होगी, मैं और सोच-विचार कर लेता," एर्गश ने जवाब दिया।
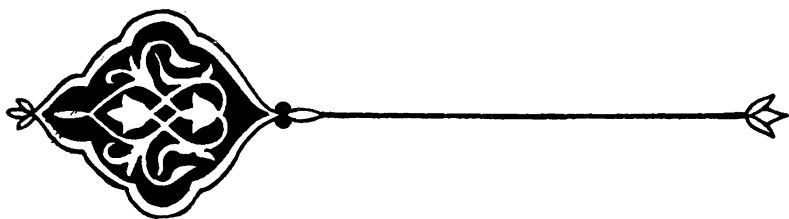
छब्बीसवाँ भाग

"अरे दुलक के। जल्दी-जल्दी, ज़ोर लगा के!"

छोटा, बड़ा पेटवाला घोड़ा, डूबते सूर्य के किरणों से एक ओर रोशन

होता, सुस्ती से खींचे जा रहा था। पुरानी टूटी-फूटी टमटम झटकेदार सड़क पर धीरे-धीरे चल रही थी–चारों पहिये डोलते-चरमराते, अपना-अपना राग निकाल रहे थे। इस पर सीमेंट लदा था।

नुस्रतुल्लाह एक पहिये पर अपने पैर लटकाये आगे बैठा था।

"मेरी दसवीं खेप," ऊबड़-खाबड़ सड़क पर टमटम के झटकों के हिचकोले खाते उस ने उदासी से सोचा। "आज के लिए काफ़ी है। मैंने इसे किताब में दर्ज कर दिया है। मेरी दसवीं खेप। आज के लिए काफ़ी है। सूर्य डूब रहा है। आज यह मेरी दसवीं खेप है। काफ़ी है।"

उसके विचार भी ऊबड़-खाबक सड़फ पर टमटम की तरह घिसटते-उछलते चल रहे प्रतीत हो रहे थे।

वह अपनी उदासीन नज़र मक्के के खेतों पर भटकाने लगा। पतझड़ के पहले पाले से ध्वस्त पत्ते हलके-हलके डंठलों से छूटकर गिर रहे थे। निर्माण-स्थल से गोल आरे की भिनभिनाहट साफ़ आ रही थी। अगर नुस्रतुल्लाह से पूछा जाता, वह नहीं बता पाता कि उसे क्या महसूस हुआ: अन्याय, भय या आशा। एर्गश ने उसे अकेला छोड़ दिया। यह अच्छा था। क्षण भर के लिए ही सही, वह बशारत को रोज़ देख तो पाता था। यह भी अच्छा था। ख़ुदा का शुक्र है, चाय-विक्रेता उसे परेशान नहीं कर रहा था। और यह भी अच्छा ही था, उसने सोचा। उसकी थोड़ी और शराब पीना वह पसन्द करता, लेकिन उसके साथ एकदम ही न पिये, वही सबसे अच्छा है। नुस्रतुल्लाह उसे फिर कभी न देखने की उम्मीद करता था। हाँ, यही ठीक होगा। बेशक, यही बेहतर होगा। बहुत ही अच्छा। चाय-विक्रेता उस का था क्या? उससे उसका क्या मतलब। नुस्रतुल्लाह सीमेंट ढो रहा था। स्टेशन पर लादता और निर्माण-स्थल पर उतारता। आज यह उसकी दसवीं खेप थी। सूर्य डूबने-डूबने को था। आज के लिए काफ़ी है ...

काश उसे थोड़ा-सा ताज़ा झागदार बोज़ा मिल जाता। अलस भाव से मुस्कुराते हुए उसने होंठों पर जीभ फेरी। यह उसकी मनभायी चीज़ होती और इसके साथ ही सुखद स्मृतियाँ जाग पड़ीं ... दलाल तुर्दिमत के यहाँ उमर विनोदी के साथ उसने निश्चय ही यह काफ़ी पीया था। हाँ, क्या दिन थे वे ... अब उमर कहाँ है? नुस्रतुल्लाह की तरह ही निठल्ला और अव्यावहारिक। उस की एकमात्र ख़ूबी थी, लड़कियों के

बारे में मन-मुग्ध करनेवाली बातें करने की। बशारत का वर्णन करने के लिए क्या लफ़्ज़ इस्तेमाल किये थे! "अगर उसका मुखड़ा सत्तर परदे में भी छुपा हो, घर में एक भी दीपक जलाये बिना, चालीस रातों का सुख लेने के लिये एक परदा उठाना काफ़ी होगा ..." बात कर सकता था वह काहिल, निश्चित ही। उस से यह ख़ासियत छीनी नहीं जा सकती थी। ओह, इस दुनिया में क्या औरतें हैं!

अपने सिर के पीछे हाथों को जोड़कर नुस्रतुल्लाह सीमेंट पर पीठ के बल लेट गया और अंधेरा होते आसमान को ताकने लगा। उसके पास स्वर न था फिर भी वह गाने लगा:

मैं कितना व्यथित
तुम कितना व्यथित,
जुदा हम दोनों कितने व्यथित

सहसा टमटम चरमरायी और एक ओर झुक गयी। नुस्रतुल्लाह जल्दी से उठ बैठा और आस-पास देखने लगा।

उसकी बग़ल में लोहे की-सी जकड़ में उसका कंधा थामे क्षुद्र चाय-विक्रेता बैठा था। नुस्रतुल्लाह अपने काले चेहरे पर मृदु मुस्कान ले आया।

"डरने की कोई ज़रूरत नहीं। तुम्हारे लिये मेरे पास कुछ अच्छी ख़बरें हैं," चाय-विक्रेता ने धीमी आवाज़ में कहा। "लगता है मैं ठीक समय पर आया।"

"मैं ... मैं डरा नहीं हूँ," नुस्रतुल्लाह ने घबराहट से अपने आस-पास देखते हुए जवाब दिया।

चाय-विक्रेता ने भी आस-पास देखा।

"कोई नहीं। दरवेश की उदर की तरह ख़ाली और अंधेरा है। मुझे यह समय और ऐसी जगहें पसन्द हैं। मैंने आपको मीठे सपनों में डूबे आते देखा। जानते हैं, मैं ख़ुद एक स्वप्नदर्शी हूँ। जब मैं नौजवान था, स्त्री जाति ने मुझे कई बार दर्दे-दिल दिया। मैं आपको एकदम साफ़-साफ़ बताता हूँ: भले ही मैं नाज़नीनों का शिकार बना होऊँ, वेदनाएँ और सपने उनसे कहीं ज़्यादा मधुर हैं। शायद ही आप यह इनकार कर पायेंगे।"

नुस्रतुल्लाह ने मायूसी से ठंडी साँस ली। लगाम उसके घुटनों से सरक गयी।

"आप बिलकुल ठीक कहते हैं, मेरे प्यारे मुहम्मद सईद। वह इतनी ख़ूबसूरत हो गयी है कि उसे दूर से देखकर भी मुझे चक्कर आ जाते हैं।"

"देखिये, यही तो बात है," चाय-विक्रेता अपने दाँत दिखाता हुआ बुदबुदाया। "और आप मुझसे छिपा रहे हैं। आप को ऐसा नहीं करना चाहिए, मेरे दोस्त! मेरे अलावा और कौन है जिसके सामने आप अपना दिल खोल सकते हैं? यहाँ, इन लोगों में कौन आपको समझ सकता है?"

नुस्रतुल्लाह ने अंधेरे में उसके चेहरे की ओर ध्यान से देखा। वह मज़ाक़ करता नहीं लग रहा था। सच ही तो, वहाँ वह किस पर भरोसा कर सकता था? वह दुनिया में नितांत अकेला था।

"मैंने उसे दोपहर के भोजन के समय देखा था," उसने अपना सिर लटकाते हुए कहा। "वह लड़के-लड़कियों के एक झुंड में प्रचार-कार्य कर रही थी। अगर मुझे यह नहीं मालूम होता कि लड़कों के सामने चेहरा ढँके बिना खड़ी वही है तो शायद मैं सोचता, किसी हूर को देख रहा हूँ! ओह, परम आदरणीय मुहम्मद सईद साहब – मैं उसे अब देख तो सकता हूँ, मेरी आँखें देखकर चौंधिया जाती हैं और अगर मैं उसकी कमनीयता का शिकार बन जाऊँ तो कोई परवाह नहीं..."

चाय-विक्रेता ने अफ़सोस से अपनी जीभ चटकायी।

"मेरे छोटे भाई, ज़रा साफ़-साफ़ कहिये, क्या आपको पूरा विश्वास है, इन छोकरों में कोई उसे फँसा नहीं लेगा?"

नुस्रतुल्लाह एक अजीब संभ्रान्त अन्दाज़ से व्यंग्यपूर्वक मुस्कुरा उठा।

"न-नहीं। अब वे पुराने दिन नहीं रहे। वह पहुँच से बाहर है। उसे किसी चीज़ का डर नहीं और वह किसी जवान की तरह बोलती, काम करती है। आपको उसे बेलचे से सीमेंट उठाते देखना चाहिए।"

"सीमेंट? ऐसी हालत में मैं ग़लती पर न था," चाय-विक्रेता ने ख़ुश्क लहजे में कहा। "मेरी बातें ध्यान से सुनिये और आप महसूस करेंगे मैं आपका सच्चा दोस्त हूँ। मैं ज्यादा कहना पसन्द नहीं करता। बिना देर किये हमें काम शुरू कर देना चाहिए।"

नुस्रतुल्लाह डरकर चाय-विक्रेता से परे हट गया और ऐसा लगा उसने इस पर ध्यान नहीं दिया था।

"मैंने आपके लिए कुछ किया है, मेरे बेटे। यह एक पुरानी लेकिन जाँची-परखी तरकीब है और इसे हमारे बाप-दादा इस्तेमाल करते आये हैं। जब मैं नौजवान था तब भी मुझे इसके इस्तेमाल करते हिचकिचाहट नहीं हुई थी। मैंने इसे कई बार परखा है और एक बार भी भूल नहीं की।" उसने अपने कमरबन्ध को टटोलकर कई छोटी-छोटी काली शीशियाँ निकालीं। "यह रही, इन्हें रख लीजिये। कितना ख़र्च मेरा आया, मैं नहीं बताऊँगा। यह मेरी ओर से आपके लिए तोहफ़े हैं।"

नुस्रतुल्लाह ने शीशियों को नहीं छुआ।

"वे हैं क्या?"

चाय-विक्रेता अपने कंधे सिकोड़ता धीरे से हँस पड़ा।

"शायद आपको इनकी ज़रूरत नहीं। यह आपका मामला है—शीशियों में जादुई दवा है। मुझे एक दरवेश से मिली थी। लेकिन अगर आप उन्हें नहीं चाहते, मैं उन्हें नाली में फेंक देने से नहीं हिचकिचाऊँगा और मुझे अपनी बेवक़ूफ़ी का मज़ा मिल जाएगा!"

चाय-विक्रेता शीशियों को अपने सिर से ऊपर ले गया लेकिन तभी नुस्रतुल्लाह ने उसकी बाँह थाम ली।

"ठहरिये, न फेंकिये!"

"नहीं, मैं देख रहा हूँ, आप दोस्ती को अपने बाप जितना ही आँकते हैं," चाय-विक्रेता ने उलाहना देते हुए कहा। "उन्होंने मेरा विश्वास नहीं किया जब मैंने उन्हें वचन दिया था कि आपकी भाग्य के भरोसे नहीं छोड़ दूँगा। सच ही है आप एक बाय के बेटे हैं और जैसा बाप वैसा बेटा!"

"मैं नहीं जानता... मुझे इससे करना क्या है?" नुस्रतुल्लाह ने शीशियों को परख लेने का प्रयत्न करते हुए बुदबुदाकर कहा।

उसे छेड़ते हुए, चाय-विक्रेता ने एक शीशी उसके चेहरे के सामने कर दी।

"पहले आपको विश्वास करना चाहिए! इसकी शक्ति पर विश्वास करना चाहिए!"

"मैं विश्वास करता हूँ – मैंने कब कहा मुझे विश्वास नहीं।"

चाय-विक्रेता नुस्रतुल्लाह की ओर झुक गया।

"तो आपको एक काम करना है। रोज़ाना इन में से एक-एक आपको कंकरीट-मिक्सर में फेंकते जाना है और सावधान रहें, कोई आपको देख न पाये। याद रखिये, एक दिन में एक।"

"लेकिन क्यों – कंकरीट-मिक्सर में क्यों?"

"जैसा मैं समझता हूँ, वह कंकरीट मिलायेगी न?"

"हाँ।"

"फिर क्यों पूछ रहे हैं?"

नुस्रतुल्लाह ने बिना हजामतवाला अपना गाल सहलाया।

"लेकिन कंकरीट – उसका नुक़सान तो नहीं होगा?"

चाय-विक्रेता हलके-हलके हँसता हुआ पीठ के बल धीरे-धीरे लेट गया। उसके दाँत चमक रहे थे और प्रतीत हुआ वह दिल से हँस रहा था। लेकिन हँसी नुस्रतुल्लाह के कानों को नागवार लग रही थी।

आख़िरकार चाय-विक्रेता ने उसके कंधे पर धौल जमायी।

"आप अभी तक कितने बच्चे हैं! यदि आपको शहद भी देना हो तो चम्मच से चटाना होगा, इस डर से कि कहीं आपका दम न घुंट जाए। अब ज़रा सोचिये, क्या दवा की एक शीशी से कंकरीट को नुक़सान पहुँच सकता है?"

थोड़ी देर रुकने के बाद उसने सर्द लहजे में कहा:

"ठीक वैसा ही करना जैसा मैं बता रहा हूँ। समझे? परसों आपके उस कार्यालय में क्या खिचड़ी पक रही थी?"

"कुछ ख़ास नहीं।"

"क्या उन्होंने पार्टी की बैठक की थी?"

"हाँ," नुस्रतुल्लाह ने बुदबुदाकर कहा।

"तो क्या मैंने आपको अपने आँख-कान खुले रखने का आदेश नहीं दिया था?"

नुस्रतुल्लाह मौन रहा।

"हाँ तो?" चाय-विक्रेता ने भयभीत करनेवाले लहजे में दुहराया।

"एर्गश सुल्तानोव ने अस्पताल से मख़सूम के लौटते ही कार्रवाई करने की धमकी दी।"

"बेकार! बकवास! थोथी बात। वर्षा से सड़क टूट जाने पर किसी पर मुक़दमा नहीं चलाया जा सकता। हाँ तो? और क्या?"

नुस्रतुल्लाह ने कोई जवाब नहीं दिया।

चाय-विक्रेता ने पोटली में अपनी शीशियों को हिला कर बजाया।

"मैं आपको अवज्ञा और अड़ियलपन के लिए सज़ा देना चाहूँगा। मुन्ने! मैं आपको ख़ुद बताऊँगा, वहाँ क्या हुआ। उन्होंने आपकी और इंजीनियर की भर्त्सना की। क्यों, ऐसा नहीं? मैं तो सिर्फ़ यह निश्चित करना चाहता था कि आप कितने एहसानफ़रामोश, नीच आदमी हैं। ठीक है। इस बार मैं माफ़ कर दूँगा। शीशियाँ ले लीजिये। छुपा लीजिये। गप-शप हो गयी, बस काफ़ी है।"

सिकुड़ता हुआ नुस्रतुल्लाह ने शीशियों को अपने चोग़े की तहों में छुपा लिया।

"और अब जाते-जाते एक सलाह सुन लीजिये," चाय-विक्रेता ने आगे कहा। "इंजीनियर को विश्वास में लीजिये। उसे चाय पर बुलाइये। वही एक ऐसा है जो परियोजना में सुल्तानोव या नदेझ्दिन के आपसे नाराज़ हो जाने पर काम में लगाये रख सकता है। वह किसी औरत की तरह दयालु है—और आप दोनों अकेले हैं।"

सीने से अपना हाथ सटाता नुस्रतुल्लाह उल्लसित हो उठा।

"शुक्रिया, परम आदरणीय मुहम्मद सईद साहब। मैं समझता हूँ। ठीक यही मैं भी करना चाहता था।"

"चाहते थे? बहुत ख़ूब। तो आप सिर्फ़ उजड्ड ही नहीं हैं। फिर आप इस बारे में इतना सुस्त क्यों हैं?"

"विश्वास कीजिये, मैं उसे आमंत्रित करूँगा। क़सम से, मैं यह करूँगा!"

"आमीन," चाय-विक्रेता ने जवाब दिया।

घोड़ों को लगामों से झटका लगा। नुस्रतुल्लाह ने उन्हें पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। घोड़े ने अपनी पूँछ से उसके चेहरे पर चोट पहुँचा दी।

"लानत है!"

जब सीधा होकर उसने मुड़कर देखा तो चाय-विक्रेता टमटम से जा चुका था।

उसी क्षण नाले के पार नये पुल पर घोड़े के टापों की आवाज़ गूंज उठी। टमटम ज़्यादा तेज़ी से निर्बाध चल पड़ी।

एक मन्द्र आवाज़ ने नुस्रतुल्लाह् का स्वागत किया: "काश तुम्हें कभी थकान न हो, अग्रपेषी एजेंट!"

एक लम्बी, चौड़े कंधोंवाली आकृति रेलिंग से हटकर लम्बे-लम्बे डेग बढ़ाती टमटम के पास पहुँच गयी।

नुस्रतुल्लाह् का दिल अंदर ही अंदर डूबने लगा। उसने यफ़ीम दनीलोविच को पहचान लिया।

"अहा, कॉमरेड नदेझ्दिन। बैठ जाइये। रोक के!"

"चलाते रहो, रुको मत," यफ़ीम दनीलोविच ने कहा। "उस तरह चढ़ बैठने से पैदल चलना ही बेहतर है। क्या वहाँ बहुत सीमेंट बचा है?"

"एक दिन का काम भर, कॉमरेड नदेझ्दिन। छह गाड़ियों भर। हम कल ख़त्म कर देंगे।"

धुरे पर खड़ा हो, यफ़ीम दनीलोविच नुस्रतुल्लाह् की बग़ल में उछलकर आ गये।

"तुम्हारे साथ वह कौन था?"

घबड़ाकर नुस्रतुल्लाह् ने चोग़े के अंदर शीशियों को टटोला और सीने से दबा लिया। उसे अपने जबड़े जकड़ते महसूस हुए, वह एक भी शब्द नहीं बोल सका।

"चुप क्यों हो? तुम्हारे साथ टमटम पर कौन था?"

"क-कोई भी नहीं था।"

"झूठ क्यों बोल रहे हो? मैंने आवाज़ें सुनी हैं!"

नूस्रतुल्लाह् को पसीना आ गया।

"अरे! वह? एक बीमार आदमी था, किसी काम का नहीं।"

"किसी काम का नहीं? तो फिर गाड़ी में क्यों बैठा लिया था?"

"मैं ... मैं नहीं जानता। वह ख़ुद चढ़ गया था।"

"कहाँ है वह?"

"मुझे नहीं मालूम। वह चला गया।"

"वह शहर से चढ़कर आया और शहर वापस लौट गया?"

"न ... नहीं। शहर क्यों? गाँव गया!" नूस्रतुल्लाह् ने गहरी साँस

ली और जल्दी से आगे कहा: "वह गाँव जा रहा था। यही तो मैं आपको कह रहा हूँ–गाँव को गया। सफ़ेद दाढ़ीवाला बूढ़ा आदमी है। आपने ख़ुद कहा था, हमें गाँव के लोगों से एकजुट होकर रहना चाहिए।"

यफ़ीम दनीलोविच व्यंग्यपूर्वक मुस्कुरा उठे।

"तो फिर गाँव के किसी सफ़ेद दाढ़ीवाले बूढ़े आदमी के बारे में इतनी घटिया तरह से क्यों बात की?"

"मैं–मैंने सोचा, आप मुझे डाटेंगे। मुझे देर हो गयी थी।"

"हूँ। तुमने उससे किस चीज़ के बारे में बातें कीं?"

"ओह, भांति-भांति चीज़ों की।"

"फिर भी मैं जानना चाहूँगा।"

नुस्रतुल्लाह का दिमाग़ तेज़ी से काम करने लगा।

"अरे हाँ, हम ने एक लड़की के बारे में बातें कीं।"

"ऐसा? तुम्हारा वह सफ़ेद दाढ़ीवाला बूढ़ा, बीमार आदमी लड़कियों में दिलचस्पी लेता है?"

"हाँ–हाँ, मेरा मतलब है नहीं। उसकी दिलचस्पी नहीं–उसे बस हमदर्दी है। ठीक-ठीक कहूँ तो वह उनपर हँसता है जिन्होंने परंजी उतार दी है।"

"हँसता है, हमदर्दी रखता है। अजीब बात है।"

"उसने भी यही कहा था कि उसे बहुत उत्सुकता है। और उसने मुझसे कहा–बताओ परंजी बिना लड़कियाँ कैसे व्यवहार करती हैं।"

"हमारी किन लड़कियों ने परंजी उतारी है? बशारत ने?"

नुस्रतुल्लाह यफ़ीम दनीलोविच की बात से चौंक पड़ा। क़िस्मत से नदेझ्दिन ने उसे अंधेरे में आँखें फाड़ते नहीं देखा।

"क्या, आपने किसके बारे में कहा?"

"बशारत!" यफ़ीम दनीलोविच ने दुहराया। "तुम किस बात से इस तरह चौंक उठे? आख़िर तुम्हें हुआ क्या है?"

"मुझे? कुछ भी नहीं। मेरे साथ कोई भी बात नहीं।"

यफ़ीम दनीलोविच उसके और भी क़रीब खिसक आये और उसके चेहरे की ओर देखा। फिर नम्रता से कहा:

"अग्रपेषी एजेंट, तुम ख़ुद ही अपनी बातें काट रहे हो। तुम किस लिए ऐसा कर रहे हो? तुमने अभी जो कुछ कहा, वह झूठ ही झूठ

है, है न? क्या तुम मुझे सच बता सकते हो? मन की बात कह डालो . . ."

नुस्रतुल्लाह काँप उठा। उसने कंधों में अपना सिर दबा लिया और अपने होंठ काटे – उसे डर था, कहीं वह रो न पड़े जिस तरह चाय-विक्रेता के पास रोया था। अंधेरा उसकी सहायता कर रहा था। उसकी इच्छा हुई, उन शीशियों को चोग़े से बाहर निकाल कर फेंक दे। किसे मालूम, उन शीशियों में क्या है और आकस्मिक रूप से वह कलमुँहा चाय-विक्रेता इतना सहृदय क्यों हो उठा था।

"तुम चुप हो। तुम बात करना नहीं चाहते!" यफ़ीम दनीलोविच ने अपनी गहन मन्द्र आवाज़ में कहा।

"मैं बात कर रहा हूँ। मैं आपको सब कुछ तो बता रहा हूँ," नुस्रतुल्लाह ने अस्पष्ट आवाज़ में कहा।

"शायद तुम मुझे कभी और बताओगे?" यफ़ीम दनीलोविच ने पूछा। "ईमानदारी से रहना ज़्यादा आसान होता है।"

"मैं ईमान्दार हूँ, कॉमरेड नदेझ्दिन। मेरा यक़ीन कीजिये," नुस्रतुल्लाह ने टूटती आवाज़ में कहा।

तथापि वह पूरी तरह खुल कर सामने आने में भयभीत था।

"नहीं," उसने सोचा, "अच्छा होगा, पहले मैं इंजीनियर से पूछ लूंगा, कहीं दवा कंकरीट के लिए नुक़सानदेह तो नहीं।"

"तो हम फिर कभी बातें करेंगे, ठीक?"

"हाँ," नुस्रतुल्लाह ने निःशब्द जवाब दिया।

सामने रोशनियाँ दिखायी देने लगीं। क़ब्रगाह के किनारे-किनारे, निर्माण-स्थल तक सड़क चली गयी थी। घोड़ा आदतन, कई बार तय किये गये रास्ते पर मुड़कर उस शेड की ओर चल पड़ा जहाँ सीमेंट रखा जा रहा था।

"अच्छा, इतने के लिए धन्यवाद। फिर मिलेंगे," यफ़ीम दनीलोविच ने टमटम से उछलकर उतरते हुए कहा।

सीमेंट उतारने के बाद नुस्रतुल्लाह इंजीनियर को ढूंढ़ने लगा, वह अपने कार्यालय में मिला।

दोब्रोख़ोतोव प्राय: रात में देर तक काग़ज़ के शेडवाले पैराफ़िन लैंप की रोशनी में नक़्शानवीसी की मेज़ पर बैठा करता। वह निर्माण-स्थल

पर काम शुरू होने से बहुत पहले, सुबह की पहली किरण के साथ ही चला आता और गोदामों, नींव की खाई में सब चीज़ों की जाँच करता, माँप लेता और अपनी बही में दर्ज करता फिरता। निर्माण-स्थल पर काम करनेवाला हर कोई इस बही से परिचित था क्योंकि फ़ोरमैन मुश्किल से अभी काम पर आये ही होते कि वह इसे खोल लेता और नम्र किन्तु दृढ़ आवाज़ में उन के सिरों पर झिड़कियों की वर्षा होने लगती।

मज़दूर उसकी इज़्ज़त करते थे और उसे "चाचा निशाजागी" कहकर पुकारते। लेकिन बहुत से लोग इस पर सन्देह किया करते कि वह देर तक जागता है, सवेरे उठ जाता है, शालीन और इसके साथ ही कठोर भी है और अपनी बही में सब लोगों के नाम भी दर्ज किये रहता है।

कोई नहीं जानता, यह कैसे मशहूर हो गया कि इंजीनियर, जैसा कि लोग कहते, किसी रूसी अमीर, राजकुमार या काउंट का बेटा था। शायद नाजायज़ पुत्र। इसके बावजूद वह बेरहमी से काम करता। क्या यह सन्देहास्पद नहीं था? सुखट्टा मख़सूम के नाले में करघे को गिरा देने के बाद से इंजीनियर दुबला होने लगा और दुखी रहता। यह भी सिर्फ़ संयोग की बात न थी।

नुस्रतुल्लाह ने दोब्रोख़ोतोव को एक नक़्शा में चेहरा गाड़े, हाथ पर गाल रखे सोया पाया।

नुस्रतुल्लाह ने धुआँ करती लैंप की बाती कम कर दी लेकिन इंजीनियर को जगाने में उसे कई मिनट लगे। वह कोई बुरा सपना देख रहा था जिस के कारण कुछ बुदबुदा रहा था और उसके गले से घर्रघर्र की आवाज़ आ रही थी। जब वह जागा, उछलकर खड़ा होते चीख पड़ा:

"कहाँ? जल्दी से!"

नुस्रतुल्लाह को देखकर तुरन्त ही उसने अपनी जेब से बही निकाली और हर तरह से क्षिप्र कही जानेवाली आवाज़ में कहा:

"मुझे तुमसे निराशा हुई है, क़ुद्रतुल्लायेव। सिर्फ़ हमारे-तुम्हारे बीच की बात है, मैं बस हैरान हूँ। खुदाई मज़दूर के रूप में तुम निर्दोष रूप से काम कर रहे थे। मैं तुम्हें आदर्श के रूप में अंगुली उठाकर कह सकता था, लेकिन जैसे ही तुम अग्रपेषी एजेंट बने – तुम आलसी हो गये या क्या? तुमने अपने पर क़ाबू खो दिया है। दिमाग़ में रख लो – तुम्हें ख़ास तौर पर पूरी तरह खरा उतरना है। तुम्हें और मुझे,

हम अपने को बेपरवाह नहीं छोड़ सकते! उस दसवीं खेप के साथ तुम कहाँ थे?"

आँखें ज़मीन पर किये, नुस्रतुल्लाह उसके सामने खड़ा रहा।

"आप देर तक काम करते हैं, इंजीनियर भाई," उसने हठात कहा। "आप मेरे घर पर आ सकते हैं। यह बस यहीं पर है। अगला दरवाज़ा। मैं आपको चाय पिलाऊँगा। अगर आप चाहें, मैं यहीं ला सकता हूँ।"

दोब्रोख़ोतोव पूरी तरह अपनी नींद को दूर नहीं कर पाया था, उसने सोचा नुस्रतुल्लाह उसकी कृपा-दृष्टि पाने की कोशिश कर रहा है। झटके से अपनी बही बन्द करते हुए उसने अपनी भौंहें चढ़ा लीं।

"मुझे माफ़ करना। शुक्रिया, लेकिन हर चीज़ के लिए समय होता है।"

"लेकिन मैं चाहता था," नुस्रतुल्लाह ने अपनी आवाज़ धीमी कर ली, "मैं आप से पूछना चाहता था..."

"ख़ुशी से। मैं सेवा में हाज़िर हूँ। मैं बिना चाय के जवाब दे सकता हूँ।"

"नहीं, यह एक राज़ की बात है, मैं नहीं चाहता कोई जाने।"

दोब्रोख़ोतोव के चेहरे का रंग थोड़ा उतर गया और उस ने आँगन की दूसरी ओर से आती एर्गश की आवाज़ सुनी।

"हम अकेले हैं," उसने चिन्तापूर्वक कहा। "तुम यहाँ बात कर सकते हो।" नुस्रतुल्लाह चुप था। "क्या कोई घटना हो गयी है? शायद तुम मेरे साथ चीफ़ के पास चलना चाहोगे?"

"नहीं, नहीं," नुस्रतुल्लाह चीखा। "मैं आप से बात करना चाहता हूँ।"

"ठीक है, मैं सुन रहा हूँ।"

"मेरे घर पर आइये, हम थोड़ी चाय पीयेंगे। मैं सौगंध खाकर कहता हूँ, मैं आपको आमंत्रित करूँगा।"

दोब्रोख़ोतोव ने अपनी नाक का बाँसा खुजलाया। वह जानना चाहता था, आख़िर माजरा क्या है। चाय की प्याली के लिए तो वह तरसता रहता था लेकिन नुस्रतुल्लाह एक बाय का बेटा था... क्या यही काफ़ी नहीं है कि इंजीनियर एक रूसी अमीर का नाजायज़ बेटा था! और फिर

ग्रामंत्रित करने का यह ग्रजीब ढंग: "मैं सौगंध खाता हूँ..." "...यह एक राज़ की बात है..."

"यह तनिक ग्रासान नहीं, कॉमरेड क़ुद्रतुल्लायेव," दोब्रोख़ोतोव परेशानी से कहा। "मेहरबानी करके मुझे ठीक ढँग से समझो। रात में—चाय। मैं चाहूँगा कि तुम मुझसे कम से कम ग्राधी रात के पहले मिलने ग्राया करो!"

सहसा नुस्रतुल्लाह भी भयभीत हो उठा। उसे ग्रपने ग्रन्दर सिहरन-सी रेंगती महसूस हुई।

इंजीनियर माफ़ी माँगता जा रहा था लेकिन नुस्रतुल्लाह भय से ग्रौर ग्रन्दर ही ग्रन्दर हठात उबलते ग़ुस्से से उसके पैरों की ग्रोर देख रहा था।

"मैं कल थोड़ी देर के लिए ग्रा जाऊँगा। हाँ, ग्रगर तुम चाहते हो, मैं वैसा ही करूँगा," दोब्रोख़ोतोव ने वादा किया।

जवाब दिये बिना नुस्रतुल्लाह दरवाज़े की ग्रोर मुड़ गया।

ग्रपना-ग्रपना इरादा ज़ाहिर किये बिना, बातचीत को बीच में ही ख़त्म करके ग्रौर छुपे-छुपे एक-दूसरे से डरते हुए वे विदा हो गये।

ग्राँगन में नुस्रतुल्लाह का कुत्ता दौड़कर उसके पास ग्राया। उसने कसकर उसे एक लात जमा दी, वह उससे दूर भाग गया। उसके बाद बहुत देर तक सशंकित वह उसका ज़ोर-ज़ोर से केकियाना सुनता रहा।

सत्ताईसवाँ भाग

लोगों के देखते-देखते निर्माण-स्थल का कायापलट हो रहा था।

तराशी गयी झाड़ी की तरह दिखाई देता ढाँचा नींव की खाई से ऊपर की ग्रोर उठता जा रहा था। कंकरीट-मिक्सर का ग्रण्डाकार ड्रम

तब ज़ोरों से गरज उठता जब यह घूमता और पानी के साथ-साथ छप-छप करता कंकरीट इससे लुढ़कता ठेलों में आ गिरता। खाई तक बाल्टियाँ ले जानेवाली चर्खियाँ चरमरा उठतीं। यहाँ-वहाँ लाल-लाल ईंटों की चिनाई दिखाई देती।

"हमने खुदाई ख़त्म कर ली है। हमने निर्माण शुरू कर दिया है!" एक राजगीर ने कहा।

नींव की खाई के पास पीले, जीर्ण-शीर्ण लटकते पत्तोंवाला एक अकेला गेंद जैसा गोलाकार शहतुत का पेड़ खड़ा था। इसके तने के साथ एक बड़ी-सी तख़्ती कील लगाकर ठोक दी गयी थी। इस पर दीवारी समाचार-पत्र, सूचनाएं और फीके पड़ गये इश्तहार टंगे थे। इस जगह को "लाल कोना" कहा जाता।

जब परियोजना की शुरुआत हुई, नैमन्चा का तेज़ चायख़ानावाला दो समोवर लेकर यहाँ चला आया। सुबह से रात तक समोवर उबलने के लिए अंगीठी पर रखे रहते लेकिन कंकरीट का काम करनेवाले, निर्माण-कर्मी और राजगीर जस्ते की टंकी का क्लोरिन गंधयुक्त ठंडा पानी पीना ही पसन्द करते। जब-तब चायख़ानावाला उस टंकी को घूर लेता, उस की आँखों में उपहासजनक, निराशा मिश्रित घृणा होती। हल्की ज़ंजीर से लटकता टिन का जग, लोगों के हाथों से गुज़रकर दिन भर खड़खड़ाता रहता लेकिन उबलते समोवरों के इर्द-गिर्द रखी गयी प्यालियाँ ख़ाली रहतीं।

चायख़ानावाला सुनी-अनसुनी करते ग्राहकों को आवाज़ देता, व्यर्थ ही अपना मज़ाक़ बनाता:

"एक मिनट ठहर जाओ, मेरे मालिको! एक प्याली तो मुझसे पी लो। शुरू तो हो जाये। तुमने ऐसी चाय कभी नहीं चखी है!"

"कौन अपने होंठ जलाये," जवाब मिलता। "हमारे पास आ जाओ — हम तुम्हारी प्याली कंकरीट से भर देंगे।"

फिर भी चायखानावाला निराश हो हार नहीं माना। वह पढ़ने का अभ्यास करता रहता, एक सिरे से वह घंटों अपनी तोंद पर जुड़े हाथ रखे, दीवारी समाचार-पत्र के पास खड़ा रहता। वह अक्षर-अक्षर करके पुराने लेखों को ज़बान चटकाता बार-बार अचंभित होना बन्द किये बिना पढता और अपने आप से कहता:

"बाप रे, क्या नाम रखा गया इसका: "साही!," काग़ज़ तो इतना चिकना है लेकिन शब्द कांटों की तरह चुभते हैं।" और वह हर्षपूर्वक हँसी के ठहाके लगाने लगता। "बहुत ख़ूब, तुम्हारे माँ-बाप को मेरा धन्यवाद!"

"ऐ चायखानेवाले," मज़दूर उसे पुकारते। "क्या शैतान से अठखेली कर रहे हो?"

चायख़ानावाला अपनी अंगुली से दीवारी समाचार-पत्र की ओर टहोकते हुए, लगभग याद्दाश्त के सहारे ज़ोर-ज़ोर से कोई लेख पढ़ने लगता:

"ग़ै-र-ज़ि-म्मे-वार शौ-हर... सब जानते हैं कि सोवियत शासन के अन्तर्गत महिलाएं पुरुषों के समकक्ष हो गयी हैं। हूँ... लेकिन राजगीर नारमत वल्द कुर्बान... वही," चायखानावाला साथ-साथ समझाता भी जाता, "हमारा नैमन्चावाला छैला नारमत। उसी के मुतल्लिक़ है। हाँ—कुर्बान का बेटा—ख़ुद एक मज़दूर होते हुए, अपनी बीवी नज़ाकत—समझे, नज़ाकत—यहाँ यही तो कहा गया है—उसी की बीवी तो है नज़ाकत!—को त-क-नी-की स्कूल में पढ़ने की इजाज़त नहीं देकर मेहनतकश वर्ग के साथ धो-खा करता है। क्या कहा तुमने? आगे सुनो—जैसे वह कोई मज़दूर नहीं बल्कि मज़दूरों का दुश्मन हो!" चायखानावाला विजेता की तरह अपनी जाँघ थपथपाता। "ऐसी ग़ैर-ज़िम्मेवारी की निश्चित ही निन्दा होनी चाहिए... साही! देखो, यहाँ क्या लिखा है। साही! हँसते-हँसते दम छूट जाए।"

"इसमें इतना हँसने की क्या बात है?" मज़दूर चायख़ानावाले से पूछते जो हँसते-हँसते निकल आये आँसू पोंछ रहा होता।

"क्यों न हँसूँ?" वह चीखकर जवाब देता। "इस में कहा गया है: नारमत वल्द क़ुर्बान! वह हमारा छैला नारमत है। आह, काश वे... उन्होंने उसकी ख़ूब ख़बर ली है। इस साही के कांटे तेज़ हैं।"

दोपहर के भोजन के समय चायख़ानावाला चुस्ती का काम करता। लाल कोने में शहतूत के पेड़ के इर्द-गिर्द बहुत-से लोग जमा होते।

आज वहाँ ख़ास तौर से बड़ी भीड़ थी।

बशारत रेखांकनों से भरा दफ़्ती का एक फलक लेकर आयी थी। वह कोम्सोमोल इकाई की सचिव थी और सूचनापट्ट, दीवारी समाचार-

पत्र व इश्तहारों की ज़िम्मेवारी उसी पर थी। सब यह जानते थे और इसी कारण व्याकुल उत्कंठा से भरी ज़िन्दादिली के साथ उसका अभिवादन करते।

रोज़ की तरह चायख़ानावाला, जितना तेज़ वह दौड़ सकता था, दौड़ता हुआ अपनी सेवा अर्पित करने की तत्परता जताते आ पहुँचा।

"इसे हम कहाँ टाँगेंगे, कॉमरेड साबीरोवा?" उसने कारोबारी ढंग से बक-बक शुरू कर दी। "दीवारी समाचार-पत्र की जगह? अई-अई-अई! साही का क्या होगा? इसे समाचार-पत्र के ऊपर टाँगना ठीक नहीं रहेगा? लोग इस को भी और उसको भी देखेंगे। क्या कहा, बेहतर होगा? मेरी भी यही राय है। फिर इजाज़त दीजिये; इसे मैं टाँग दूँ—मेरे पास कुछ फ़ौलादी कीलें हैं।"

उसने शहतूत के पेड़ के तने में दफ़्ती कील लगाकर ठोक दी और मजदूर हैरत से रेखांकनों को ताकते इस के इर्द-गिर्द जमा हो गये।

जिन चीज़ों को चित्रित किया गया था, इससे पहले उन्हों ने कभी नहीं देखा था। फलक के एकदम ऊपर नीले आसमान में एक लाल हवाई जहाज़ अंकित किया गया था। इसके नीचे चिमनी से धुआँ उगलता एक काला इंजन था। उससे भी नीचे कलाकार ने एक उड़ता हुआ घोड़ा अंकित किया था: यह लकड़ी का बना प्रतीत होता था लेकिन इसके नथुनों से परीकथा के घोड़ों की तरह भाप निकल रही थी। इससे नीचे एक गधा था—सजीव, अड़ियल, लम्बे-लम्बे कानोंवाला आलसी गधा। किसी कारणवश उसे हरे रंग से रंगा गया था। अन्त में कालिख भरी औंधी कड़ाही की तरह प्रतीत होता एक कछुआ था।

बड़े-बड़े माथे और नन्हीं कायावाले सवार शान के साथ घोड़े, गधे और कछुए पर बैठे थे। बेढंगे बने चेहरों में कुछ जाना-पहचाना-सा लगता।

सवारों में एक को सबसे पहले चायख़ानावाले ने पहचाना। गधेसवार के झाड़ू जैसी दाढ़ी थी और चेहरे की ओर ध्यान से देखने के बाद चायख़ानावाला फुनफुनाया, उछलकर खड़ा हो गया और हँस पड़ा।

"लेकिन यह तो मामाजान भारिक है। हमारे नैमन्चा का इतस्तत: बोझा ढोनेवाला। लो, एक सवार तो मिल गया! क़सम से, अगर यह वह न हो!"

भीड़ में रास्ता बनाता, धकापेल करता मामाजान दफ़्ती के पास आ गया।

"अबे ओ गप्पी, अपनी ज़बान पर लगाम दे," वह चायख़ानावाले पर बरस पड़ा। "मामाजान अब इतस्ततः बोझा ढोनेवाला नहीं, वह कंकरीट का काम करनेवाला है!"

लेकिन चायख़ानावाला कतई परेशान होनेवाला न था।

"सुखद यात्रा, मामाजान भाई! टीम-नेता को बधाइयाँ! क्या दूर जा रहे हो?" उसने गधे की ओर इंगित किया। "अपनी छड़ी से इसकी पूँछ के नीचे टहोका लगाओ और यह तेज़ी से दौड़ पड़ेगा। ऐसा अंजर-पंजर तुम्हें कहाँ मिल गया?"

सब हँस पड़े। दूसरे लोगों ने भी दाढ़ीवाले गधा-सवार को मामाजान के रूप में पहचानना शुरू कर दिया। कंकरीट के छींटे पड़े हाथ से अपनी दाढ़ी थामे मामाजान बशारत की ओर मुख़ातिब हुआ।

"इस मज़ाक़ का क्या मतलब है, बेटी?" उसने पूछा।

"यह मज़ाक़ नहीं। यह सच है, चाचा मामाजान," बशारत ने तत्परता से उत्तर दिया। "यह बताता है, हम कितनी तेज़ी से काम करते हैं। देखिये, इंजन या हवाई जहाज़ पर कोई भी नहीं।"

"तो ऐसी बात है? हम कैसे काम करते हैं... कछुए पर कौन है?"

"नौजवान खुदाई करनेवालों का नेता।"

"अहा! मामासादिक़?"

"बेशक, लगता तो वैसा ही है!"

"पूर्ण सादृश्य है।"

मामासादिक़ को भीड़ में पाकर मामाजान की जान में जान आयी। उसने उसे देखकर व्यंग्य से आँख मारी।

"अरे, तो कछुए पर आप हैं?"

यह सब बातों से अधिक उपहासप्रद था। अपने लम्बे डील-डौल के कारण मामासादिक़ को भीम कहा जाता था। वह दूसरे मज़दूरों से सिर भर ज़्यादा ऊँचा था और अब वह उनके पीछे छुपने का निष्फल प्रयास कर रहा था।

"हमारे भीम ने क्या जगह ढूँढ़ी है!"

"कछुए की पीठ गोल है—ज़रा कसकर पकड़ लो, मामासादिक़!"

"उसे अपना बिस्तर भी साथ ले जाना चाहिए था।"

लेकिन मामाजान के लिए इतना ही काफ़ी न था :

"घोड़े पर कौन सवार है, बेटी?"

"निर्माण कार्यों का नेता।"

"रुको, रुको—ऐसा क्यों? वह घोड़े पर और मैं गधे पर क्यों?"

"क्योंकि निर्माण कर्मी आप से आगे हैं, चाचा मामाजान। उन्होंने अपने साप्ताहिक कार्य-योजना को पचासी प्रतिशत पूरा कर लिया है और आपने?"

"यह बात है," मामाजान फिर अपनी दाढ़ी खींचते बुदबुदाया। "क्या, हमेशा यह ऐसा ही होगा?"

"हमेशा क्यों? काम तेज़ी से कीजिए। यह आप लोगों पर निर्भर करता है।"

"तुमने कहा ट्रेन ख़ाली है। क्यों, बेटी?"

"हाँ। हवाई जहाज़ भी ख़ाली है। आप अपने मानदण्ड से अधिक काम शुरू कर दीजिए। बैठ सकते हैं।"

इस से हँसी की और एक लहर दौड़ गयी।

"बुड्ढा ट्रेन में बैठने की सोच रहा है!"

"हवाई जहाज़ पर आँख लगाये है!"

"निर्माण कर्मियों से कहिये—शायद वे आपको अपने घोड़े पर बैठा लेने को राज़ी हो जायें!"

मामाजान ने बुरा मानते हुए त्योरी चढ़ायी।

"हँसना छोड़ो! किसी को बोलने का मौक़ा भी दो। हम देखेंगे, कौन किसको अपने साथ बैठा लेता है। सुनो, बेटी, अगर हम ज़्यादा तेज़ी से काम शुरू करें तो तुम हमें कैसे चित्रित करोगी?"

"ठीक वैसे ही जैसा आप लोग काम करेंगे। हम हर हफ़्ते तस्वीरें लगायेंगे।"

"देखो, जो कहा है, याद रखना। अगर मैंने तुम्हारे मज़ाक़ का जवाब नहीं दिया तो मेरा नाम मामाजान नहीं। मैं सब के सामने कहूँगा कि अगली बार मैं हवाई जहाज़ में बैठा रहूँगा!"

"सवारी बदलते समय गधे की पीठ मत तोड़ देना," चायख़ाना-वाले ने बशारत की ओर चापलूसी से देखते हुए टीका की।

"चुप, समोवर की छुच्छी," मामाजान ने शान से जवाब दिया।

"अपनी चाय की फ़िक्र कर, इतस्तत: बोझ ढोनेवाला मामाजान कंकरीट मिश्रण करेगा।"

"ख़ुदा का शुक्र, मेरी चाय हमेशा तैयार रहती है," चायख़ानेवाले ने खीसें निपोरीं। "मैं अपनी योजना शत-प्रतिशत पूरा कर रहा हूँ!"

मामाजान को कोई जवाब न सूझा लेकिन बशारत ने दीवारी समाचार-पत्र का ताज़ा अंक खोला और उल्लासपूर्वक घोषणा की:

"हम आपको भी नहीं भूले हैं!"

"मुझे?" चायख़ानावाले ने हैरत से कहा।

"यह रहा आपके शत-प्रतिशत के बारे में एक गाना। आप पढ़ना पसन्द करते हैं। इसे पढ़िये।"

"गाना? कैसा गाना?"

"मामूली गाना," बशारत ने जवाब दिया। "यह दो उबलते समोवरों और एक बेकार आदमी के बारे में है!"

मज़दूर हँसते-हँसते लोटपोट हो गये।

"अरे, साथियो," मामाजान ने अपनी टीम के साथियों को पुकारा। "आओ, हम गधे से उतर जायें!" उसने अपनी अंगुली से बशारत को चेताया। "याद रखना, बेटी—जैसी स्थिति हो, हूबहू वैसा ही अंकित करना।"

कंक्रीट मज़दूर कंक्रीट-मिक्सर पर चले गये। दूसरे मज़दूर उनके पीछे चल पड़े।

इन दिनों हर किसी की नज़र कंक्रीट-मिक्सर पर थी। बहुत-से लोगों ने इससे पहले ऐसी मशीन देखी ही नहीं थी। भूतपूर्व कारीगर, घोड़े के साज़गर, जूते बनानेवाले, कुप्पीसाज़ और नैमन्चा के बुनकर भूरे ड्रम को घूमते, अपने पेट में बजरी, बालू सीमेंट को मिलाते, कंक्रीट को गले से उगलते देखने के लिए मशीन के इर्द-गिर्द हमेशा जुटे रखते। पहले पहल, यह कहा जा सकता है, उन्होंने कंक्रीट-मिक्सर से फ़ार्डसन ट्रेक्टर जैसे आचरण की ही उम्मीद की थी। लेकिन यह निर्विघ्न काम करता रहा और सब ने उसकी प्रशंसा की।

दूसरों की तरह नुस्रतुल्लाह ने कंक्रीट-मिक्सर को रोज़ाना देखना आवश्यक बना लिया था। एक स्पृहणीय मशीन!

"तुम्हें नज़दीक आने देने की हमारे कोई गुंजाइश नहीं, अग्रपेषी

एजेंट," कंक्रीट मज़दूर चुहल करते। "यह अच्छी बात हुई कि कंक्रीट-मिक्सर को स्टेशन से ढोकर नहीं लाना पड़ा!"

नुस्रतुल्लाह् बिना जवाब दिये और लोगों से आँख मिलाये बिना चला जाता।

उस दिन शहतूत के पेड़ के पास उसका बशारत से आमना-सामना हो गया।

वह समाचार-पत्र का एक अंक टाँग रही थी और इस बार चायख़ानावाला उसकी मदद नहीं कर रहा था। जब वह मुड़ी, अपने पीछे नुस्रतुल्लाह् को देखा। दोपहर के भोजन का समय ख़त्म हो चुका था। बशारत और नुस्रतुल्लाह् अकेले थे। उसने सीधे उसकी आँखों में देखा और यह पहला मौक़ा था जब वह उसे इतना क़रीब से देख रही थी।

"आप अच्छा अंकन करती हैं, सचिव," उसने रूखी आवाज़ में किसी बूढ़े की तरह बोलते हुए कहा। "मैं आपको देखता रहा हूँ और आपका काम मुझे पसन्द आता है।"

उसने कुछ और भी दिलख़ुश करनेवाली बातें कहीं। लेकिन उसकी दृष्टि बशारत को इतनी विचित्र और अनिष्टकारी लेकिन इसके साथ ही इतनी मासूम और याचनापूर्ण प्रतीत हुई कि सहमी-सी पीछे देखती वह चुपचाप चली गयी।

नुस्रतुल्लाह् उसे देखता रहा। सहज प्रेरणा से वह अपने क़दम तेज़ी से बढ़ाने लगी।

वह दृष्टि शाम तक बशारत के मन में बार-बार आती रही। और वह जितना इसके बारे में सोचती, उतनी ही अधिक उसे परेशानी महसूस होती।

लड़की सोच में डूबी अनजाने खटके से भरी घर लौटी।

तुर्सुनाई अपने गृहकार्य का रियाज़ कर रही थी। एक बार फिर वह चिड़िये की तरह अपना सुध-बुध खोये गा रही थी। खाते वक़्त भी वह गुनगुनाती रहती।

लड़कियों की माँ शाम देर गये नगर पार्टी समिति से लौटी। वह थकी थी और हाथ-मुँह धोने से चाय पीने तक बशारत की आँखें उसके पीछे-पीछे लगी थीं। वह नहीं जानती थी, अपने खटके के बारे में क्या कहे और यह भी निश्चित नहीं कर पा रही थी कि इसका उल्लेख भी करना चाहिए या नहीं।

अपनी माँ को चूमकर, कोई धुन गुनगुनाते तुर्सुनाई बिस्तर पर चली गयी। अनाख़ाँ ने बशारत की दृष्टि भाँप ली और उसे बरामदे में ले गयी।

"क्या परेशानी है, मुन्नी? क्या हुआ?"

"कुछ भी नहीं, माँ।"

"तुम मुझसे क्या छुपा रही हो?"

"मैं कुछ छुपा नहीं रही, माँ। कृपया, ऐसा मत सोचिये..."

अनाख़ाँ ने अपनी बाँहों में उसे भर लिया।

"क्या ऐसी बात है जो मुझसे नहीं कही जा सकती?"

"नहीं।" बशारत ने फुसफुसाकर कहा।

"क्या तुम्हें किसी ने अपमानित किया है?"

"मैं नहीं जानती।"

अनाख़ाँ ने उसे निश्चय करने का समय दिया।

"माँ, याद है," बशारत ने आख़िर में अपनी माँ की गर्म, मज़बूत बाँहों में कँपकँपाते हुए कहा, "आपने मुझसे पूछा था, याद है?"

"माजरा क्या है, मेरी लाड़ली? शान्त हो जा। मैं यहाँ तुम्हारे साथ हूँ और तुम एक वयस्क लड़की हो।"

"आपने मुझसे पूछा था..." बशारत ने फिर कहा।

"क्या?"

"आपने पूछा था–क्या आपको याद नहीं आ रहा है?"

अन्ततोगत्वा अनाख़ाँ बशारत का मतलब समझ गयी। अब उसे काँपने से बचने की कोशिश करनी पड़ रही थी।

"हाँ, तो," उसने कोमलता से कहा। "क्या किसी आदमी ने तुम्हारी ओर नज़र उठायी थी?"

बशारत ने अपना चेहरा माँ के सीने से चिपका लिया लेकिन अनाख़ाँ ने नम्रता से उसे अलग कर दिया और चिन्तातुर आँखों से अधीरतापूर्वक उसके चेहरे का अध्ययन किया।

"कौन था वह? बताओ मुझे। कौन था वह?"

"बाय का बेटा। नवाबज़ादा," बशारत ने जवाब दिया।

"ओह, वह गीदड़," अनाख़ाँ के होंठों से शब्द निकल पड़े। "क्या उसने कुछ कहा?"

"न-नहीं।"

"तो यह सच है, वह मेरी बेटी से शादी करना चाहता था?" अनाख़ाँ ने सोचा और अनजाने गर्दन के पास जख़्म के निशान को टटोला। "इसके मुतल्लिक़ कल मुझे करीमोव से ज़रूर ही मिलना चाहिए ..."
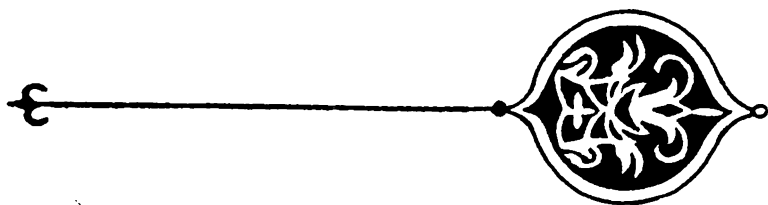
अट्ठाईसवाँ भाग

दोब्रोख़ोतोव अपने वायदे के मुताबिक़ नुस्रतुल्लाह से मिलने गया। चाय के दौरान दोब्रोख़ोतोव नोवगोरोद और रूस के बारे में बताता रहा। नुस्रतुल्लाह बिना कुछ बोले सुनता रहा।

उसे इंजीनियर से दवा के बारे में पूछने की हिम्मत न हुई। दोब्रोख़ोतोव ने इसे महसूस किया लेकिन दबाव डालने से बचा रहा। एक बार और चाय पीने के बाद, अपनी-अपनी मंशा पूरी किये बिना वे विदा हो गये। वे आधा घंटा से ज़्यादा इकट्ठे नहीं रहे थे...

नुस्रतुल्लाह ने ख़ुद महसूस कर लिया था, चाय-विक्रेता ने उसे कौनसी "दवा" दी थी। उसने यह भी महसूस कर लिया था कि अब से वह उस कलमुँहे व्यापारी की दया पर था, कि अपने इर्द-गिर्द बुने जाल से वह ख़ुद को नहीं बचा सकता था। एक बार क्रोधावेश में वह यफ़ीम दनीलोविच के पास चला जाना चाहता था। लेकिन किस लिए? सब कुछ स्वीकार करने के लिए? ख़ुद को धोखा देने? क्या वे उसकी बात का यक़ीन कर लेंगे कि वह ख़ुद अपनी इच्छा से काम नहीं कर रहा था? कि यह उसकी ग़लती नहीं?

इंजीनियर के जाने के बाद नुस्रतुल्लाह ने अपनी कटार ढूँढ़ निकाली और पहले की तरह इसे अपने जूते के ऊपरी भाग में सरका दिया।

छुपते-छुपाते, नज़रों से दूर रहने की कोशिश करता, वह शहर के एक सुदूरवर्ती हिस्से में जा पहुँचा।

चारबाज़ार मुहल्ले में उसने एक चिथड़ों में लिपटे, गन्दे अन्धे गायक को तलाशा। उसकी चिट्टी आँखें आकाश की ओर उठी थीं, वह झूम-झूमकर मश्रब* के पद गा रहा था। उसके पास उकड़ूं बैठकर, बुदबुदाते हुए नुस्रतुल्लाह ने अपना नाम बताया।

वसंत में जब क़ुद्रतुल्लाह नगर से भागने की तैयारी कर रहा था, उसने अपने बेटे से कहा:

"जब बातें असह्य हो जायें, उसके पास चले जाना। जिस चीज़ की भी ज़रूरत होगी, वह सब करेगा।"

नुस्रतुल्लाह ने कभी नहीं सोचा था, वह इस सलाह का उपयोग करेगा। लेकिन उसकी ज़िन्दगी उसके मन मुताबिक़ शक्ल अख़्तियार नहीं कर रही थी। कोई दूसरा आदमी भी न था जिसके पास वह जा सकता था।

अंधे ने पद ख़त्म किया, अपना झोला बटोरा, कराहता, आहें भरता उठ खड़ा हुआ और मुड़े सिरेवाली अपनी लाठी से रास्ता टटोलता, घिसटता चल पड़ा। नुस्रतुल्लाह कुछ दूरी पर उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।

जब अंधेरा हुआ, अंधे की आँखों की रोशनी लौट आयी और वह नुस्रतुल्लाह को नगर से बाहर ले चला। लगातार तीन रातों तक, रात होने से सुबह तक, ओश पर्वतों के पार होने तक वे मरुस्थल की राहों पर कष्टपूर्वक चलते रहे। नुस्रतुल्लाह बस किसी तरह अपने मार्ग-दर्शक के साथ बने रहने की ही ताक़त जुटा पा रहा था। अन्ततोगत्वा वे अपने गंतव्य पर पहुँच गये और नुस्रतुल्लाह ने गायक से अंतिम आशीर्वचन प्राप्त किये।

लेकिन क़िस्मत उसे कहाँ ले आयी थी? दहशत से भगोड़े ने महसूस किया, वह कड़ाह से बचकर भागा तो आग में जा पड़ा। उसे अपना बाप नहीं मिला। वह कहाँ है, कोई नहीं बता सका। मार्ग-दर्शक नुस्रतुल्लाह को बस्माचियों के पास ले आया था। पहले-पहले, वहाँ उसे खाने

---

* मश्रब – १७ वीं सदी का एक शाश्वत उज्बेक-कवि।

को काफ़ी मिला। बस्माचियों के क़ुर्बाशी क़ुलख़्वाजा ने बिना किसी शिष्टाचार के पुराने दोस्त की तरह नुस्रतुल्लाह का स्वागत किया। कुछ दिनों तक उसे उसने अपने पास ही रखा, जो वह चाहता उसे मिल जाता। फिर हठात उसने आँखें फेर लीं और नुस्रतुल्लाह को अपने यिगितों* के पास एक गुफ़ा में भेज दिया।

वे सत्तर थे। तक़रीबन एक माह तक किसी चीज़ की प्रतीक्षा करते, वे एक पर्वत की गुफ़ा में छुपे रहे। रोज़ दोपहर को वे अपने छुपने की जगह से निकल आते और धूप में बैठकर अपने कपड़ों से जुएँ निकालते। दिन में दो बार वे गन्दे, तेल से चिपचिपे कड़ाहों में घोड़े का गोश्त पकाते और उस पर आवारा कुत्तों के झुंड की तरह जुएँ के मारने से लाल हो गये अपने नाख़ूनों से हड्डियों और गोश्त को चीरते टूट पड़ते। वे दिन भर सोते रहते और रात में फिज़ूल बातों पर झगड़ पड़ते, छीना-झपटी में वे एक दूसरे पर चाक़ू चलाने से भी बाज़ नहीं आते। जब कभी कोई यिगित मारा जाता, उनका मुखिया आता और दूसरे को गोली मारकर अपने खेमे में लौट जाता – तिरपाल के उस तम्बू को इसी नाम से पुकारा जाता था। उसके जाते ही लोग फिर अपनी वहशियाना लड़ाई, जुआ, औरतों के बारे में अपनी घृणित बातें और ख़ुद मुखिया को ही मार डालना चाहिये, इस पर बहस शुरू कर देते।

नुस्रतुल्लाह के यिगितों के बीच में आते ही उसके बारे में एक ज़हरीली अफ़वाह फैल गयी:

"वह क़ुलख़्वाजा का बच्चा ** है।"

गुफ़ा के प्रवेश द्वार पर फफोलों से भरी पीठवाला एक मोटा-पिलपिला आदमी बैठा कार्बाइन के हत्थे से जुएँ मार रहा था। नुस्रतुल्लाह की ओर देखकर उसने अलस भाव से कहा:

"सरदार से हमारे क़ाबिल लौंडे देने की उम्मीद भी नहीं की जा सकती! देखो, इस के चेचक के दाग़ भी हैं।"

---

* यिगित – बस्माचियों के गिरोह में शामिल हर आदमी को इसी नाम से पुकारा जाता था।

** बच्चा – पूर्वी देशों के नाचनेवाले लौंडे जो बुरी औरतों के पेशे करते थे।

सत्तर लुटेरों ने अपने दाढ़ी भरे चेहरों को नुस्रतुल्लाह की ओर लिज-लिजी निगाहों से देखते हुए मोड़ लिया। उसने महसूस किया, उसे इनमें कोई दोस्त नहीं मिलेगा, उसे यहाँ कोई शरण नहीं मिलेगी।

एक रात झगड़े में वह शामिल हो गया और एक मोटे यिगित की बग़ल में चाक़ू मार बिना सोचे-विचारे किसी पहाड़ी बकरे की-सी तेज़ी से उस रास्ते पर दौड़ता चल पड़ा जिससे यहाँ आया था। वह ख़ुद को बचा पायेगा, उसे इसकी उम्मीद न थी लेकिन पीछा करने में बहुत देर हो जाने के कारण बस्माचियों ने उसे छोड़ दिया। यह ठंडी रात थी और नुस्रतुल्लाह किसी तरह बच भागने में सफल हो गया।

वह अपने शहर, नैमन्चा के लिए लालायित था। वह बिना किसी की नज़र में पड़े निर्माण-स्थल पर पहुँचना चाहता था, देखना चाहता था, कंक्रीट मज़दूरों का क्या हश्र हुआ। वह बशारत द्वारा लाल कोने में लगाये दीवारी समाचार-पत्र के ताज़ा अंक को भी देखना चाहता था।

एक पूरा दिन वह शहर के उपान्तों में, क़ब्रगाह में छुपता, जंगली जानवर की तरह लोगों से बचता, भटकता रहा। एक जीवनदायी विचार उसके दिमाग़ में कौंधा। उसे चाय-विक्रेता की हत्या करनी थी? नुस्र-तुल्लाह ने एक पत्थर पर अपनी कटार तेज़ की। उसने इस बारे में पहले क्यों नहीं सोचा था? वह उस गर्हित व्यक्ति को देखते ही मार डालेगा। बचने का कोई दूसरा चारा न था।

नगर में चाय-विक्रेता की तलाश करते हुए उसने एक दिन और बिताया। उसने सारे बाज़ारों और चायख़ानों को छान मारा। उसे वह झोंपड़ी मिल गयी जहाँ चाय-विक्रेता ने ब्राण्डी पिलाकर उसे मदहोश कर दिया था लेकिन चाय-विक्रेता ख़ुद कहीं नज़र नहीं आ रहा था।

क्या वह नईमी की तरह भाग गया?

पल भर के लिए नुस्रतुल्लाह में क्षीण आशा जाग उठी। ओह, काश ऐसा ही होता! काश उसका अतीत परछाँई की तरह उसके पीछे रेंगता न होता...

भूखा और सड़क के पास की झाड़ी की तरह धूल से भरा, अंधेरे के आवरण में वह चोरी से अपने घर आ गया। वह ज़नानख़ाने में गया जहाँ कभी उसकी माँ रहा करती थी, जहाँ उसने उसे जन्म दिया था और बचपन में बाप के ग़ुस्से से उसका बचाव किया था।

वहाँ सब कुछ उसी तरह था, जिस तरह उस दिन था जब इंजीनियर उससे मिलने आया था। चाय पात्र और पेंदे में थोड़ी-सी बची हरी चायवाली दो प्यालियाँ नीची मेज़ पर पड़ी थीं। सड़ चुके कुतरे ख़रबूज़े के टुकड़े फ़र्श पर बिखरे थे। ताक़ पर एक बासी नान पड़ा था। भूख के मारे नुस्रतुल्लाह उसे खा गया। फ़र्श को अपनी पूँछ से बुहारता उसका कुत्ता रेंगकर उसके पास आया और उसके जूते चाटने लगा। चाहे कुछ भी हो वह अपना घर फिर कभी नहीं छोड़ेगा...

एकाएक कुत्ता उछलकर खड़ा हो गया और गुर्राने लगा। नुस्रतुल्लाह तेज़ी से पलटा। आख़िर उसकी क़िस्मत जाग ही पड़ी थी! चाय-विक्रेता दहलीज़ पर खड़ा था।

अपने सीने पर एक हाथ रखकर मुस्कुराते हुए उसने सुरीली आवाज़ में कहा:

"कुशलतापूर्वक लौट आने के लिए बधाई, यात्री। क़ुलख़्वाजा कुर्बा-शी कैसा है?"

बिना जवाब दिये अपने जूते से कटार निकालकर नुस्रतुल्लाह ने उस पर हमला कर दिया। लेकिन यह एक असमान भिड़न्त थी।

एक मिनट में दर्द से छटपटाता नुस्रतुल्लाह फ़र्श पर पड़ा था, उसका चाक़ू चाय-विक्रेता के पैरों के पास पड़ा था। कुत्ता आर्तनाद करता भाग खड़ा हुआ।

"क्या आप मुझे सच में मार डालना चाहते थे, मेरे लाल?" चाय-विक्रेता ने मलामत के साथ पूछा। "क्या यह बुद्धिमत्तापूर्ण था? ज़रा सोचिये। अधिकारियों के मुक़ाबले मुझे धोखा देना आपके लिए ज़्यादा फ़ायदेमन्द होगा!"

"मैं वही करूँगा, चिन्ता मत करो," नुस्रतुल्लाह दाँत पीसते हुए बड़बड़ाया।

"यह हुई बुद्धिमानों-सी बात," चाय-विक्रेता ने अपनी जेब से एक मुड़ा काग़ज़ और पेंसिल निकालते हुए कहा।

काग़ज़ को खोलकर (अरबी में उसपर कुछ पंक्तियाँ लिखी थीं) चाय-विक्रेता ने उसे और पेंसिल को नीची मेज़ पर पड़ी प्यालियों में से एक की बग़ल में रख दिया।

"क्या इंजीनियर आप से मिलने आया?" उसने अप्रत्याशित रूप से कारोबारी लहजे में पूछा।

"हाँ," बात मानने की किसी प्रेरणा के वशीभूत नुस्रतुल्लाह् ने जवाब दिया फिर अपना हाथ टटोलते हुए बिसूरने लगा। "काले शैतान — मैं किसी भी तरह तुम्हारे लिए कुछ नहीं करूँगा। भाग जाओ।"

चाय-विक्रेता ने फ़र्श पर से नुस्रतुल्लाह् का चाक़ू उठा लिया और उसकी जाँच की।

"मेरे लिए क्यों? मैं एक सीधा-सादा आदमी हूँ," उसने दीर्घ साँस ली। "अब आप के ज़्यादा क़ाबिल दोस्त हैं। अब आपको मेरी कोई और ज़रूरत नहीं, मेरे नन्हे भाई।"

धार पर उसने अपना अंगूठा फेरा और लगभग अनुग्रह भरे लहजे में पूछा :

"फिर भी, शायद आप मेरी एक छोटी-सी सेवा तो कर ही देंगे?"

हाथों और घुटनों के सहारे रेंगते हुए नुस्रतुल्लाह् ने दरवाज़े पर पहुँचने की कोशिश की। उसे पैरों पर उठ खड़ा होने का कोई मौक़ा न था। चाय-विक्रेता ने उसे ड्योढ़ी पर आ दबोचा।

* * *

नुस्रतुल्लाह् क़ुद्रतुल्लायेव के निर्माण-स्थल और अपना घर छोड़कर ग़ायब हो जाने के बाद दोब्रोख़ोतोव की जान हमेशा सूखती रहती। हर घड़ी उसके मन में ख़तरे की घंटी बजती रहती। अनिष्ट की इस आशंका ने दमे के रोगी की तरह उसके हृदय में तनाव की अनुभूति पैदा कर दी थी।

उस अजीब और ज़ाहिरी तौर पर दुखी नौजवान से बात छेड़ने में असफल रहने के लिए वह ख़ुद को माफ़ नहीं कर सकता था। उस ने अपनी बातचीत को यह सोचकर कि यह ज़्यादा युक्तिसंगत होगा, किसी और सुविधाजनक अवसर के लिए स्थगित कर दिया था। लेकिन नतीजा यह हुआ कि उसने इसे असाध्य रूप से लम्बे समय के लिए अटका दिया था।

नुस्रतुल्लाह् था कहाँ? वह पूछना क्या चाहता था? वह किस बात में उसे राज़दार बनाना चाहता था। अटकलों और संदेहों से ख़ुद को पीड़ित करते हुए भीषण नुक़सानदेह दुर्घटना की प्रतीक्षा करते रहने के अलावा वह अब कुछ नहीं कर सकता था...

ऐसा प्रतीत होता, यफ़ीम दनीलोविच और एर्गश गुमशुदा अग्रप्रेषी एजेंट के बारे में बात करने से कतराते थे। शायद यही प्रभाव वे इंजीनियर पर डालना चाहते थे? शायद वे उसकी प्रतीक्षा में थे कि वह आकर ख़ुद स्वीकार कर ले कि उसके और नुस्रतुल्लाह के बीच क्या बात हुई? स्वीकृति। हाँ, जहाँ तक दोब्रोख़ोतोव का सवाल था, इसके लिए और कोई शब्द न था।

वह इसके बारे में पुराने और लिहाज करनेवाले अपने मित्र डॉक्टर विकेन्ती फ़्योदोरोविच से भी बात करने में हिचकिचाता। वह जानता था, यह उसकी घृणित रूप से कमज़ोर इच्छाशक्ति की वजह से है।

सेर्गेय ल्वोविच को अहसास था कि दोष उसके माथे आयेगा लेकिन वह इसे स्वीकार नहीं कर सकता था। उसे विश्वास था कि अगर परियोजना पर कोई मुसीबत आयेगी, उसका असर सबसे पहले उसी पर पड़ेगा। लेकिन काश, सभी बातें हठात् सही-सलामत रहें तो!

दोब्रोख़ोतोव फिर अपने मौन-संभाषण पर लौट आया और अपनी चुप्पी से ख़ुद को प्रताड़ित करता रहा।

जब दोपहर के समय यफ़ीम दनीलोविच और एर्गश उसके पास आये, वह कंक्रीट-मिक्सर के पास खड़ा था। यफ़ीम दनीलोविच ने उसके कंधों पर अपनी बाँहें रख दीं।

"आपको क्या हो गया है, सेर्गेय ल्वोविच? आपके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही हैं। क्या थक गये हैं? आप अपने-आप में सिमटे, दिन भर आहें भरते रहते हैं। ऐसे नहीं चलेगा, मेरे दोस्त। अभी तो हम नींव तक ही पहुँचे हैं। जब छत तक पहुँचेंगे, आपका क्या होगा?"

दोब्रोख़ोतोव जानता था, यफ़ीम दनीलोविच जानबूझकर एर्गश के सामने सार्वजनिक रूप से मित्रता ज़ता रहे थे। परियोजना के चीफ़ का इंजीनियर के प्रति रुख़ हमेशा की तरह खुश्क और कठोर था। निश्चित ही इधर वह कुछ ज़्यादा शिष्ट हो गया था लेकिन दोब्रोख़ोतोव ने महसूस किया कि इस शिष्टता के पीछे कुछ अप्रत्यक्ष और अप्रीतिकर बात थी। नहीं, एर्गश को दूसरा आदमी बनने के लिए कोई प्रयत्न करने की ज़रूरत नहीं है: उसकी स्पष्टवादिता तो और भी सुखदायी थी।

"ख़ुद ही फ़ैसला कीजिये, यफ़ीम दनीलोविच," उसने जबरन मुस्कुराते हुए कहा। "शरद आने-आने को है। सुबह में कुहासा तो होने

ही लगा है। कंक्रीट को मध्य नवम्बर के पहले ही पहले डाल देना होगा।"

"आप बिलकुल ठीक कहते हैं," यफ़ीम दनीलोविच ने सहमति प्रकट की। "नहीं तो हम अटककर रह जाएंगे। मैं देखता हूँ आप हमारे चीफ़ के नक्शे-क़दम पर चल रहे हैं जो हमेशा सब चीज़ से नाख़ुश रहता है। अगर मैं आपकी जगह होता ऐसा नहीं करता। कंक्रीट मज़दूर दूसरों के मुक़ाबले आ रहे हैं। मामाजान ने गंभीरता से हवाई जहाज़ पर बैठने की ठान ली है।"

"हाँ, और मुझे उससे कोई शिकायत नहीं," दोब्रोख़ोतोव ने एर्गश पर सवाली आँखें टिकाते हुए जवाब दिया।

त्योरी चढ़ाते हुए एर्गश ने उसकी नाक के बाँसे पर नज़र दौड़ायी।

"क्या तुम्हें पूरा विश्वास है कि तुम उस बेशर्म की तरह नहीं भाग खड़े होगे?" उसने अकस्मात पूछा।

निश्चत ही उसने ऐसा मज़ाक़ में कहा होगा क्योंकि यफ़ीम दनीलो-विच ने मित्रतापूर्वक चुपके से दोब्रोख़ोतोव की बग़ल में टहोका लगाया था। लेकिन सेर्गेय ल्वोविच ने कोई जवाब नहीं दिया और सिर लटका लिया। बेशक, एर्गश ने भलमनसियत से लज्जित और अपमानित महसूस किया होगा: उसने नुस्रतुल्लाह का विश्वास किया था, उसकी मदद की थी। उसने एर्गश को अविश्वास का दुहरा हक़ दे दिया था। फिर भी, ऐसा मज़ाक़ सुनकर चोट पहुँचती थी।

मामाजान रोज़ाना काम के बाद दोब्रोख़ोतोव के पास यह पूछने जाता कि क्या इंजीनियर अफ़न्दी कंक्रीट मज़दूरों की उसकी टीम के काम से ख़ुश थे। बहुत-से मज़दूर दोब्रोख़ोतोव को इंजीनियर-अफ़न्दी कहकर पुकारते थे। सेर्गेय ल्वोविच तुरंत ही अपनी बही खोलता और मामाजान यह निश्चित कर लेने के बाद ही जाता कि सही आँकड़े दर्ज किये गये हैं।

"पिछले हफ़्ते वह मुझे लाल हवाई जहाज़ में बैठा हुआ नहीं अंकित करना चाहती थी," उसने बशारत के बारे में कहा। "इंजीनियर-अफ़न्दी, आपका क्या ख़्याल है, इस हफ़्ते वह ऐसा अंकित करेगी?"

"मैं तो ऐसा ही सोचता हूँ।"

"तो मैं अपनी दाढ़ी उस लाल हवाई जहाज़ पर देखूंगा?"

"मुझे इसका पूरा विश्वास है।"
"लेकिन क्या निर्माण कार्यों का नेता हमारी तरह आगे बढ़कर मेरी जगह नहीं ले लेगा?"
"मुझे इस में संदेह है। तुम आगे हो।"
"यह अच्छी बात है। क्यों, नहीं?"
"मैं ऐसा ही कहूँगा।"
मामाजान ने अपनी दाढ़ी खींची और जिज्ञासा से पूछा:
"क्या यह सच है, आप रूसी अमीर के बेटे हैं?"
सेर्गेय के पास गुस्सा करने की ताक़त न थी। वह चुनौती के साथ कहना चाहता था: "नहीं, यह सच नहीं, कंक्रीट कर्मी अफ़न्दी!" लेकिन वह सिर्फ़ दुख से मुस्कुराकर, झटके से अपनी बही बन्द कर चलता बना।

मामाजान ने उसे आ पकड़ा और आस्तीन थामकर खींची।
"मैं ने आपको नाराज़ तो नहीं किया? क्या आपके पिता को कुछ हो गया है? मुझे नहीं मालूम था," मामाजान ने लड़खड़ाती ज़बान में कहा। "आप—क्या आप अपनी बही में उस संख्या को काट नहीं देंगे?"
"नहीं, नहीं, निश्चित रूप से नहीं," सेर्गेय ने जल्दी-जल्दी जाने की कोशिश करते हुए धीरे से कहा।
उसके बारे में यह बेपर किसने उड़ायी थी? शायद किसी कुत्सित और निम्न बुद्धि के आदमी ने। ऐसे लोगों के साथ साँस लेना भी घृणित था। लेकिन उससे भी बुरी बात यह थी कि मामाजान जैसे सीधे-सादे लोग भी उन पर विश्वास कर लेते।
काश, वह मामाजान को एहसास करा सकता कि इंजीनियर भी लाल हवाई जहाज़ में बैठने को इच्छुक था। लेकिन जब उसने पलटकर देखा तो मामाजान को अपनी ओर शंका और अविश्वास भरी दृष्टि से देखते पाया। इंजीनियर ने मामाजान की ख़ुशी नष्ट कर दी थी...
एक हफ़्ते से कंक्रीट मज़दूरों के नेता ने अपने घुटने तक नीचे चोग़े में एक नहीं, तीन-तीन कमरबन्द लगा रखे थे। उसने मन में मान लिया, वह अपने कामों की प्रशंसा का क़ानूनी हक़ फतह कर चुका है। उसके बाप-दादों में से किसी को भी ऐसी ख़ुशी या ऐसे सम्मान का एहसास

नहीं हुआ था: उन्हों ने कभी मिलों का निर्माण या कंक्रीट मिलाने का काम नहीं किया था और कभी ऐसा अच्छा काम नहीं किया था कि गधे से हवाई जहाज़ में जा बैठें। किसने सोचा होगा कि इतस्तत: बोझा ढोनेवाले का बेटा-पोता इतस्तत: बोझा ढोनेवाला मामाजान लोगों की स्पृहा का कारण बन जायेगा!

दोब्रोख़ोतोव उसे समझता था। मामाजान भारिक को सम्मान और ख़ुशी प्रदान करानेवाले काम में हाथ बँटाकर उसे गर्व महसूस होता। कटु तो बस वह ख़्याल था कि मामाजान उसे समझ नहीं सकता था।

होनी की प्रतीक्षा करता दो हफ़्ते तक सेर्गेय संशय की व्यथा में रहा। तब तूफ़ान आया। इसे आना तो था ही।

जब ईंट की चिनाई आदमी की क़द से ऊपर पहुँच चुकी थी, वह भहराकर गिर पड़ी, इसका एक हिस्सा ज़मीन में काफ़ी धसक गया था। मानो यह कंक्रीट की नींव पर आधारित न हो बल्कि भुरकनेवाले बालू पर हो।

यह कैसे हुआ, दोब्रोख़ोतोव ने नहीं देखा। जब वह नज़दीक आया तो मज़दूर आ घिरे। लोग चीखते, एक दूसरे की बात सुने बिना डाँट-फटकार रहे थे। मामाजान खाई में धसक गयी दीवार के नीचे खड़ा था। उसने ईंट की जुड़ाई से कंक्रीट के टुकड़े लिये और उन्हें अपनी अंगुलियों से इस तरह भुसभुसाकर तोड़ डाला जैसे वे चूना के टुकड़े हैं।

"वहाँ से निकल आओ! इससे तुम कुचल जाओगे। जल्दी से ऊपर आ जाओ!" लोग चीख रहे थे।

लेकिन मामाजान जैसे बहरा हो गया था।

वह सूखे कंक्रीट को चुनता जाता, अपने हाथों से उन्हें चूरता और रगड़ता जाता, जब तक वे धूल में नहीं बदल गये।

दहलते हुए दोब्रोख़ोतोव मामाजान के हाथों की ओर देखे जा रहा था। काश, उसे यह नहीं देखना पड़ता। काश, उसे मौत आ जाती। उसे देखना और सोचना तो नहीं पड़ता।

तो बला आ ही गयी। तो नुस्रतुल्लाह ने यही छिपाया था। कितना बड़ा राक्षस था—नहीं, ख़ूनी! उसने दोब्रोख़ोतोव की हत्या कर दी थी। यही अन्त था। प्राणघातक आघात!

मामाजान खाई से ऊपर आ गया और दोब्रोख़ोतोव के सीने में अपने

मुक्के से, जिसमें उसने चूर-चूर हुआ कंक्रीट ले रखा था, धक्का दिया।

"यह क्या है? मज़ाक़?" मामाजान ने कहा। "मैं ने क्यों काम किया था, बताओ मुझे? मैं ने अपना पूरा बूता क्यों लगाया था? मैं ने अपनी जान इसमें – इस धूल में – क्यों लड़ा दी थी? क्यों? बताओ मुझे!"

मज़दूर ज़ोर-ज़ोर से चीख रहे थे:

"अंतर्ध्वंस!"

"हमें छला जा रहा है!"

"वे हमें मूर्ख बना रहे हैं।"

"तुम्हारी आँखें कहाँ चर रही थीं?"

"सब कुछ नष्ट हो गया!"

"हमने एड़ी-चोटी का पसीना एक करके रात-दिन काम किया था..."

"बात से कोई लाभ नहीं!"

निर्माण-स्थल के दूसरे हिस्सों से मज़दूर भुरभुराता कंक्रीट ले आये और इंजीनियर को उसके आँखों के सामने धूसर टुकड़ों को चूर-चूर करके दिखाने लगे।

दोब्रोख़ोतोव ने उदासीनता से देखा और सुना। पसीने की बड़ी-बड़ी बूंदें उसके सँवलाये, धूल से सने ललाट पर चुहचुहा आयीं। लेकिन उसका हृदय सर्द और सूना-सूना था। वह अब हर चीज़ से उदासीन था। वह जानता था, उसका सर्वनाश हो चुका था।

सुखट्टा मख़सूम धक्का देकर सामने आ गया। वह अपने घूँसे भाँजता और अंड-बंड बकता, सबसे ज़्यादा ज़ोर-ज़ोर से चीख रहा था:

"मैंने, एक पुराने ग़ुलाम ने सोचा था, दिन की रोशनी देख ली है! मैंने अपनी ज़िन्दगी तक की बाज़ी लगा दी और अस्पताल में लगभग मर ही गया था! हमने किस चीज़ पर अपना पसीना बर्बाद किया? हमने क्यों मेहनत-मशक़्क़त की? ऐसे काम पर हज़ारों लानत!"

मामाजान औरों से अधिक विचारवान और सतर्क सिद्ध हुआ।

"ठहर जा, सुखट्टा, ठहर जा!" उसने उसे रोकते हुए कहा। "तू किस लिये चीख रहा है? हमें सब चीज़ की जाँच-पड़ताल और खोज-बीन करनी चाहिये..."

लेकिन सुखट्टा मख़सूम चुप होने को न था।

"तुम मुझे मत छूना!" वह तीखी आवाज़ में चीखा। "तुम ख़ुद अपनी ज़बान बन्द रखो, इंजीनियर के पालतू। हमने तुम्हें उसके साथ– उसकी बही में झाँकते और पूँछ हिलाते देखा है! लेकिन मेरा नुक़सान हुआ है और मुझे हक़ है! लोगों का मूँह बन्द करने से तुम्हें कोई मत-लब नहीं!"

"मैं कह रहा हूँ, हमें संभावनाओं का परीक्षण और खोज-बीन करनी चाहिए," मामाजान ने दुविधापूर्वक जवाब दिया। "गला फाड़ने से कोई फ़ायदा नहीं है।"

"जाँच-पड़ताल करने को कुछ भी नहीं। हम अंधे नहीं। हमारी आँखें खुल गयी हैं।" मख़सूम ने उस की बात काटते हुए कहा। "यह रहा तुम्हारा विध्वंसक! इंजीनियर! मैंने अपनी आँखों से उसे बाय के बेटे नुस्रतुल्लाह के साथ चाय पीते देखा था। मैं क़सम खाता हूँ, यह सच है। एक ग़ायब हो गया, दूसरा रंगे हाथ पकड़ा गया। तुम तुरंत जान सकते हो कि वह बुर्जुआ है–रूसी अमीर का बेटा है, ख़ून चूसने-वाला। देखो, वह चुप भी है!"

"ऐ इंजीनियर, जवाब देना शुरू करो! इस बार चुप्पी तुम्हें नहीं बचा पायेगी!" एक बार फिर मज़दूर चीखने लगे।

लेकिन दोब्रोख़ोतोव ने कोई जवाब नहीं दिया। हिम्मतपस्त व असहाय-सा उसने अपने इर्द-गिर्द देखा। उसे आस्तीन से खींचा जाने लगा सुखट्टा मख़सूम ने विध्वंसक को पीछे से अपने घूंसे से कुछेक बार धकियाया।

"देखो, लोगो!" वह उन्मत्त-सा चीखा। "दुश्मन के पेट में यह कंक्रीट भर देना चाहिए! यह मुझे दो। मुझे उसके पास जाने दो। पाप मेरे ही सिर पड़ने दो।"

एक तेज़, साधिकारपूर्ण आवाज़ ने मख़सूम की चीखों और बेज़ाबता शोर-शराबे पर रोक लगा दी।

वृषभवत ईंट-सी लाल गर्दन झुकाये एर्गश शान्त पड़ गयी भीड़ के बीच से लम्बे-लम्बे डग भरता मख़सूम की ओर बढ़ा।

मख़सूम के पास आकर जो उसके सामने दुबक गया था, उसने उसकी कमर पर अपने हाथ रख दिये और पूछा:

"तुम क्या करना चाहते थे? फिर से कहो। कौन-सा पाप तुम

अपने ऊपर ले रहे हो? यहाँ से दफ़ा हो जाओ, बाय के जी हुजूर! भागो! उसे जाने दो..."

लड़खड़ाता सुखट्टा मख़सूम निर्माण-स्थल के पार जितना तेज़ दौड़ सकता था, भागा।

"इंजीनियर कहाँ है?"

मामाजान एक ओर हो गया और एर्गश ने झुके कंधोंवाले, बेजान से दुर्बलकाय दोब्रोख़ोतोव को देखा।

उसकी बग़ल में खड़ा होकर एर्गश ने निर्माण-स्थल के आर-पार गूँजती आवाज़ में पूछा:

"तुममें से किसने इस आदमी को छूआ? किसने इसे अपमानित किया? मैं तुमसे पूछ रहा हूँ: किसने?"

"वह एक विध्वंसक है, चीफ़।"

"देखिये, क्या हुआ है।"

"इस कंक्रीट की ओर देखिये।"

इसी समय दोब्रोख़ोतोव बोल पड़ा।

"वे ठीक कहते हैं," उसने स्पष्ट लहज़े में कहा। "मैंने मिश्रण की जाँच की है। मुझसे ग़लती हो गयी। यह मेरी ग़लती है।"

"क्या आप सुन रहे हैं? वह स्वीकार कर रहा है। उसने ग़लती की। वह दोष टालना चाह रहा है।"

"मेरी बात सुनो," एर्गश गरज पड़ा। शोर तुरंत बन्द हो गया। "मैं इस आदमी की ओर से शपथ खाता हूँ! क्या यह स्पष्ट है? क्या सब की समझ में आया, मैंने क्या कहा? मैं उसके लिए अपने जीवन की शपथ खाता हूँ! क्या कोई सफ़ाई चाहता है?"

मामाजान ने प्रवक्ता का काम किया:

"आप ठीक कहते हैं, चीफ़! जल्दी की कोई ज़रूरत नहीं। सुखट्टा मख़सूम हमें बहका रहा था। कोई भी इंजीनियर पर अंगुली नहीं उठायेगा, चाहे वह किसी अमीर का ही बेटा क्यों न हो। हिम्मत करो, इंजीनियर अफ़न्दी!" और उसने एर्गश को बात समझायी: "हम अपने दिमाग़ पर काबू खो बैठे। यह एक भयानक आघात था, चीफ़! भयानक आघात।"

एर्गश ने अपना हाथ ऊपर उठाया और सैनिक अन्दाज़ में आदेश दिया:

"सब अपनी-अपनी जगह जाकर, अपने-अपने कामों में लग जाइये।

हमें आतंकित नहीं होना चाहिए। आतंक न होने दो।" दोब्रोखोतोव की ओर मुड़ते हुए उसने कहा। "तो? आओ, इंजीनियर, हम एक नज़र डाल लें। मुझे दिखाओ, तुम्हारे सिर दोष किस बात के लिए लगना चाहिए।"

एर्गश की ओर असहाय दृष्टि से देखते हुए इंजीनियर ने अपने काँपते होंठों को निरर्थकता से चबाया। एक बार फिर उसकी ज़बान से कोई शब्द नहीं फूटा। उसके खोखले गालों पर पता नहीं पसीने की या आँसू की दो धूँधली बूँदें लुढ़क पड़ीं।

* * *

नुस्रतुल्लाह को उसी दिन पाया गया। उसका गला कटा था और वह अपने ही कमरे में सूखे, काले खून के ढेर में पड़ा था।

लाश के पास छोटी-सी मेज़ पर अरबी में लिखी ख़ून के धब्बेवाली तहरीर पड़ी थी:

"तुम सब का नाश हो। मैं काम करना चाहता था। इंजीनियर ने मुझे अपने जाल में फ़ाँस लिया। उस रूसी बेग़ैरत का नाश हो। जैसे भी हो मिल ढह जायेगा।"

कार्यालय के बाहर मज़दूरों की एक बड़ी भीड़ जमा हो गयी थी। तहरीर की बातें आम जनता की बातें हो गयी थीं और अब मज़दूरों को शान्त करना असंभव था। उन्होंने इंजीनियर को गिरफ़्तार करने की माँग की। एक गवाह ने जिसे झुठलाया नहीं जा सकता था, उसका भेद खोल दिया था: मृत एक पाजी था लेकिन आत्महत्या करके अपने ख़ून से उसने अपना कसूर धो दिया था।

सुखट्टा मख़सूम फिर भीड़ में आ धमका था और अपने खोखले सीने को दयनीय ढंग से पीटता हुआ दीवार के साथ-साथ कभी इधर कभी उधर जा-आ रहा था।

"मैंने आप से कहा था, मैंने आपसे कहा था। मैंने क़सम खायी थी कि मैंने उसे इंजीनियर के साथ चाय पीते देखा था। आप लोगों ने मेरा विश्वास नहीं किया। आगे बढ़िये, एक ग़रीब ग़ुलाम को खदेड़

दीजिये। जैसे मुझे बाय ने, मेरे बाप ने कम प्रताड़ित किया था। आइये, आप भी मुझे पीट लीजिये। सच कहने के लिए एक मुसलमान को नुचवा डालिये। उससे रोटी का आख़िरी टुकड़ा भी छीन लीजिये।"

एर्गश अपने होंठ काटता, हाथों से अपना सैनिक बेल्ट पकड़े लाश के पास खड़ा था। तहरीर पढ़ने के बाद से उसने अपने दाँत भींच लिये थे।

"यह सब क्या है, सेर्गेय ल्वोविच?" यफ़ीम दनीलोविच ख़ून के दाग़वाली तहरीर को बार-बार अपने हाथों में उलटते-पलटते बुदबुदाये।

"मुझे नहीं मालूम," दोब्रोख़ोतोव ने विक्षिप्त-सी आवाज़ में जवाब दिया। "मैं यह समझ नहीं पा रहा। यह बात बस मेरे दिमाग़ में अट ही नहीं रही।"

"क्या तुम हस्तलिपि पहचान सकते हो? क्या यह उसने लिखा है?"

"ऐसा ही लगता है। यह उसके हाथ की ही लगती है।"

"मैं चाहता हूँ तुम पूरे निश्चय के साथ कहो। ध्यान से देखो। बेशक, कोई दस्तख़त नहीं। लेकिन तुमने उसे दस्तख़त करते देखा है।"

"हाँ। और मैं समझता हूँ यह उसी के हाथ की है।"

"लेकिन तुम्हें अहसास है, तुम क्या कह रहे हो? अपने होश में आओ! हमें मज़दूरों को समझाना है..."

दोब्रोख़ोतोव अफ़सोस से मुस्कुराया।

"मैं नहीं जानता और क्या कहूँ। जो जी में आये, कीजिए।"

"हस्तलिपि वही है। यह सच है।" दरवाज़े से एक शान्त आवाज़ सुनाई दी।

सब पलट पड़े। दरवाज़े पर गहरे काले रंग का सूट पहने एक नौजवान खड़ा था। मिलिशिया का एक सिपाही उसके कंधे के पीछे से झाँक रहा था।

"आप कैसे जानते हैं, कॉमरेड करीमोव?" यफ़ीम दनीलोविच ने ग़ुस्से से चौंककर पूछा। "पहले कम से कम पढ़ तो लीजिए, यहाँ क्या लिखा है। आपने तो अभी तक कुछ भी नहीं देखा है।"

शान्तिपूर्वक, बिना कोई दिलचस्पी दिखाये करीमोव ने तहरीर पर, उसे हाथ में लिये बिना, एक नज़र डाली। फिर उसने एक तीखी

निगाह कमरे के इर्द-गिर्द लाश पर और मृत व्यक्ति के ठंडे, खुले हाथ के चाकू पर डाली।

"हस्तलिपि जानी-पहचानी है। यह उसी के हाथ की है, कॉमरेड नदेज्दिन," करीमोव ने अपनी आँखें संकुचित करते कुए दुहराया।

"मुझे इसका विश्वास नहीं, क्या सुन रहे हो? मुझे इसका विश्वास नहीं। यह किसी तरह की शैतानी है!" एर्गश करीमोव की ओर एक क़दम बढ़ाते हुए चीखा लेकिन वह तत्क्षण ही चुप हो गया, उसे करीमोव की चेतावनी भरी दृष्टि ने रोक दिया।

"आप तथ्यों से नहीं भाग सकते," करीमोव ने साभिप्राय कहा। "मेहरबानी करके दख़ल मत दीजिए, कॉमरेड सुल्तानोव। थोड़ा धैर्य रखिये। हम लक्ष्य से बस एक क़दम दूर हैं। आप को तहरीर कहाँ मिली?"

"मेज़ पर।"

"इसे वापस रख दीजिए। मैं चाहता हूँ, सब्र कमरे से चले जायें। कॉमरेड मिलिशिया, किसी को अन्दर न आने दीजिए।"

"ठीक है कॉमरेड करीमोव।"

करीमोव दोब्रोख़ोतोव की ओर मुड़ा।

"और आप इंजीनियर—आपको गिरफ़तार किया जाता है। मेरे पीछे आइये।"

"लेकिन मैं क़सूरवार नहीं कॉमरेड... मेरा यक़ीन कीजिए, मुझे इन सब चीज़ों से कोई मतलब नहीं!" दोब्रोख़ोतोव ने विह्वलता से कहा। "मैं इसके बारे में तनिक भी नहीं जानता। एर्गश! यफ़ीम दनीलोविच!"

"जाओ, चिन्ता मत करो," यफ़ीम दनीलोविच ने उससे फुसफुसाकर कहा। "अभी कुछ मत कहो।"

"देखिये, आप—नदेज्दिन!" करीमोव ने कठोरता से उन्हें मना किया। "हट जाइये।"

जैसे ही करीमोव इंजीनियर को मज़दूरों की अशान्त भीड़ से ले जाने लगा, सुखट्टा मख़सूम आँगन से ग़ायब हो गया।

ख़ुशी से नाचता, नज़ाकत से ग़लाम शहर की ओर जानेवाली धूल भरी सड़क पर चल पड़ा। वास्तव में वह उड़ा जा रहा था, जैसे उसके पंख लग गये हों।

चाय-विक्रेता ने कड़ाई से उसे अपने पास न आने के लिए आगाह कर दिया था। "अगर तुमने आने की हिम्मत की," उसने चेतावनी दी थी, "मैं उसी समय तुम्हें गोली मार दूँगा।" लेकिन जो ख़बर उसके पास थी, वह इतनी अच्छी थी कि वह कैसे उसे अपने पास ही रखे रहता! इसके अलावा, अब डरने की बात ही क्या थी? चेकावालों* को ग़लत सुराग़ मिल चुका था।

और निस्संदेह मख़सूम ने न कम न ज़्यादा बीस क़दम अपने पीछे-पीछे चली आ रही परंजीवाली औरत पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। वह चिथड़ों में थी और धूल से ढँकी भी। उसे एक-सी सैकड़ों-हज़ारों औरतों में पहचाना नहीं जा सकता था। अगर किसी ने उसकी ओर तत्परता से देखा होता तो उसे पता चल जाता कि उस जैसी ऊँचाई और क़द-काठी की औरत के मुक़ाबले उसके डग छोटे थे।

उस परंजी के अन्दर एक हट्टा-कट्टा औरत चली जा रही थी।
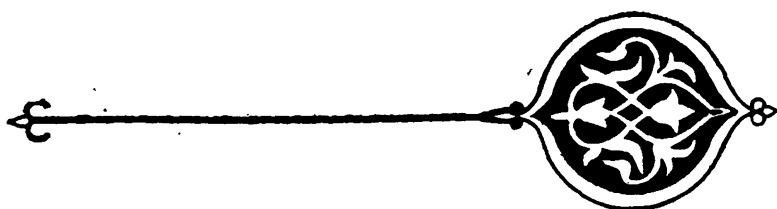
उनतीसवाँ भाग

उस शाम "मास्को-निवासिनियों" हाजिया, रिज़वान चाची व अन्य महिलाओं की वापसी पर उनका स्वागत किया गया। पूरे नगर और पड़ोसी गाँव की महिलाएँ फूल ले-लेकर रेलवे स्टेशन पर उमड़ पड़ीं। लेकिन स्वागत लोगों के इच्छानुरूप नहीं हो पाया। अब्दुसमत तो अपनी वाद्य मंडली लेकर भी नहीं आया। कोई स्वागत भाषण भी नहीं हुआ।

---

* चेकावाला – प्रतिक्रान्ति, तोड़-फोड़ और मुनाफ़ाख़ोरी के नियंत्रण के लिए अखिल रूसी असाधारण आयोग।

अकेले एर्गेश ऐसे व्यवहार कर रहा था जैसे निर्माण-स्थल पर कोई भी बुरी घटना न हुई हो। एक डिब्बे की सीढ़ियों पर हाजिया को देखकर वह सीधे उसकी ओर दौड़ पड़ा। सब के सामने ही उसे बाँहों में भरते हुए उसने, हाजिया के ना-नू करने से पहले ही उसके दोनों गाल चूम लिये। फिर अपनी माँ के पास जाकर उसने उसे भी बाँहों में भर लिया लेकिन कम उत्साह से।

रिज़वान चाची का सामान प्लेटफ़ॉर्म से इक्के तक उठाकर यफ़ीम दनीलोविच ले गये। हाजिया का सामान एर्गेश ने, उसकी मदद को आ रहे दूसरे आदमियों को भगाकर, ख़ुद उठा लिया। रास्ते भर वह किताबों की पेटी के भारी वज़न की शिकायत करता और पूछता रहा कि चाहे कुछ भी हो, इसमें सिर्फ़ पोशाकें नहीं। "तुम पर राजधानी का रंग चढ़ गया है, और बुर्जुआ की तरह तहिया कर बड़ा-सा वार्डरोब ही घर ले आयी हो..."

एर्गेश ने अनाख़ाँ को हैरानी में डाल दिया था। कोई और समय होता तो उसके निश्छल उल्लास से वह प्रभावित हुई होती। लेकिन आज उसने उसके हृदय में विरोध-भाव ही पैदा किया था। वह यफ़ीम दनीलोविच को भी नहीं समझ पा रही थी।

यह कहकर कि हाजिया और दूसरों को सामान खोलना और लम्बी यात्रा के बाद विश्राम करना होगा, अनाख़ाँ औरतों से जल्दी ही विदा ले घर चली गयी। दोब्रोख़ोतोव के साथ हुए हादसे से वह अपना दिमाग़ नहीं हटा पा रही थी।

वह अकेली अपने विचारों में डूबी रहना चाहती थी लेकिन स्वयं आकार ग्रहण करते विचार, किसी भी तरह सुखद न थे।

"क्या यह सच हो सकता है?" अपने हाथ भींचते हुए उसने सोचा। "क्या उसे समझने में मुझसे ग़लती हुई थी? मैंने उसकी तारीफ़ की थी। जब उसका काम ठीक-ठाक चलता होता था, मुझे ख़ुशी होती थी और उसे बुझा-बुझा, थका देखकर मुझे दुख होता था। कितना दयालु, सुशील और विचारवान व्यक्ति है वह। वह एक मक्खी को भी पीड़ा नहीं पहुँचा सकता। मैंनें जितने लोगों को देखा है, उसमें वह सर्वाधिक सरल है। आख़िर क्यों, कुछ महिला जुलाहिनें भी उससे कहीं अधिक तेज़ मिज़ाज और दस्तंदाज़ हैं। और कितना अद्भुत काम

करनेवाला। और यह आदमी विध्वंसक था? सेर्गेय ल्वोविच–रंगे हाथों पकड़ा जानेवाला अपराधी? उसकी सहृदयता, निस्स्वार्थपन चतुरतापूर्ण जोशीले-भाषण, लोगों और परियोजना के कार्य में उनके प्रयासों के प्रति उसकी सहानुभूति – क्या यह सब कृत्रिम था? क्या उसका पूरा जीवन एक झूठ था? लेकिन क्या इतने भले आदमी पर इतना बड़ा अपराध लगाया जा सकता है? क्या वह सब उसका वहम था जो उसने अपनी आँखों से देखा और दिल से महसूस किया था?"

अनाख़ाँ ने हाथों से अपना सिर पकड़ लिया। "क्या मैं ऐसी मूर्ख, ऐसी अंधी हूँ?"

शुक्र था कि उसकी बेटियाँ उसकी परेशानी देखने घर पर न थीं।

स्टेशन पर यफ़ीम दनीलोविच दोब्रोख़ोतोव के बारे में अजीब ढंग से बोले थे: उनका लहजा टाल-मटोलवाला था, उन्होंने कुछ समझ में न आनेवाला संकेत किया था: "हमने एक विध्वंसक को नज़र अंदाज़ कर दिया था, है न, अन्या?" उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा था जैसे मज़ाक़ कर रहे हों। "लगता है, जैसे, हम पूरी तरह चौकस नहीं रहे थे।" अनाख़ाँ का ख़्याल था, जो कुछ उन्होंने कहा था, उससे एकदम भिन्न बात उनकी आँखें और मुस्कुराहट प्रकट कर रही थीं। इसका मतलब क्या था? हठात् वे मुस्कुराने क्यों लगे थे?"

ज़ाहिरी तौर पर जो कुछ हुआ था, उसके लिए यफ़ीम दनीलोविच शर्मिन्दा थे। खेद है, उसे उनसे अकेले में बात करने का कोई मौक़ा न मिला था। उन्होंने किसी भी दुसरे के मुक़ाबले ख़ुद को कहीं अधिक धोखा दिया था। वे इंजीनियर से प्रेम करते थे। एर्गंश को तो शुरू से ही उस आदमी का विश्वास नहीं था, वह उसे शक की नज़रों से देखा करता था। तभी तो वह आज इतना लापरवाह था। क्या उसका इंजी-नियर को नाराज़ करना उचित ही था? अनाख़ाँ की भृकुटि तन गयी। यह सचाई उसके लिए अप्रिय थी।

न जाने कैसी पीड़ा और विरोध की भावना ने अनाख़ाँ का हृदय जकड़ रखा था। यह सब क्यों और कैसे हुआ था? इंजीनियर के लिए उसे खेद था। हाँ खेद! लेकिन उसकी व्याख्या किस तरह की जा सकती थी? प्रेम में अल्हड़ और मुक्त हृदयवाला एर्गंश उसे क्रुद्ध कर रहा था जबकि एक घृणित, पोशीदा अपराधी उसके हृदय में सहानुभूति जगा रहा था? उसका विवेक इंजीनियर को कोस रहा था। वह और

कर भी क्या सकती थी! लेकिन उसका हृदय? उसके हृदय में इंजीनियर के प्रति कोई ग़ुस्सा क्यों नहीं था? ऐसा प्रकट हो रहा था, वह एक अच्छी कम्युनिस्ट नहीं? वह सतर्क नहीं और उसमें मेहनतकश वर्ग की भावना, वास्तविक चेतना का अभाव है, या उसका हृदय बस बुरी तरह विचलित हो गया, आख़िर औरत जो ठहरी? सदियों से लोग जानते हैं, औरत अपने को अपमानित करनेवाले तक के लिए जो उसके प्रेम और आत्म-समर्पण की परवाह किये बिना उसका जीवन नष्ट कर देता है, दुख का अनुभव करती है...

असह्य! झल्लाकर अनाख़ाँ उठ खड़ी हुई और कमरे में चहलक़दमी करने लगी।

तौलिया लेकर वह चेहरा धोने चली गयी। वह बुख़ार जैसा जल रहा था और उसे आशा थी, पानी इसे शीतल बना देगा। बरामदे में उसे हाजिया दिखाई पड़ी। लड़की आँखें झुकाये, साफ़ तौर पर अन्दर आने से हिचकिचाती खड़ी थी।

"हाजिया। मेरी लाड़ली–क्या मुझसे मिलने आयी हो?"

लड़की ने बिना आँख उठाये जवाब दिया:

"मैं-मैं उससे झगड़ पड़ी, अनाख़ाँ बहन। हम फिर झगड़ पड़े हैं। हमेशा के लिए। और फिर...फिर मैं नहीं जानती, मुझे क्या हो गया। सोचा आपको ही बताकर जी हल्का कर लूँ।"

अनाख़ाँ का दिल निर्मम ख़ुशी से काँप उठा।

सिर्फ़ उसे ही सदमा न था!

"किसके साथ झगड़ पड़ी? आ जाओ, बैठकर मुझे बताओ।"

"एर्गेश से, और किससे?" हाजिया ने जवाब दिया।

"अरे एर्गेश से!" मुस्कुराते हुए अनाख़ाँ ने सोचा। "वह एर्गेश से झगड़ पड़ी है!"

"अब क्या होगा, अनाख़ाँ बहन?" हाजिया ने बुझे मन से पूछा। "और फिर नैमन्चा में हो क्या रहा है?"

अनाख़ाँ उसका हाथ पकड़कर कमरे में ले आयी।

"झगड़ा काहे के लिए हुआ?"

"यह कैसे शुरू हुआ, मैं नहीं जानती। शायद हम एक दूसरे के लिए बने ही नहीं। मैंने उससे कहा: हाँ तो, एर्गेश? मैंने अपना वचन पूरा

किया है। जुलाहिनें तुम्हें शर्मिन्दा नहीं करेंगी। उन्होंने अपना प्रशिक्षण पूरा कर लिया है और काम के लिए तैयार हैं। वे करघों को बर्बाद नहीं करेंगी, तुम उन पर भरोसा कर सकते हो। तुम्हारा क्या बना? मिल कहाँ है?" उसने जवाब दिया: 'निर्माण-स्थल पर हमारे सामने कुछ दिक़्क़त पेश आ गयी थी–ठीक तुम्हारे आनेवाले दिन ही। इसने दुहरी निराशा पैदा कर दी।' आपसे क्या छुपाऊँ, इससे मुझे थोड़ा गुस्सा आ गया और मैंने उसे लताड़ दिया: 'निराशा,' तुम कहते हो? तुमने मामले को इतना तूल लेने ही क्यों दिया? तुम्हारे कारण दीवार गिरी। तुम चीफ़ हो। जब विध्वंसक कंक्रीट के साथ छेड़-छाड़कर रहे थे, तुम कहाँ थे? सिर के पीछे से गोली मारकर जुराखाँ की हत्या कर दी गयी–क्या यह भयानक अनुभव तुम्हारे लिए काफ़ी न था?"

"तुम एकदम ठीक कहती हो, मेरी नन्ही बहन। जो कहा सही है," अनाख़ाँ चीख़ पड़ी।

"फिर मैंने महसूस किया, वह रोब दिखा रहा है। वह घमण्डी आदमी है और मेरे शर्मिन्दा किये बिना ही काफ़ी भुगत रहा है। बेशक, यह बात दुखदायी है। लेकिन ज़रा सोचिये, अनाख़ाँ बहन, ट्रेन पर हमने इस दीवार का सपना देखा था–लेकिन यहाँ पाया कि यह तबाह हो चुकी है... क्या मुझे कहने का हक़ है, मुझे एर्गश के कारण कितनी पीड़ा और शर्मिन्दगी उठानी पड़ी है?.."

अनाख़ाँ मुस्कुरा पड़ी।

"क्या किसी बैठक में तुमने उसे यह सब कहा?"

हाजिया उसका मतलब नहीं समझ पायी।

"नहीं, किसी बैठक में नहीं," फिर एक बार अपनी आँखें नीचे झुकाते हुए उसने जवाब दिया: "बस हम ऐसे ही बग़ीचे में घूमने निकल गये और यह सब हो गया। हम एक आलू.बुख़ारे के पेड़ के नीचे खड़े थे।"

अनाख़ाँ ने सन्तोष के साथ सुना। यह एक लड़की के शब्द एक नौजवान के लिए थे जिसने उसके साथ मिलन-स्थल पर ले जाने की जल्दबाज़ी की थी। बस हो गया–आलूबुख़ारे के पेड़ के नीचे।

अनाख़ाँ धीरे से हाजिया के पास गयी। उसके ग़ुस्से व परेशानी पर लाड़ जताते हुए, उसने उसे कंधे से थामकर दोनों आँखें बारी-बारी चूम लीं।

फिर अनाख़ाँ ने दीवार घड़ी पर नज़र डाली। अभी ज़्यादा समय नहीं हुआ था। "कोई बात नहीं, रात है तो क्या, कोई बात नहीं, मैंने तत्क्षण ही कुछ नहीं किया," उसने सोचा। "उसके लिए कभी देर नहीं होगी!"

"ठीक है," अनाख़ाँ ने इतने रूखेपन से कहा कि हाजिया हक्का-बक्का हो गयी। "मुझे माफ़ करना। मुझे तुरंत ही जाना है। मुझे एक अत्यावश्यक काम निबटाना है।"

"लेकिन आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया, अनाख़ाँ बहन।"

"जवाब दूँगी। चिन्ता न करो। तुम मेरा जवाब सुन लोगी," अनाख़ाँ ने दृढ़ता से कहा। "नहीं तो तुम मेरे साथ आ सकती हो। हम साथ चलेंगे।"

अनाख़ाँ ने पैराफ़िन लैम्प को बुझा दिया। दोनों चाँद की रोशनी से जगमगाती सड़क पर जा निकलीं।

वे चुपचाप चलती रहीं। यह महसूस करके कि अनाख़ाँ जो कर रही है, वह विशेष महत्वपूर्ण है, हाजिया ने कोई सवाल नहीं पूछा।

"अगर वह सो रहा होगा, मैं उसे जगा दूँगी। आज रात वह शाँति से नहीं सो पायेगा," अनाख़ाँ ने सोचा। "मैं साफ़िया को जागने पर मजबूर कर दूँगी और अपने पति के बारे में उसकी आँखें खोल दूँगी। हम देखेंगे, उसके बाद उसे अपने यफ़ीम के लिए कोई श्रद्धा रह जायेगी।"

अनाख़ाँ ने दृढ़ निश्चय कर लिया था। उसे क्या करना है, ठीक मालूम था। करीमोव ने सेर्गेई ल्वोविच को गिरफ़्तार कर लिया। लेकिन यफ़ीम दनीलोविच ने क्या किया? उन्होंने एक अंगुली तक नहीं उठायी थी। क्या अपनी ज़बान का इस्तेमाल करना भी भूल गये थे। क्या इसी को वह सतर्कता कहते थे? वह आदमी को जानते थे, उस पर विश्वास रखते थे, प्यार करते थे—और उसके लिए लड़ाई नहीं की, उसकी रक्षा नहीं की?

अगर अनाख़ाँ या साफ़िया पर सन्देह किया जाता, आरोप लगाया जाता तो? तब क्या वह चुप रहते? क्या उसे भी शर्मिन्दगी मान बैठते? क्या अपने दोस्तों, पार्टी कॉमरेडों को कहा होता: "हमने एक विध्वंसक को नज़र अंदाज़ कर दिया था—हम पूरी तरह सतर्क नहीं थे?"

एर्गश। जोशीला एर्गश। उसका जोश और साहस कहाँ था? अनाख़ाँ को बताया गया था कि दीवार के तबाह होते ही उसने कहा था, 'वह इस आदमी के लिए अपने जीवन की शपथ लेता है। उस समय एर्गश एक इंसान था, एक चीफ़, एक कम्युनिस्ट था। अब वह लोगों से क्या कहेगा? उसने नुस्रतुल्लाह की तहरीर देखी — और सटक सीताराम हो गया। और उसी स्थिति में वह एक लड़की के सामने आने की हिम्मत कर बैठा था? क्या नौजवान उसे धोखा देने की सोच रहा है?

नुस्रतुल्लाह की मौत ने अनाख़ाँ को हिला दिया था। लेकिन उसकी तहरीर नीचतापूर्ण थी।

मामाजान ने अनाख़ाँ को बताया था कि जब दोब्रोख़ोतोव को ले जाया जा रहा था तो किस तरह उसने अपने बेक़ुसूर होने की क़सम खायी थी, मदद की याचना की थी। लेकिन करीमोव ने उसे चीखकर चुप कराते हुए एक मिलिशिया इंजीनियर के पास तैनात कर दिया था और कोई भी उसकी ओर हाथ बढ़ाने की हिम्मत नहीं कर पाया। कितना निर्मम, कितना अमानवीय — जितना कहा जाये, कम होगा। अनाख़ाँ एक ईमानदार, श्रमजीवी, एक सहृदय व्यक्ति को खिलौना, बलि का बकरा नहीं बनने देगी। अनाख़ाँ अपना कर्त्तव्य निभायेगी।

सड़क से उसने देखा, नदेज़्दिन का परिवार अभी तक जाग रहा था। वे चाय पी रहे थे। साफ़िया की बेटी उसकी बाँहों में थी: बच्ची हृष्ट-पुष्ट थी और अपनी माँ की गोद में घुटनों के बल बैठ सकती थी। उस घर में शान्ति और समृद्धि का अहसास किया जा सकता था... अच्छा, ठहर जाओ, थोड़ी देर और हँस बोल लो मेरे दोस्तो!

"काश मैं आपको पहले से नहीं जानती होती, यफ़ीम दनीलोविच," अनाख़ाँ ने कमरे में घुसते ही कहा, "और आप मेरे साबिरजाँ और मेरे शिक्षक नहीं होते, मैं आप से मिलने नहीं आती! मेरी ओर इस तरह देखना बन्द कीजिए, हाँ। मैं भी उसी विषय पर बोल रही हूँ। क्या मैं आप से पूछ सकती हूँ, यह करीमोव कौन है? चेका का एक कार्यकर्त्ता। इसका मतलब है, उसका कर्त्तव्य, उसका काम ईमानदार लोगों की रक्षा करना है..."

"और वह अपना काम बेहतरीन ढंग से कर रहा है, मेरा यक़ीन

कीजिए। मैं ऐसा अपने व्यक्तिगत अनुभव से कह सकता हूँ," अनाख़ाँ के पीछे से एक परिचित आवाज़ ने नम्रता से कहा।

चौंककर वह पलट पड़ी। संकोच से अपना हाथ बढ़ाते हुए इंजीनियर दोब्रोख़ोतोव कमरे के कोनेवाली एक कुर्सी से उठकर उसके पास आ गया। उसे भ्रम नहीं हुआ था। यह सेर्गेई ही था—दुबला, पीला लेकिन ख़ुशी से भरा और मुस्कुराता।

अनाख़ाँ इतनी विस्मयविमूढ़ थी कि अनजाने ही पूछ बैठी:

"सुनिये, आप यहाँ क्या कर रहे हैं?"

"मैं इन्हें बता रहा हूँ," सेर्गेई ने जवाब दिया, "कितनी जल्दी से चेका कार्यकर्त्ताओं ने वास्तविक अपराधी और आज जो कुछ मुझे दिखाया गया, अगर मैं उसे सही-सही समझ पाया तो बड़े ही काइयाँ, मक्कार और ख़ूंख़्वार धूर्ताधिराज को जा पकड़ा।"

"बदक़िस्मती से उन्होंने वैसी तेज़ी नहीं दिखाई जैसी कि हम चाहते थे," यफ़ीम दनीलोविच अनाख़ाँ की ओर तिरछी नज़र डालते हुए अपनी राय ज़ाहिर की। उनकी मूँछों के बीच सहृदय किन्तु व्यंग्यपूर्ण मुस्कान छुपी थी।

अनाख़ाँ कुछ भी नहीं समझ सकी। परेशान हाजिया की ओर देखकर उसका दिमाग़ व्यग्र हो उठा: उसने अपने मित्र यफ़ीम दनीलोविच को क्या कह दिया था? क्या वह उसके आने का कारण समझ गये?

दोब्रोख़ोतोव ने अनाख़ाँ का हाथ अपने हाथों में ले लिया और चुप-चाप दबाया।

अनाख़ाँ ने देखा, वह तुरंत ही सब कुछ समझ गया था। और फिर उनका समझ लेना कोई असंभव तो नहीं—वे बच्चे नहीं थे।

"आपका शुक्रिया," उसने उसका हाथ अपने सीने से लगाते हुए कहा। "आप जानती हैं क्यों? आश्रय और स्नेह देने के लिए और मैं कहना चाहूँगा, एक एकान्तजीवी आदमी, एक निष्फल, एक रूसी अमीर की नाजायज़ औलाद का हौसला बुलन्द करने के लिए। गुस्ताख़ी माफ़ करेंगी, लेकिन हम रूसियों में उस स्त्री के हाथ चूमने का रिवाज है जिसकी हम श्रद्धा करते हैं, सम्मान करते हैं। मैं आपको छूने की गुस्ताख़ी तो नहीं करूँगा लेकिन अपने ख़्यालों में... मैं आपका हाथ चूमता हूँ, कॉमरेड अनाख़ाँ, क्योंकि... क्योंकि आप... मैं कैसे कहूँ..."

"क्योंकि वह बहुत दिलेर है!" यफ़ीम दनीलोविच ने उसकी बात पूरी की।

"बिलकुल ठीक, बिलकुल ठीक।"

"मेज़ के पास बैठो, अन्या," यफ़ीम दनीलोविच ने आगे कहा। "तुम भी हाजिया, बैठ जाओ। हमारे साथ चाय लो। शायद तुम्हारे ऐसा करने से इंजीनियर में हिम्मत आ जाये, वह भी वैसा ही करे। इस आदमी को डर है, कहीं यह मेज़बान की दरो-दीवार न खा डाले, सो चीनी भी डर कर लेता है। और मैं सोच रहा था कि एक बार शुरू हो जाने पर यह ठीक वैसा ही करेगा – ज़रा देखो, कितना दुबला है वह।"

दोब्रोख़ोतोव की ओर देखे बिना अनाख़ाँ मेज़ के पासवाली जगह पर बैठ गयी और हाजिया को भी अपनी बग़ल में बैठा लिया। किसी लजालु स्कूली लड़के-सा झेंपता इंजीनियर भी मेज़ के पास जाकर, अनाख़ाँ के सामने बैठ गया।

"इतनी रात हो गयी और बच्ची को तुम सुला नहीं रही हो, साफ़िया," अपनी काँपती आवाज़ पर क़ाबू पाने में असमर्थ होने के कारण सुर्ख़ होती अनाख़ाँ ने कहा।

"हर दिन हमें ऐसी अच्छी ख़बरें कहाँ मिला करती हैं, मेरी प्या-री," साफ़िया ने उसकी ओर चाय का प्याला बढ़ाते हुए जवाब दिया।

जब वे चाय पीने आराम से बैठ गये, दोब्रोख़ोतोव ने अनाख़ाँ को बताया, किस तरह करीमोव उसे चेका ले गया और अपने कार्यालय का दरवाज़ा बन्द करके उससे पूछताछ करने के बदले उसने एर्गश और यफ़ीम दनीलोविच की तरह उसे अपनी बाँहों में भर लिया। "मैं आपको कुछ दिखाऊँगा," उसने कहा, "और जो अपमान आप महसूस करते हैं, वह दूर हो जायेगा।" उन्हें इन्तज़ार करना पड़ा। वे साथ-साथ बहुत देर तक इन्तज़ार करते रहे। उन दोनों ने मिलकर सिगरेटों का पूरा पैकेट ख़त्म कर डाला। तब उन्हें कई आदमियों के चलने की आवाज़ सुनाई पड़ी। करीमोव दौड़ कर दरवाज़े के पास गया। एक कोयले-से काले आदमी को उसके कार्यालय में लाया गया, दुनिया का कोई भी रूपाकृति विशेषज्ञ उसके यूरोपीय होने का अनुमान नहीं लगा सकता था। परंजी में एक लम्बा, ख़ुशमिज़ाज रूसी जवान था।

"मेरा आदाब क़बूल फ़रमायें," करीमोव ने कहा। "स्वागत है। तो हमारी मुलाक़ात श्रीमान भद्र पुरुष से हो ही गयी।" काले चेहरेवाले ने पूर्वी अन्दाज़ में सिर झुकाकर बंदगी करते हुए जवाब दिया: "माफ़ कीजिए, श्रीमान चेका। मैं एक अफ़ग़ान हूँ। मेरा नाम मुहम्मद सईद है और मैं चाय का व्यापारी हूँ।" रूसी आदमी ने कंधों से परंजी उतार दी और करीमोव को किसी चोग़े से फाड़ा हुआ सिलाई की गयी मग़ज़ी का एक टुकड़ा दिया। उस फ़रेबी अफ़ग़ान ने जो चोग़ा पहन रखा था, वह बिना मग़ज़ी का था और उसके कॉलर के पास थोड़े धागे बाहर निकले थे। "उसने इसमें दाँत चुभोने की कोशिश की थी," रूसी आदमी ने कहा, "मुझे उसे रोकना पड़ा।" करीमोव ने सीवन को टटोला। "अहा। ज़हर की शीशी। प्रुसिक एसिड – यह किस लिए है, श्रीमान चाय-विक्रेता?" "मैंने मशहद में एक दरवेश से चोग़ा खरीदा था। भगवान जाने इसे किसने बनाया और किसके लिए बनाया।" "बहुत ख़ूब," करीमोव ने कहा और एक इशारा किया। क्या आप सोच सकती हैं, किसे कमरे में लाया गया? पहले, मिल परियोजना मे खुदाई मज़दूर का काम कर रहे मख़सूम को जो इतना काँप रहा था कि फ़र्श की लकड़ी तक हिल रही थी और फिर शिक्षक नईमी को।

बाद में करीमोव ने दोब्रोख़ोतोव को बताया कि नईमी सबसे बड़ा बदमाश निकला। उसने बहुत से लोगों की झूठी बदनामी की लेकिन चाय-विक्रेता को धोखा नहीं दिया था। चाय-विक्रेता ने ख़ुद अपना रहस्य खोल दिया था।

जब उसने नईमी को देखा, वह उसकी ओर पागल कुत्ते की तरह झपट पड़ा जैसे उसका गला फाड़ डालना चाहता हो। रूसी आदमी को एक बार फिर उसे रोकना पड़ा...

अनाख़ाँ बिना कोई हस्तक्षेप किये सुन रही थी। इंजीनियर इस तरह बोल रहा था, जैसे, वह सिर्फ़ उसी को सुना रहा हो, जैसे मेज़ के पास और कोई दूसरा न हो और अनाख़ाँ को अपने हृदय में एक अनजानी पीड़ा का अहसास हो रहा था।

अनाख़ाँ को एकटक देखे जा रही हाजिया ने अब अपनी आँखें प्याले की ओर कर ली थीं – लड़की शायद अब बात को थोड़ा-बहुत समझने लगी थी।

"करीमोव ने मेरे प्रति इतना सम्मान दिखाया," दोब्रोख़ोतोव ने कहा। "मानो दुश्मन का पर्दाफ़ाश करनेवाला आदमी मैं ही था – जैसे मेरी घबराहट, मेरी दयनीय निराशा साभिप्राय थी।"

"वह करीमोव का दृष्टिकोण है," यफ़ीम दनीलोविच बीच में बोल पड़े। "लेकिन अगर हम इस पर गहराई से दृष्टिपात करें तो मुझे बिना टालमटोल किये साफ़ कहना चाहिए कि जो कुछ हुआ, इसका सबसे ज़्यादा दोष यफ़ीम नदेझ्दिन पर लगना चाहिए। जुराख़ाँ को मुझे कमिस्सार नहीं कहना चाहिए था, मैं इस सम्मान के योग्य नहीं। हमने राजनीतिक कार्य को नज़र अन्दाज़ कर दिया, इस की ज़िम्मेवारी बशारत, उसके दीवारी समाचार पत्र और अब्दुसमत व उसके कोम्सोमोलों पर टाल दिया। वे अपनी ओर से बेहतरीन काम कर रहे हैं – उनसे इससे ज़्यादा की माँग नहीं की जा सकती। लेकिन हम बूढ़े लोग, हम ढीले तो नहीं पड़ गये – मैं इस हद तक नहीं कहूँगा, लेकिन हम अपनी सतर्कता ज़रूर खो बैठे। हम दोष-मुक्ति के लिए कह सकते हैं, हमारे पास समय की कमी रही। हमने एकाकी रूप से काम किया। जहाँ कोई सामंजस्य नहीं, जहाँ एक ईमानदार आदमी को चिढ़ाया जाता है और रूसी अमीर की सन्तान कहा जाता है – भले ही प्रेम से ही, बिना बुरी भावना के ही सही, अज्ञानता के कारण, यह भी तो हमारे अन्तःकरण पर बोझ ही है, जहाँ इस तरह की छोटी-छोटी बातें – नज़र अन्दाज़ कर दी जाती हैं, वहाँ दुश्मन को मनमानी करने की छूट मिल जाती है।"

अनाख़ाँ ने बेचैनी से अपने हाथ भींच लिये।

"आप मेरा विश्वास नहीं करेंगे, यफ़ीम दनीलोविच, लेकिन . . . लेकिन मैं ठीक यही आप से कहना चाहती थी।"

"कितने अफ़सोस की बात है, कॉमरेड एर्गश यहाँ हम लोगों के साथ नहीं है," दोब्रोख़ोतोव ने जोश से कहा।

"वह हमारे घर अपना मुखड़ा नहीं दिखाता," साफ़िया ने बीच में कहा। "यफ़ीम आप लोगों को चाय पेश कर रहे हैं लेकिन एर्गश का स्वागत तो बस उसकी ख़बर लेते ही करते हैं।"

हाजिया इन शब्दों पर चौंक पड़ी लेकिन सिर्फ़ अनाख़ाँ ही इसे देख पायी।

वह लड़की को गले से लगा लेना चाहती थी और कानों में धीरे से

कहना चाहती थी: "जाओ, उससे थोड़ी कोमलता दिखाओ, उसे उत्साहित करो। उसे बुरी तरह तुम्हारी हमदर्दी की ज़रूरत है।"

लेकिन अनाख़ाँ ने यह महसूस करके कि हाजिया दर्जन भर सलाहकारों से कहीं बेहतर फ़ैसला ले सकती है, ख़ुद को रोक लिया।
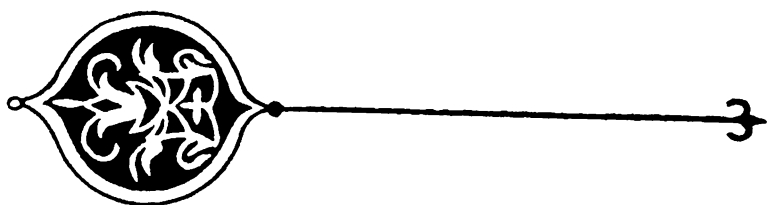
तीसवाँ भाग

यह ठंडी पतझड़ का मौसम था। हवा के झोंकों में शरद ऋतु का आभास होता। पेड़ों के पत्ते बहुत पहले ही झड़ चुके थे और चौबीसों घंटे हमेशा मेघाछन्न आकाश बर्फ़ या शीतल वर्षा का ख़तरा बनाये रखता। यदा-कदा सूर्य के दिखाई देने पर मज़दूरों को घुटने तक गहरे कीचड़ में काम करना पड़ता। रात में उन्हें पाला का ख़तरा बना रहता, उन्हें भय था, कहीं पानी के नल जम न जायें।

अब निर्माण-स्थल पर दिन-रात काम चलता रहता। जितने लोग दिन में काम करते, उतने ही रात में।

"पार्टी इकाई ने कहा है," मामाजान ने कंक्रीट मज़दूरों को समझाया, हम नुक़सान को पूरा करेंगे और दुश्मन को चूर-चूर कर डालेंगे। रात की पाली," अपनी दाढ़ी के बीच मुस्कान बिखरते उसने आगे कहा, "सिर्फ़ प्यार करनेवालों के लिए है—जो अपने काम से प्यार करते हैं।"

आख़िरकार मामाजान ने अपना लक्ष्य पा ही लिया था: वह "हवाई जहाज़" पर जा बैठा था। लेकिन निर्माण-स्थल पर लोगों की मानसिक स्थिति बुलन्दी पर न थी। तबाही ने अपनी छाप सिर्फ़ कंक्रीट पर ही नहीं छोड़ी थी। हशर ने जो उत्साह पैदा किया था, उसे फिर से प्राप्त करना मुश्किल था। तिस पर लगता था, नगर अधिकारियों ने परियोजना के प्रति अपना रुख़ बदल लिया था। जो काम पहले एगंश एक टेलीफ़ोन

कॉल से पूरा कर लेता था, अब उसे पूरा करने के लिए दूना प्रयास करना पड़ता था।

एर्गेश घबराहट महसूस करने लगा था और हमेशा बकझक करता रहता। उसके कार्यालय का लैंप सुबह तक जलता रहता। सिगरेट का धुआँ कुहासे की तरह उसके कमरे में लहराता रहता। एर्गेश के तिड़के चेहरे पर छोटी, घूंघराली जिप्सियों जैसी दाढ़ी उग आयी थी। देखने से वह बूढ़ा हो गया लगता लेकिन वह पहले से कहीं अधिक अध्यवसायी, अधिक दृढ़ हो गया था। वह किसी को नहीं बख़्शता। किसी को चैन नहीं लेने देता।

आम तौर से टेलीफ़ोन पर बातचीत ने यह शक्ल अख़्तियार कर ली थी:

"सुनिये, मेरे प्यारे कॉमरेड, बीच रात में मुझे जगाने का आपको क्या हक़ है, और वह भी लगातार तीन बार? मैंने टेलीफ़ोन एक्सचेंज को रात में आप से मिलाने के लिए मना कर दिया था लेकिन लगता है, आपने ऑपरेटरों के साथ साँठ-गाँठ कर ली है। यह अतिक्रमण है। यह और कुछ नहीं, आपकी शरारत है! नही, मैं आपको एक भी कर्मी नहीं दे सकता, समझ गये न आप! मेरे पास बहुत से काम हैं। मुझे अकेले छोड़ दीजिए नहीं तो मैं नगर पार्टी समिति ब्यूरो में आपकी शिकायत करूँगा।"

"ब्यूरो में क्यों?" एर्गेश जवाब देता। "यहाँ आ जाइये और मेरी गर्दन तराश लीजिए। अगर आप ऐसा करें तो ज़्यादा ठीक रहेगा।"

"आपने अपनी गर्दन ख़ुद काट ली है–अपनी ग़लती का दोष दूसरों पर मत थोपिए।"

"मैं थोप नहीं रहा हूँ लेकिन जब संघर्ष जारी है, मैं आपको सोने नहीं दूंगा। मैं आपको साफ़-साफ़ कह रहा हूँ। हाँ, तो अब हम कितने पर राज़ी होंगे? मुझे पाँच आदमियों की ज़रूरत है।"

"आप पागल हैं। मैं रिसीवर रख रहा हूँ।"

"रख के तो देखिए और मैं कान लगाये रहूँगा कि आप जैसा ज़िम्मेवार आदमी नगर पार्टी समिति ब्यूरो को क्या कहता है।"

एर्गेश अपने मातहतों को भी चैन नहीं लेने देता। वह अपने "पड़ोसियों" के हाथ से अपनी ज़रूरत के मज़दूर छीन लाता लेकिन दोख़ोख़ोतोव से वह कहता:

"मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ, उपहारों का भरोसा मत रखो। अब हमें और हुनरमन्द मज़दूर नहीं मिलेंगे। जो हैं, उन्हीं से काम चलाओ।"

"वे थक गये हैं," सेर्गेय गिला करता। "उनमें से बहुत अभी भी समझते हैं, उन्हें बरगलाया जा रहा है। मैं उन्हें समझ सकता हूँ: छह हफ़्ते की मेहनत बेकार चली गयी है। रात की पाली ढीली है..."

"मैं नहीं सुनना चाहता कि तुम ख़ुद थक गये हो। यह आराम करने का समय नहीं। यह एक संघर्ष है और इसमें झींकने के लिए कोई जगह नहीं!"

एक दिन दोब्रोखोतोव ने एर्गश को रिपोर्ट की:

"क्या आप नारमत को जानते हैं? वह पाली के बीच हर रोज़ काम करना बन्द कर देता है..."

"नारमत?" एर्गश फट पड़ा। "क्या मैं नारमत को जानता हूँ? और तुम? तुम क्या करते हो? क्या अन्तर्ध्वंसकों के पीछे-पीछे पूँछ हिलाते चलोगे? यह नियमित अन्तर्ध्वंस है! अभी इसी पल मैं दोनों को ठीक कर दूँगा! मेरे साथ आओ!"

एर्गश ड्योढ़ी से बाहर क़दम रखते ही यफ़ीम दनीलोविच से जा टकराया।

"जल्दी क्या है? तुम्हारा अन्तर्ध्वंस कहाँ है? अन्तर्ध्वंसकों को मार भगाओ!" यफ़ीम दनीलोविच एर्गश को गले लगाते हुए चीखे।

यह एक सुखद आश्चर्य था। यफ़ीम दनीलोविच पूरे हफ़्ते भर से निर्माण-स्थल पर नहीं थे। उन्हें केन्द्रीय समिति द्वारा समरक़न्द बुलाया गया था। एर्गश को अपने कमिस्सार के जल्दी आने की उम्मीद थी। वास्तव में पिछले हफ़्ते वह एकदम सो ही नहीं पाया था।

लेकिन यफ़ीम दनीलोविच को जिस ढंग का स्वागत मिला, वह शान्ति देने से कोसों दूर था:

"रुकिये, आप कहाँ से आ टपके! किस ट्रेन से?"

"मामूली ट्रेन से।"

"क्या यह देर थी?"

"एक-एक मिनट सही।"

"आप इतनी देर कहाँ थे? मैं यह समझ नहीं पाया। मुझे जल्दी

से बताइये, वहाँ क्या हुआ? क्या आपकी अच्छी ख़बर ली गयी?"

"सच मानो। यहाँ नगर के मुक़ाबले कहीं बहुत ज़्यादा। मैं अभी तक इससे स्तंभित हूँ। लेकिन वे हमें और सहायता देने जा रहे हैं। उन्होंने मुझसे बेलाग कहा, वे हमें फिर से पैरों पर खड़ाकर देंगे लेकिन साथ ही चेतावनी दी कि हमें दुबारा लड़खड़ाना नहीं होगा। उन्होंने अनुभवी निर्माण कर्मियों और फिटरों की टीम भेजने का वायदा किया है—कुल मिलाकर तीस आदमी।"

"तीस!" एर्गश और दोब्रोख़ोतोव एक साथ किलक उठे।

"तीस आदमी!" यफ़ीम दनीलोविच ने फिर कहा। "लेनिनग्राद स्थित स्तेपन ख़ल्तूरिन मिल हमारी देखरेख करेगा। उन्होंने हमें दो ट्रक, एक क्रेन दिया है..." उन्होंने अपनी जेब से एक काग़ज़ निकालकर खोला। "यह रहा, इसे पढ़ो। पूरी सूची है..."

एर्गश और दोब्रोख़ोतोव ने यफ़ीम दनीलोविच से काग़ज़ झपट लिया और एक-दूसरे से ले-लेकर पढ़ने लगे।

"यह रहे आपके उपहार," इंजीनियर ने कहा।

आख़िर एर्गश ने उससे काग़ज़ ले लिया और हवा में उसे हिलाते हुए ख़ुशी से चीख पड़ा:

"अपनी जेब में ऐसी ख़बर लेकर आप धरती पर कहाँ मारे-मारे फिर रहे थे? बन्दूक के कुन्दे की क़सम, आपको कड़ी से कड़ी सज़ा मिलनी चाहिए! आप थे कहाँ?"

"चाय पी रहा था," यफ़ीम दनीलोविच ने शान्तिपूर्वक जवाब दिया।

"क्या?"

"मैंने कहा, चाय पी रहा था।"

"आप चायख़ाना में बैठे रहे? अपनी तबीयत बहलाते हुए..."

"तुमने यह कैसे सोचा, मैं चायख़ाना में था? मैं यहाँ लाल कोने में कंक्रीट मिक्सर के पास मज़दूरों से बात करता अपना दिल बहला रहा था। प्रसंगवश, उन्हें मेरी ख़बर पसन्द आयी और मैं तुम्हें विश्वास दिला सकता हूँ, इससे उनका उत्साह बढ़ गया। तुम्हारी तरह ही वे चीखे और अपनी ख़ुशी ज़ाहिर की। उन्हें इसकी उतनी ही ज़रूरत है, जितनी हमें। क्या हमारा शोरगुल तुम्हारे कानों में नहीं पड़ा?"

एर्गेश ने अपने मुक्के भींचते हुए तेवर बदल लिये।

"हाँ तो मैं आपको बताऊँगा..."

"तुम मुझे क्या बताओगे?" यफ़ीनम दनीलोविच ने उसकी बात बीच में ही काट दी। "हमेशा बस "मैं-मैं।" ज़रूरत से ज़्यादा तुम "मैं-मैं" कहते हो, चीफ़। इसकी जड़ क्या है? तुम्हें इसकी ज़रूरत किस लिए पड़ती है? मेरे दोस्त, मेरी बात सुनो। तुम्हें जनता के क़रीब जाना है—मामाजान के और उस नारमत के, वही जिसे तुम अन्तर्ध्वंसक कह रहे हो। यही मेरी नेक सलाह है। और इससे अपनी घबराहट पर तुम क़ाबू पाओगे।"

नारमत का नाम सुनते ही एर्गेश ग़ुस्से से आग-बबूला हो गया।

"क्या ऐसी बात है? नारमत के क़रीब, उस धार्मिक नशाख़ोर बदमाश के क़रीब? क्या जनता का वही आपका आदर्श है? जनता के क़रीब? यह आप किसको बता रहे हैं, मुझे? आप के ख़्याल से मैं कौन हूँ? मैं ख़ुद जनता हूँ। मैं ठीक जनता के बीच से निकलकर आया हूँ!"

"निकलकर आये हो?" यफ़ीम दनीलोविच ने विचलित हुए बिना पूछा। "निकलो मत, चीफ़। वैसा मत करो—यही ठीक होगा!"

एर्गेश अपनी हँसी नहीं रोक पाया। उसका थका चेहरा चमक उठा जैसे किसी बादल की परछाँई खिसक गयी हो।

"आपका मुझपर वही असर है जो बंदूक के तेल का बन्दूक की डाट पर।" उसने अपनी घूँघराली दाढ़ी खुजलाते हूए कहा। "मैं आपसे बहस नहीं कर सकता।"

"ज़्यादा सही होगा: आप करना नहीं चाहते," सेर्गेय ने टिप्पणी की जो ख़ुद हँस रहा था। "स्पष्टवादी बनिये।"

"मैं हमेशा स्पष्टवादी हूँ," एर्गेश गुर्राया।

"तुम्हें अपनी ग़लतियाँ क़बूल करनी हैं," यफ़ीम दनीलोविच ने सौम्य आग्रह के साथ अपनी बात जारी रखी। "और सारी जनता के सामने उन्हें स्वीकार करो। जनता से, ख़ुद से छिपाओ मत। इससे हम मज़बूत ही बनेंगे, कमज़ोर नहीं। व्यक्तिगत रूप, मैं तो अभी से ही इसे शुरू कर देना चाहता हूँ। कल आम सभा में।"

"मैं भी वही करूँगा," एर्गेश ने कहा। "लेकिन दिमाग़ में रख

लीजिए, मैं धूर्त बनना, झुठलाना नहीं चाहता और ख़ास तौर से किसी के हाँ में हाँ मिलाकर कृपापात्र नहीं बनना चाहता। जो मैं नहीं कर सकता, नहीं कर सकता: माफ़ कीजिए अगर मुझे वह कला नहीं सिखायी गयी है और इसे पढ़ना शुरू करने के लिए मेरे पास दिमाग़ नहीं। जहाँ तक छैला नारमत का सवाल है, मैं उसे अपने ढंग से निबटाऊँगा, आप इसका यक़ीन कर सकते हैं। मैं उसे यहाँ से रफ़ूचक्कर कर दूँगा। वह किसी और को बेवकूफ़ बना ले। मैं मुअज़्ज़ीन के बुलावे और रोज़ाना पाँच बार नमाज़ पर अपनी पाली निर्धारित नहीं करने जा रहा हूँ। मुअज़्ज़ीन ही उसे काम दे। हमारे ख़ज़ांची से उसे कानी कौड़ी नहीं मिलेगी।"

यफ़ीम दनीलोविच ने अपना सिर हिलाया मानो उन्हें विश्वास न हो।

"तुम किसी आदमी को धार्मिक होने के कारण अपना कोप भाजन नहीं बना सकते।"

"मैंने ख़ुद को धार्मिक संरक्षक के रूप में बहाल नहीं कर रखा है! मैं किसी को भी परियोजना पर बोझ नहीं बनने दूँगा!"

"तुम्हें कोई कैसे समझे?" यफ़ीम दनीलोविच ने आश्चर्य से पूछा। "तुम एक-एक आदमी प्राप्त करने के लिए लड़ रहे हो, तुम एक-एक मज़दूर पर निर्भर करते हो और इसके बावजूद एक को तुम निकाल बाहर करने जा रहे हो?"

"यह एक दुष्ट मंडली है," दोब्रोख़ोतोव ने अनमनेपन से कहा।

एर्गश ने उसे क्रुद्ध तिरछी नज़र से देखा लेकिन यफ़ीम दनीलोविच ने उसे कन्धों से थाम लिया, अपनी ओर पलटकर चिन्तापूर्वक उसकी आँखों में देखा जो नीन्द की कमी से सूज गयी थीं।

"सुनो, दोस्त, तुम्हारी नाक लटक गयी है, और मैं देखता हूँ, कान में चाँद उग आया है। तुम्हारे दाढ़ी भी बढ़ आयी है। क्यों? हाजिया से तुम कब से नहीं मिले हो?"

एर्गश ने थके अंदाज़ में अपने कंधे झुका लिये। यफ़ीम दनीलोविच का अनुमान सही था। सेना में काम करने के दौरान थकान भरी युद्ध यात्राओं और पंकिल नदी तटों पर रात में दुश्मनों की घात लगाये बैठे रहने से एर्गश को एशियाई मलेरिया हो गया था। वह यफ़ीम दनीलोविच

के बाहर चले जाने से एर्गश को हफ़्ते भर से खाये डाल रहा था। वह अपनी दाढ़ी तक नहीं बना सका था – उसे अपना चेहरा जलता-सा लग रहा था।

"क्या ज़ोरों से दर्द महसूस कर रहे हो?" यफ़ीम दनीलोविच ने पूछा।

एर्गश ने सिर हिलाकर धीरे-से कुछ कहा।

"उनका विश्वास मत कीजिए," दोब्रोख़ोतोव ने कहा। "पूरा ज़ोर लगाकर भी वह अपनी सचाई नहीं छुपा पा रहे हैं।"

यफ़ीम दनीलोविच ने एर्गश के कन्धे पर धौल जमायी और वह लड़-खड़ा गया।

"अभी बिस्तरे पर चले जाओ," यफ़ीम दनीलोविच ने कहा। "तुम्हारी जगह हम काम देख लेंगे।"

"हाँ, और क्या," सेर्गेय ने कहा, "यफ़ीम दनीलोविच के यहाँ रहते आपको चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं।"

बिना जवाब दिये एर्गश ने उनसे आगे कुछ क़दम बढ़ाया। वह घर नहीं जाना चाहता था। वह जा नहीं सकता था।

यफ़ीम दनीलोविच का लाया काग़ज़ अपनी मेज़ पर रखकर उसने अपने ललाट का पसीना पोंछा और भहराकर एक कुर्सी पर बैठ गया जो उसके बोझ से चरमरा उठी।

सहसा बाहर से शोर और क़दमों की टप-टप आवाज़ सुनायी पड़ी। कोई दौड़कर कार्यालय की ओर आ रहा था। भड़ाक से दरवाज़ा खुला और मामाजान आ खड़ा हुआ।

उसके सिर से पाँव तक कीचड़ चिपका था। उसके मैले और गीले जूतों में पानी छप-छप कर रहा था। ज़ोर-ज़ोर से साँस लेते हुए वह दरवाज़े का खंभा पकड़कर झुक गया और सिर्फ़ एक शब्द बोला:

"पानी!"

एर्गश उछलकर खड़ा हो गया।

"क्या जम गया?"

मामाजान ने असहाय मुद्रा में अपने हाथ फैला दिये और अपने कैन्वस के दस्ताने उतार लिये। वह अभी भी ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रहा था।

"आज तो कोई ज्यादा पाला भी नहीं।"

"फिर क्या गड़बड़ी है?"

"पानी चला गया है, चीफ़। कंक्रीट-मिक्सर काम नहीं कर रहा है। हम ग्राधा घंटे तक इससे जूझते रहे लेकिन पानी ग्राता ही नहीं।"

"क्या नलके टीक-ठाक हैं?"

"वे तो ठीक हैं। उनमें कोई ख़राबी नहीं।"

"कंक्रीट-मिक्सर का क्या हाल है?"

"घोड़े की तरह काम कर रहा है।"

"यफ़ीम दनीलोविच, जलकल विभागवालों को बुलाइये," एर्गश ने जल्दी-जल्दी कहा ग्रौर इर्द-गिर्द इंजीनियर के लिए देखा।

लेकिन तब तक दोब्रोख़ोतोव दौड़ चुका था। एर्गश उसके पीछे हो लिया।

मामाजान ग्रपने बड़े जूतों को ज़मीन पर थप-थप करता एर्गश के क़दमों से क़दम मिलाते ग्रौर मुक्कों से ग्रपनी छाती पर मारते चल पड़ा।

"उन्होंने हमें बिना रस्से के ही बाँध रखा है, चीफ़। मुझे उन लोगों से बहस करनी पड़ी जो कह रहे थे, रात की पाली बेकार है। लेकिन उन्हीं की बात सच हो गयी लगती है। पूरे ग्राधा घंटे से बीस मज़दूर बेकार बैठे हैं। ग्रब मैं उनका ग्रामना-सामना किस मूँह से करूँगा? झूटा बन के? नाक कट गयी!"

झोंकेवाली, चुभती हवा के साथ निर्माण-स्थल से ग़ुस्से भरी ग्रावाज़ें ग्रा रही थीं। खंभों पर लगे लैम्प हवा के साथ लहरा रहे थे – कभी बुझ-से जाते फिर मद्धिम, लाल रोशनी के साथ जल उठते। उनके नीचे परछाँइयाँ कभी ग्रागे, कभी पीछे हो रही थीं।

बेलचे ग्रौर ठेले लिये मज़दूर कंक्रीट-मिक्सर के पास भीड़ लगा रहे थे। क्षीण प्रकाश ने कुपित चेहरों ग्रौर धारीदार चोग़ों को तहियाकर कमर में खोंसे लोगों को ग्रंधेरे से उजाले में ला दिया था। वे ग़ुस्से में बोल रहे थे। कुछ ज़ोर से, कुछ दाँत पर दाँत जमाये।

ठेलों पर पाँव रखता एर्गश कंक्रीट-मिक्सर के पास गया। मोटर को चला रहा एक नौजवान कर्मी ग्रपनी जगह से एर्गश के लिए उठ खड़ा हुग्रा। उसने लिवर को चलाया ग्रौर बजरी, बालू ग्रौर सूखा सीमेंट कंक्रीट-मिक्सर के गले से बाहर ग्रा गिरा, लेकिन पानी की एक बूंद तक न थी।

जल मापी को देखने के लिए ऊपर लटक रहे लैम्प को एर्गश ने श्रौर क़रीब कर लिया श्रौर फिर टंकी में झांककर देखा। उसकी गालियाँ टंकी में भिनभिना उठीं।

"इंजीनियर कहाँ है?"

"नलियाँ देख रहा है।"

कोई दौड़ता हुश्रा श्राया। उसने एक लालटेन ले रखी थी श्रौर उसका चोग़ा कमर तक गीला था।

"एक फिटर की ज़रूरत है! फिटर किधर है?"

एर्गश उसके पीछे चल पड़ा श्रौर भीड़ लगाये कंक्रीट मज़दूर उसके पीछे चल पड़े।

वह शहर की श्रोर जानेवाली पटरीदार रास्ते के पास जाकर रुक गये। उनके श्रागे एक बड़ा गढ़ा दिखाई दे रहा था। श्रंधेरे में घुटने तक पानी में सेर्गेय ल्वोविच दिखाई दे रहा था, उसके पास ही कुएँ का ढलवे लोहे का ढक्कन पानी के ऊपर उठ श्राया था।

"हमें एक फिटर की ज़रूरत है। मेरे ख़्याल से वाल्व टूट गया है," इंजीनियर ने कहा।

"यफ़ीम दनीलोविच जलकल विभागवालों को टेलीफ़ोन कर रहे हैं। मुझे विश्वास नहीं, वह रात के इस समय उन्हें टस से मस भी कर पायेंगे।"

"सुबह से पहले हम किसी तरह की मदद की उम्मीद नहीं कर सकते," मामाजान ने ग़ुस्से से कहा।

नौजवान मोटर-मिस्तरी श्रागे बढ़ श्राया। वह श्रपने जूते श्रौर गर्म बास्कट उतार चुका था।

"मुझे बताइये, क्या करना है! मैं एक बार कोशिश करके देखूँगा!"

वह गढ़े में उतर गया, श्रपने पैर से कुएँ को टटोला श्रौर उसमें उतरने लगा। दोब्रोख़ोतोव श्रौर एर्गश ने उसे काँख से पकड़कर मदद की।

वह सीने भर पानी में पहुँचकर चीखा:

"यह रहा! मैं उसे पाँव से छू सकता हूँ। यह फ़ौवारे की तरह फूट रहा है श्रौर बर्फ़ की तरह ठंडा है!"

"कॉमरेड सुल्तानोव," एक श्रावाज़ ने ज़ोर से पुकारा। "क्या तुम मेहरबानी करके मेरे पास श्रा जाश्रोगे!"

यह यफ़ीम दनीलोविच थे।

एर्गश गढ़े से निकल आया।

"कोई भी सोच सकता है, तुम जानबूझकर बीमार पड़ना चाहते हो और अपनी ज़िम्मेवारियों से छुटकारा पा जाना चाहते हो," यफ़ीम दनीलोविच ने ग़ुस्से से कहा।

"वाल्व। हमें फ़िटर चाहिए। क्या वे आपको फ़ोन पर मिल सके?" एर्गश ने पूछा, उसके दाँत बज रहे थे।

"बेशक। फ़िटर भी यहाँ आयेगा और डॉक्टर भी।"

उसके बाद क्या हुआ, एर्गश को उसका धूँधला-धूँधला-सा बोध रहा। उसे याद नहीं आया कि किस तरह उसे घर लाया गया और बिस्तरे पर लेटा दिया गया। उसका बुख़ार बढ़ गया था। उसे सन्निपात होने लगा। वह बेसुध था।

* * *

उसने सपना देखा, हाजिया उसे देखने आयी और उसके बिस्तरे के पास बैठकर उसके जलते ललाट पर गीला ऊनी कपड़ा रख रही है। उसने उसका हाथ थाम रखा है। लेकिन क्या यह सिर्फ़ सपना था?

उसे अपनी ओर टिकायी उसकी चिन्तातुर व उद्विग्न दृष्टि की स्पष्ट याद थी। उसे उसकी तेज़ और भावासक्त बुदबुदाहट याद थी: "मेरी जान, मेरे प्रियतम्। काश तुम जानते, मैं तुमसे कितना प्यार करती हूँ। तुम सबसे दृढ़, सबसे ईमानदार, सब से ख़ूबसूरत हो..." उसे उसका चूमना और किस तरह उसके चुमते ही उसके कानों में लगातार गोलाबारी-सी आवाज़ गूँज उठी थी, याद था।

लेकिन जब वह जागा, उसने अपने बिस्तरे के पास माँ को देखा।

"क्या तबीयत ठीक लग रही है? तुम पूरे दो दिन से सोये रहे हो। क्या भूख लगी है? मैं अभी तेरे लिए कुछ खाना गर्म करके लाऊँगी।

"दो दिनों तक सोया रहा?" एर्गश ने सोचा। "क्या कह रही है? वह शायद मुझे नहीं बता सकती है, पानी आया या नहीं, कंक्रीट-मिक्सर काम कर रहा है या नहीं।"

उसने अपने आस-पास देखा। बिस्तर के सिरहाने चूर्ण और शीशियाँ पड़ी थीं। अहा! आख़िर उन्होंने उसे बिस्तर पर डाल ही दिया! उसने उनको ऐसा करने कैसे दिया? ग़ाफ़िल हुआ और शैतान ले आये!

उसने अपने कन्धों से कम्बल उतार फेंका, झटके के साथ उठने की कोशिश की लेकिन लाचारी से अपने तकिये पर गिर पड़ा। उसका सिर कंक्रीट-मिक्सर की तरह घूम रहा था और उसकी कनपटियाँ इस तरह बज रही थीं जैसे उसके सिर में कंक्रीट-मिक्सर की तरह बजरियाँ हों। काफ़ी देर तक उसकी आँखों के सामने अंधेरा छाया रहा। उसका पूरा बदन इस तरह दुख रहा था जैसे उसकी पिटाई की गयी हो।

किसी तरल पदार्थ से भरा एक बड़ा कटोरा लेकर उसकी माँ आयी। एर्गश को पता नहीं चल सका वह शोरबा है या जेली। वह रंग और स्वाद में तो भेद नहीं कर पाया लेकिन इसने उसके होठों, गले और सीने को सुखदायी गर्मी और तरावट दी।

"खा लो, खा लो," उसकी माँ ने कटोरे को झुकाते हुए कहा। "तुमने लगभग एक हफ़्ते से कुछ नहीं खाया है। हाजिया ने तुम्हारे लिए यह बनाया है।"

"बेकार की बात – एक पूरा हफ़्ता!" एर्गश ने सोचा। "हाजिया ने क्या पकाया? हमें एक फ़िटर की ज़रूरत है – वाल्व ढीला पड़ गया है..."

"मैं जाकर उन्हें बता आऊँगी, तुम जाग गये हो," उसकी माँ ने कहा और ख़ाली कटोरा लेकर कमरे से बाहर चली गयी। एर्गश ने फिर आँखें बंद कर लीं।

फिर संभलकर बिस्तरे से उठ खड़ा हुआ और पोशाक पहनी। घुमरी फिर नहीं आयी। सिर्फ़ कनपटियों के पास हवा साँय-साँय-सी करती प्रतीत हुई और उसकी पीठ पसीने से तर हो गयी।

बाहर ठंड थी। सूर्य छतों पर नीचे उतर आया था। शीतलता स्फूर्तिदायक थी। थोड़ा काँपता एर्गश सीधा तन खड़ा हुआ।

"उन्होंने मुझे बिस्तरे पर डाले रखना दिमाग़ में बैठा लिया है, क्यों? ठीक है, मैं उन्हें दिखा दूंगा!"

वह थोड़ी ही दूर गया था, बस मामाजान के घर तक, तभी उसे कुल्हाड़ी चलने की आवाज़ सुनाई पड़ी। इसका क्या मतलब हो सकता है?

एर्गेश ने बड़े परिश्रमपूर्वक फाटक को आधा खोला और आँगन में झाँककर देखा।

"ओ, यह तुम हो, मामाजान भाई! तुम क्या कर रहे हो?"

अपनी कमर में एक रस्सा लपेटे और सिर से पाँव तक चूने से लथपथ मामाजान दालान की सीढ़ियों को कुल्हाड़े से ठीक कर रहा था। कुल्हाड़े को ज़मीन पर फेंककर वह एर्गेश की ओर चला।

"आदाब, चीफ़। आप कैसे हैं? आप पीले दिखाई दे रहे हैं..."

"मैं तुमसे पूछ रहा हूँ", एर्गेश ने उसे रोक दिया, "तुम आज क्यों काम पर नहीं गये?"

"मैं अभी रात की पाली से आया हूँ।"

"और अपने मकान की सफ़ेदी कर रहे हो—मुझे दिखाई दे रहा है। लेकिन क्या पाली समाप्त हो गयी? क्या इसका मानी यह है, अगर चीफ़ बीमार हो तो तुम फूट लोगे? क्या इसका यही मतलब है? क्या तुम छैला नारमत के उदाहरण पर चल रहे हो? तुम, टीम के नेता!"

अपनी परेशानी में मामाजान ने आँखें ज़मीन पर झुका लीं।

"मैंने सिर्फ़ एक घंटे की छुट्टी की है, चीफ़। मैंने अपना ज़िम्मा मोटर मिस्तरी को सौंप रखा है। वह काम कर लेगा, एकदम सच। मेरी कमी महसूस हो, उससे पहले ही मैं लौट जाऊँगा। यह सब मरम्मत में मुझे ज़्यादा समय नहीं लगेगा।"

क्रोध ने एर्गेश को बल दिया।

"यह बात है," उसने हाँफते हुए कहा। "तो तुम्हारा घर और घरेलू कामकाज तुम्हारे काम से, मिल से तुम्हारे लिए ज़्यादा मायने रखता है? तुम अपनी झोंपड़ी की लीपापोती कर रहे हो और जहाँ तक मिल का सवाल है, तुम्हें कोई परवाह नहीं—चाहे यह बने ही न।"

"बस मैं चल ही चुका हूँ, चीफ़," मामाजान ने कमर की रस्सी खोलते हुए दोषी की तरह जवाब दिया। "तो भी अगर आप सच जानना चाहें, मुझे पीड़ा महसूस हुई है। आख़िर मैं छैला नारमत या चायख़ानावाले से किस तरह गया-बीता हूँ? आप ख़ुद फ़ैसला कीजिए। देखिये, यह किस तरह हुआ। मेहमान नारमत और चायख़ानावाले के

यहाँ ठहराये जा सकते हैं लेकिन मेरे घर पर नहीं। क्या यह उचित है? उन्हें इतना अधिक सम्मान क्यों दिया जा रहा है और मुझे अपमानित क्यों किया जा रहा है? मैं मानता हूँ, मेहमान दूर-दराज़ से आ रहे हैं। लोग कह रहे हैं, लेनिनग्राद से। क्या ऐसी बात नहीं? मैं आपकी आँखों से महसूस कर सकता हूँ कि मैं सही हूँ। लेकिन यफ़ीम दनीलोविच ने मुझसे कहा कि मेरे बच्चे हैं और मेरा घर छोटा है। मेरे बच्चे हैं, इससे क्या? क्या इससे कोई फ़र्क़ पड़ता है? देखिये, मेरे पास वह एक शेड रहा, मैं उसमें चला जा सकता हूँ। लेकिन घर के अन्दर आइये और देखिये मैंने उसकी कैसी सफ़ेदी कर दी है। अगर पसन्द आये तो मुझे बताइये। कोई बात नहीं अगर मकान छोटा है—मेरे दिल में काफ़ी जगह है!"

एर्गश चुपचाप सीढ़ियों पर थोड़ा लड़खड़ाकर चलता दालान के ऊपर चढ़ा। वह असमंजस में पड़ गया।

"तो उन्होंने आना शुरू कर दिया है?" उसने शरीर में आकस्मिक कमज़ोरी महसूस करते हुए पूछा।

"और क्या?" मामाजान ने प्रफ़ुल्लित होकर जवाब दिया। "नैमन्चा में उनके रहने के लिए जगह ढूंढ़ना तय किया गया है। अच्छी बात है, क्यों, नहीं? वहाँ तक तो ठीक है, मैं मानता हूँ लेकिन किसी ने मेरा दरवाज़ा नहीं खटखटाया जैसे मेरा घर नैमन्चा में है ही नहीं। क्यों? उन्होंने मुझे क्यों नज़रों से गिरा दिया है?"

एर्गश ने कोई जवाब नहीं दिया जिसे मामाजान ने भर्त्सना समझ लिया।

"मैं एक मिनट में रवाना हो जाऊँगा, चीफ़। अभी..."

एर्गश ने हाथ के क्षीण संकेत से उसे रोका और ख़ुद को गिर पड़ने से बचाने के लिए एक खंभा पकड़ लिया।

"मुझे माफ़ करना, मामाजान भाई," उसने कहा। "मुझे तुम पर इस तरह नहीं झपट पड़ना चाहिए था। मत जाओ। जो यहाँ कर रहे हो, करते जाओ। तुम्हारी टीम हमें शर्मिन्दा नहीं होने देगी, मैं जानता हूँ।"

मामाजान बेचैनी से एर्गश के पास गया और उसकी बाँह थाम ली।

"तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं, एर्गश भाई?"

"चिन्ता मत करो। मुझे तुम्हारा यक़ीन है।"

मामाजान ने अपना सिर हिलाया।

"तुम्हारी देह जल रही है। तुम बहुत जल्दी बिस्तरे से उठ गये, एर्गश भाई।"

"कोई बात नहीं। तुम्हारी टीम अच्छी है," एर्गश बुदबुदाया, उसकी शक्ति उसे जवाब दे गयी।

मामाजान उसे घर ले गया।

रास्ते में अपने विचारों को संचित करने में एर्गश को जूझना पड़ा।

"याद नहीं, मैंने उसका अभिवादन किया था या नहीं। मैंने किया या नहीं?" लेकिन उसे याद नहीं आ सका।

"बताओ, तुम्हारा बड़ा लड़का स्कूल जाता है?" एर्गश ने बेसिल-सिला पूछा।

मामाजान भौचक्का रह गया। उसे कैसे मालूम हो गया कि उसका लड़का नौ साल का हो गया है?

"मुझे बताया गया है, वह तुम्हारा गोद लिया बेटा है और तुम नहीं चाहते, वह स्कूल जाये।"

"हाँ हम से कुछ भूल हुई," मामाजान ने परेशानी से अपना सिर मोड़ते हुए स्वीकार किया। "लेकिन इस वसन्त में मैंने उसे स्कूल भेज दिया। यह सच है—नये स्कूल में।"

"बहुत अच्छा। मुझे तुम्हारे ऊपर विश्वास है, मैं तुम्हारा विश्वास करता हूँ," एर्गश अटक-अटककर बोला।

उसकी माँ घर से उसकी ओर दौड़ पड़ी। उसके पीछे एक लम्बी लड़की आ रही थी जिसकी चोटी धूप में दमक रही थी।

"हाजिया, मेरी अपनी हाजिया," मामाजान की बाँहों में असहाय लटक पड़ते एर्गश ने सोचा।
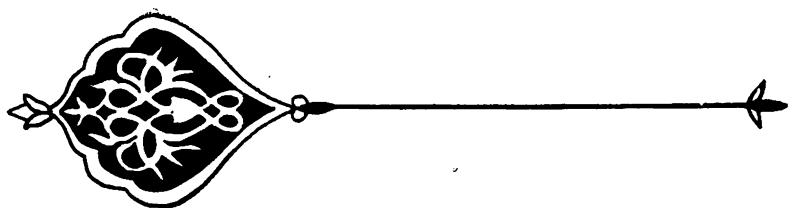
इकतीसवाँ भाग

घर का प्रबंध अब मुख्य रूप से तुर्सुनाय के ज़िम्मे था।

बशारत अपनी नीली डांगरी डाल जिसे उसने "अपने" पैसों से ख़रीदा था, भिनसरे जल्दी-जल्दी चली जाती फिर दोपहर के भोजन या अपनी बहन को गणित में मदद देने के लिए लौटती। बशारत का दिमाग़ गणित में बहुत तेज़ था। "वह गणित के सवाल इतनी आसानी से हल करती है जैसे सूरजमुखी के बीज दाँतों से तोड़ रही हो।" तुर्सुनाय हमेशा प्रशंसापूर्वक कहती। तकनीकी स्कूल में कर्मी-प्रशिक्षक अनाख़ाँ से कहते: "वह एक लड़की है लेकिन पुरूष की तरह बातें ग्रहण कर लेती है। वह मशीनों को समझ लेती है।"

हाँ, उसकी बेटियाँ सयानी हो रही थीं...

इधर कुछ समय से बशारत ख़ुद को वयस्क महसूस करने लगी थी। उसकी शरारतें कम हो गयी थीं, वह अपनी वेष-भूषा के प्रति भी साव-धानी बरतती। वह उन बातों को समझने लगी थी जिन पर पहले वह कोई ध्यान नहीं दिया करती थी। कुछ दिनों पहले हाजिया ने जिसने बशारत को अपना राज़दार कभी नहीं बनाया था, उससे कहा: "एर्गश बीमार है और मेरा ख़्याल है, कोम्सोमोल की सचिव होने के नाते तुम्हें उसे देखने जाना चाहिए।" बशारत अपनी सहेली की बात सही-सही समझ गयी। हाजिया एर्गश की देख-भाल कर रही थी और उसमें शर्म की कोई बात न थी, लेकिन वह अकेली उसके यहाँ बार-बार नहीं जा सकती थी। एर्गश तथा दूसरे लोग सोचेंगे, प्रेम में कलाबाज़ी खा रही है। ख़ुद एर्गश को भी अकड़ने का मौक़ा नहीं दिया जा सकता। इस लिए हाजिया एर्गश के यहाँ जाती तो बशारत कोम्सोमोल की सचिव के नाते उसका साथ देती।

अनाख़ाँ के लिए तुर्सुनाय की अविराम आवाज़ सुनते रहना ख़ुशी की

बात थी। घर पर अपना पाठ करते समय लड़की कॉपी पर झुककर गुनगुनाती रहती। खाने की मेज़ पर भी वह अपना मुँह भरे चुलबुली लड़की की तरह घुरघुर करती रहती। बशारत और उसकी माँ उस पर हँसा करतीं लेकिन तुर्सुनाय ख़ुद को रोक नहीं पाती: वह बहुत सारे गीत जानती थी और उन्हें गाने के लिए उसके पास काफ़ी समय न था।

अन्यत्र मामला बिगड़ा हुआ था। छैला नारमत की बीवी नज़ाकत ने फिर से परंजी पहननी शुरू कर दी थी। स्वभावतः, लोगों में इसकी चर्चा चल पड़ी। ऐसा मिल की दीवार तबाह होने के तुरंत बाद ही हुआ। लेकिन यफ़ीम दनीलोविच के शब्द उद्वेगपूर्वक याद करते हुए अनाख़ाँ उदासीन हो उठी थी: "हमारे पास कोई समय नहीं, तुम जानती हो..." उसे सहकारिता में नज़ाकत से बात करने का कोई अवसर नहीं मिल पाया। नज़ाकत किसी अजनबी की तरह हठपूर्वक अपने आप में सिमटी रही। आख़िरकार, अनाख़ाँ ने नज़ाकत से उसके घर पर मिलने का फ़ैसला किया।

अंधेरा घिर आया था और छैला नारमत के आंगन में पुराने काले पॉपलर की पत्त-विहीन शाखाओं में हवा आहें भर रही थी। अनाख़ाँ ने देखा लक़लक़ों ने वृक्ष का त्याग कर दिया है: उनके बड़े घोंसले में डोमकौवे आ बसे थे और रैनबसेरे के पहले चीख रहे थे।

फाटक पर अनाख़ाँ ने लम्बे चोग़े में एक झुके कनधोंवाली आकृति देखी। एक दुर्बल, पेंपियाती आवाज़ घर के मालिक को आदरपूर्वक उसका नाम लेकर पुकार रही थी। "नारमतुल्लाह... ओ, मुल्ला नारमत!" किसी ने भी आँगन से जवाब नहीं दिया: ज़ाहिर था, मालिक बाहर गया हुआ था। लेकिन इतने सम्मान से उसे आवाज़ लगानेवाला कौन था? अनाख़ाँ ने ग़ौर से देखा और नीली मस्जिद के इमाम को पहचान गयी। "डोमकौवे लक़लक़ के घोंसले में हैं और गिद्ध ख़ुद फाटक पर मौजूद है," अनाख़ाँ ने सोचा। लगता है इमाम की अच्छी चल नहीं रही, तभी तो उसे नारमत का दरवाज़ा इतने सम्मान से खटखटाना पड़ रहा था!

कोई जवाब न पाकर इमाम दीवार के साथ-साथ धीरे-धीरे चल पड़ा। वह किसी बूढ़े की तरह कमज़ोर डग भरता, मुठियेवाली एक लम्बी काली लाठी पर झुकता, अपनी बड़ी पगड़ी के नीचे कूब निकालता

चल रहा था। लेकिन अनाख़ाँ जानती थी, बाज़ बुढ़ापा का स्वांग कर रहा था। वास्तव में इमाम स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट था। वह एक पूरा मेमना खा जा सकता था और शराब की पूरी मशक खाली कर दे सकता था। लोग कहते, वह अकेला ही पेटू था। अनाख़ाँ बिना खटखटाये ही आँगन में घुस आयी। नज़ाकत गाय के लिए चारा मिला रही थी। अनाख़ाँ को देखकर उसने अपनी पोशाक की किनारी शलवार की कमरबंद से बाहर खिसका दी और आस्तीनें उतार लीं।

"आइये" अनाख़ाँ की ओर बग़ल किये खड़ी-खड़ी उसने शान्तिपूर्वक कहा। उसकी आँखें ज़मीन पर टिकी थीं।

"उसे मेरे आने की उम्मीद न थी। उसे यह पसन्द नहीं आया।" अनाख़ाँ ने नज़ाकत के अपने शौहर से पिटे जाने के बाद के मिज़ाज की याद करते हुए सोचा।

पिछले कुछ महीनों में यह नौजवान औरत कितनी बदल गयी थी, यह आश्चर्य की बात थी। जुराख़ाँ की शवयात्रा के समय और उस के बाद सहकारिता में वह एकदम ही अलग मालूम पड़ती थी। अनाख़ाँ को उसके सामने अजीब-सा महसूस हुआ। उसे पीड़ा हुई।

"अजीब बात है, हमारे सर्वाधिक विद्वान इमाम, उनकी राह में फूल बिछें, यहाँ किस लिए आये थे?" अनाख़ाँ ने अपनी आवाज़ में व्यंग्य का पुट देते हुए कहा।

"मेरा ख़्याल है, मेरे शौहर को शाम की नमाज़ के लिए आमंत्रित करने।"

"क्या एसी बात है! तुम्हारा मतलब है, वह लोगों को घर-घर आमंत्रित करने जाता है? शायद वह नारमत का हाथ पकड़कर ले जाता है?"

नज़ाकत ने अपनी चमकती आँखों से अनाख़ाँ पर तेज़ी से एक तिरछी नज़र डाली। "नहीं, वह ऐसा नहीं करता। रास्ते में पड़ता है और वह देख जाता है।"

"तुम्हारा मतलब हं, नारमत और उसका रास्ता एक ही है?" अनाख़ाँ ने पूछा।

नज़ाकत ने कोई जवाब नहीं दिया।

आवाज़ के साथ चारा चबाती गाय ने अलस भाव से अपना सिर

मालकिन की ओर घुमाया। नज़ाकत मानो आधे दिल से धीरे-धीरे चबूतरे के पास गयी और तोशक बिछा दिया।

"आइये, बैठ जाइये।"

अनाख़ाँ बैठ गयी। रँगे दालान के खेमों से लटकते तेज़ लाल मिर्च और मक्की के गुल्लों के गुच्छे थे। तेज़ी से खट्टा होने के लिए मृत्तिका पात्रों में दूध था। आँगन साफ़-सुथरा था। लेकिन दालान की सीढ़ियों के ऊपर एक खूँटी पर नयी लाल परँजी टंगी थी। वह लाल थी—वाह, ज़ोरदार। अच्छी पोशाक। तो ऐसी बात है, नज़ाकत ने इसे अपने में, अपने यौवन में चार चाँद लगाने के लिए सिर पर डाला है। झुटपुटे में परंजी काली दिखाई दे रही थी।

"क्या तुम मेरे साथ नहीं बैठोगी?" अनाख़ाँ ने थोड़ा झल्लाकर कहा। "क्या तुम मुझसे बात नहीं करना चाहती? क्या हमारे पास बात करने को कुछ नहीं?"

बिना जवाब दिये नज़ाकत ने पैराफ़िन का लैम्प जला दिया और चबूतरे के एकदम एक किनारे इस तरह बैठ गयी जैसे उसे उसके भहरा जाने का ख़तरा हो।

लैम्प के क्षीण प्रकाश में ऊँची-ऊँची दीवारों से घिरा आँगन किसी अंधेरी खाई की तरह दिखाई दे रहा था। यहाँ तक कि पतझड़ की ठंड भी यहाँ घुसपैठ करती प्रतीत नहीं होती। लेकिन बड़े-बड़े उज्ज्वल तारे मानो आकाश में बिलकुल नीचे लटक रहे थे।

अनाख़ाँ ने नज़ाकत का हाथ दबाया।

"बताओ मुझे, बहन, मुझे सच-सच बताओ: क्या तुम इसके लिए शर्मिन्दा नहीं कि मुझसे कतरा रही हो, अपने विचार मुझसे छुपा रही हो? क्या मैं तुम्हारी एक बहन नहीं? क्या हमने जुराख़ाँ के ताबूत के सामने एक-दूसरे से प्रेम करने, विश्वास करने और रक्षा करने की क़सम नहीं खायी थी? या लोग ठीक ही कहते हैं कि औरतों की याद्दाश्त कमज़ोर होती है? तुम्हारा दिल बिसूर कब गया? और क्यों, यह बिसूरा ही क्यों?"

सुबककर नज़ाकत ने अपना मुँह फेर लिया और हाथ छुड़ाने की कोशिश की। अनाख़ाँ ने उसे जाने नहीं दिया।

"तुमने अपनी परंजी आग को न्योछावर कर दी थी—उसे

पैरों से कुचल डाला था। क्या किसी ने तुम्हें इसके लिए मजबूर किया था?"

"नहीं" नज़ाकत ने धीरे से कहा।

"क्या तुमने यह अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ किया था?"

"नहीं, नहीं!" अश्रु बोझिल आवाज़ में नज़ाकत चीख पड़ी।

"जिसे तुमने फेंक दिया था, उसे फिर से ग्रहण करने के लिए किसने मजबूर किया?"

नज़ाकत मौन रही।

"क्या तुम दूसरों से भी यही चाहती हो कि वे भी सिर पर परंजी डालकर जुराख़ाँ की याद का मज़ाक़ बनाएँ! पर तुम ख़ुश रह सको, इसी लिए उसने अपनी बलि दी है न?"

नज़ाकत ने याचनापूर्ण आँखों से अनाख़ाँ की ओर ताका जैसे कहना चाहती हो:

"मेरी प्रताड़ना बन्द करो। मुझे माफ़ करो।" लेकिन अगले ही पल भय से अपना सिर हिलाते हुए असंगतता से बड़बड़ा उठी:

"इसके लिए कोई कसूरवार नहीं। मैंने यह ख़ुद किया है, ख़ुद।"

अनाख़ाँ ने नज़ाकत को अपनी ओर खींच लिया।

"तुम मुझे क्यों धोखा दे रही हो? ओह बहन, मेरी बहन। तुम दुनिया में दो व्यक्तियों को कभी धोखा नहीं दे सकती—अपनी माँ को और ईमान्दार दोस्त को। अच्छा, मेरी आँखों में देखो।"

नज़ाकत धीरे से अपनी अश्रुसिक्त बरौनियाँ ऊपर उठायीं और फिर फफकती हुई, आवेगपूर्व अनाख़ाँ से चिपक गयी। फिर अपने इर्द-गिर्द काँपकर देखते हुए उसने पूछा:

"क्या आपने नूरिया के बारे में सुना है?" उन दिनों यह नाम हर व्यक्ति की ज़बान पर था। उसका नाम आते ही लोग दहल उठते।

नमंगान की एक लड़की नूरिया समरक़न्द के किसी कॉलेज में दाख़िल होना चाहती थी। इसी कारण उसके वहशी धर्मोन्मादी बड़े भाई हुस्नि-द्दीन ने उसे गोशाला में ज़िन्दा गाड़ दिया था। उसने चार दिनों तक उसे प्रताड़ित किया: पहले दिन उसने लड़की को कमर तक, दूसरे दिन छाती तक, तीसरे दिन गर्दन तक गाड़ा और चौथे दिन इस्लाम के उस ईमान्दार अनुयायी ने अपनी बहन के धूसरित मुर्दे जैसे पीले चेहरेवाले

सिर पर आख़िरी कुदाल भर मिट्टी डालकर उस जगह को समतल कर दिया जहाँ उसकी बहन ने अपनी अन्तिम सांस ली थी।

हुस्निद्दीन को विश्वास था कि उसने जो कुछ किया, वह सही और धर्मपरायण था। उन चारों दिन जब उसकी बहन गोशाला में उसके हाथों मर रही थी, उसने श्रद्धपुर्वक निश्चित समय पर प्रार्थनाएँ की थीं और अल्लाह ने उसकी प्रार्थनाएँ क़बूल कर ली थीं। रात में उसे नीन्द आती और ख़ुदा के फ़रिश्ते उसकी नीन्द नहीं ख़राब करते। इन चारों दिनों तक उसने गाय को कहीं और रखा जिससे उसका दूध किसी औरत की आहों से ख़राब न हो जाये। इस्लाम इस कुत्सित अपराध को पाक क़रार देता है। सच्चे विश्वासियों के नियमों के अनुसार दूसरी दुनिया में हुस्निद्दीन को जन्नत में आरामदेह जीवन और हूरों के हरम का इनाम मिलेगा।

अनाख़ाँ जानती थी, नज़ाकत अपने शौहर के साथ ख़ुश थी। लेकिन क्या उसके अन्तस्तल में यह भय समाया था कि नारमत में हुस्निद्दीन तो नहीं?

लगा नज़ाकत ने भांप लिया कि अनाख़ाँ क्या सोच रही है, वह उछल खड़ी हुई और अपना हाथ लहराया।

"नारमत के बारे में वैसा मत सोचिये। मेरा नारमत वैसा नहीं। मैं जानती हूँ, वह वैसा नहीं।"

"वह ख़ुद को यक़ीन दिलाने की कोशिश कर रही है," अनाख़ाँ ने सोचा। "तुम्हारा रोना-गिड़गिड़ाना कोई मायने नहीं रखता, बहन।"

नज़ाकत ने आँखें नीची कर लीं और उसकी बाँहें झूलकर दोनों ओर आ रहीं।

"लेकिन तुम जानती हो, ऐसी बातों में आदमी महसूस ही नहीं करता, वह क्या कर रहा है। नहीं तो कोई अपनी सगी बहन के साथ कैसे इतना नृशंस हो सकता है? जब नूरिया का भाई आपे में आया, उसने ख़ुद को हज़ारों लानतें भेजीं, ख़ून के आँसू रोया और फिर पागल हो गया। यहाँ तक कि जजों ने भी उसे छोड़ दिया है।"

"तुम्हें किसने बताया?" अनाख़ाँ ने सर्द लहजे में कहा, फिर हठात् अटकल लगायी: "नीली मस्जिद के इमाम ने?"

"हाँ, ख़ुद अब्दुमजीद-ख़्वाजा ने। वह नारमत को बता रहा था।

वह हाल ही में नमन्गान गया था और सब कुछ अपनी आँखों से देख आया था—किस तरह उसका भाई चीथड़ों में रात-दिन सड़कों पर मारा-मारा फिरता है, कितनी बुरी तरह वह पीड़ित है।" नज़ाकत ने फिर अपने चारों ओर देखा। "आपको इसका विश्वास नहीं आयेगा लेकिन नारमत ख़ुद से डरा हुआ है। जब मैंने परंजी पहननी छोड़ दी, उसने मुझ से कुछ नहीं कहा लेकिन मैंने देखा, वह अपने-आप में न था। और अगर ख़ुदा की नज़र में कोई गुनाहगार है, ख़ुदा किसी न किसी तरह उसे सज़ा देगा।" नज़ाकत ने मुश्किल से बात निगलते हुए बुदबुदाकर आगे कहा: "ख़ुदा हुस्निद्दीन की तरह ही नारमत का विवेक ज़रूर छीन लेगा ... और अनजाने ही नारमत मेरा और अपना सर्वनाश कर बैठेगा ... मैं उसके हर क़दम का अनुसरण कर रही हूँ और हमेशा उस पर अपनी नज़र रखती हूँ। अगर मैं नहीं तो और कौन उसे सांत्वना देगा? वह भी बेचारा दुखी है। वह पहले की तरह नहीं है, दूसरा आदमी है। वह सच्चे मुल्ला की तरह दिन-दिन भर नमाज़ पढ़ता रहता है। उसे इतनी दुआएँ कभी नहीं आती थीं..."

अनाख़ाँ ने नज़ाकत की ओर दुख के साथ देखा: यह औरत अपने शौहर में जिन निंद्य और घृणिततम गुणों का सन्देह कर रही थी, उन्हीं के लिए औचित्य की भी तलाश कर रही थी। इसे रोका नहीं जा सकता। वह उससे प्रेम करती थी।

"तुम्हारे यहाँ इमाम कब से आ रहा है?" अनाख़ाँ ने पूछा।

"ज़ुराख़ाँ की हत्यावाले दिन से—ठीक उसी दिन से..."

"और तुम मेरे पास कभी नहीं आयी, अपनी परेशानी कभी नहीं बतायी, मेरी सलाह कभी नहीं पूछी? तुमने अकेले भुगतना आसान समझा? तुम मुझसे इसके मुतल्लिक़ बात नहीं करना चाहती थी?"

"चाहती थी।"

"इसका मतलब तुम भयभीत थी? क्या इमाम तुम्हें डराता-धमकाता रहा है?"

"मैं-मैं नहीं जानती..."

"फिर मुझे बताओ, तुम जानती क्या हो। जब तक तुम बताओगी नहीं, मैं जाऊँगी नहीं।"

और नज़ाकत ने उसे बता दिया।

इमाम अब्दुमजीद ख़्वाजा की उसके परिवार से कभी घनिष्ठता नहीं रही थी और नारमत रिवाज भर के लिए सिर्फ़ शुक्रवार को मस्जिद जाया करता था। जहाँ तक इमाम का सवाल था, नारमत उसके लिए भीड़ का एक अंग भर था और उसके सलाम का अगर वह जवाब देने की मेहरबानी करता था तो इस लिए कि वह बहुत से लोगों के जवाब में ऐसा करता था।

फिर अकस्मात पता लगा, नारमत का घर मस्जिद जाते समय इमाम के रास्ते में ही पड़ता है। उस महान विद्वान, वृद्ध व्यक्ति ने अकारण ही इस साधारण और किसी भी तरह श्रद्धालु नहीं कहे जा सकनेवाले मुसलमान को आवाज़ देने, सेहत के बारे में पूछने और सम्मान देने लगा। एकाएक ही छैला नारमत मुल्ला नारमतुल्ला हो गया।

"मालूम होता है, मैं बूढ़ा हो चुका हूँ, मुल्ला नारमत," इमाम फाटक के पास नारमत की प्रतीक्षा करता दुखपूर्वक कहता। "मैं अकेला नहीं रह सकता। लोगों का कहना है, सफ़र में साथी ज़रूर तलाश लेना चाहिए। बुढ़ापे में एक मुसलमान का सहारा बस मुफीद बातचीत ही है।"

जब-तब इमाम आँगन में आ धमकता और अपने मेज़बान के साथ चाय का एक-दो प्याला पी लेता। छैला नारमत मायल हो गया। इमाम ख़ुशमिज़ाज साथी और अत्यन्त मधुरभाषी सिद्ध हुआ। "जब वह शरीअत पर बोलना शुरू करता है, लोग मुँह बाये रह जाते हैं" नारमत अपनी बीवी को बताता था। "उसकी याद्दाश्त स्पृहणीय है। वह अपनी दाढ़ी पर देखते बोलता चला जाता है जैसे पढ़ रहा हो और वह सब उसकी दाढ़ी पर लिखा हो।"

एक दिन इमाम असमय ही शुक्रवार को नमाज़ के बाद आ पहुँचा। उसके एक दिन पहले ही नारमत को मिल परियोजना में काम दिया गया था। उसे काम पसन्द आया और वह नमाज़ में नहीं जा पाया।

इमाम आशंकित दिखाई दे रहा था। बायाँ हाथ पीठ पर चोग़े में छुपाये, दायें से अपनी दाढ़ी का छोर सहलाते हुए उसने नारमत से फाटक पर ही कहा:

"कल पहली नमाज़ के तुरंत बाद ही मुझे किसी अनिष्ट का पूर्वाभास हुआ, मुल्ला नारमत। यह मुझे चैन नहीं लेने दे रहा है। आज

भी वह पूर्वाभास मुझे छोड़ नहीं रहा है। दिन भर मैं तुम्हारे बारे में ही सोचता रहा।"

अपना हाथ सीने पर रख, नारमत ने मेहमान को भीतर आने का निमंत्रण दिया और चबूतरे पर बिठाया। पालथी मारकर बैठते हुए इमाम ने एक लम्बी-सी प्रार्थना पढ़ी, फिर निष्ठापूर्वक कहा:

"लक़लक़ जन्नत का परिन्दा है, मेरे दोस्त, निष्ठा का परिन्दा – ऐसा पवित्र पुस्तकों का कहना है। इसने संयोगवश तुम्हारे पेड़ पर अपना घोंसला नहीं बनाया है। कभी इस पेड़ की तीमारदारी मेरे संरक्षक हज़ारशैख़ पीर ने की थी। मैं देख रहा हूँ, तुम्हें यह मालूम नहीं है।"

नारमत ने स्पष्ट रूप से चकित दृष्टि से उस पुराने पॉपलर के वृक्ष की ओर देखा जिसकी छाल कीड़ों ने खा डाली थी। यह वास्तव में विस्मयकारी था। वह बचपन से यहाँ यह जाने बिना कि पेड़ पवित्र है, रहता आया था। दुनिया वास्तव मैं रहस्यों से परिपूर्ण थी। वे ऐसी चीजें नहीं जिन्हें तुरंत ही समझ लिया जाये।

सहसा इमाम ठिठक गया। अपनी बकरे जैसी दाढ़ी को सुतारी की तरह खड़ी करते, उसने वृक्ष के शीर्ष की ओर इंगित किया।

"हाय यह क्या शामत आ गयी, देखो," उसने अपने शब्दों को लम्बा खींचते हुए कहा। "तो यह था मेरा पूर्वाभास... तुम देख रहे हो? लक़लक़ ने अपने घोंसले का परित्याग कर दिया है। ईमान का परिन्दा तुम्हें छोड़ गया, मुल्ला नारमत। यह एक अपशकुन है। मेरे प्यारे दोस्त, तुम्हारे घर पर बदनसीबी की छाया पड़ रही है। आम तौर से लक़लक़ पाप से भाग खड़ा होता है क्यों कि पाप के बाद सज़ा मिलती है। मुल्ला नारमत, बस मेरा फ़र्ज़ तुम्हें इस चेतावनी से आगाह करना है।"

बेलिहाज़ नारमत की भौंहें तन गयीं: उस की आँखों में बुरी ख़बर लानेवाले के प्रति भय और बैर-भाव चमक उठा। इमाम की नज़रों से यह सब कुछ छुपा नहीं रहा और उसने श्रद्धालु के भय को बढ़ाने और उसके बैर-भाव को हवा देने में कोई क़सर नहीं उठा रखी।

इमाम को मालूम था, नारमत और उसकी बीवी नमंगान के रहनेवाले थे। जन्म स्थान पर आनेवाली विपत्तियाँ हमेशा लोगों के दिल पर गहरा असर करती हैं। और इमाम ने नारमत को सुना दिया कि किस तरह

नमंगान के एक परिवार का गृह-दाह हुआ था जब इसी तरह लक़लक़ ने उसकी छत छोड़ दी थी। नारमत और नज़ाकत ने भय से सर्द पड़ते हुए इसे सुना—तो यह सब नमंगान में हुआ था।

नज़ाकत को अपने बचपन के घर की याद सताने लगी। शादी के बाद से वह अपने पैदाइशी शहर फिर कभी नहीं जा पायी थी। नारमत अवाक् पॉपलर की ओर देखे जा रहा था। इस के पास कूड़ा-कर्कट और उपलों का ढेर लगा है जबकि यह साला—मेरा मतलब, ख़ुदा माफ़ करे, यह एक पवित्र वृक्ष साबित हो रहा है...

इमाम भी अपने नमन्गानवासी होने का उल्लेख कभी-कभी अनमनेपन से कर देता। इस बात से तुरंत ही वह श्रोताओं का प्रिय हो उठा। यह वाजिब भी था, और क्या हो सकता था! तो यह पूज्य व्यक्ति अपने ही क़स्बे का है! इमाम ने उत्सुकता से नारमत और नज़ाकत से उनके सम्बन्धियों के बारे में पूछ लिया। उन्होंने प्रसन्नता से अपने चाचाओं, चाचियों, दादाओं, दादियों के नाम गिना डाले—शुरू से लेकर आख़िरी पीढ़ी तक—जितने सम्बन्धियों के नाम वे याद कर सकते थे। यह विस्मयकारी है—इस बड़ी दुनिया में न जाने कितने आश्चर्य घटित होते रहते हैं। कितना बड़ा पाप है, लोग न तो यह बता सकते हैं कि सम्बन्धी कहाँ हैं और न ही उन्हें याद कर सकते हैं! अगर इमाम ने इस विषय पर बातें नहीं शुरू की होतीं तो शायद वे कभी यह जान भी न पाते कि नज़ाकत की चहेती चाची और इमाम की दादी क़ाराताग़ नाम के एक ही गाँव की थीं और फिर नारमत के भतीजे का पोता, अगर गहराई से देखा जाय तो इमाम की सास के दत्तक पुत्र का सगा-सम्बंधी था। अब्दुमजीद ख़्वाजा अपने कुलीन वंश-वृक्ष का लेखा ज़ोखा लेने से भी नहीं चूके: उन्होंने इसे थोड़ा इधर से थोड़ा उधर से काँटा-छाँटा और पता चला कि मेज़बान पति-पत्नी के साथ उसका ख़ून का रिश्ता था। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि इसे उन्होंने अपने लिए सम्मानजनक माना।

उस शुक्रवार के बाद से इमाम छैला नारमत के घर प्राय: आने लगा। उस शुक्रवार के बाद से घर में गुनाहों का भय और उसके लिए मिलनेवाली सज़ाओं की संभावना व्याप्त हो गयी।

नारमत ने अपनी लकड़ीवाली खाट पॉपलर के वृक्ष के पास से दूर

हटा लिया। रात में वह बेचैनी से सोता – नीन्द में चीख पड़ता – वह सपने में देखता, वृक्ष का पेड़ उसके गुनाहों भरे सिर पर गिरा आ रहा है। जागकर वह दिन होने तक उसकी शक्तिशाली टहनियों को ताकता अपने पूरे जीवन को याद करता, अपने गुनाहों, अपनी बीवी, बाप, भाई के गुनाहों का नाप-जोख करता रहता... और अगर कहीं पुराने दिनों की याद में वह थोड़ा-सा नशा गटक लेता – वह भी पोस्त के दाने भर से ज़्यादा नहीं – उसे दुःस्वपन आने लगते। पुराना वृक्ष अपनी गाँठदार टहनियों से पापी को जकड़कर ऊपर उठा लेता, उसका सीना निचोर डालता, उसे सीधे नरक में, बालदार बाँहों और ख़ूनी आँखोंवाले जिन्नों से भरे आग की अतल खाई में ले जाता...

इसके बाद क़ारातारा गाँव से जहाँ नज़ाकत की चाची रहती थीं, अनिष्टकारी पत्र आ पहुँचा।

नारमत अभी अपना सिर ही मार रहा था कि किसके पास इसे पढ़ाने के लिए ले जाये तभी फाटक पर से एक परिचित आवाज़ सुनाई पड़ी: "ऐ नारमत मुल्ला भाई!" इमाम ठीक मौक़े पर आ पहुँचा था। उसे देर नहीं हुई थी।

एक हाथ में लाठी लिये और दूसरे से अपने बलाई जूते थामे इमाम छोटे-छोटे डग भरता बरामदे की सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा और जल्दी-जल्दी अपने चोग़े की आस्तीनें मोड़ीं, नाक अच्छी तरह साफ़ की, अपना चश्मा ठीक नाक पर लगाकर पालथी मारकर बैठ गया।

"अमीन!" उसने नारमत और नज़ाकत से कहा जो अभी भी सम्मानपूर्वक आस लगाये खड़े थे – उनके लिए चश्मा अत्यन्त विद्वत्ता का चिह्न था।

पत्र किनारे-किनारे पर लाल धारीवाले एक चिकने काग़ज़ पर लिखा था। इसकी शुरुआत आशीर्वचनों से हुई थी।

पहले इमाम ने इसे मन ही मन पढ़ा। उसके मेज़बान उसकी आँखों में चमकते ख़ुशी के भाव नहीं देख पाये। हठात् उसने चेहरा लटका लिया, उसकी दाढ़ी काँप रही थी। बिना खड़ा हुए वह मक्का की ओर मुड़ा और आकाश की ओर अपने हाथ उठा लिये।

"ओ रहमतुल्लाह!" इमाम मायूसी से बोला। "अपने ग़ुलाम को अपने दामन में क़बूल कर। ओह अबलो, अपने सीने ज़मीन से

चिपका लो क्यों कि हम सब बेबस हैं और अल्लाह की ताक़त और रहम बेइंतहा है।" नारमत और नज़ाकत ने एक दूसरे को दुविधा से देखा: निश्चय ही प्यारे, शान्त क़राताग़ गाँव में जो एक पहाड़ी सोते के किनारे ऊँची-ऊँची हिमाच्छादित चोटियों के बीच बसा था, कोई भयानक दुर्घटना पेश आयी थी। नारमत भी इमाम की देखा देखी अपने हाथ आकाश की ओर उठाना चाहता था, लेकिन झेंपकर उसने अपने हाथ गिरा लिये।

"नेक मुसलमानो, क्या मैंने ही नहीं कहा था जब सब कुछ ठीक-ठाक था कि यह हमारे गुनाहों के लिए ख़ुदा की सज़ा है" इमाम विनम्रता से कहता गया। "ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ आदमी अल्लाह की कुपित दृष्टि से चला जाये या छुप जाये। ओह, उसके हाथ बहुत बड़े हैं।"

"पत्र में क्या कहा गया है, मेरे अब्बा?"

"उसने क्या लिखा है, परम पूज्य इमाम साहब?" नारमत और नज़ाकत गिड़गिड़ाये।

इमाम ने लगभग हर्षित होते हुए जवाब दिया:

"क़ाराताग़ में भूकम्प हुआ। क़ाराताग़ ख़त्म हो गया। अल्लाह ने धरती से उसका नामोनिशान मिटा दिया!"

पत्र नज़ाकत के नाम था। उसे मृतक की जायदाद के लिए बुलाया गया था: उसकी वृद्धा चाची मकान की छत के टूट गिरने से मर गयी थीं। नारमत और नज़ाकत यह नहीं जान पाये कि ऐसा सचमुच भूकंप के आने से हुआ या अकिंचन किसान के घर की छत के जीर्ण होकर टूट जाने से हुआ। नज़ाकत तब तक बरामदे के खंभे से अपना सिर टकरा-टकराकर विलाप करना शुरू कर चुकी थी, नारमत दहशत से अपनी बीवी को देख रहा था।

इसी बीच पूज्य अब्दुमजीद-ख़्वाजा ने अपने निष्कलुष अन्तःकरण का एक कर्तव्य मानते हुए उन्हें समझाया:

"विरासत का दावा तो सातवीं पीढ़ी तक किया जा सकता है मुल्ला नारमत, लेकिन गुनाह और सज़ा सत्तरवीं पीढ़ी तक पीछा करती हैं। खुदा ने तुम्हारी चाची के सामने इस लिए धरती को विदा कर दिया क्यों कि उसके किसी सम्बन्धी ने गुनाह किया, अपना चेहरा अनावृत किया और अपना धर्म छोड़ दिया। ऐसा करके उसने अपने को कलंकित

किया तथा अपने सारे सम्बन्धियों को परमात्मा के क्रोध और कोप का भाजन बनाया . . . ”

“नहीं! नहीं!” नज़ाकत ज़मीन पर लोट-पोट होते और हाथों से अपना चेहरा और सिर ढँकते आपे से बाहर होकर चीख पड़ी। “आह चाची! ओह, मेरी बेचारी बदनसीब चाची . . . ”

इमाम ने उसे रोने दिया और नारमत को उसका विलाप सुनने दिया। फिर उसने अन्त में निष्ठापूर्वक कहा:

“जो संकेत ईमान के परिन्दा ने तुम्हारे पाप भरे घर को छोड़कर दिया था, वह सच हो रहा है! एक बार मेरे पीर हज़ारशैख़ ने इस दरख़्त के नीचे एक भविष्यवाणी की थी, वह सिद्ध होने जा रही है। उन्होंने कहा था: बहुत जल्दी ही इस्राफ़िल अपना भयानक तूर्यनाद कर उठेगा और क़यामत का दिन आ जायेगा—हर कोई अपनी रूह की याद कर ले, ख़ुदा के, ईमान के मीज़ान पर अपने भलेबुरे कामों को नाप जोख ले। क़ाराताग़ में ज़लज़ला हुआ ही, हाँ, क़ाराताग़ में ही। लेकिन ख़ुद को इस नास्तिक विचार से तसल्ली मत दो कि क़ाराताग़ बहुत दूर है। ख़ुदा के लिए क़ाराताग़ से तुम्हारा घर एक छोटा-सा डग भर है।” इमाम ने अपनी पतली, मुलायम अँगुली-निरूद्योगी की अंगुली ऊपर की ओर उठायी। “हो सकता है कि कल—कल तुम्हारे पैरों के नीचे धरती डोल उठे और तुम्हारे मकान की दीवारें गिर जाएं!”

इमाम के शब्द वास्तव में किसी पैग़ंबर के शब्द प्रतीत हुए क्यों कि कुछ दिनों बाद ही निर्माण-स्थल की दीवार तबाह हो गयी। इमाम निरर्थक ही नहीं अपनी विद्वता के लिए प्रसिद्ध थे: ख़ुद हज़ारशैख़ उसके पवित्र होठों पर आकर बोले थे . . . इसके बाद कोई परमात्मा की अनियंत्रत इच्छा पर विश्वास न करे तो क्या करे? क्या कोई नश्वर प्राणी असह्य, अबोध गुलाम ख़ुदा के सेवक अब्दुमजीद ख़्वाजा की बुद्धिमानी पर सन्देह कर सकता है?

नज़ाकत ने एक बार फिर से परंजी पहननी शुरू कर दी और उसका शौहर नैमंचा के निवासियों में सर्वाधिक धर्मनिष्ठ व्यक्ति बन गया।

* * *

तो नीली मस्जिद के इमाम ने निर्माण-स्थल पर “भूकम्प” की

भविष्यवाणी की थी। अनाख़ाँ को तेशिक्क़ोप्क़ोक़ की जादूगरनी के इल्हाम के बारे में जो कुछ बताया गया था, याद आ गया। हज़ारशैख़ उसके भी संरक्षक पीर थे। चाय-बिक्रेता सरगना था। नारमत की ख़ुशक़िस्मती से सरगना तो कुचला जा चुका था। लेकिन जाल अभी भी बना था और वह भी पूरी मज़बूती से। जो नुस्रतुल्लाह के साथ हुआ, वही ख़तरा अब नारमत पर भी है। इमाम उसे छलने और उसका सर्वनाश करने के लिए पर्याप्त बुद्धि रखता था। और सिर्फ़ उसी को नहीं।

नज़ाकत की ओर झुकते हुए अनाख़ाँ ने पूछा :

"क्या तुम ने नारमत को इमाम के घर जाते या उसके साथ कहीं और जाते महसूस किया है?"

"नहीं" नज़ाकत ने बुदबुदाकर कहा, "वह कहीं नहीं जाता। मैं उसे जाने ही नहीं देती। समझ लो, मैं जो कहती हूँ, वह मान लेता है। लेकिन मैंने इमाम को रात में सड़क पर एक आदमी से मिलते देखा है। वह एक ख़राब आदमी है, अनाख़ाँ प्यारी, बहुत ही ख़राब आदमी। नारमत भी यही कहता है। उसने उस आदमी को क़ुद्रतुल्लाह ख़्वाजा के यहाँ तब देखा था जब बाय ने उसे मुझे पीटने के लिए उकसाया था। मेरी बहन, तुम उस आदमी को नहीं जानती और ख़ुदा मेहरबानी करे कि तुम उसे कभी न ही जानो। इमाम ने हमारे फाटक के पास उससे कानाफूसी की थी – मैंने उन्हें सुना है – उसकी जीभ सड़-गल जाये! फिर वह हवा में लोप गया।"

यह सब सुनकर विस्मयविमूढ़ अनाख़ाँ ने नज़ाकत को कन्धों से जकड़ लिया।

"क्या यह चाय-विक्रेता था?"

नज़ाकत पल भर को हिचकिचा गयी जैसे अपनी जीभ काट ली हो।

"तुमने इसे छुपाकर रखा!" अनाख़ाँ ने ग़ुस्से से कहा। "तुम चाय विक्रेता को जानती थी – और तुम मेरे पास नहीं आयी!"

नज़ाकत चुप रही। वह किससे भयभीत थी, अनाख़ाँ को पता चल गया था।

बेहिचक वह चबूतरे से उठ खड़ी हुई। अब समय बर्बाद करना अपराध ही होगा।

"मेरे साथ आओ, जल्दी से!"

नज़ाकत उससे चिपक गयी और निराशाजनित दृढ़ता से बुदबुदा पड़ी:
"अनाख़ाँ, व एक ही थैले के चट्टे-बट्टे हैं।"
"बेशक, बेशक। यही तो सारी मुसीबत है।"
"लेकिन आप जाना कहाँ चाहती हैं? रात हो चुकी है।"
"आओ। इसी पल।"
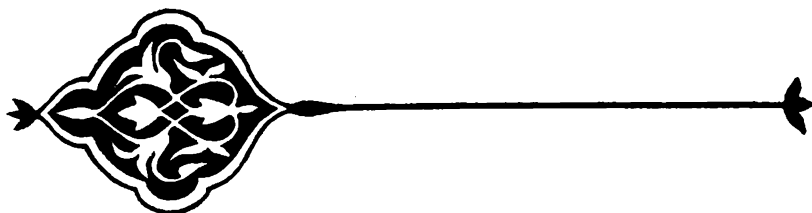
बत्तीसवाँ भाग

नज़ाकत ने जल्दी-जल्दी परंजी डाली और मानो शर्मिन्दा हो पैराफ़िन लैम्प बुझा दिया। वह अनाख़ाँ के पीछे-पीछे, लगभग रास्ता टटोलते चल पड़ी। यह एक अन्धेरी रात थी, वस्तुत: इतनी अंधेरी कि उसे अपनी आँखें बन्द किये चलना कहीं ज़्यादा निरापद प्रतीत हुआ। पतझड़ की ठंड उसकी परंजी से घुसी जा रही थी लेकिन नज़ाकत को गर्मी महसुस हो रही थी मानो उसे बुख़ार चढ़ आया हो।

अनाख़ाँ रेलवे मुहल्ले में करीमोव के कार्यालय की ओर आगे बढ़ती जा रही थी। गलियों को और छोटे-छोटे आँगनों को दीवारों में बने छेदों के ज़रिये पार करते हुए उसने सबसे नज़दीक का रास्ता पकड़ा। वह कहाँ जा रही है, इसका अनुमान नज़ाकत नर्म धूल में धँस जाते बलाई जूते, पैरों के नीचे पड़नेवाली घास-फूस की तेज़ आवाज़ और गोशालों से आती सूखी घास व गायों की बास से जिन्हें वह देख नहीं सकती थी, फिर हठात ही सिर के ऊपर आ जानेवाली किसी गाड़ी के लाठी जैसे लहरा उठते बम से लगाती चल रही थी।

अनाख़ाँ उतनी ही तेज़ी से चली जा रही थी जितनी तेज़ी से वह दिन में चल सकती थी। वह नैमन्चा को अपने हाथ की हथेली की तरह जानती थी, उसे भटक जाने का कोई डर न था। रेलवे मुहल्ले का

सबसे नज़दीकी रास्ता क़ब्रगाह से होकर पड़ता था। बेहिचक उसने वही रास्ता अपनाया।

नज़ाकत बस किसी तरह उसके साथ बनी रहने की कोशिश कर रही थी। वह बुरी तरह पसीने-पसीने होती, हाँफ रही थी। पीछे न रह जाने की भरसक कोशिश करती, रास्ता जाने-पहचाने बिना, वह भागी जा रही थी। काँटों से उसकी पोशाक की किनारी फँस-फँस जा रही थी, पैरों का जूते से ऊपरी हिस्सा छिल गया था। ऊबड़-खाबड़, बिखरे पत्थरों से भरा रास्ता किसी घाटी की तरह तेज़ी से गहराई की ओर उतरता नीचे चला गया था। अंधेरे के कारण नज़ाकत का दिमाग़ एकदम ही काम नहीं कर रहा था। अकस्मात् पहले एक, फिर दूसरी रोशनी उनके बायें, कहीं दूर टिमटिमा उठी। वह निर्माण-स्थल की रात की पाली थी। नज़ाकत लड़खड़ायी और लगभग गिरते गिरते एक ढूह को पार करती चली गयी। यह क्या था? अगर भय से गला न रुँध गया होता तो नज़ाकत चीख़ पड़ी होती। यह एक क़ब्र का ढूह था। हाय राम, यह अनाख़ाँ उसे कहाँ लिये जा रही है? दिन के उजाले में नज़ाकत ने यहाँ पैर रखने की हिम्मत न की होती। काँपते हाथों से अनाख़ाँ की आस्तीनें थामकर वह लगभग निःशब्द बुदबुदायी: "बहन जी, बहन जी"। लेकिन अनाख़ाँ उसकी ओर ध्यान दिये बिना आगे बढ़ती जा रही थी।

उनके पैरों के नीचे बजरियाँ बज रही थीं। नज़ाकत को वे जीवित प्राणियों की तरह चीख़ती प्रतीत हुईं। वह अपने पैरों को इस तरह ऊपर उठा-उठाकर चल रही थी जैसे छलाँग लगाने की तैयारी कर रही हो। नीचे से, अंधेरे से बर्फ़ीली, चुभती हवा साँय-साँय करती चल रही थी।

तभी उनका रास्ता काफ़ी चौरस हो उठा और एक बृहदाकार, लहराती परछाँई उनके सामने तिर आयी। सीलन और सड़ने-गलने की बू आ रही थी। महिलाओं ने अंधेरे में पहचाना नहीं बल्कि सूझ लिया कि यह हज़ारशैख़ के मक़बरे का टूटा-फूटा एक छोर है। हवा से उड़े घोड़े के बाल तथा फटे तिलिस्मान बहुत पहले ही चीथड़-चीथड़ हो चुके थे।

नज़ाकत ने किसी बच्चे की तरह आँखें बन्द कर लीं और हाथ के झटके से चचवान चेहरे पर गिरा लिया।

"आओ, आओ, शान्त रहो। अगर तुम इसी तरह करती रही तो मुझे भी डरा दोगी।" अनाख़ाँ ने मज़बूती से उसका हाथ पकड़ते हुए कहा।

पल भर के लिए उन्होंने अपनी चाल धीमी कर दी और उन्हें अपने आगे बजरियों की साफ़ आवाज़ सुनाई पड़ी। कोई छिपकली तो नहीं? नहीं, यह आवाज़ छिपकली से काफ़ी तेज़ थी। नज़ाकत भय से काँप उठी। अनाख़ाँ भी चिहुँक पड़ी। तेज़ी से एक तंग छाया मक़बरे से खिसक गयी, फिर दूसरी, फिर तीसरी और चौथी...

वे आदमी थे। एसा प्रतीत हो रहा था जैसे वे मक़बरे से निकल-निकलकर भागे हों और महिलाओं के रास्ते में कूल्हों के बल जा बैठे हों।

नज़ाकत को सहारा देते और ध्यान से सुनते हुए अनाख़ाँ रुक गयी। मक़बरे के पास की छायाओं ने भी हिलना-डुलना बन्द कर दिया। अनाख़ाँ विस्मित थी, कहीं उसे भ्रम तो नहीं हो गया, सामने वास्तव में ही कोई आदमी न हो।

दिन के समय "भिखारी-फ़क़ीर" हज़ारशैख़ के मक़बरे के पास जमा हो जाया करते थे। वे कद्दुओं के बने तुम्बे लिये होते और संबंधियों की क़ब्रों पर आनेवाले लोगों से भिक्षा माँग लेते। पिछले साल नमन्गान के किसी निवासी ने जिसे "भविष्यवक्ता ईशान" कहा जाता था, यहाँ एक कड़ाह लगवाकर भिक्षुओं, दरवेशों व "ख़ुदा के झक्कियों" के लिए शोरबा तैयार कराया था। कहीं मक़बरे के पास छिपे वही कमबख़्त लोग तो नहीं थे? शायद वे रात यहाँ बिताते हों।

अनाख़ाँ ने एक क़दम आगे बढ़ाया और तत्क्षण ही वे परछाँइयाँ उसके आगे कठघरे की तरह उठ खड़ी हुईं। उसने भाँप लिया, वे शांतिप्रिय तीर्थयात्री नहीं। बहुत संभव है, उसका और नज़ाकत का पीछा घर से निकलते ही किया गया हो और उनकी बातचीत सुन ली गयी हो।

क्रोध ने अनाख़ाँ के भय का दम घोंट दिया।

"कौन है वहाँ?" उस ने ज़ोरदार और दृढ़ आवाज़ में पूछा। "तुम क्या चाहते हो?"

मक़बरे की ओर से मानो ज़मीन के अन्दर से आती एक दबी, खोखली आवाज़ ने जवाब दिया:

"दीन के साथ ग़द्दारी करनेवाली! इस मुक़द्दस दरगाह के पास इसी पल अपने गुनाह का इक़बाल कर ले! हम तुझे नूरिया के पास भेज देंगे जो तेरी ही तरह थी..."

नज़ाकत चीत्कार करती, अनाख़ाँ के हाथों से छूटकर असहाय उसके पैरों पर जा गिरी।

अनाख़ाँ ने अपनी मखमली जैकिट की किनारी को उलटकर अस्तर पर टटोली। उसमें एक छोटी-सी धातु की बनी वस्तु थी।

"देखो, मैं कैसा विनय दिखाती हूँ!" उसने सोचा और नज़ाकत को कंधे से पकड़कर झकझोरा:

"उठो, बहन, उठो!"

नज़ाकत ने कोई जवाब नहीं दिया। वह अनाख़ाँ के घुटनों से अपना चेहरा चिपकाते हुए लिपट गयी और इतनी ताक़त से उन्हें दबा दिया जैसे वह अनाख़ाँ को ज़मीन पर गिरा देना चाहती हो।

उसके सामने की परछाँइयाँ सरकने लगीं। वे महिलाओं की ओर बढ़ीं।

"मरने से पहले प्रायश्चित कर ले दीर्घकेशी, पिशाचिनी!" वही खोखली आवाज़ गरज पड़ी। "तेरी आँखों में मिट्टी भर दी जायेगी, साँप तेरी नसों से ख़ून चूस डालेंगे, तू जहन्नुम की सात तहों को सहारा देती खंभे की तरह खड़ी हो जायेगी—आमीन!"

"आमीन!" अंधेरे में कई पुरुष स्वरों ने दुहराया।

नज़ाकत आर्तनाद कर उठी फिर पिल्ले की तरह केकियाती, बेसुध क्रंदन करती, हाथों व घुटनों के सहारे रेंगती, किसी छिपकली की-सी गति से जब तक अनाख़ाँ उसे रोक सके, भाग खड़ी हुई।

"शरीअत के नाम पर!" दबी आवाज़ फिर गूंजी, उस बार उसमें आदेश का पुट था।

अनाख़ाँ पूरी तरह तन कर खड़ी हो गयी और गर्व से गरजती आवाज़ में चीख पड़ी:

"सोवियत सत्ता के नाम पर! शैतानो, रास्ते से हट जाओ। क्या सुन रहे हो?"

जवाब में एक भारी पत्थर सन्न से उसके ललाट के पास से गुज़र गया, फिर दूसरा, तीसरा...

* * *

जैसे ही अपने छिले हाथों और चेहरे के साथ किसी तरह काँटेदार झाड़ियों से नज़ाकत बाहर निकली, उसे अपने पीछे एक धमाका सुनाई दिया।

"वे गोली चला रहे हैं! उन्होंने उसे मार डाला!" उसने सोचा।

उसके कटे होंठों से निराशा की चीख़ निकल गयी। आपे से बाहर हो, वह ज़मीन पर बल खाकर गिर पड़ी जैसे उसे मिरगी का दौरा पड़ गया हो।

उसके बाद क्या हुआ, इसका उसे स्पष्ट बोध न रहा। बदहवासी से ज़मीन पर रेंगती, कभी दौड़ती, लड़खड़ाती, गिरती वह चली जा रही थी। उसकी नयी परंजी की किनारियाँ पत्थरों और झाड़ियों से उलझ-उलझकर फट गयी थी।

उसे यह भी समझ नहीं आया कि लालटेन, कुदाल और हथौड़े लिये लोग निर्माण-स्थल पर से जहाँ रोशनी टिमटिमा रही थी, क़ब्रगाह की ओर क्यों दौड़ते आ रहे हैं। वे धमाके की दिशा में दौड़ रहे थे लेकिन वे उसे ख़रगोशों की तरह तेज़ गति से उसकी विपरीत दिशा में भागते प्रतीत हुए।

"अनाख़ाँ मर गयी, मारी गयी," यह भीषण ख़्याल उसके धूँधले मस्तिष्क को चैन नहीं लेने दे रहा था। इसके कारण उसकी बची-खुची शक्ति भी जाती रही थी। मुश्किल से अपने पैरों पर खड़ी हों, निष्फल सहारे के लिए अपनी बाँहें अग़ल-बग़ल फैलाये वह लड़खड़ा रही थी।

"अरे कोई है?" वह एक दीवार के ऊबड़-खाबड़ हिस्से को अंधेरे में टटोलती चीखी। नज़ाकत अपनी ही आवाज़ न पहचान सकी।

सूँ-सूँ करती निरर्थक अंग विक्षेप करती, वह एक गली के पार दौड़ पड़ी। उसे लगा वह चीख रही है, मदद के लिए आवाज़ लगा रही है।

एक मोड़ पर, एक लम्बी दीवार ने उसका रास्ता रोक लिया।

दीवार में एक खुली जगह थी। वह कहाँ थी, उसे मालूम था। ज़मीन पर झड़े पत्तों की मोटी परत उसके पाँवों के नीचे आवाज़ कर रही थी। वह रहा पत्रहीन, टेढ़ी-मेढ़ी डालोंवाला पुराना भूर्ज वृक्ष और छोटा-सा गोलाकार पोखर।

नज़ाकत ने भाँप लिया कि यह उसकी पड़ोसन – गायिका मस्तान का ग्रहाता था।

"हे ख़ुदा – चाची मस्तान! भाई मरियम!" वह शोकाकुल, मिनमिनाती ग्रावाज़ में चीखी।

कोई जवाब न मिला। उसके चारों ग्रोर बस ग्रलस चुप्पी छायी थी।

एक कूबदार छाया पेड़ के पास से ग्रलग हो गयी ग्रौर दीवार के साथ-साथ सरकने लगी। नज़ाकत ने इसे साफ़ देखा। एक बार फिर वह भय से जड़ीभूत हो गयी। उसे ग्रपनी पीठ पर ठंडा पसीना चुहचुहाता महसूस हुग्रा। कोई चोरी-चोरी निःशब्द उसकी ग्रोर बढ़ा ग्रा रहा था।

कुत्ते की तरह दबी-दबी ग्रावाज़ से गुर्राता वह उस की ग्रोर झपट पड़ा। ऐन वक़्त सहज प्रेरणावश नज़ाकत उसकी पकड़ से फिसलते हुए, ग्रपनी परंजी उसके हाथों में छोड़कर पलट पड़ी।

"दो-ग्रोद! दोद!" वह संयमित ग्रावाज़ में चीखी।

वह दौड़ने लगी, लेकिन वह ग्रादमी उस तक पहुँच गया ग्रौर ग्रपनी मज़बूत ग्रंगुलियों से उसने उसके कंधे जकड़ लिये। फिर ज़मीन पर पटक देने की कोशिश करते हुए उसने उसे पीछे की ग्रोर खींच दिया। नज़ाकत किसी तरह ग्रपना संतुलन बनाये रही। उस ग्रादमी ने जल्दी से उसका मुंह ग्रपने हाथ से पकड़ लिया ग्रौर उसकी चोटी उसके गले में लपेटने लगा।

"चुप रहो," वह गुर्राया। "तुम ख़ुद ग्रपनी क़ब्र में ग्रा गयी हो!"

ग्रचानक उत्पन्न ग्राश्चर्य ने नज़ाकत का भय थोड़ा कम कर दिया। ग्रावाज़ एकदम परिचित थी। हे ख़ुदा, क्या उसे भ्रम हुग्रा है? न सिर्फ़ ग्रावाज़ में बल्कि उस ग्रादमी के हाथों में भी वह ताक़त न थी जो किसी जवान ग्रादमी में होनी चाहिए थी। नज़ाकत का गला कोई बूढ़ा ग्रादमी घोंट रहा था। उसे ग्रब कोई संदेह नहीं रह गया, यह बकरे-सी दाढ़ीवाला ग्रादमी इमाम ग्रब्दुमजीद ख़्वाजा ही था।

इसे महसूस करते ही, वह तत्क्षण ग्रपने होश में ग्रा गयी। किसी रहस्यपूर्ण परछाँई के मुक़ाबले किसी जाने-पहचाने ग्रादमी से लड़ना सौ गुना ग्रासान होता है। उसे महसूस हुग्रा, इमाम क़ब्रगाहवाले ग्रादमियों

में एक था। वह उस के घर के पास उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसे डर था, कहीं वह पहचान न ले। हत्यारा! तो तुम्हारी पवित्रता का सार यही है...

नज़ाकत लहराकर उस की पकड़ से निकल गयी और अपने दोनों हाथों से उसकी दाढ़ी जकड़ ली। इमाम दर्द से कराह उठा। यह संदेह ही की बात है कि कोई बूढ़ा आदमी किसी औरत को बाल खींचने में हरा सके। लेकिन इमाम हार नहीं माना। हम सब जानते हैं, सूली के भय से निरक्षर साधु भी पढ़ने लग जाता है। अपने घुटने से नज़ाकत के पेट पर वार करते हुए, इमाम ने आखिरकार उसे नीचे गिरा ही दिया। फिर उसकी चीख़ दबाने के लिए उसने तेज़ी से उसकी मुड़ी-तुड़ी परंजी से उसका सिर ढँक दिया।

उसी समय नारमत यफ़ीम दनीलोविच की मेज़बानी कर रहा था। वे निर्माण-स्थल से लौटे थे और नारमत को ख़ुद चाय बनानी पड़ी थी। उसने सोचा, उसकी बीवी कहीं पड़ोस में गप लड़ा रही होगी। उसे आश्चर्य था, इतनी देर हो जाने के बाद भी वह अब तक लौटी क्यों नहीं थी...

"लोग कहते हैं, डेगची के क़रीब जाने से कालिख लगेगी, बुरों के करीब जाने से अपने गले बला मोल लोगे। क्या ऐसी बात नहीं, नारमत भाई?" अपने मेज़बान के सामने पालथी मारकर बैठते हुए, पतली हलकी प्याली से चाय की चुस्कियाँ लेते हुए यफ़ीम दनीलोविच ने पूछा।

नारमत ने असहमति में अपना सिर हिला दिया।

"इमाम एक निस्स्वार्थ व्यक्ति है। वह एक बुद्धिमान आदमी है। इमाम अब्दुमजीद ख़्वाजा से क्या बुराई सीखी जा सकती है? अगर वह हम से मिलने आता है तो बस हमें अच्छाई की सीख देने, पाप करने से बचने की सीख देने आता है। हम मुसलमानों में यह लज्जाजनक तो नहीं समझा जाता है।"

"मुझे आपकी आस्था से कोई सरोकर नहीं," यफ़ीम दनीलोविच ने कहा। "मेरे कहने का क्या मतलब है, उसे समझने की कोशिश कीजिये। मैं उस काम के बारे में बात कर रहा हूँ, जिसे हम, आप कर रहे हैं, अब समय आ गया है जब काम ख़ुशी और सम्पन्नता लाता है, परिवार में सामंजस्य लाता है। क्या आप नहीं मानते? बताइये।"

"हाँ, मैं मानता हूँ।"

"फिर मुझे समझाइये, आपका शिक्षक आपको ईमानदारी से काम करने, उस काम से बहका क्यों रहा है जिसे आप कर रहे हैं और आपको वह पसन्द भी है? क्यों?"

नारमत ने बिना कोई जवाब दिये अपना सिर लटका लिया।

"क्या सच्चे विश्वासी के लिए अपनी भलाई और दूसरों की भलाई के लिए काम करना पाप है?" यफ़ीम दनीलोविच ने आगे कहा। "क्या हमारी परियोजना ऐसी चीज़ नहीं जिससे बहुत से लोगों को लाभ पहुँचेगा? आपका इमाम इस बारे में क्या कहता है? अरे हाँ, जिस आदमी ने अपने जीवन में रंचमात्र भी काम नहीं किया हो, वह मेहनत-मज़दूरी के बारे में क्या कह सकता है?"

"हमें बचपन से ही विद्वानों, शरीअत के रहनुमाओं का विश्वास करने सिखाया गया है।"

"यह ज़ाहिर है कि आप को धोखा दिया गया था?"

"इमाम को मुझे धोखा देने से क्या मतलब? नारमत ज़ोर से बोल पड़ा। "मज़हब के बारे में बातें करने आकर वह क्या लाभ उठाना चाहेगा?"

"लाभ? बहुत कुछ!" यफ़ीम दनीलोविच ने जवाब दिया। "छल से वह आप से बहुत बड़ी चीज़ ले भी जा चुका है, बहुत ही क़ीमती चीज़: काम के प्रति प्रेम और आपकी बीवी की आज़ादी..."

नारमत ने विरोध की मुद्रा बनायी।

"नहीं, नहीं, मेरी बीवी से किसी ने भी कुछ नहीं कहा, न मैं ने, न उसने। उसने ख़ुद ऐसा किया, अपने मन से।"

यफ़ीम दनीलोविच मूँछों के बीच मुस्कुरा पड़े और चाय की प्याली रख दी।

"सोचिये, नारमत भाई। सोचिये। इमाम आपके परिवार में क्या ले आया है—मंगल या अमंगल। उसने आपको उलझाकर रख दिया है। मुझे डर है कोई दुर्घटना न हो।"

"मैं किसी मज़हबी व्यक्ति को, तिस पर बूढ़े विद्वान व्यक्ति को निकाल बाहर नहीं कर सकता।" नारमत बुदबुदाया। "मेरे मुसलमान लोग, दूसरे लोग क्या कहेंगे? वे कहेंगे, मैं ने अपनी प्रतिष्ठा-निष्ठा सब गँवा दी है।"

"लेकिन आपके कॉमरेड क्या कहेंगे?" यफ़ीम दनीलोविच ने पूछा।

नारमत को जवाब देने का मौक़ा न मिला।

किवाड़ भड़ाक से खुला। नारमत उछलकर खड़ा हो गया, गर्म चाय उसके हाथ पर बिखर गयी।

पैराफ़िन लैंप की क्षीण रोशनी में नज़ाकत दिखाई पड़ी। उसके बाल बिखरे थे, घुटने तक उसकी पोशाक फटी थी, उसके सदैव गुलाबी गाल रूई की तरह सफ़ेद पड़ गये थे, उसकी दृष्टि किसी बदहवास औरत की-सी थी और उसके होंठ बेआवाज़ हिल रहे थे।

पूरे एक मिनट तक नारमत अपनी बीवी को ताकता रहा जैसे वह उसे पहचान न पाया हो। फिर वह अपनी औरत की ओर बढ़ा। वह नारमत की आगे बढ़ी बाँहों में जा गिरी।

तत्क्षण नारमत ने फाटक पर इमाम अब्दुमजीद ख़्वाजा को देखा। इमाम की दाढ़ी तितर-बितर थी और निगाह भटकती। वह आँगन में अपने पीछे एक लाल परंजी घसीटते आया और यफ़ीम दनीलोविच को देखे बिना नारमत और नज़ाकत के सामने भहराकर घुटनों के बल गिर पड़ा।

"शरीअत के नाम से... कृपाशील अल्लाह के नाम से..." वह शिकायत भरी तथा नकियाती आवाज़ में याचना करने लगा। "हम-तुम, सब मुसलमान हैं, हमारी भाषा एक है, विश्वास एक है, हम नाते रिश्तेदार लोग हैं, एक दूसरे के बिलकुल क़रीब हैं..."

नज़ाकत अपने पति से चिपकते हुए चीत्कार कर उठी:

"वह मुझे मार डालेगा। वह मुझे मार डालेगा।"

इमाम ने उसे रोका।

"मैं ख़ुदा का और आप लोगों का सेवक रहूँगा। देखो, मैं आज या कल बसर करनेवाला बूढ़ा हूँ, नारमतुल्लाह, मुझे ख़ुदा सज़ा दे अगर मेरी ज़बान से तुम्हारे लिए दुआ, तुम्हारी मंगल कामना के अलावा कुछ और भी निकले!"

"वह मुझे मार डालेगा," नज़ाकत ने सुबकते हुए फिर कहा।

इमाम ने उसके पैरों और नारमत के जूतों को बाँहों में भर लिया।

"इस राज़ को हमारे बीच ही रहने दो, मैं ख़ुदा के नाम पर

तुमसे विनती करता हूँ। हम एक धर्म के हैं। तुम मेरे बाप हो, नारम-तुल्लाह ग्रौर नज़ाकत मेरी बहन।"

"क्या हुग्रा?" यफ़ीम दनीलोविच ने उनके पास जाकर पूछा।

"यफ़ीम दनीलोविच!" नज़ाकत उनकी ग्रोर हाथ बढ़ाते हुए ग्रार्त-नाद कर उठी। "ग्रनाख़ाँ... क़ब्रगाह में... वह, वह! वे! उन्हों ने उसे मार डाला है।"

इमाम उछल खड़ा हुग्रा ग्रौर किसी बकरे की-सी गति से फाटक की ग्रोर दौड़ पड़ा। लेकिन नारमत ने उसे जा पकड़ा ग्रौर दीवार के साथ दबोच दिया।

"ग्रोह, तो यह बात है, पवित्र बुड्ढे!" वह पूरे ज़ोर से चीख पड़ा।

यफ़ीम दनीलोविच ने नज़ाकत को उसका हाथ पकड़कर थाम लिया।

"क़ब्रगाह में? कहाँ? मुझे जल्दी से बताग्रो!"

"हज़ारशैख़ के मक़बरे के पास।"

"उसका पूरा सत्कार कर डालो, खनक!" यफ़ीम दनीलोविच भीषण ग्रावाज़ में चीखे। "उसे ग्रपने हाथों से जाने मत देना।" वह फुर्ती से क़ब्रगाह की ग्रोर दौड़ पड़े।

ग्रंधकार धीरे-धीरे विलीन हो रहा था।

तैंतीसवाँ भाग
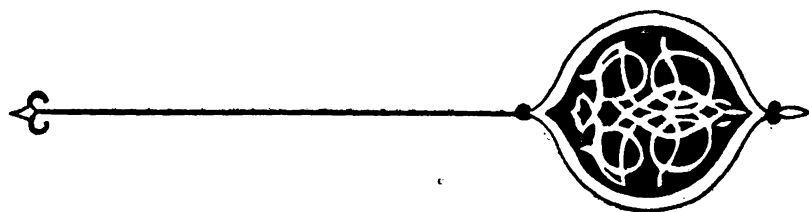
नगर पार्टी समिति में ग्रभी कार्य दिवस शुरू नहीं हुग्रा था। इसके गलियारे सूने ग्रौर शान्त थे। वहाँ ग्रकेली नौकरानी थी जो प्रवेशद्वार के पास ज़ीने पर एक बाल्टी खड़खड़ा रही थी।

ग्रनाख़ाँ महिला विभाग के ग्रपने छोटे-से कमरे में चहलक़दमी कर

रही थी। उसके सिर पर पट्टी बँधी थी, चेहरा पीला था और होंठ कुछ बुदबुदा रहे थे।

अपने हाथ भींचते हुए, वह अपनी मेज़ के पास जाकर रुकी। उसपर एक खुला अख़बार पड़ा था। पहले कॉलम पर एक बड़े-से लेख को लाल पेंसिल से घेरा डाला गया था। शीर्षक था: "ग़द्दार – क़ैदियों के कठघरे में।"

चाय-विक्रेता मुहम्मद सईद, भूतपूर्व शिक्षक मुहम्मद ख़्वाजा नईमी, सुखट्टा मख़सूम के नाम से जाना जानेवाला मख़सूम पाचाजानोव, नीली मस्जिद का इमाम अब्दुमजीद ख़्वाजा, प्रसिद्ध जुआड़ी कलूटा क़ुलमत तथा बहुत-से दरवेश, मुल्ला व "ख़ुदा के बेवक़ूफ़"... आख़िरकार पूरा जत्था पकड़ा गया था।

अनाख़ाँ को जन-अभियोक्ता नियुक्त किया गया था और वह अपने दिल में ग़द्दारों, लोगों के विवेक के व्यापारियों, लोगों की अज्ञानता व नादानी से लाभ उठानेवाले सट्टेबाज़ों, धर्म के झूठे अलंबरदारों, लुटेरों, जुराख़ाँ के हत्यारों को आरोप-मंडित करने के लिए आग्नेय शब्दों को ढूंढ़ व एकत्र कर रही थी।

जुराख़ाँ... आह, काश वह ज़िन्दा होती! उसने उन धर्मोन्मादियों और हत्यारों को अपने ग़ुस्से से जलाकर राख कर दिया होता। उसने ऐसे शब्द इस्तेमाल किये होते जो दूर समुद्र के पार, कुहरों के नगर तक जहाँ से ऐसे "चाय-विक्रेता" दुनिया भर में भेजे जाते हैं, गूंज उठते। अनाख़ाँ आज ऐसे शब्द ढूंढ़ निकालेगी।

गलियारे में शान्त आवाज़ों ने उसके विचार भंग कर दिये। वे औरतों की आवाज़ें थीं: अनाख़ाँ दिलचस्पी से दरवाज़े की ओर मुड़ गयी: इतना सवेरे-सवेरे कौन हो सकती है?

दरवाज़ा को एक झिझकते हाथ ने धकेला, थोड़ा खोला और सफ़ेद ऊनी शाल में क़ुम्रि का सिर दिखाई दिया।

"तुम यहाँ, बहन अनाख़ाँ? मैं जानती थी, तुम यहाँ आ चुकी होगी।"

अपने बर्फ़ चिपके जूतों को क़ुम्रि ने गलियारे में उतार डाला और नंगे पाँव कमरे में चली आयी। उस के पीछे बूढ़ी, कूब निकाले अंज़िरत थी। वह बिना परंजी के थी!

"इससे तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं होता, अगर तुमने अपने जूते गलियारे में उतार दिये होते, दीदी," क़ुम्रि दहलीज़ पर बड़बड़ायी। "लगता है तुम्हें अक़्ल नहीं आ सकती। देखो, बर्फ़ पिघलेगी और फ़र्श पर पूरी तलैया ही बन जायेगी..." फिर एक ही साँस में बोलती चली गयी: "तुम कैसी हो, बहन अनाख़ाँ? तुम्हारी तबीयत कैसी है? हमारे जाने के बाद तुम्हें फ़र्श पोंछना पड़ेगा।"

"आइये, पधारिये," अनाख़ाँ ने अंज़िरत का हाथ पकड़कर, सोफ़े पर बैठाते हुए ख़ुशी के साथ कहा। "आख़िर आपने दुनिया को अपना चेहरा दिखा ही दिया। कहिये, कौनसी हवा आपको यहाँ उड़ा लायी?"

"मैं उसे तुम्हारे पास लायी हूँ, अनाख़ाँ प्यारी, मैं लायी हूँ," क़ुम्रि बीच में ही बोल उठी। "तुमने मुझसे सब जगह इसका पीछा करने कहा था और इस बूढ़ी, बोदी, बे-सींग की बकरी को जहाँ कहीं मैं जाऊँ, ले जाने कहा था। सो, अब वह यहाँ है!"

"अरे शर्म कर, दीदी," अंज़िरत ने थके अंदाज़ से अपना सिर हिलाते हुए, तुतला-तुतलाकर कहा। "तुम्हें मुझे यहाँ लाने किसने कहा था? क्या मुझे ख़ुद यहाँ का रास्ता नहीं मालूम? या तुम ने मुझे अपने से बाँध रखा था? मैं ख़ुद आयी हूँ, अनाख़ाँ बेटी, इस बातूनी, कम-अक़्ल नौजवान औरत की बात मत सुनो। उसकी ज़बान ईशान की दाढ़ी-सी लम्बी है लेकिन इतनी-सी बात भी नहीं समझ पाती, मुझमें झुककर अपने जूते उतारने की ताक़त नहीं।"

मुस्कुराकर अनाख़ाँ ने उस बूढ़ी को गले लगा लिया।

"कोई बात नहीं – आपको अपने जूते नहीं उतारने होंगे, चाची अंज़िरत। मैं आपके जाने के बाद हज़ार बार फ़र्श साफ़ करने को तैयार हूँ क्योंकि आपको अपनी पीठ सीधी रखते देखना मुझे हज़ार बार पसन्द है – और आपने अपनी परंजी उतार फेंकी है। शुक्रिया, मेरी प्यारी, मेरी अक़्लमन्द सखी।"

"उसे इस के लिए शुक्रिया की कोई ज़रूरत नहीं," क़ुम्रि ने फिर लड़ाकू अन्दाज़ में रोक दिया। "इसके लिए मुझे शुक्रिया मिलनी चाहिए। मैंने ही उस से कहा, ज़ब तक वह अपने चेहरे से परंजी नहीं हटा लेगी, मैं उसे तुम्हारे पास नहीं ले जाऊँगी और तुम्हारा कार्यालय नहीं

दिखाऊँगी। पर उसने तुम्हारे घर जाना नहीं चाहा, वह तुमसे यहीं मिलना चाहती थी। उसने मुझे वहाँ ले जाने को कहा जहाँ तुम्हारा पार्टी-कार्यालय है। देखो, कितनी बहादुर हो गयी है वह!"

"रिज़वान मुझसे दो साल बड़ी है," अंजिरत ने युक्तिपूर्वक ध्यान दिलाया। "वह यहाँ हर रोज़ आती है। उसके मुक़ाबले में किस तरह कम हूँ!"

"मैं आपको देखकर बहुत ख़ुश हूँ," अनाख़ाँ ने कहा। "विश्वास कीजिये, आप को पहचानना मुश्किल हो रहा है, चाची अंजिरत।"

"अलहमदुलिल्लाह, बेटी, अलहमदुलिल्लाह।"

क़ुम्रि झींक पड़ी।

"ओह दीदी। रास्ते में तो तुमने मुझसे कहा था, तुमने अलहमदुलिल्लाह से अपना पीछा छुड़ा लिया है।"

"वह ठीक है," अंजिरत ने जवाब दिया, "और में कहूँगी अलहमदुलिल्लाह, मैंने इस आदत से निजात पा लिया है।"

तीनों औरतें मोदपूर्वक हँस पड़ीं।

लेकिन अगले ही पल अंजिरत ने अपने झुर्री पड़े होंठों को हाथ से पोंछा और कठोर लहजे में कहा:

"यहाँ मैं तुम्हारे साथ हँस रही हूँ। तुमने मुझे बेवक़ूफ़ बना दिया जो मैं हँस पड़ी। लेकिन मैं इस लिए नहीं आयी हूँ। यह हँसने की बात नहीं। मुझे बताओ, बेटी अनाख़ाँ, क्या यह सच है कि उन्होंने," बुढ़िया ने अपनी पतली-सी मुड़ी अंगुली ऊपर उठायी, "उन्होंने हमारी माँ और बहन जुराख़ाँ की हत्या कर दी थी? जो लोग कह रहे हैं, क्या सच है?"

"हाँ, चाची अंजिरत।"

"और क्या यह सच है, उन्होंने तुम पर गोली दागी?"

"नहीं। मेरे साथ दूसरी ही बात थी। वे मुझे पथराना चाहते थे। मैं ने उन पर गोली दागी और वे तितर-बितर हो गये, गीदड़ों की तरह दुबककर भाग खड़े हुए।"

"तुमने... तुमने उन पर गोली चलायी थी, बेटी?" अंजिरत ने सफ़ेद होती अपनी भौंहों को फैलाते हुए पूछा।

"हाँ।"

"तुम गोली चलाना जानती हो?"

"हाँ।"

"अलहमदुलिल्लाह, अलहमदुल्लिाह," अंजिरत दुआएँ देती बुदबुदायी। यही अगर पिछले शरद में हुआ होता तो शायद वह पूरे दिल से बुरा बताती, शायद भर्त्सना भी करती। "वे... वे तितर-बितर हो गये, तुमने कहा? गीदड़ों की तरह?"

"हाँ।"

"और गोली—क्या किसी को लगी?"

"नहीं, मैंने उन्हें डराने के लिए हवा में गोली दागी थी। फिर निर्माण-स्थल से हमारे लोग आ गये।"

"हूँ..." अंजिरत धीमे से बोली और दुर्बल हाथों से अनाख़ाँ को अपनी ओर खींचकर उसके पट्टी बँधे सिर को तीन बार चूम मिया।

"धीरे से, इससे उसे दर्द होता है," क़ुम्रि अनाख़ाँ की ओर ध्यान से देखती हुई बोल पड़ी।

"होने दो," अंजिरत ने सहज गरिमा से जवाब दिया। "अब जहाँ अनाख़ाँ को पीड़ा होती है, वहीं मुझे भी! ठीक यहाँ—मेरे इस सफ़ेद बालोंवाले सिर में। ख़ुदा की क़सम, मैंने कभी सोचा भी नहीं था, मेरी परंजी पहनते रहने से, किसी को चोट पहुँचेगी। मैंने सोचा कि अगर नज़ाकत दुबारा परंजी डालने लगी तो यह उसका अपना मामला है। यही मैंने सोचा था, अनाख़ाँ बेटी। अगर तुमने मुझसे पहले कहा होता कि इमाम अब्दुमजीद ख़्वाजा ने अपने हाथों से नज़ाकत का गला घोंटने की कोशिश की थी, मैं तुम्हारा लिहाज़ करना छोड़ देती। सुन रही हो, मैं क्या कह रही हूँ?"

"हाँ, चाची अंजिरत।"

"यही कारण है, मुझे इतनी चोट पहुँची है। यही कारण है, आज मैं अपना चेहरा चचवान के पीछे नहीं छुपा सकी। मुझसे यह हो ही नहीं सका। और इस वजह से तनिक भी नहीं जैसा कि इस लम्बी ज़बान-वाली औरत ने कहा कि वह मुझे तुम्हारे पास, पार्टी कार्यालय तक नहीं ले जाएगी।"

क़ुम्रि ने अपने पोपले मुँह पर मुस्कान बिखरते हुए अपना हाथ झटका। "तुम कितनी कृतघ्न हो। तुम भूल गयी कि मैं पूरे एक घंटे तक

तुम्हें शर्मिन्दा करती रही थी। कमसे कम यह मत भूल जाओ कि तुम यहाँ आयी किस लिए थी।"

"नहीं, मैं भूलूंगी नहीं," अंज़िरत ने शान से कहा। "अब मैं तुम्हें बताऊँगी, मैं यहाँ किस लिए आयी थी।"

बूढ़ी ने मेज़ पर रखे अख़बार की ओर इशारा किया।

"क्या तुमने सुना है, वे अख़बारों में क्या लिख रहे हैं?" उसने इस तरह पूछा जैसे किसी को छेड़ने का मौक़ा ढूंढ़ रही हो। "इस शैख़चिल्ली क़ुम्रि ने मुझे यह पढ़कर सुनाया—उसने इस में लिखा सब कुछ ख़ुद ही पढ़ा। भगवान जाने किसने उसे पढ़ना सिखाया और कब! जैसा मैं कह रही हूँ, उसने सारी बातें मुझे पढ़कर सुनायीं। अब मैं जो तुमसे पूछना चाहती हूँ, वह यह है, बेटी अनाख़ाँ। मुझे एक ऐसा आदमी दो जो अच्छी तरह पढ़-लिख सके और उसे यह लिखने कहो कि हालाँकि इमाम अब्दुमजीद ख़्वाजा जहन्नुम में जाने से नहीं बच पायेगा, वह इस दुनिया में भी दया पाने के क़ाबिल नहीं। जुराख़ाँ के हत्यारों को क़ब्र में भी जगह न मिलेगी। उन्हें यह सब अख़बारों में लिखने कहो। और उन्हें यह भी लिखने कहो कि यह मेरी, बूढ़ी अंज़िरत, दादी अलहमदुलिल्लाह की कामना है जिसने अपनी इतनी लम्बी उम्र में किसी मक्खी तक को पीड़ा नहीं पहुँचायी है। क्या वे यह सब लिख सकते हैं, बेटी, बताओ मुझे?"

जवाब देने के बदले अनाख़ाँ टेलीफ़ोन के पास आयी और स्थानीय अख़बार के सम्पादकीय कार्यालय को फ़ोन किया। तुरंत ही अख़बार की ओर से दादी अंज़िरत को कार्यालय ले जाने एक लड़की आ पहुँची।

आगन्तुकों को दरवाज़े पर विदा करते हुए अनाख़ाँ ने कहा:

"मुक़दमे के दौरान मुझे क्या कहना है, अब मैं जान गयी। और अब मैं देखती हूँ, आपने सचमुच अपने चेहरे से पर्दा उतार लिया है और दमक उठी हैं।"

"लेकिन क्या मेरा अख़बार के कार्यालय इस तरह जाना ठीक है?" अंज़िरत ने अपने पोपले मुँह को हथैली से ढँकते हुए पूछा।

"वे आपका चित्र छापना चाहते हैं।"

"लेकिन क्या वह अच्छी तरह पढ़-लिख सकती है?"

"कौन?"

"स-म्पा-द-कीय। अच्छा होता, किसी मर्द से मिलती।"

"लेकिन आपकी मुलाक़ात मर्द से ही होगी," अनाख़ाँ ने हँसते हुए कहा।

"अरे बेटी, मुझे डर लगता है," अंज़िरत ने कमर झुकाते कहा।

"आओ, आओ," क़ुम्रि ने जल्दी की। "वह पाप मैं अपने सिर ले लूंगी।"

औरतों के चले जाने के बाद दरवाज़े पर दोब्रोख़ोतोव को देखकर अनाख़ाँ को आश्चर्य हुआ। वह क़ुम्रि की तरह ही झिझकता अन्दर आया लेकिन अनाख़ाँ का हृदय भय के मारे धड़क उठा। न जाने क्यों उसका दिल विकल हो उठा था। क़ुम्रि ने जूते गलियारे में उतार दिये थे लेकिन दोब्रोख़ोतोव दरवाज़े के पास फ़र्श की चटाई पर सावधानी से अपने जूते पोंछ रहा था। गहरी, अनजानी ख़ुशी से व्याकुल अनाख़ाँ चुपचाप प्रतीक्षा करती रही।

"इतना सवेरे-सवेरे आने के लिए मुझे माफ़ कीजियेगा," उसने दरवाज़े पर से ही कहा। "मैं इधर से जा रहा था तो सोचा आपके स्वास्थ्य के बारे में पूछता चलूँ।"

"मैं... मैं बिलकुल ठीक हूँ, धन्यवाद," अनाख़ाँ ने अस्पष्टता से कहा जैसे वह हक्का-बक्का हो और मेज़ पर बैठी अनिच्छापूर्वक अख़बार ठीक कर रही हो।

दोब्रोख़ोतोव धीरे-धीरे, घबड़ाता कमरे में आया। उसने अपने इर्द-गिर्द और कमरे की दीवारों पर नज़र डाली और मेज़ के पास किसी प्रार्थी की तरह रुक गया।

"जुराख़ाँ इसी कमरे में मुझसे मिली थी," उसने कहा। "मैं उससे हुई अपनी बातचीत कभी नहीं भूल पाऊँगा। आपको यह हास्यास्पद, यहाँ तक कि मूर्खतापूर्ण लग सकता है लेकिन इस कमरे को मैं अपना घर समझता हूँ जिसके साथ मेरे बचपन की सब से आनन्ददायी स्मृतियाँ जुड़ी हैं। सच कहता हूँ, मैं एकदम निश्छल होकर कहता हूँ... जो बातें मेरे साथ और मेरे इर्द-गिर्द घट रही हैं, मुझे विस्मयाभिभूत कर देती हैं। मेरे आने के बाद से कितना समय गुज़र गया, कितना परिवर्तन हो गया। क्या आप नहीं मानतीं?"

"हाँ, हाँ, क्यों नहीं?" अनाख़ाँ अटक-अटककर बोली।

वह उसे बैठने के लिए कहना चाहती थी, उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाना चाहती थी लेकिन ऐसा करने के लिए वह ख़ुद पर क़ाबू नहीं पा सकी।

वह अपने आप बैठ गया। वह अनाख़ाँ के पास कुर्सी खिसकाकर उसकी बग़ल में बैठ गया। कुछ पलों तक वह अपनी कनखियों से उसे देखता बैठा रहा, फिर अकस्मात ही अख़बार पर रखी कलाई को अपने हाथ में लपेट लिया। अनाख़ाँ ने अपना हाथ नहीं खींचा लेकिन वह सिर से पाँव तक लजा गयी।

"मुझे आप से—मैं आप से कहना चाहता हूँ," उसने नम्रता और गंभीरता से कहा। "पिछली रात मैं दो बार जाग पड़ा और हर बार मैंने सपने में क़ब्रगाह में आप पर पत्थर चलते देखा। मेहरबानी करके मुझे माफ़ कर दीजिये, अगर मेरी बातों से आपको ग़ुस्सा आये तो आप मुझे झिड़केंगी नहीं—लेकिन मैंने तय किया कि मैं ख़ुद आकर यहाँ आपको देख जाऊँगा। मैं तुरंत चला जाऊँगा। मैं बहुत अधिक चिंतित था। मैं पूरी ईमानदारी से कह रहा हूँ। मुझे महसूस होता है, यह चिन्ता मेरे जीवन का एक ऐसा अंग बन गयी है कि मैं इसके बिना रह नहीं सकता।"

अनाख़ाँ ने तिरछी नज़रों से उसे देखा और उसे अपने काँपते होठों को काटते देखती चुप रही। उसे महसूस हुआ, वह फूटकर रो पड़ेगी और उसके हलके गर्म हाथ पर अपना सिर रख देगी।

"अब मुझे इजाज़त दीजिये," उसने कहा। "यह मेरी एक मात्र प्रार्थना है और मैं इस पर ज़ोर भी दूँगा, अगर कभी भी आप को कुछ हो, आप मेहरबानी करके मुझे तुरंत उसकी जानकारी देंगी। मुझसे वायदा कीजिये।"

"लेकिन मुझे हो क्या सकता है?" उसने कुछ-कुछ शांति महसूस करते हुए कहा।

"वायदा कीजिये," उसने दुहराया। "क्या आप वायदा करती हैं?"

"हाँ," अनाख़ाँ ने जवाब दिया।

"बस, ठीक है, अब मैं जाता हूँ। फिर मिलेंगे।"

"नमस्ते, सेर्गेय ल्वोविच।"

वह उठ खड़ा हुआ और तेज़ी से दरवाज़े पर चला गया। वह पीछे मुड़कर देखे बिना, दरवाज़ा बन्द किये बिना चला गया।

अनाख़ाँ मेज़ पर बैठी रही और काफ़ी देर तक टकटकी लगाये उस हाथ को ताकती रही जिसे उसने पकड़ा था और उसका हृदय भय और ख़ुशी से हिलोरे खाते रहा।

चौंतीसवाँ भाग

एर्गेश अपने बाप से विरासत में मिले एक अकिंचन मिट्टी के मकान में रहता था। दीवारें बहुत पहले से ही भुरभुराने लगी थीं जबकि उनका रंग किसी खाजभरे घोड़े की याद दिलाता। लेकिन उसके पास अपने घर के लिए कोई समय न था और लोग पीठ पीछे हँसते हुए कहते :

"उसका बाप एक जुलाहा था और अपने जीवन भर एक कमरबन्द तक नहीं जुटा सका और बेटा एक निर्माता है लेकिन अपने बाप के मकान की छत की भी मरम्मत नहीं कर सकता।"

अपनी बीमारी के दौरान एर्गेश के दिमाग़ में यह ख़्याल बार-बार आता-जाता रहा। दवा की बोतलों से अटे पड़े स्टूल की ओर अवसादपूर्ण दृष्टि डालते हुए पीड़ा के साथ वह सोचता : "मैंने अपनी माँ या अपने बारे में नहीं सोचा। मैं अपनी ताक़त या समय की बचत नहीं करता। मैं अपने काम में अपना पूरा बूता लगा रहा हूँ। अगर मैं ठीक-ठाक होता तो रात-दिन एक कर देता। मेरे पास हाजिया से यह भी कहने का समय नहीं होता कि मैं उससे प्यार करता हूँ . . . "

तो भी लोग उससे असंतुष्ट थे। वे उसपर क्यों दोष लगा रहे थे? वे उसकी मलामत क्यों कर रहे थे?

उसे मालूम था यफ़ीम दनीलोविच क्या कहते।

"अनाख़ाँ को देखो! उसके लिए धार्मिक, छैला नारमत जैसे अनपढ़ लोगों के बीच काम करना कितना कठिन है। इसके बावजूद वह उनके

क़रीब है, उन्हें समझती है और वे क्या चाहते हैं, महसूस करती है। उसके प्रभाव का यही तो कारण है। उसके लिए किसी आदमी से एक बार मिलना, उसके साथ निश्छल रूप से बात करना काफ़ी है—और जिस व्यक्ति की नियति में उसकी रुचि है, जिसके लिए वह संघर्ष कर रही है, सही दिशा अख़्तियार कर लेती है। मानवजाति की नियति!"

एर्गश भी अनाख़ाँ के बारे में वही कहता। वह सावधान और हिम्मत-वाली थी। उससे सीखना शर्म की बात न थी। लेकिन क्या एर्गश कम्यु-निस्ट न था? क्या वह नौकरशाह, बेरहम व्यापारी, स्वार्थजीवी था? एर्गश सुल्तानोव पर यह लांछन लगाने की हिम्मत कौन करेगा?

क्या उसने पूरे दिल से दोब्रोख़ोतोव की रक्षा न की, समर्थन नहीं किया? क्या उसने अपने व्यक्तिगत शत्रु के बेटे नवाबज़ादे नुस्रतुल्लाह के लिए बल-बूते भर भरसक कोशिश नहीं की थी? क्या इससे यह प्रकट नहीं होता कि वह लोगों के सुख के लिए संघर्ष कर रहा था?

अपनी भौंहें सिकोड़ता और बिस्तरे पर उलटता-पलटता, करवट लेता, एर्गश ने उसाँस ली। वह नुस्रतुल्लाह की दुर्भाग्यपूर्ण नियति को भूल नहीं सकता। "मैं ने उसके लिए जो कुछ कर सकता था, किया," वह कड़ुवाहट से सोचता, "लेकिन यह पर्याप्त न था।" अगर उसने पूरी कोशिश की होती तो शायद उसे वह बचा सकता था। कहा नहीं जा सकता लेकिन संभवत: नुस्रतुल्लाह ने चाय विक्रेता का भेद खोल दिया होता। एर्गश मौक़ा चूक गया और इसकी क़ीमत एक नौजवान को अपनी ज़िन्दगी गँवाकर चुकानी पड़ी।

इंजीनियर को ही लो। अपने मन में एर्गश मानता था कि दोब्रोख़ोतोव ने आश्चर्यजनक योग्यता प्रदर्शित की थी और उसके, एर्गश के अविश्वास, सन्देह और ग़ैर-दोस्ताना लताड़ों के बावजूद बहुत अच्छा काम किया था। "मैंने शायद कई तरह से उसके काम में बाधा ही पहुँचायी है," एर्गश सोचता। "बेशक मैंने बाधा पहुँचायी। लेकिन इससे क्या, मैंने उस का पक्ष भी लिया? वह मेरा फ़र्ज़ था। लेकिन मैं उसका साथी नहीं बना। अनाख़ाँ कहीं अधिक उसके क़रीब और प्रिय है।"

बुख़ार उतर जाने पर और जब उसका दिमाग़ ठीक-ठाक काम करने लगता, वह घण्टों बार-बार अपने काम और जीवन के बारे में सोचा करता। शोषकों के प्रति घृणा जिसे उसने यत्नपूर्वक अपने अन्दर पाल

रखा था और दिल में बचपन से ही अन्तर्निहित असहिष्णुता अर्थात उसकी प्रकृति के दो पक्ष थे। एक पक्ष उपयोगी और आवश्यक था क्योंकि यह काम को आगे बढ़ाने और लोगों को पंक्तिबद्ध करने में मदद करता था। उसकी भर्त्सना ग़ैरवाजिब होगी। लेकिन एक दूसरा, उलटा पक्ष भी था जिसके कारण उससे कई ग़लतियाँ और ख़ामियाँ हुईं।

एर्गश के लिए इसे क़बूल करना आसान न था लेकिन ख़ुद को धोखा देना भी बेकार था। दुरंगापन भी कायरता ही है। उसे कड़ुवी घूँट न समझ पाने के लिए नहीं पीनी पड़ी थी बल्कि इस लिए कि वह इसे जल्दी ध्यान में नहीं ला पाया। हाजिया तक ने ख़ुद उसे इसका अहसास हो, इससे बहुत पहले ही उसके व्यवहार में किसी तरह की गड़बड़ी महसूस कर ली थी।

जब हाजिया के साथ अपनी बहस उसे याद आती, वह ख़ुद को क़ाबू में नहीं रख पाता। उसकी चतुराई ने उसे एक साथ ही ख़ुश भी किया था और पीड़ा भी पहुँचायी थी। दुबारा सोचने पर उसने महसूस किया, उसे ख़ुशी से ज्यादा चोट ही पहुँची थी। एर्गश अपनी मुट्ठियाँ भींचकर दाँत पर दाँत जमाते हुए बड़बड़ाया। वह जानता था, हाजिया उसे प्रेम करती है। वह उसकी बीवी बनेगी। लेकिन क्या इसका मतलब है, उसे अपनी बीवी से सीखना होगा? क्या यह बात इतनी पुरानी हो गयी जब हाजिया एक झेंपू, अनपढ़ लड़की थी? अनाख़ाँ उसके लिए ख़त लिखा करती थी और उसे बस लिफ़ाफ़े पर टिकट चिपकाना भर आता था। अपने से बड़ा होने के नाते एर्गश के प्रति आदर रखने से उसका कुछ नुक़सान नहीं हो जायेगा। इसके अलावा, भला यह कैसा प्रेम हुआ कि उन के बीच हुई हर बातचीत बहस में बदल जाये और लगभग हर मुलाक़ात झगड़े का रूप ले ले? जब उनकी शादी हो जाये तो क्या ऐसा ही होगा?

एर्गश ने महसूस किया, यह भी उसकी ग़लती है और इससे उसे पीड़ा हुई, वह परेशान हो उठा। "मैं सचमुच बीमार हूँ," उस ने सोचा, "मैं पूरी तरह ज़र्द हो रहा हूँ।"

एक दिन एर्गश की माँ ने उससे कहा:

"मेरे बेटे, मेरी बात सुनो और याद रखो, मैं तुम्हारा भला ही चाहती हूँ। तुम्हारे और हाजिया जैसा प्रेम बिरल ही होता है। ऐसे प्रेम के बारे में हम सिर्फ़ परीकथाओं में ही जानते हैं। गाँठ बाँध लो। उसकी क़द्र करो।

इसे मुझ जैसी बुढ़िया के सपने से भी बेहतर बनाओ। तुम एक मर्द हो और पार्टी के सदस्य हो। तुम ऐसा करने में पूरे सक्षम हो। और अब रही दूसरी बात: मेरे बेटे, तुम्हारे दिल में जो कुछ भी इच्छा है, उसे छुपाओ मत, गुप्त मत रखो। अगर और कोई नहीं तो मैं जानती हूँ, तुम क्या छुपा रहे हो – मैं तुम्हारी माँ हूँ, तुम्हें याद रखना चाहिए। लेकिन हाजिया भी जानती है, मेरा यक़ीन करो, बेटे, वह जानती है।"

उस रात एर्गश एक झपकी भी नहीं ले पाया और अपनी माँ की बात को बार-बार दुहराता रहा जैसे वह कोई गीत हो। सुबह में उसने अपनी मां को हाजिया को पकड़ लाने के लिए कहा।

"उसे जल्दी से बुला लाओ, माँ, जल्दी से," उसने कहा। "मुझे उससे बात करनी चाहिये। कल से मैंने उस से बात नहीं की है।"

"वह आयेगी," रिज़वान ने मुस्कुराते हुए कहा। "वह ख़ुद आयेगी। तुम उस से बातें करते अपनी पूरी ज़िन्दगी बिता दोगे, फिर भी वह तुम्हें काफ़ी नहीं लगेगी।"

उसने कपड़े पहने, बिस्तर ठीक किया और दवाओं की बोतलोंवाले स्टूल को घर के बाहर फेंक दिया।

हाजिया हल्के, तेज़ कदम से, जीवन के उल्लास से भरी-पूरी, मास्को में अपने लिए रूसी ढँग की तैयार करायी गयी रेशमी पोशाक में आयी। कमरे में घुसते हुए उसने बुलन्दी से अपने हाथ एर्गश की ओर बढ़ा दिये।

"क्या, आपने बीमारी पर पूरी तरह विजय पा ली है, प्यारे एर्गश?"

"हाँ, हाजिया, मेरा ख़्याल है, मैंने पा ली है," उसने शब्दों को एक अलग मतलब देते हुए जवाब दिया।

वे एक-दूसरे के आलिंगन में समा गये और काफ़ी देर तक अलग नहीं हुए मानो लम्बी जुदाई के बाद मिले हों।

फिर एर्गश ने उसे अपनी बग़ल में बैठा लिया और बनावटी ग़ुस्से से कहा:

"मैं तुम्हें क्यों बुलाना चाहता था, क्या इसके बारे में तुम्हें कोई सन्देह है? जानती हो, जब मैं बीमार था, रोज़ निर्माण-स्थल पर जाना चाहता था। तुम्हें याद है? लेकिन आज, क़सम से कहता हूँ, मुझे घर छोड़ने में डर लग रहा है। मैं नहीं जानता, लोग मुझसे किस तरह मिलेंगे। यह एक नयी जगह की यात्रा की तरह होगा जहाँ मुझे कोई नहीं जानता। मैं चाहता हूँ, तुम मेरे साथ चलो। क्या तुम चलोगी?"

हाजिया ने उसे खोज भरी दृष्टि से देखा।

"क्या आप सच कह रहे हैं?"

"निस्सन्देह। क्या तुम्हें मेरा विश्वास नहीं?"

उमंग में उसने अपना सिर उसके सीने पर रख दिया लेकिन अप्रत्याशित रूप से जवाब दिया:

"ऐसी हालत में, मेरा ख़्याल है, मैं आपको सब कुछ बता दे सकती हूँ – सब कुछ जो मैं सोच रही हूँ। क्या आप चाहते हैं, मैं अभी बता दूं?"

"अगर तुम चाहो," उसने अपने कान खड़े करते हुए कहा।

"क्या आप जानते हैं, मैं क्या योजना बना रही हूँ? मिल का काम जब हम ख़त्म कर लेंगे, मैं दुबारा मास्को जाऊँगी, पढ़ने के लिए। मुझे महसूस होता है, अभी मुझे बहुत कुछ जानना है। क्या आप मुझे जाने देंगे?"

पूर्णरूपेण विस्मयाभिभूत एर्गश कई पल मौन रहा।

"मैंने सोचा था," आख़िरकार उसने कहा, "तुम मुझसे कहोगी मिल का काम पूरा होने के बाद हम शादी करेंगे।"

"हाँ तो... हाँ तो... मेरा मतलब था शादी के बाद! क्या आप मुझे जाने देंगे, एर्गश? मैं सचमुच की छात्रा बनना चाहती हूँ। मैं आप से पीछे नहीं रहना चाहती!"

एर्गश फिर मौन हो गया। लो, यह तो लेने के देने पड़ गये! आख़िर वही हुआ। वह उसे क्या जवाब दे? वह उसे जाने नहीं देना चाहता था। बेशक। क्या उसे यह मालूम है?

एर्गश ने उसकी ठुड्डी ऊपर उठायी और उसका चेहरा अपनी ओर मोड़ा। हाजिया की आँखों में आशा-निराशा थी।

"क्या मुझे पढ़ने की ज़रूरत नहीं? क्या तुमने यह भी सोचा है?" उसने पूछा।

"आपको भी है, एर्गशजान, लेकिन मुझे आपसे ज़्यादा इसकी ज़रूरत है। याद रखिये, यह मेरे लिये बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है। आप ही एकमात्र हैं जो मुझे समझ सकते हैं।"

"एकमात्र," उसने हँसते हुए कहा। तुम्हें समझना मेरे लिये किसी दूसरे के मुक़ाबले ज़्यादा कठिन है..."

"क्या, इसका मतलब है आप मुझे जाने नहीं देंगे?" उसने याचना की।

उसने कोमलता से उस की आँखें चूम लीं और काँपती आवाज़ में कहा:

"ठीक है! मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।" फिर उसने धमकाते हुए कहा: "और फिर मैं पढ़ने के लिये चला जाऊँगा और तुम मेरी प्रतीक्षा करोगी। तब देखा जाएगा, तुम्हें यह कितना अच्छा लगता है।"

उसने एगर्श को इतने ज़ोर से आलिंगनबद्ध कर लिया कि दर्द से उसे झुरझुरी आ गयी।

"अरे तुम तो दम ही निकाल दोगी," वह बुदबुदाया। "मैं अभी भी बीमार हूँ..."

"आप एकदम ठीक हैं, प्यारे," हाजिया ने जवाब दिया। "और आप मेरे हैं – मेरे एर्गश!"

ज़मीन बर्फ़ से पटी थी। तेज़ चुभनेवाली ठंडी हवा बर्फ़ के गर्द उड़ा रही थी। कुहराच्छादित, सर्द सूर्य आकाश से नीचे झाँक रहा था। दिसम्बर का दिन धीरे-धीरे, अनिच्छापूर्वक निकल रहा था।

एर्गश एक शहतूत के पेड़ के पास खड़ा था। उसके गद्देदार जैकिट का बटन ऊपर तक बन्द था, उसने गले में एक स्कार्फ़ लगा रखा था। उसकी फर की टोपी नीचे आँखों तक झुकी थी। लेकिन उसके दिल में गर्मी थी। पुराने शहतूत के पेड़ की पत्रहीन शाखाओं से लटकती, हवा में किसी पाल की तरह लहराती लाल पताका थी जिस पर लिखा था: "याद रहे, हम ने ८ मार्च को मिल चालू करने का वायदा किया है!"

एर्गश निर्माण-स्थल पर अकेला आया था। हाजिया उसे तकनीकी स्कूल के फाटक के पास छोड़ गयी थी। घर पर उसे कपड़े पहनाने में हाजिया को आधा घंटा लगा था, उसने शिशु की तरह उसे कपड़ों से लपेट दिया था। लेकिन यहाँ उसने व्यस्त होने का बहाना किया था। इसे उसने अपने प्रति आदर समझा। वह कार्यालय नहीं गया और इस बात से प्रसन्न था कि रास्ते में उसकी मुलाक़ात यफ़ीम दनीलोविच या दोब्रो-ख़ोतोव से नहीं हुई थी। वह पहले ख़ुद निर्माण-स्थल की एक झाँकी ले लेना चाहता था।

वह नींव की खाई के पास गया। वास्तव में अब इसे नींव की खाई नहीं कहा जा सकता था। उसकी जगह अब ईंट और कंक्रीट की छत तक पूरी की जा चुकी मिल की इमारत थी। निर्माण की मचानें लोगों से भरी थीं। निर्माण-स्थल किसी चीटियों की घाटी-सी लग रही थी। पहली बार एर्गश ने निर्माण-स्थल पर इतने कर्मियों को और ऐसी गतिविधि देखी थी। "यह हुई गति, जिसकी हम चर्चा करते रहे थे! और जाड़ा कोई विघ्न नहीं पैदा कर सका!" उसने बेताब, गरजती आवाज़ों को सुनते हुए सोचा। यह महसूस किया जा सकता था कि लोग आनन्दपूर्वक काम कर रहे हैं।

एर्गश ने हर जगह परिवर्तन देखा। निर्माण-स्थल पर एक भी रोड़ा-पत्थर न था, सड़कों पर एक भी गड्ढ़ा न था। क्या जाड़े ने उन्हें समतल कर दिया था? नहीं, उन्हें कर्मियों ने किया था, अच्छे प्रबन्ध का फल था। सड़कों पर एर्गश को ट्रेक्टरों के झिगों और ट्रक के टायरों के चिह्न दिखाई दिये। लकड़ी के पहियों की लकीरें गहरी नहीं थीं और पता चलता था कि कुछेक गाड़ियों का ही इस्तेमाल किया गया था। परियोजना को मशीनों से सज्जित कर दिया गया था। एर्गश को पतझड़ में अकेले, टूटे-फूटे फ़ोर्डसन ट्रेक्टर के साथ हुई दुर्घटना की याद आ गयी। अब उसकी जगह कैटरपिलर ट्रेक्टर ने ले ली थी। उसे चलाने के लिए योग्य आदमी भी प्राप्त कर लिया गया था। यह वास्तविक शक्ति थी, इसे इनकार नहीं किया जा सकता था। और इसे काम में लाया गया था! सुन्दर काम! ट्रेलरयुक्त एक बड़ी ट्रक आ रही थी। उस पर लकड़ियाँ लदी थीं। ड्राइवर एक अपरिचित नौजवान था जिसकी हलकी लट टोपी के नीचे से ललाट पर लटक रही थी। वह केबिन से उछलकर बाहर आया और ज़ोर से बोला:

"अरे ग्रामीण भाई! क्या तुम्हारे पास सिगरेट है?"

"सिर्फ़ स्वदेशी तम्बाकू," एर्गश ने ट्रक के पास जाकर, अपनी जेब से तम्बाकू की थैली निकालते हुए जवाब दिया।

"ओह, दुनिया में सब से अच्छी," तम्बाकू की थैली लेते हुए ड्राइवर ने कहा। "क्यों, ठंड लग रही है?"

"तुम ख़ुद महसूस कर सकते हो।"

"तो फिर मटरगश्ती क्यों कर रहे हो? काम करो और तुरंत ही गर्मी महसूस करोगे। यहाँ हमारे पास बहुत काम है, तुम्हें देने के लिये काफ़ी।"

एर्गश ने चिन्तापूर्वक ट्रक की ओर सिर हिलाया।

"तुम्हें पूरा विश्वास है, तुम्हारी ट्रक जम नहीं जायेगी? तुमने मोटर बन्द कर दिया है..."

"मोटर? जम जायेगी?" ड्राइवर ने सिगरेट का कोना दाँत से काटकर थूक दिया। "फ़िक्र न करो, जहाँ मेरी मर्ज़ी होगी, यह आसानी से घरघरा उठेगी। इसे पाला कहते हो? यह कुछ भी नहीं है। आज जैसे दिन में तो हिम-विवर में डुबकी लगायी जा सकती है!"

उन्होंने एक ही तीली से अपनी सिगरटें जलायीं।

"तो फिर रुकावट क्या है?" एर्गश ने ड्राइवर की मज़बूत क़द-काठी की ओर देखते हुए कहा। "बड़ा नाला अभी तक नहीं जमा है। धारा तेज़ है और तुम्हें हिम-विवर की भी ज़रूरत नहीं। बिना आगे-पीछे किये डुबकी मार लो।"

"वहाँ कोई स्नानागार नहीं," ड्राइवर ने खेद के साथ कहा। "उसके लिए ठीक बग़ल में स्नानागार होना चाहिए–गर्म-गर्म पानी और भापवाला। अगर वैसा होता तो मैं डुबकी लगानेवाला पहला आदमी होता!"

ड्राइवर ने अपनी जीभ चटकाई और आवाज़ में हँसी लाते हुए हठात आगे कहा:

"यहाँ एक आदमी है जिसे तुम्हारे इस नाले में डुबकी लगवानी चाहिए। यह होगी कोई बात!"

"कौन आदमी?" एर्गश ने आश्चर्य से पूछा।

"स्थानीय चीफ़!" ड्राइवर ने अपनी सिगरेट की राख झाड़ते हुए जवाब दिया। "उसका कोई ऐसा नाम है जिसे मैं कभी याद नहीं रख पाता। यह कुछ-कुछ रीगाश जैसा है।"

एर्गश हँस पड़ा लेकिन बिना किसी भाव के पूछा:

"उसने ऐसा क्या किया कि उसे डुबकी लगवानी चाहिए?"

"वह बड़ा गर्म मिज़ाज है। मुझे बताया गया, वह न ख़ुद को छोड़ता है न दूसरे लोगों को। वह किसी चीज़ को योजनाबद्ध ढंग से निबटाने के बजाय, इस पर सिर के बल पिल पड़ता है! वह घर में लगी आग की तरह हौला उठता है। तुम ख़ुद जानते हो, लोग इसे पसन्द नहीं करते हैं। काम करनेवाला क्या चाहता है? वह चाहता है, लोग उसके काम की क़द्र करें। वह तुम्हारी क़द्र करेगा, अगर तुम उसकी करोगे। वह तुम्हारे उधारखाते में नहीं रहेगा, तुम इस पर शर्त लगा सकते हो!

लेकिन यह चीफ़ इस क़दर हद से बाहर चला गया कि ख़ुद बीमार पड़ गया और उठ नहीं सका। उसने यहाँ ऐसा गड़बड़झाला किया..."

"कैसा गड़बड़झाला?"

"मैं यहाँ देखने के लिए नहीं था, इस लिए तुम्हें ठीक-ठीक नहीं बता सकता। लेकिन छोकरे कहते हैं, उन्होंने छह: हफ़्ते तक निरुद्देश्य काम किया। उन्होंने बालू पर एक दीवार बनायी थी।" ड्राइवर ने अपनी टोपी सिर के पीछे कर ली। "फिर भी वह नौजवान और बुद्धिमान मालूम पड़ता है। किसी से भी बात करो, उसके बीमार होने से उसे खेद है। बस हमारे साथ यहाँ इसी तरह चल रहा है।"

एर्गश ने अपना सिर लटका लिया। वह अत्यन्त प्रभावित था।

ड्राइवर स्पष्ट रूप से लेनिनग्राद का था। उसकी ट्रक, निस्सन्देह ख़ल्तूरिन कारख़ाने की थी। यह एक अच्छी मशीन थी – एक प्रिय उपहार। लेकिन ड्राइवर कहीं ज़्यादा पसन्द के क़ाबिल था। बात करने के लहजे से वह साइबेरिया का जन्मा मालूम पड़ता। लेकिन चरित्र से एक सच्चा सर्वहारा, पेत्रोग्राद का मज़दूर।

"हाँ, ठीक है, हम ग़लतियाँ करके सीखते हैं," एर्गश ने कहा। "तुमने ख़ुद कहा, वह नौजवान है।"

"सीखना – हम उसे सिखायेंगे!" ड्राइवर ने उल्लासपूर्वक कहा। "उसे बस सीखने की इच्छा भर करनी है।" हठात आँखें चमकाते हुए, उसने आगे कहा: "अरे, दोस्त, कया तुम्हीं वह लड़के तो नहीं जिस के बारे में हम बातें कर रहे हैं?"

"हाँ।"

ड्राइवर ने एर्गश के कंधे पर धौल जमाई।

"तुम झूठ बोल रहे हो!"

"मैं झूठ क्यों बोलूँगा? मैं ही एर्गश सुल्तानोव हूँ।"

ड्राइवर ने सिगरेट का बचा हिस्सा थूक दिया।

"ऐसा कौन सोच सकता था! ख़ैर, अब हमारी मुलाक़ात हो चुकी है। बुरा महसूस कर रहे हो, चीफ़? जो मैंने कहा, क्या यह सच नहीं था? बताओ, क्या यह एकदम बकवास था?"

"नहीं, यह सब सच था। एक आदमी तो ग़लती कर सकता है

लेकिन जनता कभी ग़लती नहीं करती। मुझसे सीधे-सीधे कहने के लिए धन्यवाद।"

"चालाकी छोड़ो। कोई भी उल्टे ढंग से रगड़ाई पसन्द नहीं करता," ड्राइवर ने आँख मारते हुए कहा।

"वही एक चीज़ है जिस में मैं माहिर नहीं," एर्गेश ने जवाब दिया। "लेकिन उल्टी रगड़ाई मुझे भी आती है।"

दोनों एक दूसरे को भिन्न आँखों से देखते प्रतीत हुए फिर ज़ोरदार ढंग से हाथ मिलाते हुए ठहाका मारकर हँस पड़े।

मज़दूरों का एक दल आया और बिना हो-हल्ला के ट्रक से लकड़ी उतारने लगा। एर्गेश ने देखा सब आदमी के हाथ में दस्ताने थे और उन्होंने नये रूई भरे जैकिट पहन रखे थे।

उन्हें एक के बाद एक तख़्ती उठाकर ढेर लगाते देखकर एर्गेश फुरफुराया, अपने ठंडे हाथों पर थूककर ट्रक के पास दौड़ गया और जाकर एक तख़्ती का किनारा थाम लिया।

"मेरी मदद करो और हम गर्मा जायेंगे!" उसने चीखकर ड्राइवर से कहा।

"खींचो! एक, दो!" ड्राइवर ने ख़ुशी-ख़ुशी तख़्ती का दूसरा छोर खींचते हुए जवाब दिया।

उन्होंने एक लम्बी और भारी-सी तख़्ती खींच ली और दौड़ते हुए ढेर तक ले गये जो ट्रक से दस क़दम दूर था।

लेकिन जब एर्गेश सीधा खड़ा होकर ट्रक की ओर दौड़ना चाहता था, एक आदमी ने चेहरे पर परेशानी और नाराज़गी के भाव लाते हुए, उसका रास्ता रोक लिया। एर्गेश छैला नारमत को एकबारगी पहचान न पाया।

"रुक जाइये, चीफ़, रुक जाइये!" नारमत ने मानो बुरा मानते हुए दृढ़ निश्चय के साथ कहा। "यह आप का काम नहीं।"

एर्गेश ने विनोदपूर्वक उसके सीने में टहोका लगाया।

"तुम कहाँ से आ टपके? तुम मुझ पर क्यों हुक्म जता रहे हो?"

"यहाँ का इन-चार्ज मैं हूँ! यह मेरी ज़िम्मेवारी है। आपके पास अपना ही काम काफ़ी है। मैं आपके काम में दख़ल नहीं देता..."

"वह ठीक कहता है, चीफ़," ड्राइवर ने कहा। "तुम अपने काम के बारे में सोचो – अपना बोझ हल्का करो।"

असहाय मुद्रा से एर्गश ने नारमत की ओर उत्सुकता से देखा।

"तुम ख़ुद को यहाँ का इन-चार्ज कह रहे हो, भाई नारमत? मुझे नहीं मालूम था, मुझे खेद है। मैं यह सुनकर ख़ुश हूँ। काम करते रहो। तुम एक अच्छे चीफ़ हो! मुझे संदेह है कि मैं इससे बेहतर कर पाता!"

"आप हँसी उड़ा रहे हैं, भाई एर्गश।"

"मुझे तुम्हारे लिए ख़ुशी है, भाई नारमत!" एर्गश ने विरोध किया। "बहन नज़ाकत कैसी है? क्या वह ठीक है?"

"आइये और ख़ुद देख लीजिये।" नारमत ने ललकारते हुए कहा।

"मैं आऊँगा। निश्चय रूप से। सच पूछो तो आज ही।"

"स्वागत है," नारमत ने झुककर कहा।

मज़दूरों ने एर्गश को घेर लिया। उन्होंने समवेत स्वर में उसके और उसकी माँ के स्वास्थ्य के बारे में पूछा।

अपने घुंडीदार कील जड़े जूते ज़ोर-ज़ोर से ज़मीन पर खटखटाता मामाजान कंक्रीट मिक्सर के पास से चीखता दौड़ पड़ा:

"बेटा, बेटा!"

यफ़ीम दनीलोविच और दोब्रोख़ोतोव तेज़ी से उसके पीछे-पीछे आये।

"सुनो, उसने क्या कहा? बेटा!" यफ़ीम दनीलोविच ने इंजीनियर से कहा। "बूढा ठीक कहता है, एर्गश नैमन्चा का सपूत है। प्यरा सपूत!"
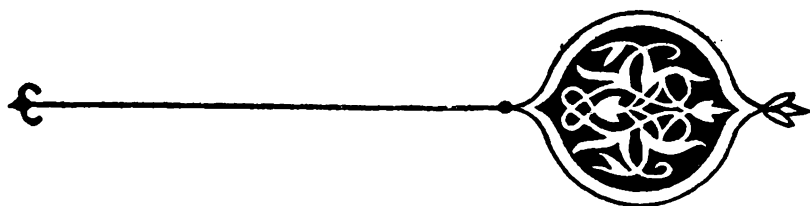
उपसंहार

वसन्त में नैमन्चा की गलियों में अगम्य कीचड़ भर जाता था। चमड़े के बलाई जूते डाल कर लोग बाहर जाने का ख़तरा मोल नहीं लेते थे। एक दीवार से दूसरी दीवार तक भरे कीचड़ में बूटों का धंस कर रह जाना मुश्किल न था। गहरे गड्ढों में गाड़ियाँ फँस जातीं और सुबह से शाम तक ड्राइवरों की चीख और गालियाँ शांत नहीं पड़तीं। वसन्त में जब बर्फ़

गलने लगती, ड्राइवर और पैदल चलनेवाले आम तौर से नैमन्चा के किनारे-किनारे चक्कर काटकर जाने की कोशिश करते थे।

लेकिन इस साल पहली बार जुलाहों के इस पुराने मुहल्ले में पत्थर बिछी सड़क पर पहिये गड़गड़ा रहे थे। एक गली से होकर कम चौड़ाई-वाली पत्थर की सड़क चली गयी थी। कोई लम्बा आदमी इसे एक लम्बे डग भरकर पार कर सकता था लेकिन यह साफ़ और सख़्त थी और वर्षा के बाद चमक रही थी। यह सड़क क़ब्रगाह की ओर, उस जगह को पार करती हुई जिसका नाम कभी नयी आर्थिक नीतिवाले क़ुद्रतुल्लाह के वर्कशॉप पर था, चली गयी थी। यह कल की ही बात लगती जब बाय मुहल्ले पर हुक्म जताने आया हो। लेकिन अब वह क़रीब-क़रीब विस्मृत हो चुका था। पिछले जाड़े में मानो किसी समझौते के अनुसार हर कोई इस सड़क को, नैमन्चा के लिए असामान्य नाम से—मिल मार्ग के नाम से पुकारने लगा।

वसन्त ज़रा जल्दी आ गया और मौसम सुहावना था, लेकिन आठ मार्च उन विरल प्रचण्ड दिनों में एक साबित हुआ। सवेरे से ही श्वेत तुषारलव दीवारों, छतों और पेड़ों की शाखाओं पर जमने लगा। रुक-रुक कर मनहूस बूँदा-बाँदी हो जाती। नालों से ठिठुरन भरी हवा आती। लेकिन यह सब मिलकर भी लोगों का हतोत्साह करने में असफल रहे। लोगों की क़तारों-क़तार भीड़ मध्याह्न में मिल मार्ग पर नगर के सभी हिस्सों से उमड़ पड़ी।

उन्होंने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन रखे थे—उनके चोग़ों और पोशाकों पर लाल फीते लगे थे। लड़कियों ने अपने बाल में ताज़ा फूल लगा रखे थे। आगे बढ़ते लोग नये-पुराने गीत गाते जाते। चारों ओर हँसी-ख़ुशी थी और आम राय थी कि नैमन्चा की सभी गलियों की फ़र्शबारी कर देनी चाहिए, यह नगर का केंद्र बन गया था।

भीड़ मिल की दीर्घकाय ईंट की इमारत के सामने जमा हो रही थी। वर्षा में मिल की इमारत पके अनार की तरह गहरे लाल रंग की लग रही थी। सिर्फ़ आगे की दीवार के एक छोटे-से हिस्से को पलस्तर करके इस तरह सफ़ेदी की गयी थी कि वह अच्छी तरह धुलवाकर, हल्का नील दिये कपड़े जैसी दिखाई दे रही थी। इस रंग का चुनाव महिला जुलाहिनों

ने किया था। सफ़ेद रंग के फाटक के आर-पार चटख लाल रंग का एक फीता लगा था।

ताशक़न्द से आये अतिथि यहाँ थे। भाषण हुए। नैमन्चा के लोगों को मुबारकबाद दिया गया। फिर चुपचाप धीरे-धीरे, फाटक के पास अनाख़ाँ पहुँची। कभी त्योरी बदलती, कभी मुस्कुराती। एर्गश ने उसे दफ़्तर में काम आनेवाली कैंची दी और अनाख़ाँ ने मिल व लोगों की ओर झुकते हुए, जिन्होंने इसका निर्माण किया था, फीते को बीच से कैंची से काट डाला। यफ़ीम दनीलोविच और दोब्रोख़ोतोव ने लोहे की चटखनी पीछे खिसकाकर फाटक को खोल दिया। सब की आँखों के सामने कुशादा, रोशन इमारत के अन्दर अस्पष्ट दमकते बृहदाकार धातु के करघे खड़े थे। रेलवे वर्कशॉप में इंजनों की तरह प्रभावशाली और शक्तिशाली करघे क़तारों में खड़े थे।

और लोगों ने देखा, जिस पल अनाख़ाँ फीता काट रही थी, कुहरा और वर्षा से जूझता सूर्य झाँक उठा था। अकस्मात मिल की नीली-सफ़ेद दीवार इस तरह चमक उठी जैसे रेशम की बनी हो। आसमान में एक लघु इन्द्रधनुष दिखाई देने लगा। आसमान साफ़ होकर ऊँचा उठ गया और थोड़ी उष्मा बढ़ गयी।

* * *

मिल के सामने चौक पर दूर्वादल पूरित एक छोटी-सी, आयताकार क़ब्र है। इसके चारों ओर घुटने तक ऊँचा लोहे का बाड़ा है।

क़ब्र पर एक काले संगमरमर की पट्टी पड़ी है। और पट्टी पर सिर्फ़ एक नाम अंकित है: जुराखाँ। इस पर जन्म और मृत्यु की तारीख़ तक नहीं।

लेकिन अब तीस वर्ष हो गये जब से लोग वसन्त के शुरू से लेकर पतझड़ ख़त्म होने तक इस एकाकी क़ब्र पर फूल लाते रहे हैं।

फूल तक़रीबन रोज़ लाये जाते हैं।

और वे काली पट्टी पर कभी सूख नहीं पाते।
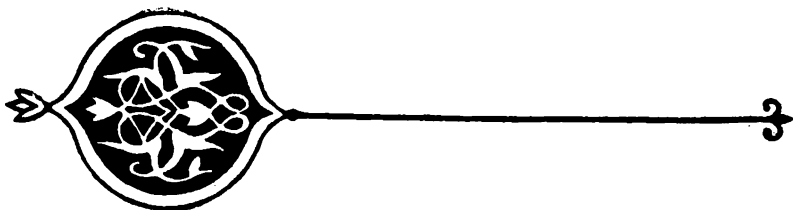
अस्क़द मुख़्तार और उनका उपन्यास "चिंगारी"

किसी युग का नायक होना – यही सर्वोच्च पुरस्कार है...
जान लो, प्याली की दीवारों पर चमकती इन बूंदों ने
किसी विशाल झरने की सांसें छुपा रखी हैं।

अस्क़द मुख़्तार की आरम्भिक कविता "समर्पण" से उद्धृत इन पंक्तियों में लेखक की रचना-प्रक्रिया की दिशा बख़ूबी उजागर हो गयी है।

अस्क़द मुख़्तार सही एवं व्यापक अर्थों में आधुनिक युग के कवि हैं। उनकी कविताओं, काव्यों, कहानियों और उपन्यासों में हमें सोवियत उज़्बेकिस्तान के जीवन के दर्शन होते हैं। "धरती का चेहरा" बदल देनेवाले कठोर परिश्रम में रत, उच्चकोटि की मानवोचित शूरता से परिपूर्ण उज़्बेकी लोगों के जीवन के दर्शन उन नाटक सदृश घटनाओं और संघर्षों में होते हैं, जो इस महान ऐतिहासिक प्रगति में अवश्यंभावी हैं।

१९४८ में उनका पहला काव्य "फ़ौलाद-निर्माता" प्रकाशित हुआ। अभी एक पूर्ण परिपक्वता परिलसित नहीं कर पानेवाली इस कृति में अ॰ मुख़्तार ने मनुष्य के हाथों की उस शक्ति का गुणगाण किया था, जिसने युद्ध के वर्षों में "तपती बालू के हृदयस्थल" में बेगोवात – "फ़ौलाद बनानेवालों के नगर" का निर्माण किया था। इस नगर के निर्माण की कहानी वहाँ के लोगों के जीवन में आये गहनतम परिवर्तनों की कहानी भी बन गयी।

अस्क़द मुख़्तार की श्रेष्ठतम कविताएँ सीधे-सादे ऐसे मेहनतकश लोगों के बारे में हैं, जिन पर अक्सर दृष्टि नहीं पड़ पाती। इस तरह, उनके विलक्षण गीतिकाव्य हमें मिस्तरी नियाज, मोची हैदर अमकि जैसे लोगों के बारे में बताते हैं...

उनका काव्य "महायात्रा" (१९४९-१९५०) मरुस्थल से संघर्ष और

उस पर विजय के सपने को साकार करने की गाथा है जिसे पढ़कर पाठक भावविभोर हो उठता है। नेकी और बदी के संघर्ष को जो प्राचीन काल से पूर्वी काव्य की परम्परा रहा है, अर्स्लान और सलीम के संघर्ष के रूप में एक अप्रत्याशित नयी अभिव्यक्ति मिली है। अर्स्लान द्वारा परिश्रम से अर्जित ख्याति से सलीम को द्वेष होता है, क्योंकि बंजर पड़ी ज़मीन में कपास पैदा करने का काम उसे नहीं, अर्स्लान को सौंपा गया था...

मेहनतकशों के जीवन में निरंतर इतनी रुचि लेते रहने में लेखक के जीवनचरित की भी कम महत्त्वपूर्ण भूमिका नहीं रही है।

अस्क़द मुख़्तार का जन्म सन् १९२० में फ़र्ग़ाना के एक रेलवे-कर्मचारी के परिवार में हुआ था। वे सीधे-सादे मेहनतकशों के बीच पलकर बड़े हुए।

और विश्वविद्यालय की पढ़ाई समाप्त करने तथा अंदिजान शैक्षणिक संस्थान में उज़्बेकी साहित्य के संकाय-अध्यक्ष के पद पर कार्य कर चुकने के बाद अस्क़द मुख़्तार ने जब पूर्णकालिक साहित्य-सेवा शुरू की तो फ़ौलाद बनानेवाले, कपास पैदा करनेवाले, उदात्तकर्मी, कुशल कारीगर व मिस्तरी उनके लेखन-पात्र बने। और यह कोई संयोग न था। यह उनका अपने घर वापस लौटना था, जनता के श्रमिक और रचनात्मक जीवन के अक्षयस्रोत में कवि के रूप में मिल जाना था।

मास्को के "सोवियत लेखक" प्रकाशन गृह द्वारा सन् १९५१ में प्रकाशित उनके कविता-संग्रह के प्राक्कथन में कहा गया था, "अस्क़द मुख़्तार ने साहित्यसृजन की अपनी यात्रा अभी शुरू ही की है।" और तब, ऐसा कहना न्यायसंगत भी था।

लेखक की रचना शैली धीरे-धीरे परिपक्व होती गयी।

इसका सबसे अच्छा प्रमाण सन् १९५५ में पहली बार प्रकाशित उपन्यास "चिंगारी" है। इसे तभी काफ़ी लोकप्रियता प्राप्त हो गयी थी।

इस उपन्यास में उस जीवन के दर्शन हुए, जिससे रूसी पाठक अच्छी तरह परिचित न थे। उज़्बेकिस्तान में सोवियत सत्ता के शुरू के वर्षों में छुपे संघर्ष का तनाव पूरे ज़ोर पर था। नये जीवन के दुश्मनों की शक्तियाँ अक्सर, यत्र-तत्र बचे-खुचे बसमाचियों के सशस्त्र गिरोहों के सहारे क्रान्ति द्वारा जनता के जीवन में, उसकी चेतना में लायी जा रही नयी लहर का मार्ग अवरुद्ध करने की कोशिश कर रही थीं।

घटना-काल के आधार पर अ० मुख़्तार के उपन्यास और युक्रेनी लेखक

एम. स्तेलमख़ की प्रसिद्ध कृति "जनता का ख़ून पानी नहीं होता" में काफ़ी समानता है। इन पुस्तकों के प्रकाशित होने के काफ़ी समय पहले, साहित्य सृजन शुरू कर रहे युवा मि॰ शोलोख़ोव ने भी "दोन की कहानियाँ" (१६२३-१६२६) लगभग इसी काल के बारे में लिखा था।

दोन, यूक्रेन, उज़्बेकिस्तान... इनके बीच में हज़ारों किलोमीटर की दूरी है, ऐतिहासिक प्रारब्ध, जातीय चरित्र, रहन-सहन, आदि में काफ़ी असमानताएँ हैं।

पर फिर भी कुछ ऐसी समानताएं हैं जो इतनी भिन्न शैलियों और भिन्न-भिन्न जीवन बितानेवाले लेखकों को एक सूत्र में बाँध देती हैं। यह ऐतिहासिक प्रक्रिया की समझ, क्रांति से उत्पन्न नयी दुनिया को अपनी दुनिया के समान समझने की समानताएं हैं।

वस्तुत: इसी में उस मूलभूत आंतरिक नैकट्य की अभिव्यक्ति होती है जो सोवियत लेखकों को एक सूत्र में बांधकर समाजवादी यथार्थवाद के सामान्य रचनात्मक मंच पर ला खड़ा करता है।

लेखक का कौशल, उसकी प्रतिभा की शक्ति, अपने युग के अन्तर्द्वन्द्वों की तह में पहुँच पाने की योग्यता, अक्सर उसके पात्रों के चयन में परिलक्षित होती है।

यह विदित है कि क्रांतियों के इतिहास में कई सदियों से परिपक्व हो रहे अन्तर्विरोध उभर कर सामने आ जाते हैं। इन अन्तर्विरोधों में से एक है – अधिकारच्युत और ग़ुलामी में जकड़ी पूर्वी स्त्री का भाग्य।

अस्क़द मुख़्तार ने अपना उपन्यास उन उज़्बेकी स्त्रियों को ही समर्पित किया है जो साहस करके सदियों पुराने रीति-रिवाजों और परम्पराओं के ख़िलाफ़ उठ खड़ी हुईं। क्रांति ने उनके लिए एक नयी अर्थपूर्ण और मेहनतभरी ज़िन्दगी का मार्ग प्रशस्त किया।

पुराने ताशक़ंद के कारीगरों और जुलाहों के इलाक़े – नैमन्चा का चित्रण हमें न केवल घटनास्थल पर ला खड़ा करता है, उस समय के नयी आर्थिक नीति के समय के प्रामाणिक लक्षणों से प्रभावशाली व कलात्मक ढंग से परिचय कराता है बल्कि उस अन्तर्द्वन्द्व की प्रभावशाली शक्ति और जातीय विशेषता से भी, जो उपन्यास के घटनाक्रम का निरूपण करती है।

अस्क़द मुख़्तार ने मज़दूर स्त्रियों का, उस समय पनप रहे "नेपमेन" (नयी आर्थिक नीति का फ़ायदा उठानेवाले) बाय क़ुद्रतुल्लाह ख़्वाजा

के वर्कशॉप में उनके कठिन परिश्रम का, धूलभरे गन्दे इलाक़े में उनके ग़रीब घरों का चित्रण इस तरह से किया है, जैसे वे इन सब से बचपन से ही परिचित हों, उनके बहुत निकट रहे हों।

इसी कारण उपन्यास में प्रगीतात्मक लय सुनाई देती है, जो न केवल सीधे विषयांतरकरण ग्रौर ख़्यालों में ही ज़ाहिर होती है, बल्कि लेखक के लहजे ग्रौर स्त्री पात्रों के प्रति उसके व्यवहार में भी।

लेखक उनसे प्यार करता है, उनके प्रति सहानुभूति दिखाता है ग्रौर परंजी में रहनेवाली इन स्त्रियों पर गर्व करता है, जिन्होंने ग्रपना मुंह उघाड़कर नयी ज़िन्दगी का स्वागत करने की हिम्मत की है।

केवल लेखक के सच्चे मानवोचित व्यवहार मात्र से, उसके दृष्टिकोण मात्र से ही क्रांतिकारी कार्यक्रम की कायापलट कर देने की महान शक्ति का पता चल जाता है।

ग्रस्क़द मुख़्तार का उपन्यास कई नाटक सदृश संघर्षों से परिपूर्ण है। लेखक ने दिखाया है कि किस प्रकार नये जीवन के प्रति उत्साह जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करता है: ग्रार्थिक पक्ष (सहकारी संघों की स्थापना, बुनाई-मिल का निर्माण, निजी व्यापार की समाप्ति, उज़्बेक श्रमिक वर्ग का जन्म, मज़बूत समाजवादी शक्ति का उद्भव), नैतिक पक्ष (स्त्रियों को स्वतंत्रता दिलाने, उन्हें समान ग्रधिकार दिलाने, उन्हें ग्रपनी मानवोचित गरिमा के प्रति जागरूक बनाने, धार्मिक ग्रंधविश्वास को दूर करने ग्रादि के लिए संघर्ष ग्रौर रूढ़िवादियों तथा धर्मान्ध लोगों के विरुद्ध संघर्ष), रहन-सहन का पक्ष...

उपन्यास के सभी पात्रों को स्पष्टतः दो दलों में बांटा जा सकता है। एक ग्रोर नैमन्चा के मेहनतकश लोग हैं, उज़्बेक स्त्रियां ग्रनाख़ाँ, जुराख़ाँ, हाजिया, उनके क्रांतिकारी मित्र, बोल्शेविक यफ़ीम दनीलोविच, एर्गश, ग़ैरपार्टीवाला इंजीनियर दोब्रोख़ोतोव, ग्रौर दूसरी ग्रोर–बाय, ईशान, नेपमेन क़ुद्रतुल्लाह ख़्वाजा, शिक्षक नईमी, जासूस चाय-विक्रेता ग्रौर ग्रन्य।

लेखक ने ग्रपने पात्रों के जीवन के व्यक्तिगत पक्ष ग्रौर उसकी विशेषताएं, उनके सामाजिक जीवन के ढांचे ग्रौर उनकी मानसिक स्थिति को बड़े युक्तियुक्त ढंग से उभारा है। उनकी गतिविधियों ग्रौर व्यवहार पर इन बातों का स्पष्ट प्रभाव है। जुराख़ाँ जो लेनिन से मिलकर हर्षित हुई है एक नारी-योद्धा है। उसने मास्को में परंजी छोड़ दी थी। वहाँ उसने उस पथ

पर पहला क़दम रखा था, जिस पर वह अपनी दुःखद मृत्यु तक चलती रही। उसके चरित्र में नारी-सुलभ गुणों और सौम्यता के साथ-साथ, कई वर्षों के पार्टी कार्य और सरकारी कामकाज के अनुभव से प्राप्त अधिकार प्रवणता, दृढ़प्रतिज्ञा और धैर्य का सामंजस्य है। लोगों में आतंक फैलानेवाले शिक्षक नईमी को रोकते समय वह व्यंग्यपरायण और कटु हो जाती तो अपनी भीरु "नायिकाओं" के प्रति अतिधैर्यवान और शुभाकांक्षी।

अनाख़ाँ को अपने अतीत से नाता तोड़ने में ज्यादा मुश्किल का सामना करना पड़ा। पर एक बार आगे क़दम बढ़ाने के बाद उसने मुड़कर पीछे नहीं देखा। उसे किसी तरह भी नहीं डराया जा सका – न धमकियों से, न हत्या के प्रयत्नों से ही।

हंसमुख और मज़ाक़पसन्द नज़ाकत में नये जीवन के प्रति एक साथ ही उत्साह भी है, भय भी और भीरुता भी। एक ओर लोगों का रुख़ देखकर वह परंजी उतारकर फेंक सकती थी तो दूसरी ओर ईशान द्वारा डराये जाने पर उसे फिर से पहन भी सकती थी। वह औरों की तुलना में ज्यादा ख़ुशहाल ज़िन्दगी बसर कर रही थी, उसे वैसे दुःख कभी नहीं झेलने पड़े जैसे कि अनाख़ाँ, मिस्तरी साबिर की विधवा को झेलने पड़े: बरबादी, क्रांति के संघर्ष में पति की मृत्यु, आदि।

बुढ़िया अन्ज़िरत, समय और धर्म द्वारा परम्परागत रूप से उचित माने जानेवाले अपने भाग्यवादी दृष्टिकोण और फ़र्मानिबरदारी के कारण, सबसे ज़्यादा मुश्किल से अपने अतीत से छुटकारा पा सकी।

इस प्रकार अस्क़द मुख़्तार जीवन की विशेष परिस्थितियों और व्यक्तिगत मानसिक स्थिति की सहायता से अपने स्त्री पात्रों का आचरण पुरानी दुनिया की शक्तियों से डरकर किये जा रहे संघर्ष की नाटक सदृश परिस्थितियों में स्पष्ट करते हैं।

जातीय ढांचे और समाजवादी रूप-विधान की धारणाओं की अखंडता पूर्णरूप से चरित्र और प्रतिरूप में ही ज़ाहिर होती है। जातीय जीवन की विषशेताएं, रहन-सहन, प्रकृति की विशेषताएं, इत्यादि, पात्रों के चरित्र और उनकी मानसिक स्थिति में ही स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आते हैं। उन अद्वितीय जातीय विशेषताओं को जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण चारित्रिक गुणों और जीवन में आचरण का निर्धारण करती हैं, स्पष्ट रूप से महसूस करने के लिए, "चिंगारी" के स्त्रीपात्रों – अनाख़ाँ, जुराख़ाँ, हाजिया,

अंज़िरत आदि की तुलना "धीरे बहे दोन" और "कांटों भरी ज़िन्दगी" के स्त्रीपात्रों से करना ही काफ़ी होगा।

अस्क़द मुख़्तार की विशिष्टता सबसे पहले उनकी अविस्मरणीय जातीय चरित्रों की सृजन-प्रतिभा में ज़ाहिर होती है, जो ऐतिहासिक अहमन्यता और उस सन्दर्भानुरूप वातावरण से प्रतिबद्ध हैं, जिसमें वे पले थे।

उपन्यास पढ़ते समय यह बात ज़रूर हमारा ध्यान खींच लेती है कि किस युक्तिपूर्ण ढंग से अस्क़द मुख़्तार ने उज़्बेक स्त्री की वर्तमान मानसिक स्थिति की विशेषताओं के ऐतिहासक कारणों का विवेचन किया है।

वास्तव में उपन्यास के मुख्य स्त्रीपात्रों, ज़ुराख़ाँ और अनाख़ाँ ने उन बेड़ियों को तोड़ दिया, जिनमें वे सदियों से जकड़ी हुई थीं। इसीलिए उन अप्रधान और गौण पात्रों, उन घटनाओं और दृश्यों का महत्व और ज़्यादा बढ़ जाता है, जिनमें हमें स्त्रियां झुंडों और भीड़ों में दिखाई देती हैं।

स्त्रियों की एक सभा में शिक्षक नईमी "क्रांतिकारी" दृष्टिकोण से बिलकुल उचित-सा लगनेवाला भाषण दे रहा था। वह उन्हें सहकारी समितियों में शामिल होने, परंजी छोड़ने, बच्चों को शिशुगृहों में देने, और पति के मना करने पर न सुनने को कहता है।

इस भड़कानेवाले के भाषण का परिणाम यह हुआ कि स्त्रियाँ एक एक करके सभा से उठकर जाने लगीं। उस बात को बिलकुल ही भुला दिया गया था, जो स्त्री को मां के दूध के साथ ही सिखा दिया जाता है: पति का आदर करना, परिवार से प्रेम रखना... ज़ुराख़ाँ बड़ी मुश्किल से उन्हें रोककर शान्त कर पाती है।

और इस घटना के बाद हम इन्हीं स्त्रियों को मिल के निर्माण-स्थल पर देखते हैं, देखते हैं कि वे सब किस प्रकार आवेश में आकर एक साथ परंजी उतारकर आग में झोंक देती हैं और अपनी हमदर्द व हिमायती ज़ुराख़ाँ के प्रति उनका यह प्रेम ही था जिसके वशीभूत हो वे ज़ुराख़ाँ को बरबाद करनेवाली पुरानी शक्तियों से बदला लेती हैं।

औरत को छोटी-सी उम्र से ही बिना चूं-चपड़ किये पति और पिता की आज्ञा मानना सिखाया जाता था। औरत को नाम लेकर नहीं पुकारा जाता था। और इन्हीं औरतों ने देखा कि किस तरह ज़ुराख़ाँ ने शिक्षक नईमी को अचानक बीच सें रोककर गुस्से से कहा, "बैठ जाइये।" "और न आसमान फटा, न मर्द ने उसे जान से मारा... पर फिर भी बहुत डर लगा।"

यह एक छोटी-सी घटना है। पर लेखक ने इसके माध्यम से कितनी महत्वपूर्ण बात कही है!

लेखक ने मुख्य पात्र अनाख़ाँ के चरित्र का विकास बड़े कलात्मक ढंग से दिखाया है। उसका बाह्य जीवन पटल पूर्णता के स्पंदनों और अनुभवों की मनोविज्ञानी गहराई से परिपूर्ण होने लगता है।

रेलवे-वर्कशॉप में काम करते समय उसके पति साबिर का परिचय बोल्शेविकों से हो जाता है। अपनी पत्नी के प्रति उसका व्यवहार बिलकुल दूसरा ही हो जाता है, वह उसके साथ एक मित्र की तरह बात करता है, अपने विचार उसे बताता है। इससे अनाख़ाँ अचंभे में पड़ जाती है।

"पहली बार उसने अपने शौहर को इतना आत्मविश्वासी, दृढ़ और ख़ूबसूरत पाया था। लेकिन क्या एक मर्द के लिए किसी औरत के प्रति हमदर्दी दिखाना ठीक था? अनाख़ाँ ने तो ख़ुद के बारे में, अपने सुख के बारे में कभी सोचा ही नहीं था। ज़माने से औरतें इसी तरह रहती आयी थीं – उसकी माँ, उसकी माँ की माँ..."

अपने स्त्रीपात्रों का चित्रण करते हुए लेखक ने दिखाया है कि न केवल वातावरण की परिस्थितियों ने बल्कि बाह्य परिस्थितियों ने भी स्त्री को पुराने ज़माने के बंधनों में जकड़ रखा था। उनकी चेतना में एक सच्ची क्रांति आने की आवश्यकता थी, स्त्रियों को अपनी अपमानजनक ग़ुलामी और भाग्यवादी फ़र्मानिबरदारी पर विजय पाने की आवश्यकता थी...

अनाख़ाँ पर छुरे से किये गये नीचतापूर्ण वार के बाद उसने अपने आपको संभलते ही उन्हें खुली चुनौती दी और अपने जीवन में पहली बार बिना परंजी बाहर निकल आयी।

"उसके क़दमों में दृढ़ता थी, लेकिन ऐसा महसूस हुआ जैसे उसके पैरों के नीचे धरती काँप रही हो। ऐसा प्रतीत होता जैसे सिर्फ़ लोग ही नहीं बल्कि दीवारें भी उसे घूर रही हों। परंजी के बिना अपना सिर सीधा किये रहना, एकदम सीधे आगे की ओर देखना, बिना ज़ोर लगाये डग बढ़ाना मुश्किल हो रहा था।"

अपने पात्रों की भावनाओं का यथार्थ एवं विश्वासोत्पादक ढंग से चित्रण करते हुए अस्क़द मुख़्तार हर बार कुछ ऐसे अविस्मरणीय सूक्ष्म विवरण देते हैं, जो उनके बाह्य व्यवहार में उन गहरे परिवर्तनों को बताते हैं, जो उनके स्वभाव को ही बदल देते हैं।

एक बार जब साबिर ने कहा कि उनके घर एक रूसी आदमी आयेगा, तो अनाख़ाँ घबरा गयी। लोग क्या कहेंगे? पड़ोसी क्या सोचेंगे?

वह सोचने लगी कि "नैमन्चा की औरतें कैसे एक दूसरे से कहेंगी। अनाख़ाँ ने रूसियों से मिलना शुरू कर दिया है। उसका शौहर शराबख़ाने के अपने यारों को घर लाता है, लोग साबिर और अनाख़ाँ से कतराने लगेंगे। व उसे काम देना बंद कर देंगे।"

परंजी उतर फेंकने के बाद अनाख़ाँ अपने आप को नया आदमी महसूस करते हुए विस्मित एवं पुलकित हो उठी और रूसी इंजिनियर सेर्गेय दोब्रो-ख़ोतोव को प्यार करने लगी। उसके संकट के क्षणों में वह किसी से नहीं डरी और अपने प्रिय व्यक्ति पर झूठे लांछन लगानेवाले लोगों के ख़िलाफ़ निडर होकर बोल उठी।

इसे वृत्तान्त में वक़्त की नब्ज़ सुनाई देती है और इसी के आधार पर लेखक ने बड़ी निपुणता से आगामी घटनाओं का महल खड़ा किया है।

लाल सेना से सेवा-निवृत एर्गश की आँखों से हम निजी कॉफी-हाउस और बाज़ारों का दिवाला देखते हैं... वह क्रोधित होता है, विद्रोह करता है, सब कुछ नष्ट कर देना चाहता है। और इस प्रकार हमें न केवल समय के यथार्थपूर्ण लक्षण ही दिखाई पड़ते है बल्कि एक जोशीला, विशा-लहृदय, असंयमित व्यक्तित्व भी दिखाई देता है, तथापि राजनीतिक दृष्टि-कोण से वह पूर्णतया परिपक्व नहीं।

जुराख़ाँ की आँखों से हमें पुराने शहर के जीवन का बहुत बड़ा अंश दिखाई देता है... उपन्यास के प्रभावशाली दृश्यों में से एक की याद दिलाता हूँ। किस प्रकार एक असह्यरूप से गरम और घुटनभरे दिन सजे सजाये गधे पर बैठकर एक बेहद मोटा आदमी, जिसका पेट भरा हुआ है, चायख़ाने में आता है। उसके पीछे-पीछे पुरानी, पैबन्द भरी परंजी पहने एक औरत अपने बच्चे को गोद में लिये चल रही होती है। जब तक वह आदमी शीतल छाया में बैठकर आराम करता रहा, उसकी पत्नी ज़मीन पर धूल में बैठी बच्चे को दूध पिलाती रही...

यह दृश्य देखकर हमें क्रोध आता है, क्योंकि यह सब हम जुराख़ाँ की नज़रों से देखते हैं: उसका मानवतावाद, उसका प्यारभरा शोकाकुल हृदय विह्वल हो उठता है।

अस्क़द मुख़्तार की कृति में स्त्रियों के प्रति सम्मान की गरमाहट है।

स्त्रियों के रोषपूर्ण विरोध, उनके साहस का इसमें काव्यात्मक शैली में वर्णन किया गया है। यह पुस्तक साथी स्त्रीवर्ग और प्रिय बहनों के बारे में है।

उपन्यास "चिंगारी" अपनी यथार्थता और पूर्णता में, अपने कलात्मक गुणों के कारण अद्वितीय है।

लेखक ने जिन दुश्मनों, खलनायकों की सृष्टि की है, उन में बाय क़ुद्रतुल्लाह का पुत्र, नईमी, नीली मस्जिद का इमाम अब्दूमजीद ख़्वाजा, दूकानदार मतक़ोबुल आदि सबसे ज़्यादा समय तक याद रहनेवाले चरित्रों में से हैं... उनमें से प्रत्येक में उनके "वर्ग के लक्षणों" के अलावा कुछ अवगम्य और व्यक्तिगत विशेषताएँ भी हैं, जो उनके चरित्र को यथार्थता प्रदान करती हैं।

उदाहरण के तौर पर शिक्षक नईमी मृदुभाषी, मुस्लिम धर्म और उसकी जातीय परम्पराओं का रक्षक है, जो मित्र बनकर सोवियत सत्ता में घुस आता है। भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में वह तरह-तरह की बातें करता है: स्कूल में, स्त्रियों की सभा में, क़ुद्रतुल्लाह ख़्वाजा के घर में, चाय-विक्रेता के साथ... हमें हर समय उसके चरित्र का एक नया ही पक्ष दिखाई देता है। एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली प्रतिमा का निर्माण होता है।

लेखक की योजना के अनुसार सोवियत सत्ता का सबसे कट्टर एवं साधनसम्पन्न शत्रु चाय-विक्रेता को होना चाहिए था। उपन्यास की बहुत-सी महत्वपूर्ण घटनाओं से उसका सीधा सम्बन्ध स्पष्ट दिखाई पड़ता है: अनाख़ाँ की हत्या का प्रयास, मिल के निर्माण में तोड़-फोड़ करनेवाला दल, जुराख़ाँ की हत्या आदि। पर उपन्यास में जिस रहस्य से यह चरित्र घिरा हुआ है, और जिसके कारण हर पाठक को उसके प्रति जिज्ञासा होनी चाहिए, वह रहस्य अंत तक नहीं खुलता।

आजकल अस्क़द मुख़्तार का यह उपन्यास विशेष रुचि के साथ पढ़ा जा रहा है। हमारी चेतना और हमारे जीवन में पुराने समय के जो लक्षण दिखाई देते हैं, उन से सम्बन्ध विच्छेद करके संघर्ष करने का समय आ गया है। इसके साथ ही स्त्रियों के प्रति बायों जैसे सामन्तवादी व्यवहार से भी संघर्ष करने का समय आ गया है, जो अब भी कभी-कभी फिर दिखाई दे जाता है।

उदाहरण के लिए, इस संदर्भ में उज़्बेकी लेखक के इस उपन्यास और

क़िरग़ीज़ियाई लेखक च० ग्रायतमातोव के लघु उपान्यासों "जमीला" ग्रौर "लाल ग्रोढ़नी में मेरी सरूक़द प्रेमी" में सीधा सम्बन्ध दिखाई देता है। वे स्त्रियों के मानवोचित ग्रात्मसम्मान ग्रौर उनके ग्रधिकारों के प्रति ग्रादर से परिपूर्ण हैं।

ग्रस्क़द मुख़्तार का उपन्यास ग्रपनी ऐतिहासिक प्रामाणिकता से सम्बन्धित होते हुए भी लगता है, जैसे हमारे ग्राधुनिक युग में भी महत्त्व रखता है। यह पूर्ण परिपक्वता की ग्रोर ग्रग्रसर हो रहे उज़्बेक गद्य की एक नवीन उपलब्धि है।

ल० यकिमेंको।

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन का विभाग इस उपन्यास के अनुवाद, डिज़ाइन और प्रकाशन के बारे में आपके सुझाव के लिए अनुग्रहीत होगा। आपके सुझाव प्राप्त करके हमें बहुत ख़ुशियाँ मिलेंगी। कृपया इस पते पर लिखिये:

प्रगति प्रकाशन, ताश्क़न्द–१२९, नवाई स्ट्रीट, ३०

Progress Publishers,
30, Navai street,
Tashkent — 129.
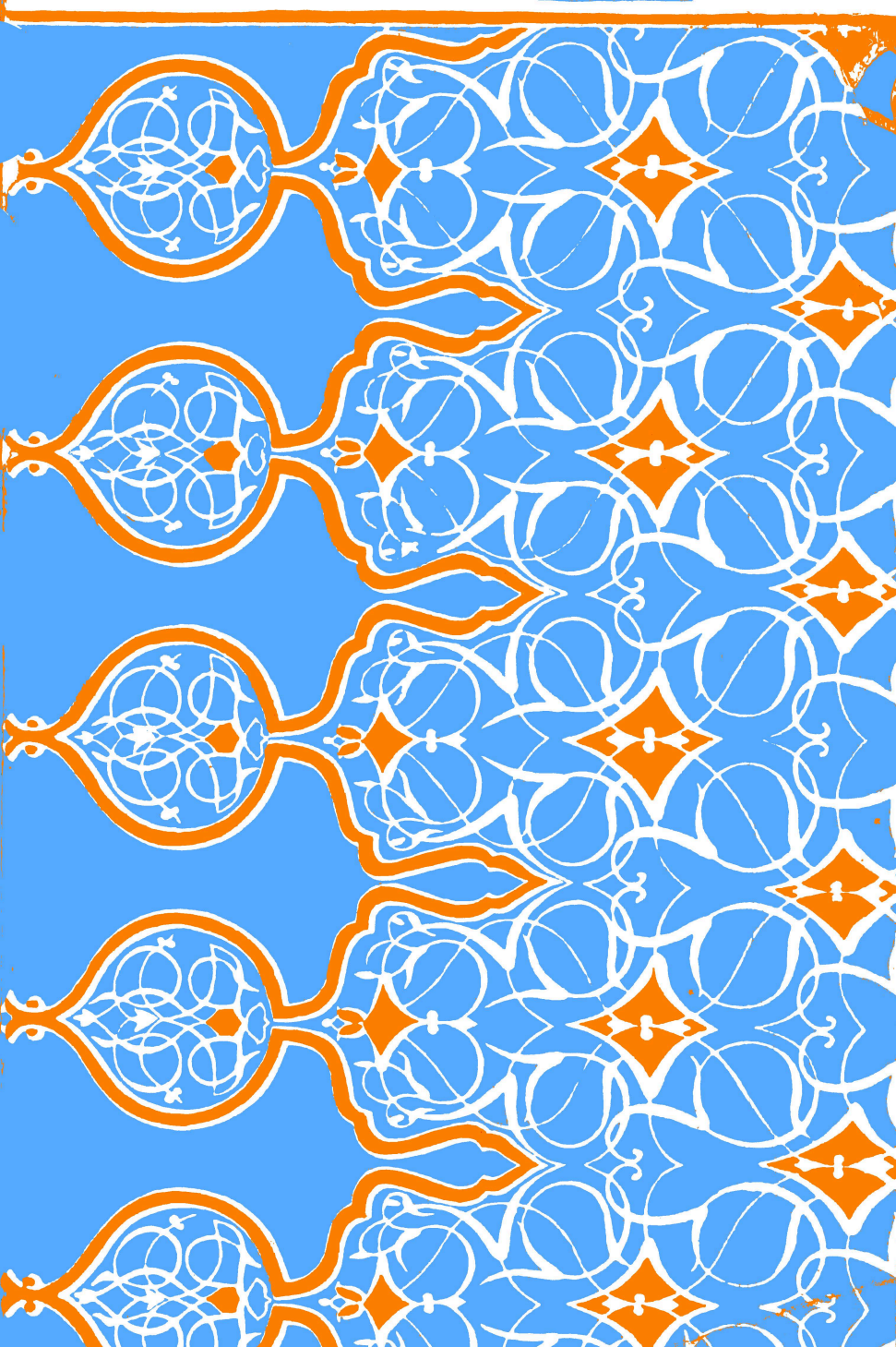
अस्क़द मुख़्तार (जन्म – सन् १९२० ई.) आधुनिक विषयों पर लिखनेवाले सुप्रसिद्ध उज़बेक कवि और गद्य-लेखक हैं। आपकी कविताओं काव्यों व उपन्यासों में "धरती की काया पलटनेवाले" और नये जीवन के निर्माता सोवियत उज़बेक लोगों के जीवन के दर्शन होते हैं।

अस्क़द मुख़्तार ने अपने उपन्यास "चिंगारी" में बताते है कि नयी समाजवादी यथार्थता उज़बेकों के जीवन में किन संघर्षमय परिस्थितियों में आयी, उसके शत्रुओं के प्रचंड विरोध पर किस तरह विजय प्राप्त की गयी, किस तरह सदियों पुराने मत और अंधविश्वास पर क़ाबू पाया गया, उत्पीड़ित उज़बेक स्त्रियाँ अपने भाग्य की सच्ची स्वामिनी किस तरह बनीं।